Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीः ॥

शुक्ल यजुर्वेदिनाम्

# आह्निकसूत्रावलिः

★

प० शिवदत्त शर्म्मणा
संकलिता शोधिता च ।

★

मुद्रक व प्रकाशक
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष—'लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर' स्टीम्-प्रेस, कल्याण—बम्बई.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

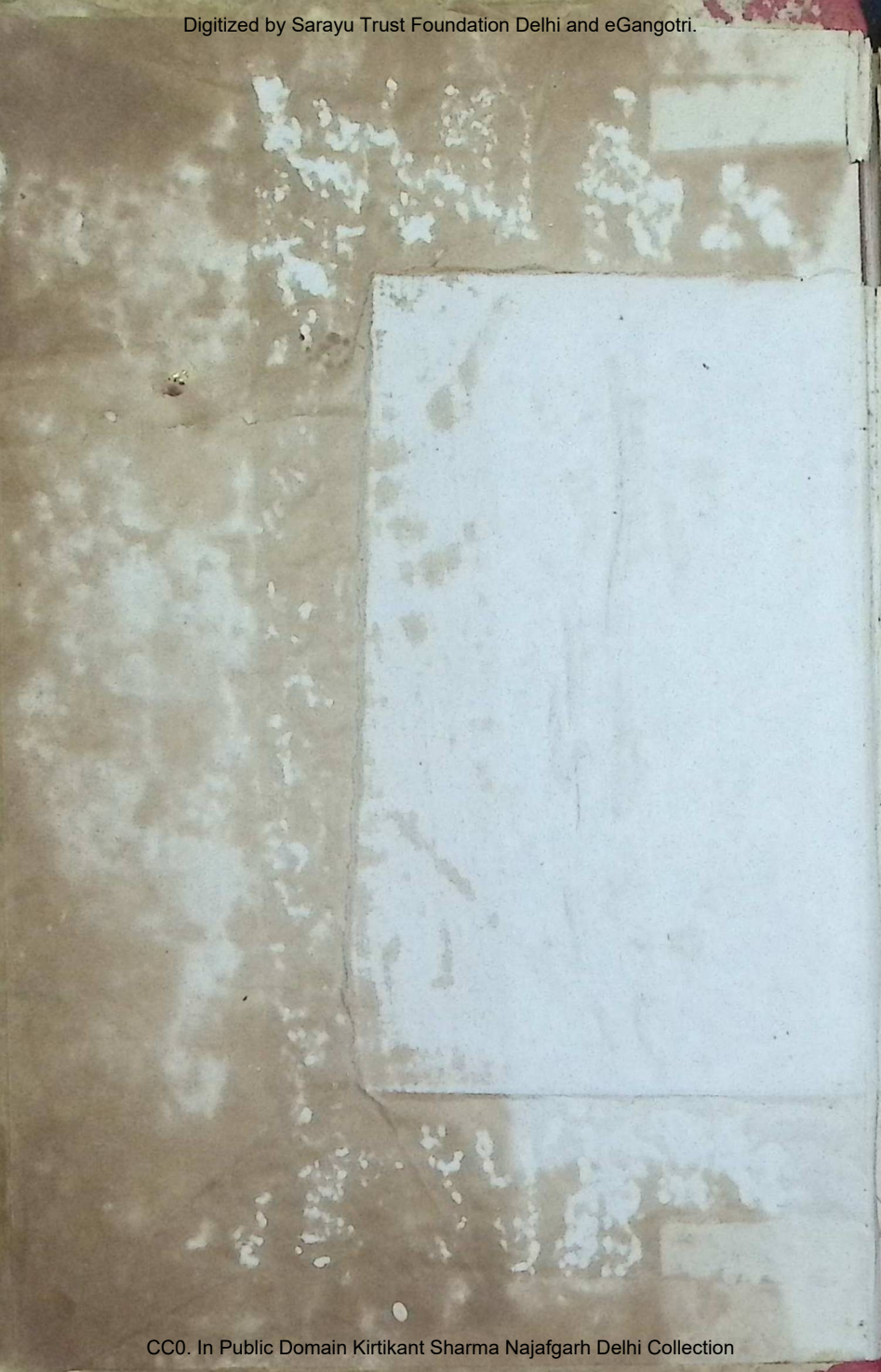

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रामावतार शर्मा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीः ॥

शुक्लयजुर्वेदि [illegible]म्

# आह्निककर्म्म-

## सूत्रावलिः ।

★

पंडित-शिवदत्तशर्म्मणा सङ्कलिता

शोधिता च ।

---

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

मालिक—"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस.

कल्याण-बम्बई.

संवत २०४०, सन् १९८३

---

इस पुस्तकका रजिष्टरी हक यन्त्राधिकारीने अपने स्वाधीन रक्खा है ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संस्करण १९८३

अधिकतम सूचीमूल्य
३५ रुपये मात्र

मुद्रक
खेमराज श्रीकृष्णदास फर्म के लिए
दे. स. शर्मा मैनेजर
श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई–४००००४

© कापी राईट
प्रकाशक–मे० खेमराज श्रीकृष्णदास
द्वारा सुरक्षित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# निवेदनम् ।

मनुयाज्ञवल्क्यपारस्करगृह्यसूत्राह्निकसूत्रावलिनित्यकर्मप्रयोगमालादिभ्यो नाना ग्रन्थेभ्यः प्रातःकालमारभ्य शयनकालान्तं शुक्लयजुर्वेदीयमाध्यन्दिनवाजसनेयिभिर्यद्यत् कर्त्तव्यं कर्म्म तत्तत्सर्वं संकलय्यात्र निर्दिष्टम् । अत्र तावद्धर्मादिनिर्देशो नाम प्रथमं प्रकरणं, तत्र धर्म्माचरणावश्यकत्वादि निर्दिष्टम् । ततः पर महोऽष्टविभागानुसारं तत्तदनुरूपाणि कर्त्तव्यानि कर्माणि निर्दिष्टानि । अवसाने च समयविशेषे यत्तदावश्यकं कर्त्तव्यमपि किंतु दैनिककर्त्तव्यकर्मनिर्देशानुसारं न निर्देष्टुं पारितं, तस्य यथासम्भवं सन्निवेशः कृतः । एवं च सर्वथा सर्वेषां सुकृतिनामुपादेयतामयं ग्रन्थः प्रतिपत्स्यते । अथाऽपि; "आपरितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् । बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः ॥" इत्यभियुक्तोक्तदिशा विदुषां परितोषः कियान् भवितेत्यत्र श्रीमतां विदुषाम्महानुभावानां चेत एव प्रमाणम् ।

अस्य च प्रकाशनप्रचारणाद्यर्थं सर्वथाऽधिकारः "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसाध्यक्षेभ्यः श्रीमद्भ्यश्च क्षेमराज श्रीकृष्णदास श्रेष्ठिमहोदयेभ्यः समर्पितः, तश्च सादरं गृहीत इति भूयसो धन्यवादान् वितरामि । इति

विदुषां विधेय—

शिवदत्तस्य ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीः ।

# आह्निककर्म्मसूत्रावलेर्विषयानुक्रमणिका ।


| विषयाः | पृष्ठाङ्काः | विषयाः | पृष्ठाङ्काः |
|---|---|---|---|
| मंगलाचरणम् ... | १ | वेदप्रकाशंसा ... | ६ |
| धर्म्मावश्यकता ... | ,, | शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिन-शाखाप्रशंसनम् ... | ,, |
| धर्मसामान्यलक्षणम् ... | ,, | वाजिशाखिनः ... | ७ |
| ब्राह्मणकर्म्माणि ... | २ | शुक्लयजुर्वेदीयमाध्यन्दिनब्राह्मण-प्रशंसा ... | ,, |
| क्षत्रियकर्म्माणि ... | ,, | अष्टादशविद्याः ... | ,, |
| वैश्यकर्म्माणि ... | ,, | अष्टादशस्मृतिकाराः ... | ७ |
| क्षत्रियवैश्ययोर्विशेषः .. | ,, | विंशतिस्मृतिकाराः ... | ,, |
| शूद्रकर्म्माणि ... | ,, | एकविंशतिस्मृतिकाराः | ८ |
| ब्रह्मकायलक्षणम् ... | ३ | उपस्मृतिकाराः ... | ,, |
| ब्राह्मणलक्षणम् ... | ,, | अष्टादश पुराणानि | ,, |
| ब्राह्मणपालनम् ... | ,, | अष्टादशोपपुराणानि ... | ,, |
| भारतवर्षे जन्मफलम् ... | ,, | नित्यकर्मणि विशेषविचारः | ८ |
| ईश्वराराधने धर्मावश्यकता | ,, | सङ्कल्पावश्यकत्वम् ... | ,, |
| ईश्वराराधनावश्यकता ... | ३ | स्नानेविशेषः ... | ९ |
| ब्राह्मणमाहात्म्यम् ... | ४ | ऋषिच्छन्दःप्रभृति .. | १२ |
| एषां चवेदाध्ययनावश्यकत्वम् | ५ | मन्त्रर्षिः ... | १३ |
| एतत्फलम् ... | ,, | छन्दः ... | ,, |
| वेदाः .. | ,, | देवता ... | ,, |
| उपवेदाः ... | ,, | विनियोगः ... | ,, |
| वेदयोनितः ... | ६ | ॐकारपूर्वकत्वम् ... | ,, |
| वेदाङ्गानि ... | ,, | | |
| वेदादिसंख्या ... | ,, | | |


CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.




| विषयाः | पृष्ठाङ्काः |
|---|---|
| ॐ कारफलम् ... | १४ |
| आशौचे कर्मत्यागविचारः | ,, |
| षोडश संस्काराः ... | १५ |
| नित्याचाराः ... | ,, |
| सर्वकर्म्मसिद्ध्यर्थसंकल्पावश्यकता ... | १६ |
| संकल्पस्वरूपम् ... | ,, |
| समावर्तनोत्तरं ब्राह्मणस्य सदावर्तनम् ... | ,, |
| नित्यकर्मविधौसंक्षेपेण कारिकाः | १७ |
| **अहः प्रथमभागे कर्तव्यनिर्देशः** | |
| प्रातरुत्थानकालः ... | १८ |
| ब्राह्ममुहूर्तः ... | ,, |
| प्रातरुत्थानाभावे दोषः | ,, |
| ईश्वरनामोच्चारणम् ... | ,, |
| उत्थानोत्तरं कर्त्तव्यम् | ,, |
| स्वकरतलाद्यवलोकनम् | १९ |
| प्रातःकाले दर्शनीयपदार्थाः | ,, |
| प्रातःकालेदर्शनायोग्यपदार्थाः | ,, |
| भूमिस्पर्शनम् ... | ,, |
| नद्यादौजलग्रहणप्रकारः | ,, |
| विण्मूत्रोत्सर्गविधिः ... | ,, |
| शौचावश्यकता ... | ,, |
| शौचस्थलम् ... | २० |
| शौचे उक्ता दिशः ... | ,, |
| शौचे उपवीतधारणप्रकारः | ,, |
| शौचे जलपात्रग्रहणविचारः | २१ |

| विषयाः | पृष्ठाङ्काः |
|---|---|
| शौचे मृत्तिकाग्रहणम् | २१ |
| शौचे मृत्तिकालेपनम् ... | ,, |
| शौचे मृत्तिकाप्रमाणम् | ,, |
| लिङ्गगुदप्रक्षालनम् ... | २२ |
| पाणिपादप्रक्षालनम् ... | ,, |
| गण्डूषादिविधिः ... | ,, |
| कच्छविचारः ... | ,, |
| मौनधारणम् ... | २३ |
| मुखमार्जनविधिः ... | ,, |
| दन्तधावनावश्यकता ... | ,, |
| दन्तधावने वनस्पतिप्रार्थना | ,, |
| दन्तधावने युक्तानि काष्ठानि | ,, |
| उक्तदन्तधावनकाष्ठे गुणाः | ,, |
| दन्तधावनविधिः ... | २४ |
| दन्तधावनकाष्ठाभावे | ,, |
| दन्तधावनेवर्ज्यानि काष्ठानि | २५ |
| दन्तधावने काष्ठप्रमाणम् | ,, |
| दन्तधावनेनिषिद्धकालः | ,, |
| दन्तधावने दिग्विशेषः | ,, |
| दन्तधर्षणान्ते गण्डूषविधिः | ,, |
| मुखप्रक्षालनानन्तरं देहशुद्धिः | ,, |
| मुखप्रक्षलनानन्तरं सूर्यप्रार्थना | ,, |
| मुखप्रक्षालनानन्तरं तुलसीप्रार्थना ... | २६ |
| मुखप्रक्षालनानन्तरं गोप्रार्थना | ,, |
| प्रातःस्मरणे नारायणस्तुतिः | ,, |
| गणेशस्तुतिः ... | ,, |


CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.




| विषयाः | पृष्ठाङ्काः |
|---|---|
| सूर्यस्तुतिः ... | २६ |
| देवीस्तुतिः ... | २७ |
| शिवस्तुतिः ... | ,, |
| रामस्तुतिः ... | ,, |
| हनुमत्स्तुतिः ... | २८ |
| ग्रहस्तुतिः ... | ,, |
| ऋषिस्तुतिः ... | ,, |
| पुण्यश्लोकस्तुतिः ... | २९ |
| दुर्गादिदेवतास्तुतिफलम् | ,, |
| स्नानात्पूर्वं भक्षणयोग्याः पदार्थः | ३० |
| स्नानम् ... | ,, |
| स्नानकालः ... | ३१ |
| प्रातःस्नानफलम् ... | ,, |
| प्रातःस्नानाभावेदोषः | ३२ |
| स्नानार्थं उक्तं जलम् ... | ,, |
| उष्णोदकस्याननिषेधः ... | ,, |
| स्नानभेदाः ... | ,, |
| क्वचित्स्थले मुसलस्नानम् | ३३ |
| प्रत्यक्षस्नानाभावे गौणस्नानानि | ,, |
| स्नानादौ निषिद्धिजलम् ... | ,, |
| स्नानार्थम् उक्ता दिशः ... | ३४ |
| गृहे स्नानादिविचारः .. | ,, |
| स्नानकाले नारायणस्मरणम् | ,, |
| संकल्पावश्यकता ... | ३५ |
| स्नाने आसनम् ... | ,, |
| स्नाने जलादिविचारः ... | ,, |
| शिरःस्नानम् ... | ३५ |
| आर्द्रवस्त्रनिष्पीडनम् ... | ,, |
| आकण्ठस्नानम् ... | ,, |
| मङ्गलस्नानम् ... | ,, |
| तीर्थभेदाः ... | ,, |
| मानसतीर्थानि ... | ,, |
| शारीरतीर्थानि ... | ,, |
| भौमतीर्थानि ... | ,, |
| दैवम् ... | ,, |
| कायम् ... | ,, |
| पित्र्यम् ... | ,, |
| ब्राह्मम् ... | ,, |
| गृहे प्रातःस्नानम् ... | ३७ |
| स्नानात्प्राक् कर्तव्यम् ... | ,, |
| स्नानावश्यकत्वम् ... | ३८ |
| नद्यादौ नित्यस्नानम् ... | ३९ |
| स्नानाङ्गतर्पणम् ... | ४७ |
| प्रातःसूक्तम् ... | ४८ |
| वस्त्रधारणमन्त्रः ... | ४९ |
| वस्त्रपरिधानावश्यकत्वम् | ,, |
| त्रिकच्छावश्यकत्वम् ... | ,, |
| वस्त्रधारणे विशेषः ... | ,, |
| धौतवस्त्रप्रसाधनम् ... | ५० |
| उपवस्त्रपरिधानाऽऽवश्यकता | ,, |
| उपवस्त्रधारणमन्त्रः ... | ,, |


CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.




| विषयाः | पृष्ठाङ्काः | विषयाः | पृष्ठांकाः |
|---|---|---|---|
| स्नानादौ भावशुद्धेरावश्यकत्वम् | ५० | पद्मासनम् ... | ५५ |
| उपवस्त्राभावे यज्ञोपवीताधिक्यम् | ,, | स्वस्तिकासनम् ... | ,, |
| वस्त्रादिशुद्धिप्रकारः ... | ,, | भद्रासनम् .. | ,, |
| सन्ध्योपासनम् ... | ,, | वज्रासनम् ... | ,, |
| सन्ध्याफलम् ... | ५२ | वीरासनम् .. | ,, |
| सन्ध्याऽभावे दोषः ... | ,, | सन्ध्योपासने दिग्विचारः | ५६ |
| सन्ध्याव्याख्या .. | ,, | सन्ध्यायां मात्राः ... | ,, |
| सन्ध्याकालः ... | ,, | भस्मना तिलकम् ... | ,, |
| त्रिकालसन्ध्यानामानि ... | ,, | मृत्स्नया तिलकम् ... | ,, |
| प्रातःसन्ध्यावर्णनम् .. | ,, | त्रिपुण्ड्रतिलकफलम् ... | ५७ |
| मध्याह्नसन्ध्या ... | ५३ | तिलकविशेषाः ... | ,, |
| सन्ध्यावर्णाः ... | ,, | भस्मतिलकावश्यकत्वम् | ,, |
| सन्ध्यागोत्राणि ... | ,, | भस्मधारणेऽङ्गानि ... | ,, |
| सन्ध्योपयोगिनि पात्राणि | ,, | त्रिपुण्ड्रकलक्षणम् ... | ,, |
| सन्ध्यादिजपस्थलम् ... | ५४ | भस्मधारणे मन्त्रः ... | ५८ |
| कालातिक्रमणे सन्ध्योपासने विशेषः ... | ,, | भस्मधारणाभावे दोषः ... | ,, |
| आसनानि ... | ,, | रुद्राक्षधारणफलम् .. | ,, |
| आसनगुणाः ... | ,, | मालालक्षणम् .... | ,, |
| आसनपरिमाणम् ... | ,, | रुद्राक्षधारणाभावे दोषः | ५९ |
| वर्ज्यान्यासनानि ... | ५५ | कर्मविशेषे दर्भप्रमाणम् ... | ,, |
| पादुकाधारणनिषेधः ... | ,, | कुशपवित्रम् ... | ,, |
| प्रौढ़पादासनम् ... | ,, | कुशपवित्रप्रमाणम् ... | ६० |
| प्रौढपादासनलक्षणम् ... | ,, | कुशपवित्राभावेऽन्यपवित्रम् | ,, |
| स्वस्तिकासनम् ... | ,, | पवित्रवस्तूनि . | ,, |
| | | हेमादिपवित्रप्रमाणम् ... | ,, |
| | | शिखाबन्धनम् ... | ६१ |


CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.




| विषयाः | पृष्ठाङ्काः |
|---|---|
| शिखाया आवश्यकत्वम् .. | ६१ |
| शिखावन्धनविचारः ... | ,, |
| शिखामुक्तिविचारः ... | ,, |
| आचमनम् ... | ,, |
| आचमने उदकम् ... | ६२ |
| आचमनविचारः ... | ,, |
| आचमनफलम् ... | ६३ |
| आचमनप्रकाराः ... | ,, |
| श्रौताचमनम् .. | ,, |
| स्मार्ताचमनम् .. | ,, |
| जलाभावे कर्मविशेषेचाचमनम् | ६४ |
| दक्षिणश्रवणस्पर्शफलम् ... | ,, |
| प्राणायामफलम् ... | ६५ |
| कर्म्मविशेषे प्राणायामसंख्या-विशेषः ... | ,, |
| प्राणायामप्रकारः ... | ,, |
| काम्यः प्राणायामः ... | ,, |
| मार्जनम् ... | ६६ |
| अघमर्षणम् ... | ,, |
| अर्घ्यम ... | ६७ |
| अर्घ्यफलम्, तद्विधिश्च ... | ६८ |
| जलाभावेऽर्घ्यविचारः ... | ६९ |
| उपस्थानम् ... | ६९ |
| मुद्राव्याख्याः ... | ,, |
| कुम्भमुद्रा ... | ,, |
| कूर्ममुद्रा ... | ,, |
| अस्त्रमुद्रा ... | ७० |
| अङ्गन्यासमुद्रा ... | ,, |
| मत्स्यमुद्रा ... | ,, |
| धेनुमुद्रा .. | ,, |
| आवाहनमुद्रा ... | ,, |
| गन्धादिमुद्रा ... | ,, |
| प्राणमुद्रा ... | ,, |
| अपानमुद्रा ... | ,, |
| व्यानमुद्रा ... | ,, |
| उदानमुद्रा ... | ,, |
| समानमुद्रा ... | ७१ |
| ग्रासमुद्रा ... | ,, |
| शंखमुद्रा ... | ,, |
| गरुडमुद्रा ... | ,, |
| योनिमुद्रा ... | ,, |
| प्रार्थनामुद्रा ... | ,, |
| गायत्रीवर्णदेवताः ... | ,, |
| एतत्फलम् ... | ७२ |
| गायत्रीशब्दव्याख्या ... | ,, |
| जपनियमाः ... | ,, |
| जपसङ्ख्या ... | ,, |
| जपफलम् ... | ७३ |
| जपलक्षणम् ... | ७३ |
| गायत्रीजपविधिः ... | ७३ |
| गायत्र्या देवतादि ... | ७३ |
| जपस्वरूपम् ... | ७४ |


CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.




| विषयाः | पृष्ठाङ्काः | विषयाः | पृष्ठाङ्काः |
|---|---|---|---|
| एतज्जपफलम् ... | ७४ | प्रैषविधिः .. | ११० |
| सप्त महाव्याहृतयः ... | ७४ | कर्म्मविशेषे भोज्यब्राह्मणाः | ,, |
| अभिवादनम् ... | ,, | दक्षिणाविषये विशेषः ... | ,, |
| सन्ध्यामन्त्रक्रमः ... | ७५ | पृष्टोदिविधिः ... | ,, |
| सन्ध्याऽवश्यकता ... | ७५ | हवनस्थलकुण्डसंस्कारः | १११ |
| सन्ध्याविसर्जनम् ... | ७६ | हवनेऽग्नयस्त्रयः ... | ,, |
| प्रातःसन्ध्याप्रयोगः ... | ,, | हवनफलम् ... | ,, |
| प्रातःसन्ध्याप्रयोगसंक्षेपः | ८९ | सायं पातश्च होमः ... | ,, |
| होमः ... | ९६ | सायमौपासनपरिचरणम् | ११८ |
| हवनविधिः ... | १०० | प्रातरौपासनपरिचरणम् | १२१ |
| होमकुण्डम् ... | ,, | नित्यदानम् ... | १२४ |
| कुण्डाद्याकाराः ... | १०१ | नित्यदानप्रयोगः .. | १२५ |
| इध्मादिप्रमाणम् .. | १०८ | मङ्गलपदार्थदर्शनम् | १२६ |
| यज्ञियवृक्षाः ... | ,, | मातापितृवन्दनम् ... | १२७ |
| समिधः ... | ,, | अह्नो द्वितीयभागे कर्तव्यनिर्देशः । | |
| समिधां प्रमाणम् ... | ,, | स्वाध्यायाध्ययनम् .. | १२८ |
| इध्मार्थे समिधः ... | ,, | वाङ्माधुरीकरणम् ... | १३० |
| यज्ञेऽग्राह्या वृक्षाः ... | १०९ | अध्ययनम् ... | ,, |
| अग्राह्याः समिधः ... | ,, | आचार्यलक्षणम् ... | ,, |
| ग्राह्याः समिधः ... | ,, | उपाध्यायलक्षणम् ... | १३१ |
| समधान्यानि ... | ,, | अध्ययनक्रमः ... | ,, |
| अष्टादश धान्यानि ... | ,, | शिक्षायास्ताडनम् ... | ,, |
| होमद्रव्याणि .. | ,, | वेदाध्ययनम् ... | १३२ |
| होमे उक्तधान्यानि ... | ,, | अनध्यायाः ... | ,, |
| अग्नेर्धमनम् ... | ११० | देवतापूजा | १३३ |
| होतृविचारः .. | ,, | कालविशेषे पूज्या देवताः | ,, |


CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.




| विषयाः | पृष्ठाङ्काः |
|---|---|
| पूजाविधिः ... | १३३ |
| पूजनप्रकाराः ... | ,, |
| देवस्पर्शेऽधिकाराभाव | १३४ |
| देवार्चनकालः ... | ,, |
| पञ्चोपचारपूजाविधानम् | ,, |
| गृहिगृहे प्रतिमा ... | ,, |
| देवप्रतिमाप्रतिष्ठा .. | १३५ |
| देवपञ्चकायतनम् ... | ,, |
| गणेशादिदेवतापञ्चक स्थापन | १३७ |
| सदाशिवपार्श्वकाः | ,, |
| विष्णुपार्श्वकाः ... | ,, |
| गणेशपार्श्वकाः ... | ,, |
| सूर्यपार्श्वकाः ... | १३८ |
| महादेवीपार्श्वकाः | ,, |
| देवप्रतिमाप्रतिष्ठानिर्णयः | ,, |
| अधिकारिणः ... | १३९ |
| नवग्रहादिप्रतिमाः | ,, |
| तल्लक्षणानि ... | ,, |
| गृहेदेवस्थानम् ... | ,, |
| प्रतिमा ... | १४० |
| राजोपचाराः ... | ,, |
| पञ्चोपचाराः ... | ,, |
| दशोपचाराः ... | ,, |
| षोडशोपचाराः ... | १४१ |
| षोडशोपचारपूजामन्त्राः | ,, |
| वाजसनेयिनां षोडशोपचाराः | ,, |

| विषयाः | पृष्ठाङ्काः |
|---|---|
| स्नानादिपात्राणि ... | १४१ |
| न्यासाः ... | १४२ |
| पञ्चाङ्गन्यासाः ... | ,, |
| षडङ्गन्यासाः ... | ,, |
| षोडशाङ्गन्यासाः ... | १४३ |
| षोडशाङ्गन्यासविधिः | ,, |
| पुरुषसूक्तापठनात्फलम् | १४४ |
| भूतादिशुद्धिः ... | १४५ |
| भूशुद्धिः ... | ,, |
| भूतशुद्धिः ... | १५७ |
| भूतोपसंहारः .. | १४८ |
| प्राणप्रतिष्ठा ... | १४९ |
| अन्तर्मातृकान्यासाः | १५० |
| बहिर्मातृकाः ... | १५१ |
| कलशादिपूजा ... | १५५ |
| ध्यानम् ... | ,, |
| आवाहनम् ... | १५६ |
| मुद्रा ... | ,, |
| आसनम् ... | ,, |
| आचमनम् ... | ,, |
| देवप्रतिमायां नित्यस्नानम् | ,, |
| पञ्चनद्यः ... | ,, |
| पञ्चगव्यम् ... | ,, |
| पञ्चगव्यसंमेलनम् | ,, |
| पञ्चगव्यप्राशनम् ... | १५७ |
| पञ्चामृतम् ... | ,, |


CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.




| विषयाः | पृष्ठाङ्काः | विषयाः | पृष्ठाङ्काः |
|---|---|---|---|
| उद्वर्तनम् .. | १५७ | मन्त्रपुष्पार्पणम् ... | १६४ |
| सौभाग्यद्रव्यस्य ... | ,, | साष्टाङ्गनमस्कारः ... | ,, |
| देवेष्वभिषेकः ... | ,, | तीर्थम् ... | .. |
| विष्ण्वादिदेवानां महाभिषेकः | १५८ | निर्माल्यग्रहणम् ... | .. |
| वस्त्राद्यर्पणम् ... | ,, | नवधा भक्तिः ... | ,, |
| देवेऽनुलेपनम् ... | १५९ | उत्तरपूजा .. | ,, |
| पुष्पार्पणम् ... | ,, | पूजनफलम् ... | १६५ |
| तुलसीग्रहणम् ... | ,, | देपार्चनपद्धतिः ... | ,, |
| तुलसीपत्रग्रहणयन्त्रः | १६० | देवपञ्चकनीराजनम् | १८१ |
| बिल्वपत्रम् ... | ,, | देवीनीराजनम् ... | ,, |
| पूजायां ग्राह्यपुष्पाणि | ,, | विष्णुनीराजनम् ... | १८३ |
| देतानामतिप्रियाणि | ,, | प्रार्थना ... | ,, |
| पुष्पाणि पत्राणि वा | ,, | आशीर्वादमंत्राः ... | १८६ |
| पञ्च पुष्पाणि ... | ,, | मानसपूजा .. | १८७ |
| पुष्पाभावे ... | १६१ | शङ्करमानसपूजास्तोत्रम् | ,, |
| त्याज्यपुष्पाणि ... | ,, | संक्षेपतो देवपूजनपद्धतिः | १८८ |
| पञ्चरत्नानि ... | ,, | रुद्राभिषेकविधानम् | १९१ |
| पञ्च पल्लवाः ... | ,, | गणेशाथर्वशीर्षम् | २१७ |
| धूपः ... | १६२ | नारायणाथर्वशीर्षम् | २१९ |
| दीपः ... | ,, | शिवाथर्वशीर्षम् ... | २१९ |
| नैवेद्यभाजनम् .. | ,, | सूर्याथर्वशीर्षम् ... | २२४ |
| देवे नैवेद्यार्पणम् ... | १६३ | देव्यथर्वशीर्षम् .. | २२५ |
| देवे घृतशर्करादिनैवेद्येषार्पणम् | ,, | गायत्रीपुरश्चरणविधिः | २२७ |
| नैवेद्यलक्षणम् ... | ,, | गायत्रीशापविमोचनम् | २३० |
| ताम्बूलम् ... | ,, | मुद्राप्रदर्शनप्रकारः | २३२ |
| प्रदक्षिणा ... | ,, | सूर्यादिनवग्रहमण्डलम् | २३३ |


CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.




| विषयाः | पृष्ठाङ्काः |
|---|---|
| मंगलयन्त्रम् ... | २३४ |
| नवग्रहमंगलाष्टकम् ... | २३७ |
| महामृत्युजयजपविधिः ... | २३८ |
| महामृत्युञ्जयकवचम् ... | २३९ |
| संतानगोपालमंन्त्रजपविधिः | २४१ |
| आदित्यहृदयस्तोत्रम् ... | ,, |
| रुचेः पितृस्तोत्रम् ... | २४३ |
| तुलसीमहिमा ... | २४६ |
| तुलसीग्रहणे निषिद्धःकालः | ,, |
| बिल्वपत्रमहिमा ... | २४७ |
| तुलसीपूजाप्रयोगः ... | २४८ |
| धात्रीपूजा ... | २४९ |
| अश्वत्थपूजा ... | २५० |
| मङ्गलयन्त्रपूजा ... | २५१ |
| मङ्गलव्रतविधानम् ... | २५४ |
| घटस्थापनादि देवपूजायाम् | २५७ |
| देव्या आर्त्तिक्यम् ... | २६० |
| महालक्ष्मीपूजनम् ... | ,, |
| श्रीसूक्तम् ... | २६३ |
| पुराणोक्तसर्वदेवपूजाप्रयोगः | २६५ |
| अह्नस्तृतीये भागे कर्त्तव्यनिर्देशः। | |
| गृहस्थस्य योगक्षेमविधिः | २६७ |
| गृहस्थाश्रमविशेषः ... | ,, |
| गृहस्थधर्मः ... | ,, |
| अह्नश्चतुर्थभागे कर्त्तव्यनिर्देशः। | |
| अर्घ्यप्रकार ... | २६८ |

| विषयाः | पृष्ठांकाः |
|---|---|
| मध्याह्नसन्ध्याप्रयोगः ... | २६८ |
| पञ्चमहायज्ञाः ... | २७३ |
| पञ्चमहायज्ञफलम् ... | ,, |
| ब्रह्मयज्ञविधिः ... | २७५ |
| सूर्योपस्थानपद्धतिः ... | २७६ |
| ब्रह्मयज्ञप्रयोगः ... | २८६ |
| देवर्षिपितृतर्पणम् ... | २८९ |
| तर्पणे उपवीतधारणप्रकारः | २९२ |
| तर्पणादौ पितॄनामनुक्रमः | २९३ |
| सप्तगोत्राणि ... | ,, |
| तर्पणे पात्राणि ... | ,, |
| तर्पणे स्थलम् ... | ,, |
| तर्पणे तिलग्रहणावश्यकता | ,, |
| तर्पणे तिलनिषेधः ... | २९४ |
| वस्त्रनिष्पीडनम् ... | ,, |
| तर्पणप्रकारः ... | ,, |
| तर्पणेऽञ्जलिदानम् ... | २९५ |
| तर्पणेऽधिकारिणः ... | ,, |
| तर्पणे दर्भाः ... | ,, |
| तर्पणे निषिद्धं जलम् ... | २९९ |
| देवर्षिमनुष्यपितृणां तर्पण. पद्धतिः ... | ,, |
| दिग्देवतानां नमस्काराः... | ३०३ |
| अह्नः पञ्चमभागे कर्त्तव्यनिर्देशः। | |
| श्राद्धकर्म्मावश्यकत्वम् ... | ३०५ |
| एकोद्दिष्टम् ... | ३०७ |
| संवत्सरे पूर्णे ... | ,, |


CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.




| विषयाः | पृष्ठाङ्काः | विषयाः | पृष्ठाङ्काः |
|---|---|---|---|
| आभ्युदयिके ... | २०७ | पञ्चबलिहरणम् .. | २१८ |
| तृप्तिः ... | ,, | तिलकगन्धद्रव्याणि ... | २१९ |
| अक्षय्य तृप्तिः .. | २०८ | गन्धधारणावश्यकता ... | ,, |
| काम्यानि ... | ,, | गन्धेन तिलकप्रकारः ... | २२० |
| श्राद्धे ब्राह्मणलक्षणम् ... | ,, | अत्र विशेषः ... | ,, |
| नित्यश्राद्धविचारः ... | ,, | तिलस्थानानि ... | ,, |
| नित्यश्राद्धप्रयोगः ... | २०९ | तिलगुणाः ... | २२१ |
| वैश्वदेवः ... | २११ | अतिथिपूजनम् ... | ,, |
| नानाविधकर्मसु नानाग्नि- नामानि ... | २१२ | भोजनम् ... | ,, |
| अग्निजिह्वानामानि ... | २१६ | भोजनसमयः ... | २२४ |
| अग्निशक्तिनामानि ... | ,, | भोजने आसनम् ... | ,, |
| वैश्वदेवे पात्राणि ... | ,, | भोजनेपात्राणि .. | ,, |
| वैश्वदेवे ग्राह्योऽग्निः ... | ,, | भोजने पादुकानिषेधः ... | ,, |
| वैश्वदेवे हवनीयं द्रव्यम् .. | ,, | हस्तेनाग्राह्याः पदार्था ... | २२५ |
| वैश्वदेव आहुतिः ... | २१४ | ग्रासमानम् ... | ,, |
| वैश्वदेवे वर्ज्यानि द्रव्याणि | ,, | भोजनेदिक् ... | ,, |
| वैश्वदेवाग्निप्रज्वलनम् ... | ,, | परिवेषणम् ... | ,, |
| श्राद्धे वैश्वदेवः ... | ,, | भोजनादौ देवतीर्थम् ... | ,, |
| वैश्वदेवाभावे दोषः ... | ,, | भोजने मण्डलम् ... | २२६ |
| वैश्वदेवफलम् ... | ,, | पंक्तिविभागः ... | ,, |
| वैश्वदेवे कुण्डम् ... | ,, | अन्नस्तुतिः ... | ,, |
| अग्नेर्ध्येयरूपम् ... | २१५ | चित्राहुतयः ... | ,, |
| पञ्चयज्ञः ( बलिवैश्वदे ) ... | ,, | आपोशनम् ... | २२७ |
| अग्निध्यानम् | ,, | प्राणाग्निहोमः ... | ,, |
| बलिवैश्वदेवमण्डलम् ... | २१७ | प्राणाग्निहोत्रेऽग्निनामानि ... | ,, |
| पञ्चयज्ञफलम् ... | २१८ | प्राणाहुतिः ... | ,, |


CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.




| विषयाः | पृष्ठाङ्काः |
|---|---|
| अन्नार्पणम्, नियमाः ... | ३२८ |
| रात्रौ दीपः ... | ” |
| भोजनोत्तरं कर्तव्यम् ... | ” |
| भोजनप्रकारः ... | ३२९ |
| मिताहारगुणाः ... | ” |
| विष्णुपादतीर्थम् ... | ” |
| ब्राह्मणसुवासिनीनामाराधनम् | ” |
| भोजनप्रयोगः ... | ३३० |
| संक्षेपतो भोजनविधिः ... | ३३३ |
| ताम्बूलभक्षणम् ... | ३३४ |
| ताम्बूलवर्जने योग्यः ... | ” |
| अहः षष्ठ सप्तमभागयोः कर्तव्यनिर्देशः। | |
| इतिहासाद्यभ्यसनम् ... | ३३५ |
| दिवानिद्रादिनिषेधः ... | ” |
| अहोऽष्टमभागे कर्त्तव्यनिर्देशः। | |
| लोकयात्रा ... | ” |
| सायंसन्ध्याकालः ... | ” |
| सायंसन्ध्यास्थलम् ... | ३३६ |
| कालातिक्रमे सायंसन्ध्या | ” |
| कालातिक्रमसंध्यायां दिग्विचारः | ” |
| सायंसंध्यायामर्ध्यम् ... | ” |
| सायंसन्ध्यायां जपविचारः | ” |
| सायंसंन्ध्याफलम् ... | ” |
| सायंसंध्याप्रयोगः ... | ३३७ |
| सायंतर्पणादिनिषेधः ... | ” |
| पुरुषस्य दीपनिर्वाणे दोषः | ३३८ |
| दीपस्तुतिः ... | ” |
| दीपकालः, दीपगुणाश्च | ” |
| दीपलक्षणम् ... | ” |
| संक्षेपतः सायंसंध्याप्रयोगः | ” |
| सायंपञ्चोपचारपूजाप्रयोगः | ३४० |
| दम्पत्योर्व्यवायः ... | ३४१ |
| दम्पतियोग्यायोग्यत्वविचारः | ३४३ |
| प्रजोत्पादने दम्पतियोग्यायोग्यत्वविचारः ... | ” |
| ऋतुमतीस्त्रीधर्माः ... | ३४४ |
| गर्भोत्पत्तिविचारः ... | ” |
| गर्भिणीलिङ्गानि ... | ” |
| गर्भिणीकर्माणि ... | ” |
| गर्भिण्यकर्मकरणात्परिणामः | ३४५ |
| ऋतुस्नातायां गमनम् ... | ” |
| स्त्रीणां मैथुनात्प्राग्विधिः | ” |
| वर्ज्या स्त्री ... | ” |
| रतिवर्ज्यदिनानि ... | ” |
| अष्टाङ्गमैथुनम् ... | ” |
| शयनकालः ... | ३४६ |
| शयने भूमिः ... | ” |
| शय्याविचारः ... | ” |
| अयोग्या शय्या, पर्यङ्कः | ” |
| तालादिप्रमाणम् ... | ” |
| निषिद्धं शय्यागारम् ... | ” |
| पञ्च निषिद्धानि दारूणि | ३४७ |
| उक्तशय्यादीनि ... | ३४७ |
| शयने दिग्विचारः ... | ” |
| दिवाशयने योग्याः ... | ” |
| शयन आवश्यककर्माणि | ” |


CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.




| विषयाः | पृष्ठाङ्काः |
|---|---|
| शयनात्प्राक् स्मरणे योग्या-देवाद्याः | .. .. |
| सुखशायिनां स्मरणम् | ... ३४८ |
| रात्रिस्मरणसूक्तम् | .... ,, |
| समयविशेषे कर्त्तव्यनिर्देशः । | |
| श्रावणीकर्म्म | ... ३५० |
| ऋषयः पूज्याः | ... ३५१ |
| पूजनक्रमः | ,, |
| उपाकर्मणि विशेषः | ... ३५२ |
| तत्फलम् | ... ,, |
| महासंकल्पः | ... ३५३ |
| यज्ञोपवीतधारणप्रयोगः | ३६४ |
| उत्सर्गाङ्गमृषितर्पणम् | ... ३६५ |
| वंशानां वाचनम् | ... ३६६ |
| अध्ययनक्रमः | ... ३७७ |
| शतानि | ... ,, |
| शतपथाध्याया | ... ३७८ |
| प्रपाठकाः | ... ,, |
| शतस्थानानि | ... ३८१ |
| अन्त्यकण्डिका | ... ३८३ |
| अन्त्यफक्किका | ... ,, |
| ऋषिश्राद्धम् | ... ३८६ |
| रक्षाबन्धनम् | .. ३८८ |
| अध्यायोपाकर्म | ... ,, |
| उपाकर्मपद्धतिः | ... ३८९ |

| विषयाः | पृष्ठाङ्काः |
|---|---|
| शान्तिसूक्तपाठः | ... ३९४ |
| यज्ञोपवीतविधिः | ... ४०७ |
| यज्ञोपवीतलक्षणम् | ... ४०८ |
| यज्ञोपवीततन्तुदेवताः | ... ४०९ |
| यज्ञोपवीतसंख्या | ... ,, |
| यज्ञोपवीतावश्यकत्वम् | ... ,, |
| यज्ञोपवीतपरिवर्तनविधिः | ,, |
| यज्ञोपवीते कण्ठादुत्तीर्णे कर्त्तव्यम् | ,, |
| यज्ञोपवीतधारणविधिः | .... ,, |
| संक्षिप्तं यज्ञोपवीतधारणम् | ४१३ |
| सर्वतोभद्रमण्डलप्रकारः | ,, |
| मातृकापूजा | ... ४१४ |
| साङ्कल्पिकं नान्दीश्राद्धम् | ४१५ |
| पुण्याहवाचनम् | ... ४१८ |
| शीतलास्तोत्रम् | ... ४२४ |
| संकटनाशनं लक्ष्मीनृसिंह-स्तोत्रम् | ... ४२५ |
| वाल्मीकेर्गंगास्तोत्रम् | ... ४२६ |
| मणिकर्णिकास्तोत्रम् | ... ४२७ |
| यमुनास्तोत्रम् | ... ४२८ |
| त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम् | ... ४२९ |
| रावणकृतं शिवताण्डवस्तोत्रम् | ४३० |
| महापुरुषविद्या | ... ४३१ |
| रामहृदयम् | ... ४३२ |


इति विषयानुक्रमणिका ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीहरिः शरणम्।

# शुक्लयजुर्वेदीयमाध्यन्दिनवाजसनेयिनाम्

# आन्हिककर्म्मसूत्रावलिः।

सर्वज्ञं जगदाधारं सच्चिदानन्दलक्षणम्।
निरवद्यमनाकारं नमामि परमेश्वरम्॥ १॥
निगमा यस्य निःश्वासा ब्रह्माण्डं च कलेवरम्।
सूर्यश्च चन्द्रमा नेत्रे भुजाश्चैव दिवौकसः॥ २॥
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय दधानं बहुरूपताम्।
एकमाद्यमनन्तं तं प्रणमामि महेश्वरम्॥ ३॥ युग्मकम्॥
प्रत्यूहव्यूहहन्तारं विधातारं शुभान्वयम्।
कुञ्जराननमाराध्यं देवानामभिवादये॥ ४॥
श्रीश्रीदेवसहायस्य पादावानम्य सद्गुरोः।
करोम्याह्निककर्म्मालिं मुदे वाजसनेयिनाम्॥ ५॥

## धर्म्मावश्यकतामाह भगवान् मनुः—

'धर्म्म एव हतो हन्ति धर्मोरक्षति रक्षितः। तस्माद्धर्म्मो न हन्तव्यो मनो धर्म्मो हतोऽवधीत्॥ वृषो हि भगवान् धर्म्मस्तस्य यः कुरुते ह्यलम्। वृषलं तं विदुर्देवास्तस्माद्धर्म्मं न लोपयेत्॥ एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः। शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद्धि गच्छति॥" इति। धर्मसामान्यलक्षणमाह मनुः "विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर्नित्यमद्वेषरागिभिः हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो धर्म्मस्तं निबोधत। श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्म्मस्य लक्षणम्॥ वेदोऽखिलो धर्म्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्। आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च॥" इति। याज्ञवल्क्योऽप्याह—"श्रुति स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। सम्यक् सङ्कल्पजः कामो धर्म्ममूलमिदं स्मृ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तम् ॥" **यद्वा**-"चत्वारो वेदधर्मज्ञाः पर्षत्त्रैविद्यमेव वा । सा ब्रूते य स धर्म्मः स्यादेको च ब्रह्मवित्तमः॥" **अन्यच्च**="अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः दानं दमो दया क्षांतिः सर्वेषां धर्म्मलक्षणम् ॥" **मनुराह**-"अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः । एतं सामासिकं धर्म्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनुः ॥" **याज्ञवल्क्यश्चाह**-"अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ॥ दानं दमो दया क्षान्तिः सर्वेषां धर्म्मसाधनम् ॥" इति ॥

**ब्राह्मणकर्म्माण्याह मनुः**-'अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा । दानं प्रतिग्रहश्चैव षट्कर्म्माण्यग्रजन्मनः । षण्णां तु कर्म्मणामस्य त्रीणि कर्म्माणि जीविका । याजनाध्यापने चैव विशुद्धाच्च प्रतिग्रहः॥" तथा **कात्यायनोऽपि** "वेदे तथाऽऽत्मज्ञाने च ब्राह्मणो यत्नवान्भवेत् । एष धर्मस्य सर्वस्य चतुर्वर्गस्य साधकः॥" **अङ्गिराः**-"अग्निहोत्र तपः सत्य वेदानां चैव पालनम् । आतिथ्यं वैश्व देवश्च इष्टमित्यभिधीयते ॥" इति ॥ **क्षत्रियकर्म्माण्याह मनुः**-"त्रयो धर्म्मा निवर्त्तन्ते ब्राह्मणात् क्षत्रियं प्रति । अध्यापनं याजनं च तृतीयश्च प्रतिग्रहः" **वैश्यकर्म्माण्याह स एव**-"वैश्यं प्रति तथैवैते निवर्तेरन्निति स्थितिः।न तौ प्रति हि तान्धर्म्मान्मनुराह प्रजापतिः ।" **क्षत्रियवैश्ययोर्विशेषमप्याह मनुरेव**-'शास्त्रास्त्रभृत्त्वं क्षत्रस्य वणिक्पशुकृषिर्विशः । आजीवनार्थं धर्म्मास्तु दानमध्ययने यजिः ॥" **त्रैवार्णिकानां पुनरप्याह स एव**-"वेदाभ्यासो ब्राह्मणस्य क्षत्रियस्य च रक्षणम् । वार्ताकर्म्मैव वैश्यस्य विशिष्टानि स्वकर्म्मसु" **शूद्रकर्म्माण्याह देवलः**-"शूद्रधर्म्मो द्विजातिशुश्रूषा पापवर्जनं कलत्रादि पोषणं कर्षणं पशुपालनभारोद्वहनपण्यव्यवहारचित्रकर्म्मनृत्यगीतवेणुवीणामुरज-मुदङ्गवादनादीनि॥" **याज्ञवल्क्यस्त्वाह**"शूद्रस्य द्विजशुश्रूषा तयाऽऽजीवन् वणिग्भवेत् । शिल्पैर्वा विविधैर्जीवेद्विजातिहितमाचरन् ॥ भार्यारतिः शुचि-भृत्यभर्त्ता श्राद्धक्रियारतः । नमस्कारेण मन्त्रेण पञ्चयज्ञान्न हापयेत्॥"द्विजातीन् **याज्ञवल्क्यःप्राह**-"ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रावर्णास्त्वाद्यास्त्रयो द्विजाः ।निषेकाद्याः श्मशानान्तास्तेषां वै मन्त्रतः क्रियाः॥ इति । एवं चद्विजन्मनामेव मन्त्रैः क्रिया

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


शूद्राणांतुविनामन्त्रैरित्यप्युक्तम्।अत्रापि द्विजातीनां यज्ञोपवीतधारणं वेदाध्ययनंच मुख्ये अतएव **पुनरप्याह**-"मातुर्यदग्रे जायन्ते द्वितीयं मौञ्जिबन्धनात्।ब्राह्मण-क्षत्रियविशस्तस्मादेते द्विजाः स्मृता॥यज्ञानां तपसां चैव शुभानां चैव कर्म्मणाम्। वेद एव द्विजातीनां निःश्रेयसकरः परः ॥" स्वस्तिकर्मावश्यकत्वं यथोपदि-शति ' **यजुर्वेदः-कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म्म लिप्यते नरे**" ॥इति **ब्रह्म-कायं लक्षयति धन्वन्तरिः**-"शौचमास्तिक्यमभ्यासो वेदानां गुरुपूजनम्। प्रियातिथित्वमिज्या च ब्रह्मकायस्य लक्षणम् ॥" **ब्राह्मणलक्षणमाह मनुः** " स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः। महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः ॥ " **आह्निककारिकाकारश्च**-"शान्ताः सन्तः सुशीलाश्च सर्व-भूतहिते रताः। क्रोधं कर्तुं न जानन्ति एतद्ब्राह्मणलक्षणम् ॥ सन्ध्योपासन-शीलश्च सौम्यचित्तो दृढव्रतः। समः परेषु च स्वेषु एतद्ब्राह्मणलक्षणम् ॥ एका-हारश्च सन्तुष्ट स्वल्पाशी स्वल्पमैथुनः। ऋतुकालाभिगामी च एतद्ब्राह्मणलक्षणम्। परान्नं परवित्तं च पथि वा यदि वा गृहे। अदत्तं नैव गृह्णाति एतद्ब्राह्मणलक्षणम्॥ सत्यं ब्रह्म तपो ब्रह्म ब्रह्म चेन्द्रियनिग्रहः। सर्वभूतदया ब्रह्म एतद्ब्राह्मणलक्षणम्॥" **वसिष्ठः**-" योगस्तपो दमो दानं सत्यं शौचं दया श्रुतम्। विद्या विज्ञान-मास्तिक्यमेतद्ब्राह्मणलक्षणम् ॥ "

**ब्राह्मणपालनम्, महाभारते**-" सम्पतन्मोहजालेषु कदाचिदिह मानुषे। ब्राह्मण्यं लभते जन्तुस्तत्पुत्र परिपालय ॥ " इति ।

**भारतवर्षे जन्मफलम्, विष्णुपुराणे**-"अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बू-द्वीपे महामुने। यतो हि कर्मभूरेषा ततोऽन्या भोगभूमयः ॥ कदाचिल्लभते जन्तु-र्मानुष्यं पुण्यसञ्चयात् ॥ गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ये भारत-भूमिभागे। स्वर्गापवर्गस्य च हेतुभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥ "

**ईश्वराराधने धर्मावश्यकता, याज्ञवल्क्यः**-"पुराणन्यायमीमांसा धर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः। वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**मनुः**-"वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्। आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च॥" **व्यासः**-"ब्राह्मणक्षत्रियविशस्त्रयो वर्णा द्विजातयः। श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तधर्म्मयोग्यास्तु नेतरे॥ तस्मादहरहर्वेदं द्विजोऽधीयीत वाग्यतः। धर्मशास्त्रेतिहासादि सर्वेषां शक्तितः पठेत्॥" **मनुः**-"प्रजापतिरिदं शास्त्रं तपसैवासृजत्प्रभुः। तथैव वेदानृषयस्तपसा प्रतिपेदिरे॥ ऋक्संहितां त्रिरभ्यस्य यजुषां वा समाहितः। साम्नां वा सरहस्यानां सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन् हि मानवः। इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं गतिम्॥ श्रुतिर्वेदस्तु विज्ञेयो धर्म्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः। ते सर्वार्थेष्वमीमांस्ये ताभ्यां धर्मो हि निर्म्ममे॥ वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्म्मस्य लक्षणम्॥" **महाभारते**-"श्रुतिस्मृतिमं पुण्यं पापनाशनमुत्तमम्। चिन्तयेद्ब्राह्मणो भक्त्या धर्म्मसंस्थापनाय च॥ देशे काल उपायेन द्रव्यं श्रद्धासमन्वितम्। पात्रे प्रदीयते यत्तत् सकलं धर्म्मलक्षणम्॥ श्रुति स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। सम्यक् सङ्कल्पजः कामो धर्म्ममूलमिद स्मृतम्॥"

**ईश्वराराधनावश्यकता विश्वामित्रकल्पे याज्ञवल्क्यः**-"आत्मनो न सहायाथ पिता माता च तिष्ठति। न पुत्रदारा न ज्ञातिर्धर्म्मस्तिष्ठति केवलम्॥ अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। दानं दया दमः क्षान्तिः सर्वेषां धर्म्मसाधनम्॥" **व्यासः**-"आलोड्य सर्वशास्त्राणि विचार्यैवं पुनः पुनः। इदमेक सुनिष्पन्नं ध्येयो नारायणः सदा॥" **विष्णुशर्म्मा**-आहारनिद्राभयमैथुन च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्। धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः॥" इति।

**ब्राह्मणमाहात्म्यमाह मनुः**-"भूताना प्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनां बुद्धिजीविनः। बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठा नरेषु ब्राह्मणाः स्मृताः॥ उत्पत्तिरेव विप्रस्य मूर्त्तिर्धर्म्मस्य शाश्वती। स हि धर्मार्थमुत्पन्नो ब्रह्मभूयाय कल्पते॥ ब्राह्मणो जायमानो हि पृथिव्यामधिजायते। ईश्वरः सर्वभूतानां धर्मकोशस्य गुप्तये॥ सर्वस्व

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ब्राह्मणस्येदं यत् किञ्चिज्जगतीगतम् । श्रेष्ठेनाभिजनेनेदं सर्वं वै ब्राह्मणोऽर्हति ॥ स्वमेव ब्राह्मणो भुङ्क्ते स्वं वस्ते स्वं ददाति च । आनृशंस्याद्ब्राह्मणस्य भुञ्जते हीतरे जनाः ॥ **एषांच वेदाध्ययनावश्यकत्वमाह मनुः**—"विदुषा ब्राह्मणेनेदमध्येतव्यं प्रयत्नतः । शिष्येभ्यश्च प्रवक्तव्यं सम्यङ्नान्येन केनचित्॥" **एतत्फलमप्याह मनुः**—"इदं शास्त्रमधीयानो ब्राह्मणः संशितव्रतः । मनोवाग्देहजैर्नित्यं कर्म्मदोषैर्न लिप्यते ॥ पुनाति पङ्क्ति वंश्यांश्च सप्त सप्त परावरान् । पृथिवीमपि चैवेमां कृत्स्नामेकोऽपि सोऽर्हति ॥" **याज्ञवल्क्योऽप्याह**—"मधुना पायसेनैव देवांस्तर्पयेद्द्विजः । पितॄन्मधुघृताभ्यां च ऋचोऽधीते हि योऽन्वहम् ॥ यजूंषि शक्तितोऽधाते योऽन्वहं स घृतामृतैः । प्रीणाति देवान्याज्येन मधुना वा पितॄंस्तथा ॥ स तु सोमघृतैर्देवांस्तर्पयेद्योऽन्वहं पठेत् सामानि तृप्तिं कुर्याच्च पितॄणां मधुसर्पिषा ॥ मेदसा तर्पयेद्देवानथर्वाऽऽङ्गिरस पठन् । पितॄँश्च मधुसर्पिर्भ्यामन्वहं शक्तितो द्विज ॥" **व्यासः**—"श्रुतिःस्मृतिश्च विप्राणां नयने द्वे विनिर्मिते । एकेन विकलः काणो द्वाभ्यामन्धः प्रकीर्तितः॥" **अत्रिः**—"वेदं गृहीत्वा यः कश्चिच्छास्त्रं चैवावमन्यते।स सद्यः पशुतां याति सम्भवानेकविंशतिम् ॥ उक्तं च प्रतिषिद्धं च पुनः सम्भावितं तथा । सापेक्षं निरपेक्षं च ऋषिवाक्यमनेकधा ॥ वेदाः प्रमाणं स्मृतयः प्रमाणं धर्मार्थयुक्तं वचनं प्रमाणम् । एतत्त्रयं यत्र भवेत्प्रमाणं तद्वाक्ययुक्तं कुरु तत्प्रमाणम् ॥" तस्माद्ब्राह्मणेन वेदशास्त्राध्ययनमवश्यमेव कर्तव्यमिति तत्त्वम् ॥

**वेदाः, ग्रन्थान्तरे**—"ऋग्यजुःसाम चेत्येते वेदाश्चाथर्वणं मतम्" **चरणव्यूहे**—"तत्र यदुक्तं चातुर्वेद्यं चत्वारो वेदा विज्ञाता भवन्ति **ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वणवेदश्च**" इति । तत्र **ऋग्वेदस्यायुर्वेद** उपवेदः, अत्रिगोत्रम् । स्वरूपं तु—"पद्मपत्रायताक्षः सुविभक्तग्रीवः कुञ्चितकेशश्मश्रुः श्वेतवर्णः पञ्चवितस्तिमितः अस्यमधुच्छन्दा ऋषिः सोमो देवता गायत्री छन्दः॥"-**यजुर्वेदस्य** "धनुर्वेद उपवेदः काश्यपगोत्रम् । " स्वरूपं तु—"पिङ्गाक्षः कृश'

१ दयावगादित्यर्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मध्यः स्थूलगलकपोलस्ताम्रवर्णःषट्प्रादेशदोर्घः।अस्य परमेष्ठी ऋषि इन्द्रो देवता त्रिष्टुप् छन्दः''**सामवेदस्य**''गान्धर्ववेद उपवेदः भारद्वाजगोत्रम्।''स्वरूपं तु। ''सव्वी शुचिः बृहच्छरीरः काञ्चननयनः आदित्यवर्ण षडरत्निमात्रः।अस्य गौतमः ऋषिः अग्निर्देवता जगती छन्दः॥'' **आथर्वणवेदस्य** '' शिल्पशास्त्राद्युपवेदः वैखानसगोत्रम् ।'' स्वरूपं तु–''तीक्ष्णश्चण्डः कामरूपी विश्वात्मा नीलोत्पलवर्णः दशारत्निमात्रः । अस्य दध्यङ्गाथर्वण ऋषिः आपो देवता अनुष्टुप् छन्दः ॥

**वेदयोषितः**–''ईतिर्धृतिः शिवा शक्तिश्चतस्रो वेदयोषितः । भवन्ति यज्ञकालेऽस्मिन्नीशानादिव्यवस्थिताः ॥ ''

**वेदाङ्गानि**–''शिक्षाकल्पव्याकरणनिरुक्तच्छन्दोज्योतींषि षड्वेदाङ्गानि॥ ''छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते । **ज्योतिषामयनं** चक्षु-र्**निरुक्तं** श्रोत्रमुच्यते ॥ **शिक्षा** घ्राणं तु वेदस्य मुखं **व्याकरणं** स्मृतम् ॥ ''

**वेदादिसंख्या**–''लक्षं तु वेदाश्चत्वारो लक्षं भारतमेव च । लक्षं व्याकरणं प्रोक्तं चतुर्लक्षं तु ज्योतिषम् ॥ '' **महाभारते**—'' ब्रह्मन् वेदरहस्य च यच्चान्यत्स्थापितं मया । साङ्गोपनिषदां चैव वेदानां विस्तरक्रिया ॥ इतिहासपुरा-णानामुन्मेषं निर्मितं च यत् । भूतं भव्यं भविष्यच्च विविधं कालसंज्ञितम् ॥'' अतएव–प्रयोगेष्वपि ''श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थम्''इत्युच्यते । अस्यार्थः– विधिर्विधेयस्तर्कश्च वेदः । विधिर्नाम ब्राह्मणम् । विधेयो नाम मन्त्रः । तर्को नाम अर्थवादः प्राशस्त्यनिन्दाऽन्यतरलक्षणया विशेषभूतं वाक्यमर्थवादश्चेति ॥

**वेदप्रशंसामाह, पाराशरः**–'' न कश्चिद्वेदकर्ता स्याद्वेदस्मर्ता चतु-र्मुखः । वेदो नारायणः साक्षात्स्वयम्भूरिति शुश्रुम ।

**शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतमाध्यान्दिनीशाखाप्रशंसनं यजुर्वेदकल्प-तरौ**–''सन्मूलो यजुराख्यवेदविटपी जीयात्स माध्यन्दिनिः शाखा यत्र युगे-न्दुकाण्डसहिता यत्रास्ति सा संहिता । यत्राभ्राब्धिलता विभान्ति शरशैलाङ्केन्दु-भिश्चर्दलैः पञ्चद्वीषुनभोऽङ्कवर्णमधुपैः खाग्न्यर्कगुंगुञ्जितैः'' ॥ **देवीभागवते**-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



"अयातयामानि तु भानुगुप्तान्यन्यानि जातान्यतिनीरसानि । यजूंषि तेषामथ याज्ञवल्क्यो ह्ययातयामानि रवेरवाप ॥"

**उक्तं च स्मृतौ**—"कलौ माध्यन्दिनी शाखा कलौ चण्डीविनायकौ" इति। **वाजिशाखिनश्चोक्ता वायुपुराणे**—" शक्रसोमाग्निरुद्राश्च विश्वेदेवा खिलोचनः । विधाता शंखपाणिश्च तथा सप्तर्षयोऽमलाः ॥ मृकण्डुकपिलव्यास-याज्ञवल्क्यपराशराः दाल्मीकिर्नारदोऽगस्त्य इत्येते वाजिशाखिनः ॥ " इति ।

**शुक्लयजुर्वेदीयमाध्यन्दिनब्राह्मणप्रशंसोक्ता होलिरभाष्ये**—"ऋग्वेदी च पितृस्थाने यजुर्वेदी पितामहः । त्रिवेदी प्रपितुः स्थाने विश्वदेवा ह्यथर्ववित् ॥ वाजिविप्रविशेषेण श्राद्धकर्म निरन्तरम् । शुक्लाः प्रशस्ताः कृष्णास्तु यजुरुक्तनिषेधतः ॥ तस्मात् कव्यानि हव्यानि दातव्यानि द्विजातये । वाजि[१]ने दत्तमेकं तु तत्कोटिगुणितं भवेत् ॥ इति ।

**अष्टादशविद्या, विष्णुपुराणे**—"अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्याय-विस्तरः । धर्मशास्त्रं पुराणं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश ॥ आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वश्चेति त्रयः । अर्थशास्त्रं चतुर्थं तु विद्या ह्यष्टादशैव तु ॥ " इति ।

**अष्टादशस्मृतिकारानाह बृहन्मनुः**—" विष्णुः पराशरो दक्षः संवर्तव्यासहारिताः । शातातपो वसिष्ठश्च यमापस्तम्बगोतमाः ॥ देवलः शंख-लिखितौ भरद्वाजोशनोऽत्रयः । शौनको याज्ञवल्क्यश्च दशाष्टौ स्मृतिका-रिणः ॥ " इति । **अन्यच्च**—"मनुर्बृहस्पतिर्दक्षोगौतमोऽथयमोऽङ्गिराः । योगीश्वर प्रचेताश्च शातातपपराशरौ ॥ संवर्तोशनसौ शंखलिखितावत्रिरेव च । विष्ण्वापस्तम्बहारीता धर्मशास्त्रप्रवर्तकाः ॥ " इति ।

**विंशतिस्मृतिकाराः, याज्ञवल्क्यः**—" मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञ-वल्क्योशनोऽङ्गिराः यमोपस्तम्बसंवर्ता कात्यायनबृहस्पती ॥ पराशरो व्यास-शंखौ लिखितो दक्षगोतमौ । शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः ॥ "

---

१ कव्यानि—पितृणाम्भोज्यानि, अन्नानीत्यर्थः । २ वाजिने—वाजसनेयिने ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**एकविंशतिस्मृतिकाराः, ग्रन्थान्तरे**—" वसिष्ठोनारदश्चैव सुमन्तुश्च पितामहः । वसुः काष्णाजिनिः सत्यव्रतो गार्ग्यश्च देवलः ॥ जमदग्निर्भरद्वाजः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः । आत्रेयश्छागलेयश्च मरीचिर्वत्स एव च ॥ पाराश्कर ऋष्यशृङ्गो वैजवापस्तथैव च । इत्येते स्मृतिकर्तार एकविंशतिरीरिताः ॥" इति ।

**उपस्मृतिकाराः, ग्रन्थान्तरे**—" जाबालिर्नाचिकेतश्च स्कन्दो लौगाक्षिकाश्यपौ । व्यासः सनत्कुमारश्च सुन्मतुश्च पितामहः ॥ व्याघ्रः काष्णाजिनिश्चैव जातूकर्ण्यः कपिञ्जलः । बौधायनश्च काणादो विश्वमित्रस्तथैव च पैठीनसिर्गोभिलश्च उपस्मृतिविधायकाः ॥ " इति ।

**अष्टादशपुराणानि वाचस्पतौ**—" ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं भागवतं[1] तथा । तथाऽन्यन्नारदीयं च मार्कण्डेयं च सप्तमम् । आग्नेयमष्टमं प्रोक्तं भविष्यं नवमं तथा । दशमं ब्रह्मवैवर्तं लिङ्गमेकादशं तथा ॥ वाराहं द्वादशं प्रोक्तं स्कान्दं चाऽत्र त्रयोदशम् । चतुर्दशं वामनं च कौर्मं पञ्चदशं तथा ॥ मात्स्यं च गारुडं चैव ब्रह्माण्डमष्टादशं तथा ॥ " इति ॥

**अष्टादशोपपुराणानि, कूर्मपुराणे**—" आद्यं सनत्कुमारोक्तं नारसिंहमतः परम् । तृतीयं नारदप्रोक्तं कुमारेण तु भाषितम् ॥ चतुर्थं शिववर्माख्यं साक्षान्नन्दीशभाषितम् । दुर्वाससोक्तयाश्चर्यं नारदोक्तमतः परम् ॥ कापिलं मानवं चैव तथैवोशनसेरितम् ॥ ब्रह्माण्ड-वारुणं चाथ कालिकाह्वयमेव च । माहेश्वरं तथा साम्बं सौरं सर्वार्थसञ्चयम् । पराशरोक्तं प्रवरं तथा भागवतं परम् । इदमष्टादशं प्रोक्तं पुराणं कौर्मसंज्ञितम् ॥ "

**नित्यकर्मणि विशेषविचारः, छान्दोग्योपनिषदि ' यदेव विद्यया करोति श्रद्धया वीर्यवत्तरं भवति ॥ ' इति । कर्म्मणि सङ्कल्पावश्यकत्वमाह, मनुः**—" कामात्मता न प्रशस्ता न चैवेहास्त्यकामता । काम्यो हि वेदाधिगमः कर्म्मयोगश्च वैदिकः ॥ सङ्कल्पमूलः कामो

---

१ भागवतं—श्रीभागवतं, देवीभागवत वेत्यनयोरेकतरत् । शाक्ता वैष्णवाश्चात्र विवदन्ते ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वै सज्ञाः सङ्कल्पसम्भवाः । व्रतानि यमधर्म्माश्च सर्वे सङ्कल्पजाः स्मृताः ॥ अकामस्य क्रिया काचिद् दृश्यते नेह कर्हिचित् । यद्यद्धि कुरुते किञ्चित् तत्तत्कामस्य चेष्टितम् ॥ तेषु सम्यग्वर्तमानो गच्छत्यमरलोकताम् यथासङ्कल्पितांश्चेह सर्वान् कामान्समश्नुते ॥ "

**धर्म्मःश्रेयोहेतुरित्याह, भविष्यपुराणकारः**—"धर्मःश्रेयःसमुद्दिष्ट श्रेयोऽभ्युदयलक्षणम् । स तु पञ्चविधः प्रोक्तो वेदमूलः सनातनः॥ अस्य सम्यगनुष्ठानात्स्वर्गो मोक्षश्च जायते । इह लोके सुखैश्वर्य्यमतुलं च खगाधिप॥"

**स्नाने विशेषमाह, याज्ञवल्क्यः**—योऽसौ विस्तरतः प्रोक्तः स्नानस्य विधिरुत्तमः । असामर्थ्यान्न कुर्याच्चेत्त्रायं विधिरुच्यते ॥ स्नानमन्तर्जले चैव मार्जनाचमने तथा । जलानिमन्त्रणं चैव तीर्थस्य परिकल्पनम् ॥ अघमर्षणसूक्तेन त्रिरावृतेन नित्यशः । स्नानाचरणमित्येतत्समुद्दिष्टं महात्मभिः ॥ प्रत्याऽहनि तथा प्रातर्नित्यं स्नायादनातुरः । दन्तान् प्रक्षाल्य नद्यादौ गेहे चेत्तदमन्त्रवत् ॥ " **कात्यायनः**—"अल्पत्वाद्धोमकालस्य बहुत्वात्स्नानकर्मणः । प्रातर्न तनुयात्स्नानं होमलोपा विगर्हित ॥" **उक्तं च**—"अस्नात्वा स्वमलं भुक्ते अजप्त्वा पूयशोणितम् । अजुह्वच्च कृमीन्कीटानददच्च शकृत्तथा ॥" **मनुः**—"ः नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्याद्देवर्षिपितृतर्पणम् । देवताभ्यर्चनं चैव नित्यहोम तथैव च ॥ देवतानां गुरो राज्ञ स्नातकाचार्ययोस्तथा । नाक्रमेदकामतश्छायां वैभुणो दीक्षितस्य च ॥ नेत्रप्रसाधनं स्नानं दन्तधावनमञ्जनम् । पूर्वाह्ण एव कुर्वीत देवतानां च पूजनम् ॥ दैवतान्यभिगच्छेत्तु धार्मिकांश्च द्विजोत्तमान् । ईश्वरं चैव रक्षार्थं गुरुनेव च पर्वसु ॥ गुरून्भृत्यांश्चोज्जिहीर्षन्नर्चिष्यन्देवतातिथीन् । सर्वतः प्रतिगृह्णीयान्न तु तृप्येत् स्वयं ततः ॥ नास्तिक्यं वेदनिन्दां च देवतानां च कुत्सनम् । द्वेषं दम्भं च मानं च क्रोधं तैक्ष्ण्यं च वर्जयेत् ॥ देवत्वं ब्राह्मणत्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः । स पापात्मा परे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति ॥ उद्धृत्य वामहस्तेन पानीयं न पिबे-

---

१—शकृत पुरीषमित्यर्थः । २ वक्रोरिति वक्रन्ये तथा प्रयोग आपः । शिवस्य त्रिणिवत्यर्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



द्द्विजः॥"इति॥**हारीतः**-'अनुष्ठितं तु यद्वेर्वैर्मुनिभिर्यदनुष्ठितम्। नानुष्ठेयं मनुष्यैस्तत्तदुक्तं कर्म चाचरेत्॥" **वराहपुराणे** 'स्नानसन्ध्यातर्पणादि जपहोमसुरार्चनम्। उपवासवता कार्यं सायंसन्ध्याहुतिस्तथा॥" **कर्मप्रदीपे**-"पित्र्यमन्त्रानुद्रवणे आत्मालम्भे अवेक्षणे। अधोवायुसमुत्सर्गे प्रहासेऽनृतभाषणे॥ मार्जारमूषकस्पर्शे आक्रुष्टे क्रोधसम्भवे। निमित्तेष्वेषु सर्वत्र कर्म कुर्वन्नप-स्पृशेत्॥ तथा च तैलयन्त्रस्य शब्दो यावत्प्रवर्तत। तावत्कर्म न कर्तव्यम् शूद्रान्त्यजगणस्य च॥ भोजने हवने दाने उपहारे प्रतिग्रहे। सन्ध्यात्रयेऽम्बुपाने च पूर्वं पश्चाद्द्विराचमेत्॥" **मण्डनः**-"मुख्यकाले यदावश्यं कर्म कर्तुं न शक्यते। गौणकालेऽपि कर्तव्यं गौणोऽप्यन्नेदृशो भवेत्॥" **याज्ञवल्क्यः**-"देवर्त्विक्स्नातकाचार्यराज्ञां छाया परस्त्रियाः। नाक्रमेद्रक्तविण्मूत्रष्ठीवनोद्वर्तनादि वा॥ देवतातिथिकार्यार्थं गुरुभृत्यार्थमेव च। सर्वतः प्रतिगृह्णीयादात्मभृत्यर्थमेव च॥" **आग्निपुराणे**-"सायं प्रातश्च यः सन्ध्यामुपास्ते शुद्धमानसः। जपन् हि पावनीं देवीं गायत्रीं वेदमातरम्॥ यावन्तश्च पृथिव्यां हि चीर्णवेदव्रता द्विजाः। अचीर्णव्रतवेदा वा विकर्म्मपथमाश्रिताः॥ तेषां हि पावनार्थाय गायत्री नित्यमेव हि॥" **सन्ध्याकल्पे**-"कुशहीना तु या सन्ध्या तिलहीनं तु तर्पणम्। दानं च दक्षिणाहीनं तत्सर्वं निष्फलं भवेत्॥ सन्ध्या येन न विज्ञाता सन्ध्या नैवाप्युपासिता। जीवन्नेव भवेच्छूद्रो मृतः श्वा चाभिजायते॥ न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते यस्तु पश्चिमाम्। स साधुभिर्बहिष्कार्यः सर्वस्माद्द्विजकर्मणा॥" **मनुः**-"पूर्वां सन्ध्यां जयंस्तिष्ठेत् सावित्रीमर्कदर्शनात्। पश्चिमां तु समासीनः सम्यगृक्षविभावनात्॥ पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठन्नैशयेनो व्यपोहति। पश्चिमां तु समासीनो मलं हन्ति दिवाकृतम्॥ न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते यश्च पश्चिमाम्। स शूद्रवद्बहिष्कार्यः सर्वस्माद्द्विजकर्म्मणः॥" **भरद्वाजः**-"सूतके मृतके वापि प्राणायाममन्त्रकम्। तथा मार्जनमन्त्रांतु मनसोच्चार्य मार्जयेत्॥ गायत्रीं सम्यगुच्चार्य सूर्यायार्घ्यं निवेदयेत्। मार्जनं

---

१ शूद्रगणस्यान्त्यजगणस्य चेति भावः। अन्त्यजाश्चाण्डालः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तु न वा कार्यमुपस्थानं न चैव हि॥" इति। **तथोक्तं** "तिलकं ब्रह्मसूत्रं च पात्रमाचमनीयकम्।तिष्ठन्नैव सदा कुर्यात्सद्यःशूद्रो भवेद्द्विजः॥दीर्घकाष्ठे शिलापृष्ठे नौकायां शकटे तटे। विवाहे बहुसम्पर्के स्पर्शदोषो न विद्यते॥" **अङ्गिराः**—"अग्न्यगारे गवां गोष्ठे देवब्राह्मणसन्निधौ। आहारे जपकाले च पादुकानां विसर्जनम्॥" **नागदेवः**—" दिवोदितानि कर्माणि प्रमादादकृतानि वै। शर्वर्याः प्रथमे यामे तावत्कुर्याद्यथाक्रमम्॥ राष्ट्रक्षोभे नृपक्षोभे रोगार्ते क्षयसूतके। सन्ध्यावन्दनविच्छित्तिर्न दोषाय कदाचन॥ देवाग्निद्विजवैद्यादिकार्ये महति वा भवेत्। सन्ध्यालोपे न दोषोऽस्ति येन तत्पुण्यसाधनम्॥" **ब्राह्मणसर्वस्वे हलायुधः**—" शिरसोऽक्षरदैवत्यमाह्वानं च विसर्जनम्। ध्यानं जपं प्रयोगश्च येषु कर्मसु यादृशम्॥ ज्ञातव्यं ब्राह्मणैर्यत्नाद्ब्राह्मण्यं येन वै भवेत्। स्त्रीशूद्रपतितांश्चैव माखण्डं च रजस्वलाम्॥ स्नानकाले न सम्भाषेज्जपहोमादिकेषु च॥" **स्मृतिसंग्रहे**—" समयाचारीको धर्मो जातिदेशकुलोद्भवः। ग्रामाचाराः परिग्राह्या सर्वत्रैव यथोदितम्॥" **याज्ञवल्क्यः**—" देशे काल उपायेन द्रव्यं श्रद्धासमन्वितम्। पात्रे प्रदीयते यत्तत्सकलं धर्मलक्षणम्॥" **बृहस्पतिः**—" अभक्ष्यपरिहारश्च संसर्गश्चाप्यनिन्दितैः। स्वधर्मे च व्यवस्थानं शौचमेतत्प्रकीर्तितम्॥" **पारस्करगृह्यपरिशिष्टे**—"बह्वल्पं वा स्वगृह्योक्तं यस्य यावत्प्रचोदितम्। तस्य तावति शास्त्रार्थे कृते सर्वः कृतो भवेत्॥ यन्नाम्नातं स्वशाखायां पारक्यमविरोधि च। विद्वद्भिस्तदनुष्ठेयमग्निहोत्रादिकर्मवत्॥" **मनुः**—"कृष्णसारस्तु चरति मृगो यत्र स्वभावतः। स ज्ञेयो यज्ञियो देशो म्लेच्छदेशस्त्वतः परः॥" **ब्राह्मे**—"ब्रह्मण्याधाय कर्माणि निःसङ्गः कामवर्जितः। प्रसन्नेनैव मनसा कुर्वाणो याति तत्पदम्॥" **याज्ञवल्क्यः**—" आप छन्दश्च दैवत्यं विनियोगस्तथैव च। वेदितव्यं प्रयत्नेन ब्राह्मणेन विशेषतः॥ अविदित्वा तु यः कुर्याद्याजनाध्यापनं जपम्। होममन्तर्जलादीनि तस्य चाल्पफलं लभेत्॥ यजुर्वेदस्य मन्त्राणां सम्यक् पाठस्य सिद्धये। प्रणवं प्राक् प्रयुञ्जीत व्याहृतीस्तदनन्तरम्। सावित्रीं चानुपूर्व्येण ततो वेदं समारभेत॥ आत्मशाखामधीत्यादावन्यशाखामतः परम्। स्वशाखां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



च त्यजेद्यस्तु शाखारण्डः स उच्यते ॥" **मनुः**-"यः स्वाध्यायमधीतेऽब्दे विधिना नियतः शुचिः । तस्य नित्यं क्षरत्येष पयो दधि घृतं मधु॥" **आश्वलायनः**-"ऋषिदेवतच्छन्दांसि प्रणवं ब्रह्मयज्ञके । मन्त्रादौ नोच्चरेच्छ्राद्धे यागकालेऽपि चैव हि ॥" **श्रावणीपद्धतौ**-" स्वरवर्णलयोपेतं मन्त्रस्थानक्रियान्वितम् । वेदमेवं पठेद्यस्तु स्वाध्यायफलमश्नुते ॥" **शौनकः**-"ॐकारं व्याहृतीस्तिस्रो गायत्रीं त्रिपदां तथा । मनसैवमनुस्मृत्य वेदादिकमुपक्रमेत् ॥" **मनुः**-"वेदोपाकरणे चैव स्वाध्याये चैव नैत्यके । नानुरोधोऽस्त्यनध्याये होममन्त्रेषु चैव हि॥ नैत्यके नास्त्यनध्यायो ब्रह्मसत्रं हि तत्स्मृतम् ॥" **स्मृतिमहार्णवे**-"अन्वाधाने ऋषिच्छंन्दौ यजुषां नैव कारयेत् ॥ " **पारस्करगृह्यसूत्रे हरिहरभाष्ये**-"स्वाहा कुर्यान्न मन्त्रास्ते न चैव जुहुयाद्धविःस्वाहाकारेण हुत्वाऽग्नौ पश्चान्मन्त्रं समापयेत् ॥ " **कृष्णभट्टीये**-" न च स्मरेदृषिच्छंन्दौ श्राद्धे वैतानिके मखे । अग्निहोत्रे वैश्वदेवे विवाहादिविधौ तथा ॥ होमकाले न दृश्यंते प्रायश्छन्दर्षिदेवताः । शांतिकादिषु कार्येषु मन्त्रपाठजपादिषु ॥ होमे नैव प्रकर्तव्याः कदाचिदृषिदेवताः ॥ " **होलिरभाष्ये**-"ॐकारसंज्ञं त्रिगुणं त्र्यक्षरं च त्रिदैव तम् । त्रिब्रह्मेति त्रिषु स्थानं विकल्पं त्रिप्रतिष्ठितम् ॥ " **आपस्तम्बः**-"तस्मादोमि त्युदाहृत्य यज्ञदानतपः क्रियाः । प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ॥ त्रिमात्रस्तु प्रयोक्तव्यः कर्मारम्भेषु सर्वशः ।तिस्रः सार्धाश्च कर्तव्या मात्रास्तत्त्वार्थचिन्तकैः॥" **शौनकः**-"मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदस्त्रिगुणो यत्र पठ्यते । यजुर्वेदः स विज्ञेयो ह्यन्ये शाखान्तराः स्मृताः ॥ "

**ऋषिच्छन्दःप्रभृति, छन्दोगब्राह्मणम्**-" यो हि वाऽर्थोऽविदितार्षेयच्छन्दोब्राह्मणविनियोगो ब्राह्मणेन मन्त्रेण याजयति,

---

१ सर्वे सान्ता अदन्ता इत्युभियुक्तोक्त्या छन्दःशब्दस्यादन्तत्वेन निर्देशः । एवमेवान्यत्रापि । २ ' अ, उ, म्' इत्येवं त्र्यक्षरः ओंकारः । तत्राक्षरत्रयमेव सत्त्वादिगुणत्रयं विष्ण्वादिदेवत्रयमृगादिदेवदत्रयं लोकत्रयं स्त्यादियुगत्रयं चेति अभेदाध्यसमायेनेदं वचनम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अध्यापयाते, स्थाणुं गच्छति, गर्तं वा प्रतिपद्यते, वा प्रमीयते, पापीयान् भवति, यातयामान्यस्य छन्दांसि भवन्ति, अथ यो मन्त्रे वेद स सर्वमायुर्वेत्ति, अयातयामान्यस्य छन्दांसि भवन्ति, तस्मान्मन्त्रे विद्यादिति ॥" व्यासः--"अविदित्वा ऋषिं छन्दो दैवतं योगमेव च। योऽध्यापयेद्याजयेद्वा-पापीयान् जायते तु सः ॥" मन्त्रर्षिः, योगियाज्ञवल्क्यः--" येन यो ऋषिणा दृष्टो मन्त्रः सिद्धिश्च तेन वै। मन्त्रेण तस्य स प्रोक्त ऋषिभावस्तदा त्मकः ॥" छन्दः--" छादनाच्छन्द उद्दिष्टं वाससी वाऽथवा कृते। आत्मा तु च्छादितो देवि मृत्योर्भीतैस्तु पै पुरा। आदित्यैर्वसुभी रुद्रैस्तेन च्छन्द इति स्मृतम् ॥" देवताः--" यस्य यस्य च मन्त्रस्य प्रोद्दिष्टा या च देवता। तदाकारं भवेत्तस्य दैवतं देवतोच्यते ॥" विनियोगः--" पुराकल्पे समुत्पन्ना मन्त्राः कर्माथमेव च। अनेनेदं तु कर्तव्यं विनियोगः स उच्यते ॥ निरुक्तं यत्तु मन्त्रस्य समुत्पत्तिः प्रयोजनम्। प्रतिष्ठानं स्तुतिश्चैव ब्राह्मणं चाभिधीयते ॥ एवं पञ्चविधं योगं जपकाले त्वनुस्मरेत्। होमे वाऽन्तर्जले योगे स्वाध्याये याजने तथा ॥"एवं च मन्त्राणामृषिच्छन्दोदेवताविनियोगा अवश्यं ज्ञातव्या इत्युक्तम्॥

ॐकारपूर्वकत्वमुक्तम्, छन्दोगपरिशिष्टे--" ॐकारपूर्वं हि योगोपासनं यानि नित्यानि पुण्यतमानि कर्माणि दानयज्ञतपःस्वाध्यायजपध्यानसंध्योपासनप्राणायामहोमदेवपैत्र्यमन्त्रोच्चारणब्रह्मारम्भादीनियच्चान्यत्किञ्चिच्छ्रेयस्तत्सर्वं प्रणयमुच्चार्य प्रवर्तयेत्। समापयेच्च। स्वरितोदात्त एकाक्षर ॐकारो ऋग्वेदे। सर्वोदात्त एकाक्षर ॐकारो यजुर्वेदे। दीर्घोदात्त एकाक्षर ॐकारः साम्नि। संक्षितोदात्त एकाक्षर ॐकारोऽथर्वणवेदे॥" वाचस्पतौ तु --ॐकारस्य ब्रह्मविष्णुरुद्र रूपत्वमुक्तम्॥बौधायनः--"अपि वा प्रणवमेव त्रिरन्तर्जले पठन्सर्वपापात् प्रमुच्यते सर्वपापात्पूतो भवति ॥"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**ॐकारफलम्, योगियाज्ञवल्क्यः**—"माङ्गल्यं पावनं धन्यं सर्वकामप्रसाधनम्। ॐकारं परमं ब्रह्म सर्वमन्त्रेषु नायकम्॥ यथा पर्णं पलाशस्य शंकुनैकेन धार्यते। तथा जगदिदं सर्वमोङ्कारेणैव धार्यते॥ सिद्धानां चैव सर्वेषां वेदवेदान्तयोस्तथा। अन्येषामपि शास्त्राणां निष्ठार्थोङ्कार उच्यते॥ आद्यं मन्त्राक्षरं ब्रह्म त्रयी यस्मिन् प्रतिष्ठिता। सर्वमन्त्रप्रयोगेषु ओमित्यादौ प्रयुज्यते। तेन सम्परिपूर्णाणि यथोक्तानि भवन्ति हि। सर्वमन्त्राधियज्ञेन ॐकारेण न संशयः तत्तदोङ्कारयुक्तेन मन्त्रेण सफलं भवेत्॥"

**अथाऽशौचे कर्मत्यागविचारः कात्यायनः**—"सूतके कर्मणां त्यागः सन्ध्यादीनां विधीयते। होमः श्रौते च कर्तव्यः शुष्कान्नेनाथवा फलैः।" **अत्र मिताक्षरा**—"सूतके कर्म्मणां त्यागः सन्ध्याऽऽदीन विधीयते।" इति यद्यपि सन्ध्याया विनिवृत्तिः श्रूयते तथाऽप्यञ्जलिप्रक्षेपादिकं कुर्यात्। सूतके सावित्र्या चाञ्जलिं प्रक्षिप्य प्रदक्षिणं कृत्वा सूर्यं ध्यायन्नमस्कुर्यात्। इति **पैठीनसिस्मरणात्**। यद्यपि 'वैतानोपासनाः कार्याः' इति सामान्येनोक्तं तथाऽप्यन्येन कारयितव्यम्। 'अन्यएतानिकुर्युः' इति **पैठीनसिस्मरणात्**। **जाबालिः**"जन्महानौ वितानस्य कर्मत्यागो विधीयते। शालाग्नौ केवलो होमः कार्य एवान्यगोत्रजैः॥ सन्ध्यां पञ्च महायज्ञानैत्यकं स्मृतिकर्म च। तन्मध्ये हाथयेत्तेषां दशाहान्ते पुनः क्रियाः॥" **मनुः**-"उभयत्र दशाहानि कुलस्यान्ने न भुज्यते। दान प्रतिग्रहो होमः स्वाध्यायश्च निवर्तते॥ शुध्येद्विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः। वैश्यः पञ्चदशाहेन शूद्रो मासेन शुद्धयति॥" **यमः**-"सूतके च कुलस्यान्नमभोज्यं मनुरब्रवीत्। एकादशेऽन्हि कुर्यात्तु दानमध्ययनं तपः॥" **पराशरः**-"एकाहाद्ब्राह्मणः शुध्येद्योऽग्निवेदसमन्वितः। त्र्यहात्केवलवेदज्ञो निर्गुणो दशभिर्दिनैः॥" **आन्हिककारिकासु**-"देशान्तरे मृतं श्रुत्वा गोत्रिणं च स्वबान्धवम्। स्वगोत्री शुध्यते सद्यो मातापित्रोर्दशाहकम्॥ यदि गर्भविपातश्च जायते मासस्रङ्क्षया।

---

१ निष्ठाऽर्थोङ्कार इत्यत्र सन्धिरार्षः। अन्यथा निष्ठाऽर्थ ओङ्कार इत्येव साधुः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


यावन्मासस्थितो गर्भस्तावद्यामाश्च सूतकम् । आचतुर्थाद्भवेत्स्राव पातः पञ्चम-षष्ठयोः । अत उर्ध्वं प्रसूतिः स्याद्दशाहं सूतकं भवेत् ॥ अजा गावो महिष्यश्च ब्राह्मणी च प्रसूतिका । दशरात्रेण शुध्यन्ति भूमिष्ठं च नवोदकम् ॥ ग्राममध्ये मृतः कश्चिन्नरो नारी चतुष्पदः । न कुर्यादन्नपानं च मृतो यावन्न नीयते ॥ अपां मध्ये गवां गोष्ठे विवाहे यज्ञमण्डपे । राहोर्दर्शनकालस्य सूतकं न विधीयते ॥ " **वैयाघ्र पादः**–" स्मार्तकर्म्मपरित्यागो राहोरन्यत्र सूतके । श्रोते कर्म्मणि तत्कालं स्नात शुद्धिमवाप्नुयात् ॥ "

**षोडश संस्काराः, संस्कारभास्करे**–" गर्भाधानमतश्च पुंस-वनकं सीमन्तजाताभिधे नामाख्यं सह निष्क्रमेण च तथाऽन्नप्राशनं कर्म च । चूडाख्यं व्रतबन्धकोऽप्यथ चतुर्वेदव्रतानां परः केशान्तः सविसर्गकः परिणयः स्यात् षोडशी कर्मणाम् ॥ "

**नित्याचाराः, वसिष्ठः**–आचारः परमो धर्मः सर्वेषामिति निश्चयः हीनाचारः परीतात्मा प्रेत्य चेह विनश्यति ॥ नैनं तपांसि न ब्रह्म नाग्निहोत्रं न दक्षिणा । हीनाचाराश्रितं भष्टं तारयन्ति कथञ्चन ॥ तपोदानोपवासेषु व्रतेषु नियमेषु च इज्याध्ययनधर्मेषु योऽनासक्तः स निष्क्रियः॥" **पराशरः**– " संन्ध्यां स्नानं जपो होमः स्वाध्यायो देवतार्चनम् । वैश्वदेवातिथेयश्च षट् कर्माणि दिने दिने ॥" **दक्षः**–"आचारः प्रथमो धर्म इत्युक्तःस्मार्त एव च । तस्मादेतत्समायुक्तं गृहीयादात्मनो द्विजः॥ आचाराल्लभ्यते पूजा आचाराल्लभ्यते पूजा । आचारादन्नमक्षय्यं तदाचारस्य लक्षणम् ॥आचारात्प्राप्यते स्वर्ग आचारा-त्प्राप्यते सुखम् । आचारात्प्राप्यते मोक्ष आचारात्किं न लभ्यते ॥" **तस्मात्**– "चतुर्णामपि वर्णानामाचारो धर्मपालनम् । आचारभ्रष्टदेहानीं भवेद्धर्मः पराङ्-मुखः ॥ दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति निन्दितः । दुःखभोगी च सततं रोगी चाल्पायुषी भवेत् ॥" **दक्षः**–"अनाश्रमी न तिष्ठेत् दिनमेकमपि द्विजः आश्रमेण विना तिष्ठन्प्रायश्चित्ती भवेद्द्विजः ॥ **एवं च** ब्रह्मचर्यगार्हस्थ्यवान-

---

१ आर्षोऽयं प्रयोगः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



प्रथमसंन्यासान्यतराश्रमभाक्त्वेव सर्वदा द्विजेन भवितव्यमित्युक्तम् । **विष्णुपुराणेः**-"यत्कृते दशभिर्वर्षैस्त्रेतायां हायनेन[1] यत् । द्वापरे यच्च मासेन अहोरात्रेण तत्कलौ ॥ तपसो ब्रह्मचर्यस्य जपादेश्च फलं द्विजः । प्राप्नोति पुरुषस्तेन कलिमाप्नोति मानवः ॥ **कपर्दिकायाम्**-" यत्त्रैविद्यात्मकं कर्म श्रोतं तदभिधीयते । श्रुतिस्मृत्यात्मकं कर्म स्मार्तं चैव उदुच्यते ॥ याजुर्वेद्यो मखेऽध्वर्युर्होता ऋक्छाखिकास्तथा । उद्गाता सामवेदी च श्रौतं कर्म त्रिधा स्मृतम् ॥ "

**सर्वकर्म्मसिद्ध्यर्थं संकल्पावश्यकता, यजुःसंहितायाम्**-"अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि । इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि ।" **तथा ब्राह्मणे** "सत्यं देवा अनृतं मनुष्याः" इति ॥ **बृहद्यमः**-"संकल्प च यथा कुर्यात्स्नानदानव्रतादिके । अन्यथा पुण्यकर्माणि निष्फलानि भवन्ति च" ॥ **मार्कण्डेयः** "संकल्पमूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः। व्रतं नियमधर्मौ च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः ॥" **ऋषिभट्टीये**-"संकल्पश्चेन्मनसि मननं प्रोक्तरीत्याऽथ वाचा व्याहर्तव्य तदनु च करेणाम्बुसेकस्त्रिधेति वाङ्मात्रेण त्वरितकरणे केचिदिच्छन्ति चाम्बुक्षेपस्थानेऽञ्जलिमुपदिशन्त्यन्य एष्विष्ट आद्यैः[2] ॥ **संकल्पश्च**-"संकल्पः कर्म मानसम् इत्यमरोक्त्या मनःकल्पनाविशेषः । अत एव "तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु" इत्यादावपि मनसः शिवसंकल्पत्व प्रार्थितम् ।

**सामवर्तनोत्तरं ब्राह्मणस्य सदावर्तनम्, पारस्करगृह्यसूत्रे**-"स्नातस्य यमान्वक्ष्यामः । कामादितरः । नृत्यगीतवादित्राणि न कुर्यान्न च गच्छेत् । "कामं तु गीतं गायति वैव गीते वा रमते" इति श्रुतेर्ह्यपरम् । क्षेमे नक्तं ग्रामान्तरं न गच्छेन्न च धावेत् । उदपानावेक्षणवृक्षारोहणफलप्रपतनसन्धिसर्पणविवृतस्नानविषमलंघनशुष्कवदनसन्ध्यादित्यप्रेक्षणभैक्षणानि न कुर्यात् । "न ह वै स्नात्वा भिक्षेताप ह वै स्नात्वा भिक्षां

---

१ हायनेन संवत्सरेण । २ आद्यः संकल्पः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



जयति" इति श्रुतेः। वर्षत्यप्रावृतो व्रजेदयं मे वज्रः पाप्मानमपहनादिति।अप्स्वात्मानं नावेक्षेत।अर्जीतलोम्नीं विपुञ्जीं षण्ढञ्च नोपहसेत्। गर्भिणीं विजन्येति ब्रूयात्। सकुल मिति नकुलम्। भगालमिति कपालम्। मणिधनुरितीन्द्रधनुः। गां धयन्ती परस्मै ना चक्षीत। उर्वरायामनन्तर्हितायां भूमावुत्सर्पंस्तिष्ठन्न मूत्रपुरीषे कुर्यात्॥ स्वयं प्रशीर्णेन काष्ठेन गुदं प्रमृजीत। विकृतं वासो नाच्छादयीत। दृढव्रतो वधत्रः स्यात्सर्वत आत्मानङ्गोपायेत्सर्वेषां मित्रमिव॥२—७॥ तिस्रो रात्रीर्व्रतं चरेत्॥ अमाꣳसाऽममृन्ममृपायी। स्त्रीशूद्रशवकृष्णशकुनिश्वनां चादर्शनमसम्भाषणं च तैः। शवशूद्रसूतकान्नानि च नाद्यात्। मूत्रपुरीष ष्ठीवनं चातपे न कुर्यात्सूर्यं चात्मानं नान्तर्दधीत। तप्तेनोदकार्थान्कुर्वीत। अवज्योत्य रात्रौ भोजनम्। सत्यवदनमेव वा। दीक्षितोऽप्यातपादीनि कुर्यात्प्रवर्ग्यवाꣳश्चेत्॥ २-८॥"

नित्यकर्मविधौ संक्षेपेण कारिकाः, वाचस्पतौ दक्षः—"प्रातरूत्थायकर्तव्यं यद्द्विजेन दिनेदिने।तत्सर्वंसम्प्रवक्ष्यामि द्विजानामुपकारकम्॥ उदयास्तमयं यावन्न विप्रः क्षणिको भवेत्। नित्यनैमित्तिकैर्मुक्तः काम्यैश्चान्यैरगर्हितै॥ यः स्वकर्म परित्यज्य यदन्यत्कुरुते द्विजः। अज्ञानाद्यदि वा मोहात्स तेन पतितो भवेत्॥ दिवसस्याद्यभागे तु कृत्यं तस्योपदिश्यते। द्वितीये च तृतीये च चतुर्थे पञ्चमे तथा॥ षष्ठे च सप्तमे चैव अष्टमे च पृथक् पृथक्। विभागेष्वेषु यत्कर्म तत्प्रवक्ष्याम्यशेषतः" इति॥ अत एव भगवानपि गीतायामर्जुनं प्रत्याह—"स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्म्मो भयावहः।" इति

अन्हः—प्रथमभागे कर्तव्यनिर्देशः—कारिकाः, वाचस्पतौ दक्षः—"उषःकाले तु सम्प्राप्ते शौचं कृत्वा यथार्थवत्। ततः स्नानं प्रकुर्वीत

१ अह्नो हि यावत्प्रमाणस्याष्टौ भागास्तेषु प्रथम भाग इत्यर्थः॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



दत्तधावनपूर्वकम् ॥ सन्ध्यायां च प्रभाते च मध्याह्ने च ततः पुनः । सन्ध्यां चोपासते ये तु ब्राह्मणा हि विशेषतः ॥ सन्ध्याकर्मावसाने तु स्वयं होमो विधीयते स्वयं होमे फलं यत्तु तदन्येन न जायते॥ऋत्विक् पुत्रो गुरुर्भ्राता भागिनेयोऽथ विट्पतिः । एभिरेव हुतं यत्तु तद्धुतं स्वयमेव हि ॥ देवकार्य ततः कृत्वा गुरु-मंगलवीक्षणम् । देवकार्याणि पूर्वाह्णे मनुष्याणां च मध्यमे ॥ पितृणामपराह्णे च कार्याण्येतानि यतत्नः । पौर्वाह्णिक तु यत्कर्म यदि तत्सायमाचरेत् ॥ न तस्य फलमाप्नोति वन्ध्यास्नीमैथुनाद्यथा । दिवसस्याद्यभागे तु सर्वभेतद्विधीयते ॥"

**प्रातरूत्थानकालः, मनुः**—ब्राह्मे मुहूर्ते बुद्धयेत धर्मार्थावनुचिन्तयेत् । कायक्लेशांश्च तन्मूलान्वेदतत्त्वार्थमेव च ॥" ( वेदतत्त्वार्थ ईश्वरः )

**ब्राह्ममुहूर्तः,विष्णुपुराणे**—"रात्रे पाश्चिमयामस्य मुहूर्तो यस्तृतीयकः । स ब्राह्म इति विज्ञेयो विहितः स प्रबोधने॥पञ्चपञ्चउषःकाल सप्तपञ्चारुणोदयः अष्टपंच भवेत्प्रातस्ततः सूर्योदयः स्मृतः ॥"

**धन्वन्तरिः**-'धर्मार्थिकामप्रीत्यर्थं सतां ग्रहणमुत्तमम् । प्राप्नुयात्स्वर्गवासं च नित्यमेव समाचारेत् ॥

**प्रातरुत्थानाभावे दोषः, रत्नावल्याम्**—"ब्राह्मे मुहूर्ते या निद्रा सा पुण्यक्षयकारिणी । तां करोति द्विजो मोहात्पादकृच्छ्रेण शुद्धयति ॥"

**ईश्वरनामोच्चारणम्, व्यासः**—" हे जिह्वे रससारज्ञे सर्वदा मधुरप्रिये ? नारायणाख्यपीयूषं पिब जिह्वे निरन्तरम् ॥ त्रैलोक्यचैतन्यमयाद्य देव श्रीनाथ विष्णो भवदाज्ञयैव । प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये ॥ सुप्तः प्रबोधितो विष्णो हृषीकेशेन यत्त्वया । यद्य कारयसे कर्म तत्करोमि तवाज्ञया ॥" तस्मान्नारायण, रामकृष्ण, राधाकृष्ण, गौरीशंकर, विष्णो, गजानन, सच्चिदानन्द इत्यादि नामस्मरणं नित्यमेव कर्तव्यम् ।

**उत्थानोत्तरं कर्त्तव्यमाह कात्यायनः**—" उत्थाय नेत्रे प्रक्षाल्य शुचिर्भूत्वा समाहितः । परिजप्य च मन्त्रेण प्रकुर्याद्दन्तधावनम् ॥"

**अङ्गिराः**—"उत्थाय पश्चिमे रात्रे तत आचम्य चोदकम् । मुखशुद्ध्यर्थमादौ तु गण्डूषत्रितयं चरेत् ॥"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**स्वकरतलाद्यवलोकनम्, आचारप्रदीपेः**—" कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती । करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम् ॥ " इदं च करतलदर्शनं सर्वापेक्षया प्राथमिकम् ॥

**प्रातःकाले दर्शनीयपदार्थानाहाचारप्रदीपे नागदेवः**—"श्रोत्रियं सुभगां गां च अग्निमग्निचितं तथा । प्रातरुत्थाय यः पश्येदापद्भ्यः स प्रमुच्यते " ॥ **अन्यच्चः**—" भारद्वाजमयूराणां चाषस्य नकुलस्य च । प्रभाते दर्शनं श्रेष्ठं वामपृष्ठं विशेषतः ॥ "

**प्रातःकाले दर्शनायोग्यान्पदार्थानाह, नागदेवः**—" पापिष्ठं दुर्भगं चान्धं नग्नमुत्कृत्तनासिकम् । प्रातरुत्थाय यः पश्येत्तत्कलेरुपलक्षणम् ॥ भल्लातकं कर्पफलं काकमार्जारमूषकान् । क्लीबं च गर्दभं चैव न पश्येत् प्रातरेवहि।"

**भूमिस्पर्शनम्, मदनपारिजाते**—"समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यंपादस्पर्शं क्षमस्व मे॥" पर्य्यङ्कमुत्सृज्य यदा हस्तादिक्षालनार्थमपि गन्तुमिच्छेत्तदा पृथिवीं निरुक्तेन मन्त्रेण प्रथमं प्रार्थयेदित्यर्थः ।

**प्रातरुत्थानानन्तरं नद्यादौ जलग्रहणप्रकारः, व्यासः**—' सरित्सरःसु वापीषु गर्तप्रस्रवणादिषु । स्नायात्प्रथममुद्धृत्य पञ्च पिण्डांस्तु वारिणा॥" **नागदेव**—"अभावे कूपवादीनामनपाये पयोभृताम्। रजोदुष्टेऽपि पयसि उपभोगे न दुष्यति । तस्मात्प्रथमुद्धृत्य जलं भूम्यां परित्यजेत् ॥ "

**विण्मूत्रोत्सर्गविधिः, पारस्कर गृह्यसूत्रेः**-"तिष्ठन्न मूत्रपुरीषे कुर्यात् । स्वयं प्रशीर्णेन काष्ठेन गुदं प्रमृजीत । विकृतं वासो नाच्छादयीत ॥ २ । ८ । १५ ॥ मूत्रपुरीषे ष्ठीवनं चातपेन कुर्यात ॥ २ । ८ । ५ ॥ "

**शौचावश्यता, दक्षः**—" शौचे यत्नः सदा कार्यः शौचमूलो यतो द्विजः । शौच चारविहीनस्य समस्ता निष्फलाः क्रियाः ॥" **व्याघ्रपादः**—" शौचं तु द्विविधं प्रोक्तं बाह्यमाभ्यन्तरं तथा । मृज्जलाभ्यां स्मृतं बाह्यं भावशुद्धं तथाऽऽन्तरम् ॥" **वृद्धपराशरः**—" कृत्वाऽथ शौचं प्रक्षाल्य हस्तौ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पादौ च मृज्जलं । निबद्धशिखाकच्छस्तु द्विज आचमनं चरेत् ॥" **औशनसः**-" अकृत्वा पादयोः शौचमाचान्तोऽप्यशुचिर्भवेत् । सोपानत्को जलस्थो वा नोष्णीषी वाऽऽचमेद् बुधः ॥ "

**शौचस्थलम्, आङ्गिराः**—"अयज्ञियैरनादैश्च तृणैः संछाद्य मेदिनीम् । कुर्यान्मूत्रपुरीषे तु शुचौ देशे समाहितः ॥ " **बोधायनः**—" देशं कालं तथाऽऽत्मानं द्रव्यं द्रव्यप्रयोजनम् । उपपत्तिमवस्थां च ज्ञात्वा शौचं विधीयते॥ दश हस्तांपरित्यज्य मूत्र कुर्याज्जलाशये । शतहस्तांपुरीषार्थे तीर्थे नद्यां चतुर्गुणम् ॥ अवकृष्य च विण्मूत्र काष्ठलोष्टतृणादिना । उदस्तवासा । उत्तिष्ठेद दृढे विधृतमेहनः॥ धाराशौचं न कुर्वीतशौचशुद्धिमभीप्सता । चुलकैरेव कर्तव्यं हस्तशुद्धिविधानतः । तीर्थेशौचं न कुर्वीत कर्वीतोद्धृतवारिणा ॥ " एतच्च स्वच्छन्दलभ्यमेव देशमपेक्ष्योक्तम् । अन्यथा तु यथासम्भवम् ॥

**शौचे उक्ता दिशः, पराशरः**—" ततः प्रातः समुत्थाय कुर्याद्विण्मूत्रमेव च । नैर्ऋत्यामिषुविक्षेपादतीत्याभ्यधिकं भुवः ॥" **यमः**"प्रत्यङ्मुखस्तु पूर्वाह्णेऽपराह्णे प्राङ्मुखस्तथा ॥ उदङ्मुखस्तु मध्याह्ने निशायां दक्षिणामुखः॥" **मनुः**-"छायायामन्धकारे च रात्रावहनि वा द्विजः।यथासुखं मुखं कुर्यात्प्राणबाधामयेषु च ॥ रात्रौ तु गृहेऽपि यथासुखं मुखं कुर्यात् । **औशनसः**-'शौचे च सुखमासीनः प्राङ्मुखो वाप्युदमुङ्मुखः ॥ शिरः प्रावृत्य कर्णं वा मुक्तकच्छशिखोऽपि वा ॥" विण्मूत्रत्यागावसरे मौनमावश्यकमिति प्रागुक्तम् ॥

**शौचे उपवीतधारणप्रकारः, अमरः**—" उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्धृते दक्षिणे करे । प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम् ॥ **आह्निककारिका**—" मूत्रे तु दक्षिणे कर्णे पुरीषे वामकर्णके । उपवीतं सदा धार्यं मैथुने तूपवीतिवत् ॥" **आङ्गिराः**—"कृत्वा यज्ञोपवीतं तु पृष्ठतः कण्ठलम्बितम् । विण्मूत्रे तु गृही कुर्याद्वामकर्णे समाहितः" ॥ **सायणः**—"मलमूत्रे

---

१ अयज्ञियैरिति-यज्ञानर्हैः, यज्ञार्थमनानीतैश्च । एवं च तृणानां कुशेतरत्वमुक्तम् ।
२ अन्यथा मूत्रकणपातस्पर्शः स्यात् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्यजेद्विप्रो विस्मृत्यैवोपवीतधृत्। उपवीतं तदुत्सृज्य धार्यमन्यन्नवं तदा ॥" **बोधायनः**—" सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्धशिखेन च। विशिखो व्युपवीतश्च यत्करोति न तत्कृतम्॥" **हेमाद्रौ भरद्वाजः**—"दक्षिणं बाहुमुद्धृत्य वामस्कन्धे निवेशितम्। यज्ञोपवीतमित्युक्तं देवैकार्येषु शस्यते ॥"

**शौचे जलपात्रग्रहविचारः, सायणः**—" गृहीत्वा जलपात्रं तु विण्मूत्रं कुरुते यदि। तज्जलं मूत्रसदृशमतश्चान्द्रायणं चरेत्॥" शौचोत्तरमिति शेषः॥

**शौचे मृत्तिकाग्रहणम्, यमः**—"आहरेन्मृत्तिकां विप्रः कुलालात्सिकतां तथा। विप्रे तु शुक्ला ग्राह्योक्ता रक्ता क्षात्रे विधीयते॥ हारिद्रवर्णा वैश्ये तु शूद्रे कृष्णा प्रकीर्तिता॥" सति सम्भव एवायं विशेषः स्थाने। **अन्यथा त्वाह-भृगुः**—" यस्मिन् देशे तु यत्तोयं या च यत्रैव मृत्तिका। सैव तत्र प्रशस्तास्यात् तया शौचं विधीयते ॥"

**शौचे मृत्तिकालेपनम् याज्ञवल्क्यः**—"गृहीतशिश्नश्चोत्थाय मृद्भिरभ्युद्धृतैर्जलैः। गन्धलेपक्षयकरं शौचंकुर्यादतन्द्रितः॥"

**शौचे मृत्तिकाप्रमाणम्, भृगुः**—द्वे लिङ्गे मृत्तिके देये गुदे पंच करे दश। उभयोः सप्त दातव्या विट्छौचे मृत्तिकाः स्मृताः॥ एकं शौचं गृहस्थस्य द्विगुणं ब्रह्मचारिणः। वानप्रस्थस्य त्रिगुणं यतीनां च चतुर्गुणम्॥ यद्दिवा विहितं शौचं तदर्धं निशि कीर्तितम्। तदर्धमातुरे प्रोक्तमातुरस्यार्धमध्वनि॥" **शौनकः**—" आर्द्रामलकमात्रास्तु मूत्रशौचे हि मृत्तिकाः॥" **शातातपः**-"आर्द्रामलकमात्रास्तु ग्रासा इन्दुव्रते यथा। तथैवाङ्गुलयः सर्वाः शौचे देयास्तु मृत्तिकाः॥अंतर्जलाद्देवगृहाद्वल्मीकान्मूषिकाबिलात्। कृतशौचस्थलाच्चैव न ग्राह्याः पञ्च मृत्तिकाः॥" **आदित्यपुराणे**—"स्त्रीशूद्रयोरर्धमानं शौचं प्रोक्तं मनीषिभिः। दिवा शौचस्य निश्यर्धं पथि पादो विधीयते॥आर्तःकुर्याद्यथाशक्ति शक्तः कुर्याद्यथोदितम्।" तथाच, एकवारं गुह्याङ्गे, गुदे द्विवारं त्रिवारं वा, वामे करे

---

१ देवशब्दोऽत्र मनुष्यांस्थाप्युपलक्षणम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पंचवारं, वामदक्षिणयोश्च त्रिवारं चतुर्वारं वा मृत्तिका लेप्येत्येवं स्त्रियाःशूद्रस्य च मृत्तिकाशौचम् । एवमेव यत्कृते यन्मृत्तिकालेपाद्युक्ते तत्तदपेक्षया रात्रौ अर्द्धं तदपेक्षया मार्गेऽर्द्धं तदपेक्षयाऽऽतुरदशायामर्द्धमित्यवसेयम् ॥

**चन्द्रिका**—"पादतले तिस्रो मृत्तिका गुल्फयोश्चतस्रः" इति। "अरण्ये निर्जले रात्रौ चौरव्याकुलिते पथि।कृत्वा मूत्रपुरीषं च द्रव्यैर्हस्तेन शुद्ध्यति ॥ गङ्गातोयेन कृत्स्नाया मृदो भारैश्च गोमयैः । आमृतेराचरञ्शौचं भावदुष्टो न शुद्ध्यति ॥ "

**लिङ्गगुदप्रक्षालनम्, आश्वलायनः**—"लिङ्गशौचं पुरा कृत्वा गुदशौचं ततः परम् ।" **देवलः**—"धर्मविद्दक्षणं हस्तमधःशौचे न योजयेत् । " अधःशौचं गुदलिङ्गयोः क्षालनम् । तथा च वामहस्तेन नाभेरूर्ध्वं न शोचयेत्।' नाभेरूर्ध्वशौचं तु हस्तक्षालनादि ॥

**पाणिपादप्रक्षालनम्, नागदेवः**—"एकैकया मृदा पादौ हस्तौ प्रक्षाल्य यत्नतः । निबद्धशिखकच्छस्तु द्विज आचमनं चरेत् । "

**गण्डूषादिविधिः, नागदेवः**—"मूत्रे पुरीषे भुक्त्यन्ते रेतः प्रस्रवणे तथा । चतुरष्टद्विषड्द्व्यष्टगण्डूषैः शुद्धिमाप्नुयात्॥अन्तर्जानु शुचौ देश उपविष्ट उदङ्मुखः । प्राग्वा ब्राह्मेण तीर्थेन द्विजो नित्यमपः स्पृशेत् ॥ " अपः स्पृशेत्, आचमेदित्यर्थः ॥ **अश्वलायनः**—"कुर्याद्द्वादश गण्डूषान् पुरीषोत्सर्जने ततः मूत्रोत्सर्गे च चतुरो भोजनान्ते तु षोडश ॥ भक्ष्यभोज्यावसाने तु गण्डूषाष्टकमाचरेत् ।" **प्रयोगपारिजाते**—"पुरतः सर्वदेवाश्च दक्षिणे पितरस्तथा । ऋषयः पृष्ठतः सर्वे वामे गण्डूषमाचरेत् ॥ आचरेत्, पातयेदित्यर्थः ।

**कच्छविचारः, संग्रहे**—" वामे पृष्ठे तथा नाभौ कच्छत्रयमुदाहृतम् । त्रिभिः कच्छैः परिज्ञेयो विप्रो यः स शुचिर्भवेत् ॥ " **ग्रन्थान्तरे**—" आदौ कच्छस्ततौ नीवी नाभिमध्ये च वाससी । नीवी दक्षिणतःस्थाप्या एतत् त्रिकच्छलक्षणम् ॥ कच्छेन सहितो विप्रो मूत्रोत्सर्गं करोति चेत् । अज्ञानाज्ज्ञानतौ वापि पादकृच्छ्रेण शुद्ध्यति गुह्यं प्रक्षाल्य सलिलैर्मूत्रोत्सर्गादनन्तरम् ।

---

१ पर्णमृत्तिकादिना इत्यर्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



गण्डूषत्रितयं कृत्वा तेन शुद्धो भवेद्द्विजः ॥ मुक्तकच्छस्तु यो विप्रो धरण्यां पादतश्चरेत् । पदे पदे सुरापानं प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ "

**मौनधारणम्, हारीतः**—"उच्चारे मैथुने चैव प्रस्रावे दन्तधावने । श्राद्धे भोजनकाले च षट्सु मौनं समाचरेत् ॥ " **आङ्गिराः**—" सन्ध्ययोरुभयोर्जाप्ये भोजने दन्तधावने । पितृकार्ये च दैवे च तथा मूत्रपुरीषयोः ॥ गुरूणां सन्निधौ दाने योगे चैव विशेषतः । एतेषु मौनमातिष्ठन्स्वर्गं प्राप्नोति मानवः ॥"

**मुखमार्जनविधिः, पारस्करगृह्यसूत्रे**—" औदुम्बरेण दन्तान् धावेत । " **दन्तधावनमन्त्रः**—" ॐ अन्नाद्याय व्यूहध्वं सोमो राजाऽयमागमत् । स मे मुखं प्रमार्क्ष्यते यशसा च भगेन च " ॥ २ । ६ । १७ ॥ **हरिहरभाष्य**—' औदुम्बरेण द्वादशाङ्गुलसंमितेन कनिष्ठिकाग्रवत् स्थूलेनोदुम्बरकाष्ठेन ' अन्नाद्याय व्यूहध्वम् ' इति मन्त्रेण दन्तान् धावयेत् ।' इति॥

**दन्तधावनावश्यकता, अत्रिः**—" मुखे पर्युषितं नित्यं भवत्यप्रयतो नरः । दन्तधावनमुद्दिष्टं जिह्वोल्लेखनिका तथा ॥ "

**दन्तधावने वनस्पतिप्रार्थना, विश्वामित्रकल्पे**—" आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च । ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते॥"

**दन्तधावने युक्तानि काष्ठानि, नागदेवः**—" करञ्जोदुम्बरौ चूतः कदम्बो लोध्रचम्पकौ ॥ बदरीति द्रुमाश्चैते प्रोक्ता दन्तप्रधावने ॥ " **वाचस्पतिः**— " अथो मुखविशुद्ध्यर्थं गृहीयाद्दन्तधावनम् । आचान्तोऽप्यशुचिर्यस्मादकृत्वा दन्तधावनत् ॥ आम्राम्रातकधात्रीजमङ्कोटखदिरोद्भवम् । शम्यपामार्गखर्जूरीशेलुश्रीपर्णिपीलुजम् । राजादनं च नारङ्गं कषायं कटुकण्टकम् । क्षीरवृक्षोद्भवं वापि प्रशस्तं दन्तधावने ॥ जिह्वोल्लेखनिकांवापि कुर्याच्चाप्राकृतिं शुभाम् । ततः कुर्यात्यत्नेन शुद्धयर्थं दन्तधावनम् ॥ " उक्तदन्तधावन-

---

१ काष्ठमादाय निरुक्तामन्त्रमुच्चार्य काष्ठं मुखे निक्षिपेत् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**काष्ठे गुणाः, नृसिंहपुराणे**—" तिन्तिणिर्वेणुपृष्ठं च आम्रनिम्बौ तथैव च । सर्जे धैर्यं वटे दीप्तिः करञ्जे विजयो रणे ॥ प्लशने चार्थसम्पत्तिर्बदर्या मधुरस्वरः । खादिरे चैव सौभाग्य बिल्वे तु विपुलं धनम् ॥ उदुम्बरे च वाक्सिद्धिर्बधूके च दृढा मतिः । रौध्रे च कीर्तिः सौभाग्यं पालाशे सिद्धिरुत्तमा ॥ कदम्बे सकला लक्ष्मीराम्र आरोग्यमेव च । अपामार्गे स्मृतिर्मेधा प्रजा वाणी वपुर्धृतिः ॥ आयुः शीलं यशो लक्ष्मीः सौभाग्यं चोपजायते । अर्केण हन्ति-रोगां स्तु बीजपूरेण तु व्यथाम् ॥ दाडिमे सिन्दुवारे च उटजे कुटजे तथा । जाती च करमर्दश्च दुःस्वप्नं नाशयैदिति ॥ ककुभेन तथा-ऽऽयुष्मान्भवेत्पलितवर्जितः । तस्माच्छुष्कं तथाऽऽर्द्रं वा भक्षयेद्दन्तधावने ॥" इति । ( काष्ठमिति शेषः । )

**दन्तधावनविधिः, धन्वन्तरिः**—" तत्रादौ दन्तधावनं द्वादशांगुलमायतम् । कनिष्ठिकापरीणाहमृज्वग्रन्थिकमव्रणम् ॥ अयुग्मग्रन्थि यच्चापि प्रत्यग्रं शस्तभूमिजम् । अवेक्ष्यतु च दोषं च रसं वीर्यं च योजयेत् ॥ कषायं मधुरं तिक्तं कटुकं प्रातरुत्थितः । लिम्बश्च तिक्तके श्रेष्ठः कषाये खदिरस्तथा ॥ मधूको मधूरे श्रेष्ठः करञ्जः कटुके तथा । क्षौद्रः व्योषत्रिवर्गाक्तं सतैलं सैन्धवेन च ॥ चूर्णेन तेजोवत्याश्च दन्तान्नित्यं विशोधयेत् । एकैकं धर्षयेद्दन्तं मृदुना कूर्चकेन च ॥ दन्तशोधनचूर्णेन दन्तमासान्यबाधयम् । जिह्वानिर्लेखनं रौप्यं सौवर्णं वार्क्षमेव च ॥ तन्मलापहरं शस्तं मृदु श्लक्ष्णं दशांगुलम् । मुखवैरस्यदौर्गन्ध्यशोपजाड्यहरं परम् ॥ दन्तदाढ्यकरं रुच्यं स्नेहगण्डूषधारणम् । क्षीरवृक्षकषायैर्वा क्षीरेण च विमिश्रितैः ॥ भिल्लोदककषायेण तथैवामलकस्य वा । प्रक्षालयेन्मुखं नेत्रे स्वस्थः शीतोदकेन वा ॥"

**दन्तधावनकाष्ठाभावे आचारार्कः**—" तिन्तिण्यादिविहितवृक्षोद्भवेन चूर्णीकृताग्रेण प्रक्षालितेन शुष्केणार्द्रेण वा दन्तधावनं कुर्यात् ॥ '-**नागदेवः**—" अभावे दन्तकाष्ठस्य प्रतिषिद्धदिने तथा । अपां द्वादशगण्डूषैर्विदध्याद्दन्तधावनम् ॥" यद्वा तृणदर्भोदकैरंगुल्या वा दन्तान्धावयेत् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**दन्तधावने वर्ज्यानि काष्ठानि, गर्गः**-" कुशं काशं पलाशं च निशुपं यस्तु भक्षयेत्। तावद्भवति चाण्डालो यावद्ब्रह्मा न पश्यति ॥ अर्धशुष्कं त्वचाहीनं यत्नेन परिवर्जयेत् पतितं चातिरिक्तं च कीटविद्धं तथैव च ॥" **नागदेवः**-"नाङ्गुलीभिश्च मृद्भिश्च पर्णैर्लोष्टैश्च भस्मना। नामतैश्च तथा लोहैः सदा दन्तान्मृजेद्विजः ॥"

**दन्तधावने काष्ठप्रमाणम्, नागदेवः** दशाङ्गुलं तु विप्राणं क्षत्रियाणां नवाङ्गुलम्। अष्टाङ्गुलं तु वैश्याना शूद्राणां सप्तसंसितम्॥"**गर्गः** "चतुरङ्गुलमात्रं तु नारीणांनात्रसंशयः॥"**विष्णुस्मृतिः**-कनीन्यप्रसमस्यौल्यं सकूर्चद्वादशाङ्गुलम्।प्रातर्भूत्वा च यतवाग्मक्षयेद्दन्तधावने॥" इति।काठपितितिव

**दन्तधावने निषिद्धकालमाह. व्यासः**-"प्रतिपद्दर्शषष्ठीषु तथन्य। रविवासरे। दन्तानां काष्ठसंयोगो दहत्यासप्तमं कुलम् ॥" **आचार्यः**-"अष्टम्योश्च चतुर्दश्योः पञ्चदश्यां त्रिजन्मसु। व्यतीपाते च संक्रान्त्या दन्तकाष्ठं न भक्षयेत् ॥"

**दन्तधावने दिग्विशेषः, विष्णुस्मृतौ**-" प्राङ्मुखस्य धृतिः सौख्यं शरीरारोग्यमेव च। दक्षिणेन तथा कष्टं पश्चिमेन पराजयः ॥ उत्तरेण गवां नाशः स्त्रीणां परिजनस्य च पूर्वोत्तरे तु दिग्भागे सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥" एतदपि सति सम्भव एव ॥

**दन्तघर्षणान्ते गण्डूषविधिः शौनकः**-" पश्चाद्वादशग डूषैर्विदध्याद्दन्तधावनम्। स्मृत्वोङ्कारं च गायत्रीं बध्नीयाद्वै शिखां ततः ॥" एतेन ततः प्राक् कर्त्तव्यं मलत्यागादि निर्मुक्तशिखेनैवेति समर्थितम् ॥

**मुखप्रक्षालनान्तरं देहशुद्धिमाह, व्यासः**-"अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥" अनेन प्रकारेणाद्भिः शरीरं मार्जयेत्।

**मुखप्रक्षालनानन्तरं सूर्यप्रार्थना**-"आदित्यस्य नमस्कारये कुर्वन्ति दिनेदिने। जन्मान्तरसहस्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते ॥"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**मुखप्रक्षालनान्तरं तुलसीप्रार्थना**—' महाप्रसादजननी सर्व सौभाग्यवर्धिनी । आधिव्याधिहरा नित्यं तुलसि त्वं नमोऽस्तु ते ॥"

**मुखप्रक्षालनान्तरं गोप्रार्थना**—"गावो मे अग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः । गावो मे हृदये सन्तु गवा मध्यं वसाम्यहम् ॥"

**प्रातः स्मरणे नारायणस्तुतिः, आचारमयूखे व्यासः**—"प्रातः स्मरामि भवभीतिमहार्तिशान्त्यै नारायणं गरुडवाहनमब्जनाभम् । ग्राहाभिभूतवरधारणमुक्तिहेतुं चक्रायुधं तरुणवारिजपत्रनेत्रम् ॥ प्रातर्नमामि मनसा वचसा च मूर्ध्ना पादारविन्दयुगलं परमस्य पुंसः । नारायणस्य नरकार्णवतारणस्य पारायणप्रवणविप्रपरायणस्य ॥ प्रातर्भजामि भजतामभयङ्करं तं प्राक् सर्वजन्मकृतपापभयापहत्यै । यो ग्राहवक्त्रपतिताङ्घ्रिगजेन्द्रघोरशोकप्रणाशनकरो धृतशंखचक्रः ॥ श्लोकत्रयमिदं पुण्यं प्रातः प्रीतः पठेन्नरः । लोकत्रयगुरस्तस्मै ददात्यात्मपदं हरिः ॥"

**गणेशस्तुतिः, सद्धर्म्मचिन्तामणौ**—"प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं सिंदूरपूरपरिशोभितगण्डयुग्मम् । उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्डमाखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम् ॥ प्रातर्नमामि चतुराननवन्द्यमानमिच्छानुकूलमखिलं च वरं ददानम् । तं तुन्दिलं द्विरसनाधिपयज्ञसूत्रं पुत्रं विलासचतुरं शिवयोः शिवाय ॥ प्रातर्भजाम्यभयदं खलु भक्तशोकदावानलं गणविभुं वरकुञ्जरास्यम् । अज्ञानकाननविनाशनहव्यवाहमुत्साहवर्धनमहं सुतपीश्वरस्य ॥ श्लोकत्रयमिदं पुण्यं सदा साम्राज्यदायकम् । प्रातरुत्थाय सततं यः पठेत्प्रयतः पुमान् ॥"

**सूर्यस्तुतिः, सद्धर्म्मचिन्तामणौ**—"प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि । सामानि यस्य किरणाः प्रभवदिहेतु ब्रह्मोहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम् ॥ प्रातर्नमामि तरणिं तनुवाङ्मनोभिर्ब्रह्मेन्द्र-

---

१ ब्रह्मा च अः (विष्णुः) च हरश्चेत्येते आत्मानो यस्य तमित्यर्थः । अन्यथा छन्दोभंगो भवेत् । 'अकारो वासुदेवः स्यात्' इत्येकाक्षरकोशः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पूर्वविबुधैर्नुतमार्चितं च । वृष्टिप्रमोचनविनिग्रहहेतुभूतं त्रैलोक्यपालनपरं त्रिगुणात्मकं च ॥ प्रातर्भजामि सवितारमनन्तशक्तिं पापौघशत्रुभयरोगहरं परं च । तं सर्वलोककलनात्मककालमूर्त्तिं गोकण्ठबन्धनविमोचनमादिदेवम्॥श्लोकत्रयमिदं मानोः प्रीतः प्रातः पठेत्तु यः । स सर्वव्याधिनिर्मुक्तः परं सुखमवाप्नुयात् ॥"

**देवीस्तुतिः, सद्धर्म्मचिन्तामणौ**—" प्रातः स्मरामि शरदीन्दुकरोज्ज्वलाभां सद्रन्तवन्मकरकुण्डलहारभूषाम् । दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तां रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं परेशाम् ॥ प्रातर्नमामि महिषासुरचण्डमुण्डशुम्भासुरप्रमुखदैत्यविनाशदक्षाम् । ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिमोहनशीललीलां चण्डीं समस्त सुरमूर्तिमनेकरूपाम् ॥ प्रातर्भजामि भजतामभिलाषदात्रीं धात्रीं समस्तजगतां दुरितापहन्त्रीम् । संसारबन्धनविमोचनहेतुभूतां मायां परामधिगतस्य परस्य विष्णोः ॥ श्लोकत्रयमिदं देव्याश्चण्डिकायाः पठेन्नरः । सर्वान्कामानवाप्नोति विष्णुलोके महीयते ॥ "

**शिवस्तुतिः, सद्धर्म्मचिन्तामणौ**—" प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं गङ्गाधरं वृषभपाहनमम्बिकेशम् । खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ प्रातर्नमामि गिरिशं गिरिजार्धदेहं सगस्थितिप्रलयकारणमादिदेवम् । विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोभिरामं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं वेदान्तवेद्यमनवं पुरुषं महान्तम् । नामादिभेदरहितं च विकारशून्यं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ प्रातः समुत्थाय शिवं विचिन्त्य श्लोकत्रयं येऽनुदिनं पठन्ति । ते दुःखजात बहुजन्मसञ्चितं हित्वा पदं यान्ति तदेव शम्भोः ॥ "

**रामस्तुतिः, आह्निककर्म्मप्रकाशे**--"प्रातः स्मरामि रघुनाथ,मुखारविन्दं मन्दस्मितं मधुरभावि विशालभालम् । कर्णावलम्बिचलकुण्डलशोभिगण्डं कर्णान्तदीर्घनयनं नयनाभिरामम् ॥ प्रातर्भजामि रघुनाथकरारविन्दं रक्षोगणाय भयदं वरदं निजेभ्यः। यद्राजससदि विभज्य महेशचापं सीताकरग्रहणमङ्गलमाप सद्यः ॥ प्रातर्नमामि रघुनाथपदारविन्दं वज्रांकुशादिशुभरेखि सुखावहं मे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



योगीन्द्रमानसमधुव्रतसेव्यमानं शापापहं सपदि गौतमधर्मपत्न्याः ॥ प्रातर्वदामि वचसा रघुनाथनाम वाग्दोषहारि सकलं शमलं निहन्ति । यत्पार्वती स्वपतिना सह मोक्षकामा प्रीत्या सहस्रहरिनामसमं जजाप ॥ प्रातः श्रये श्रुतिनुतां रघुनाथमूर्त्ति नीलाम्बुदोत्पलसितेतररत्ननीलाम् । आमुक्तमौक्तिकविशेषविभूषणाढ्यां ध्येयां समस्तमुनिभिर्जनमुक्तिहेतुम् ॥ यः श्लोकपञ्चकमिदं प्रयतः पठेद्धि नित्यं प्रभातसमये पुरुषः प्रबुद्धः । श्रीरामकिङ्करजनेषु स एव भूत्वा प्रयाति हरिलोकपनन्यलभ्यम् ॥ ”

**हनुमत्स्तुतिः**-“प्रातः स्मामि हनुमत्समन्तवीर्यं श्रीरामचन्द्रचरणाम्बुजचञ्चरीकम् । लङ्कापुरी दहननन्दितदेयवृन्दं सर्वार्थसिद्धिसदनं प्रथितप्रभावम् ॥ प्रातर्नमामि वृजिनार्णवतारणैकाधारं शरणमुदितानुपमप्रभावम् । सीताऽऽविसिन्धुपरिशोषकर्म्मदक्षं वन्दारुकल्पतरुभ्याञ्जनेयम् । प्रातर्भजामि शरणोसृतास्विलार्त्तिपुञ्जघ्रणाशनविधौ प्रथितप्रतापम् । अक्षान्तकं सकलराक्षसवंशधूपकेतुं प्रमोदितविदेहसुतं दयालुम् ॥ प्रातरुत्थाय यो नित्यं हनुमन्तं स्मरन् हृदा । पठन् श्लोकत्रयं विष्वम् विजयं लभते नरः ॥ ”

**ब्रह्मस्तुतिर्वामनपुराणे** “ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरांतकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च । गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥”

**ऋषिस्तुतिः**-“भृगुर्वसिष्ठः क्रतुरङ्गिराश्च मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः । रैभ्यो मारीचिश्च्यवनश्च दक्षः कर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥ सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोऽप्यासुरीपिङ्गलौ च । सत स्वराः सत रसातलानि कुर्वन्तुं सर्वे मम सुप्रभातम् ॥ सप्तार्णवाः सप्त कुलाचलाश्च सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त । भूरादिकृत्वा भुवनानि सप्त कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभा

---

५ ‘भोक्तुकामा’ इति पाद्मपुराणानुसारेण पाठः । तत्र च भोक्तुमुपविष्टेन शम्भुनाऽऽहूता पार्वती ‘इदानीं सहस्रनाम पठामि, पठित्वा आगच्छामि, इत्युक्तवती । तदा शिवेनोक्तम्, सहस्रनामसमफलमिदं रामनाम, अतः तदेव पठित्वा शीघ्रमागच्छ’ इति । अनन्तरं च पार्वती केवलं रामनामैव मोक्षादिफलसाधनं पठित्वा पत्या सह भोक्तुमुपविष्टेति कथा दृश्यते ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तम् ॥ पृथ्वी सगन्धा रससास्तथाऽऽपः स्पर्शी च वायुर्ज्वलितं च तेजः। नमः सशब्द महता सदैव कुर्वन्तु सर्वे सुप्रभातम् ॥ इत्थं प्रभाते परमं पवित्रं पठेत्स्मरेद्वा शृणुयाच्च तद्वत्। दुःस्वप्नाशस्त्विह सुप्रभातं भवेच्च नित्यं भगवत्प्रसादात् ॥"

**पुण्यश्लोकस्तुतिः, आचारमयूखे**—"पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्श्लोको युधिष्ठिरः। पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः॥ अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः। कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥ सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्। जीवेद्वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः॥ अहल्या द्रौपदी सीता मन्दोदरी तथा। पञ्चकन्या स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम्॥ अविमुक्तचरणयुगलं दक्षिणमूर्तेश्च कुक्कुटचतुष्कम्। स्मरणमपि वाराणस्या निहन्ति दुःस्वप्नपशकुनं च॥"

**दुर्गादिदेवतास्तुतिफलम्, पाद्मपुराणे**—"उमा उषा च वैदेही रमा गङ्गेति पञ्चकम्। प्रातरेव पठेन्नित्यं सौभाग्यं वर्तते सदा॥ सोमनाथो वैजनाथो धन्वन्तरिरथाश्विनौ। पञ्चैतान् यः स्मरेन्नित्यं व्याधिस्तं नैव बाधते॥ कपिलः कालियोऽनन्तो वासुकिस्तक्षकस्तथा। पञ्चैतान्स्मरतो नित्यं विषबाधा न जायते॥ हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनूमन्तं हलायुधम्। पञ्चकं वै स्मरेन्नित्यं घोरसंकटनाशनम्॥ राम स्कन्द हनूमन्त वैनतेयं वृकोदरम्। पञ्चैतान् संस्मरेन्नित्यं भयबाधा विनश्यति॥ आदित्यश्च उपेन्द्रश्च चक्रपाणिर्महेश्वरः। दण्डपाणिश्च चेत्प्रातः स्मृतः क्षुत्तं न बाधते॥वसुर्वरुणसोमौ च सरस्वतीच सागरः। पञ्चैतान्संस्मरेद्यत्र तृषा तत्र न बाधते॥ सनत्कुमारदेवशुकभीष्मप्लवङ्गमाः। पञ्चैतान्स्मरतो नित्यं कामबाधा निवर्तते॥ श्रीरामो लक्ष्मणः सीता सुग्रीवो हनुमान् कपिः। पञ्चैतान्स्मरतो नित्यं महाबाधा प्रमुच्यते॥ कर्कोटकस्य नागर्षे र्दमयन्त्या नलस्य च ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम्॥ कीर्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान्। तस्य स्मरणमात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते॥ प्रह्लादनारदपराशरपुण्डरीकव्यासाम्बरीषशुकशौनकभीष्मदाल्भ्यान् रुक्माङ्गदा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



र्जुनवसिष्ठविभीषणादीन्पुण्यानिमान्परमभागवतान्नमामि ॥ धर्मो विवर्धति युधिष्ठिरकीर्तनेन पापंप्रणश्यति वृकोदरकीर्तनेन । शत्रुर्विश्यति धनञ्जयकीर्तनेन माद्री सुतौ कथयतां न भवन्ति रोगाः । काश्यां वै भैरवो देव संसारमयनाशनः अनेकजन्मजं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥ वाराणस्यां पूर्वभागे व्यासो नारायणः स्वयम् । तस्य स्मरणमात्रेण अज्ञानी ज्ञानवान्भवेत् । वाराणस्यां परे भागे भीम चण्डीं महासती । तस्याः स्मरणमात्रेण जपी भवति सर्वदा ॥ वाराणस्यामुत्तरे तु सुमन्तुर्नाम वै द्विजः । तस्य स्मरणमात्रेण निर्धनो धनवान्भवेत् । वाराणस्यां दक्षिणे तु कुक्कुटो नाम वै द्विजः । तस्य स्मरणमात्रेण दुःस्वप्नः दुखदो भवेत् ॥ विश्वेशं माधवं ढुण्ढि दण्डपाणिं च भैरवम् । वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानी मणिकर्णिकाम् ॥ ''

स्नानात्पूर्वं भक्षणयोग्याः पदार्थाः, चतुर्विंशतिमते—
''इक्षुरापः फलं मूलं पयस्ताम्बूलमौषधम् । भक्षयित्वाऽपि कर्तव्याः स्नानदानादिकाः क्रिया ॥'' आरोग्याभाव एवायं विधिः आरोग्ये सति तु स्नानसन्ध्यादिकं कृत्वैवेक्ष्वादिभक्षणमपि कार्यम् ॥ न तु सत्यारोग्येऽपीत्यन्यत्र विस्तरः ।

स्नानम्, कात्यायनपरिशिष्टसूत्रे ॥ अथातो नित्यस्नानं नद्यादौ मृद्गोमयकुशतिलसुमनस आहृत्योदकान्तं गत्वा । शुचौ देशे संस्थाप्य क्षाल्य पाणिपादं कुशोपग्रहो बद्धशिखी यज्ञोपवीत्याचम्योरु ँ हाति तोयमामन्त्र्यावर्त्तये द्य ते शतामिति सुमित्रिया नड्त्यपोऽज्जालिनाऽऽदाय दुर्भित्रिया इति द्वेष्यं प्रति निषिञ्चेत् । कटि बस्त्यूरू जङ्घे चरणौ करौ मृदा त्रिस्त्रिः प्रक्षाल्याचम्य नमस्योदकमालभेदंगानि मृददेदं विष्णुरिति सूर्याभिमुखो निमज्जैदापी अस्मानिति स्नात्वोदिदाभ्य इत्युन्मज्ज्य निमज्ज्योन्मज्ज्याचम्य गोमयेन विलिम्पेन्मानस्तोक इति । ततोऽभिषिञ्चेदिमं मे वरूणेति चतसृभिर्माप उद्वत्तमं मुञ्चन्त्वबृथेत्यन्ते चैतान्निमज्ज्यो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



न्मज्ज्याचम्य दर्भैः पावयेदापोहिष्ठेति तिसृभिरिदमापो ह्यविष्मती दैवीराप इति द्वाभ्यामपा दवा दुपदादिव शन्नो देवीरपा ँ रसमपो देवीः पुनन्तु मेति नवभिश्चित्पातिर्मेत्योङ्कारेण व्याहृतिभिर्गायत्र्या चादावन्ते चान्तर्जलेऽघमर्षणं त्रिरावर्तयेद् दुपदादिवायंगौरिति वेत्यृचं प्राणायामं वा सशिरसमोमिति वा विष्णोर्वा स्मरणम् ॥" इति ॥

**स्नानकालः** हेमाद्रौ–"अरुणकिरणयुक्तां प्राची दिशमवलोक्य स्नायात् ॥" इति **याज्ञवल्क्य**–" प्रातःस्नानं प्रशंसन्ति दृष्टादृष्टकृतं हि तत् । सर्वमर्हति शुद्धात्मा प्रातःस्नायी जपादिकम् ॥ अत्यन्तमलिनः कायो नवच्छिद्रसमन्वितः । स्रवत्यव दिवारात्रौ प्रातः स्नानं विशोधनम् ॥ **दक्षः**– "प्रातः स्नानं चरित्वाऽथ शुद्धे तीर्थे विशेषतः ।प्रातः स्नानाद्यतःशुद्धयेत्कायोऽयं मलिनः सदा ॥ नोपसर्पन्ति वै दुष्टाः प्रातःस्नायिजनं क्वचित् । दृष्टादृष्टफलं तस्मात्प्रातःस्नानं समाचरेत् ॥" **आन्हिककारिका**–"घटिकाद्वयावशिष्टायां रात्र्यां गच्छेज्जलाशये । तिलगन्धाक्षतैः पुष्पैर्दर्भाद्यैः सहितः शुचिः ॥ प्रातर्मध्याह्नयोः स्नानं वानप्रस्थगृहस्थयोः । यतेस्त्रिषवणं प्रोक्तं सकृत्तु ब्रह्मचारिणः ॥ प्रातःस्नानं सनक्षत्रं सन्ध्या नक्षत्रसंयुता । होमः प्रागुदयाद्भानोर्गायत्र्यास्तु ततो जपः ॥" **कात्यायनः**–"यथाऽहनि तथा प्रातर्नित्यं स्नायादनातुरः ! दन्तान्प्रक्षाल्य नद्यादौ गृहे च तैदमन्त्रवत् ॥"

**प्रातः स्नानफलम्, याज्ञवल्क्यः**—गुणा दश स्नानपरस्य साधो रूपं च तेजश्च बलं च शौचम् । आयुष्यमारोग्यमलोलुपत्वं दुःस्वप्ननाशश्च यशश्च मेधा ॥" **नागदेवः**–"अगम्यागमनाचैव पापेभ्यश्च प्रतिग्रहात् । रहस्यचरितात्पापान्मुच्यत स्नानयोगतः ॥"

---

१ दृष्टफलं तावदालस्यमांलिन्यादिनिवृत्तिरूपम्, अदृष्टं स्वर्गारोग्यादिनिमित्त रूपम् ॥ २ तत् स्नानम् । ३ अगम्यागमनशब्दो नात्र गुरुपत्न्यादिमैथुनपरः किंतु धनबधूरमणपर एव ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**प्रातःस्नानाभावे दोषः, याज्ञवल्क्यः**-अस्नात्वा नाचरेत्कर्म जपहोमादिकं तथा । लालास्वेदसमाकीर्णः शयनादुत्थितः पुमान् । स्विद्यन्ते हि सुषुप्तस्य इन्द्रियाणि स्रवन्ति च । अङ्गानि समतां यान्ति चोत्तमान्यधमैः सह॥" **नागदेवः**-अस्नातस्य क्रियाः सर्वा भवन्ति निष्फलां यतः । प्रातःसमाचरेत्स्नानं तच्च नित्यमुपस्थितम् ॥ अस्नातस्तु पुमान्नार्हो जपहोमादिकर्मसु । प्रातःस्नानं तदर्थं तु नित्यस्नानं प्रकीर्तितम् ॥" **योगियाज्ञवल्क्यः**-"स्नानमूलाः क्रियाः सर्वाः श्रुतिस्मृत्युदिता नृणान् । तस्मात्स्नानं निषेवेत श्रीपुष्ट्यारोग्यवर्धनम् ॥"

**स्नानार्थे उक्तं जलम्, मरीचिः**-"भूमिष्ठमुद्धृतं वापि शीतमुष्णमथापि वा । गाङ्गं पयः पुनात्येव पापमामरणात्कृतम्॥" **यमः**-आप एव सदा पूतास्तासां वह्निर्विशोधकः । तस्मात्सर्वेषु कालेषु उष्णाम्भः पावनं स्मृतम्॥ नित्यं नैमित्तिकं चैव क्रियाङ्गं मलकर्षणम् । तीर्थाभावे तु कर्तव्यमुष्णोदकपरोदकैः ॥" **गार्ग्यः**-"कुर्यान्नैमित्तिकं स्नानं शीताद्भिः काम्यमेव च । नित्यं यादृच्छिकं चैव यथारुचि समाचरेत् ॥" **नागदेवः**-सरित्सु देवखातेषु तीर्थेषु च नदीषु च । क्रियास्नानं समुद्दिष्टं स्नानं तत्रामलाः क्रियाः ॥ वाप्यां कूपे तडागे वा नद्यां वा चोष्णवारिणा । प्रातःस्नानं सदा कुर्यादुष्णेनैव सदाऽऽतुरः ॥"

**उष्णोदकस्नाननिषेधः, वृद्धमनुः**-"सङ्क्रान्त्यां रविवारे च सप्तम्यां राहुदर्शने । आरोग्ये पुत्रमित्रार्थे न स्नायादुष्णवारिणा ॥ ( आरोग्य इति सति सप्तमीयम् । मृते जन्मनि संक्रान्तौ श्राद्धे जन्मदिने तथा । अस्पृष्टस्पर्शने चैव न स्नायादुष्णवारिणा ॥"

**स्नानभेदाः, नागदेवः**-"असामर्थ्याच्छरीरस्य देशकालाद्यपेक्षया । मन्त्रस्नानादिकाः सप्त केचिदिच्छन्ति सूरयः ॥ स्नानं तु द्विविधं प्रोक्तं मुख्य-

---

१ उत्तमानि हस्तादीनीन्द्रियाणि, अधमानीन्द्रियाणि गुदादीनि । २ सर्वशब्दोऽत्र जपहोमादिपर एव न तु प्रातःस्मरणमलत्यागादिपरोऽपि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



गौणप्रभेदतः। चतुर्विधं तत्रमुख्यं गौणं वै षड्विधं भवेत् ॥ सजीवपितृकः स्नायान्न्यस्तदक्षिणतःकचः। प्रमीतपितृकः स्नायात्सव्यभागकचः पुमान्॥"

**क्वचित्स्थले मुसलस्नानमप्युक्तम्। तच्चैवम्**—'निरुद्धकर्णनासस्तु मुसलस्नानमाचरेत्। उभे सन्ध्ये च स्नातव्यं ब्राह्मणैश्च गृहाश्रितैः॥ तिसृष्वपि हि सन्ध्यासु स्नातव्यं तु तपस्विभिः॥"

**प्रत्यक्षस्नानाभावे गौणस्नानानि, योगियाज्ञवल्क्यः**—"मान्त्रं भौमं तथाऽऽग्नेयं वायव्यं दिव्यमेव च। वारुणं मानसं चैव सप्त स्नानान्यनुक्रमात्॥ आपोहिष्ठादिभिर्मान्त्रं मृदालम्भं च पार्थिवम्॥ आग्नेयं भस्मना स्नानं वायव्यं गोरजः स्मृतम्॥ यत्तु सातपवर्षेण स्नानं तद्दिव्यमुच्यते। वारुणं चावगाहं तु मानसं ह्यात्मचिन्तनम्॥" **लघुव्यासंहितायाम्**—"आर्द्रेण वाससा चाङ्गमार्जनं कापिलं स्मृतम्॥ अप्राशस्त्ये समुत्पन्ने स्नानमेवं समाचरेत्। ब्राह्मं तु मार्जनं मन्त्रैः कुशैः सोदकबिन्दुभिः यौगिकं स्नानमाख्यातं योगीऽयं विष्णुचिन्तनम्।" **जाबालिः**—अशिरस्कं भवेत्स्नानं स्नानाशक्तौ तु कर्मिणाम्। आर्द्रेण वाससा वापि मार्जनं दैहिकं विदुः॥ ज्वराभिभूता या नारी रजसा च परिप्लुता। कथं तस्या भवेच्छौचं शुद्धिः स्यात्केन कर्मणा॥ चतुर्थेऽहनि सम्प्राप्ते स्पृशेदन्या तु तां स्त्रियम्। सा सचैलाऽवगाह्यापः स्नात्वा स्नात्वा पुनः स्पृशेत्॥ दश द्वादशकृत्वो वा आचामेच्च पुनः पुनः। अन्ते च वाससां त्यागस्तथा शुद्धा भवेत्तु सा॥"

**स्नानादौ निषिद्धजलम्, धन्वन्तरिः**—"तृणपर्णोत्करयुतं कलुषं विषसंयुतम्। योऽवगाहेत वर्षासु पिबेद्वापि नवं जलम्। स वाह्याभ्यन्तरान् रोगान् प्राप्नुयात्क्षिप्रमेव हि॥" **वाचस्पतिः**[1] 'स्नानमाचमनं दानं देवतापितृतर्पणम्। शूद्रोः कैर्न कुर्वीत तथा मेघाद्विनिःसृतैः॥ मासद्वयं श्रावणादि सर्वा नद्यो रजस्वलाः। तासु स्नानादिकं वर्ज्यं वर्जयित्वा सुरापगाम्॥ यदि विप्रः

---

१ अप्राशस्त्ये नद्यादौ अवगाहनरूपप्राशस्त्यासम्भव इत्यर्थः स्नानाप्राशस्त्यं च आतुरत्वमलमेव।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



प्रमादेन शूद्रतोयं पिबेत्स्वयम् । उपोष्य बिल्वपद्मानां पलाशस्य कुशस्य च । एतेषामुदकं पीत्वा तेन शुद्धिमवाप्नुयात् ॥" **यमः**—अन्त्यजैः खनिताः कूपास्तडागानि तथैव च । एषु स्नात्वा च पीत्वा च पञ्चगव्येन शुद्ध्यति ॥ " **वृद्धशातातपः**—" अन्त्यजैः खानिते कूपे सेतौ वाप्यादिके तथा । तत्र स्नात्वा च पीत्वा च प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ " इत्येतद्वचनद्वयमापदनायद्विषयकमिति वाचस्पतौ स्पष्टम् । **कात्यायनः**—यच्च द्वयं श्रावणादि सर्वा नद्यो रजस्वलाः । तासु स्नानं न कुर्वीत वर्जयित्वा समुद्रगाः ॥ धनुःसहस्राण्यष्टौ तु गतिर्यासां न विद्यते । न ता नदीशब्दवहा गर्तास्ताः परिकीर्तिता- ॥ उपाकर्मणि चोत्सर्गे प्रेतस्नाने तथैव च । चन्द्रसूर्यग्रहे चैव रजोदोषो न विद्यते॥"

**स्नानार्थम् उक्ता दिशः, विष्णुः**—" स्रोतसोऽभिमुखं स्नायान्नदीषु प्रवहज्जले । स्थावरे च तडागे च रवेरभिमुखं सदा ॥ स्रोतसोऽभिमुखो भज्जेद्यत्रापः प्रवहन्ति वै । स्थावरेषु च सर्वेषु आदित्याभिमुखस्तथा ॥ गहे गृहमुखः कूपे तडागे सूर्यसन्निधौ ॥ प्राप्तः संक्षेपतः स्नानं शौचार्थे तु तदिष्यते॥" **रेणुः**—" तडागादिषु तीर्थेषु प्रत्यकं स्नानमाचरेत् । नद्यादौ तु प्रवाहाभिमुखो वा स्नानमाचरेत् ॥ नद्यां स्रवत्सु च स्नायात्प्रतिस्रोतःस्थितोः द्विजः । या याः समुद्रगा नद्यस्तासु स्नानं तु संमुखम् । सर्वेषां शाखिनामेवं विना वाजसनेयिनः ॥"

**गृहे स्नानादिविचारः, बोधायनः**—"गृहस्नाने न तु प्रोक्तं मार्जनं तर्पणादिकम् । नान्तराचमनं प्रोक्तं पश्चादाचम्यशुद्ध्यति ॥" **आह्निकाकारिका**—,'पादौ प्रक्षालयेत्पूर्वं मुखं यज्ञोपवीतकम् । द्विराचम्य कराभ्यां तु दर्भान्धृत्वा शिखां स्पृशेत् ॥ द्वौ कुशौ दक्षिणे हस्ते त्रयः सव्ये तथाऽऽसने । पादमूले शिखायां च एकैकं धारयेत्कुशम् ॥ प्राणायामत्रयं कृत्वा कालज्ञानं ततः स्मरेत् ॥" ( तदनन्तरं स्नायादित्यर्थः । )

**स्नानकाले नारायणस्मरणम्, लघुव्याससंहितायाम्**—" आपो नारायणोद्भूतास्ता एवास्यायनं पुनः । तस्मान्नारायणं देवं स्नानकाले स्मरेद्बुधः ॥ " इति ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**सङ्कल्पावश्यता, बृहद्यमः**—" सङ्कल्पश्च यथा कुर्यात्स्नान दानव्रतादिके ॥ " ( सङ्कल्पश्च मनसा तथा कर्म्मचिकीर्षोद्भावना, तत्पूर्वा जलग्रहणोत्सर्गरूपा वा क्रिया ) ॥

**स्नाने आसनम्, कालिकापुराणे**—" तोये शिलामयं कुर्यादासनं कौशमेव वा ॥ "

**स्नाने जलादिविचारः**— अभावे देवखातानां सरितां सरसां तथा। उद्धृत्य चतुरः पिण्डान्पारके स्नानमाचरेत् ॥ " पारके इत्यनुत्सृष्टजले। " चतुर्हस्तसमायुक्तं समन्ताच्चतुरस्रकम्। प्रकल्प्यावाहयेद्वह्नामेभिर्मन्त्रैर्विचक्षणः ॥ हस्ताभ्यामञ्जलिं कृत्वाऽनामिकामूलपर्वणोः। अंगुष्ठौ निक्षिपेत्सेयं मुद्रा चावाहनी स्मृता ॥ विष्णोः पादप्रसूताऽसि वैष्णवी विष्णु देवता। त्राहि नस्त्वेनसस्तस्मादाजन्ममरणान्तिकात् ॥ पश्चाद्वह्नादितीर्थानि प्रार्थयेत् समन्ततः ॥ "

**शिरःस्नानम्, मार्कण्डेयपुराणे**—" शिरःस्नान च कुर्वीत दैवं पित्र्यमथापि वा। "

**आर्द्रवस्त्रनिष्पीडनम्, बृद्धमनुः** " निष्पीड्य स्नानवस्त्रं तु पश्चात्सन्ध्यां समाचरेत्। अन्यथा कुरुते यस्तु स्नानं तस्याफलं भवेत् ॥" **प्रयोगपारिजाते**—" स्नानं कृत्वाऽर्द्रवस्त्रं तु ऊर्ध्वमुत्तारयेद्विजः आर्द्रं वस्त्रमधस्ताच्चेत्पुनः स्नानेन शुद्ध्यति ॥ "

**आकण्ठस्नानम् कात्यायनीयत्रिकण्डिकासूत्रे हरिहरभाष्ये**—" जटिलस्य शिरोरोगिणश्चाकण्ठमज्जनं स्नानम्-सभर्तृकयोषितां च ग्रहणादिनिमित्तं गङ्गादितीर्थेषु संक्रान्त्यादिपर्वनिमित्तं च फलप्रदम्। नद्यादिष्वपि सशिरस्कमेव। नित्यमेव स्त्रीशूद्राणां सर्वत्र तूष्णीं स्नानम् ॥ "

---

१ तूष्णीं स्नानामित्यस्यायमर्थः—न तु ' आपोऽअस्मान् ' इत्यादिभिर्मन्त्रैः। तेषामधिकाराभावात्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**मंगलस्नानम्, ग्रन्थान्तरे**--" सर्वौषधिं कृष्णतिलान् गन्धमामलकं तथा । सितपुष्पां चम्पकादिं तैलं सुरभितं तथा ॥ द्रव्याण्यन्यानि च क्षिप्त्वा जले वारुणमन्त्रिते । तेन माङ्गलिकं स्नानमङ्गोद्वर्त्तनपूर्वकम् ॥ ब्राह्मणास्तत्र वेदज्ञा यदि स्युर्वेदपाठकाः । जयध्वनियुताश्चान्ये शङ्खवीणादिवादकाः ॥"

**तीर्थभेदाः, मानसतीर्थानि याज्ञवल्क्यः**--"अन्तर्जानु शुचौ देशे उपविष्ट उदंमुखः । प्राग्वा ब्राह्मेण तीर्थेन द्विजो नित्यमुपस्पृशेत् ॥ " **वाचस्पतावगस्तिः**-"सत्यं तीर्थं क्षमा तीर्थं तीर्थमिन्द्रियनिग्रहः । सर्वभूतदया तीर्थं सर्वत्रार्जवमेव च ॥ दानं तीर्थं दमस्तीर्थं सन्तोषस्तीर्थमुच्यते । ब्रह्मचर्यं परं तीर्थं तीर्थं च प्रियवादिता ॥ ज्ञानं तीर्थं धृतिस्तीर्थं पुण्यं तीर्थमुदाहृतम् । तीर्थानामपि तत्तीर्थं विशुद्धिर्मनसः परा । एतत्ते कथितं देवि मानसं तीर्थलक्षणम् ॥ " **शारीरतीर्थानि**--"यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम् । विद्या तपश्च कीर्तिश्च स तीर्थफलमश्नुते ॥ मनो विशुद्धं पुरुषस्य तीर्थं वाचां मनस्विन्द्रियनिग्रहस्तपः । एतानि तीर्थानि शरीरजानि स्वर्गस्य मार्गं प्रतिबोधयन्ति ॥" **भौमतीर्थानि**--" प्रथमं पुष्करं तीर्थं नैमिषारण्यमेव च । प्रयागं च प्रवक्ष्यामि धर्मारण्यं तृतीयकम् । एवमादीनि तीर्थानि स्नानकार्ये निबोधत ॥" **परं च**--" चित्तमन्तर्गतं दुष्टं तीर्थस्नानान्न शुद्ध्यति । शतशोऽथ जलैर्धौतं सुराभाण्डमिवाशुचि ॥ " **अमरः**--" अंगुल्यग्रे तीर्थं दैवं स्वल्पांगुल्योर्मूले कायम् । मध्येऽङ्गुष्ठांगुल्योःपित्र्यं मूले त्वंगुष्ठस्य ब्राह्मम् ॥" **याज्ञवल्क्यः**--" कनिष्ठदेशिन्यंगुष्ठमूलान्यग्रं करस्य च । प्रजापतिपितृब्रह्मदेवतीर्थान्यनुक्रमात्॥" **आह्निककारिका**--"ब्राह्मणो ब्रह्मतीर्थेन दृष्टिपूताभिराचमेत् । कण्ठगाभिर्नृपः शुद्ध्येन्नाभिगाभिस्तथोरुजः ॥ स्त्रियस्य शूद्रः संस्पर्शे मन्त्रेणापि विशुद्ध्यति ॥" **औशनसः**--" हृद्गाभिः पूयते विप्रःकण्ठिगाभिर्नृपः शुचिः । प्राशिताभिस्तथा वैश्यः स्त्रीशूद्रैः स्पर्शनं तथा ॥ "

**स्नाने उक्तानि तीर्थानि,अग्निपुराणेः**--"नदीदेवनिखातेषु तडागेषु सरस्सु च । स्नानं समाचरेन्नित्यं गतप्रस्रवणेषु च ॥ निपानादुद्धृतं ततः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ततः प्रस्रवणोदकम् । ततोऽपि सारसं पुण्यं ततो नादेयमुच्यते । तीर्थतोयं पुण्यं [illegible] तोयं ततोऽधिकम् ॥" **वाचस्पतिः**--"ब्राह्मणा जङ्गमं तीर्थं निर्म्मलं जार्वकामिकम् । येषां वाक्यमृतेनैव मुच्यते सर्वकिल्बिषैः ॥ " इति । "ब्रह्मा-विष्णुश्च रुद्रश्च सोमः सूर्योऽनिलस्तथा । ते सर्वे वापि तिष्ठन्ति कर्णे विप्रस्य दक्षिणे ॥ " इति **पराशरश्च** ॥ विप्रस्येति द्विजन्मन उपलक्षणम् तेन क्षत्रियवैश्ययोरपि ग्रहणम् ॥

**गृहे प्रातःस्नानम्,कात्यायनः**--"यथाऽहनि तथा प्रातर्नित्यं स्नाया-दनातुरः । अत्यन्तमलिनः कायो नवच्छिद्रसमन्वितः ॥ स्रवत्येव दिवा रात्रौ [illegible] स्नानं विशोधनम् ॥" इति । **दक्षः**--"प्रातर्मध्याह्नयोःस्नानं वानप्रस्थ-[illegible]योः । यतेस्त्रिषवणं स्नानं सकृत्तु ब्रह्मचारिणः ॥ सर्वे चापि सकृत् कुर्य्यु-रशक्तौ चोदकं विना ॥ " इति । सर्वे वानप्रस्थो गृहस्थो यतिश्चेत्यर्थः । **किंच स एव**--"अशिरस्कं भवेत्स्नानमशक्तौ कर्म्मिणां सदा । आर्द्रेण वाससा वाऽपि पाणिना वाऽपि मार्जनम् ॥"इति । स्नानं च सप्तविधम्--"मान्त्रं पार्थिव-माग्नेयं वातव्यं दिव्यमेव च । वारुणं मानसं चेति स्नानं सप्तविधं । स्मृतम् ॥" इति स्मरणात् । तत्र वारुणं जलसम्पाद्यं स्नानं मुख्यम् ।

**स्नानात्प्राक् कर्तव्यम्**--"पवित्रस्थलमासाद्य शिलायां फलकेऽथवा । सूर्यस्याभिमुखो भूत्वा तीर्थान्यावाहयेज्जले ॥" इति । तत्र "आपो नारायणो-दृतास्ता एवास्यायनं यतः । तस्मान्नारायणं देवं स्नानकाले स्मरेद् बुध॥"इति। कौर्मोक्त्या नारायणः स्मरणीयः । **तन्मन्त्रोयथाः**--"आपो नारायणोद्भू-तास्ता एवास्यायनं पुनः । तस्मान्नारायणं देवं स्नानकाले स्मराम्यहम् ॥" इति। अथ तीर्थराजं स्मरेत् । **तन्मन्त्रो यथा**--"त्वं राजा सर्वतीर्थानां त्वमेव जगतः पिता । याचितं देहि मे तीर्थं तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥" इति । तथा जलमामन्त्र्य वक्ष्यमाणा मन्त्राः पठनीयाः--"नमामि गंगे तव पादपङ्कजं सुरा-सुरैर्वन्दितदिव्यरूपम् भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं भावानुसारेण सदा नराणाम् ॥ पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा । आगच्छतु पवित्राणि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



स्नानकाले सदा मम ॥ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदा सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ नन्दिनी नलिनी सीता मालती च मलापहा । विष्णुपादाब्जसम्भूता गङ्गा त्रिपथगामिनी ॥ भागीरथी भोगवती जाह्नवी त्रिदशेश्वरी । द्वादशैतानि नामानि यत्र तत्र जलाशये॥स्नानोद्यतःपठेद् यत्र तत्रैव निवसत्यसौ । एतान् मंत्रान् पठित्वैव जलेन स्नानमाचरेत् ॥ " इति ॥ तत्रादौ हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य गण्डूषत्रयं कृत्वा वामे हस्ते जलं निधाय कुशैरात्मानं मार्जयेत् । **तत्र मन्त्रः**—" अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा । यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ " इति । ततः सङ्कल्पं कुर्य्यात् । यथा—" ॐ तत्सत् ॐ तत्सत् ॐ सत्सत् । श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्याद्यैतस्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्भुवःस्वर्लोकानां मध्ये भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारते वर्षेऽमुकक्षेत्रे भगवत्या भागीरथ्या अमुकदिग्भागे मानससरोवरस्यादिग्भागे नर्म्मदाया अमुकदिग्भागे कामाक्ष्या अमुकदिग्भागे अमुकदेशे बौद्धावतारे रामराज्ये श्रीविक्रमादित्यराज्यतोऽमुकसङ्ख्याकेऽमुकनाम्नि संवत्सरे श्रीशालिवाहनराज्यादमुकसङ्ख्याके शकाब्देऽमुकायनेऽमुकर्तौ अमुकमासेऽमुकपक्षेऽमुकतिथावमुकवासरेऽमुकनक्षत्रेऽमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकवाजसनेयिशाखाऽध्यायी अमुकप्रवरोऽमुकनामाऽहं स्वात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तये इह जन्मनि जन्मान्तरे वा कायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकनैसर्गिकज्ञाताज्ञातस्पर्शासनभोजनशयनगमनादिकृतदुरित--कर्म्मनिरसनद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं कर्म्माधिकारप्राप्त्यर्थं च स्नानं कर्म्म करिष्ये " इति । ततो मौनी परमात्मानं स्मरन् पादमारभ्य शिरःपर्य्यन्तं शक्तिश्चेत् स्नायात्, शक्त्यभावे तु यथातथं स्नायादित्यूह्यम् । **पाद्मे स्नानावश्यकत्वम्**—" स्नानहीनो नरः पापी स्नानहीनोऽशुचिः सदा । अस्नायी नरकं याति पुल्कसादिषु जायते ॥ " इति । **अत्रिस्मृतौ**:— " स्नाने

१—ब्रह्मवैवर्तपुराणस्थोऽयं श्लोकः । अत्र 'सिन्धो' इति सबोधनरूपमावश्यकं परंतु छन्दोऽनुरोधात् ' सिंधु ' इत्यार्षः प्रयोगो बोध्यः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मनःप्रसादः स्याद् देवा अभिमुखाः सदा । सौभाग्यं श्रीः सुखं पुष्टिः पुण्यं विद्या यशो धृतिः ॥ महापापान्यलक्ष्मीं च दुरितं दुर्विचिन्तितम् । शोकदुःखादि हरते प्रातःस्नानं विशेषतः ॥ " इति । **विष्णुपुराणे**—"नदीनदतडागेषु देवखातजलेषु च । नित्यक्रियाथ स्नायीत गिरिप्रस्रवणेषु च ॥ कूपेषूद्धृततोयेन स्नानं कुर्वीत वा भुवि । स्नायीतोद्धृततोयेन अथवा मुख्यसम्भवे ॥ " इति ।

**अथ नद्यादौ नित्यस्नानम्**—गृहे स्नात्वा शुद्धे वाससी परिधाय परमात्मानं स्मरन् यथासम्भवं पवित्रां मृत्स्नां तीर्थसम्भवां वा मृदमार्द्रं गोमयं कुशान् यवतिलाक्षतसुरभिकुसुमानि भस्मापामार्गं दूर्वां चोपादाय नद्यादितीर्थतटे देवखातादितटे वा गच्छेत् । ततः प्रवाहाभिमुखमुदङ्मुखः प्राङ्मुखो वा साञ्जलिः प्रार्थयेत्—" नमामि गङ्गे तव पादपङ्कजं सुरासुरैर्वन्दितदिव्यरूपम् । भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं भावानुसारेण सदा नराणाम् ॥ पापिनामुद्धृतिकृते समुद्भूताऽसि भूतले । दह मे सर्वपापानि मां पुनीहि सुरेश्वरि ॥ त्वमेव गतिरस्माकं पततां नरकार्णवे । समुद्धर महादेवजटाजूटनिवासिनि ॥ या गतिर्योगयुक्तानां मुनीनामूर्ध्वरेतसाम् । सा गतिः सर्वजन्तूनां गौतमीतीरवासिनाम् ॥ पुष्करादीनि तीर्थानि गङ्गाऽऽद्याः सरितस्तथा । आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम ॥ त्वं राजा सर्वतीर्थानां त्वमेव जगतः पिता । याचितं देहि तीर्थं मे तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥ अपामधिपतिस्त्वं च तीर्थेषु वसतिस्तव । वरुणाय नमस्तुभ्यं स्नानानुज्ञां प्रयच्छ मे ॥ अधिष्ठाय[1]श्च तीर्थानां तीर्थेषु विचरन्ति याः । देवतास्ताः प्रयच्छन्तु स्नानाज्ञां मम सर्वथा ॥ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ चद्रभागे महाभागे शरणागतवत्सले । गण्डकीसरयूयुक्ता समासाद्य पुनीहि माम् ॥ सर्वाणि यानि तीर्थानि पापमोचनहेतवः । आयान्तु स्नानकालेऽस्मिन् क्षणं कुर्वन्तु सन्निधिम् ॥ " इति । ततः सूर्यं

---

१ चतुस्त्रिंशपत्रस्था टिप्पणी द्रष्टव्या ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



प्रणमेत् । तत्र मन्त्रः—"लोकान्धकारहरणे प्रथितप्रभाव दोषान्तकोदयगिरीन्द्रकिरीटरत्नजाडयं निहत्य शुभकर्म्मसु चित्तनिष्ठां देव प्रवर्तय नमामि विभाकर त्वाम् ॥" इति । ततस्तीर्थजलमादायामिमन्त्रयेत् । तत्र मन्त्रः—"ॐ उरु ६० हि राजा वरुणश्चकार सूर्य्याय पन्थामन्वेतवा उ । अपदे पादाप्प्रतिधातवेऽकरुतापवक्ता हृदयाविधश्चित् । नमो वरुणाभिष्ठितो वरुणस्य पाशः ÷ ( वा० सं० ८ । २३ ) ॥" इति पठित्वा न्युब्जाञ्जलिहस्तेन तोयमभिमन्त्रयेत् । ततो जलमावर्तयेत् । तत्र मन्त्रः—"ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा विततां महान्तः । तोभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः ॥" इति ।

ततः परमञ्जलिना तीर्थजलमादय "ॐ सुमित्रिया न आप ओषधय सन्तु" इति पठित्वा तज्जलं शिरसि निक्षिपेत् । अथ कामादीन् शत्रून् वोद्दिश्य जलमञ्जलिनाऽऽदाय तटे गत्वा वामभागे द्वेष्यनाशार्थं निक्षिपेत् । तत्र मन्त्रः-"दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः॥ ( ६ । २३ ॥ )" इति । ततो मृत्स्नामादाय तस्या मागत्रयं कृत्वा प्रथमभागं वामहस्तेनादाय नाभेरधः कटिप्रदेशं लेपयन् वक्ष्यमाणान् मन्त्रान् पठेत् । तत्र-मन्त्रा यथा—"ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ (वा.सं.५।१५।)" ॐअश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे।मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्॥ उद्धृताऽसि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना । नमस्ते सर्वभूतानां प्रभवारणि सुव्रते॥मृत्तिके ब्रह्मपूताऽसि कश्यपेनाभिवन्दिता। त्वया हतेषु पापेषु गच्छेयं परमां गतिम्॥"इति। अथ हस्तं प्रक्षाल्य मृत्तिकाया द्वितीयभागमादाय वामहस्ते दक्षिणेन हस्तेन प्राग्वद्वस्तिमूरूजङ्घे चरणौ करौ च तूष्णीं त्रिलिरनुलिप्य हस्तं प्रक्षाल्याचम्य तीर्थोदकं साञ्जलि शिरसा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



प्रणमेत् । पुनस्तथैव तृतीयभागं वामहस्ते निधाय दक्षिणेन हस्तेन प्रागुक्तान् "ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे०" इत्यादीन् मन्त्रान् पठन् नाभेरुपरि ललाटमारभ्य नाभिपर्य्यन्तं लेपयेत् ॥ तत्पश्चात् नाभिपरिमाणं तीर्थजलान्तःप्रविश्य सूर्याभिमुखीभूय वक्ष्यमाणं मन्त्रं पठन् स्नानं कुर्यात् । तत्र मन्त्रो यथा– "ॐ आपोऽअस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु । विश्वꣳ हि रिप्रम्प्रवहन्ति देवीः ४ । २ । ॐउदिदाऽभ्यः शुचिरापूत एमि ( वा० सं० । ४।२ )" इति । एवं त्रिवारं निमज्ज्योन्मज्ज्य स्नात्वाऽऽचामेत् । अथ गोमयमादाय सूर्यं दर्शयित्वा भागत्रयं कृत्वा प्रथमभागं वामेन हस्तेनादाय नाभेरधस्तात् लेपयेत् पुनर्हस्तौ प्रक्षाल्य द्वितीयभागं पूर्ववद्वामेन हस्तेनऊरूबस्तिं जङ्घे पादौ पाणी च लेपयेत् पुनर्हस्तौ प्रक्षाल्य,दक्षिणेन पाणिना तृतीयं मृत्तिकाया भागमादाय नाभेरूर्ध्वं ललाटमारभ्य नाभिपर्यन्तं सर्वं गात्रम् लेपयेत् । तत्र मन्त्रो यथा–ॐ मानस्तोके तनये मा नु आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषुरीरिषः । मा नोवीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ ( वा० सं० १६ । १६ ) इति "ॐ आपो अस्मान्" इत्यादि प्रागुक्तौ मन्त्रौ पठन् त्रिवारं निमज्ज्य स्नायात् । पश्चात् सजलं भस्मादाय दक्षिणेन पाणिना ललाटादि नाभ्यन्तं शरीरं लेपयन् वक्ष्यमाणौ मन्त्रौ पठेत् । मन्त्रौ यथा–"ॐ जलमिति भस्म स्थलमिति भस्म व्योमेति भस्म। सर्वꣳ वा इदं भस्म । मन एतानि चक्षूꣳषि भस्मानि ॥" इति ॥ "ॐ प्रसन्न मस्मना योनिमपश्चपृथिवीमग्ने । सꣳसृज्य मातृभिष्टंज्योतिष्मान्पुनरासदः ( वा० सं० १२ । ३८ ) ॥ ततः पुनः कुशोत्तीतेन प्रतिवक्ष्यमाणमन्त्रम् नाभेरूर्ध्वं दक्षिणपार्श्वमारभ्य शिरो नीत्वा नाभेर्वामपार्वान्तं सञ्चेत् मन्त्रा यथा–"ॐडुमम्मे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



व्वरुण श्रधीहवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके ॥ ( वा० सं० २१। १ ) तत्त्वा यामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हुविर्भिः अहेडमानो व्वरुणेहबोद्धयुरुशꣳ समानु ऽआयुःप्रमोषीः ॥ ( वा० सं० २१। २ त्वन्नोअग्ने व्वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडो अवयासिसीष्ठाः यजिष्ठोवान्हितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्॥ (वा०सं०२१। ३)॥ सत्त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोतीनेदिष्ठो अस्या उषसोव्युष्टौ। अवयक्ष्व नो व्वरुणꣳ. रराणो व्वीहि मृडीकꣳ.सुहवो नएधि। (वा. सं.२१।४)मापोमौषधीर्हिꣳ.सीर्द्धाम्नो धाम्नो राजँस्ततो व्वरुण नो मुञ्च ॥ यदुदुरुद्धन्या इति व्वरुणेति शपामहे ततो व्वरुण नो मुञ्च ॥ ( वा०सं० ५।२२ ) उदुत्तमं व्वरुणपाशमस्म दवाधमंविमध्यमꣳश्रथाय ॥ अथा व्वयमादित्यव्रते तवानागसो अदितयेस्याम ॥(१२।१३) मुञ्चन्तु मा शपत्र्यादथोव्वरुण्यादुत। अथो यमस्य षड्बीशात्सर्व्वस्माद्देव किल्बिषात् ॥ ( वा. सं. १२।९) अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणꣳ। अव देवैर्देवकृतमेनोऽयासिषमव मर्त्यैर्म्मर्त्यकृतम्पुराण्णो देव रिषस्पाहि ॥ ( वा० सं० ३।४८ )" इति तत्पश्चात्तूष्णीं स्नात्वाऽचम्य कुशोन्नीतेन जलेनात्मानं वक्ष्यमाणैर्मन्त्रैः पावयेत् ॥ "ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जेदधातनः महे रणाय चक्षसे॥ ( वा० सं० ११।५० ) ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ॥ (वा० सं० ११।५१) तस्म

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अरङ्गमाम वो वस्य क्षयाय जिन्वथाऽआपो जनयथा च नः॥ ( वा० सं० ११।५२ ) इदमापः प्रवहतावद्यञ्च मलञ्च यत्। यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपेऽअभीरुणम्। आपो मातस्मा-देनसः पवमानश्च मुञ्चतु ॥ ( वा०सं० ६।१७ ) हविष्मतीरिमाऽआपो हविष्माऽआ विवासति हविष्मान्देवो अध्वरो हवि-ष्माऽअस्तु सूर्यः॥ ( वा० सं० ६।२३। ) देवीरापो अपान्न-पादद्यो वऽऊर्म्महे विष्यऽइन्द्रियावान्मदिन्तमः। तन्देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषाम्भागस्थ स्वाहा॥(वा०सं०६।२७) कार्षिरासि समुद्रस्य त्वाक्षित्याऽउन्नयामि समापो अद्भिरग्मत-सम ओषधीभिरोषधीः ॥ ( वा० सं० ५।२८ ) अपो देवा मधु-मतीरगृह्णन्नूर्जस्वती राजस्वश्चिताना। वाभिर्म्मित्रावरु-णावभ्यषिञ्चन्न्याभिरिन्दुमनयन्नस्यरातीः॥ ( वा० सं०१०।१) दुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतम्पवित्रे-णेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ॥ ( वा० सं० २०।२० ) शनो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः ॥ ( वा० सं० ३६।१२ ) अपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्ये सन्तꣳसमा-हितम्। अपाꣳरसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृही-तोसीन्द्राय त्वाजुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टत-मम्॥ (वा० सं० ९।३) अपो देवीरुप सृज मधुमतीरयक्ष्माय प्रजाभ्यः। तासामास्थानादुज्जिहतामोषधयः सुपिप्पलाः॥ ( वा० सं० ११।३८ ) पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मा पितामहाःपुनन्तु प्रपितामहाः। पवित्रेण शतायुषा ॥(वा० सं० १९।३७ ) पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः। पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥ ( वा० सं० १९।३७) अग्नआयूंषि पवस आसुवोर्ज्जमिषञ्चनः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ( वा० सं० १९।३८ ) पुनन्तु मा देवजनाःपुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥ ( वा० सं० १९।३९ ) पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देवदीदयत्। अग्ने क्रत्वा क्रतूरनु॥ ( वा० सं० १९।४० ) यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने वितततमन्तरा। ब्रह्म तेन पुनातु मा ॥ (वा.सं.१९।४१) पवमानः सोऽअद्य नः पवित्रेण वितर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा॥ (वा० सं० १९।४२) उभाभ्यान्देव सवितः पवित्रेण सवेन च। माम्पुनीहि विश्वतः॥ ( वा० सं० १९। ४३ ) वैश्वदेवी पुनती देव्यागादियस्यामिमा बह्वयस्तन्वो वीतपृष्ठाः तया मदन्तःसधमादेषु वयञ्स्याम पतयो रयीणाम्॥(वा०सं० १९।४४ ) इति । " पश्चात्तूष्णीमाचामेत् । ततः-ॐ चित्पतिर्म्मा पुनातु देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामःपुने तच्छकेयम् ॥ ( वा० सं० ४।४ ) वाक्पतिर्म्मा पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामःपुने तच्छकेयम्॥(वा० सं० ४।६ ) देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य० ( वा०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सं० ४। ४ ) ॐ पुनातु । ॐ इमम्मे व्वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ॥ ( वा सं० २१।१ ) ॐ भूः पुनातु ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्त दाशास्तेयजमानो हुविर्भिः । अहेडमानो व्वरुणेह वोद्धयुरुशꣳस मानऽआयुः प्रमोषीः॥ (वा० सं० २१।२ ) ॐ भुवःपुनातु ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो व्वन्हितमꣳशोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् ॥ ( वा० सं० २१ । ३ ) ॐ स्वः पुनातु । ॐ सत्त्वं नो ऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्याऽउषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो व्वरुणꣳ रराणो व्वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि ॥ वा० सं० २१ । ४३ ) ॐ महः पुनातु ॐ मापो मौषधीर्हिꣳसीर्धाम्नो धाम्नो राजꣳस्ततो वरुणनो मुञ्च(वा.सं. २२। ६ ) ॐ जनः पुनातु । ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳ श्रथाय । अथा व्वयमादित्य व्रते तवानागसोऽ अदितये स्याम ॥(वा० सं० १२। १३ ) ॐ तपः पुनातु ॐ मुञ्चन्तु मा शपत्यादथो व्वरुण्यादुत । अथो यमस्य षड्बीशात्सर्व्वस्मादेव किल्बिषात् ॥ ( वा० सं० १२। ९० ॐ सत्यं पुनातु । ॐ अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः । अव देवैर्देवकृतमेनोयासिषववं मर्त्यैर्म्मर्त्यकृतम्पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि ॥ ( वा० सं० ३ । ४८ । ॐ ऊर्ध्वं पुनातु ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



प्रचोदयात् ॥ वा० सं० ३ । ३५ । ) ॐ सर्वं पुनातु ।" ततः कुशान् जले निक्षिप्य स्नायात् । पुनरपामार्गमादाय दक्षिणपाणिना वक्ष्यमाणं मन्त्रं पठन्नाभेरूर्ध्वं नाभेर्दक्षिणपार्श्वमारभ्य शिरसि नीत्वा वामपार्श्वान्तं मार्जयेत् तत्र मन्त्रो यथा-"ॐ अपामघमपकिल्बिषमपकृत्यामपोरपः । अपामार्ग्गस्त्वमुस्मदप दुष्वप्न्यꣳसुव॥ ( वा० सं०३५।११ )" इति । तत्परं स्नायात् । अथ दुर्वाऽङ्कुरानादाय नाभेरूर्ध्वं वक्ष्यमाणेन मन्त्रेणात्मानं सिञ्चेत् । तत्र मन्त्रो यथा-"ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषस्परि । एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ ( वा० सं० १३ । २०)" इति । ततो दूर्वाऽङ्कुरानपि विमुच्य स्नायात् तत्परं जलं नासिकाग्रमभिनीयाघमर्षणं कुर्यात् । तत्र मन्त्रो यथा- ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायते । ततो रात्रिरजायत ततः समुद्रो अर्णवः समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्व्वमकल्पयत् । दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥ " इति त्रिवारम् ॥ " ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरञ्च प्रयन्स्वः ॥ (वा० स० ३ । ६ । ) " इति वा त्रिवारणम् । ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव । पूतं पवित्रेणवाज्ज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ॥ ( वा० सं० २०। २० । ) " इति त्रिवारं वा । " ॐ भूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्व्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो योनः प्रचोदयात् । ॐ आपो ज्ज्योती रसोऽमृतम् । ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥ ( ३ । ५३ ) " इति वा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्रिः ॥ "ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् । लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥" इति वा त्रिवारम् ॥ विष्णुं मेघवर्णं शेषशायिनं लक्ष्म्या सेव्यमानं स्मरन पठेत् । एवं स्नानं कृत्वा स्नानाङ्गतर्पणं कुर्यात् । तत्रादौ ऋजुकुशोपग्रहं सचन्दनाक्षततुलसीपत्रं जलमर्घपात्रेण अञ्जलिना देवैतीर्थैनैकैकवारं देवान् तर्पयेत् । तत्र मन्त्रा यथा—ॐ ब्राह्मदयो देवास्तृप्यन्ताम् १ । ॐ भूर्देवास्तृप्यन्ताम् २ । ॐ भुवर्देवास्तृप्यन्ताम् ३ । ॐ स्वर्देवास्तृप्यन्ताम् ४ । ॐ भूर्भुवःस्वर्देवास्तृप्यन्ताम् ५ । अथ निवीती सन् कुशानुदगग्रान् कृत्वा स्वयं चोदङ्मुखो भूत्वा कायतीर्थेन प्रतिमन्त्रं सयवजलेन द्विर्द्विर्ऋषींस्तर्पयेत् । तत्र मन्त्रा यथा—ॐ सनकादिद्वैपायनान्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् १ । ॐ भूः ऋषयस्तृप्य० २ । ॐभुवऋषयस्तृप्यन्ताम् ३ । ॐस्वर्ऋषयस्तृप्यन्ताम्४। ॐ भूर्भुवःस्वः ऋषयस्तृप्यन्ताम्५।ततःपित्र्यतीर्थेन प्रतिमन्त्रं त्रिवारं दक्षिणामुखःप्राचीनावीती भूत्वा दक्षिणाग्रमूलान् कुशान् कृत्वा सतिलजलेन पितॄन् तर्पयेत्। तत्र मन्त्रा यथा—" ॐ कव्यवाडनलादयः पितरस्तृप्यन्ताम् १ । ॐ भूः पितरस्तृप्यन्ताम् २ । ॐ भुवःपितरस्तृप्यन्ताम् ३ । ॐ स्वःपितरस्तृप्यन्ताम् ४ । ॐ भूर्भुवःस्वःपितरस्तृप्यन्ताम्५।" तदनन्तरं सव्यः सन् आचामेत् । अथ सतिलाञ्जलिमादाय सव्यः सन् तीर्थतीरे वक्ष्यमाणं मन्त्रं पठन् उत्सृजेत् । तत्र मन्त्रो यथा—"यन्मया दूषितं तोयं मलैः शरीरसम्भवैः । तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्मैतत्ते तिलोदकम् ॥ इति ! अथ वृक्षादौ दक्षिणभागे शिखा

---

१ देवादितीर्थमुद्रा यथोक्ता अमरेण-"अंगुल्यग्रे तीर्थे दैवं स्वरूपांगुल्योर्मूले कायम् । मध्येऽङ्गुल्योःपित्र्यं मूल स्वंगुष्ठस्य ब्राह्मम् ॥" इति । २ 'निवीतं कण्ठलंबितम्' । इत्यमरोक्त्या कण्ठक्त यज्ञोपवीत इत्यर्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



निष्पीड्य तज्जलं वक्ष्यमाणं मन्त्रं पठन्नुसृत्जेत्। मन्त्रो यथा—" लता-गुल्मेषु वृक्षेषु पितरो ये व्यवस्थिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयोत्सृष्टैः शिखोदकैः॥ " इति। अथ शुद्धे वाससी परिधाय तिलकं कृत्वा परमात्मानं स्मरन् गृहमागच्छेत्। इति नद्यादौ नित्यस्नानपद्धतिः। अथ प्रातः सूक्तं पठेत्। तद्यथा—"हरिः ॐ प्रातरग्निम्प्रातरिन्द्र ꣳ हवामहे प्रातर्म्मित्रावरुणा प्रातरश्विना। प्रातर्भगम्पूषणम्ब्रह्मणस्पतिम्प्रातःसोममुत रुद्रꣳहुवेम ( वा० सं० ३४। ३४ ) प्रातर्जितम्भगमुग्रꣳहुवेम वयम्पुत्रमदितेर्योव्विधर्त्ता। आद्ध्रश्चिद्यन्म्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यम्भगम्भक्षीत्याह ॥ ( वा० सं० ३४। ३५। ) भगाप्रणेतर्भगु सत्यराधो भगेमान्धियमुदवादर्दन्नः। भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्न्नृवन्तःस्याम ॥ ( वा० सं०। ३४। ३६ ) ॥ उतेदानीम्भगवन्तः स्यामोतप्रपित्व उत मध्ये अन्हाम। उतोदिता मघवन्त्सूर्य्यस्य वयन्देवानाꣳसुमतौ स्याम् ॥ ( वा० सं० ३४। ३७ ) भगऽएव भगवाँ ँ अस्तु देवास्तेन वयम्भगवन्तः स्याम। तन्त्वा भग सर्व्वइज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवह ॥ ( वा० सं० ३४। ३८) समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय। अर्व्वाचीनं वसुविदम्भगन्नो रथमिवाश्वावाजिनआवहन्तु ॥ ( वा० सं० ३४। ३९ ) अश्वावतीर्गोमतीर्नऽउषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः। घृतन्दुहाना विश्वतःप्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदानः। ( वा० सं० ३४। ४० ) ॥ " इति स्नानोत्तरं पठेत् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**पारस्करगृह्यसूत्रे वस्त्रधारणमन्त्रः**—" **परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि ॥ शतं च जीवामि शारदःपुरूची रायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये ॥** " **स्नानानन्तरं वस्त्रपरिधानावश्यकत्वम्**—"स्नात्वावैव वाससी धौते अक्लिन्ने परिधापयेत् । प्रक्षाल्य चरणद्वन्द्वं हस्तौ प्रक्षालयेत्ततः ॥ अभावे धौतवस्त्रस्य पट्टक्षौमादिकानि च । कुतपं योगपट्टं वा विवासा येन नो भवेत् ॥ " इति **नागदेवोक्तेः** ॥ अथ त्रिकच्छावश्यकत्वमाह **याज्ञवल्क्यः**—:" वामकुक्षौ च नाभौ च पृष्ठे चैव यथाक्रमम् । त्रिकच्छेन समायुक्तो द्विजोऽसौ मुनिरुच्यते ॥ "

**वस्त्रधारणे विशेषमाह मनुः**—"ब्राह्मणस्य सितं वस्त्रं माञ्जिष्ठं नृपतेः स्मृतम् । पीतं वैश्यस्य शूद्रस्य नीलं मलवदिष्यते ॥" **देवलः**—"स्वयं धौतेन कर्तव्याः क्रियाधर्मा विपश्चिता । न तु नेजकधौतेन नाहतेन च कर्हिचित् ॥' **याज्ञवल्क्यः**—" अष्टहस्तं नवं श्वेतं सदशं नान्यधारितम् । अहतं तद्विजानीयात्सर्वकर्मसु पावनम् ॥ " **यन्त्रनिर्मुक्तं प्रक्षालितमप्यहतमित्याह सत्यातपः**—अहतं यन्त्रनिर्मुक्तमुक्तं वासः स्वयम्भुवा । शस्तं माङ्गलिकेष्वेतत्तावत्कालं प्रकीर्तितम् " इति । **दक्षः**—"ईषद्धौतं स्त्रिया धौतं शूद्रः धौतं तथैव च । प्रसारितं यमदिशि गर्हितं सर्वकर्मसु ॥ " तथा च शुद्धेनैव जलेन सन्ध्योपासानतर्पणाद्यनन्तरं धौतं वस्त्रं सति सम्भवे पूर्वोत्तरपश्चिमाख्यासु दिक्षु प्रसारयेदित्यर्थः ॥ **आपस्तम्बः**—"आर्द्रवासास्तु यः कुर्याज्जपहोमपरिग्रहान् ' सर्वं तद्राक्षसं विद्यात्कर्मजातं च यत्कृतम् ॥ यज्जले शुष्कवस्त्रेण स्थले चैवार्द्रवाससा । जपो होमस्तथा दानं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥ न स्यूतेन न दग्धेन पारक्येण विशेषतः । मूषकोत्कीर्णजी[illegible]मं कुर्याद्विचक्षणः ॥ " **आह्निककारिकाकारः**—" आर्द्रवासाजले कुर्यात्तर्पणाचमनं जपम् । शुष्कवासाः स्थले कुर्यात्तर्पणाचमनं जपम् ॥ नानारङ्गविराजितं गतदशं कोशोद्भवं वासितं नीली[illegible]समन्वितं च समलं [illegible]यतं चास्ति यत् । दग्धं चैव च खण्डितं च बहुधा युद्धादिकैश्चित्रितंतद्वर्ज्यं [illegible]जनविधौ वस्त्रं कुसुम्भारु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



णम् ॥ " किंतु श्वेतमेव वस्त्रं धारयेत् । रक्तं तु वस्त्रमाभिचारिके कर्म्मान्तर एवेति तत्त्वम् ॥

**धौतवस्त्रप्रसाधनम्, शातातपः**-" प्रागग्रमुदगग्रं वा धौतं वासः प्रसारयेत् । दक्षिणाग्रं पश्चिमाग्रं पुनः प्रक्षालनं भवेत् ॥ "

**उपवस्त्रपरिधानाऽवश्यकता**-" होमदेवार्चनाद्यासु क्रियासु पठने तथा । नैकवस्त्रः प्रवर्तेत द्विजो नाऽऽचमने जपे ॥" इति **विष्णुपुराणोक्तेः** " नैकवस्त्रो द्विजः कुर्याद्भोजनं च सुरार्चनम् " इति **व्याघ्रपादोक्तेः** । एकवस्त्रं विना पात्रं सव्ययज्ञोपवीतकम् । प्रत्यक्षं तु नदीशौचं कुर्वञ्छूद्रत्वमाप्नुयात् ॥" इति **आह्निककारिकाकारोक्तेश्च** ।

**उपवस्त्रधारणमन्त्रः पारस्करगृह्यसूत्रम्**-"**यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती । यशो भगश्च मा विदद्यशोमा प्रतिपद्यताम् ॥**" इति "**एकं चत्पूर्वोत्तरवर्गेण प्रच्छादयीत**" इति पारस्करेणोत्तरीयवस्त्राभावे-इतिकर्तव्यतोक्ता । इति । **स्नानादौ भावशुद्धेरावश्यकत्वं काशीखण्डे**-" अपि सर्वनदीतोयैर्मृत्कूटैश्चाथ गोरसैः आपातमाचरेच्छौचं भावदुष्टो न शुध्यति । नक्तंदिनं निमज्ज्याप्सु कैवर्ताः किमु पावनाः ॥ शतशोऽपि तथा स्नाता न शुद्धा भावदूषिताः ॥ " इति

**उपवस्त्राभावे यज्ञोपवीताधिक्यम्**-" यज्ञोपवीते द्वे धार्ये श्रौते स्मार्ते च कर्मणि । तृतीयमुत्तरीयार्थं वस्त्राभावे चतुर्थकम् ॥" इति स्मरणात् । अत्र विशेषमाह **परशुरामनिबन्धकारः**-"उपवस्त्रं यदा न स्यात्तदा चत्वारि धारयेत्" इति । तथा च सन्ध्यादिकर्मसमये उपवस्त्रमावश्यकम् ॥

**वस्त्रादिशुद्धिप्रकारमाह योगीश्वरः**-"निष्पीड्य स्नानवस्त्रं तु आचम्य विधिना ततः देवानामर्चनं कुर्यादब्रह्मादीनामनन्तरम् ॥ इति।**आह्निककारिकाकारः**-"गृहस्नानं यदा कुर्याद्वस्त्रमूर्ध्वं परित्यजेत् । अधोऽग्रेण च सम्पीड्य पराशरवचो यथा॥स्नानं कृत्वाऽऽर्द्रवस्त्रं च ऊर्ध्वमुत्तारयेद्द्विजः।आर्द्रवस्त्र-

---

१ ना पुरुष इत्यर्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मधः क्षिप्त्वा पुनः स्नानेन शुद्ध्यति ॥" इति **मनुः**" काकस्पृष्टानि वस्त्राणि प्रोक्षितानि शुचीनि हि। प्रोक्षणाद् भूमिशुद्धिः स्याद्वाससामपि सर्वदा॥" इति। **योगीश्वरः**-"प्रोक्षणेनैव शुद्धिः स्यादुकूले चैव कम्बले। प्रक्षालनेन वस्त्रस्य सम्पर्के सूतके रजे ॥ नीलि पट्टे जलं तक्रे गावश्चाण्डालमन्दिरे पञ्चगव्येन भिक्षान्नं पवित्राणि दिने दिने ॥ द्रव्यस्यान्तर्गता नीली न दूष्यति कदाचन। कम्बलेपट्टसूत्रे च नीलीदोषोन विद्यते" इति **धौम्य**-"अद्भिस्तु प्रोक्षण शौचं बहूनां धान्यवाससाम्। प्रक्षालनेन स्वल्पानामद्भिः शौचं विधीयते ॥ वीर्यस्पृष्टं शवस्पृष्टं स्पृष्टं मूत्रपुरीषयोःरजस्वलादिसंस्पृष्टमाविकं तु सदाशुचि॥" **रामार्चन चन्द्रिकाकारः**- "वस्त्रं त्रिगुणितं कृत्वा निष्पीड्यति मूढधीः। वृथा स्नानं भवेत्तस्यनिष्पीडयति चाम्बुनि॥इति। **याज्ञवल्क्यः**-"त्रपुसीसकताम्राणां क्षाराम्लोदकवारिभिः। भस्मभिः कांस्यलोहानां शुद्धिः प्लावो द्रवस्य तु॥" इति। घृतस्य नवनीतस्य आढकादिप्रमाणस्य श्वकाकादिदुःस्पर्शे प्रत्यक्षस्पर्शयुक्तं तद्घृतनवनीतादिकं त्यक्त्वाऽन्यद्भाण्डे प्रक्षिप्याग्नौ प्रताप्य वस्त्रेण परिशोध्य गायत्र्याऽभिमन्त्रितजलाभ्युक्षणाच्छुद्ध्यति। एवं तक्रतैलक्षीरदध्नां द्रोणप्रमाणानां काकाद्युपहतौ शुद्धिं कुर्यात् ॥ " सर्वत्र वसुधा पूता यत्र लेपो न विद्यते। यत्र लेपो भवेत्तत्र पुनर्लेपेन शुद्ध्यति ॥ पञ्चगव्यं पिबेद्विप्रो बिभृयाच्छिरसा नृपः। वैश्यस्याभ्युक्षणं प्रोक्तं शूद्रस्य तु निरीक्षणम्॥ अतीव तृषिती विप्रस्तोयं शूद्रस्य चेत्पिबेत्। उपवासेन चैकेन पञ्चगव्येनः शुद्ध्यति ॥ इत्युक्तेः।

**सन्ध्योपासनमुक्तम्, कात्यायनपरिशिष्टसूत्रे**-"उत्तीर्य धौते वाससीपरिधाय मृदोरूकरौप्रक्षाल्याचम्य त्रिरायम्यासून्[1] पुष्पाण्यम्बुमिश्राण्यूर्ध्वं क्षिप्त्वौर्ध्वबाहुः सूर्यमुदीक्षन्नुद्वयमुदुत्यं चित्रं[2] तच्चक्षुरिति[3] गायत्र्या च यथा शक्ति॥ " इति। **पारस्करगृह्यसूत्रे**-" वाक्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रं यशो बलमिति व्यायुषाणि करोति " ॥

---

१ असून् प्राणानित्यर्थः। २ उद्वयमिति मंत्रः। ३ उदुत्यमिति मंत्रः। ४ चित्रं देवानामिति मंत्रः। ५ तच्चक्षुरित्यपि मंत्रः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**सन्ध्याफलम्**—"सन्ध्यामुपासते ये तु सततं संशितव्रताः । विधूत पापास्ते यान्ति ब्रह्मलोकं सनातनम् ॥" **इत्यत्रिस्मरणात्** । "यावन्तोऽस्यां पृथिव्यां हि विकर्मस्थातु वै द्विजाः। तेषां वै पावनार्थाय सन्ध्या सृष्टा स्वयम्भुवा॥ निशायां वा दिवा वापि यदज्ञानकृतं भवेत् । त्रिकालसन्ध्याकरणात्तत्सर्वं हि प्रणश्यति ॥ "इति **याज्ञवल्क्यस्मरणात्** ॥ अत्र द्विजशब्दो द्विजातिमात्रपरः न तु ब्राह्मणपर एव सन्ध्योपासने ब्रह्मक्षत्त्रविशां साधारण्येनाधिरात् ॥

**सन्ध्याऽभावे दोषमाह मरीचिः**—"सन्ध्या येन न विज्ञाता सन्ध्या येनाऽनुपासिता । जीवमानो भवेच्छूद्रो मृतः श्वा चाभिजायते ॥ " इति ॥ **दक्षः**—"सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु । यदन्यत्कुरुते कर्म न तस्य फलभाग्भवेत् ॥" इति । **सन्ध्याविधिः कौर्मे**—"प्राक्कूलेषु ततः स्थित्वा दर्भेषु सुसमाहितः । प्राणायामत्रयं कृत्वा ध्यायेत्सन्ध्यामिति श्रुतिः ॥ या च सन्ध्या जगत्सूतिर्माया ऽतीता हि निष्कला । ऐश्वरी केवला शक्तिस्तत्त्वत्रयसमुद्भवा ॥ ध्यात्वार्कमण्डलगतां सावित्रीं तां जपेद्बुधः । प्राङ्मुखः सततं विप्रा सन्ध्योपासनमाचरेत् ॥ सहस्रपरमां नित्यं शतमध्यां दशावराम् । सावित्रीं वै जपेद्विद्वान् प्राङ्मुखः प्रयतः स्थितः ॥" इति ॥

**सन्ध्याव्याख्या, नागदेवः**—" अहोरात्रस्य यः सन्धिस्सूर्यनक्षत्रवर्जितः । सा तु **सन्ध्या** समाख्याता मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ "

**सन्ध्याकालः नागदेवः**—' सूर्योदयात्पूर्वं द्वे घटिके सन्ध्या- कालः॥" **अग्निस्मृतौ**—"सन्ध्याकालः प्रागुदयाविप्रस्य द्विमुहूर्तकः । क्षत्रियस्य तदर्धं स्यातदर्ध स्याद्विशोऽप्युत ॥ " **धर्मसारे**—"उत्तमा तारको पेता मध्यमा लुप्ततारका । अधमा सूर्यसहिता प्रातःसन्ध्या त्रिधा मता ॥"

**त्रिकालसन्ध्यानामानि, व्यासः**—" गायत्री नाम पूर्वाह्णे सावित्री मध्यमे दिने । सरस्वती च सायाह्णे एवं सन्ध्या त्रिधास्मृता ॥"

**प्रातःसन्ध्यावर्णनम्, बृहत्पाराशरः**—"पूर्वसन्ध्या तु गायत्री क्षाणी हंसवाहना । रक्तपद्मारुणा देवी रक्तपद्मासनस्थिता ॥ रक्ताभरण-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



भासाङ्गा रक्तमाल्याम्बरा तथा । अक्षमाला ध्रुवाधारा चारुहस्ताऽमरार्चिता ॥ प्रागादित्योदयाद्विद्वान्मुहूर्ते वैधसे सति । उत्थायोपासयेत्सन्ध्यां यावत्स्यादर्क-दर्शनम् ॥ विश्वमातः सुराभ्यर्च्ये पुण्ये गायत्रि वैधसि । आवाहयाम्युपास्त्य-र्थमेह्येनोऽस्ति पुनीहि माम् ॥"

**माध्याह्नसन्ध्या, बृहत्पाराशरः**--" सन्ध्या माध्याह्निकी श्वेता सावित्री रुद्रदेवता । वृषेन्द्रवाहना देवी बालत्रिशिखधारिणी । श्वेताम्बरधरा श्वेता नानामरणभूषिता । श्वेतस्रगक्षमालापि कृतानुरक्तशंकरा ॥ जलाधारा धरा धात्री धरेन्द्राङ्गभवाभवा । स्वभाविभातभूराद्या सुरौघनुतपदद्वया ॥ मातर्भवानि विश्वेशि विश्वविश्वजनार्चिते । शुभे वरे वरेण्या हि आह्वते हि पुनीहि माम् ॥"

**सायंसन्ध्या बृहत्पाराशरः**-- "सन्ध्या सायन्तनी कृष्णाविष्णुदेवा सरस्वती । स्वर्गंगा कृष्णवस्त्रा तु शंखचक्रगदाधरा ॥ कृष्णभूभूषणैर्युक्ता सर्वज्ञानमयी वरा । सर्ववाग्देवता सर्वा ब्राह्म्यादिवचसि स्थिता ॥ वीणा-क्षमालिकाचारुहस्ता स्मितवरानना । चतुर्दशजनाभ्यर्च्या कल्याणी शुभकृत् सदा ॥ मातर्वाग्देवते देवि वरेण्ये च वरप्रदे । सर्वामरगणस्तुत्ये आह्वते हि पुनीहि माम् ॥

**सन्ध्यावर्णाः, व्यासस्मृतौ**-"गायत्री तु भवेद्रक्ता सावित्री शुक्लवर्णिका । सरस्वती तथा कृष्णा उपास्या वर्णभेदतः॥"इति"गायत्री ब्रह्म-रूपा तु सावित्री रुद्ररूपिणी । सरस्वती विष्णुरूपाउपास्या वर्णभेदतः"इति च ।

**सन्ध्यागोत्राणि**-"गायत्री तु सांख्यायनगोत्रा ॥ सावित्री तु कात्या-यनगोत्रा ॥ तथा सरस्वती तु बाह्वल्यगोत्रा ॥" इति ॥

**सन्ध्योपयोगीनि पात्राणि, प्रयोगपारिजाते**-"धाराच्युतेन तोयेन सन्ध्योपास्तिर्विगर्हिता । नद्यां तीर्थे ह्रदे वापि भाजने मृन्मयेऽपि वा ॥ औदुम्बरे च सौवर्णे राजते दारुसम्भवे । कृत्वा तु वामहस्ते वा सन्ध्योपास्तिं समाचरेत् ॥ **मरीचिस्मृतौ**-"गोकर्णाकृतिवत्पात्रं ताम्रं रौप्यं च हाटकम् । जलं तत्र विनिक्षिप्य सन्ध्योपासनमाचरेत् ॥ " **आह्निककारिकाकारः**-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



"कांस्येनायसपात्रेण त्रपुसीसकपित्तलैः । आचान्तःशतकृत्वोऽपि न कदाचन शुद्ध्यति॥" तेन हस्तांगुष्ठमूले निधायैवापः स्पृष्ट्वा शुध्यतीति बोधितम् ॥

**सन्ध्यादिजपस्थलम्, ईश्वरः**--गृहे जपः समः प्रोक्तो गोष्ठे शतगुणः स्मृतः । आरामे च तथाऽरन्ये सहस्रगुण उच्यते ॥ अयुतः पर्वते पुण्ये नद्यां लक्षगुणस्तुः सः ॥ कोटिर्देवालये प्राहुरनन्तः शिवसन्निधौ ॥" **याज्ञवल्क्यस्मृतौ**-- शतेन गायत्र्या स्नायात् शतमन्तर्जले जपेत् । अपा शतेन पीत्वा तु सर्वपापैः प्रमुच्यते" ॥ **शारदातन्त्रे**--"पुण्यक्षेत्रं नदीतीरं गुहापर्वतमस्तकम् । तीर्थप्रदेशाः सिन्धूनां सङ्गमः पावनं सरः ॥ उद्यानानि विविक्तानि बिल्वमूलं तटं गिरेः । देवाद्यायतनं कूलं समुद्रस्य निजं गृहम् ॥" **शातातपआह**--"अनृतं मद्यगन्धं च दिवामैथुनमेव च । पुनाति वृषलस्थानं बहिःसन्ध्या ह्युपासिता ॥" इति ।

**कालातिक्रमणे सन्ध्योपासने विशेषः, मदनपारिजाते**— "कालातिक्रमणे चैव चतुर्थार्घ्यं प्रदापयेत् ॥" (आकृष्णेनेति मन्त्रेणेति शेषः)।

**आसनानि, व्यासः**--"कौशेयं कम्बलं चैव अजिनं पट्टमेव च । दारुजं तालपत्रं वा आसनं परिकल्पयेत् ॥" इति ।

**आसनगुणाः, ग्रन्थान्तरे**--"कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धिर्मोक्षश्रीर्व्याघ्रचर्मणि । वशाजिने व्याधिनाशः कम्बले दुःखमोचनम् ॥ अभिचारे नीलवर्णं रक्तं वश्यादिकर्मणि । शान्तिके कम्बलः प्रोक्तः सर्वेष्टं चित्रकम्बले ॥ वंशासने तु दारिद्र्यं पाषाणे व्याधिसम्भवः । धरण्यां दुःखसम्भूतिदौर्भाग्यं छिद्रिदारुजे । तृणे धनयशोहानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः ॥" इति ॥

**आसनपरिमाणमुक्तम्, कालीपुराणे**--" चतुर्विंशत्यंगुलैस्तु दीर्घं काष्ठासनं मतम् । षोडशांगुलविस्तीर्णमुत्सेधे चतुरंगुलम् ॥ पंचांगुलं वा कुर्यात्तु नोच्छ्रितं चात्र कारयेत् । वस्त्रं द्विहस्तान्नो दीर्घं सार्द्धहस्तान्न विस्तृतम्॥ त्र्यंगुलं तु तथोच्छ्रायं पूजाकर्मणि संश्रयेत् । सर्वेषां तैजसानां च आसनं श्रेष्ठ मुच्यते ॥" इति ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**वर्ज्यान्यासनानि, देवीभागवते**--"आयसं वर्जयित्वा तु कांस्य-सीसकमेव च ॥"

**पादुकाधारणनिषेधः अङ्गिराः**-"अन्यगारेगवां गोष्ठे देवब्राह्मण-सन्निधौ। आहारे जपकाले च पादुकानां विसर्जनम् ॥"

**प्रौढपादासनम्, आचारमयूखे**--"दानमाचमनं होमं भोजनं देवता-र्चनम्। प्रौढपादौ न कुर्वीत स्वाध्यायं पितृतर्पणम् ॥" **प्रौढपादासन्-लक्षणम्, आह्निककारिकाकाराः**--"आसनारूढपादस्तु जानुनोर्वाऽथ जंघयोः। कृतावसक्थिको यश्च प्रौढपादः स उच्यते ॥" इति ॥

**स्वस्तिकासनम्, कालीपुराणे**--"सव्यमाकुञ्चितचरणं दक्षिणजंघो-र्वन्तरे दक्षिणं च सव्यजंघोर्वन्तरे निक्षिपेत्।" इति।

**पद्मासनम्**--"पद्मासनमिदं प्रोक्तं योगिनां हृदयङ्गमम्। जानूर्वोरन्तरे सम्यक् कृत्वो पादतले उभे ॥" **वाचस्पतौ**--"ऊरुमूले वामपादं पुनस्तु दक्षिणं पदम्। वामोरौ स्थापयित्वा तु पद्मासनमिति स्मृतम् ॥" **देवीभाग-वते**--"पद्मासनं स्वस्तिकं च भद्रं वज्रासनं तथा। वीरासनमिति प्रोक्तं क्रमा-दासनपञ्चकम् ॥ ऊर्वोरुपरि विन्यस्य सम्यक् पादतले उभे। अंगुष्ठौ च निब-ध्नीयाद्धस्ताभ्यां व्युत्क्रमात्ततः ॥" (इदमासनं सूर्यार्घप्रदानावसर उपयुज्यते)।

**स्वस्तिकासनम्, देवीभागवते**--"ऋजुकायो विशेद्योगी स्वस्तिकं तत्प्रचक्षते ॥"

**भद्रासनम्, देवीभागवते**--"सीवन्याः पार्श्वयोर्न्यस्य गुल्फयुग्मं सुनिश्चितम्। वृषणाधः पादपार्ष्णिः पाणिभ्यां परिबन्धयेत्। भद्रासनमिति प्रोक्तं योगिभिः परिपूजितम् ॥"

**वज्रासनम्, देवीभागवते**--"ऊर्वोः पादौ क्रमान्न्यस्य जान्वोः प्रत्यं-ङ्मुखांगुली। करौ विदध्यादास्यातं वज्रासनमनुत्तमम् ॥"

**वीरासनम्, देवीभागवते**--"एकं पादमधः कृत्वा विन्यस्यैकं तथो-त्तरे। ऋजुकायो विशेद्योगी वीरासनमितीरितम् ॥"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**सन्ध्योपासने दिग्विचारः, लघुव्याससंहितायाम्**-"प्राङ्मुखः प्रयतो विप्रः सन्ध्योपासनमाचरेत्। आसीनः प्राङ्मुखो नित्यं जपं कुर्याद्यथाविधि ॥" ( इदं च प्रातर्मध्याह्निकसन्ध्योपासनोद्देशेनैवोक्तम्। ) **परिभाषाकर्मप्रदीपे**--यत्रोपदिश्यते कर्म कर्तुरङ्गं न तूच्यते। दक्षिणस्तत्र विज्ञेयः कर्मणां पारगैः करः ॥ यत्र दिङ्नियमो न स्याज्जपहोमादिकर्मसु। तिस्रस्तत्र दिशः प्रोक्ता ऐन्द्री सौम्याऽपराजिता ॥" **गौतमः** "रात्रावुङ्मुखःकुर्याद्दैव कार्यं सदैव हि। शिवार्चनं सदाप्येव शुचिः कुर्यादुङ्मुखः" **तन्त्रान्तरे**-"यत्रैव भानुः सततं ह्युदेति प्राचीति तां वेदविदो वदन्ति। ततोऽपरां पूजकपूज्ययोश्च सदागमज्ञाः प्रवदन्ति यां तु॥" इति। तत्परिभाषायामुक्तत्वात्पूज्यपूजकमध्यः पूर्वा, अन्यत्र तु सूर्योदयोपलक्षितैव प्राची ग्राह्या। **बृहत्पाराशरः**--"ईशान्याभिमुखो भूत्वा द्विजः पूर्वमुखोऽपि वा। सन्ध्यामुपासवेन्नित्यं यथावत्तन्निबोधत ॥"

**सन्ध्यायां मात्राः, देवीभागवते**--"इडयाऽऽकर्षयेद्वायुं बाह्यं षोडश मात्रया। धारयेत्पूरितं योगी चतुःषष्ट्या तु मात्रया ॥ सुषुम्नामध्यगं सम्यग्द्वात्रिंशन्मात्रया शनैः ॥ नाड्या पिङ्गलया चैव रेचयेद्योगवित्तमः ॥ प्राणायाममिमं प्राहुर्योगशास्त्रविशारदाः ॥" इति।

**भस्मना तिलकम्, पारस्करगृह्ये**--"**भस्मना ललाटे ग्रीवायां दक्षिणेऽंसे हृदिच त्र्यायुषमिति प्रतिमन्त्रम् ॥**" **अत्र विशेषः**--"प्रातः ससलिलं भस्म मध्याह्ने गन्धमिश्रितम्। सायाह्ने निर्जलं भस्म एवं भस्म विलेपयेत् ॥"

**मृत्स्नया तिलकं, ब्राह्मे**--"गङ्गातीरसमुद्भूतां मृदं मूर्ध्ना बिभर्ति यः। बिभर्ति सोऽर्कस्य तेजस्तमोनाशाय केवलम् ॥" **ग्राह्यं भस्म, काशीखण्डे**--"आग्नेयमुच्यते भस्म दग्धगोमयसम्भवम्। तदेव द्रव्यमित्युक्तं त्रिपुण्ड्रस्य महामुने ॥" **स्मृतिसङ्ग्रहे**--"अग्निहोत्राग्निजं भस्म विरजाहोमजं

---

१-इदं च प्रक्षिप्तं सूत्रे इति मन्तव्यम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तथा । औपासनसमुत्पन्नं समिदग्निसमुद्भवम् ॥ समिदग्निसमुत्पन्नं धार्यं वै ब्रह्मचारिणा शूद्राणां श्रोत्रियागारपचनाग्निसमुद्भवम् ॥ अन्येषामपि सर्वेषां धार्यं दावानलोद्भवम् ॥" **प्रयोगपारिजाते**--"मृद्भस्म चन्दनं प्रोक्तं तोयं चैव चतुर्थकम् । स्नात्वा पुंमृदा कुर्यात्प्रक्षाल्यैव तु भस्मना ॥ देवानभ्यर्च्य गन्धेन जलमध्ये जलेन तु ॥"

**त्रिपुण्ड्रतिलकफलम्, कात्यायनः**--"श्राद्धे यज्ञे जपे होमे वैश्वदेवे सुरार्चने । धृतत्रिपुण्ड्रः पूतात्मा मृत्युं जयति मानवः ॥"

**तिलकविशेषाः, कात्यायनः**--"ऊर्ध्वपुण्ड्रं मृदा कुर्याद्भस्मना तु त्रिपुण्ड्रकम् । उभयं चन्दनेनैव अभ्यङ्गोत्सवरात्रिषु॥"इति। **प्रयोगपारिजाते** "धार्यं भस्म त्रिपुण्ड्रं तु गृहिणा जलसंयुतम्। सर्वकालं भवेत्स्त्रीणां यैतीनां[1] जलवर्जितम् ॥ वानप्रस्थस्य कन्यानां दीक्षाहीननृणां तथा । मध्याह्नात्प्राग्जलैर्युक्तं परतो जलवर्जितम् ॥ मध्यांगुलित्रयेणैव स्वदक्षिणकरस्य च । त्रिपुण्ड्रं धारयेद्विद्वान् सर्वकिल्बिषनाशनम् ॥" **भस्मतिलकावश्यकत्वम्, भविष्यपुराणे**--"सितेन भस्मना कुर्यात् त्रिसन्ध्यं च त्रिपुण्ड्रकम् । सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवेन सह मोदते ॥ सत्यं शौचं जपो होमस्तीर्थदेवादिपूजनम् । तस्य व्यर्थमिदं सर्वं यस्त्रिपुण्ड्रं न धारयेत्॥"**भस्मधारणेऽङ्गानि, स्मृतिरत्नावल्याम्**--"ललाटे हृद्ये नाभौ गलेंऽसे बाहुसन्धिषु । पृष्ठदेशे शिरस्येवं स्थानेष्वेतेषु धारयेत् ॥ मध्यमाऽनामिकांगुष्ठैरनुलोमविलोमतः । अतिस्वल्पमनायुष्यमतिदीर्घं तपःक्षयम्॥नेत्रयुग्मप्रमाणेन त्रिपुण्ड्रं धारयेद्द्विजः । षडंगुलप्रमाणेन ब्राह्मणानां त्रिपुण्ड्रकम् ॥ नृपाणां चतुरंगुल्यं वैश्यानां द्व्यंगुलं मतम् । शूद्राणामथ सर्वेषामेकांगुल्यं त्रिपुण्ड्रकम् ॥" **त्रिपुण्ड्रकलक्षणम्, काशीखण्डे**--"भ्रुवोर्मध्यं समारभ्य यावदन्तो भवेद् भ्रुवोः । मध्यमाऽनामिकांगुल्योर्मध्ये तु प्रतिलोमतः। अंगुष्ठेन कृता रेखा त्रिपुण्ड्रः सोऽभिधीयते ॥" इति ।

---

१--यतीनां चेति वक्तव्यम् ।



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**भस्मधारणे पुलस्त्यः**--अग्निरित्यादिभिर्मन्त्रैः शुद्धं ब्रह्माभिमंत्रितम्[1]। शिवमन्त्रेण तद्वार्यं मन्त्रेणाष्टाक्षरेण वा ॥ गायत्र्या वा च देवर्षे मन्त्रेण प्रणवेन वा। करोति शिवमन्त्रेण यस्त्रिपुण्ड्रं द्विजोत्तमः॥ त्र्यक्षः शुद्धतरः सौम्यः शिवलोके महीयते। अष्टाक्षरेण मन्त्रेण यः करोति त्रिपुण्ड्रकम् ॥ विष्णोः पदमवाप्नोति नान्यथा श्रुतिचोदितम्। सौरं पदमवाप्नोति गायत्र्या मुनिसत्तम। प्राप्नोति ब्रह्मणो रूपं प्रणवेन न संशयः॥" **क्रियासारे**--वामहस्ततले भस्म क्षिप्त्वाऽऽच्छाद्यान्यपाणिना। अग्निरित्यादिमन्त्रेण स्पृशन् भस्माभिमन्त्र्य च[2] ॥ " इति ॥

**भस्मधारणाभावे दोषः, बृहन्नारदीये**--"स्नाने दाने जपे होमे सन्ध्यास्वाध्यायकर्मसु। ऊर्ध्वपुण्ड्रविहीनश्चेत्तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥" **प्रयोगपारिजाते**--"ललाटे तिलकं कृत्वा सन्ध्याकर्म समाचरेत्। अकृत्वा भालतिलकं तस्य कर्म निरर्थकम् ॥ " इति ॥

**रुद्राक्षधारणफलम्, वाचस्पतौ ईश्वरः**--"रुद्राक्षा यस्य गात्रेषु ललाटे च त्रिपुण्ड्रकम्। स चाण्डालोऽपि सम्पूज्यः सर्ववर्णोत्तमो भवेत् ॥ अभक्तो वा विभक्तो वा नीचो नीचतरोऽपि वा। रुद्राक्षान्धारयेद्यस्तु मुच्यते सर्वपातकैः ॥ सहस्रं धारयेद्यस्तु रुद्राक्षाणां धृतव्रतः। तं नमन्ति सुराः सर्वे यथा रुद्रस्तथैव सः ॥" इति ॥

**मालालक्षणम्, आह्निकारिकाकारः**--"मध्यमादिद्वयं पूर्वं जपकाले तु वर्जयेत्। तं वै मेरुं विजानीयात्कथितं ब्रह्मणा पुरा ॥ मेरुहीना च या माला मेरुलंघा च या भवेत्। अशुद्धप्रतिकाशा च सा माला निष्फला भवेत् ॥ चित्रिणी बिसतन्त्वाभा ब्रह्मनाडीगतान्तरा। तथा संग्रथिता माला सर्वकामफलप्रदा ॥" **नागदेवः**--"अरिष्टपत्रं बीजं च शंखपद्मौ मणिस्तथा। कुशग्रन्थिश्च रुद्राश्च उत्तमं चोत्तरोत्तरम्॥ प्रवालमुक्तास्फटिकैर्जपः कोटिफलप्रदः। तुलसी-

---

१-'ॐ अग्निरिति भस्म जलमिति भस्म' इत्यादिमन्त्रेणेत्यर्थः। बहुवचनमविवक्षितम्। २-ॐ ब्रह्मजज्ञानमित्यादिमन्त्रेण मन्त्रितमित्यर्थः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मणिभिर्येन गणितं चाक्षयं फलम् ॥" **व्यासस्मृतिः**–"हिरण्यगर्भमणिभिर्जपं शतगुणं भवेत्। सहस्रगुणमिन्द्राक्षै रुद्राक्षैर्नियुतं भवेत्॥ नियुतं प्रयुतं वा स्यात् पद्माक्षैस्तु न संशयः। अष्टोत्तरशतं कुर्याच्चतुष्पञ्चाशिकापि वा॥ सप्तविंशतिका वापि ततो नैवाधमा हिता। अक्षुद्रा समरन्ध्रा च परिपूर्णा दृढापि च॥ सशब्दा च चला या तु त्रुटिता ग्रथिता तथा। छिन्ना सूत्रेषु ग्रथिता पाषाणस्यापुरातनी निश्चला ग्रथिताऽन्योन्यं संघर्षणविवर्जिता॥ माला दुःखप्रदायिन्यो ग्रथिता निन्द्यतन्तुषु॥ तर्जन्या न स्पृशेदक्षं जपयेन्न विधूनयेत्। अंगुष्ठस्य तु मध्यस्य परिवर्तं समाचरेत्। मध्यमाऽऽकर्षणं त्वस्याः सर्वसिद्धिप्रदायकम्॥"

**रुद्राक्षधारणाभावे दोषः, ग्रन्थान्तरे**–"अरुद्राक्षो जपः पुंसां तावन्मात्रफलप्रदः। यस्यांगे ह्यस्ति रुद्राक्ष एकोऽपि बहुपुण्यदः॥ विभूतिर्यस्य नो भाले नाङ्गे रुद्राक्षधारणम्। न हि वाण्यां शिवोच्चारस्तं त्यजेदन्त्यजं यथा॥" इति॥

**कर्मविशेषे दर्भप्रमाणम्, कुशकण्डिकासूत्रभाष्ये**–"ब्रह्मयज्ञे गोकर्णमात्रप्रमाणौ द्वौ दर्भौ। तर्पणे हस्तमात्रप्रमाणास्त्रयो दर्भाः॥" **अमरः**–"प्रादेशतालगोकर्णास्तर्जन्यादियुते तते। अंगुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशांगुलः॥" इति। **अत्रिः**–'अनामिकामूलदेशे पवित्रं धारयेद्द्विजः' इति॥

**कुशपवित्रम्, कात्यायनः**–"अनन्तर्गर्भितं साग्रं कौशं द्विदलमेव च। प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पवित्रं यत्र कुत्रचित्॥" **अत्र विशेषमाह मार्कण्डेयः**–"चतुर्भिर्दर्भपिञ्जूलैर्ब्राह्मणस्य पवित्रकम्। एकैकन्यूनमुद्दिष्टं वर्णे वर्णे यथाक्रमम्॥ सपवित्रेण हस्तेन कुर्यादाचमनक्रियाम्। नोच्छिष्टं तत्पवित्रं तु भुक्तोच्छिष्टं तु वर्जयेत्॥" **सुमन्तुः**–"समूलाग्रौ विगर्भौ तु कुशौ द्वौ दक्षिणे करे। सव्ये चैव तथा त्रींश्च बिभृयात्सर्वकर्मसु॥" **अत्रिः**–ब्रह्मयज्ञे जपे चैव ब्रह्मग्रन्थिर्विधीयते। भोजने वर्तुलं प्रोक्तमेवं धर्मो न हीयते॥" **बोधायनः**–"हस्तयोरुभयोर्द्वौ द्वावासनेऽपि तथैव च॥" **हारीतः**–वामहस्ते कुशान् कृत्वा समाचामति यो द्विजः। उपस्पर्शो भवेत्तुल्यो रुधिरेण मलेन च॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



उभयत्र स्थितैर्दर्भैः समाचामति यो द्विजः । सोमपानफलं तस्य भुक्त्वा यज्ञफलं भवेत् ॥" **प्रयोगपारिजाते**-"स्नाने होमे जपे दाने स्वाध्याये पितृकर्मणि । करौ सदर्भौ कुर्वीत तथा सन्ध्याभिवादने ॥"

**कुशपवित्रप्रमाणम्**-"द्व्यंगुलं मूलवल्यं ग्रन्थिरेकांगुलिर्भवेत् । चतुरंगुलमग्रं स्यात्पवित्रस्य प्रमाणकम्॥पौष्टिके पञ्च दर्भाश्च चतुर्दर्भाश्च शांन्तिके । पैतृके तु त्रिदर्भाश्च द्वौ दर्भौ नित्यकर्मणि ॥" **आह्निककारिकासु**-"यथा वर्म पुरारेस्तस्य यथा चक्रं हरेस्तथा । त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य तथा विप्रपवित्रकम् ॥" **तत्र च**--द्विगुणीकृतानां दर्भशिखानां पाशः प्रदक्षिणमर्धवेष्टनं विधाय पश्चाद्वामेन यदा प्रवेश्यते तदा वर्तुलो ग्रन्थिः । यदा प्रादक्षिण्येन सर्ववेष्टनं विधाय पुरोभागेन प्रवेश्यते तदा ब्रह्मग्रन्थिरिति॥ "ब्रह्मयज्ञे जपे चैव ब्रह्मग्रन्थिर्विधीयते । भोजने वर्तुलं प्रोक्तमेवं धर्मो न हीयते ॥"

**कुशपवित्राभावेऽन्यपवित्रम्, हेमाद्रौ**-"अन्यान्यपि पवित्राणि कुशदूर्वामयानि च। हेमात्मकपवित्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥"(एतेन कुशसत्त्वेऽपि हेमपवित्रसत्त्वमतिशयेन शोभनमिति दर्शितम् । न तु हेमसम्भव एव कुशापेक्षा स्थान इति, **दर्भाभाव** इति कार्तीयसूत्रभाष्यस्थविशेषोक्तेः ।) **कार्तीयसूत्रभाष्ये**-"कुशाभावे तु काशाः स्युः काशा कुशसमाः स्मृताः । काशाभावे गृहीतव्या अन्ये दर्भा यथोचिताः ॥ दर्भाभावे स्वर्णरूप्यताम्रैःकर्मक्रियाः सदा ॥" **पवित्रवस्तूनि यथोक्तानि तत्रैव**-"कुशाःकाशाःशरादूर्वा यावगोधूमबल्वजाः। सुवर्णं राजतं ताम्रं दश दर्भाः प्रकीर्तिताः॥स्नाने होमे तथा दाने स्वाध्याये पितृतर्पणे । सपवित्रौ सदर्भौ वा करौ कुर्वीत नान्यथा॥ सर्वेषां वा भवेद्द्वाभ्यां पवित्रं ग्रथितं न वा । सपवित्रः सदर्भो वा कर्माङ्गाचमनं चरेत् । नोच्छिष्टं तत्सदर्भं च दर्भोच्छिष्टं तु वर्जयेत् ॥" इति ।

**हेमादिपवित्रप्रमाणम्, नागदेवः**-"माषाणां षोडशादूर्ध्वं कुर्याद्धेमपवित्रकम् । तेभ्यः स्वल्पतरं न्यूनं न कुर्वीत कदाचन ॥ हीनकर्मणि चोच्छिष्टे कुशजातं पवित्रकम् निर्माल्यरूपं भवति न हेम्नस्तु पवित्रकम् ॥"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**शारदायाम्**--"ताम्रतारसुवर्णानामर्कषोडशखेन्दुभिः। कृता त्रिशक्तिमुद्रेयं तीव्रदारिद्र्यनाशिनी। इदं पवित्रं तर्जन्यां धारयन्ति सदा द्विजाः॥" **योगि याज्ञवल्क्यः**--"अनामिकाधृतं हेम तर्जन्यां रूप्यमेव च। कनिष्ठिकाधृतं खड्गं तेन पूतो भवेन्नरः" **प्रयोगपारिजाते**--" उत्तरीयं योगपट्टं तर्जन्यां रजतं तथा। न जीवत्पितृकैर्धार्यं ज्येष्ठो वा विद्यते यदि॥" **ब्राह्मे**--" मन्त्रं विना धृतं यत्तत्पवित्रं विफलं भवेत्।" इति।

**शिखाबन्धनम्, चतुर्विंशतिमते**--' मध्ये तु बह्वृचाश्चैव निबध्नीयुः शिखां ततः। माध्यन्दिनाश्च ये विप्राः पार्श्वे दक्षिणतः क्रमात्। वामपार्श्वे तु बध्नीयुर्ये विप्राः सामगायनाः॥" **नागदेवः**--" मस्तके वामभागे च ब्रह्मग्रंथिर्विधीयते। अमन्त्रविहिते ग्रन्थौ जपो होमो वृथा भवेत्॥ स्मृत्वोंकारं च गायत्रीं निबध्नीयाच्छिखां ततः। पुनराचम्य हृदयं बाहू स्कन्धौ च संस्पृशेत्॥ मानस्तोकेति मंत्रेण शिखाबन्धं तु कारयेत्॥ **शिखाया आवश्यकत्वम्, संस्कारभास्करे**--" खल्वाटत्वादिदोषेण विशिखश्चेन्नरो भवेत्। कौशीं तदा धारयीत ब्रह्मग्रन्थियुतां शिखाम्॥" **कात्यायनः**--"सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्धशिखेन च। विशिखो व्युपवीतश्च यत्करोति न तत्कृतम्॥"

**शिखाबन्धनविचारः, ग्रन्थान्तरेः**--स्नाने दाने जपे होमे सन्ध्यायां देवतार्चने। शिखाग्रन्थिं विनाकर्म न कुर्याद्वै कदाचन॥"

**शिखामुक्तिविचारः**--" शौचेऽथ शयने सङ्गे भोजने दन्तधावने। शिखामुक्तिं सदा कुर्यादित्येतन्मनुरब्रवीत्॥" **अत्र मन्त्रः**--"ब्रह्मपाशसहस्रेण रुद्रशूलशतेन च। विष्णुचक्रसहस्रेण शिखामुक्तिं करोम्यहम्॥" इति"

**आचमनम्, कात्यायनपरिशिष्टसूत्रे**--'आचम्य प्राणान्संमृशति आचामति आमागन्निति॥ **आह्निककारिकासु**--" प्रणवं पूर्वमुच्चार्य चतुर्विंशतिसङ्ख्यया। स्वाहान्तं प्राशयेद्वारि नमोऽन्तं स्पर्शयेत्तथा॥

---

१ रौप्यधारणमिदं जीवत्पितृकभिन्नविषयम्। अत एवोक्तं ग्रन्थान्तरे--'न जीवत्पितृको रूपमयं दध्यात् पवित्रकम्।' इति।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



स्नात्वा पीत्वा क्षुते सुप्ते भुक्त्वा रथ्याप्रसर्पणे । आचान्त- पुनराचामेद्वाससी परिधाय च ॥ दक्षिणेनोदकं पेयं दक्षं वामेन संस्पृशेत् । तावन्न शुच्यते तोयं यावद्वामो न युज्यते ॥ गोकर्णाकृतिहस्तेन माषमात्रं जलं पिबेत् ॥ "

**आचमने उदकम्, तन्त्रसारे**-" दध्ना सह पलैकं तु शुद्धं वारि तथाऽऽचमेत् । स्नानं सन्ध्या क्रियाः सर्वाः कर्तव्याः शीतवारिणा ॥ तथैवाचमनं प्रोक्तं कर्मानुष्ठानसिद्धये ॥ " ( दध्ना सह जलपानं तु स्नानसन्ध्योपासनादिव्यतिरिक्तेष्वेव कर्म्मस्विति विभाव्यम्। अन्यथा 'स्नानं' इत्यादि न सङ्गच्छेत। )

**आचमनविचारः, नागदेवः**--" संहतांगुलिना तोयं गृहीत्वा प्राणिना द्विजः । मुक्तांगुष्ठकनिष्ठेन शेषेणाचमनं चरेत् ॥ माषमात्रसुवर्णस्य यत्र मज्जति वे मणिः । एतदाचमनं प्रोक्तं पवित्रं कायशोधनम् ॥ " **आचमनप्रकारमाह, भरद्वाज**- आयतं पर्वणां कृत्वा गोकर्णाकृतिवत्करम् । एतेनैव विधानेन द्विज आचमनं चरेत् ॥ " **बृहत्पाराशरः**-" आमणेर्बन्धनाद्धस्तौ पादौ चाजानुतः शुचिः । प्राक्षाल्याचमयेद्विद्वानन्तर्जानुकरो द्विजः ॥ प्रक्षाल्य पादौ हस्तौ च त्रिः पिबेदम्बु वीक्षितम् । संमृष्टांगुष्ठमूलेनविप्रमृज्य कृती मुखम् ॥ दक्षिणे च स्थितं तोयं तर्जन्यां सव्यपाणितः । तत्तोयं संस्पृशेद्यस्तु सोमपानसमं स्मृतम् ॥ " **बोधायनः**-- ॐ पूर्वाभिः सर्वाभिर्व्याहृतिभिराचामेत् । यत् प्रथम माचामति तेन ऋग्वेदं प्रीणाति । यद्द्वितीयं तेन यजुर्वेदम् यत्तृतीयं तेन सामवेदम् । यत्प्रथमं संमार्ष्टि तेनाथर्वणवेदम् । यद्द्वितीयं तेनेतिहासादीन् । यत्सव्यं पाणिं प्रोक्षति पादौ शिरो हृदयं चक्षुः कर्णौ नासां नाभिं चोपस्पृशति तेनौषधिवनस्पतिप्रभृतीन्सर्वांश्च देवान् प्रीणाति ॥ " **शङ्खः**-" त्रिः प्राश्नीयाद्यदम्भस्तु प्रीतास्तेनास्य देवताः । ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च भवन्तीत्यनुशुश्रुम ॥ गङ्गा च यमुना चैव प्रीयेते परिमार्जनात् । नासत्यौ दस्रौ प्रीयेते स्पृष्टे लोचन युग्मे तु प्रीयेते शशिभास्करौ । कर्णयुग्मे तथा

---

१ अंगुष्ठमूले निहितेन जलेनेत्यर्थः २ आचामेदित्यर्थः । ३ अश्विनीकुमारावित्यर्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



स्पृष्टे प्रीयेते अनिलानलौ ॥ स्कन्धयोः स्पर्शनादेव प्रीयन्ते सर्वदेवताः । मूर्ध्नः संस्पर्शनादस्य प्रीतस्तु पुरुषो भवेत् ॥ ''

**आचमनफलम्, ब्राह्मे**--'' होमे भोजनकाले च सन्धयोरुभयोरपि आचान्तः पुनराचामेदन्यत्रापि सकृत्सकृत् । द्विराचम्य ततः शुद्धः स्मृत्वा विष्णुं सनातनम् ॥ '' **व्यासः**- शिरः प्रावृत्य कण्ठं वा मुक्तकच्छशिखोऽपि वा । अकृत्वा पादयोः शौचमाचान्तोऽप्यशुचिर्भवेत् ॥ अपः पाणिनखैः स्पृष्ट्वा आचामे यस्तु वै द्विजः । सुरापानेन तत्तुल्यमित्येवमुनिरब्रवीत् ॥ '' **पैठीनसिः**-- '' जानुदघ्नजले नद्यास्तिष्ठन्नेवाचमेद्द्विजः । जानोरूर्ध्वं जले तिष्ठन्नाचान्तः शुचितामियात् ॥ ''

**आचमनप्रकाराः, विश्वामित्रकल्पे**--''शुद्धं स्मार्तं तथा चैव पौराणं वैदिकं तथा तान्त्रिकं श्रौतस्मार्तं च षड्विधं श्रुतिनोदितम् ॥ विण्मूत्रादिकशौचेषु शुद्धं च परिकीर्तितम् । स्मार्तं पौराणिकं कर्मण्याचामेद्विधिपूर्वकम् ॥वैदिकं श्रौतमित्यादि ब्रह्मयज्ञादिपूर्वकम् ॥ '' इति ।

**श्रौताचमनम्**--''प्रणवं पूर्वमुच्चार्य सावित्रीं तदनन्तरम् । तथैव व्याहृतीस्तिस्रः श्रौताचमनमुच्यते ॥ '' इत्याह्निककारिकासु ।

**स्मार्ताचमनम्**--''केशवाद्यैस्त्रिभिः पीत्वा द्वाभ्यां प्रक्षालयेत्करौ । द्वाभ्यामोष्ठौ तु संमृज्य द्वाभ्यामुन्मार्जनं तथा ॥ एकेन हस्तौ प्रक्षाल्य पादावपि तथैव च । सम्प्रोक्ष्यैकेन मूर्धानं ततः सङ्कर्षणादिभिः ॥ आस्यनासाक्षि कर्णौ च नाभ्युरस्कं भुजौ क्रमात् । एवमाचमनं कृत्वा साक्षान्नारायणो भवेत्'' इति **भरद्वाजोक्तेः** ॥

**तत्राचमनत्रयम्**--ॐ केशवाय नमः स्वाहा १ । ॐ नारायणाय नमः स्वाहा २। ॐ माधवाय नमः स्वाहा ३। इति मन्त्रैः कर्त्तव्यम् । **हस्तप्रक्षालनम्**--ॐ गोविन्दाय नमः इति मन्त्रेण । **आत्मरक्षा**-सर्वतः प्रदक्षिणं जलप्रक्षेपणम् । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । **प्राणायामाः पूरककुम्भ-**

---

१--अन्यविद्यादिकार्येषु तांत्रिको विधिरिति ग्रन्थान्तरे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**रेचकाः**-तत्रादौ पूरको दक्षिणनासापीडनपूर्वकं श्वासस्यान्तः प्रवेशनम्। कुम्भको वामदक्षिणोभयनासापीडनपूर्वकं पूरकेणान्तः प्रवेशितस्य श्वासवायोरवष्टम्भनम्। रेचको दक्षिणनासापुटावरोधं दूरीकृत्य तद्द्वाराऽन्तःस्थस्य श्वासस्य शनैः शनैर्बहिर्निस्सारणम्, तत्र वक्ष्यमाणो मन्त्रः प्रतिपूरकादि त्रिवारं मन्दं जपनीयः। **ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतम्।** इति।

**जलाभावे कर्मविशेषे चाचमनम्**-"क्षुते निष्ठीवने चैव दन्तोच्छिष्टे तथाऽनृते। पतितानां च सम्भाषे दक्षिणं श्रवणं स्पृशेत्॥ अग्निरापश्च वेदाश्च सोमः सूर्योऽनिलस्तथा। सर्वे देवास्तु विप्रस्य कर्णे तिष्ठन्ति दक्षिणे॥" इत्याचारमयूखे। **सांख्यायनः**-"आदित्या वसवो रुद्रा वायुरग्निश्च धर्मराट्। विप्रस्य दक्षिणे कर्णे नित्यं तिष्ठन्ति देवताः॥क्षुते निष्ठीवने सुप्ते परिधानेऽश्रुपातने। एषु कर्मसु नाचामेद्दक्षिणं श्रवणं स्पृशेत्॥" इति। **सफलं दक्षिणश्रवणस्पर्शमाह पराशरः**-"प्रभासादीनि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा। विप्रस्य दक्षिणे कर्णे वसन्ति मुनिरब्रवीत्॥ गङ्गा च दक्षिणे श्रोत्रे नासिकायां हुताशनः। उभयोः स्पर्शने चैव तत्क्षणादेव शुद्ध्यति॥" इति। **अत्र विशेषमाह नागदेवः**-"अशब्दाभिरनुष्णाभिस्त्यक्ताभिः फेनबुद्बुदैः। आपद्गतानां शुद्धिः स्यादुष्णेनापि च वारिणा॥ पादक्षालनशेषेण नाचामेद्वारिणा द्विजः। शुद्ध्यभावे पिबेत्किञ्चित्त्यक्त्वा भूमौ तु तज्जलम्॥" इति। **मार्कण्डेयः**-"कुर्यादाचमनं स्पर्शं गोपृष्ठस्यार्कदर्शनम्। कुर्वीतालम्भनं चापि दक्षिणश्रवणस्य च॥" आलम्भनशब्दोऽत्र स्पर्शपरः।

**प्राणायामः कात्यायनपरिशिष्टे**-"**वाङ्म आस्ये नसोः प्राणोऽक्ष्णोश्चक्षुः कर्णयोः श्रोत्रं बाह्वोर्बलमूर्वोरोजोऽरिष्टानि। मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह**" इति। **अत्र योगियाज्ञवल्क्यः**-"सव्याहृतिं सप्रणवां गायत्रीं शिरसा सह। त्रिः पठेदायतप्राणः प्राणायामः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



स उच्यते ॥ " **तत्फलं चोक्तम्, आगस्त्ये**--" प्राणायामैर्विना यच्चक्तं कर्म निरर्थकम् । अतो यत्नेन कर्तव्यः प्राणायामः शुभार्थिना॥" **प्राणायामप्रकारावुक्तौ देवीभागवते**--" श्रुतिस्मृत्यादिकर्मादौ सगर्भः प्राणसंयमः । अगर्भो ध्यानमात्रं तु स चामन्त्रः प्रकीर्तितः ॥ इति ॥

**कर्म्मविशेषे प्राणायामसंख्याविशेषो ग्रन्थान्तरे**—" द्वौ द्वौ प्रातस्तु मध्याह्ने त्रिस्त्रिः सन्ध्यासुरार्चने । भोजनादौ भोजनान्ते प्राणायामास्तु षोडश ॥ "

**प्राणायामप्रकारानाह-योगियाज्ञवल्क्यः**-" नासापुटेनानिलमेव बाह्यमाकृष्य तेनैव शनैः समस्तम् । नाडीषु सर्वासु च पूरयेद्यः स पूरको नाम महान्निरोधः ॥ न रेचकं नैव तु पूरकं वा नासाप्रभागे स्थितमेव वायुम्। सुनिश्चलं धारयति क्रमेण कुम्भाख्यमेतं प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥ निःसार्य नासाविवरादशेषं प्राणं बहिःशून्य इवानिलेन । निरुच्छ्वसंस्तिष्ठति चोर्ध्ववायुः स रेचको नाम महान्निरोधः ॥ नासिकाविष्ट उच्छ्वासो ध्मातः पूरक उच्यते । कुम्भो निःस्थलनिःश्वासो रिच्यमानस्तु रेचकः ॥ न प्राणेनाप्यपानेन वेगाद्वायुं समुत्सृजेत् । येन सक्तून् करस्थांश्च निःश्वासो नैव चालयेत् ॥ शनैर्नासापुटाद्वायुमुत्सृजेन्नतु वेगतः ॥ " इति ॥ **काम्यः प्राणयामः, अङ्गिराः**--" दह्यमानोऽनुतापेन कृत्वा पापानि मानवः । शोचमानस्त्वहोरात्रं प्राणायामैर्विशुद्ध्यति ॥ पीडयेद्दक्षिणां नाडीमंगुष्ठेन तथोत्तराम् । कनिष्ठिकानामिकाभ्यां मध्यमां तर्जनीं त्यजेत् ॥ नीलोत्पलदलश्यामं नाभिमध्ये प्रतिष्ठितम् । चतुर्भुजं महात्मानं पूरके चिन्तयेद्धरिम् ॥ " इति । **शौनकः**--प्राणानायम्य विधिवद्वाग्यतः सयतेन्द्रियः । अथ सन्ध्यामुपासिष्य इति सङ्कल्प्य मार्जयेत् ॥ " इति । **स एव प्राणायामः**--" नासिकामंगुलीभिस्तु तर्जनीमध्यमाहते । सव्येन तु समा-

---

१—वामनासापुटेनेत्यर्थः । २—दक्षिणानासारन्ध्रात् ।



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कृष्य दक्षिणेन विसर्जयेत् ॥ प्रणवं व्याहृतीः सप्त गायत्रीं शिरसा सह । त्रिः पठेदायतप्राणः प्राणायामः स उच्यते ॥ " **कात्यायनः**-" दक्षिणे रेचयेद्वायुं वामेनापूरितोदरम् । कुम्भकेन जपं कुर्यात्प्राणायामो भवेदिति ॥ " इति । **प्रयोगपारिजाते**-" पद्मांगुलीभिर्नासाग्रं पीडयेत्प्रणवेन वै । मुद्रेयं सर्वपापघ्नी वानप्रस्थगृहस्थयोः ॥ कनिष्ठानामिकांगुष्ठैर्यतेश्च ब्रह्म चारिणः ॥ " इति । **नागदेवः**-"बाह्यवायोरन्तः प्रवेशनं पूरकः ॥ प्रवेशितस्य धारणं कुम्भकः । धृतस्य बहिर्निःसारणं रेचकः ॥ " **यथोक्तम्**-" पूरणं दक्षया नाड्या कुम्भनं हृदयस्यया । रेचनं वामया कुर्यात्प्राणायामस्य लक्षणम् ॥ रेचकः पूरकश्चैव प्राणायामोऽथ कुम्भकः । प्रोच्यते सर्वशास्त्रेषु योगिभिर्यतमानसैः ॥ रेचकोऽजलनिःश्वासः पूरकस्तन्निरोधनम् । साम्येन संस्थितिर्या सा कुम्भकः परिगीयते ॥ विरेच्य पवनं पूर्वं संकोच्य गुदमण्डलम् । पूरयित्वा विधानेन स्वशक्त्या कुम्भके स्थितिः ॥ कुम्भके तु हृदि स्थाने ध्यायेत्तं कमलासनम् । ब्रह्माणं रक्तगौराभं चतुर्वक्त्रं पितामहम् ॥ रेचके केशवं ध्यायेज्जलाधस्थं महेश्वरम् । शुद्धस्फटिकसंकाशं निर्मलं पापनाशनम् ॥ पूरके विष्णुसायुज्यं कुम्भके ब्रह्मणोऽन्तिकम् । रेचकेन तृतीयं तु प्राप्नुयादैश्वरं पदम् ॥ एतद्धि योगिनामुक्तं प्राणायामस्य लक्षणम् । ओमिति व्याहरन् विप्रो यथाविधि समाहितः ॥ प्राणायामैस्त्रिभिः पूतस्तत्क्षणाज्ज्वलतेऽग्निवत् । यथा पर्वतधातूनां दोषान् हरति पावकः ॥ एवमन्तर्गतं पापं प्राणायामेन दह्यते ॥ " इति ग्रन्थान्तरे ।

**मार्जनम्, विश्वामित्रकल्पे**-" भूमौ सिरसि चाकाशे आकाशे भुवि मण्डले । मण्डले च तथाऽऽकाशे एवं च नवधा क्षिपेत् ॥ शेषायत्रयमाकाशे मस्तके च वरत्रयम् । नकाराणां त्रयं भूमौ नान्यथा पावितं भवेत् ॥ एवमापोहिष्ठेति त्र्यृचेन मार्जनं कुर्यात् ॥ " इति । **याज्ञवल्क्यः**-" अर्धर्चया

१-ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् इत्येवमोङ्कारपूर्वा एव सप्त व्याहृतयः प्राणायामेऽभ्यसनीयाः । २-ओमापो ज्योती रसोऽमृतमिति शिरोमन्त्रः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



क्षिपेदूर्ध्वमर्धर्चया क्षिपेदधः। अधोभागे विसृष्टाभिरसुरा यान्ति संक्षयम् ॥ सर्वतीर्थाभिषेकं च ऊर्ध्वसंमार्जनाद्भवेत्। सिन्धुद्वीपं भवेदार्षं गायत्रं छन्द एव हि ॥ आपस्तु दैवतं प्रोक्तं विनियोगश्च मार्जने। सर्वत्र मार्जनं कर्म आह्निकानामुदाहृतम् ॥" इति ॥ **छन्दोगपरिशिष्टे**–रक्षार्थं वारिणाऽऽत्मानं परिक्षिप्य समन्ततः ! शिरसो मार्जनं कुर्यात्कुशैः सोदकबिन्दुभिः ॥" इति। **अघमर्षणम्, हरिहरभाष्ये**–सुमित्रिया न आप० इति यजुषा आपो जलमञ्जलिना करद्वयपुटेनादाय दुर्मित्रियास्तस्मै तन्त्विति यजुषा द्वेष्यं शत्रुं प्रति निषिञ्चेत्" इति। **नागदेवः**–"जुम्बकायेति मन्त्रेण विदध्यादघमर्षणम्। जपेद्द्वादशवारं तु महापापापनुत्तवे ॥" **हारीतः**–"जुम्बका नाम गायत्री वेदे वाजसनेयके। अन्तर्जले सकृज्जप्ता ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥" इति। **तन्मन्त्रः**–

**ॐ विधृ॑तिं॒ नाभ्या॑ घृतꣳ॒ रसे॑ना॒पो मू॒ष्णा मरीचीर्व्वि॒प्प्रुड॒भिर्नी॑हा॒रमू॒ष्मणा॑ शी॒नं वस॑या॒ प्प्रुष्वा॒ अश्रु॑भिर्ह्रा॒दुनी॑र्दू॒षीका॑भिर॒स्ना रक्षा॑ꣳसि चि॒त्राण्यङ्गैर्नक्ष॑त्राणि रू॒पेण॑ पृथि॒वीं त्व॒चा जु॑म्बु॒काय॒ स्वाहा॑ ( वा० सं० २५ । ८ )**

**शौनकः**–"उद्धृत्य दक्षिणे हस्ते जलं गोकर्णवत्कृते। निः श्वासं नासिकाग्रे तु पाप्मानं पुरुषं स्मरेत् ॥ ऋतञ्चेति त्र्यृचं वापि द्रुपदां वा जपेदृचम्। दक्षनासापुटेनैव पाप्मानमपसारयेत्। तज्जलं नावलोक्याथ वाममागे क्षितौ क्षिपेत् ॥" इति। **कात्यायनः**–करेणोद्धृत्य सलिलं घ्राणमासज्ज्य तत्र च ! जपेदनियताः सर्वास्त्रिः सकृद्वाऽघमर्षणम् ॥" इति। **स्मृत्यन्तरे**–तत्संयोगिपदद्वन्द्वमङ्गप्रत्यङ्गपातकम्। उपप्रातकरोमाणं रक्तश्मश्रुविलोचनम् ॥ खड्गचर्मधरं कृष्णं कुक्षौ पापं विचिन्तयेत् ॥" इति ॥ **द्रुपदागायत्री, बृहस्पतिः**–"द्रुपदा नाम यो मंत्रो वेदे वाजसनेयके। अंतर्जले त्रिरावर्त्य सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥" **याज्ञवल्क्यः**–"द्रुपदा नाम सा देवी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यजुर्वेदे प्रतिष्ठिता । अन्तर्जले त्रिरावर्त्य मुच्यते ब्रह्महत्यया ॥ आचान्तः पुनराचामेन्मन्त्रवत्स्नानभोजने । द्रुपदां तु त्रिरावर्त्य तथा चैवाघमर्षणम् ॥ सोपांशु प्रणवं वापि घृता ह्यापो विसर्जयेत् ॥ कोकिलराजपुत्रस्तु द्रुपदाया ऋषिःस्मृतः अनुष्टुप च भवेच्छन्द आपश्चैव तु दैवतम् ॥ " इति । ( कोकिलराजपुत्रः कदाऽभूदितीतिवृत्तं तु गवेषणीयम् । गोभिलस्त्वभूदित्युक्तम् । )

**अर्घ्यम्, आश्वलायनः**--" ततस्तिष्ठन् जलं गृह्य प्राङ्मुखोऽञ्जलिना स्मरेत् ।स्थानादौ तु स्थितं तेजःस्फाटिकं ज्योतिषा समम्॥उत्तीर्य तच्च सप्राप्तं दक्षिणेन पथाऽञ्जलीन् । व्याहृत्यादि जपेन्मन्त्रं स्मृत्वैवं परितो रवेः॥ मन्देहान् युध्यतः क्रूरान्निक्षिपेत्तेष्वधाञ्जलीन् । षोडशाक्षरमन्त्रेण पुनराकृष्य सत्वरः । पुनर्जलं गृहीत्वैवं तेजोमन्त्रं च संस्मरन् ॥ पूर्ववद्वाममार्गेण स्मृत्वा संख्याप्य चात्मनि । प्रदक्षिणं समावर्त्य जलं गृह्याचमेत्ततः ॥ " इति । **शौनकः**-- " ईषन्नक्तःप्रभाते तु मध्याह्ने ऋजुसंस्थितः । द्विजोऽर्घ्यं प्राक्षिपेद्देव्या सायं तूपविशन् भुवि ॥" इति **व्यासः**--"कराभ्यां तोयमादाय गायत्र्या चाभिमन्त्रितम् । आदित्याभिमुखस्तिष्ठंस्त्रिरूर्ध्वं सन्ध्ययो क्षिपेत् ॥ सकृदेव तु मध्याह्ने क्षेपणीयं द्विजातिभिः ॥ प्रातर्मध्याह्नयोः सन्ध्यां तिष्ठन्नेव समापयेत् ! उपविश्यतु सायाह्ने जलं ह्यर्घ्यं न निक्षिपेत् ॥ एकं वाहननाशाय द्वितीयं शस्त्रनाशनम् । असुराणां वधार्थाय तृतीयार्घ्यं विदुर्बुधाः ॥ " इति च ।

**अर्घ्यफलम् तद्विधिश्च, संग्रहे**--"मुक्तहस्तेन दातव्यं मुद्रां तत्र न कारयेत् । तर्जन्यंगुष्ठयोगे तु राक्षसी मुद्रिका स्मृता ॥ राक्षसी मुद्रिकाऽर्घ्ये चेत्तत्तोयं रुधिरं भवेत् । जलेष्वर्घ्यं प्रदातव्यं जलाभावे शुचिस्थले ॥ सम्प्रोक्ष्य वारिणा सम्यक् ततोऽर्घ्यं तुप्रदापयेत् । गायत्रीं शिरसा हीनां महाव्याहृतिपूर्विकाम् ॥ प्रणवाढ्यां जपंस्तिष्ठन् क्षिपेद्वा अञ्जलित्रयम् । तेन वज्रोदकेनाशु मन्देहा नाम राक्षसाः ॥ सूर्यारयः प्रलीयन्ते शैला वज्रहता इव । काललोपो न कर्तव्यो द्विजेन स्वहितेप्सुना ॥ अर्घोदयास्तसमये तस्माद्वज्रोदकं क्षिपेत् । द्वौ पादौ तु समौ कृत्वा पूरयेदुदकाञ्जलीन् ॥ गोश्रृङ्गमात्रमुत्क्रम्य जलमध्ये जलं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



क्षिपेत् । प्रायश्चित्तार्थमाचम्य मुच्यते दैत्यहत्यया ॥ हस्ताभ्यां स्वस्तिकं कृत्वा प्रातस्तिष्ठेद्दिवाकरम् । मध्याहे तु ऋजू बाहू सायं मुकुलितौ करौ ॥ " इति । **नागदेवः**—यदा रात्रौ मध्याहसन्ध्यां करोति तदा गायत्र्याऽर्घ्यं दद्यात् ॥ " ( इति विशेषमाह । )

**जलाभावेऽर्घ्यविचारः, अग्निस्मृतौ**—जलाभावे महामार्गे बन्धने त्वशुचावपि । उभयोः सन्ध्ययोः काले रजसा वाऽर्घ्यमुच्यते ॥ "

**उपस्थानम्, शौनकः**—" सायंप्रातरुपस्थानं कुर्यान्मन्त्रैर्यथाक्रमम् ॥ " इति ।

**बृहत्पाराशरः**—" उदुत्यं चित्रं देवानामुपस्थाने नियोजयेत् ॥ " इति ।

**याज्ञवल्क्यः**—"गायत्र्यास्तु जपं कृत्वा पूर्वं चैव यथाविधि । उपस्थानं स्वर्कमन्त्रैरादित्यस्य तु कारयेत् ॥ उदुत्यं चित्रं देवानामुद्वयन्तमसस्परि । तच्चक्षुर्देव इति च एकचक्रेति वैधि च ॥ उद्गादित्ययं मन्त्र आकृष्णेनेति वै ऋचा । तृप्तात्मा सम्प्रयुञ्जीत शक्त्याऽन्यानि जपेत्सदा ॥ सन्ध्याद्वयऽप्युपस्थानमेवमाहुर्मनीषिणः । मध्याह्न उदये चैव विभाडादीच्छया भवेत् ॥ तदसंयुक्तपार्ष्णिर्वा एकपादो द्विपादपि । जपेत्कृताञ्जलिर्वाऽपि ऊर्ध्वबाहुरथापि वा ॥ यत्र स्यात्कृच्छ्रभूयस्त्वं श्रेयसोऽपि मनीषिणः । भूयस्त्वं ब्रुवते तत्र कृच्छ्राच्छ्रेयो ह्यवाप्यते ॥ " इति । **व्यासः**—" उदुत्यं जातवेदेति ऋषिः प्रस्कण्व उच्यते । छन्दो गायत्रमेवास्य सूर्यो दैवतमेव च ॥ अग्निष्टोम उपस्थाने विनियोगः प्रकीर्तितः । चित्रं देवेति च ऋच ऋषिः कौत्स उदाहृतः । त्रिष्टुप् छन्दो दैवतं च सूर्योऽस्य परिकीर्तितः ॥ " इति ।

**मुद्राव्याख्याः, तन्त्रसारे**—"योजनात्सर्वदेवानां द्रावणात्पापसंहतेः । तस्मान्मुद्रेति सा ख्याता सर्वकामार्थसाधिनी ॥ " इति। **कुम्भमुद्रा मुद्राप्रकाशे**-'दक्षाङ्गुष्ठं पुरोऽङ्गुष्ठे क्षिप्त्वा हस्तद्वयेन च। सावकाशां मुष्टिकां च कुर्यात्सा कुम्भमुद्रिका॥"इति । **कूर्ममुद्रा तत्रैव**—" वामहस्ते च तर्जन्या दक्षिणस्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कनिष्ठिका । तथा दक्षिणतर्जन्यावामांगुष्ठं नियोजयेत् ॥ उन्नतं दक्षिणांगुष्ठं वामस्य मध्यमादिकाः । अंगुलीर्योजपेत्पृष्ठे दक्षिणस्य करस्य च ॥ वामस्थ पितृतीर्थेन मध्यमानामिके तथा । अधोमुखे च ते कुर्याद्दक्षिणस्य करस्य च ॥ कूर्मपृष्ठसमं कुर्याद्दक्षपाणि च सर्वतः । कूर्ममुद्रेयमाख्याता देवताध्यानकर्मणि॥" इति। **अस्त्रमुद्रातत्रैव**--"दक्षस्य तर्जनीमध्ये सव्ये करतले क्षिपेत् । अभिघातेन शब्दः स्यादस्त्रमुद्रा समीरिता ॥ " इति । **अङ्गन्यासमुद्राः तत्रैव**--"हृन्नेत्रं त्रिभिराख्यातं द्वाभ्यामस्त्रशिरो मतम् । अंगुष्ठेन शिखा ज्ञेया दिग्भिः कवचमीरितम्॥" इति । **मत्स्यमुद्रा तत्रैव**--"दक्षपाणेः पृष्ठदेशे वामपाणितलं न्यसेत् । अंगुष्ठौ चालयेत्सम्यङ्मुद्रेयं मत्स्यरूपिणी ॥ " इति । **धेनुमुद्रा तत्रैव**--"दक्षानामासमायुक्ता वामहस्तकनिष्ठिका । वामानामासमायुक्ता दक्षपाणिकनिष्ठिका ॥ दक्षस्य मध्यमाक्रान्ता वामहस्तस्य तर्जनी । वाममध्यमयाऽक्रान्ता दक्षहस्तस्य तर्जनी॥संयुक्तौ कारयेद्विद्वानंगुष्ठावुभयोरपि। धेनुमुद्रा निगदिता गोपिता साधकोत्तमैः॥परिवृत्तकरौ पश्चात्तर्जनीमध्यमे युते । कनिष्ठानामिलांगुष्ठं परस्परयुतं कुरु । धेनुमुद्रेयमाख्याता अमृतीकरणं भवेत् ॥ " इति । **आवाहनमुद्रा तत्रैव**--"हस्ताभ्यामञ्जलिं बद्ध्वाऽनामिकामूलपर्वणोः।अंगुष्ठौ निक्षिपेत्सेयं मुद्रा त्वावाहनी स्मृता ॥ " इति। **गन्धादिमुद्राः तत्रैव**--"मध्यमानामिकांगुष्ठैरङ्गुल्यग्रेण पार्वति । दद्याच्च विमलं गन्धं मूलमन्त्रेण साधकः ॥ अंगुष्ठतर्जनीभ्यां च पुष्पं चक्रे निवेदयेत् । मध्यमानामिकाभ्यां तु मध्यपर्वणि देशिकः ॥ अंगुष्ठाग्रेण देवेशि धृत्वा धूपं निवेदयेत् । उत्तोलनं त्रिधा कृत्वा गायत्र्या मूलयोगतः । तत्त्वाख्यमुद्रया देवि नैवेद्यं विनिवेदयेत् । मूलेनाचमनं दद्यात्ताम्बूलं तत्त्वमुद्रया। पुष्पं समर्पयेद्देवि मुद्रयाज्ञानसंज्ञया ॥" इति । **तत्र**-"अंगुष्ठतर्जनीयोगाज्ज्ञानमुद्रा प्रकीर्तिता ॥ " इति ,"कनिष्ठाऽनामिके अंगुष्ठेन स्पृशेत् ॥ " इति **प्राणमुद्रा** । " अनासां मध्यमे अंगुष्ठेन स्पृशेत् । " इति **अपानमुद्रा** । मध्यमातर्जन्यावंगुष्ठेनस्पृशेत्" इति **व्यानमुद्रा** । " तर्ज्जनीमध्यमानामा अंगुष्ठेन स्पृशेत् " इति **उदानमुद्रा** । ' तर्जन्वाद्यंगुलिचतुष्टयमं-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



गुष्ठेन स्पृशेत् " इति **समानमुद्रा**। " अंगुल्याः कुटिलीभूता विरलाग्राः परस्परम्। ग्रासमुद्रा समाख्याता सव्यपाणौ नियोजिता॥ " इति **ग्रासमुद्रा**। " वामांगुष्ठं तु संगृह्य दक्षिणेन तु मुष्टिना। कृत्वोत्तानं ततो मुष्टिमंगुष्ठं तु प्रसारयेत्। वामांगुल्यस्तथा श्लिष्टाः संयुक्ताः सुप्रसारिताः। दक्षिणांगुष्ठसंस्पृष्टा ज्ञेयैषा शंखमुद्रिका॥ ' इति **शंखमुद्रा**। " मिथस्तर्जनिके श्लिष्टे श्लिष्टांवंगुष्ठकौ तथा। मध्यमानामिके तु द्वौ पक्षाविव विचालयेत्। एषा गरुडमुद्रा स्याद्विष्णोः सन्तोषवर्धिनी॥ " इति **गरुडमुद्रा**। " मध्यमे कुटिले कृत्वा तर्जन्युपरि संस्थिते। अनामिके मध्यगते तत्रैव हि कनिष्ठके। सर्वा एकत्र संयोज्य अंगुष्ठपरिपीडिताः। एषा तु प्रथमा मुद्रा योनिमुद्रेति संज्ञिता॥ परिवर्त्य करौ सम्यक् तर्जनीवदने समे। मध्यमे कुरु तन्मध्ये योजयेत्तदनन्तरम्॥ अन्योन्यानामिके देवि कनिष्ठं च तथाविधे॥ अंगुष्ठाभ्यां योजिताभ्यां योन्याकारं तु कारयेत्॥ योनिमुद्रेयमाख्याता परा त्रैलोक्यमातृका॥ " इति **योनिमुद्रा** " प्रसृतांगुलिकौ हस्तौ मिथः श्लिष्टौ च सम्मुखौ। कुर्यात्स्वे हृदये सेयं मुद्रा प्रार्थनसंज्ञिका॥" इति **प्रार्थनामुद्रा**॥

**अत्र विशेषः, हेमाद्रौ**—"संमुखीकृत्य हस्तौ द्वौ किञ्चित्सङ्कुचितांगुली। मुकुली तु सामाख्याता पङ्कजा प्रसृतैव सा॥ पूर्वोक्ता मुकुली या च प्रादेशी निःसृतांगुली। व्याकोशमुद्रा मुकुला पञ्च मुद्राः प्रदर्शयेत्॥ अंगुष्ठौ कुञ्चितान्तौ तु स्वकीयांगुलिचेष्टितौ। उच्चो वाऽभिहतौ हस्तौ योजयित्वा तु निष्ठुरा॥ तर्जन्यौ कुञ्चिते कृत्वा तथैव च कनीयसी। अधोमुखी दृष्टनखा स्थिता मध्ये करस्य तु॥ चतस्रश्चोत्थिताः पृष्ठे अंगुष्ठावेकतः कुरु॥ नालम्ब्यावस्थितो द्वौ तु योगमुद्रा प्रकीर्तिता॥ " इति॥

**गायत्रीवर्णदेवताः याज्ञवल्क्यः**—"अक्षराणां तु दैवत्यं संप्रवक्ष्याम्यतः परम्। आग्नेयं [ तत् ] प्रथमं ज्ञेयं वायव्यञ्च [ स ] द्वितीयकम्॥ तृतीयं [ वि ] सूर्यदैवत्यं चतुर्थं [ तु ] वैद्युतं तथा। पञ्चमं [ र्व ] यमदैवत्यं वारुणं [ रे ] षष्ठमुच्यते॥ बार्हस्पत्यं सप्तमं तु [ णि ] पाजन्यमष्टमं [ यम् ] विदुः। ऐन्द्रं तु नवमं [ भ ] ज्ञेयं गांधर्वं दशमं [ र्गः ] तथा॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पौष्णमेकादशं [ दे ] प्रोक्तं मैत्रावारुणं द्वादशम् । [ व ] त्वाष्ट्रं त्रयोदशं [ स्थ ] ज्ञेयं वासवं तु चतुर्दशम् [ धी ] ॥ मारुतं पञ्चदशकं [ म ] सौम्यं षोडशकं [ हि ] स्मृतम् । सप्तदशं [ धि ] त्वांगिरसं वैश्वदेवमतः [ यः ] परम् । आश्विनं चैकोनविंशं [ यः ] प्राजापत्यंतु विंशकम् [ नः ] सर्वदेवमयं प्रोक्त-मेकविंश [ प्र ] मतः परम् ॥ रौद्रं द्वाविंशकं [ चो ] प्रोक्तं त्रयोविंशं तु [ द ] ब्राह्मकम् । वैष्णवं तु [ यात् ] चतुर्विंशमेता ह्यक्षरदेवताः ॥ ' इति । **एतत्फलम्**— 'जपकाले तु संस्मृत्य तासां सायुज्यतां व्रजेत् । गायत्री वेद-जननी गायत्री पापनाशिनी ॥ गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम् । हस्तत्राणप्रदा देवी पततां नरकार्णवे ॥ तस्मात्तामभ्यसेन्नित्यं ब्राह्मणोऽनुदये शुचिः । गायत्रीनिरतं हव्यकव्येषु विनियोजयेत् ॥ तस्मिन्न लिप्यते पापमब्बिन्दु-रिव पुष्करे ॥ इति । " गायन्तं त्रायते यस्माद्गायत्री तेन सोच्यते ॥ " इति । **गायत्रीशब्दव्याख्या नागदेवोक्ता ॥**

**जपनियमाः याज्ञवल्क्यः** ध्यायेत्तु मनसा मन्त्रं जिह्वोष्ठौ न विचा-लयत् । कम्पयेच्छिरो ग्रीवां दन्तान्नैव प्रकाशयेत् ॥ यक्षरक्षः पिशाचाश्च सिद्धविद्याधरा गणाः । यस्मात्प्रभावं गृह्णन्ति तस्माद्गुह्यं तु कारयेत् ॥ इति । **धर्मप्रवृत्तौ**—"प्रातर्नाभौ करं कृत्वा मध्यान्हे हृदि संस्थितम् । सायं जपति नासाग्रे जपस्तु त्रिविधः स्मृतः ॥ प्रातर्मध्याह्नयोस्तिष्ठन् गायत्रीजपमारभेत् । ऊर्ध्वजानुस्तु सायाह्ने ध्यानालोकनतत्परः ॥ कृत्वोत्तानौ करौ प्रातः सायं न्युब्जौ करौ तथा । मध्याह्ने हृदयस्थौ तु कृत्वा जपमुदीरयेत् ॥ " इति । **व्यासः**— " धृत्वा पवित्रं सम्प्रोक्ष्य जपस्थानं कुशोदकैः । आधारादीन् नमस्कृत्य कुशा-म्बरासनं ततः ॥ बद्ध्वा पद्मासनं वापि स्वस्तिकं वा यथासुखम् । ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति जापित्वाऽऽसनमुपविशेत् ॥ " इति । **पटले**-" अप्रोक्षितजपस्था-नाच्छक्रो हरति यज्जपम् ॥ " इति । **वृद्धमनुः**—" वस्त्रेणाच्छाद्य तु करं दक्षिणं यः सदा जपेत् । तस्य स्यात्सफलं जाप्यं तद्धीनमफलं स्मृतम् ॥ " इति ।

**जपसङ्ख्या, स्मृत्यन्तरे**—" सायं प्रातश्च मध्याह्ने सावित्रीं वाग्यतो जपेत् । सहस्रपरमां देवीं शतमध्यां दशावराम् ॥ " इति । **मनुः**—" विधि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यज्ञा ज्जपयज्ञो विशिष्ठो दशभिर्गुणैः। उपांशुः स्याच्छतगुणः साहस्रो मानसः स्मृतः॥" इति। **व्यासः**—"अष्टोत्तरशतं नित्यमष्टाविंशतिमेव वा। विधिना दशकं वापि त्रिकालेषु जपेद् बुधः॥तत उद्वास्य गायत्रीमुत्तमेत्यनुवाकतः॥" इति।

**जपफलम्, नृसिंहपुराणे**—" त्रिविधो जपयज्ञः स्यात्तस्य भेद निबोधत। वाचिकश्च उपांशुश्च मानसस्त्रिविधः स्मृतः॥ त्रयाणां जपयज्ञानां श्रेयान्स्यादुत्तरोत्तरः॥ " इति। **विश्वामित्रः**—" यदुच्चनीचस्वरितैः शब्दैः स्पष्टपदाक्षरैः। मन्त्रमुच्चारयेद्वाचा वाचिकोऽयं जपः स्मृतः॥ शनैरुच्चारये-न्मन्त्रमीषदोष्ठौ च चालयेत्। अपरैर्न श्रुतः किञ्चित्स, उपांशुर्जपः स्मृतः॥ धिया यदक्षरश्रेण्या वर्णाद्वर्णं पदात्पदम्। शब्दार्थचिन्तनं भूप कथ्यते मानसो जपः॥ " ( इति वाचिकादिलक्षणान्युक्तवान्। )

**जपलक्षणम्, स्मृत्यन्तरे**—" सम्पुटैकषडोङ्कारा गायत्री विविधा मता। तत्रैकप्रणवा ग्राह्या गृहस्थैर्ब्रह्मचारिभिः॥ गृहस्थो ब्रह्मचारी च प्रणवाद्या मिमां जपेत्। अन्ते यः प्रणवं कुर्यान्नासौ वृद्धिमवाप्नुयात्॥ सम्पुटां च षडोङ्कारां गायत्रीं च जपेद्यतिः॥ " इति। **गायत्रीकल्पे**—" पर्वभिस्तु जपेद्देवीं माला काम्यजपे स्मृता। गायत्री वेदमूला स्याद्वेदः पर्वसु गीयते॥ आर-भ्यानामिकामध्यं पर्वाण्युक्तान्यनुक्रमात्। तर्जनीमूलपर्यन्तं जपेद्दशसु पर्वसु। मध्यामांगुलिमूले तु यत्पर्वद्वितयं भवेत्। तं वै मेरुं विजानीयाज्जपे तं नाति लङ्घयेत्॥ " इति।

**गायत्रीजपविधिः बोधायनः**—" दर्भेष्वासीनो दर्भान् धारयमाणः प्राङ्मुखः सवित्रीमावर्तयेत्॥ " इति। **शङ्खः**—" कुशमयमासनमासीनः कुशोत्तरीयवान् कुशपवित्रपाणिः प्राङ्मुखः सूर्याभिमुखो वाऽक्षमाला मादाय देवताध्यायी जपं कुर्यात्॥ " इति। तत्र ॐ भूर्भुवः स्वरित्यनेन त्रि " ल्हृदयशिरः शिखास्थानानि स्पृशेत्॥ " इति। **गायत्र्या देवतादि, याज्ञवल्क्यः**—सविता देवता ह्यस्या मुखमग्निस्तदित्यृचः। विश्वामित्र ऋषि-श्छन्दो गायत्रं च विधीयते॥ कर्मेन्द्रियाणि पञ्चैव पञ्च बुद्धीन्द्रियाणि च।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पञ्च पञ्चेन्द्रियार्थाश्च भूतानां चैव पञ्चकम् ॥ मनोबुद्धिस्तथाऽऽत्मा च अव्यक्तं च यदुत्तमम् । चतुर्विंशस्तथैतानि गायत्र्या अक्षराणि तु ॥ प्रवणं पुरुषं विद्धि सर्वगं पञ्चविंशकम् ॥ " इति ।

**जपस्वरूपमाह स एव**-" ॐकारः पूर्वमुच्चार्यो भूर्भुवः स्वस्तयैव च । गायत्री प्रणवश्चान्ते जप एवमुदाहृतः ॥ " इति । **एतज्जपफलम्**-- " सप्तभिः पावयेद्देहं दशभिः प्रापयेद्दिवम् । विंशत्यावार्तिता देवी नयते चेश्वरालयम् ॥ अष्टोत्तरशतं जप्ता तारयेज्जन्मसागरात् । तीर्णो न पश्यति प्रायो जन्ममृत्युं हि दारुणम् ॥ दशभिर्जन्मजनितं शतेन तु पुराकृतम् । त्रिजन्मजं सहस्रेण गायत्री हन्ति किल्विषम् ॥ " इति ।

**छन्दोगपरिशिष्टे**-" सर्वेषामेव वेदानां गुह्योपनिषदां तथा ! सारभूता तु गायत्री निर्गता ब्रह्मणो मुखात् ॥ " इति । **बृहद्यमः**--" न तथा वेद जपतः पापं निर्दहति द्विजः । यथा सावित्रीजपतः सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ " इति । **कूर्मपुराणेः**-" गायत्रीं चैव वेदांश्च तुलया समतोलयत् । वेदा एकत्र सांगास्तु गायत्री चैकतः स्मृता ॥ " इति । **याज्ञवल्क्यः**--वेदाः साङ्गास्तु चत्वारोऽधीताः सर्वेऽथ वाङ्मयाः । गायत्रीं यो न जानाति वृथा तस्य परिश्रमः ॥ गायत्रीमात्रसन्तुष्टः श्रेयान्विप्रः सुयन्त्रितः । नाऽयन्त्रित-स्त्रिवेदी च सर्वाशी सर्वविक्रयी ॥ " इति ॥

**सप्त महाव्याहृतयः, याज्ञवल्क्यः**--,'व्याहृतीनां तु सर्वासामार्षं चैव प्रजापतिः । सप्त च्छन्दांसि प्रोक्तानि च्छादनानि तु सर्वशः ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च जगती त्रिष्टुबेव च । पंक्तिश्च बृहती चेति सप्त च्छन्दांसि तानि वै ॥ अग्निर्वायुस्तथाऽऽदित्योबृहस्पतिरपांपतिः । इन्द्रश्च विश्वेदेवाश्च देवताः समुदाहृताः ॥ अनाम्नातेषु नित्येषु प्रायश्चित्तेषु सर्वदा । प्राणायामप्रयोगे च विनियोगः उदाहृतः ॥ " इति ॥

**अभिवादनम्**-" यस्य देशो न विज्ञातो नाम गोत्रं त्रिपूरुषम् । कन्यादाने पितृश्राद्धे नमस्कारे च वर्जयेत् ॥ " इति **होलिरः** । " पाखण्ड

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पतितं व्रात्यं महापातकिनं शठम् । सोपानत्कं कृतघ्नं च नाभिवादेत्कदाचन ॥ धावन्तं च प्रमत्तं च शूद्राचारकरं तथा । भुञ्जानमप्यनाचान्तं नास्तिकं नाभिवादयेत् ॥ जपन्तं च जलस्थं च समित्पुष्पकुशानलान् । उदपात्रं तथा भैक्ष्यं वहन्तं नाभि वादयेत् ॥ " इति **नागदेवः** । " देवताप्रतिमां दृष्ट्वा यतिं दृष्ट्वा त्रिदण्डिनम् । नमस्कारं न कुर्याच्चेत्प्रायश्चितीं भवेद्द्विजः ॥ " इति **जमदग्निः** । **यथोक्त मन्यत्रापि**—" दूरस्थं जलमध्यस्थं धावन्तं धनगर्वितम् । स्नातं मूढं चाशुचिकं नमस्कारांस्तु वर्जयेत् । नमस्कारं विना विप्र आशीर्वादं प्रयच्छति । विप्रो भवति चांडालो गृह्णानो नरकं व्रजेत् ॥ सभायां यज्ञशालायां देवतायतनेषु च । प्रत्येकं तु नमस्कारो हन्ति पुण्यं पुरा कृतम् ॥ यदि स्नातो भवेद्विप्रो मस्तकं तिलकं विना । नमस्कारं न कुर्यात्तमिति प्रोचुमनीषिणः ॥ " इति । " लौकिकं वैदिकं कर्म तथाऽऽध्यात्मिकमादितः । भोशब्दं कीर्तयेदन्ते स्वस्य नामाभिवादने ॥ सभासु चैव सर्वासु यज्ञे राजगृहेषु च । नमस्कारं प्रकुर्वीत ब्राह्मणं न पृथङ् नमेत् ॥ समित्पुष्पकुशाज्याम्बु मृत्तिकाक्षतपाणिनः । जपं होमं च कुर्वाणा नाभिवाद्यास्तथा द्विजाः ॥ धावन्त च प्रमत्तं वा मूत्रोच्चारकरं तथा । योगिनं च तपःसक्तं ध्यानस्थं नाभिवादयेत् ॥ " इत्याह्निककारिकाकारः ॥

**सन्ध्यामन्त्रक्रमः, याज्ञवल्क्यः**- ॐकारो व्याहृतयश्चैव गायत्री सशिरास्तथा । आपोहिष्ठा ऋचस्तिस्रः सूक्तमेवाघमर्षणम् ॥ आदित्यरक्षणार्थं तु सायंप्रातर्दिने दिने । सृष्टाः स्वयम्भुवा पूर्वं ब्रह्मणस्तन्मुखं स्मृतम्॥" इति ।

**सन्ध्याऽऽवश्यकता, विश्वामित्रकल्पे**--" विप्रो वृक्षस्तस्य मूलं च सन्ध्या वेदः शाखा धर्मकर्माभिपत्रे । तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयं छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रे ॥ ॐ कारप्रौढमूलः क्रमपदसहितच्छन्दविस्तीर्णशाखो ऋक्पत्रः सामपुष्पो यजुरधिकफलोऽथर्वगन्धं दधानः । यज्ञच्छायासमेतो द्विज-

---

१ -सर्वे शान्ता अदन्ताः यथा ' पिण्डं दद्याद्वया शिरे । तथा, इत्यभियुक्तोक्त्या छन्द शब्दस्याप्यदन्तत्वम् ' ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मधुपगणैः सेव्यमानः प्रभाते मध्ये सायं त्रिकालं सुचरितः पातु वो वेदवृक्षः ॥ स्वकाले सेविता नित्यं सन्ध्या कामदुधा भवेत् । अकाले सेविता सा च सन्ध्या वन्ध्या वधूरिव ॥ " इति ॥

**सन्ध्याविसर्जनम्**-"स्वस्तिकाकारहस्ताभ्यां कर्णौ स्पृष्ट्वा स्मरन् हृदा । शिरसाऽऽनम्य गायत्रीं सूर्यमण्डलमध्यगाम् ॥ सन्ध्यातो विरमेद्विद्वान् प्रसन्नवदनाम्बुजः । ध्यायन् कृतार्थमात्मानमाचम्य मौनमुत्सृजेत् ॥ " इति ॥

**अथ प्रातःसन्ध्याप्रयोगः**--तत्रादौ तिलकं कुर्यात् । तत्र मन्त्रः-- **भस्मनो मृदो वा मर्दनम्**-- **ॐ अग्निरिति भस्म । वायुरिति भस्म । जलमिति भस्म । स्थलमिति भस्म । व्योमेति भस्म । सर्वꣳह वा इदं भस्म । मन एतानि चक्षूंषि भस्मानि ॥** " इति ।" **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् । ऊर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात् ॥** ( वा० सं० ३ । ६० ॥ इति वा ॥ " **प्रसद्य भस्म्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने ॥ सꣳसृज्यर्य मातृभिष्ट्वाऽज्योतिष्म्मान्पुनरासदः ॥** ( वा० सं० १२ । ३८ ) " इति वा ॥ " **त्र्यायुषञ्जमदग्नेःकश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् ॥** ( वा० सं० ३ । ६२ ) इति वा । तिलकं तु भस्मना मुख्यम् ॥ ( गोपीचन्दनेन यथाकुलाचारं वा ललाटादौ कार्यम् ) । तदनन्तरं गायत्र्या शिखां बद्ध्वा साञ्जलि " चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजःसमन्विते तिष्ठ देवि शिखाबन्धे तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ॥ " **ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषु रीरिषः । मा नो वीरान्रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥** ( वा० सं १६ । १६ ) इति प्रार्थयेत् । **रुद्राक्षमाला**-" **ॐ**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥ इति मन्त्रेण मालां धारयेत् । तत्परम् आचमनम्–" ॐ केशवाय नमः स्वाहा १ । ॐ नारायणाय नमः स्वाहा २ । ॐ माधवाय नमः स्वाहा ३ ॥ इत्याचामेत् ॥ " ॐ गोविन्दाय नमः " इति दक्षिणं पाणिं प्रक्षालयेत् " ॐ विष्णवे नमः"– इति वामपाणिं प्रक्षालयेत् । " ॐ मधुसूदनाय नमः " इत्यूर्ध्वोष्ठं प्रक्षालयेत् । " ॐ त्रिविक्रमाय नमः " इत्यधरोष्ठं प्रक्षालयेत् । " ॐ वामनाय नमः, ॐ श्रीधराय नमः " इति ऊर्ध्वाधरोष्ठौ उन्मार्जयेत् । " ॐ हृषीकेशाय नमः " इति हस्तौ प्रक्षालयेत् " ॐ पद्मनाभाय नमः " इति हस्तौ प्रक्षालयेत् " ॐ दामोदराय नमः " इति शिरो मार्जयेत् । " ॐ सङ्कर्षणाय नमः " इति मुखं मार्जयेत् । " ॐ वासुदेवाय नमः " इति दक्षिणनासापुटं स्पृशेत् " ॐ प्रद्युम्नाय नमः " इति वामनासापुटं स्पृशेत् । " ॐ अनिरुद्धाय नमः " इइि दक्षिणनेत्रं स्पृशेत् । ॐ पुरुषोत्तमाय नमः " इति वामनेत्रं स्पृशेत् " अधोक्षजाय नमः " इति दक्षिणं कर्णं स्पृशेत् " ॐ नारसिंहाय नमः " इति वामकर्णं स्पृशेत् । " अच्युताय नमः " इति नाभिं स्पृशेत् । "ॐ जनार्दनाय नमः " इति हृदयं स्पृशेत् । ॐ उपेन्द्राय नमः " इति मस्तकं स्पृशेत् । " ॐ हरये नमः " इति दक्षिणं बाहुं स्पृशेत् " ॐ श्रीकृष्णाय नमः " इति वामं बाहुं स्पृशेत् ॥ प्राणायामः–ओङ्कारस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्री छन्दः । सप्तनां व्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगौतमात्रिवसिष्ठकश्यपा ऋषयः । अग्निवायुसूर्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवताः । गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि । तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः । सविता देवता । गायत्री छन्दः । आपोज्यतिरित्यस्य प्रजापतिऋषिः । ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवताः । यजुश्छन्दः प्राणायामे विनियोगः । ',ॐ भूः । ॐ भुवः । ॐ स्वः । ॐ महः । ॐ जनः । ॐ तपः । ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सत्यम् । ॐ तत्सवितुर्व्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ( वा० सं० । ३ । ३५ ) ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतंब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥" इति । तत्परं "ॐ पवित्र स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामःपुने तच्छकेयम् ॥ ( वा० सं० ४।४ )" इति मन्त्रेण पवित्रं धारयेत् । ततः परंस्वात्मनः पवित्रकरणम्--" ॐ विष्णुर्विष्णुः, ॐ वाग्वाक्, ॐ प्राणः प्राणः, ॐ चक्षुश्चक्षुः, ॐ श्रोत्रं श्रोत्रम्, ॐ नाभिः, ॐहृदयम्, ॐकण्ठः, ॐमुखम्, ॐ शिरः, ॐशिखा, ॐ बाहुभ्यां यशो बलम् ॥ " इति । तत्पश्चाज्जलमादाय अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिर्विष्णुर्देवता । गायत्री छन्दः । हृदि पवित्रकरणे विनियोगः । इति पठित्वा "अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥"इति स्वम्मार्जयेत् । ततः अद्येत्यादि पठित्वा स्वात्मन उपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमहं प्रातः-सन्ध्योपासनं कर्म करिष्ये ॥ भूप्रार्थना--पृथ्वीत्यस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः । कूर्मो देवता । सुतल छन्दः । आसने विनियोगः । " पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ " इति । भूतशुद्धिः--"अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम् । सर्वेषामविरोधेन सन्ध्याकर्म समारभे ॥" इति वामपादपार्ष्णिना त्रिर्भूतलं हन्यात् । भैरवनमस्कारः " तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम । भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ' इति । मार्जनम्--' ॐ भूः पुनातु ' इति शिरसि । ' ॐ भुवः पुनातु ' इति नेत्रयोः ' ॐ स्वः पुनातु ' इति कण्ठे । ' ॐ महः पुनातु ' इति हृदये ' ॐ जनः पुनातु इति नाभ्याम् । ' ॐतपः पुनातु ' इति पादयोः । ' ॐ सत्यं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पुनातु ' इति पुनः शिरसि । 'ॐ खं ब्रह्म पुनातु' इति सर्वाङ्गेषु ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः ' इति मस्तके । ' ॐ तान ऽऊर्ज्जे दधातनः ' इति भुवि । ' ॐ महेरणाय चक्षसे ' इति हृदये ॥ ( वा० सं० ३६ । १४) ॐ योवः शिवतमो रसः' इति हृदि । 'ॐतस्य भाजयतेह नः ' इति भुवि । ॐ उशतीरिव मातरः ' इति शिरसि ॥ ( वा० सं० ३६ । १५ ) ' ॐ तस्माऽअरङ्गमाम वः ' इति पुनः शिरसि । ' ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ ' इति पुनः हृदि 'ॐ आपो जनयथा च नः ' इति भुवि ॥ ( वा० सं० ३६।१६ ) अङ्गन्यासाः- ओङ्कारस्य ब्रह्मा ऋषिरग्निर्देवता । गायत्री छन्दः । प्रथमस्वरो बीजम् । पञ्चमः स्वरः शक्तिः । शिवंकीलकं विद्युद्वर्णमङ्गन्यासे विनियोगः-"अङ्गुष्ठाग्रे तु गोविन्दं तर्जन्यां तु महीधरम् । मध्यमायां हृषीकेशमनामिक्यां त्रिविक्रमम् ॥ कनिष्ठिक्यां न्यसेद्विष्णुं करमध्ये तु माधवम् । करपृष्ठे हरिं विद्यान्मणिबन्धे जनार्दनम् ॥ एवं या कुरुते जाप्यं तत्सर्वं चाक्षयं भवेत् ॥ " ॐ भूः " इति अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ भुवः" इति तर्जनीभ्यां नमः । " ॐ स्वः " इति मध्यमाभ्यां नमः । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् " इति अनामिकाभ्यां नमः । " ॐ भर्गो देवस्य धीमहि " इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः । " धियो यो नः प्रचोदयात् " इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । " ॐ भूः " इति हृदयाय नमः । " ॐ भुवः " इति शिरसे स्वाहा । " ॐ स्व इति शिखायै वषट् । "ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् " इति कवचाय हुम् । " ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि " इति नेत्रत्रयाय वौषट् । " ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् " इति अस्त्राय फट् । अथ प्रणवन्यासः-" ॐ अं नमः " इति नाभौ । ॐ उ नमः " इति हृदये । ॐ मं नमः " इति मूर्ध्नि ॥ व्याहृतिन्यासाः "ॐ भूः" इति पादयोः । " ॐ भुवः" इति जान्वोः " ॐ स्व :" इत्यूर्वोः । "ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



महः इति जठरे । "ॐ जनः इति कण्ठे ।" ॐ तपः इति मुखे॥ "ॐ सत्यम् । इति शिरसि ॥ अक्षरन्यासाः-"ॐ तत्" इति पादाङ्गुष्ठयोः "ॐ स इति गुल्फयोः "ॐ वि" इति जङ्घयोः । "ॐ तु इति जान्वोः । ॐ र्व इति ऊर्वोः । "ॐ इति गुदे । "ॐ णि" इति लिङ्गे । "ॐ यं" इति कट्याम् । "ॐ भ" इति नाभौ । "ॐ र्गो" इति उदरे । "ॐ दे" इति स्यनयोः । "ॐ व" इति हृदि । "ॐ स्य" इति कण्ठे । "ॐ धी" इति मुखे । "ॐ म" इति तालु-देशे । "हि" इति नासाग्रे । "ॐ धि" इति नेत्रयोः । "ॐ यो" इति भ्रुवोर्मध्ये । "ॐ यो" इति ललाटे । "ॐ नः" इति पूर्वमुखे "ॐ प्र" इति दक्षिणमुखे । "ॐ चो" इति पश्चिममुखे । "ॐ द" इति उत्तरमुखे । "या" इति शिरसि । "त्" इति सर्वतो न्यसेत् ॥ शिरोन्यासाः-"ॐ आपः" इति गुह्ये । "ॐ ज्योतिः" इति चक्षुषि । "ॐ रसः" इति वक्त्रे । "अमृतम्" इति जानुनि । "ॐ ब्रह्म" इति हृदि । "ॐ भूः" इति पादयोः । "ॐ भुवः" इति नाभौ ।"ॐस्वः" इति ललाटे । "ॐ" इति मूर्ध्नि ॥ **अथ गायत्र्यावाहनम्**-"गायत्री त्र्यक्षरां बालां साक्षसूत्रकमण्डलुम् । रक्तवस्त्रां चतुर्हस्तां हंसवाहनसंस्थिताम् ॥ ऋग्वेदस्य कृतोत्सङ्गां सर्वदेवनमस्कृताम् । ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोक-निवासिनीम् ॥ आवाहयाम्यहं देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात् । आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि ॥ गायत्रि च्छन्दसां मातर्ब्रह्मयोनि नमोऽस्तुते॥"आच-मनम् । सूर्यश्चमेत्यस्य नारायणे ऋषिः। सूर्योदेवता। अनुष्टुप् छन्दः आचमने विनियोगः । **ॐसूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः । पापेभ्यो रक्षन्ताम् । यद्राज्या पापमकार्षम् । मनसा वाचा हस्ताभ्याम् । पद्भ्यामुदरेण शिश्ना । रात्रिस्तदवलुम्पतु । यत्किञ्च दुरितं मयि । इदमहं माममृतयोनौ । सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥** इत्यनेनाचामेत् । ततः **ॐ केशवाय नमः**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



स्वाहा। ॐ नारायणाय नमः स्वाहा। ॐ माधवाय नमः स्वाहा। इत्याचम्य। ॐ गोविन्दाय नमः॥ इति हस्तौ प्रक्षालयेत्। पुनश्च मार्जनम्—आपोहिष्ठेति तिसृणां सिन्धुद्वीप ऋषिः। आपो देवता। गायत्री छन्दः मार्जने विनियोगः। ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः०। ३६।१४॥ॐ योवः शिवतमो०।३६।१५॥ॐ तस्माऽअरङ्गमा० ३६।१६॥ जलग्रहणम्—सुमित्रिया०दुर्मित्रिया०इति द्वयोः प्रजापतिर्ऋषिः। आपो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। जलग्रहणे विनियोगः। 'ॐसुमित्रिया न आप ओषधयःसन्तु'इति शिरसि जलं क्षिपेत्। "दुर्म्मित्रियास्तस्म्मै सन्तु योस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः॥ (वा०सं०।३८।२३) इति जलं दूरे निक्षिपेत्। अघमर्षणम्। द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलराजपुत्र ऋषिः आपो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। अघमर्षणे विनियोगः। द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतम्पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः॥ (वा० सं०। २०।२०) इति—अघमर्षणम्। यद्वा 'ऋतं च सत्यं च' इत्यस्याघमर्षण ऋषिर्भाववृत्तो देवता अनुष्टुप् छन्दः। अघमर्षणे विनियोगः ततोऽञ्जलिना जलमादाय नासाग्रे नीत्वा—ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोअर्णवः। समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरोअजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥ इति त्रिवारं पठित्वा तज्जलमपश्यन् स्ववामभागे निक्षिप्य हस्तं प्रक्षालयेत्॥ अर्घ्यदानम्—ॐ भूर्भुवःस्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिऋषिः। अग्निवायुसूर्या देवताः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि। ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः । सविता देवता । गायत्री छन्दः अर्घ्यदाने विनियोगः । ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितु० । ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्य नारायणाय नमः इति पठित्वाऽर्घ्यं सूर्याय दद्यात् । एवमेव ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितु० । ब्र० सू० इ० द० न मम इति पठित्वा पुनः सूर्यायार्घ्यं दद्यात् । एवमेव भूयोऽपि ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितु० ॥ ब्र० सू० इ० द० न मम इति पठित्वा पूर्ववत्सूर्यायार्घ्यं दद्यात् । कालातिक्रमे सति—ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ ब्र० सू० इ० द० न ममेति चतुर्थमर्घ्यं सूर्याय दद्यात् । ॐ असावादित्यो ब्रह्म ' इति दक्षिणहस्ते जलमादाय स्वपरितो भ्रामयेत आचमनम् ॥ सूर्योपस्थानम्-उद्वयमुदुत्यमिति द्वयोः प्रस्कण्व ऋषिः सूर्यो देवताः अनुष्टुप् छन्दः चित्रं देवानामित्यस्य कुत्साङ्गिरस ऋषिः सूर्यो देवता । त्रिष्टुप्छन्दः । तच्चक्षुरित्यस्य दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः । सूर्यो देवता । उष्णिक् छन्दः । सूर्योपस्थाने विनियोगः । "ॐ उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् । देवन्देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥ (वा०सं०२०। २१) उदुत्यञ्जातवेदसन्देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्य्यम् ॥(वा०सं ३३।३१ ) चित्रन्देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳ सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥ ( वा० सं० १३ । ४६ ) तच्चक्षु र्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतꣳ जीवेम शरदः शत ꣳ शृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात्॥(वा० स०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



३५। २४)॥ "गायत्र्यावाहनम्—तेजोऽसीत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः आज्यं देवता। जगती छन्दः। यजुर्गायत्र्यावाहने विनियोगः। "ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियन्देवानामनाधृष्टन्देवयजनमसि (वा० सं० १। ३१॥" गायत्र्युपस्थानम्—तुरीयपदस्य विमल ऋषिः। परमात्मा देवता। गायत्री छन्दः। गायत्र्युपस्थाने विनियोगः—ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे। नमस्ते तुरीयाय दर्शिताय पदाय परोरजसे सावदोम्" इति। 'तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः सविता गायत्री छन्दः वायव्यं बीजम् चतुर्थ शक्तिः पञ्चविंशतिर्वर्ज्ञानानि कीलकं चतुर्थं पदं प्रणवो मुखं ब्रह्मा शिरो विष्णुर्हृदयं रुद्रः कवचं परमात्मा शरीरं श्वेतवर्णा साङ्कायनगोत्रा षट्स्वरा सरस्वती जिह्वा पिङ्गाक्षी त्रिपदा गायत्री समस्तपापक्षयार्थं जपे विनियोगः॥ इति विनियोगं कृत्वा गायत्रीं ध्यायेत्—" मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम्। गायत्रीं वरदाभयांकुशकशां शुभ्रं कपालं गुणं शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥" इति। अथ सूर्यं निरीक्षेत "ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः। केयूरवान्मकरकुण्डलवान्किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः॥" इति पठित्वा विष्णुं ध्यात्वा अद्येत्यादि पठित्वाऽमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकनामाऽहमुपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थममुकसङ्ख्याकं गायत्रीजपं करिष्ये॥ "नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥" गायत्रीप्रार्थना—"बहुरूपिणि गायत्रि दिव्ये संध्ये सरस्वति॥ अजरे अमरे देवि ब्रह्मयोनि नमोऽस्तु ते॥ ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव। विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव॥" इति। गायत्रीशापमोचनम्—अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्रीशक्तिर्देवता गायत्री छन्दो गायत्र्या ब्रह्मशापविमोचनार्थे जपे विनियोगः॥इति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पठित्वा " गायत्रीं ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः । तां पश्यन्ति धीरा सुमनसा वाचामग्रतः ॥ ॐवेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि। तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ॥" देवी गायत्रि त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव इति पठित्वा जलमादाय "अस्य श्रीवसिष्ठशापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता वसिष्ठ ऋषिर्वसिष्ठानुगृहीता गायत्रीशक्तिर्देवता विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः । वशिष्ठशापविमोचनार्थे जपे विनियोगः-इति विसर्जयेत् । ततः " ॐसोऽहमर्कमयं ज्योतिरात्मज्योतिरहं शिवः । आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योती रसोऽस्म्यहम् ॥" इति पठित्वा योनिमुद्रां, प्रदर्श्य गायत्रीत्रयं पठेत्। नदनन्तरं जलमादाय "ॐ देवी गायत्रि त्वं वशिष्ठशापाद्विमुक्ता भव॥" अस्य श्रीविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य नूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्र ऋषिर्विश्वामित्रानुगृहीता गायत्रीशक्तिर्देवता वाग्देहा गायत्री छन्दो विश्वामित्रशापविमोचनार्थे जपे विनियोगः । इत्युक्त्वा " गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भां यदुद्भवाः । देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये यन्मुखान्निसृतोऽखिलवेदगर्भः। शापयुक्ता तु गायत्री सफला न कदाचन । शापादुद्धारिता सा मुक्तिमुक्तिफलप्रदा ॥" इति मुद्रां दर्शयेत् । **गायत्र्यस्रोपाहरणम्**-जलमादाय " अस्य गायत्र्यस्रोपाहरणमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि क्रियामयवपुः परात्परशक्तिर्देवता हं बीजं सं शक्तिः सोऽहं कीलकम् अस्रोपसंहरणार्थे जपे विनियोगः"-इति पठित्वोत्सृजेत् । ततः ब्रह्मतेजोज्वालामालिनीं देवीं ह्रां इति अंगुष्ठाभ्यां नमः।ॐविष्णुतेजोज्वालामालिनीं देवीं ह्रीं इति तर्जनीभ्यां नमः । ॐ रुद्रतेजोज्वालामालिनीं देवीं ह्रूं इति मध्यमाभ्यां नमः। ॐअग्नितेजोज्वालामालिनीं देवीं ह्रैं इति अनामिकाभ्यां नमः। ॐज्ञानतेजोज्वालामालिनीं देवीं ह्रौं इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐसत्यं तेजोज्वालामालिनीं देवीं ह्रः इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॐबहुरूपिणिं गायत्रि दिव्ये सन्ध्ये सरस्वति । अजरे अमरे देवि ब्रह्मयोनि नमोऽस्तु ते ॥ " इति पठेत् ॥ **मुद्राप्रदर्शनम्**-"सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा । द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पञ्चमुखं तथा । षण्मुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तथा शकटं यमपाशं च ग्रथितं चोन्मुखोन्मुखम् ॥ प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम्। सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा॥एता मुद्रा न जानाति गायत्रीं निष्फला भवेत् ॥ " तस्मादाचार्येणाध्येतणामेताश्चतुर्विंशतिर्मुद्रा इति कर्तव्यतयाऽवश्यमेव शिक्षणीयाः। तेन गायत्री सुप्रतिष्ठिता सफला भवेत् ॥ **गायत्रीजपः**--प्रवणस्य ब्रह्मा ऋषिः । परमात्मा देवता। गायत्री छन्दः।व्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिरग्निवायुसूर्या देवता गायत्री छन्द उपाचदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थे गायत्रीमन्त्रजपे विनियोगः--**ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥** ( वा० सं० ३।३५ ) इति मन्त्रं जपेत् । तत्पश्चात् धेन्वाद्या मुदाः प्रदर्शयेत् । " सुरभिर्ज्ञानवैराग्यं योनिः शङ्खोथ पङ्कजम् । लिङ्गं निर्वाणकं चैव जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेत् ॥" इत्युक्तेः । अथ प्रदक्षिणं परिक्रामेत तत्रादौ जलमादाय " विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिः । विश्वकर्मा देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । सूर्यप्रदक्षिणायां विनियोगः" इत्युक्त्वा सूर्यं प्रणमेत् । **तत्र मन्त्रः-ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुतविश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवएकः** ( वा० सं० १७।१९ ) " एकचक्र इति मन्त्रस्य नारायण ऋषिः सूर्यो देवता उष्णिक् छन्दः सूर्यनमस्कारे विनियोगः । एकचक्रो रथो यस्य दिव्यः कनकभूषितः । स मे भवतु सुप्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः ॥ ॐगायत्र्यै नमः । ॐसाविज्यै नमः ।ॐसन्ध्यायै नमः । ॐ सरस्वत्यै नमः । पूर्वस्यां दिशि-"ॐइन्द्रायनमः ।" आग्नेय्यांदिशि ॐअग्नयेनमः । दक्षिणस्यान्दिशि "ॐ यमाय नमः" । नैर्ऋत्यां दिशि"ॐनिर्ऋतयेनमः"। पश्चिमायां दिशि"ॐवरुणाय नमः" वायव्यां दिशि"ॐ वायवे नमः" । उत्तरस्यां दिशि"ॐकुबेरायनमः " । ऐशान्यां दिशि-"ॐ ईश्वराय नमः " । ऊर्ध्वम्-ॐ ब्रह्मणे नमः" । अधस्तात्-"ॐ विष्णवे नमः।" सर्वतः "ॐ अनन्ताय नमः"।**जपनिवेदनम्**—ॐ देवगात्र-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



विद इत्यस्य मनसस्पतिर्ऋषिर्वातो देवता विराट् छन्दो गायत्रीजपनिवेदने विनियोगः। **ॐदेवा॑ गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित॒ मनस॒स्पत॒ इमन्दे॑वं य॒ज्ञꣳस्वाहा॒ वाते॑ धाः॥** (वा०स० ८। २१)"

इति पठित्वा कृतेनानेन प्रातःसन्ध्याङ्गभूतेनामुकसंख्याकेन गायत्रीमन्त्रजपाख्येन कर्मणा परमात्मा सविता देवः प्रीयतां न मम ॥ इति। ततो गायत्रीं प्रार्थयेत्- " यदक्षरंपदभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद्भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देवि काश्यपप्रियवादिनि ॥" **सन्ध्याविसर्जनम्**—उत्तरे शिखरे इत्यस्य कश्यप ऋषिः। सन्ध्या देवता। अनुष्टुप् छन्दः। सन्ध्याविसर्जने विनियोगः "उत्तरे शिखरे देवि भूम्यां पर्वतमस्तके। ब्राह्मणेभ्यो विनिर्मुक्ता गच्छ देवि यथासुखम् ॥" इति। **अभिवादनप्रकारः**- अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकप्रवरान्वितः शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिनवाजसनेयशाखाध्यायी अमुकशर्माऽहं भो आचार्य त्वामभिवादये। भो वैश्वानर त्वामभिवादये। भो सूर्याचन्द्रमसौ युवामभिवादये। भो याज्ञवल्क्य त्वामभिवादये। भो ईश्वर त्वामभिवादये॥" आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति ॥" इति पठित्वा "ॐकेशवाय नमः स्वाहाः। ॐनारायणाय नमः स्वाहा। ॐ माधवाय नमः स्वाहा।" इति त्रिभिर्मन्त्रैर्द्विराचामेत्। ततः " ॐ गोविन्दाय नमः" इति हस्तप्रक्षालनं कृत्वा " यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तयोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ " अनेन कृतेन प्रातःसन्ध्योपासनाख्येन कर्मणा परमेश्वरः प्रीयताम्। **अथ गायत्रीतर्पणम्।** गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः गायत्रीतर्पणे विनियोगः ' ॐभूः ऋग्वेदपुरुषम्" तर्पयामि॥ " ॐ भुवः यजुर्वेदपुरुषम्" तर्पयामि। " ॐ स्वः सामवेदपुरुषम् " तर्पयामि " ॐ महः अथर्ववेदपुरुषम् " तर्पयामि। " ॐ जनः इतिहासपुराणपुरुषम् " तर्पयामि। " ॐ तपः सर्वागमपुरुषम् " तर्पयामि। " ॐ सत्यम् सत्यलोक-

---

१ इदं ब्राह्मणाभिप्रायेण, क्षत्रियाभिप्रायेण वर्म्मेति, वैश्याभिप्रायेण गुप्तेति च ज्ञेयम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पुरुषम्" तर्पयापि। "ॐ भूः भूलोकपुरुषम्" तर्पयामि। "ॐ भुवः भुवर्लोकपुरुषम्" तर्पयामि "ॐ स्वः स्वर्लोकपुरुषम्" तर्पयामि। "ॐ भूः एकपदां गायत्रीं" तर्पयामि। "ॐ भुवः द्विपदां गायत्रीम्" तर्पयामि "ॐ स्वः त्रिपदां गायत्रीम्' तर्पयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः चतुष्पदां गायत्रीम्" तर्पयामि। "ॐ उषसीम्" तर्पयामि। "ॐ गायत्रीम्" तर्पयामि। "ॐ सावित्रीम्" तर्पयामि। "ॐ सरस्वतीम्' तर्पयामि। "ॐवेदमातरम्" तर्पयामि। "ॐ पृथिवीम्" तर्पयामि। "अजाम्" तर्पयामि। "ॐ कौशिकीम्" तर्पयामि। "ॐ सांकृतीम्" तर्पयामि। ॐ सर्वजितम्" तर्पयामि। इति गायत्रीतर्पणम्॥ **सन्ध्याङ्गभूमृत्तिकावन्दनम्**—"ॐ भूर्भुवः स्वः॥ स्वः। भुवः। भूः। ॐ॥ ॐ विष्णवे नमः १। ॐ विष्णवे नमः २। ॐ विष्णवे नमः ३। इति प्रातःसन्ध्याप्रयोगः॥

**अथ कात्यायनादिपरिशिष्टसूत्रोक्तत्रिकालसन्ध्याप्रयोगः। भस्मधारणम्**—"ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः" इति ललाटे। "कश्यपस्य त्र्यायुषम्" इति ग्रीवायाम्। यद्देवेषु त्र्यायुषम्" इति दक्षिणांसे। तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्" इति हृदये "ॐ आमागन्यशसा सꣳसृज वर्चसा। तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टं तनूनाम्॥" इत्थाचामेत्। प्राणायामः—"ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ३। ३६ ॐ आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवःस्वरोम्।" इति प्राणायामं त्रिः पठन् सकृत् पूरक-कुम्भक रेचकाख्यान् त्रीन् प्राणायामान् कुर्य्यात्। एवं च नवबारं मन्त्रजपः कार्यः। न्यासाः—"वाङ्मे आस्येऽस्तु"—इति मुखं कराग्रेण स्पृशेत्। "नसोर्मे प्राणोऽस्तु" इति तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्यां नासारन्ध्रद्वयं स्पृशेत्। "अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु" इत्यनेनानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां चक्षुर्द्वयं स्पृशेत्। "कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु" इत्ति मध्यमाङ्गुष्ठाभ्यां दक्षिणकर्णं स्पृशेत्। "कर्णयोर्मे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



श्रोत्रमस्तु " इति मध्यमाङ्गुष्ठाभ्यां वामकर्णं स्पृशेत् । " बाह्वोर्मे बलमस्तु" इति कराग्रेण दक्षिणबाहुं स्पृशेत् । " बाह्वोर्मे बलमस्तु " इति कराग्रेण वामबाहुं स्पृशेत् । " ऊर्ध्वोर्मे ओजोऽस्तु" इति युगपद्धस्तेनोरू स्पृशेत् ।"अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह" इति सर्वाङ्गाण्युभाभ्यां हस्ताभ्यां स्पृशेत् ॥ ततः"ॐ तत्सत्परमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रातःसन्ध्योपासनमहं करिष्ये" अर्घ्यम्-"ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात्॥(वा०सं०३।३५)"इति गायत्रीमन्त्रेणार्घ्यत्रयंदद्यात्॥सूर्योपस्थानम्--ॐ उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् । देवन्देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ( वा० सं० । २० । २९।) उदुत्यञ्जातवेदसन्देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम्॥ ( वा० सं० ३३ । ३१ ) चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳसूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥ (वा० सं० । १३ । ४५ ) ॥ तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतꣳशृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाःस्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात्॥ (वा०सं०३६।१४) गायत्रीमन्त्रजपः-गायत्र्या च यथाशक्ति । उपस्थानम् । ॐ विश्वाड् बृहत् पिबतु सौम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविंहुतम् । वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाःपुपोष पुरुधा विराजति ॥ ( वा०सं०३३।३० ) ॥ ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः

---

१-इत्यादिचतुर्दशमन्त्रात्मकोऽनुवाको बोध्यः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सहस्रपात् । सभूमिꣳसर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ ( वा० सं० ३१ । १ ॥ ) यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति । दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्प मस्तु ॥ ( वा० सं० ३४ । १ ) यदेतन्मण्डलंतपति तन्महदुक्थं ता ऋचः स ऋचां लोकोऽथ यदेतदर्चिर्दीप्यते तन्महाव्रतं तानि सामानि स सामाँल्लोकोऽथ य एष एतस्मिन्मंडले पुरुषः सोऽग्निस्तानि यजूꣳषि स यजुषाँल्लोकः ॥ ( श० प० ब्रा० १० । ५ । २ । )॥ ( इत्युपस्थाय प्रदक्षिणीकृत्य नमस्कृत्योपविशेत्)॥ अर्पणम्–अनेन यथाशक्ति गायत्रीजपादिकृतेन ब्रह्मस्वरूपी सविता देवता प्रीयतां न मम ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ इति कात्यायनादिपरिशिष्टसूत्रोक्त स्त्रिकालसन्ध्याप्रयोगः समाप्तः ॥

प्रातःसन्ध्याप्रयोगसंक्षेपः । तत्रादौ–भस्मतिलकम् । " ॐ त्र्यायुषꣳजमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषुत्र्यायुषन्तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ॥ ( वा० सं० ३ । ५२ । ) ॥ " ततः शिखां बध्नीयात् । " ॐ मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः । मा नो वीरान्रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥ ( वा०सं०३। १६ ) इति रुद्राक्षमालां धारयेत्–"ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ ( वा० सं०–

---

१–इत्यादिषोडशमन्त्रात्मकोऽनुवाको बोध्यः । २–इत्यादिषण्मंत्रात्मकोऽनुवाको बोध्यः । ३–इत्यादिद्वाविंशतिकंडिकात्मकं ब्राह्मणं बोध्यम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



३।६० ) ॥" आचमनम् " ॐ केशवाय नमः स्वाहा १ ॐ नारायणाय नमः स्वाहा २ ॐ माधवाय नमः स्वाहाः ३ " इति त्रिः पिबेत् । " ॐ गोविन्दाय नमः " इति दक्षिणकरं प्रक्षालयेत् । " ॐ विष्णवे नमः " इति वामकरं प्रक्षालयेत् । " ॐ मधुसूदनाय नमः " इति ऊर्ध्वोष्ठं सम्मार्जयेत् । "ॐ त्रिविक्रमाय नमः " इति अधरोष्ठं सम्मार्जयेत् " ॐ वामनाय नमः । ॐ श्रीधराय नमः " इत्युन्मार्जयेत् । "ॐ हृषीकेशाय नमः" इति हस्तौ प्रक्षालयेत् । "ॐ पद्मनाभाय नमः" इति पादौ प्रक्षालयेत् । " ॐ दामोदराय नमः" इति मूर्द्धानं सम्मार्जयेत् । "ॐ सङ्कर्षणाय नमः" इत्यास्यं सम्प्रोक्षेत् । " ॐ वासुदेवाय नमः " इति दक्षिणनासापुटं सम्प्रोक्षेत् । " ॐ प्रद्युम्नाय नमः ', इति वामनासापुटं सम्प्रोक्षेत् । " ॐ अनिरुद्धाय नमः " इति दक्षिणाक्षि सम्प्रोक्षेत् । "ॐ पुरुषोत्तमाय नमः " इति वामाक्षि सम्प्रोक्षेत् ॥ "ॐ अधोक्षजाय नमः " इति दक्षिणकर्णं सम्प्रोक्षेत् । "ॐ नारसिंहाय नमः " इति वामकर्णं सम्प्रोक्षेत् । " ॐ अच्युताय नमः " इति नाभिं सम्प्रोक्षेत् । " ॐ जनार्दनाय नमः " इत्यूरुं सम्प्रोक्षेत् । ॐ उपेन्द्राय नमः " इति मस्तकं सम्प्रोक्षेत् । " ॐ हरये नमः " इति दक्षिणभुजं सम्प्रोक्षेत् । " ॐ श्रीकृष्णाय नमः" इति वामभुजं सम्प्रोक्षेत् ॥ अथ जलमादाय "ओङ्कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः । सप्तानां व्याहृतीनां त्रिश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगोतमाऽत्रिवसिष्ठकश्यपा ऋषयः ॥ अग्निवायुसूर्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवताः । गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि । तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः। सविता देवता गायत्री छन्दः । आपोज्योतिरित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः।ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवताः । यजुश्छन्दः ।प्राणायामे विनियोगः। पूरकः-ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐजनः ॐतपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् । एवं कुम्भकः-ॐभूः ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



भुवः ॐ स्वः ॐ मह- ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्स-वितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो धियो नः प्रचोदयात् ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। एवं रेचकः— ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। इति। ततो जलेन मार्जनं कुर्वन् "ॐ विष्णुर्विष्णुः। ॐ वाग्वाक्। ॐ प्राणः प्राणः। ॐ चक्षु-श्चक्षुः। ॐ श्रोत्रं श्रोत्रम्। ॐ नाभिः। ॐ हृदयम्। ॐ कण्ठः ॐ मुखम्। ॐ शिरः। ॐ शिखा। ॐ बाहुभ्यां यशो बलम्॥" इति पठित्वाऽङ्गानि स्पृशेत्। अपवित्रः पवित्र इतस्य वामदेव ऋषिः। विष्णुर्देवता। अनुष्टुप् छन्दः। मुखे हृदि च पवित्रकरणे विनियोगः। "अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥" अथ अद्येत्यादि देशकालौ आत्मगोत्रादि च सङ्कीर्त्य अमुकशर्म्माऽहमात्मन उपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं प्रातःसन्ध्योपासनं कर्म्म करिष्ये अथ पृथिवीं स्मरन्नासनं मार्जयेत्। **तत्र मन्त्रः**—पृथ्वीत्यस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः। कूर्मो देवता। सुतलं छन्दः। आसने विनियोगः। "पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥" इति। अथ "अपसर्पन्तु ते भूता येभूताभूमिसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्[1] सर्वेषामविरोधेन सन्ध्याकर्म समारभे॥ इति पठित्वा वामपादपार्ष्णिना त्रिर्भूमिं ताडयेत्॥ **मार्जनम्** "ॐ भूः पुनातु" इति शिरसि। ॐ भुवः पुनातु" इति नेत्रयोः। 'ॐ स्वः पुनातु' इति कण्ठे। "ॐ महः पुनातु" इति हृदि। "ॐ जनः पुनातु" इति नाभ्याम्। "ॐ तपः पुनातु" इति पादयोः। "ॐ सत्यं पुनातु" इति पुनः शिरसि। "ॐ खं ब्रह्म पुनातु" इति सर्वत्र। ततो जलमादाय

१—सर्वेषां भूतादीनामनिष्टकर्तृणाम्, अवराधन निवृत्येत्यर्थः। अविरोधेन, इति पाठान्तरे तु सर्वेषां भूतादिभिन्नानामिष्टानाम्, अविरोधेन आनुकूल्येनेत्यर्थः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सूर्यश्च मेत्यस्य नारायण ऋषिः । सूर्यो देवता । अनुष्टुप् छन्दः ॥ आचमने विनियोगःइत्युत्सृज्याचामेत् ।तत्र मन्त्रो यथा-"ॐसूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः। पापेभ्यो रक्षन्ताम् । यद्रात्र्या पापमकार्षम् । मनसा वाचा हस्ताभ्याम् । पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु । यत्किञ्चिद् दुरितं मयि। इदमहं माममृत योनौ। सूर्य्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥' इत्याचामेत् । ॐ केशवाय नमः स्वाहा । ॐ नारायणाय नमः स्वाहा । ॐ माधवाय नमः स्वाहा । इति त्रिः पीत्वा । "ॐ गोविन्दाय नमः ॥ इति पठित्वा हस्तं प्रक्षालयेत् । मार्जनम्-आपोहिष्टेति तिसृणां सिन्धुद्वीप ऋषिः आपो देवता । गायत्री छन्दः । मार्जने विनियोगः-" ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः" इति शिरसि । "ॐतान ऊर्ज्जे दधातन" इति भ्रूमौ । "ॐ महे रणाय चक्षसे" इति हृदि । " ॐ यो वः शिवतमो रसः " इति हृदि । " ॐ तस्य भाजयेतह नः " इति भुवि । " ॐ उशतीरिव मातरः" इति शिरसि । "ॐ तस्मा अरङ्गमामवः" इति शिरसि । "यस्य क्षयायजिन्वथ" इति हृदि । "ॐ आपो जनयथा च नः" इति भुवि । सुमित्रिया इत्यस्य मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः । आपो देवता । अनुष्टुप् छन्दः । आत्मपावने विनियोगः । ॐ सुमित्रियान आप ओषधयः सन्तु। दुर्मित्रिया इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषि । आपो देवता । अनुष्टुप् छन्दः । कामादिनाशने विनियोगः।ॐदुर्म्मित्रियास्तस्म्मै सन्तु योऽस्म्मान्द्वेष्टि यञ्च व्वयन्द्विष्म्मः । अघमर्षणम्-द्रुपदादिदेवत्यस्य कोकिलराजपुत्र ऋषिः।आपो देवता अनुष्टुप् छन्दः। अघमर्षणे विनियोगः-ॐद्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नःस्ना तो मलादिव ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पूतम्पवित्रेणेवाज्ज्यमापःशुन्धतु मैनसः। ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोध्यजायते। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत्। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसो धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥ १२॥ अर्घ्यम्—ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः अग्निवायुसूर्या देवताः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि। ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता। गायत्री छन्दः। अर्घ्यदाने विनियोगः—ॐ भूर्भुवः स्वः—तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ ॐ ब्रह्मणे सूर्याय नमः इदमर्घ्यं दत्तं न मम॥ ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ ब्रह्मणे सूर्याय नमः इदमर्घ्यं दत्तं न मम॥ ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ ॐ ब्रह्मणे सूर्याय नमः इदमर्घ्यं दत्तं न मम। इति गायत्रीं पठन् त्रिवारं सूर्याय अर्घ्यं दद्यात्। "असावादित्यो ब्रह्म" इत्यात्मानं जलेन रक्षेत्। आचमनम्—ॐ केशवाय नमः स्वाहा॥ ॐ नारायणाय नमः स्वाहा॥ ॐ माधवाय नमः स्वाहा"॥ इत्याचामेत्॥ हस्तप्रक्षालनम्—"ॐ गोविन्दाय नमः" इति पठित्वा हस्तं प्रक्षालयेत्। "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय इति पठित्वा समन्ततो जलं निक्षिपेत्। प्राणायामः—तत्रादौ पूरकः—ॐ भूः। ॐ भुवः। ॐ स्वः। ॐ महः। ॐ जनः। ॐ तपः। ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्व०। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। कुम्भकः—ॐ भूः। ॐ भुवः। ॐ स्वः। ॐ महः। ॐ जनः। ॐ तपः। ॐ सत्यम्। ॐ तत्स-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वितुर्व्व० । ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥ रेचकः ॐ भूः । ॐ । भुवः । स्वः । ॐ महः । ॐ जनः ॥ ॐ तपः । ॐ सत्यम् । ॐ तत्सवितुर्व्व० । ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥ इति प्राणायामत्रयं कृत्वा सूर्यमुपतिष्ठेत् । तत्रादौ उपस्थानविनियोगं कुर्यात् । यथा—उद्वयमुदुत्यमिति द्वयोः प्रस्कण्व ऋषिः सूर्यो देवता अनुष्टुप् छन्दः । चित्रन्देवानामित्यस्य कुत्साङ्गिरस ऋषिः सूर्यो देवता त्रिष्टुप् छन्दः तच्चक्षुरित्यस्य दध्यङ्गाथर्वण ऋषिः । सूर्यो देवता । उष्णिक् छन्दः सूर्योपस्थाने विनियोगः— ॐ उद्वयन्तमसस्परिस्वः पश्यन्त उत्तरम् । देवन्देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥ ( वा० सं० २० । २१ ) उदुत्यञ्जातवेदसन्देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्य्यम् ॥ ( वा० सं० ३३ । ३१ ) ॥ चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳसूर्य्यऽआत्मा जगतस्तस्थषश्च ॥ ( वा० सं० १३ । ४५ । ) तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतꣳशृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ॥ ( वा० सं० ३६ । २४ ) ॥ इत्युपस्थानं कृत्वाऽङ्गानि त्रिवारं स्पृशेत् यथा—" ओं हृदयाय नमः ओं भूः शिरसे स्वाहा ओं भुवः शिखायै वौषट् ओं स्वः कवचाय हुम् " । इति हृदयादीनि त्रिः स्पृशेत् । ततो गायत्रीमावाहयेत् । गायत्रीं त्र्यक्षरां बालां साक्षसूक्षत्रकमण्डलुम् । रक्तवस्त्रां चतुर्हस्तां हंसवाहनसंस्थिताम् ॥ ऋग्वेदे च कृतोत्सन्नां सर्वदेवनमस्कृताम् । ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम् । आवाहयाम्यहं देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात् ॥ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि । गायत्रि च्छन्दसां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मातर्ब्रह्मयोनि नमोऽस्तु ते ॥" तेजोऽसीत्यत्य परमेष्टी प्रजापतिर्ऋषिः । आज्यं देवता । जगती छन्दः । गायत्र्यावाहने विनियोगः– **ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियन्देवानामनाधृष्टन्देवयजनमसि ।" गायत्र्युपस्थानम्**—तुरीयपादस्य विमल ऋषिः । परमात्मा देवता । जगती छन्दः । गायत्र्युपस्थाने विनियोगः । **"गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपद्यसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसे सावदोम् ॥" गायत्रीजपः**—ओंकारस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः । सविता देवता । त्रिव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिरग्निवायुसूर्या देवताः गायत्रीं छन्दः सर्वपापक्षयार्थे गायत्रीमन्त्रजपे विनियोगः । **ॐ भूर्भुवः स्वः । ॐ तत्सवितु० ॥** ( वा० सं० ३ । ३५ ॥ )

एवं यथाशक्ति गायत्रीं जपेत् ततोऽङ्गन्यासं कुर्यात्, यथा—" ॐ अंगुष्ठाग्रे तु गोविन्दं तर्जन्यां तु महीधरम् । मध्यमायां हृषीकेशमनामिकयां त्रिविक्रमम् ॥ कनिष्ठिक्यां न्यसेद्विष्णुं करमध्ये तु माधवम् । करपृष्ठे हरिं विद्यान्मणिबन्धे जनार्दनम् ॥" ओं गोविन्दाय अंगुष्ठाभ्यांनमः । ओं महीधराय तर्जनीभ्यानमः । ओं हृषीकेशाय मध्यमाभ्यां नमः । ओं त्रिविक्रमाय नमोऽनामिकाभ्यां नमः । ओं विष्णवे कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ओं माधवाय करतलाभ्यां नमः । ओं हरये करपृष्ठाभ्यां नमः । ओं जनार्दनाय मणिबन्धाभ्यां नमः ॥ इति । **सूर्यप्रदक्षिणा**—" विश्वतश्चक्षुरिति विश्वकर्मा भौवन ऋषिः । विश्वकर्मा देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । सूर्यप्रणमने विनियोगः–" **ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् । सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवऽएकः ॥** " इति प्रणमेत् ॥ ततः पूर्वे "ॐ इन्द्राय नमः" इति । आग्नेय्याम्–"ॐ अग्नये नमः" इति । दक्षिणस्याम्–"ॐ यमाय नमः" इति । नैर्ऋत्याम्—"ॐ निर्ऋतये नमः" इति । पश्चिमे–"ॐ वरुणाय नमः" इति । वायव्याम्–"ॐ वायवे नमः" इति ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



उत्तरस्याम्-"ॐ कुबेराय नमः" इति। ऐशान्याम्-"ॐ ईश्वराय नमः" इति। ऊर्ध्वम्-"ॐ ब्रह्मणे नमः" इति। अधस्तात्-"ॐ अनन्ताय नमः" इति॥देवागातुविद इत्यस्य मनसस्पतिर्ऋषिर्वातो देवता विराट् छन्दो जपविसर्जने विनियोगः। "ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित। मनसस्पत इमन्देव यज्ञꣳस्वाहा वाते धाः।" इति पठित्वा साञ्जलि अनेन कृतेन प्रातःसन्ध्याङ्गभूतेन गायत्रीमन्त्रजपकर्मणा सविता देवः प्रीयतां न मम॥ अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकप्रवरान्वितः शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिनवाजसनेयशाखाध्यायी अमुकशर्माऽहं भोः साङ्गायनगोत्रधारिणि ब्रह्मरूपे गायत्रि त्वामभिवादये। भो वैश्वानर त्वामभिवादये। भोः सूर्याचन्द्रमसौ युवामभिवादये। भो याज्ञवल्क्य त्वामभिवादये।भो ईश्वर त्वामभिवादये॥"यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देवि काश्यपप्रियवादिनि॥ आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति।यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥" अनेन प्रातःसन्ध्योपासनाख्येन कर्मणां परमेश्वरः प्रीयतां. न मम॥ शिखामुक्तिः-"ब्रह्मपाशसहस्रेण रुद्रशूलशतेन च। विष्णुचक्रसहस्रेण शिखामुक्तिं करोम्यहम्॥" इति शिखाग्रन्थिं निर्वर्त्य पुनस्तूष्णीं शिखां बध्नीयात्। "ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।(वा० सं० ३। ३५।) ॥ स्वः भुवः भूः ॐ॥ ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः" इति पठित्वा तत्रत्यां मृदं धारयेत् इति प्रातःसन्ध्यासंक्षेपः।

होमः कात्यायनसूत्रे "उद्धरेति यजमानो जुहुयात्। सायंप्रातरग्निहोत्रे गार्हपत्यादाहवनीयस्योद्धरणमनस्तमितादुदितयोः प्रत्यङ्मुखो वा सायं निदध्यात्तस्मिन्सायंप्रातर्होममेके। नित्यो दक्षिणाग्निः सर्वे गतश्रियः सदा वाऽऽहरणमेके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



उपवसथेन वावसिते वा तस्मिन्पचेयुरमार्ष्टं सं पावकाऽभावे गोः पयोऽधिश्रपितवै ब्रूयात्तद्ब्राह्मणं पाययितवै ब्रूयादन्तरेणापराग्निं गत्वा दक्षिणेन वा प्रदक्षिणमाहवनीयं परीत्योपविशति यजमानः पत्नी च पूर्ववदपरेणाहवनीयं कूर्चं निदधाति कुशान्वा परिस्तरणं वा सर्वेषां प्रागुदग्भिरुदगग्रान्दक्षिणाग्रान् करोतीति श्रुतेराहवनीयं पर्युक्ष्योदधारान्निनयत्यागार्हपत्यात्तं च ततो दक्षिणाग्निं जुहुते च धारावर्जम् ॥ १३ ॥ अग्निहोत्रीं दोहयति । पुंवत्सापश्चद्रेण स्थाल्यामार्यकृत्यामूर्ध्वकपालायां दक्षिणतः प्राचीमुदीचीं वा पूर्वेणाहवनीयमाहृत्य गार्हपत्येऽधिश्रपयत्युत्तरतो निरूह्याङ्गारानेवमन्यत्रापि होमार्थस्याहरणं दक्षिणेन वौषधं तृणेनावज्यात्यासिच्यापः पुनरवज्योत्य निधाय त्रिरुद्वासयत्युदगस्तमिते जुहोति वैकङ्कतर्ष्टं स्रुक्स्रुवं प्रतप्य पाणिना संमार्ष्टि पुनः प्रतप्योन्नेष्यामीत्याहोमुन्नयेति यजमानस्तिष्ठंश्चतुरः स्रुवानुन्नयति स्थाल्यां परिशिनष्टि तद्ब्राह्मणः पिबेदुपरि समिधं धारयन्वाक्षींमध्यधिगार्हपत्यादाहवनीयहरति मुखमात्रे धारयन् मध्ये निगृह्योद्गृह्योपविश्य समिधमादधात्यग्निर्ज्योतिषं त्वा वायुमतीं प्राणवतीर्ष्टं स्वर्ग्यार्ष्टं स्वर्गायोपदधामि भास्वतीमिति प्रदीप्तामभिजुहोत्यग्निर्ज्योतिरिति सज्यूरिति वाऽग्निर्वर्च इति ब्रह्मवर्चसकामस्य कूर्चे निधाय गार्हपत्यमवेक्षते होष्यन्नस्मिंस्तूष्णीमुत्तरां भूयसीं भूयिष्ठर्ष्टं स्रुचि द्विः प्रकम्प्य निदधात्युपमृज्य स्रुचं कूर्चे निमार्ष्टि नमो देवेभ्यः स्वधा पितृभ्यऽइति दक्षिणतऽउत्तानमप उपस्पृश्येतरयोश्च पुष्टिकामःस्थाल्याःस्रुवेणेह पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधात्विह प्रजार्ष्टं रमयतु प्रजापतिः ॥ अग्नये गृहपतये स्वयि-



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मते पुष्टिपतये स्वाहेति गार्हपत्ये तूष्णीम् । द्वितीया-
मग्नयेऽन्नादायान्नपतये स्वाहेति दक्षिणाग्नौ तूष्णीम् । द्वितीया-
मनामिकया द्विः प्राश्नात्युत्सृप्य निर्लेडयाचम्योत्सिञ्चति देवा-
ञ्जिन्व पितॄञ्जिन्व तृतीयामुदुक्षति सप्तर्षीन् जिन्वेति चतुर्थीं
कूर्चस्थाने त्रिर्निषिञ्चत्यग्नये पृथिवीक्षिते स्वाहा पृथिव्याऽ
अमृतं जुहोमि स्वाहाऽमृतंऽअमृतं स्वाहेति स्रुक्स्रुवमाह-
वनीये प्रतप्य निदधाति समिधऽआदधाति जुहोमि सर्वेषु यथा-
पर्यक्षितꣳ समिदसि समिद्धो मेऽअग्ने दीदिहि समेद्धा तेऽअग्ने
दीद्यासमिति वाग्यतो दोहप्रभृत्या होमात् ॥१४॥ क्षीरहोता
चेत्प्रातर्जुहोति । अनुदिते तरणावपराग्निं गत्वा दक्षिणेन वा
प्रदक्षिणं गार्हपत्यं परीत्योपविशति यजमानः पत्नी च
यथादेशमपऽआचामपि वृष्टिरसि वृश्चमे पाप्मानꣳ
सत्येन व्रतमुपैम्यापः सत्यं मयि व्रतमिति वाचं विसृज्य
पुनराचामति विद्युदसि विद्युन्मे पाप्मानं जह्यपो
ऽवभृथमभ्युपैमि मयि सत्यं गोषु मे व्रतमित्युन्नयामी त्याह ।
प्रातः प्राक्सꣳस्थꣳ समित्पर्युक्षणं धारा चोभयत्र वाऽग्नि-
शब्दे सूर्यो राज्युषसाऽङ्गेति वा ज्योतिः सूर्यऽइति वा
प्रातः प्रथमास्तमिते पर्युदयं च स्वर्गकामस्य तयोर्भ्यये
सायं जुहुयाद्रियति प्रातरायुष्कामस्यन्तःपशौ पशुकामस्य
सायंप्रातः शयाने श्रीकामस्य प्रातः प्रथमसमिद्धे हूयमा-
ने प्रजासु निहत्येव सहसाऽन्नमश्नतो भूयिष्ठार्चिषि गृहीत्वेव
सहसा प्रदीततमे श्रीयशस्कामस्यार्चिःप्रत्यवाये मैत्रेणान्न-
मत्स्यतोऽङ्गारेषु चाकष्यमानेषु ब्रह्मवर्चसकामस्य पयसा स्व-
र्गकामः पशुकामो वा यवाग्वा ग्रामकामस्तण्डुलैर्बलकामो
दध्नेन्द्रियकामोऽनधिश्रयणं च श्रुतिसामर्थ्याभ्यां घृतेन तेज-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



स्कामः संवत्सरं जुहुयादेतेषामकैकेन कामसंयोगे सायं प्रातर्वा दक्षिणेन प्रवेशनमग्निहोत्रेष्टिषु सायंप्रातराहवनीयस्यास नोपस्थाने शय्यासनं वा गार्हपत्ये संव्रजन्मनसोपस्मृत्य दक्षिणाग्निमनशित्वा प्रातर्मुहूर्त्तद्गः सभासमद्गः सभ्यस्य भस्मोद्धृतमुपेयात्स्वयं वा जुहुयादुपवसथे नियमः ॥ १५ ॥" इति । पारस्करगृह्यसूत्रे " परिचरणमस्तमितानुदितयोर्दध्ना तण्डुलैरक्षतैर्वाऽग्नये स्वाहा प्रजापतये स्वाहेति सायद्गः सूर्याय स्वाहा प्रजापतये स्वाहेति प्रातःपुमाद्गःसौमित्राबरुणौ पुमाद्गःसावश्विनावुभौ । पुमानिन्द्रस्य सूर्यश्च पुमाद्गःसंवर्ततां मयि पुनः स्वाहेति पूर्वा गर्भकामा ॥ ९ ॥ राज्ञोऽक्षभेदे नद्धविमोक्षे यानविपर्योसेऽन्यस्यां वा व्यापत्तौ स्त्रियाश्चोद्वहने तमेवाग्निमुपसमाधायाज्यद्गःसंस्कृत्येह रतिरिति जुहोति नानामन्त्राभ्यामन्यद्यानमुपकल्प्य तत्रोपवेशयेद्राजानद्गःस्त्रियं वा प्रतिक्षत्र इति यज्ञान्तेनात्वाहार्षमिति चैतया धुर्यो दक्षिणा प्रायश्चित्तिस्ततो ब्राह्मणभोजनम् ॥ १० ॥ पक्षादिषु स्थालीपाक६० श्रपयित्वा दर्शपूर्णमासदेवताभ्यो हुत्वा जुहोति ब्रह्मणे प्रजापतये विश्वेभ्यो देवेभ्यो द्यावापृथिवीभ्यामिति विश्वेभ्यो देवेभ्यो बलिहरणं भूतगृह्येभ्य आकाशाय च वंश्वदेवस्याग्नौ जुहोत्यग्नये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहाऽग्ने स्विष्टकृते स्वाहेति प्राशनान्ते बाह्यतः स्त्री बलिद्गः हरति नमः स्त्रियै नमः पुद्ग. से वयसेऽवयसे नमः शुक्लाय कृष्णदन्ताय पापिनां पतये नमो ये मे प्रजासुपलो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**भयन्ति ग्रामे वसन्तऽउत वाऽरण्ये तेभ्यो नमोऽस्तु बलिमेभ्यो हराम्नि स्वस्ति मेऽस्तु प्रजां मे ददत्विति शेषमद्भिः प्प्लाव्य ततो ब्राह्मणभोजनम् इति ।**

**हवनविधिः**-" अन्यैःशतहुताद्धोमादेकदा स्वहुतो वरम् । शिष्यैः शतहुताद्धोमादेकः पुत्रहुतो वरम् ॥ पुत्रै शतहुताद्धोमादेक आत्महुतो वरम् । तस्मात्सदैव होमं तु प्रकुर्वीत स्वयं द्विजः ॥ **कात्यायनः**-'असमक्षं तु दम्प त्योर्होतव्यं नर्त्विगादिना । द्वयोरप्यसमक्षं तु भवेद्धुतमनर्थकम् ॥ निक्षिप्याग्निं स्वदा रेषु पणकल्प्यर्त्विजं तथा । प्रवसेत्कार्यवान्विप्रो वृथा नैवाचरेत्कचित् ॥ यावन्ना पैति लौहित्यं तावत्सायं तु हूयते । प्रातः सूर्योदयात्पूर्वं प्रायश्चित्तमतः परम् ॥ पौर्णमास्यत्यये हव्यं होतव्यं यदहर्भवेत् । यदहर्जुहुयादेवममावास्यात्यये ऽपि च ॥" **मरीचिः**-"शरीरार्तिर्भवेद्यत्र द्रव्यार्तिर्वा प्रजायते । तथाऽन्यास्वपि चापत्सु पक्ष-होमो विधीयते ॥ अनातुरोऽप्रवासी च विरोगो निरुपद्रवः । पक्षहोमं तु यो दद्यात्साचारो व्यतितव्रतः ॥ पक्षहोमं प्रकुर्वीत प्रवसन्नग्निमान्पदे । पञ्चयज्ञविधानं तु लौकिकेऽग्नौ विधीयते ॥ परेणाऽग्नौ हुते स्वार्थे परस्याऽग्नौ हुते स्वयम् । पितृ-यज्ञात्यये चैव वैश्वदेवद्वयस्य च ॥ अन्वष्टकास्त्ययज्ञे च नवान्नप्राशने तथा । इष्टिं वैश्वानरीं कुर्यादेकान्नेन चरुः स्मृतः ॥ पक्षहोमं तु यो दत्त्वाऽकस्माच्चैव निवर्तितः । होमं पुनः प्रकुर्वीत न चासौ दोषभाग्भवेत् । प्रवासी नाग्निहोत्री च त्रिपञ्चाशीति सप्त च । दातव्यो होम एकाहे सायंप्रातः पृथक् पृथक् ॥ " इति ॥

**होमकुण्डम्**-"वृत्ते पूर्वविनिर्मिते त्रियवयुक्तषड्भिः शरैश्चाङ्गुलैर्भित्त्वा-ऽत्यत्रिभिरङ्गुलैश्च तिसृभिर्ज्याभिर्भिनेन्मण्डलम् । द्वाभ्यां मध्यशरद्वयं यवयुतं द्वाभ्यां च बाणद्वयं कृत्वा पूर्ववदष्टपत्रविधिना पद्मं चतुर्भिर्दलैः ॥"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



## कुण्डाद्याकाराः ।

१ आहवनीयकुण्डम्.

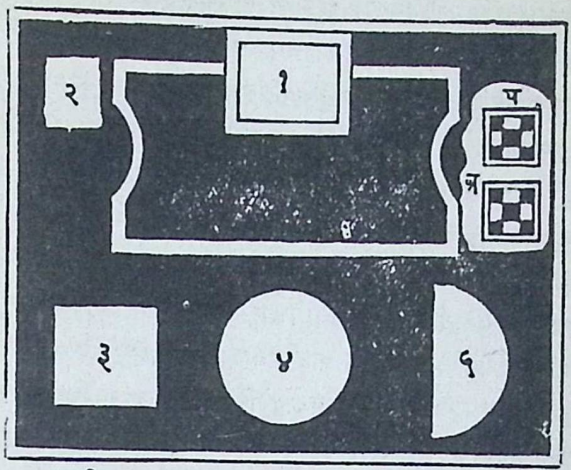


३ सभ्यकुण्डम्. २ आवसथ्यकुण्डम्.

७ यजमानासनम्. ६ ब्रह्मासनम्.

४ गार्हपत्यकुण्डम्. ५ दक्षिणाग्निकुण्डम्.

२ स्मार्तकुण्डम्.

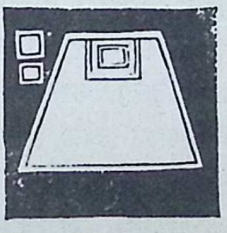

अग्निकुण्डप्रकारं यथाऽऽह बलभद्रः, कुण्डतत्त्वप्रदीपे—"ब्राह्मीमविभ्रंशवतीं परीक्ष्य संशोध्य भूमिं सुसमां समुच्चाम्। प्रगृह्य तस्यामनुलिप्य शालां कृत्वा निदध्याद् गृहमाद्यशंकुम् ॥ प्राचीं ततः पूर्ववदुक्तयुक्त्या संसाध्य देशे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



परितः प्रशस्ते। नर्यस्य विश्वाद्विगुणांगुलादि व्यासार्धमित्या विलिखेत्सुवृत्तम् ॥ तन्मध्यचिह्नाद्वसुविक्रमेषु वैकादशद्वादशसु स्वमत्या। पाशस्य मध्यं परिकल्प्य कुर्यात्कुण्डं चतुष्कोणमरत्निमात्रम् ॥ मध्यं च नर्याहवनीययोस्तु विभज्य षोढाप्यथ सप्तधा वा। लब्धांशकागंतुसमं त्रिधा तमंशं च हित्वा परदक्षिणेऽग्निः ॥ अग्नेरुदक् सार्धनवांगुलेऽस्मिन् यूकेषुभिर्वर्धितभूस्थशङ्कौ। एकोनविंशांगुलिभिर्यवैकयूकाद्वयव्यासदलेन वृत्तम् ॥ विलिख्य पूर्वापरसंस्थजीवां कृत्वा च हित्वोत्तरकार्मुकं हि। याम्याद्धवेत्कुण्डमथर्यसंज्ञं सभ्यं सभायां चतुरस्रमुक्तम् ॥ औपासनं चैवमथो गृहान्तः कुंडद्वयं नर्यमिवोक्तवद्वा। उपर्युपर्यर्पितमेखलाभिस्त्रिभिस्त्रिभिः सर्वखरेषु भित्तिः ॥ वेदांगुलोच्चाभिरथो विदध्याद् भुवश्च तास्त्र्यंगुलविस्तृताभिः। रज्जुं द्विपाशां षडरत्निदीर्घां विचिह्नितां पञ्चसु मध्यभागे ॥ हस्तद्वयेऽप्यंगुलषट्कचिह्नं ह्यष्टादशेषु त्रिषु लक्षिता च। प्राचीभवादाहवनीयशङ्कोः पश्चादरत्नीं प्रतिमुच्य शंकुम् ॥ पाशद्वयं सम्प्रतिमुच्य शङ्कोर्विकर्षयेदंगुलषट्कचिह्नम्। पाश्चात्यहस्तद्वयरज्जुचिह्ने शंकू च याम्योत्तरगौ निखेयौ ॥ तच्छ्रोणियुग्मं त्वथ पूर्वपाशादष्टादशांकेन विकृष्य रज्जुम्। अग्निं शयोढं सयु गं तथा स्याच्छंकुद्वयात्साध करस्य चिह्ने ॥ सूत्रार्पणात्कोणचतुष्टये तु क्षेत्रं भवेत्तद्विषमं हि वेद्याः। पूर्वार्धशङ्कोरथ चापरार्धं यावच्च कोणौ परिवेष्टय रज्ज्वा ॥ अर्धी कृतां तामनुवेष्टय शंकुं याम्योत्तरौ मध्यगतौ निखेयौ। तुरीयभागेन दलीकृतायां रज्ज्वो. पृथुत्वादथवापि शङ्कोः वृत्तार्धमानेन च सङ्ग्रहौ तु कृत्वा खनेत्र्यंगुलवेदिमध्यम्। वितानपूर्वापरसौम्यदिक्षु द्वारैर्युतं शस्यगृहं पुरस्तात् ॥ याम्यैन्द्रदिग्द्वारगृहं द्वयोश्च श्वभ्रं च भस्मोद्धरणाय कुर्यात्। एवं हविर्यज्ञविधौ वितानकुण्डानि साध्यानि समानि सद्भिः ॥ " इति।

**यज्ञभाजनानि यथोक्तानि कात्यायनसूत्रे–"वैकङ्कतानि पात्राणि खादिरः स्रुवः स्फ्यश्च पालाशी जुहूराश्वत्थ्युपभृद्धारणान्यहोमसंयुक्तानि बाहुमात्र्यः स्रुचः पाणिमात्रपुष्करास्त्वग्बलाहृद् समुखप्रसखा मूलदण्डा भवन्त्यरत्निमात्रःस्रुवो**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ऽङ्गुष्ठपर्ववृत्तपुष्करः स्फ्योऽस्याकृतिरादर्शाकृतिःप्राशित्रहरणं चमसाकृति वा ॥ ३ ॥ यथा-उलूखलमुसलकूर्चेडापात्रीपिष्टपात्रीपुरोडाशपात्रीशम्याश्रृतावदानाभ्युपवेशान्तर्धानकटप्राशित्रहरणषड्वृत्तब्रह्मयजमानासनहोतृषदनादीनि । एतानि वारणान्यहोमसंयुक्तानि । होमसंयुक्तानि तु वैकङ्कतादीनि भवंति ॥

आज्यस्थाली.

चरुस्थाली.

**आज्यस्थाल्यादीनामाकृतयः**–"आज्यस्थाली तैजसी वा मृन्मयी वा प्रकीर्तिता । द्वादशांगुलविस्तीर्णा प्रादेशोच्चा शुभा स्मृता ॥ आज्यस्थालीसमानैव चारुस्थाली प्रशस्यते ॥

पुरोडाशपात्री.

प्रणीता.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पुरोडाशस्य पात्री तु चतुरस्रा समानतः । खातेन वर्तुलेनैव युतायज्ञे प्रशस्यते ॥
प्रणीता वारणा[१] ग्राह्या द्वादशाङ्गुलसंमिता । खातेन हस्ततलवदाकृत्या पद्मपत्रवत् ॥

जुहूस्रुक् उपभृत्स्रुक ध्रुवास्रुक् पुष्करस्रुक् हवनी वैकंकतस्रुवः

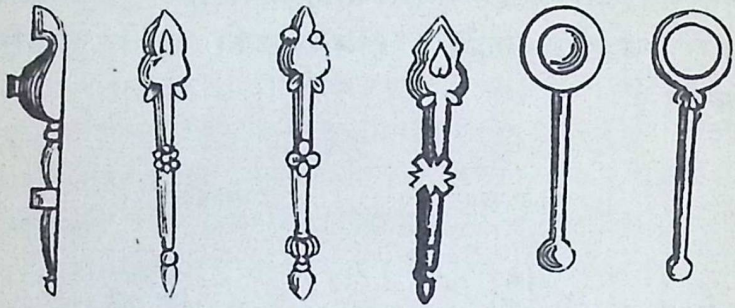

खादिरो बाहुमात्रस्तु जुहूस्रुक्संज्ञकः स्रुवः । अरत्निमात्रो हंसास्यो वर्तुलो ऽङ्गुष्ठपर्ववत् । अर्धपर्वप्रणाल्या च युक्तो नासाकृतिर्भवेत्॥उपभृत्स्रुक् ध्रुवास्रुकच पुष्कस्रुरक् तथैव च । अग्निहोत्रस्य हवनी तथा वैकङ्कतः स्रुवः ॥ एते चान्ते च बहवः स्रुवभेदाः प्रकीर्तिताः । वर्तुलास्याः शङ्कुमुखाः पर्वखाताः समानकाः

उलूखलम् मुसलम् शूर्पम् शम्या स्फ्यः

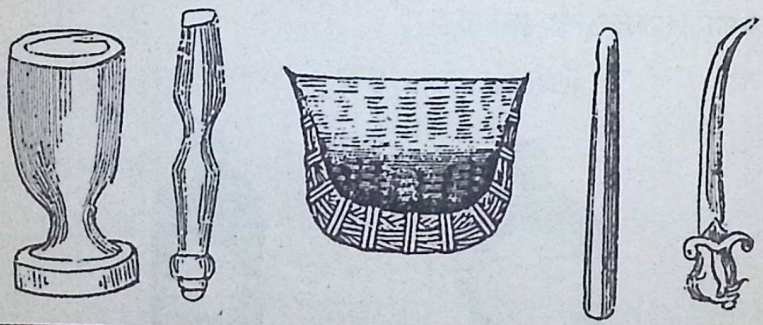

१-वारणा, वरणवृक्षकाष्ठानामता ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



उलूखलं च मुसलं स्वायते मुद्दढे तथा। इच्छाप्रमाणे भवतः शूर्प वैणवमेव च ॥ **अन्यच्च**—" खादिरं मुसलं कार्यं पालाशः स्यादुलूखलः। यद्वोभौ वारणौ कार्यौ तदभावेऽन्यवृक्षजौ ॥ " शम्या प्रादेशमात्रा स्यात्खादिरः स्फ्यः प्रकीर्तितः। खड्गाकारोऽरत्निमात्रो वज्ररूपो मखे स्मृतः ॥

शृतावदानम्. उपवेशः. मकराकारकूर्चः. दृषत्. उपलः.

अङ्गुष्ठपर्वमात्रं तु तीक्ष्णाग्रं पृथुवक्रकम्। शृतावदानं प्रादेशमात्रं दीर्घमुदाहृतम् ॥ उपवेशोऽरत्निमात्रो हस्ताकारस्तु खादिरः। कौशः कूर्चो बाहुमात्रो मकराकार उच्यते। इच्छाप्रमाणस्तु दृषत्प्रोक्तः पाषाणसंभवः। उपलो वर्तुलः प्रोक्तो वितस्तिपरिमाणकः ॥

षड्वृत्तम्. अग्निः. अरणिः. उत्तरारणिः. चात्रम्. ओविली,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



षडंगुलप्रमाणं तु षड्वृत्तं चतुरस्रकम् । तथा चोभयतः खातं वारणं तत्प्रचक्षते ॥ अभिस्तीक्ष्णमुखा ज्ञेया खादिराऽरत्निसंमिता । अश्वत्थो यः शमीगर्भः प्रशस्तोर्वीसमुद्भवः ॥ तस्य या प्राङ्मुखी शाखा उदीची चोर्ध्वगापि वा । अरणिस्तन्मयी प्रोक्ता तन्मध्ये चोत्तरारणिः ॥ संसक्तमूलो यः शम्या स शमीगर्भ उच्यते ॥ अलाभे स्वशमीगर्भादाहरेदविलम्बितः । चतुर्विंशतिरंगुष्ठदैर्घ्यं षडपि पार्थिवम् ॥ चत्वार उच्छ्ये मानमरण्योः परिकीर्तितम् । सारवद्दारवं चात्रमोविली च प्रशस्यते ॥

प्रमन्थः. नेत्रम् अथवा रज्जुः.

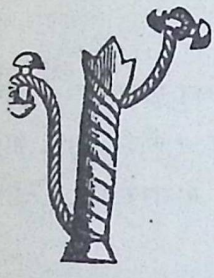

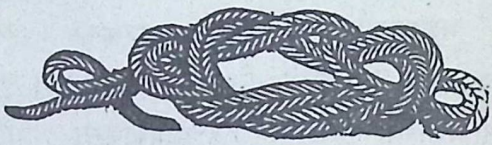

अष्टांगुलः प्रमन्थः स्यान्नेत्रं स्याद्द्वादशांगुलम् । ओविली द्वादशैव स्यादेतन्मन्थनयन्त्रकम् । अंगुष्ठांगुलमानं तु यत्र यत्रोपदिश्यते ॥ तत्र तत्र वृहत्पर्वाग्रन्थिभिर्मिनुयात्सदा ॥ गोवालै- शणसंमिश्रैस्त्रिवृत्तममलात्मकम् । व्यामप्रमाणं नेत्रं स्यात्प्रमथ्यस्तेन पावकः ॥ मूर्धाक्षिकर्णवक्त्राणि कन्धरा चापि पञ्चमी । अंगुष्ठमात्राण्येतानि व्यंगुष्ठं वक्ष उच्यते ॥ अंगुष्ठमात्रं हृदयं त्र्यंगुष्ठमुदरं स्मृतम् । एकांगुष्ठा कटिर्ज्ञेया द्वौवस्ती द्वौ च गुह्यकम् ॥ ऊरू जङ्घे च पादौ च चतुरूयेकैर्यथाक्रमम् । अरण्यवयवा ह्येते याज्ञिकैः परिकीर्तिताः ॥ यत्तद्गुह्यमिति प्रोक्तं देवयोनिस्तु सोच्यते । अस्यां यो जायते वह्निः स कल्याणकृदुच्यते ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अन्तर्धानकटः. हविर्धानपात्री. प्राशित्रहरणम्. चमसः. इडापात्री

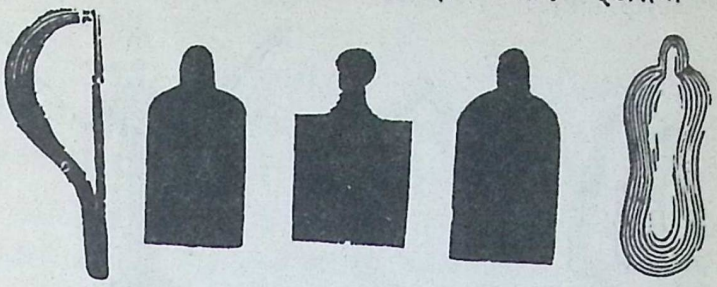

अन्तर्धानकटः. प्रोक्तो द्वादशांगुलसंमितः । अर्धचन्द्रसमाकारः किञ्चिदुच्छ्रितशीर्षकः ॥ प्रोक्ता हविर्धानपात्री विपुला द्वादशांगुला । पिष्टपात्री च सैवोक्ता चतुरस्रा प्रकीर्तिता ॥ प्राशित्रहरणं चान्यत्कीर्तितं द्वादशांगुलम् । चमसानां तु वक्ष्यामि दण्डाः स्युश्चतुरंगुलाः ॥ त्र्यंगुलस्तु भवेत्स्कन्धो विस्तारश्चतुरंगुलः । पलाशाद्वा वटाद्वाऽन्यवृक्षाद्वा चमसाः स्मृताः ॥ इडापात्री तथा चान्याऽरत्निमात्रा प्रकीर्तिता ॥

यजमानासनम्. पत्न्या आसनम्. होत्रासनम्. ब्रह्मासनम्

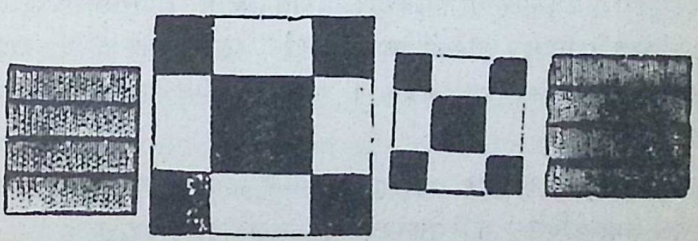

यजमानासनं पत्न्या आसनं च पृथक्पृथक् ॥ होत्रासनं तथा ब्रह्मासनं विस्तारयोगतः । अरत्निमात्राण्येतानि कथितानि मनीषिभिः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यजमानस्य पात्री. पत्नीपात्री. कृष्णाजिनम्,

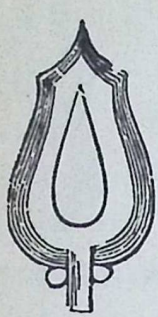

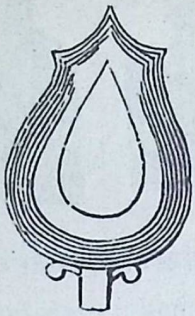

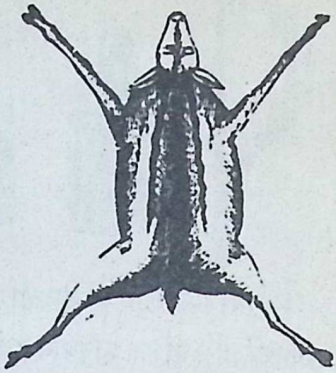

यजमानस्य पात्री च पत्नीपात्री तथैव च । मखे कृष्णाजिनं ग्राह्यंतदखण्डं विशिष्यते ॥ "

**इध्मादिप्रमाणम्**—" इध्मस्तु द्विगुणः कार्यः परिधिस्त्रिगुणः स्मृतः । स्मार्ते प्रादेश इध्मो वा द्विगुणः परिधिस्ततः ॥ समित्यवित्रं वेदं च त्रयं प्रादेश संमितम् ॥ " इति ॥

**यज्ञियवृक्षा यथोक्ता वायुपुराणे**-"पलाशफल्गुन्यग्रोधाः प्लक्षाश्वत्थ-विकङ्कताः । उदुम्बरस्तथा बिल्वश्चन्दनो यज्ञियाश्च ये । सरलो देवदारुश्च शाल श्चखदिरस्तथा । समिदर्थे प्रशस्ताः स्युरेते वृक्षा विशेषतः ॥ ग्राह्याः कण्टकिनश्चैवं यज्ञिया एव केचन । पूजिताः समिदर्थेषु पितृणां वचनं यथा ॥ " इति ।

**समिधो यथाऽऽह कात्यायनः**—" नांगुष्ठादधिका ग्राह्या समि-त्स्थूल तथा कचित् । न निर्मुक्तत्वचा चैव न सकीटा न पाटिता ॥ "

**समिधां प्रमाणमाह कात्यायनः**—प्रादेशान्नाधिका नोना न च शाखासमायुता । न सपर्णा न निर्वीर्या होमेषु तु विजानता ॥ "

**इध्मार्थे समिधो यथा**—पर्णाऽश्वत्थखदिरोहितकोदुम्बराणां तद

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


लाभे सर्ववनस्पतीनां तिन्दुकधवलाऽऽम्रनिम्बराजवृक्षशाल्मल्यरत्नकपित्थकोविदारविभीतकश्लेष्मातकसर्वकण्टकवृक्षविवर्जितम् ॥

**यज्ञेऽग्राह्याः वृक्षाः वायुपुराणे**—"निवासा ये च कीटानां लताभिर्वेष्टिताश्च ये। अयज्ञिया गर्हिताश्च वल्मीकैश्च समावृताः॥ शकुनीनां निवासाश्च वर्जयेत्तान्महीरुहान्। अन्यांश्चैवंविधान्सर्वान्यज्ञियांश्च विवर्जयेत् ॥" इति।

**अग्राह्याः समिधः, वायुपुराणे**—'विशीर्णा विदला ह्रस्वा वक्राः सशुषिराः कृशाः। दीर्घाः स्थूला घुणैर्दुष्टाः कर्मसिद्धिविनाशकाः॥" इति।

**ग्राह्याः समिधः**—"प्रागग्राः समिधो देयास्ताश्च योगेषु पातिताः। शान्तर्थेषु प्रशस्ताऽऽर्द्रा विपरीता जिघांसति॥ होतव्या मधुसर्पिर्भ्यां दध्ना क्षीरेण संयुताः। प्रादेशमात्रा समिधो ग्राह्याः सर्वत्र चैव वा॥"

**सप्तधान्यानि**—"यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंगुश्च मुद्गकाः। शामाकाश्चणकाश्चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्॥" ॥ इति।

**अष्टादश धान्यानि हैमाद्रौ**—"यवगोधूमधान्यानि तिलाः कुलत्थकाः। माषा मुद्गा मसूराश्च निष्पावाः श्यामसर्षपाः। गवेधुकाश्च नीवारा आढक्योऽथ सतीनकाः। चणकाश्चीनकाश्चैव धान्यान्यष्टादशैव तु॥" इति।

**होमद्रव्याणि**—"पायसान्नैस्त्रिमध्वक्तैर्द्राक्षारम्भाफलादिभिः। मातुलुङ्गैरिक्षुखण्डैर्नारिकेलयुतैस्तिलैः॥ जातीफलैराम्रफलैरन्यैर्मधुरवस्तुभिः॥" इति।

**होमे उक्तधान्यानि**—"कृतमोदनसक्त्वादि तण्डुलादि कृताकृतम्॥ व्रीह्यादि चाकृतं प्रोक्तामिति वेद्यं त्रिधा बुधैः॥" इति **कात्यायनः**। "हविष्यान्नं तिला माषा नीवारा व्रीहयो यवाः। इक्षवः शालयो मुद्गाः पयो दधि घृतं मधु॥ हविष्येषु यवा मुख्यास्तदनु व्रीहयः स्मृताः। व्रीहीणामप्यलाभे तु दभ्ना वा पयसापि वा॥ यथोक्तवस्त्वसम्पत्तौ ग्राह्यं तदनुकल्पतः। यवानामिव गोधूमा व्रीहीणामिव शालयः॥" इति **स्मृत्यन्तरे च**। **हवनद्रव्यः भागाः,, बृहस्पतिः**—"प्रस्थं धान्यं चतुःषष्टिराढतेः परिकीर्तितम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तिलानां तु तदर्धं स्याच्चदर्धं स्याद्घृतस्य च ॥ " इति। **आहुतिमानम्।** **बौधायानः** " व्रीहीणां च यवानां च शतमाहुतिरिष्यते ॥ " इति ॥

**अग्नेर्धमनम्, आपस्तम्बः**—" न कुर्यादग्निधमनं कदाचिद्व्यजनादिना। मुखेनैव धमेदग्निं धमन्यां वेणुजातया ॥ " इति । नाग्निं मुखेनेति लौकिकाग्निविषय एव निषेधः।

**होतृविचारः**-" क्षुत्तृट्क्रोधसमायुक्तो हीनमन्त्रो जुहोति यः। अप्रवृद्धे सधूपे वा सोऽन्धः स्यादन्यजन्मनि ॥ स्वल्पे रूक्षे सस्फुलिङ्गे वामावर्तेभयानके। ऊर्ध्वे काष्ठैश्च सम्पूर्णे फूत्कारवति पावके ॥ कृष्णार्चिषि सुदुर्गन्धे तथा लिहति मेदिनीम्। आहुतीर्जुहुयाद्यस्तु तस्य नाशो भवेत् ध्रुवम्॥"इति स्मृतिः।

**प्रैषविधिः, यथाऽऽह हलायुधः**—" ऋचो यजूंषि सामानि प्रैषाश्चैते मन्त्रसंज्ञाः ॥ तत्र ऋग्वेदसामवेददयोस्तु मन्त्रा उच्चैः प्रयोज्याः ॥ यजुर्वेदमन्त्रा उपांशु[1] प्रयोज्याः ॥ " इति। उपांशु गुप्तं, तूष्णीमिति यावत्।

**कर्म्मविशेषे भोज्या ब्राह्मणाः**—" गर्भाधानादिसर्वेषु ब्राह्मणान् भोजयेद्दश। आवसथ्ये चतुर्विंशदग्न्याधाने शतात्परम् ॥ आग्रयणे प्रायश्चिते ब्राह्मणान् दश पञ्च वा। सहस्रं भोजयेत्सोमे ब्राह्मणानां शतं पशौ ॥ चातुर्मास्येषु चत्वारि शतानि च सुरामुखे। अयुतं वाजपेये च अश्वमेधे चतुर्गृणन्॥" इति॥

**दक्षिणाविषये विशेषमाह कात्यायनः**—" ब्रह्मणे दक्षिणा देया या यत्र परिकीर्तिता। कर्मान्तेऽनुच्यमानायां पूर्णपात्रादिका भवेत्। यावता बहुभोक्तुस्तु तृप्तिः पूर्णेन जायते ॥ " इति ॥

**पृष्टोदिविधिर्यथोक्तः कात्यायनेन, परिशिष्टे**—" अथातो धर्मजिज्ञासा केशान्तादूर्ध्वमपत्नीक उच्छिन्नाग्निरनग्निको वा प्रवासी ब्रह्मचारी चान्वग्निरिति ग्रामादग्निमाहृत्य पृष्टोदिवीत्यधिष्ठाप्य समित्तमिति द्वाभ्यामुपस्थानं व्याहृतिभिस्ति-

---

१ उपांशु; केवलमोष्ठचालनमेव। परश्रोत्रागृह्यमाणमित्यर्थः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


स्तिसृभिश्च सावित्र्या प्रज्वाल्य ता६-सवितुस्तत्सवितुर्विश्वानि देवसवितरिति पुनस्त्वेति समिन्ध्य पूर्ववदक्षतैर्हुत्वा पाकं पचेत्तत्र वैश्वदेवं कुर्याद्ब्रह्मणे प्रजापतये गृह्याभ्यः कश्यपानुमतये विश्वेभ्यो देवेभ्योऽग्नये स्विष्टकृत इत्युपस्पृश्य पूर्ववद्बलिकर्म नैवं कृते वृथा पाको भवति न वृथा पाकं पचेन्न वृथा पाकमश्नीयादत्र पिण्डपितृयज्ञपक्षाद्याग्रयणानि कुर्यात् ॥" इति।

हवनस्थलकुण्डसंस्कारः, पारस्करगृह्यसूत्रम्—"परिसमुह्योपलिप्योल्लिख्योदधृत्याभ्यक्ष्याग्निमुपसमाधाय दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्य प्रणीय परिस्तीर्यार्थवदासाद्य पवित्रे कृत्वा प्रोक्षणीः संस्कृत्यार्थवत् प्रोक्ष्य निरूह्याधिश्रित्य पर्यग्निं कुर्यात् स्रुवं प्रतप्य संमृज्याभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य निदध्यादाज्यमुद्रास्योत्पूयावेक्ष्य प्रोक्षणीश्च पूर्ववदुपयमनकुशानादाय समिधोऽभ्याधाय पर्युक्ष्य जुहुयादेष एव विधिर्यत्र क्वचिद्धोमः। पर्यग्निकरणं वा कर्त्तव्यम्। श्रुते वारक्रयस्याप्युक्तत्वात्॥" इति। यत्र स्थालीपाकादि तत्र समूहनादि त्रिवारमपि विहितमिति भावः॥

हवनेऽग्नयस्त्रयः, यथाह हलायुधः—आवसथ्याहवनीयौ दक्षिणाग्निस्तथैव च। अन्वाहार्यो गार्हपत्य इत्येते पञ्च वह्नयः॥" इति।

हवनफलम्, गृह्यकाण्डे —"नावसथ्यात्परो धर्मो नावसथ्यात्परं तपः। नावसथ्यात्परं दानं नावसथ्यात्परं धनम्॥ नावसथ्यात्परं श्रेयो नावसथ्यात्परं वशः! नावसथ्यात्परा सिद्धिर्नावसथ्यात्परा गतिः॥ नावसथ्यात्परं स्थानं नावसथ्यात्परं व्रतम्॥" इति।

सायं प्रातश्च होमः। तत्रादौ श्रौतविधिना सायंकालिकं होममाह—कर्ता स्नात्वाऽऽचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ॐ तत्सत्परमेश्वरप्रीतये उद्धरणपूर्वकममुकद्रव्येण सायं होष्यामीति संकल्प्य गार्हपत्याग्नेः सभ्यस्य चोद्धरण कृत्वा आहवनीयाग्निकुण्डे दक्षिणाग्निकुण्डे वा। **पञ्च भूसंस्काराः, यथा**—वज्र गृहीत्वा दर्भैः परिसमुह्य, गोमयोदकेनोपलिप्य वज्रेणोल्लख्य, अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुद्धृत्य, उदकेनाभ्युक्ष्य च ततो गार्हपत्यकुण्डादाहवनीयदक्षिणाग्निकुण्डयोरग्निं नयेत्। तथा गार्हपत्याहवनीयदक्षिणाग्निसभ्यसंज्ञकानां चतुर्णां श्रौताग्नीनां प्रदीपनं कृत्वानन्तरमावसथ्यस्य स्मार्तस्योद्धरणं कार्यम्। ततः अन्तरेणाग्निं गत्वा दक्षिणेन वा प्रदक्षिणमाहवनीय परीत्योपविश्य यजमानः पत्नी च जलमादायाचामेताम्। **तत्र मन्त्रः—"वृष्टिरसि वृश्चमे पाप्मानः ६. सत्येन व्रतमुपैम्यापः सत्यं मयि व्रतम्।"** ततो द्विराचमनम्। अपरेणाहवनीयं मकराकारकूर्चं निदधाति। ततस्तमाहवनीयाग्निमनिबद्धैः कुशपरिस्तरणैः कुशैर्वा पुरस्ताद्दक्षिणतः पश्चादुत्तरतश्च प्रागुदग्रतः परिस्तीर्य इतरथाऽऽवृत्तिः। इति। तथा च गार्हपत्यदक्षिणाग्न्योः परिस्तरणं विधेयम्। पयोहोमे गां दुग्ध्वा गार्हपत्यस्योत्तरतः पृथक् कृतेष्वङ्गारेषुतां दुग्धस्थालीमधिश्रयति। तृणेनावज्योत्यासिच्यापः पुनरवज्योत्य त्रिरुद्वासयत्युदक्तण्डुलहोमे तु न गोदोहनम्। आदौ गार्हपत्यस्य पर्युक्षणम्। गार्हपत्यादुदकधारां निनयत्याहवनीयम्। आहवनीयं पर्युक्ष्य। वैकङ्कत ँ स्रुक्स्रुवं प्रतप्य। पाणिना समार्ष्टि। पुनः प्रतप्य। उन्नेष्यामि ॐ उन्नय। इति यजमानस्तिष्ठन् चतुरः स्रुवानुन्नयति। तत्र प्रथमः। द्वितीयः। तृतीयः। चतुर्थः। स्रुग्दण्डोपरि समिधं धारयन्नुत्थाय अध्यधिगार्हपत्यादाहवनीयं हरति मुखमात्रे धारयन् मध्ये निगृह्य उद्गृह्य उपविश्य समिधमादधाति। **अग्निं ज्योतिषं त्वा वायुमती प्राणवती ६. स्वर्ग्या ६. स्वर्गायोपधामि भास्वतीम्। प्रदीतामभिजुहोति। दक्षिणं जान्वाच्य—ॐ सुजूर्देवेन सवित्रा सुजूरुषेन्द्रवत्या जुषाणोऽअग्निर्वेतु स्वाहा ३। १०॥** इति चतुर्थांशं हुत्वा **"इदमग्नये न मम।"** स्रुचे कुरोषु निधाय गार्हपत्यमवेक्षते। होष्यन्यस्मिन् उत्तरां भूयसीम्। ( उपांशु। ) **ॐ प्रजापतये (उच्चैः)**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**स्वाहा** । इति । **इदं प्रजापतये न मम** । स्रुचं द्विः प्रकम्प्य कूर्चे निदधाति । **ॐ नमो देवेभ्यः** । **ॐ स्वधा पितृभ्यः** अप उपस्पृश्य इतरयोश्च पुष्टिकाम स्याल्याः स्रुवेण –"**ॐ इह पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधात्विह प्रजा-**
६. **रमयतु प्रजापतिः । अग्नये गृहपतये रयिमते पुष्टिपतये स्वाहा । इदमग्नये गृहपतये रयिमते पुष्टिपतये न मम । ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम** । दक्षिणाग्नौ तूष्णीं समित्प्रक्षेपः । **ॐ अग्नयेऽन्नादायान्नपतये स्वाहा । इदमग्नयेऽन्नादायान्नपतये न मम । ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम** । स्रुक्स्थं हुतशेषं द्रव्यं पात्रान्तरे गृहीत्वा, भक्षणार्थं बहिर्गत्वाऽनामिकयाद्भिः प्राश्नाति । पात्रस्यास्वादनं उत्सृज्य निर्लेढि द्विराचम्य आहवनीयसमीपमागत्य स्रुच्युदकं पूरयित्वा उत्सिञ्चति । आहवनीयोत्तरतः **ॐ देवाञ्जिन्व** इति पुनः पूरयित्वा **ॐ पितॄञ्जिन्व** । दक्षिणतः पुनः पूरयित्वा उदुक्षति । **ॐ सप्तऋषीञ्जिन्व** । ऐशान्यां पुनः पूरयित्वा कुशेषु स्थाने त्रिर्निषिञ्चति प्राक्संस्थम् । "**ॐ अग्नये पृथिवीक्षिते स्वाहा । ॐ पृथिव्या अमृतं जुहोमि स्वाहा । ॐ अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा ॥** स्रुक्स्रुवमाहवनीये प्रतप्य कुशेषु निदधाति । समिधमादधाति । सर्वेषु यथा पर्युक्षितम् । **ॐ समिदसि समिद्धो मे अग्ने दीदिहि समिद्धातेऽ अग्ने दीद्यासम्** । आहवनीयाग्निसमीपमागत्य तिष्ठन् । आदौ गार्हपत्यस्योपस्थानम् । **उपस्थानम्**—**ॐ भूर्भुवः स्वः । ॐ सुप्रजाः प्रजाभिः स्या ꣳ सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः॥** (वा सं. ३।३७) (उपविश्य) महेन्द्रायाहवनीयाय नमः । ( गार्हपत्ये ) **ॐ भूर्भुवः स्वः । सुप्रजाः प्रजाभिः स्याꣳ सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः**( वा सं ३ । ३७ )॥( शय्यासनम् । वा गार्हपत्ये) **ॐ यमाय राज्ञे गार्हपत्याय नमः** । (ततः पूर्ववद् धारावर्ज्यम् ) । पर्युक्षण वाग्विसर्जनम् । उभौ स्वासने उपविश्य । आचम्य ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ॐ विद्युदसि विद्य मे पाप्मानं जह्यपोऽवभृथमभ्युपैमि मयि सत्यञ्जेषु व्रतम् । द्विराचम्य । विष्णवे नमः ( असञ्चरेविमोकः । गार्हपत्यस्य पश्चादुपविश्य ) "ॐनडाय नैषधाय अन्वाहार्यपचनाय नमः । अनभते साङ्गमनाय सभ्याय नमः । अस्ते पांसुपाय भस्मोद्वापाय नमः ॥ नर्यभस्म परब्रह्म यतो मुक्तिप्रसाधकम् । तयोरेकतरं सेव्यं संसारभयनाशनम् ॥ यत्कर्मणाऽत्यरीरिचं यद्वान्यूनमिहाकरम् । अग्निँस्विष्टकृद्विद्वान्सर्वँस्विष्टँसुहुतं करोतु स्वाहा ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियाऽऽदिषु न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥" ( ततोऽञ्जलिनाजलमादाय)अनेन अमुकद्रव्येण श्रौतसायंहोमाख्येन कर्मणा भगवान् श्रीयज्ञपुरुष प्रीयतां न मम॥ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु । विशेषप्रार्थना—ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥ ( वा० सं० ५ । १५ ) त्रीणि पदा विचक्रमेविष्णुर्गोपा अदाभ्यः । अतो धर्माणि धारयन् ॥ ( वा० सं० ३४ । ४३ ) तद्विष्णोः परमं पद ँसदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् ( वा९ सं० । ६ । ५ ) तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवो ६. सः समिन्धते विष्णोर्यत परमं पदम् (वा० सं० । ३४ । ४४) । विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि । विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ ( वा० सं० ५ । २१ ) त्र्यायुषꣳजमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ( वा० सं० ३ । ६२) " इति । ततो भस्म ललाटे धारयेत् ॥ ॐ नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नमः ओषधीभ्यः । नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे महते करोमि । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**श्रौतविधिना प्रातर्होमः**—( स्नानं कृत्वा ) **पञ्चभूसंस्काराः**—वज्रं गृहीत्वा दर्भैः परिसमुह्य गोमयोदकेनोपलिप्य वज्रेणोल्लिख्य अनामिकांगुष्ठाभ्यामुद्धृत्योदकेनाभ्युक्ष्य इदमाहवनीयस्य । एवं दक्षिणाग्नेः उद्धरेति यजमानो ब्रूयात्। आचम्य । सुमुखश्चेत्यादि० सङ्कल्पः। देशकालौ सङ्कीर्त्य—ॐतत्सत्परमेश्वरप्रीतये उद्धरणपूर्वकममुकद्रव्येण प्रातरग्निं होष्यामि ॥ **उद्धरणम्**—अन्तरेणा परामिं गत्वा दक्षिणेन वा प्रदक्षिणमाहवनीयं परीत्योपविशति। यजमानः पत्नी च यथादेशमाचामेताम्। **तत्र मंत्रो यथा**—ॐ" **वृष्टिरसि वृश्च मे पाप्मान ँ सत्येन व्रतमुपैम्यापः सत्यं मयि व्रतम्॥**" इति पठित्वा द्विराचामेत्। ततः अपरेणाहवनीयं कूर्चं निदधाति।आहवनीस्य परिस्तरणम् । कुशैः परिस्तरणैर्वा पुरस्ताद्दक्षिणतः पश्चादुत्तरतश्च प्राग्ग्रमुदग्ग्रं च परिस्तीर्य । एवं गार्हपत्यदक्षिणाग्न्योः परिस्तरणम् । पयोहोमे गां धुक्ष्य तण्डुलहोमे तु गोदोहनादेरभावः । अन्ये जलधारां निनयन्ति । गार्हपत्यस्योत्तरतः पृथक्कृतेष्वङ्गारेषु तां दुग्धस्थालीमधिश्रयति, तृणेनावज्योत्य आसिच्यापः पुनरवज्योत्य त्रिरुद्वासयत्युदक्, ततो गार्हपत्यस्य पर्युक्षणम्, ततो दक्षिणाग्नेः पर्युक्षणम्, गार्हपत्यादुदकधारां निनयत्याहवनीयम्, आहवनीय पर्युक्ष्य । वैकङ्कत ँ स्रुक् स्रुवं प्रतप्य प्राणिना संमार्ष्टि । पुनःप्रतप्य **उन्नेष्यामि**—ॐ **उन्नय** । यजमानस्तिष्ठन् चतुरः स्रुवानुन्नयति । प्रथमः, द्वितीयः, चतुर्थः । स्रुग्दण्डोपरि समिधं धारयन्नुत्थाय अध्यधिगार्हपत्यादाहवनीय हरति, मुखमात्रे धारयन् । मध्ये निगृह्य, उद्गृह्य उपविश्य समिधमादधाति **सूर्यो ज्योतिषं त्वा वायुमतीं स्वर्ग्या ँ स्वगोयोपदधामि भास्वतीम्** । प्रदीप्तामभिजुहोति । दक्षिणं जान्वाच्य। ॐ **अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूरुर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा । अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्य्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ज्योतिः सूर्यः सूरुर्यो ज्योति स्वाहा ॥** (वा०सं०३।९) **सुजूर्देवेन सविता सुजूरुषसे**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



न्द्रवत्या । जुषाणः सूरुर्यो वेतु स्वाहा ॥ ( वा. सं. ।३।१० ) चतुर्थांशं हुत्वा । इदं सूदं सूर्याय न मम । ( स्रुचं कुशेषु निधाय गार्हपत्यमवेक्षते । होष्यन्नस्मिन् उत्तरां भूयसीम् उपांशु ) ॐ प्रजापतये (उच्चैः) स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम । ( स्रुचं द्विः प्रक्षाल्य निदधाति । ॐ नमो देवेभ्यः । स्वधा पितृभ्यः । ( अप उपस्पृश्य इतरयोश्च पुष्टिकामः स्थाल्याः स्रुवेण ) ॐ इह पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधात्विह प्रजाँ रमयतु प्रजापतिः । अग्नये गृहपतये रयिमते पुष्टिपतये स्वाहा ॥ इदमग्नये गृहपतये रयिमते पुष्टिपतये न मम । ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम । ( दक्षिणाग्नौ तूष्णीं समित्प्रक्षेपः । ) ॐ अग्नयेऽन्नादायान्नपतये स्वाहा । इदमग्नयेऽन्नादायान्नपतये न मम । ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम ॥ ( स्रुचिस्थं हुतशेषं द्रव्यं पात्रान्तरे गृहीत्वा भक्षणार्थं बहिर्गत्वा अनामिकया द्विः प्राश्नाति । पात्रस्यास्वादनम् ( उत्सृज्य निर्लेढि ) । द्विराचम्य । आहवनीयसमीपमागत्य स्रुच्युदकं पूरयित्वा उत्सिञ्चति । आहवनीयोत्तरतः ) ॐ देवाञ्जिन्व । ( पुनः पूरयित्वा ) ॐ पितॄञ्जिन्व । ( दक्षिणतः पुनः पूरयित्वा उदुक्षति । सप्त ऋषीञ्जिन्व । ( ईशान्ये पुनः पूरयित्वा कुशेषु स्थाने त्रिर्निषिञ्चति प्राक्संस्थम् ।) ॐअग्नये पृथिवीक्षिते स्वाहा । ॐपृथिव्याऽअमृतं जुहोमि स्वाहा । ॐ अमृतेऽमृतंजुहोमि स्वाहा। स्रुक्स्रुवमाहवनीये प्रतप्य । कुशेषु निदधाति । समिधमादधाति सर्वेषु यथापर्युक्षितम् । ॐ समिदसि समिद्धोमे अग्नेदीदिहि समिद्धा ते अग्ने दीद्यासम् ॥ आहवनीयसमीपमागत्य तिष्ठन् । आदौ गार्हपत्यस्थोपस्थानम् । उपस्थानम्-ॐ भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याꣳसुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः । ( वा. स. ३।३७ ) ॥ उपविश्य महेन्द्रायाहवनीयाय नमः । गार्हपत्ये । ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



भूर्भुवः स्वः सु प्रजाः प्रजाभिःस्याद्ध सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः। नर्य प्रजां मे पाहि। शङ्ख्यं पशून् मे पाहि। अथर्वपितुं मे पाहि ॥ ततो गार्हपत्यं ॐ यमाय राज्ञे गार्हपत्याय नमः ततः पूर्ववत् धारावर्जं पर्युक्षणम्। अथ वाग्विसर्जनम्। उभौ स्वासने उपविश्य आचम्य। ॐ विद्युदसि विद्य मे पाप्मानं जह्यपोऽवभृथमभ्युपैमि मयि। सत्यङ्क्रोषु मे व्रतम् ॥ द्विराचम्य। विष्णवे नमः। असञ्चरे विमोकः। गार्हपत्यस्य पश्चादुपविश्य। ॐ नडाय नैषधाय अन्वाहार्यपचनाय नमः। अनश्नते साङ्गमनाय सभ्याय नमः। असते पांसुपाय भस्मोद्वापाय नमः। नर्यभस्म परब्रह्म यतो मुक्तिप्रसाधकम्। तयोरेकतरं सेव्यं संसारभयनाशनम् ॥ यत्कर्मणाऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टद्ध स्विष्टकृद्विद्वान्स्विष्टद्ध सुहुतं करोतु स्वाहा ॥ नमस्ते गार्हपत्याय नमस्ते दक्षिणाग्नये। नम आहवनीयाय महावेद्यै नमो नमः॥ नमः सभ्यावसथ्याभ्यां नमस्ते परमात्मने। विश्वबोधप्रबोधाय नमस्ते श्रौतवह्नये ॥ चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ अर्पणम्—इत्यनेनामुकद्रव्येण श्रौतप्रातर्होमकर्मणा भगवान् यज्ञपुरुषः प्रीयतां न मम ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ अथ साञ्जलि यज्ञपुरुषं ध्यायेत्—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा (वा. सं. ॥ ५। १५ ॥) त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपाऽअदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन् ॥ (वा. सं. ३४। ४३॥) तद्विष्णोः परमं पदद्ध सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम् ॥ (वा.सं. ६।५) तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाꣳसः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमम्पदम् (वा.सं.३४।४४) विष्णा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोःस्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा । ॥ ( वा. सं. ५।२१ )" इति पठेत् । ततो हवनभस्म स्रुवेणोन्नीय तेन तिलकं कुर्यात् । तत्र मन्त्रः— "त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ॥ ( वा. सं. ३।६२ )" इति । ततो हस्तं प्रक्षाल्य साञ्जलि प्रार्थयेत् । "ॐ नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः । नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे महते करोमि ॥ ११ ॥" इति । ॐ शान्ति शान्तिः शान्तिः ॥" इति श्रौतप्रातर्होमः ॥

अथ सायमौपासनपरिचरणम् । आवसथ्ये सायंहोमप्रयोगः—स्नात्वाऽऽचम्य प्राणांश्चायम्य सङ्कल्पं कुर्यात् । यथा—अद्येत्यादि पठित्वा ॐ तत्सत्परमेश्वरप्रीतये उद्धरणपूर्वकममुकद्रव्येणाहं सायमौपासनपरिचरणं करिष्ये इति सङ्कल्प्योद्धरणं कुर्यात् ॥ यजमानः पत्नी च यथोदेशमासामेताम् । ततो यजमान उपयमनकुशाः सिमिधस्तिस्रः मणिकोदकं होमद्रव्यं चोपयमनकुशानादाय तिष्ठन् समिधोऽभ्यादाय मणिकोदकेनाग्नेः प्रदक्षिणं पर्युक्षेत् । वेणुनलिकया ब्राह्मणश्चेद् यजमानस्तदा स्वमुखेनवाग्नेः प्रदीपनकरणम् । ॐ अग्नये स्वाहा । इदमग्नये न मम ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ ( उत्थाय ) उपस्थानम्— ॐ समास्त्वाग्न ऋतवो वर्द्धयन्तु संवत्सरा ऋषयो यानि सत्या । सन्दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा आभाहि प्रदिशश्चतस्रः ॥ १ ॥ सञ्चेद्धयस्वाग्ने प्रचं बोधयैनमुच्चतिष्ठ महते सौभगाय । मा च रिषदुपसत्ता ते अग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु माक्ये ॥ २ ॥ त्वामग्ने वृणते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ब्राह्मणा इमे शिवो अग्ने संवरणे भवानः। सुपत्नहा नो अभिमातिजिच्च स्वे गये जाग्रह्यप्रयुच्छन् ॥ ३ ॥ इहैवाग्ने ऽअधि धारया रयिम्मा त्वा नि क्रन्पूर्वचितो निकारिणः। क्षत्रमग्ने सुयममस्तु तुभ्यमुपसत्ता वर्द्धतान्ते अनिष्टृतः ॥ ४ ॥ क्षत्रेणाग्ने स्वायुः सꣳरभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व। सजातानाम्मद्घ्यमस्थाएधि राज्ञामग्ने विहव्यो दीदिहीह ॥ ५ ॥ अतिनिहोऽअतिस्रिधोऽत्यचित्तिमत्यरातिमग्ने। विश्श्वा ह्यग्ने दुरिता सहुस्वाथास्मभ्यꣳ सहवीराꣳ रयिन्दाः ॥ ६ ॥ अनाधृष्यो जातवेदा अनिष्टृतो विराडग्ने क्षत्रभृद्दीदिहीह। विश्श्वा आशाः प्रमुञ्चन्मानुषीभिर्यः शिवेभिरद्य पारि पाहि नो वृधे ॥ ७ ॥ बृहस्पते सवितर्वोधयैनꣳ सद॰ शितश्चित्सन्तराꣳ सद॰ शिशाधि। वर्द्धयैनम्महते सौभगाय विश्श्व एनमनुमदन्तु देवाः ॥ ८ ॥ अमुत्रभूयादधि यद्यमस्य बृहस्पते अभिशस्तेरमुञ्चः। प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्माद्देवानामग्ने भिषजा शचीभिः ॥ ९ ॥ ( वा० सं० २७ । १–९ ) सꣳसꣳस्पतिमद्भुतम्प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिम्मेधामयासिषꣳ स्वाहा ॥ ( वा० सं० ३२ । १३ ) याम्मेधान्देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनङ्कुरु स्वाहा॥ (वा.सं.३२।१४)मेधाम्मे वरुणो ददातु मेधामग्निःप्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा ॥ (वा.सं.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



३२। १५ ) इदम्मे ब्रह्म च क्षत्रञ्चोभे श्रियमश्नुताम्। मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमान्तस्यै ते स्वाहा ॥(वा.सं. ३२। १६) अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ॥(वा.सं.५।३६) तनूपा अग्नेऽसितन्वम्म पाहि। आयुर्दा अग्नेस्यायुर्म्मे देहि। वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि।अग्ने यन्मे तन्वा ऊनन्तन्म आपृण ॥(वा.सं. ३।१७) श्रद्धां मेधांयशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्। तेज आयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन ॥ अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः। निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम् ॥ चतुर्भिश्च चतुर्मिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः ॥ प्रमादात् कुर्वतां कर्म्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति स्मृतिः ॥ काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी। देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः ॥ सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियाऽऽदिषु। न्यूनं संपूर्णता याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ॥ वा०सं० ३।६२ ॥ ) इति पठित्वा भस्म ललाटे धारयेत्। ॐ नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः। नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे महते करोमि। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। अर्पणम्—अनेन ( यजमानानुज्ञया ) सायमौपासनपरिचरणाख्येन कर्मणा भगवान् यज्ञरूपी श्रीमहाविष्णुः प्रीयतां न मम ॥ विष्णवे नम इति त्रिः ॥ इति सायमौपासनपरिचरणम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**प्रातरौपासनपरिचरणम्, आवसथ्ये प्रातर्होमप्रयोगः**—स्नात्वाऽऽचम्य प्राणानायम्य । सङ्कल्पं कुर्यात् । तत्र अद्येत्यादि पठित्वाॐ तत्सत्परमेश्वरप्रीत्यर्थं जलसिद्ध्यर्थं मणिकोदकं करिष्ये॥इति सङ्कल्प्य पश्चादुद्धरणं कुर्य्यात् **उद्धरणम्, पारस्करगृह्यसूत्रे**—"आपोरेवतीर्ि परमेष्ठी प्रजापतिऋषिः । आपो देवता। त्रिष्टुप् छन्द।उदकासेके विनियोगः"इति । ततःॐआपोरेवति क्षयथा हि वस्वकृतश्चर मृतामृतश्चराय स्वस्थश्च पत्नी सरस्वती पयोधाः॥" आपोहिष्ठेति तिसृणां सिन्धुद्वीप ऋषि. आपो देवता । गायत्री छन्दः । मार्जने विनियोगः—**ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ ( वा.सं. ११।५०)॥ ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः । ११ । ५१ ॥ तस्मा अरङ्गमा वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥ ११ । ५२ ।** ( देशकालौ सङ्कीर्त्य ) ॐतत्सत्परमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रातरौपासनस्य परिचरणमहं करिष्ये। सूर्याय स्वाहा प्रजापतये स्वाहेत्यनयोर्मन्त्रयोः प्रायोमेधाः ऋषिः । सूर्यप्रजापती देवते । गायत्रीत्रिष्टुभौ छन्दसी ॥ प्रातर्होमे विनियोगः—( तत्र सूर्यं प्रजापतिं तण्डुलैर्यक्ष्ये ) उत्तरतः पात्रोपकल्पनम् । उपयमनकुशाः । समिधस्तिस्रः । मणिकोदकम् । होमद्रव्यं च । उपयमनकुशानादाय । तिष्ठन् समिधोऽभ्याधाय मणिकोदकेनाग्नेः प्रदक्षिणम् पर्युक्षणम् । वेणुवमन्या (नलिकया) प्रदीप्तकरणम् । **ॐ सूर्याय स्वाहा । इदं सूर्याय न मम ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम ॥ उपस्थानम्**—विभ्राडित्यस्य विभ्राट् सूर्य ऋषिः । सूर्यो देवता त्रिष्टुप् छन्दः । उदुत्यमिति तिसृणां प्रस्कण्व ऋषिः । सूर्यो देवता । गायत्री छन्दः तं । प्रत्नथेत्यस्य काश्यपावत्सारावृषी सोमो देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । अयं वेन इत्यस्य वेन ऋषिः । सोमो देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । चित्रमित्यस्य कुत्साङ्गिरस ऋषिः । सूर्यो देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । आन इत्यश्य अगस्त्य ऋषिः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सूर्यो देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। यदद्येत्यस्य श्रुतकक्षसुतकक्षावृषी। सूर्यो देवता। गायत्री छन्दः। तरणिरित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिः। सूर्यो देवता। गायत्री छन्दः। तत्सूर्यस्येति द्वयोः कुत्स ऋषिः। सूर्य देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। वण्महां इति द्वयोर्जमदग्निऋषिः। सूर्यो देवता। आद्यस्य बृहती छन्दः।द्वितीयस्य सतोबृहती छन्दः श्रायन्त इवेत्यस्य नृमेधा ऋषिः। सूर्यो देवता। बृहती छन्दः। अद्यादेवा इत्यस्य कुत्स ऋषिः। सूर्यो देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूपाङ्गिरसावृषी। सूर्योदेवता। त्रिष्टुप् छन्दः। सूर्योपस्थाने विनियोगः। ॐ विभ्राड् बृहत् पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद् यज्ञपतावविंहुतम्। वात जूतो यो अभिरक्षतित्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा विराजति ॥ ॥ ३० ॥ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्य६. स्वाहा ॥ ३१ ॥ येना पावकचक्षसा भुरण्यन्तंजनाँ २॥ ऽ अनु। त्वंवरुण पश्यसि ॥ ३२ ॥ दैव्या वध्वर्युऽआगतु६. रथेन सूर्यत्वचा। मध्वा यज्ञ६. समञ्जाथे तं प्रत्नथाऽयं वेनश्चित्रंदेवानाम् ॥ ३३ ॥ आनुइडा भिर्विदथे सुशस्तिविश्वानरः सविता देवएतु। अपि यथा युवानोमत्सथानो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा ॥ ३४ ॥ यदुद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभिसूर्य्य। सर्व्वं तदिन्द्र ते वशे ॥ ॥ ३५ ॥ तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमाभासि रोचनम् ॥ ३६ ॥ तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्त्तोर्वितत६ संजभार। यदेदयुक्तहरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ॥ ३७ ॥ तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपङ्कृणुते द्योरुपस्थे। अनन्तमन्यद्रुश दस्यपाजः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कृष्णमन्यद्धरितः सम्भरन्ति ॥ ३८ ॥ बण्महाँ २॥ऽ असिसूर्य बडादित्यमहाँ २॥ऽ असि । महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धादेवमहाँ २॥ऽ असि ॥ ३९ ॥ बह्मसूर्य श्रवसामहाँ२॥ऽअसि सत्रा देवमहाँ ३ ॥ ऽ असि । मह्नादेवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम् ॥ ४० ॥ श्रायन्त इव सूर्य विश्वे दिद्युत्स्य भक्षत । वसूनि जातेजन मानऽ ओजसा प्रति भागं न दीधिम ॥ ४१ ॥ अद्यादेवाऽउदिता सूर्यस्यनिरहसः पिपृतानिरवद्यात। तन्नोमित्रोवरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवीऽउतद्यौः ॥ ४२ ॥ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्तमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ( वा. सं. ३३। ३०–४३ ) सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिं मेधामयासिषꣳ स्वाहा ॥ १३ ॥ याम्मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते । तया मामद्यमेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥ ॥ १४ ॥ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः । मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्धाता ददातुमे स्वाहा ॥ १५ ॥ इदम्मे ब्रह्म चक्षुत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् । मयिं देवा दधत श्रियमुत्तमां तस्यैं ते स्वाहा॥ (वा.सं. ३१।१३–१६) तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदःशतञ्जीवेम शरदःशतꣳ शृणुयामशरदःशतम् प्रब्रवाम शरदःशतमदीनाःस्याम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शरदं॰शतम्भूयश्च शरदं॰शतात् ( वा. सं. ३६।२४ ) ॥ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपाꣳ सुरे स्वाहा (वा.सं५।१५)तद्विष्णोःपरमं पदꣳसदा पश्यन्ति सूरयः। दिवी वचक्षुरातंतम् ॥ (वा. सं. ६।५ ) तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाꣳ सः समिन्धते। विष्णोर्य्यत् परमम्पदम् । (वा. सं.३४।४४) श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टि त्रियं बलम् । तेजऽआयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन ॥ काण्डद्वयोपपाद्याय कर्मब्रह्मस्वरूपिणे । स्वर्गापवर्गदात्रे च यज्ञेशाय नमो नमः ॥ अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पुत्रौणः । निर्धना सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम् ॥ चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च । हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः ॥ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति स्मृतिः ॥ काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी । देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः ॥ सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात् ॥ यस्य स्मृ० ॥ ॐ त्र्यायुषं ( वा.सं.४।६१) ललाटे भस्म धारयेत् । **प्रार्थना**—ॐ नमो ब्रह्मणे०( अयं मन्त्रः श्रौते द्रष्टव्यः ) ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः । **अर्पणम्**-अनेन ( यजमानानुज्ञया ) अमुकद्रव्येण प्रातरौपासनपरिचरणाख्येन कर्मणा भगवान् यज्ञरूपी श्रीमहाविष्णुः प्रीयतां न मम । ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु । विष्णवे नमः इति अत्रिः ॥ **इति प्रातरौपासनपरिचरणम् ॥**

**नित्यदानम्, याज्ञवल्क्यः**-" यत्र विद्या तपः शीलं स्ववर्णाचार एव च । श्रुतं वृत्तमिमे चोभे तद्धि पात्रं प्रकीर्तितम् ॥ सर्वथाः प्रभवो विप्राः श्रुताध्ययनशालिनः । तेभ्यः क्रियापराः श्रेष्ठास्तेभ्योऽप्यध्यात्मवित्तमाः ॥ गोभूतिलहिरण्यादि पात्रे दातव्यमार्चितम् । नापात्रे विदुषा किञ्चिदात्मनः श्रेय इच्छता ॥ न विद्यया केवलया तपसा वापि पात्रता । श्रुतं वृत्तमिमे चोभे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तद्धि पात्रं प्रकीर्तितम् ॥"**आह्निककर्मप्रकाशे**-"गत्वा यद्दीयते दानं तदनन्तफलं स्मृतम् । सहस्रगुणमाहूय याचिते तु इदंधकम् ॥ सङ्कीर्त्य देशकालादि तुभ्यं सम्प्रददे इति। न ममेति च सत्ताया निवृत्तिमपिकीर्तयेत् ॥ प्रागग्रेषु स्वयं स्थित्वा दाता च परमेश्वरम् । ध्यात्वा स्वपुण्यमुद्दिश्य दक्षिणां प्रतिपादयेत् ॥ ब्राह्मणं प्रणिपत्याथ ततः पात्रं विसर्जयेत् ॥ " **वसिष्ठः**-"नामगोत्रे समुच्चार्य सम्प्रदानस्य चात्मनः । सम्प्रदेयं प्रयच्छन्ति कन्यादाने तु पुंस्त्वयम् ॥ " **वाराहपुराणे**—"तोषं दद्याद्विजकरे दाने विधिरयं स्मृतः ! सकुशोदकहस्तश्च ददामीति तथा वदेत् ॥ " **गौतमः**-"मनसा पात्रमुद्दिश्य जलं भूमौ विनिक्षिपेत् । विद्यते सागरस्यान्तो दानस्यान्तो न विद्यते॥ " **महाभारते**-एकस्मिन्नप्यतिक्रान्ते दिने दानविवर्जिते । दस्युभिर्मुषितस्येव युक्तमाक्रन्दितुं भृशम् ॥ i' **नृसिंहः**-तस्माद्विभवानुसारेण पूगीफलादिकमपि प्रत्यहं देयमित्याह । **संवर्तः**—" सर्वेषामेव दानानामन्नदानं परं स्मृतम् । सर्वेषामेव जन्तूनां यतस्तज्जीवितं फलम् ॥ यस्मादन्नात् प्रजाः सर्वाः कल्पे कल्पेऽसृजन् प्रभुः । तस्मादन्नात् परं दानं न भूतं न भविष्यति ॥ "

**अथ नित्यदानप्रयोगः**—( दानकर्ता हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याऽऽचम्य प्राणानायम्य ) । **सङ्कल्पः**-अद्यपूर्वोच्चारितैवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममाऽऽत्मनःश्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थममुकब्राह्मणाय अमुकदानमहं करिष्ये ॥ ततः **ब्राह्मणपूजनम्**—'**ॐ भूर्भुवःस्वःब्रह्मणे इदमासनम्**' । इति दाता वदेत्। **स्वासनम्** इति ब्राह्मणो वदेत् '**ॐभूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे इदं पाद्यम्**'इति दाता वदेत्-'**सुपाद्यम्** ' इति ब्राह्मणो वदेत् । '**ॐभूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे इदमर्घ्यम्**' इति दाता वदेत्। ' **अस्त्वर्घ्यम्**'इति ब्राह्मणो वदेत्।'**ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे इदमाचमनीयम्** ' इति दाता वदेत्। ' **अस्त्वाचमनीयम्**' इति ब्राह्मणो वदेत्।**ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे गन्धाः पान्तु-सौमङ्गल्यं चास्तु। अक्षताः**

१ एवमेव दातुर्ब्राह्मणस्य चोक्तिप्रत्युक्ती अग्रेऽपि बोधयेत्यर्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पान्तु-आयुष्यमस्तु । पुष्पाणि पान्तु-सौश्रियमस्तु । ताम्बूलं पातु—ऐश्वर्यमस्तु । दक्षिणाःपान्तु बहु देयं चास्तु । नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबा हवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ॥ सकलाराधनैः स्वर्चितमस्तु । ब्राह्मणः 'अस्तु स्वर्चितम्' इति प्रतिवदेत् ॥ इदममुकदानं सदक्षिणाकं गन्धादिभिरर्चितं अमुकप्रवरान्वितामुकगोत्रोत्पन्नायामुकशर्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे । प्रतिगृह्यताम् । ब्राह्मणो वदेत् प्रतिगृह्णामीति ॥ साङ्गदानफलप्राप्त्यर्थमिमां दक्षिणां तुभ्यमहे सम्प्रददे ॥ ब्राह्मणो वदति-प्रतिगृह्णामि ॥ ततो ब्रह्मणाशिषो गृह्णीयात् ।—ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ( वा. सं. २५।१९ ) शतं भवति शतायुर्वै पुरुषः शतेन्द्रिय आयुरेवेन्द्रियं वीर्य्यमात्मन्धत्ते ॥ २ ॥ स्वस्तिमन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु ॥ तथास्तु—इति यजमानो ब्रूयात् ॥ अर्पणम्—अनेन अमुकद्रव्यस्य मया कृतेन (नित्य) दानेन परमेश्वरः प्रीयतां न मम ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ इति नित्यदानप्रयोगनिर्देशः ॥

मङ्गलपदार्थदर्शनम्, कात्यायनः—"रोचनं चन्दनं गन्धं मृदं गां दर्पणं मणिम् । गुरुणग्निं रविं पश्येन्नमस्येत्प्रातरेव हि ॥" नागदेवः—"पूर्वं च सर्पिर्दधिसर्षपांश्च धेनुं सवत्सां वृषभं सुवर्णम् । मृद्गोमय स्वस्तिकमक्षतांश्च वह्निं मधु ब्राह्मणकन्यकाश्च ॥ श्वेतानि वस्त्राणि तथा च हुताशनं चन्दनकल्पबीजम् । अश्वत्थवृक्ष च समालभेत् ततश्च कुर्यान्निजधर्मकार्यम् ॥ लोकेऽस्मिन् मङ्गलान्यष्टौ ब्राह्मणो गौर्हुताशनः । हिरण्यं सर्पिरादित्य आपो राजा तथाऽष्टमः ॥ एतानि सततं पश्येन्नमस्येदर्चयेद् बुधः । प्रदक्षिणानि कुर्वीत

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तस्यायुर्न च हीयते ॥ " **आयुर्वेदे**--"आदर्शालोकनं प्रोक्तं माङ्गल्यं कान्तिकारकम्। पौष्टिकं बलमायुष्यं पापालक्ष्मीविनाशकम् ॥ "

**मातापितृवन्दनम्, सुमन्तुः**-" आयुः पुमान्यशः स्वर्गं कीर्तिं पुष्टिं बलं श्रियम्। पशुं सुखं धनं धान्यं प्राप्नुयात्पितृवन्दनात् ॥" इति। **गुरुवन्दनम्**—" अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्। तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुगुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्मतस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ **गुरुः -याज्ञवल्क्यः**-'स गुरुर्यः क्रियाः कृत्व वेदमस्मै प्रयच्छति ॥ " इति।

इत्यन्हःप्रथमभागे कर्तव्यनिर्देशः ॥

---

माता च पिता चेति तयोः। पित्रोर्वन्दनं, तस्मात्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



## अथ अह्नो द्वितीयभागे कर्तव्यनिर्देशः ।

स्वाध्यायाध्ययनम्, दक्षः—" द्वितीये च तथा भागे वेदाभ्यासो विधीयते । वेदाभ्यासो हि विप्राणां परमं तप उच्यते ॥ ब्रह्मयज्ञः स विज्ञेयः षडङ्गसहितस्तु सः वेदस्वीकरणं पूर्वं विचारोऽभ्यसनं जपः ॥ ततो दानं च शिष्येभ्यो वेदाभ्यासो हि पञ्चधा । समित्पुष्पकुशादीनां स कालः समुदाहृतः ॥ " इति ।

कात्यायनपरिशिष्टसूत्रे-" अथ प्रतिज्ञा । मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयं तस्मिञ्छुक्ले याजुषाम्नाये माध्यान्दिनीयके मन्त्रे स्वरप्रक्रिया । ह्रस्वनुदात्तो मूर्ध्न्युदात्तः श्रुतिमूले स्वरित एवं जात्यादयोऽभिहिता ब्राह्मणे तूदात्तानुदात्तौ भाषिकस्वरौ तानस्वराणि छन्दावेत्सूत्राणि ॥ १ ॥ अथान्तस्थानामाद्यस्य पदादिस्थस्यान्यहलसंयुक्तस्य संयुक्तस्यापि रेफोष्मान्त्याभ्यामृकारेण चाविशेषेणादिमध्यावसानेषूच्चारणे जकारोच्चारणं द्विर्भावेष्वेवमथापरान्तस्थस्यायुक्तान्यहलसंयुक्तस्योष्मऽऋकाररेकारसहितोच्चारणमेवं तृतीयान्तस्थस्य क्वचिदृकारस्य तु संयुक्तस्याविशेषेण सर्वत्रैवमथान्त्यस्यान्तस्थानां पदादिमध्यान्तस्थस्य त्रिविधं गुरुमध्यमलघुवृत्तिभिरुच्चारणमथो मूर्द्धन्योष्मणोऽसंयुक्तस्य उमृते संयुक्तस्य च खकारोच्चारणमध्ययनादिकर्मस्वर्थवेलायां प्रकृत्या ॥२॥ अथानुस्वारस्य "इत्यादेशः श ष स ह रेकेषु परेषु तस्य त्रैविध्यमाख्यातम् । ह्रस्वदीर्घगुरुभेदैर्दीर्घात्परो ह्रस्वो ह्रस्वात्परो दीर्घो गुरौ परे गुरुः परसवर्णेषत्प्रकृत्या चान्यत्र विसर्गेष्वीषद्विरामः पदाद्यस्य संयुक्ताकारस्येषद्दीर्घता च भवतीषद्दीर्घता च भवतीति ॥ ३ ॥ मध्य-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



न्दिनेन महर्षिणा याज्ञवल्क्यालब्धः शाखाविशेषो माध्यन्दिनः उपचारात्तमधीयते विदन्ति वा माध्यन्दिनाः शिष्याः। अणू ॥ तेषामयं स्वाध्यायः वृद्धाच्छः। ततः स्वार्थे कन्। प्रचयजात्यादयः स्वरितभेदाः। तान एकश्रुतिः स्वरः। उदात्तादिस्वरसंस्कारनियमे सूत्राणि छन्दोवत्। वकारस्त्रिविधो ज्ञेयो गुरुर्लघुर्लघुतरः। आदिर्गुरुर्लघुर्मध्ये पदान्ते च लघुतरः ॥ १ ॥ पदस्याद्यन्तमध्ये स्यात् खकारोच्चारणं तथा। तृतीयवर्गयोगे तु ष एव स्यात्सदैव हि ॥ ॥ २ ॥ टुकयोगे तु नो भवेत् ॥ इति माध्यन्दिनशिक्षा ॥ षः खष्टुमृते चेति केशवशिक्षासूत्रम्--विसर्गेषु किञ्चिद्विरामः तस्य स्पष्टोच्चारणं पदादेः संयुक्ताकारस्य दीर्घोच्चारणम् ॥ अत एवाध्यायसमाप्तौ दीर्घपाठ इति वदन्ति ॥ छन्दोवदित्यतिदेशात् सूत्रे विसर्गस्य स्पष्टोच्चारणं कुतो नेति न विघ्नः॥ डढौ ळ ळहावेकेषाम्। डढौ ळळहौ आपद्येते। स्वरमध्ये समान पदे इत्यर्थः ॥ इति कातीयप्रातिशाख्ये। आश्वलायनप्रातिशाख्ये तु-जिह्वामूलं तालु चाचार्य आह स्थानं डकारस्य तु वेदमित्रः। ळहकारतामेति स एव चास्य ढकारः सन्नूष्मणा सम्प्रयुक्तः ॥ १ ॥ द्वयोश्चास्य स्वरयोर्मध्यमेत्य सम्पद्यते स डकारो ळकारः। वेदमित्र आचार्यः ॥ डस्य स्थानं तालुसंयुक्तजिह्वामूलम् ॥ " इति

पारस्करगृह्यसूत्रे-"प्रत्यङ्मुखायोपविष्टायोपसन्नाय समीक्षमाणाय समीक्षिताय। वेदꣳसमाप्य स्नायाद्ब्रह्मचर्यं वाऽष्टाचत्वारिꣳशकं द्वादशकेऽप्येके गुरुणाऽनुज्ञातो विधिर्विधेयस्तर्कश्च वेदः षडङ्गमेके न कल्पमात्रे कामं तु याज्ञिकस्योपसङ्गृह्य॥" याज्ञवल्क्यशिक्षासूत्रे--" जटा मालाशिखा रेखा



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ध्वजो दण्डो रथो घनः। अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रमपूर्वा महर्षिभिः ॥ अनुलोमविलोमाभ्यां त्रिवारं हि पठेत्क्रमः। विलोमे पदवत्सन्धिरनुलोमे यथाक्रमम् ॥ ब्रूयात्क्रमविपर्यासावर्धर्चस्यादितोऽन्ततः। अन्तं चादि नयेदेवं क्रममालेति कीर्त्यते ॥ पदोत्तरां शिखामेव शिखामार्याः प्रचक्षते। क्रमाद्द्वित्रिचतुःपञ्च पदक्रममुदाहरेत् ॥ पृथक्पृथग्विपर्यस्य लेखामाहुःपुनः क्रमात्। ब्रूयादादेः क्रमं सम्यगन्तादुत्तारयेदिति ॥ वर्गे वा ऋचि वा यत्र पठनं स ध्वजः स्मृतः। क्रममुक्त्वा विपर्यस्य पुनश्च क्रममुत्तमम् ॥ अर्धर्चादिममेवोक्तः क्रमदण्डो विधीयते। पादशोऽर्धर्चशो वापि सहोक्त्या दण्डवद्रथः ॥ अन्तक्रमं पठेत्पूर्वमादिपर्यन्तमानये। आदिक्रमं नयेदन्तं घनमाहुर्मनीषिणः ॥ " इति ॥

**वाङ्माधुरीकरणम्, याज्ञवल्क्यशिक्षायाम्**-" खदिरश्च कदम्बश्च करवीरकरञ्जकौ। एते कण्टकिनः पुण्याः क्षीरिणस्तु यशस्विनः ॥ तेनास्यकरणे सूक्ष्मं माधुर्यं चैव जायते। त्रिफलां लवणैर्युक्तां भक्षयेच्छिष्यकः सदा ॥ क्षीणमेधाजनन्येषा स्वरवर्णकरी तथा। "

**अध्ययनम्, याज्ञवल्क्यः**-"उपनीय गुरुः शिष्यं महाव्याहृतिपूर्वकम् वेदमध्यापरेदेनं शौचाचारांश्च शिक्षयेत्॥" **अन्यच्च**:-"वाकोवाक्यं पुराणं च नाराशंसीश्च गाथिका। इतिहासास्तथा विद्यां योऽधीते शक्तितोऽन्वहम् ॥ "

**आचार्यलक्षणम्, बृहस्पतिः**-" आचिनोति च शास्त्राणि आचारे स्थापयत्यपि। स्वयमाचरते यस्तु तवाचार्यं प्रचक्षते ॥ " **याज्ञवल्क्यः**-- 'उपनीय ददद्वेदमाचार्यः स उदाहृतः ' ॥ **हरिहरभाष्ये**-" सत्यवाग्

---

१--वाकोवाक्यं ' पृच्छामि त्वां परमंत पृथिव्याः इयं वेदिः परो अन्तः इत्येवं प्रश्नोत्तररूपं वेदवाक्यम्। २--नाराशंसीः रुद्रदैवत्यान्मन्त्रान्। ३--गाथिकाः--गाथा इत्यर्थे। यज्ञगाथेन्द्रगाथाद्या इति यावत् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



धृतिमान् दक्षः सर्वभूतदयापरः। आस्तिको वैदनिरतःशुचिराचार्य उच्यते॥" **अन्यच्च**—"उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विजः। संकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते॥" "नास्तिको वेदनिन्दकः" इति मनूक्त्या वेदस्य निन्दकत्व एव नास्तिकत्वम्, प्रशंस्यते नरास्तिकत्वमित्यर्थतः सिद्धम्। 'अस्ति परलोकः' इत्याहेति वाऽऽस्तिकः॥

**उपाध्यायः, हरिहरभाष्ये**—"एकदेशं तु वेदस्य वेदाङ्गान्यथवा पुनः यौऽध्यापयति वृत्त्यर्थे उपाध्यायः स उच्यते॥ वेदाध्ययनसम्पन्नो वृत्तिमान्त्रिजितेन्द्रियः। न याजयेद्वृत्तिहीनं वृणुयाच्च न तं गुरुम्॥ पश्चादग्नेरवस्थाप्य ब्रह्मचर्यमगामिति॥"

**अध्ययनक्रमः, धन्वन्तरिः**--"अथ शुचये कृतोत्तरासङ्गायाऽव्याकुलायोपस्थितायाध्ययनकाले शिष्याय यथाशक्ति गुरुरुपदिशेत्। पदं पादं श्लोकं वा ते च पदपादश्लोका भूयः क्रमेणानुसन्धेया एवमेकैकशो घटयेदात्मना चानुपठेत्। अद्रुतमविलम्बितमविशङ्कितमननुनासिकं व्यक्ताक्षरमपीडितवर्णमक्षिभ्रुवौष्ठहस्तैरनभिनीतं सुसंस्कृतं नात्युच्चैर्नातिनीचैश्च स्वरैः पठेन्न चान्तरेण। कश्चिद्ग्रन्थोत्तरधीयानयोः॥" यथा--"शुचिर्गुरुपरो दक्षस्तन्द्रानिन्द्राविवर्जितः। पठेदेतेन विधिना शिष्यः शास्त्रान्तमाप्नुयात्॥ वाक्सौष्टवेऽर्थविज्ञाने प्रागल्भ्ये कर्मनैपुणे। तदभ्यासे च सिद्धौ च यतेताध्ययनं ततः॥" **पाणिनिः**--"हस्तेन न वेदं योऽधीतं स्वरवर्णसमन्वितम्। ऋग्यजुः सामभिः पूतो ब्रह्मलोके महीयते॥ हस्तहीनंतु योऽधीते स्वरवर्णविवर्जितम्। ऋग्यजुःसामभिर्दग्धो वियोनिमधिगच्छति॥" **व्यासः**--"वेदस्याध्ययनं सर्वधर्मशास्त्रस्य चैव यत्। अजानतोऽथ तत्सर्वं तुषाणां कण्डनं यथा॥" **यजुर्वेदभाष्ये**--"स्वरो वर्णोऽक्षरं मात्रा तत्प्रयोगार्थ एव च। मन्त्रज्ञानं समासेन वेदितव्यं पदे पदे॥"

**शिक्षायास्ताडनम्, मनुः**--"न निन्दां ताडने कुर्यात् पुत्रं शिष्यं च ताडयेत्। अधोभागे जरीरस्य नोत्तमाङ्गे कदाचन॥"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वेदाध्ययनम्--" वेदाभ्यासरतं श्रौतं महायज्ञक्रियापरम् । न स्पृशन्तीह पापानि महापातकजान्यपि ॥ " इति ॥

अनध्यायाः, पारस्करगृह्यसूत्रे--वातेऽमावास्यायाः सर्वानध्यायः । श्राद्धाशने चोल्कावस्फूर्ज्जद्भूमिचलनाग्न्युत्पातेऽभ्रवृतुसन्धिषु चाऽऽकालमुत्सृष्टेष्वभ्रदर्शने सर्वरूपे च त्रिरात्रं त्रिसन्ध्यं वा भुक्त्याऽऽर्द्रपाणिरुदके निशाया ६. सन्धिवेलयोरन्तःशवे ग्रामेऽन्तर्दिवाकीर्त्ये धावतोऽभिशस्तपतितदर्शनाश्चर्याभ्युदयेषु च तत्कालं नीहारे वादित्रशब्द आर्त्तस्वने ग्रामान्ते स्मशाने श्वगर्दभोलूकशृगालसामशब्दषु शिष्टाचरिते च तत्कालं गुरौ प्रेतेऽपोऽभ्यवेयादहरात्रं चोपरमेत्सतानून-प्रिणि सब्रह्मचारिणि च त्रिरात्रमेकरात्रमसब्रह्मचारिण्यर्धषष्टान्मासानधीत्योत्सृजेयुरर्धसप्तमान् वाऽथेमामृचं जपन्त्युभा कवी युवा यो नो धर्मः परापतत् । परिसख्यस्य धर्मिणो विसख्यानि विसृजामहऽइति त्रिरात्रꣳ सहोप्य विप्रतिष्ठेरन् ॥ २—११ ॥ याज्ञवल्क्यः—" सन्ध्यागर्जितनिर्वातभूकम्पोल्कानिपातने ॥ समाप्य वेदं द्युनिशमारण्यकमधीत्य च । पञ्चदश्यां चतुर्दश्यामष्टम्यां राहुसूतके । ऋतुसन्धिषु भुक्त्वा वा श्राद्धीयं प्रतिगृह्य च । पशुमण्डूकनकुलमार्जारश्वानमूषिकैः ॥ कृतेऽन्तरे त्वहोरात्रं शत्रुपाते तथोच्छ्ये । श्वक्रोष्टुगर्दभोलूकसामबाणार्तनिःस्वने ॥ अमेध्यशवशूद्रान्त्यश्मशानपतितान्तिके । देशेऽशुचावात्मनि च विद्युत्स्तनितसम्प्लवे ॥ भुक्त्वाऽऽर्द्रपाणिरम्भोऽन्तरर्धरात्रेऽतिमारुते । पांसुवर्षे दिशां दाहे सन्ध्यानीहारभीतिषु ॥ धावतः पूतिगन्धे च शिष्टे च गृहमागते । खरोष्ट्रयानहस्त्यश्वनौवृक्षेरिणरोहणे । सप्तत्रिंशदनध्याया न तांस्ता-

---

१—श्वानशब्दोऽकारान्तोऽपि । कुक्कुरस्तु शुनिः श्वान कपिलो मण्डलः शुनः । इति वाचस्पत्युक्तः । २—आर्षोऽयं प्रयोगः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्कालिकान् विदुः ॥" **उशनाः**—"अयने विषुवे चैव शयने बोधने तथा। अनध्यायं प्रकुर्वीत मन्वादिषु युगादिषु ॥ इति ॥

**दैवतापूजा, कात्यायनपरिशिष्टे**—" ब्राह्मवैष्णवरौद्रसावित्रमैत्रावरुणैस्तल्लिङ्गैर्मन्त्रैरर्चयेत्॥"—"ब्राह्मवैष्णवरौद्रैस्तु सावित्रैर्मित्रावरुणैः। तल्लिङ्गैरेव मन्त्रैस्तु अर्चयेत्सुसमाहितः॥" **इति याज्ञवल्क्यः**। " ब्राह्मणं वैधसैर्मन्त्रैर्विष्णुं स्वैः शङ्करं स्वकैः। अन्यानपि तथा देवानर्चयेत्स्वीय मन्त्रकैः। मन्त्रन्यासान्पुरा कृत्वा स्वदेहे देवतासु च। ब्रह्मीभूतः शुचिः शान्तो देवयागमुपक्रमेत् ॥ " इति **बृहत्पराशरः**।

**कालविशेषे पूज्या देवताः, स्कान्दे**—"ब्रह्मा कृतयुगे देवस्त्रेतायां भगवान् रविः। द्वापरे भगवान् विष्णुः कलौ देवो महेश्वरः॥" **कौर्मे**—"ब्रह्माण शङ्करं सूर्यं तथैवं मधुसूदनम्। अन्यांश्चाभिमतान्देवान् भक्त्या त्वक्रोधनो नरः। स्वमन्त्रैस्त्वर्चयेन्नित्यं पत्रैः पुष्पैस्तथाऽम्बुभिः ॥ " ( एतेन ब्रह्मादीनां सर्वेषामपि युगविशेषेण पूज्यत्वमुक्तम्।

**पूजाविधिः, नागदेवः**—"हस्तावारभ्य देवस्य मूर्धान्तं चैव षोडशैः। षोडशाङ्गानि सम्पूज्य ततो देवाग्रतो जपेत् ॥ हुत्वा षोडशभिर्मन्त्रैः षोडशाज्यस्य चाहुतीः। शेषं निवेदयेत्तस्मिन् दद्यादाचमनं ततः ॥ ॐकारपूर्वकैर्मन्त्रैः षड्भिर्दशभिरेव च " ॥

**पूजनप्रकाराः, याज्ञवल्क्यः**—" ध्यात्वा प्रणवपूर्वं तु देवताश्च पृथक् पृथक्। नमस्कारेण मन्त्रेण पुष्पाणि तु निवेदयेत् ॥ " अत्र पञ्चानामप्येकस्य मुख्यस्यावाहनादिनमस्कारान्तं पूजनं कृत्वा ततः क्रमादन्येषां पूजेत्येत्वं काण्डानुसमयः। तथाहि—"मुख्यपुष्पाञ्जलिं दत्त्वा गणेशाद्यर्चनं भवेत् ॥ गणेश एव मुख्यश्चेत्तत्र सूर्यक्रमाद्भवेत् ॥" इति ऋष्यन्तरीपवचनात् ॥ **नारसिंहे**—" मन्त्रा वैदिकानाममन्त्रा वा ग्राह्याः। " **ब्राह्मे**—"ॐकारादिसुसंयुक्तं नमस्कारान्तकीर्तितम्। स्वनाम सर्वसत्त्वानां मंत्र इत्यभिधीयते। अनेनैव विधानेन गन्धं पुष्पं निवेदयेत्। एकैकस्य प्रकुर्वीत यथोद्दिष्टक्रमेण तु॥"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**तत्रैव**—" मंत्राच्छतगुणं प्रोक्तं भक्त्या लक्षगुणोत्तरम् । भक्तिमंत्रसमेतं तु कोटिकोटिगुणोत्तरम् " **इति चोक्तम्** ।

**देवस्पर्शेऽधिकाराभावः, नारदीये**—"स्त्रीणामनुपनीतानां शूद्राणां च नराधिप । स्पर्शने नाधिकारोऽस्ति विष्णोर्वा शङ्करस्य च ॥ शूद्रोवाऽनुपनीतो वा स्त्री वापि पतितोऽपि वा । केशवं वा शिवं वापि स्पृष्ट्वा नरकमश्नुते॥" अत्र शिवशब्दो नर्म्मदेश्वरविषय एव, पाषाणादिमूर्तिपूजाऽधिकारस्तु सर्वेषामेवेति बोध्यम् ।

**देवार्चनकालः मात्स्ये**—" प्रातर्मध्यन्दिने सायं देवपूजां समारभेत्। अशक्तौ विस्तरेणैव प्रातः सम्पूज्य केशवम् । मध्याह्ने चैव सायं च पुष्पाञ्जलिमपि क्षिपेत् ॥ " **नृसिंहपुराणे**—" जलदेवं नमस्कृत्य ततो गच्छेद्गृहं बुधः । पौरुषेण च सूक्तेन ततो विष्णुं समर्चयेत् ॥" इति । " विधाय देवतापूजा प्रातर्होमादनन्तरम् । गुरूक्तेन तु मार्गेण मूलमन्त्रं जपेद्बुधः ॥ इति **मरीचिश्च** ।

**पञ्चोपचारपूजाविधानम्**—"आसनस्नानवस्त्राणि भूषणं च विवर्जयेत् । रात्रौ देवार्चने तैश्च पदार्थैः पञ्चभिस्तथा । स्नाने वस्त्रे तथा भक्ष्ये दद्यादाचमनीयकम् ॥" **इति स्पष्टं शारदातिलके** ।

**गृहिगृहे प्रतिमा, मात्स्ये**—" सौवर्णी राजती वापि ताम्री रत्नमयी तथा । शैली दारुमयी वापि लोहसंघमयी[१] तथा । अंगुष्ठपर्वादारभ्य वितस्तिं यावदेव तु । गृहेषु प्रतिमा कार्या नाधिका शस्यते बुधैः ॥ " इति—', एका मूर्तिर्न पूज्यैव गृहिणा स्वेष्टमिच्छता । अनेकमूर्तिसम्पन्नः सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ गृहे लिङ्गद्वयं नाच्यं गणेशत्रितयं तथा । शङ्खद्वयं तथा सूर्यौ नार्च्यौ शक्तित्रयं तथा ॥ द्वे चक्रे द्वारकायाश्च शालिग्रामशिलाद्वयम् । तेषां तु पूजनेनैव उद्वेगं प्राप्नुयाद्गृही ॥ रविर्विनायकश्चण्डी ईशोविष्णुस्तथैव च । अनु-

---

१—लोहानां--सर्वेषां तैजसानां धातूनां संघस्तेन कृतेति तथोक्ता, 'लोहोऽस्त्री शस्त्रके, लोहे भोगके सर्वतैजसे ॥ इति मेदिन्युक्तेः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



क्रमेण पूज्यन्ते व्युत्क्रमे तु महद्भयम् ॥ इति **स्मृत्यन्तरे**। " शालिग्राम-शिला विष्णुर्बाणस्तु शशिशेखरः। चण्डिका काञ्चनी प्रोक्ता स्वर्णमाक्षी तु शौनक ॥ नार्मदेयो विघ्नहरो लोहितः प्रस्तरः शुभः। अर्ककान्तस्तु तरणि-र्ग्राह्या ह्येवं समासतः ॥ पञ्चानामपि देवानां यथाभागं क्रमेण वा। स्थापनं कारयेद्भक्त्या मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥ चक्रांकमिथुनं पूज्यं शालिग्रामशिलाव्रतः॥" **स्कान्दे**-' भक्त्या वा यदि वाऽभक्त्या कलौ मुक्तिमवानुप्यात् ' ॥

**देवप्रतिमाप्रतिष्ठा, स्कान्दे**-' शालिग्रामशिलायास्तु प्रतिष्ठा नैव विद्यते ॥ ' **भविष्ये**--बाणलिङ्गानि राजेन्द्र ख्यातानि भुवनत्रये। न प्रतिष्ठा च संस्कारस्तेषां चावाहनं तथा ॥" **भरतमालायां मार्कण्डेयः**--"कम्बु-श्चक्रं शैलभवा नार्मदेयाऽब्जिनीपती। बाणो विष्णुशिला चैषां प्रतिष्ठां नैव कारयेत् ॥" **नाममालायां वृद्धपराशरः**--"शैलीं दारुमयीं हैमीं धात्वा-द्याकारसम्भवाम्। प्रतिष्ठां वै प्रकुर्वीत प्रासादे वा गृहे नृप ॥ " **कालिका-संग्रहे लौगाक्षिः**-" गृहे चलाऽर्चा विज्ञेया प्रासादे स्थिरसंज्ञिका। इत्येते कथिता मार्गा मुनिभिः कर्मवादिभिः ॥ " **कर्मयोगे भगवद्गीतायाम्**-- ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम्। सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः ॥ "

**देवपञ्चकायतनम्, वाचस्पतौ**-" आदित्यं गणनाथं च देवीं रुद्रं च केशवम्। पञ्चदैवत्यमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत् ॥" तत्रादौ**शालिग्रामः स्कान्दे**-"शिलाप्यामलकीतुल्या पूज्या सूक्ष्मैव या भवेत्। यथा यथा शिला सूक्ष्मा तथा स्यात्तु महत्फलम् ॥ " **शिवबाणः, पुराणसंग्रहे**"पक्वजम्बू-फलाकारं कुक्कुटाण्डसमाकृति। भुक्तिमुक्तिप्रदं चैव बाललिंगमुदाहृतम् ॥ ॥ **गणेशः**-"शुण्डादण्डेन दन्ताभ्यां शोभनाभ्यामलङ्कृता। एकेन वाथ दन्तेन रक्तबिन्दुभिरन्विता। पार्श्वभागैकवदना वक्राभ्यां शोभिता च या। गणेशमूर्तिः सा ज्ञेया विघ्नाद्यौघविनाशिनी॥" **सूर्यः**-'बाह्ये वाऽभ्यन्तरे वापि चक्रद्वादश-संयुता। सूर्यमूर्तिरिति ख्याता सर्वव्याधिविनाशिनी ॥ " **देवी**--" गर्ते वा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



गर्तमध्ये वा योन्याकारेण चिन्तिता । योनेरुपरि मध्ये वा कुण्डलीभूतसर्पवत् ॥ अर्धाधिका त्रिरेखाभिर्भूषिता या शिला शुभा । शक्तिकुण्डलिनी सा तु देवानामपि दुर्लभा ॥ शक्तिकुण्डलिनीं देवीं नित्यं यः पूजयेन्नरः । इन्द्रादिदुर्लभान् भोगान् भुक्त्वा निर्वाणमाप्नुयात् ॥ " इति ।

१ गणपति पं०

२ शिव पं०

३ विष्णु पं०

४ देवी पं०

५ सूर्य पं०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**गणेशादिदेवता—पञ्चक--स्थापनम्, तत्र तावद्गणेशादि पञ्चकायतनम्—**" हेरम्बं तु यदा मध्ये ऐशान्यामच्युतं यजेत्। आग्नेय्यां पञ्चवक्त्रं तु नैर्ऋत्यां द्युमणिं यजेत्। वायव्यामम्बिकां चैव यजेन्नित्यमतन्द्रितः॥ **शिवादिपंचकायतनम्**--"यदा तु शंकरं मध्ये ऐशान्यां श्रीपतिं यजेत्। आग्नेय्यां च तथा हंसं नैर्ऋत्यां पार्वतीसुतम्। वायव्यां च सदा पूज्या भवानी भक्तवत्सला॥" **विष्णवादिपञ्चकायतनम्**--"यदा तु मध्ये गोविन्दमैशान्यां शंकरं यजेत्। आग्नेय्यां गणनाथं च नैर्ऋत्यां तपनं तथा। वायव्यामम्बिकां चैव यजेन्नित्यं समाहितः॥ **देव्यादिपञ्चकायतनम्**--"भवानीं तु यदा मध्ये ऐशान्यां माधवं यजेत्। आग्नेय्यां पार्वतीनाथं नैर्ऋत्यां गणनायकम्॥ प्रद्योतनं तु वायव्यामाचार्यस्तु प्रपूजयेत्॥" **सूर्यादिपञ्चकायतनम्**--"सहस्रांशुर्यदा मध्ये ऐशान्यां पार्वतीपतिम्। आग्नेय्यामेकदन्तं च नैर्ऋत्यामच्युतं तथा वायव्यां पूजयेद्देवीं भोगमोक्षैकभूमिकाम्॥" **यथा**--"शम्भो मध्यभागे हरीनहरभूदेव्योहरौ शंकरेभास्येनागसुता रवौ हरगणेशाजाम्बिकाःस्थापिताः। देव्यां विष्णुहरैकदन्तरवयो लम्बोदरेऽजेश्वरेनार्याःशङ्करभागतोऽतिमुखदाव्यस्तास्तु ते हानिदा॥" **अन्यच्च**-"स्वस्थानवर्जिता देवाः शोकदुःखभयप्रदाः॥' इति॥

**सदाशिवपार्श्वकाः**--"बाणरावणचण्डीशनन्दीभृङ्गीरिटादयः। सदाशिवस्य नैवेद्यं सर्वे गृह्णन्तु शाम्भवाः॥" **अन्यच्च**--"बाणरावणचण्डाश्च नन्दी भृङ्गीरिटादयः। सदाशिवस्य नैवेद्यं सर्वे गृह्णन्तु शाम्भवाः॥"

**विष्णुपार्श्वकाः**--"विष्वक्सेनोद्धवाक्रूराः सनकाद्याःशुकादयः। नारायणस्य नैवेद्यं सर्वे गृह्णन्तु वैष्णवाः॥" **अन्यच्च**--"रामब्रह्मादयो देवाः सनकायाः शुकादयः। नारायणस्य नैवेद्यं सर्वे गृह्णन्तु वैष्णवाः॥"

**गणेशपार्श्वकाः**—गणेशो गालवो गार्ग्यो मङ्गलश्च सुधाकरः। गणाधीशस्य नैवेद्यं सर्वे गृह्णन्तु गाणपाः॥" **अन्यच्च**--" गणपो गालवश्चैव मुद्गलश्च सुधाकरः। गणाधीशस्य नैवेद्यं सर्वे गृह्णन्तु गाणपाः॥"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**सूर्यपार्श्वकाः**--" माठरः पिङ्गलो दण्डश्चण्डांशोः पारिपार्श्वकाः । सूर्यदेवस्य नैवेद्यं सर्वे गृह्णन्तु पार्षदाः ॥ "

**महादेवीपार्श्वकाः**--" शक्तिरुच्छिष्टचाण्डाली गणेशः सविता शशी । महादेव्यास्तु नैवेद्यं सर्वे गृह्णन्तु पार्षदाः ॥ "

**देवप्रतिमाप्रतिष्ठानिर्णयः**--चैत्रे वा फाल्गुने वाऽपि ज्येष्ठे वा माधवे तथा । माघे वा सर्वदेवानां प्रतिष्ठा शुभदा सिते ॥ "

**नारदस्तु** " विचैत्रेष्वेव मासेषु माघादिषु च पञ्चसु । " इत्यादि । तेन चैत्रनिषेधानिषेधयोर्विकल्पः । अत्र माघमासो विष्णुप्रतिमाऽतिरिक्तविषयः । " माघे कर्त्तुर्विनाशाय फाल्गुने शुभदा भवेत् । लोकानन्दकरी चैव वैशाखे वरसंयुता । आज्ञायुता सदा ज्येष्ठे आषाढे धर्मवृद्धिदा । श्रावणे धनहीना स्यात् प्रोष्ठपादे विनश्यति ॥ आश्विने नाशमाप्नोति वह्निना चैव कार्तिके । सौम्ये सौभाग्यमतुलं पौषे पुष्टिरनुत्तमा ॥ दोषान्विताऽधिमासे स्यात्कर्त्तुरात्मनए वच॥" इति **विष्णुधर्म्मोक्ते**॥सौम्ये मार्ग इत्यर्थः । " अषाढे द्वे तथा मूलमुत्तरात्रयमेव च । ज्येष्ठाश्रवणरोहिण्यःपूर्वा भाद्रपदा तथा ॥ हस्तोऽश्विनी रेवती च पुष्यो मृगशिरस्तथा । अनुराधा तथा स्वाती प्रतिष्ठासु प्रशस्यस्ते ॥ तथा महाश्विनो मास उत्तमः सर्वकामदः । देवी तत्र सदा शक्र पांसुनाऽपि प्रतिष्ठिता ॥ भवेत्सा फलदा पुंसां कर्कस्थे च वृषस्थिते । न तिथिर्न च नक्षत्रं नोपवासोऽत्र कारणम् ॥ मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः । महिषासुरहन्त्र्यश्च स्थाप्यावै[1] दक्षिणायने ॥" **देवीपुराणे**--"देव्या माघेऽश्विने चैव उत्तमा सर्वकामदा॥" **तथा**--" न तिथिर्न च नक्षत्रं नोपवासोऽत्र कारणम् । सर्वकालं प्रकर्त्तव्यं कृष्णपक्षे विशेषतः ॥ आर्द्रादिके स्वातिविरामकाले नक्षत्रवृन्दे दशके स्थितेऽर्के । विवाहचौलव्रतबन्धदीक्षासुरप्रतिष्ठादि न कार्यमेव ॥ जन्माभ्रर्क्षदशेशसङ्भ्रकुजैः सार्कैर्बलिष्ठैर्मदुक्षिप्रैरन्द्रध्रुवभैः स्थिरर्धिनृतनौ व्याराहि भूपस्थितिः । स्वस्वर्क्षैः समृदुध्रुवर्क्षचरभक्षिप्रैः सुरस्थापनं प्रोचुर्माघयुगे च राधयुगले

---

१-वैशब्दोऽत्र अप्यर्थकः । २-आर्षोऽयं सन्धिः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



व्याराहि पूर्वाह्णके ॥ हस्तत्रये मित्रहरित्रये च पौष्णद्वयादित्यसुरेज्यभेषु । तिस्रोत्तराधातृशशांकभेषु सर्वामरस्थापनमुत्तमं स्यात् ॥ रोहिण्युत्तरपौष्णवैष्णवकरादित्याश्विनीवासवानूराधेन्दवजीवभेषु गदितं विष्णोः प्रतिष्ठापनम् । पुष्यश्रुत्यभिजित्सुरेश्वरकयोर्वित्ताधिपस्कन्दयोर्मैत्रे तिग्मरुचेः करे निऋतिभे दुर्गादिकानां शुभम् ॥ गणपरिवृढरक्षोयक्षभूतासुराणां प्रमथफणिसरस्वत्यादिकानां च पौष्णे । श्रवसि सुगमनाम्नो वासवे लोकपानां निगदितमखिलानां स्थापनं च क्रमेषु ॥ तेजस्विनी क्षेमकृदग्निदाहविधायिनी स्याद्धनदा दृढा च । आनन्दकृत् कल्पविनाशिनी च सूर्यादिवारेषु भवेत् प्रतिष्ठा ॥ ''

**अधिकारिणः** '' ब्रह्मा तु ब्राह्मणैः स्थाप्यो गायत्रीसहितः प्रभुः । चतुर्वर्णैस्तथा विष्णुःप्रतिष्ठाप्यः सुखार्थिभिः ॥ भैरवोऽपि चतुर्वर्णैरन्त्यजानां तथा मतः । मातरः सर्वलोकैस्तु स्थाप्याः पूज्याः सुरोत्तमाः । लिङ्गं गृही यतिर्वाऽपि संस्थाप्य तु यजेत्सदा ॥ ''

**नवग्रहादिप्रतिमाः**—'' ताम्रकात्स्फाटिकाद्रक्तचन्दनात्स्वर्णकादुभौ । रजतादयसः सीसात्कार्याः सर्वे ग्रहाः क्रमात् ॥ '' **तल्लक्षलानि**--''पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भसमद्युतिः । सप्ताश्वरथसंस्थश्च द्विभुजः स्यास्सदा रविः ॥ श्वेत श्वेताम्बरधरो दशाश्वः श्वेतभूषणः । द्विभुजश्च गदापाणिः कर्तव्यो वरदःशशी ॥ रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः । चतुर्भुजो मेषगमो वरदः स्याद् धरासुतः ॥ पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारदलद्युतिः । खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः ॥ देवदैत्यगुरू तद्वत्पीतश्वेतौ चतुर्भुजौ । दण्डिनौ वरदौ कार्यौ साक्षसूत्रकमण्डलू ॥ इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदो गृध्रवाहनः । बाणबाणासनधरः कर्तव्योऽर्कसुतः शनिः ॥ करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः । नीलः सिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते ॥ धूम्रा द्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः । गृध्रासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः ॥ सर्वे किरीटिनः कार्या ग्रहा लोकसुखावहाः । स्वङ्गुलेनोच्छ्रिताःसर्वे शतमष्टोत्तरं सदा ॥ ''**गृहे देवस्थानम्**-''स्नानागारं दिशि प्राच्यामाग्नेय्यामग्निमन्दिरम् । अवाच्यां शयनागारं नैर्ऋत्यां वस्त्र-

१--तिस्रोत्तरेत्यार्षः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मन्दिरम् ॥ प्रतीच्यं भोजनागारं वायव्यां पशुमंदिरम् । भाण्डकोशं तूत्तरस्या-मैशान्यां देवमंदिरम् । देवानां हि मुखं कार्यं पश्चिमायां सदा बुधैः ॥

**प्रतिमा, भविष्ये**—" सौवर्णी राजती ताम्री मृन्मयी च तथा भवेत् । पाषाणी धातुयुक्ता वा रीतिकांस्यमयी तथा ॥ शुद्धदारुमयी वाऽपि देवताऽर्च्य प्रशस्यते । अङ्गुष्ठपर्वादारभ्य वितस्तिं यावदेव तु । गृहेषु प्रतिमा कार्या नाधिका शस्यते बुधैः ॥" **पाञ्चरात्रे**--"मृद्दारुलाक्षागोमेदमधूच्छिष्टमयी न तु ।" इति निषेध उक्तः । **भागवते**--शैली दारुमयी लौही लेप्या लेख्या च सैकती । मनोमयी मणिमयी प्रतिमाऽष्टविधा स्मृता ॥" दारुमयी -मधुक-काष्ठमयी । **वाराहे**—"तत्र काष्ठेषु मधुकमानीय तु वसुन्धरे । कृत्वा तत्प्रतिमां चैव प्रतिष्ठाविधिनाऽर्चयेत् " ॥ इति । **देवी पुराणे**--"सप्तांगुलं समारभ्य यावच्च द्वादशांगुलम् । गृहेष्वर्चा समाख्याता प्रासादे वाऽधिका शुभा ॥ " इति ॥

**राजोपचाराः**--"ततः पञ्चामृताभ्यङ्गमङ्गस्योद्वर्तनं तथा । मधुपर्कं परि-मलद्रव्याणि विविधानि च ॥ पादुकान्दोलनादर्शन्यजनं छत्रचामरे । वाद्या-र्तिक्यं नृत्यगीतशय्या राजोपचारकाः ॥ "

**पञ्चोपचाराः**--" ध्यानमावाहनं चैव भक्त्या यच्च निवेदनम् । नीराजनं प्रणामश्च पञ्च पूजोपचारकाः ॥ " **अन्यच्चः**--"गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यः पञ्च ते क्रमात् ॥ "

**दशोपचाराः**--" अर्घ्यं पाद्यं चाचमनं स्नानं वस्त्रनिवेदनम् । गन्धोदयो नैवेद्यान्ता उपचाराः दश क्रमात् ॥ "

**षोडशोपचाराः**--"आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचनीयकम् । मधुपर्कार्पणं स्नानं वसनाभरणानि च ॥ सुगन्धः सुमनोधूपो दीपो नैवेद्य एव य । माल्यानु लेपने चैव नमस्कारो विसर्जनम् ॥" **नागदेवः**--आवाहनासने पाद्यमर्घ्यमाच-मनीयकम् । स्नानं वस्त्रोपवीते च गन्धमाल्यादिभिः क्रकात् ॥ धूपं दीपं च नैवेद्यं नमस्कारं प्रदक्षिणाम् । उद्वासनं षोडशकमेवं देवार्चने विधिः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**षोडशोपचारपूजामन्त्राः**--"आद्ययाऽऽवाहयेद्देवमृचा तु पुरुषोत्तमम्। द्वितीययाऽसनं दद्यात्पादं चैक तृतीयया ॥ अर्घ्यश्चतुर्थ्या दातव्यः पञ्चम्याऽऽचमनं तथा। षष्ठ्या स्नानं प्रकुर्वीत सप्तम्या वस्त्रधौतकम् ॥ यज्ञोपवीतं चाष्टम्या नवम्या गन्धमेव च। पुष्पं देयं दशम्या तु एकादश्या च धूपकम् ॥ द्वादश्या दीपकं दद्यात्रयोदश्या निवेदनम्। चतुर्दश्यां नमस्कारं पंचदश्या प्रदक्षिणाः ॥ षोडश्योद्वाशसनं कुर्याच्छेषकर्मणि पूर्ववत्। तच्च सर्वं जपेद्भूयः। पौरुषं सूक्तमेव च ॥

**वाजसनेयिनां षोडशोपचाराः**--**सहस्रशीर्षेत्यावाहनम् पुरुष-ऽएवेत्यासनम्। एतावानस्येति पाद्यम्। त्रिपादूर्ध्व इत्यर्घ्यम्। ततोव्विराडजायतेत्याचमनीयम्।तस्माद्यज्ञादितिस्नानम्। तस्माद्य ज्ञात्सर्वहुत इति वस्त्रम्। तस्मादश्वा इति यज्ञोपवीतम्। तंय्यज्ञमिति गन्धम्। यत्पुरुषमिति पुष्पम्। ब्राह्मणोऽस्येति धूपम्। चन्द्रमा मनस इति दीपम्। नाभ्या आसीदिति नैवेद्यम्। यत्पुरुषेणेति दक्षिणा-युतताम्बूलम्। सप्तास्यासन्निति आरार्तिकपूर्वकप्रदक्षिणाः। यज्ञेन यज्ञमिति मन्त्रपुष्पयुक्तो नमस्कारः ॥**

**स्नानादिपात्राणि**--" अक्षतागन्धपुष्पाणि स्नानपात्रे तथा त्रयम्। द्रव्याऽभावे प्रदातव्याः क्षालितास्तण्डुलाः शुभाः ॥ तण्डुलान्प्रक्षिपेत्तेषु द्रव्या-भावे तु तत्स्मरन्। तथाऽऽचमनपात्रेऽपि दद्याज्जातीफलं मुने। लवङ्गमपि कङ्कोलं शस्तमाचमनीयके ॥ गन्धतैलमथो दद्याद्देवाय प्रतिमन्त्रतः। दूर्वा च विष्णुक्रान्तं च श्यामाकं पद्ममेव च ॥ पाद्याङ्गानि च चत्वारि कथितानि समासतः! कर्पूरमगरुं पुष्पं द्रव्याण्याचमनीयकम् ॥ सिद्धार्थमक्षतांश्चैव दूर्वां च तिलमेव च। यवगन्धफलं पुष्पमष्टांगं त्वर्घ्यमुच्यते ॥"

---

१—यजुर्वेदिनः—चतुर्दश्या तु ताम्बूलम्। २—यजुर्वेदिनःषोडश्या मन्त्रपुष्पयुक्तो नमस्कारश्च सह ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**न्यासाः**--यजुषामनियताक्षरत्वादेकेषां छन्दो न विद्यते । द्रष्टार ऋषयः स्मर्तारः परमेष्ट्यादयो देवताः । मन्त्रान्तरभूता अग्न्यादिका हविर्माजः स्तुतिभाजो वा इति ॥

**पञ्चांगन्यासाः**–" हृदयं च शिरः शिखाः कवचं चास्यमेव च । यथा देहे तथा देवे न्यासं कुर्याद्यथाविधि ॥ "

**षडङ्गन्यासाः**–आचम्य प्राणानायम्य[1] ॥ **सङ्कल्पः**–अद्य पूर्वोच्चारित-एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफल-प्राप्त्यर्थममुककर्माङ्गत्वेन षडङ्गन्यासान् करिष्ये ॥ मनोजूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पतिर्ऋषिः । बृहस्पतिर्दैवता । बृहती छन्दः । हृदयन्यासे जपे विनियोगः-**ॐ मनो॑ जूतिर्ज्जु॑षता॒माज्ज्या॑स्य॒ बृह॒स्प्पति॑र्य्य॒ज्ञामि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्टं य्य॒ज्ञꣳ समि॒मन्द॑धातु । विश्वे॑ दे॒वास॑ऽइ॒हमा॑दयन्ता॒मो३ँम्प्रति॑ष्ठ ( वा० से० २ । १३ )** ॥ ॐ हृदयाय नमः ॥ अबोध्यग्निरिति मन्त्रस्य । बुधगविष्ठिरा ऋषिः । अग्निर्देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । शिरोन्यासे जपे विनियोगः--**ॐ अबो॑ध्य॒ग्निꣳ स॒मिधा॒ जना॑ना॒म्प्रति॑ धे॒नुभि॑वाय॒तीमु॒षास॑म् । य॒ह्वाऽइ॑व॒ प्रव॒यामु॒ज्जिहा॑ना॒ꣳप्र भा॒नवः॑ सिस्रते॒ नाक॒मच्छ॑ ( वा० सं० १५ । २४ )** ॥ ॐ शिरसे स्वाहा ॥ मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः । अग्निर्देवता । त्रिष्टुपू छन्दः । शिखान्यासे जपे विनियोगः--**ॐ मु॒र्द्धान॑न्दि॒वोऽअ॑र॒तिम्पृ॑थि॒व्या वै॑श्वान॒रमु॒तऽआजा॒तम॒ग्निम् । कविꣳ स॒म्म्राज॒मति॑थि॒ञ्जना॑नामा॒सन्नापात्रं॑ञ्जनयन्त दे॒वाः ॥ ( वा० सं० १५ । २४ ॥** ॐ शिखायै वषट् ॥ मर्माणि त इति मन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः । मर्माणि देवता । विराट् छन्दः । कवचन्यासे जपे विनियोगः–**ॐ मर्म्मा॑णि ते॒ व्वर्म्म॑णा छादयामि॒**

---

१-आचमनप्राणायामयोर्विधिश्च प्रागुक्त एव ५५ पृष्ठे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सोमस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम् । उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवामदन्तु ॥ (वा० सं० १७ । ४९) ॐ कवचाय हुम्॥ विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिः । विश्वकर्मा देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । नेत्रन्यासे जपे विनियोगः--ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् । सम्बाहुभ्या न्धमति सम्पतत्रै र्द्यावाभूमी जनयन्देवऽएकः॥ (वा०सं०१७ । १९ ) ॥ ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ मानस्तोक इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः । एकरुद्रो देवता । जगती छन्दः । अस्त्रन्यासे । जपेविनियोगः--ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषु रीरिषः मा नो वीरान्रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥ ( १६ । १६ ) ॐ अस्त्राय फट् ॥ अर्पणम्--अनेन यथा शक्त्याऽमुककर्माङ्गत्वे कृतेन षडङ्गन्यासाख्येन कर्मणा अमुकदेवता प्रीयताम् न मम । ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥

**षोडशाङ्गन्यासाः**--अर्चनं सम्प्रवक्ष्यामि विष्णोरमिततेजसः । यत्कृत्वा मुनयः सर्वे परं निर्वाणमाप्नुयुः ॥ आनुष्टुभस्य सूक्तस्य त्रिष्टुबन्तस्य देवता । पुरुषो यो जगद्बीजमृषिर्नारायणः स्मृतः ॥ प्रथमां विन्यसेद्धामे द्वितीयां दक्षिणे करे । तृतीयां वामपादे च चतुर्थीं दक्षिणे न्यसेत् ॥ पञ्चमीं वामजानौ तु षष्ठीं वै दक्षिणे न्यसेत् । सप्तमीं वामकट्यां तु दक्षिणस्यां तथाऽष्टमीम् ॥ नवमीं नाभिमध्ये तु दशमीं हृदये तथा । एकादशीं वामकुक्षौ द्वादशीं दक्षिणे न्यसेत् ॥ कण्ठे त्रयोदशीं न्यस्य तथा वक्त्रे चतुर्दशीम् । अक्ष्णोः पञ्चदशीं चैव विन्यसेन्मूर्ध्नि षोडशीम् ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा पश्चात्पूजां समारभेत् ॥ "

**षोडशाङ्गन्यासविधिः**--आचम्य[२] प्राणानायम्य संकल्पः--अद्य पूर्वो-

---

२--आचमन प्राणायामयोर्विधिस्तु ५५ पृष्ठे दर्शित एव ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



चारित--एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थममुकर्माङ्गत्वेन षोडशान्यासान् करिष्ये -ॐसहस्रशीर्षेति षोडशर्चस्य पुरुषसूक्तस्य नारायणः पुरुष ऋषिः । जगद्बीजं पुरुषो देवता । आद्यानां पञ्चदशानामनुष्टुप्, अन्त्ययास्त्रिष्टुप् । न्यासपूजनाभिषेकेषु विनियोगः--ॐ सहस्रशीर्षा०१ ॥ इति वामकरे ॥ॐ पुरुष ए० २ ॥ इति दक्षिणकरे " ॐ एतावान०३ ॥ इति वामपादे ॥ ॐ त्रिपादूर्ध्व०४॥ इति दक्षिणपादे ॥ ॥ ॐ ततो विराडं०५॥इति वामजानौ ॥ॐतस्माद्यज्ञात्स०६ ॥ इति दक्षिणजानौ ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऋचः सा० ६ ॥ इति वामकट्याम् ॥ ॐ तस्मादश्वा० ८ ॥ इति दक्षिणकट्याम् ॥ ॐ तं यज्ञम्ब० ९ ॥ इति नाभौ ॥ ॐ यत्पुरुषंव्य० १० ॥ इति हृदये ॥ ॐ ब्राह्मणो० ११ ॥ इति वामकुक्षौ ॥ ॐ चन्द्रमामनसो० १२ ॥ इति दक्षिणकुक्षौ ॥ ॐ नाभ्याऽआ० १३॥ इति कण्ठे ॥ ॥ ॐ यत्पुरुषेण० १४ ॥ इति वक्त्रे । ॐ सप्तास्यासं० १५ । इति अक्ष्णोः । ॐयज्ञेन यज्ञ०॥ ( वा० सं० ३१ । १६ ) इति मूर्ध्नि ॥ इति षोडशांगेषु न्यासान् कृत्वा पूजां समारभेत् । अर्पणम्—अनेन षोडशाङ्गन्यासाख्येन कर्मणा कृतेन अमुकदेवः प्रीयतां न मम ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु । इति षोडशांगन्यासविधिः ॥

पुरुषसूक्तपठनात्फलम्—"दद्यात्पुरुषसूक्तेन यः पुष्पाण्यप एव वा । अर्चितं स्याज्जगदिदं तेन सर्वं चराचरम् । प्रतिवेदं महाभाग यत्सूक्तं पौरुषं स्मृतम् । सर्वकर्मकरं पुण्यं पवित्रं पापसूदनम् ॥ एकैकया ऋचा राम स्नातो

---

१--सहस्रेत्याद्याश्चर्चः पूर्वं द्रष्टव्याः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



दत्त्वा जलाञ्जलिम्। पौरुषेण च सूक्तेन मुच्यते सर्वकिल्बिषात्॥ अन्तर्जलगतो जप्त्वा तथा सूक्तं तु पौरुषम्। सर्वकिल्बिषनिर्मुक्तो यथेष्टां लभते गतिम्॥ अकामः पौरुषं सूक्तं जप्त्वा नित्यमतन्द्रितः। नरो याति महाभाग तद्विष्णोः परमं पदम्॥"

**भूतादिशुद्धिः**--"देवो भूत्वा यजेद्देवं नादेवो देवमर्चयेत्। देवार्चा योग्यताप्राप्त्यै भूतशुद्धिं समाचरेत्॥ भूतशुद्धिं विधायैव प्राणास्थापनमाचरेत्। एवं प्राणान् प्रतिष्ठाप्य मातृकान्यासमाचरेत्॥ भूशुद्धिः षोडशन्यासा नैव कार्याः सदा बुधैः। नूतनार्यां तथा मूर्तावथवा पर्ववासरे॥

**भूशुद्धिः**--आचमनम्--**ॐ नमो भगवते रुद्रायेति दशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः। रुद्रो देवता। विराट् छंदः आचमने विनियोगः--ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।** हस्तप्रक्षालनम्--**ॐ नमो भगवते रुद्राय॥** प्राणायामः--**ॐ नमो भगवते रुद्राय। ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥**

**सङ्कल्पः**--अद्य पूर्वाचारितवंगुणविशेषेणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थम् अशेषपापक्षयकामो धर्मार्थिकाममोक्षाणामन्यतम कामोवाऽहम् अमुकदेवतापूजाङ्गत्वेन भूशुद्धिभूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठाऽन्तर्मातृकाबहिर्मातृकान्यासांश्च करिष्ये॥ **नमस्कारः**-(दक्षिणे)--ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ शंखनिधये नमः (वामभागे)-ॐ लक्ष्म्यै नमः॥ ॐ पद्मनिधये नमः॥ 'आसनम्'--पृथ्वि त्वयेति मन्त्रस्य मेरुपृष्ट ऋषिः। कूर्मो देवता। सुतलं छन्दः। आसने विनियोगः--ॐपृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता त्वं च धारय मां देवी पवित्रं कुरु चासनम्॥**प्रार्थना**-विश्वशक्त्यै नमः। ॐमहाशक्त्यै मायाशक्त्यै नमः ॐ कूर्मासनाय नमः ॐ योगासनाय नमः ॐ अनन्तासनाय नमः ॐ विमलासनाय नमः 'मध्ये'--ॐ परमसुखासनाय नमः। ॐभूर्भुवः स्वः आत्मासनाय नमः। इत्यनेन मन्त्रेण पुष्पादिनाऽऽत्मनः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



आसनदानम् ॥ **शिखाबन्धनम्**—ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणितभोजने। तिष्ठ देविशिखाबन्धे चामुण्डे चापराजिते। विष्णोर्नामसहस्रैस्तु शिखाबन्धं करोम्यहम् ॥ इति शिखाबन्धनम् ॥ दिग्बन्धः—अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः। ये भूता विघ्न कर्त्तारस्ते नश्यस्तु शिवाज्ञया ॥ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामवरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे ॥ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि॥ तालत्रयकरणम्--ॐ सर्वभूतनिवारकाय शार्ङ्गाय सशराय सुदर्शनायाऽस्त्रराजाय हुं फट् स्वाहा। अनेन मन्त्रेण तालत्रयं कृत्वा स्वस्य परितः सर्वदिक्षु अस्त्रमुद्रां प्रदर्शयेत्। ( ततः स्वदक्षिणभागे ) ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ परमगुरुभ्यो नमः। ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः। ॐ पूर्वसिद्धेभ्यो नमः। ॐ आचार्येभ्यो नमः। ( स्ववामभागे ) ॐ गणेशाय नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः। ॐ योगिनीभ्यो नमः। ॐ क्षेत्रेशाय नमः। भूमिताडनम्-अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामवरोधेन भूशुद्ध्यादि समारभे ॥ स्ववामपार्ष्णिना त्रिवारं भूमिं ताडयेत्। 'भूशुद्धिः' भूरसीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः मातृका देवता। प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः। भूशुद्धौ विनियोगः। भूमौ हस्तौ कृत्वा पश्चायूब्रूयात्तद्यथा **ॐ भूरसि॒ भूमि र॒स्यदि॑तिरसि व्वि॒श्श्वधा॑या॒व्विश्श्वस्य॒ भुव॑नस्य धर्त्री॒। पथि॒वीं य्य॑च्छ पृथि॒वीन्दृ॑ꣳह पृथि॒वीम्माहि॑ꣳसीः ॥ ( वा० सं० १३। १८। भैरवनमस्कारः**--यो भूतानामित्यस्य कौण्डिन्य ऋषिः नारायणो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। भैरवनमस्कारे विनियोग—**ॐ यो भू॒ताना॒मधि॑पति॒र्य्यस्मिँ॑म्ल्लो॒काऽअधि॑श्श्रि॒ताः। य ऽईशे॑ मह॒तो म॒हाँस्तेन॑ गृह्णामि॒ त्त्वाम॒हम्मयि॑ गृह्णामि॒ त्त्वाम॒हम् ॥ ( वा९ सं० २०। ३ )** ॥ इति भूशुद्धिः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**भूतशुद्धिः** ॥ मूलाधारात्समुत्थाप्य कुण्डलीं परदेवताम्। सुषुम्नामार्गे-माश्रित्य ब्रह्मरन्ध्रगतां स्मरेत् ॥ जीवं ब्रह्मणि संयोज्य हंसमन्त्रेण साधकः॥ ॐ हंसः सोऽहम् ॥ **मातृकोपसंहारः ग्रन्थान्तरे**। स च। क्षलयो हकारे। हलयः सकारे। सलयः षकारे। षलयः शकारे। शलयो वकारे। इत्यादि प्रकारेण अकारपर्यन्तं लयं भावयित्वा॥ अकारः सहस्राम्बुजे ब्रह्मरन्ध्रे परमात्मनि लयं गत इति भावयेत्॥ तच्च भावनम् ॐ क्षकारम् हकारे उपसंहरामि। ॐ हकारम् सकारे उप०। ॐ सकारम् षकारे उप०। ॐ षकारम् शकारे उप०। ॐ शकारम् वकारे उप०। ॐ वकारम् लकारे उप०। ॐ लकारम् रकारे उप०। ॐ रकारम् यकारे उप०। ॐ यकारम् मकारे उप०। ॐ मकारम् भकारे उप०। ॐ भकारम् बकारे उप०। ॐ बकारम् फकारे उप०। ॐ फकारम् पकारे उप०। ॐ पकारम् नकारे उप०। ॐ नकारम् धकारे उप०। ॐ धकारम् दकारे उप०। ॐ दकारम् थकारे उप०। ॐ थकारम् तकारे उप०। ॐ तकारम् णकारे उप०। ॐ णकारम् ढकारे उप०। ॐ ढकारम् डकारे उप०। ॐ डकारम् ठकारे उप०। ॐ ठकारम् टकारे उप०। ॐ टकारम् ञकारे उप०। ॐ ञकारम् झकारे उप०। ॐ झकारम् जकारे उप०। ॐ जकारम् छकारे उप०। ॐ छकारम् चकारे उप०। ॐ चकारम् ङकारे उप०। ॐ ङकारम् घकारे उप०। ॐ घकारम् गकारे उप०। ॐ गकारम् खकारे उप०। ॐ खकारम् ककारे उप०। ॐ ककारम् अःकारे उप०। ॐ अःकारम् अंकारे उप०। ॐ अंकारम् औकारे उप०। ॐ औकारम् ओकारे उप०। ॐ ओकारम् ऐकारे उप०। ॐ ऐकारम् एकारे उप०। ॐ एकारम् ऌकारे उप०। ॐ ऌकारम् ऋकारे उप०। ॐ ऋकारम् ऋकारे उप०। ॐ

---

१ हंसः इत्येव विपर्ययेणोच्चारितः सोहं इति संहितावशात् स्यात्। तथा च यो हंसः तद्वच्छुद्धः परमात्मा सोऽहं स एवायमहमिति तथोक्तम्। अन्तोन्नयने हंस इति, प्रवेशने पुनः प्राणानां सोहमिमि ध्यानमवधेयम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ऋकारम् ऊकारे उप० । ॐ ऊकारम् उकारे उप० । ॐ उकारम् ईकारे उप० । ॐईकारम् इकारे उप० । ॐ इकारम् आकारे उप० । ॐआकारम् अकारे उप० । ॐ अकारः, सहस्रदलाम्बुजाकारे ब्रह्मरन्ध्रे परमात्मनि 'लयम्' गत इति भावयेत् । **भूतोपसंहारः**—पादादिजानुपर्यन्तं चतुष्कोणं सवज्रकम् । लं बीजाढ्यं स्वर्णवर्णं स्मरेदवनिमण्डलम् ॥ जान्वोरानाभि चन्द्रार्धनिभं पद्मह्रयाकृति । वँ बीजयुक्तं श्वेताभं मं सोमं मण्डलं स्मरेत् ॥ नाभेर्हृदयपर्यन्तं त्रिकोणं स्वस्तिकासनम् । रँ बीजेन युक्तं रक्तं स्मरेत्पावकमण्डलम् ॥ हृदोभ्रूमध्य पर्यन्तं वृत्तं षड्बिन्दुलाञ्छितम् । यं बीजयुक्तं धूम्रामं वायव्यं मण्डलं(नभस्वन्त) स्मरेत् ॥ आब्रह्मरन्ध्रं भ्रूमध्याद्वृत्तं स्वच्छं मनोहरम् । हँ बीजयुक्तमाकाशमंडलं च विचिन्तयेत् ॥ एवं भूतानि संचिन्त्य प्रत्येकं प्रविलापयेत् । भुवं जलं जलं वह्नौ वह्निं वायो नभस्यमुम् ॥ विलाप्य खमहङ्कारे महत्तत्त्वेऽप्यहंकृतम् । महान्तं प्रकृतौ-मायामात्मनि प्रविलापयेत् ॥ शुद्धसच्चिन्मयो भूत्वा चिन्तयेत्पापपूरुषम् । वाम कुक्षिस्थितं कृष्णमंगुष्ठपरिमाणकम् ॥ विप्रहत्याशिरोयुक्तं कनकस्तैयबाहुकम् । मदिरापानहृदयं गुरुतल्पकटीयुतम् ॥ तत्संयोगिपदद्वन्द्वमुपपातकरोमकम् । खड्गचर्मधरं दुष्टमधोवक्त्रंच दुःसहम्॥ वायुबीजं स्मरन्वायुं सम्पूर्येनं विशोषयेत्॥ यथा—यँ, यँ, इति षोडश १६ वारं जपित्वा । वह्निबीजं स्मरन्नित्यं निर्दहेत्पापपुरुषम् । रँ, रँ, इति चतुःषष्टि ६४ वारं जपित्वा । वायुबीजेन तद्भस्मं बहिर्निष्कास्य यत्नतः । यँ, यँ, इति द्वात्रिंशद्वारं ३२ जपित्वा । सुधाबीजेनदेहोत्थं भस्म सञ्जावयेत्सुधीः । वँ, वँ, इति षोडशवारं १६ पठित्वा । भूबीजेनघनीकृत्य भस्म तत्कनकाण्डवत् । लँ, लँ, इति षोडशवारं पठित्वा । विशुद्धमुकुराकारं ब्रह्मरन्ध्रगतं स्मरेत् । आकाशादीनि भूतानि पुनरुत्पादयेत्ततः । अखण्डं ब्रह्म तस्मात्स्यात्प्रेरकः पुरुषस्तथा॥ प्रकृतेर्महदाकारस्ततोऽहं त्रिगुणात्मकः । तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः । आकाशाद्वायुः वायोरग्निः । अग्नेरापः अद्भ्यः पृथिवी । पृथिव्या ओषधय । ओषधीभ्योऽन्नम् । अन्नाद्रेतः रेतसः पुरुषः । स वाऽएष पुरुषोऽन्नरसमयः हँ सः सोऽहम् । कुण्डलीजीवमादाय परसन्ना-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मयीम् । संस्थाप्य हृदयाम्भोजे मूलाधारंगतं स्मरेत् । इति भूतशुद्धिः ॥

**प्राणप्रतिष्ठा**--अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि । क्रियामयवपुः प्राणशक्तिर्देवता । आँ बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्रौंकीलकम् । प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ।ॐब्रह्मविष्णुमहेश्वराऋषिभ्योनमः शिरसि । ऋग्यजुःसामच्छन्दोभ्यो नमः-मुखे । प्राणशक्त्यै नमः हृदये । आँ बीजाय नमः - लिङ्गे । ह्रीं शक्तये नमः--पादयोः ' क्रौं कीलकाय नमः-सर्वाङ्गेषु । एवं साधान्यतो न्यासं कृत्वा । ॐ अँ, कँ, खँ, गँ, घँ, ङँ, आँ पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां--नमः ॐ, इँ, चँ, छँ, जँ, झँ, ञँ, इं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने तर्जनीभ्यां--नमः । ॐ उँ, टँ, ठँ, डँ, ढँ, णँ, ऊँ त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणात्मने--मध्यमाभ्यां-नमः । ॐ, एँ, तँ, थँ, दँ, धँ, नँ, ऐँ--वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने अनामिकायां--नमः । ॐ, ओं, पँ, फँ, बँ भँ, मँ, औँ, --वचनादानगतिविसर्गानन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यां--नमः । ॐ अँ, यँ, रँ, लँ, वँ, शँ, षँ, सँ, हँ, क्षँ, अः--मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तविज्ञानात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां- नमः । **एवमेव**--ॐ अँ, कँ, खँ, गँ, घँ, ङँ, आँ पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं हृदयाय नमः । ॐ इँ, चँ, छँ, जँ, झँ, ञँ, इँ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने शिरसे स्वाहा । ॐ उँ, टँ, ठँ, डँ, ढँ, णँ, ऊँ, श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने शिखायै वषट् । ॐ एँ, तँ, थँ, दँ, धँ, नँ, ऐँ वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने कवचाय हुम् । ॐ ओँ पँ, फँ, बँ, भँ, मँ, औँ वचनादान विहरणोत्सर्गानन्दात्मने नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ अँ, रँ, यँ, लँ, वँ, शँ, षँ, सँ, हँ, क्षँ, अः मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तविज्ञात्माने अस्त्राय फट् । आँ इति नाभिमारभ्य पादान्तं स्पृशेत् । ह्रीं इति हृदयमारभ्य नाभ्यन्तम् । क्रौं इति मस्तकमारभ्यहृदयान्तं च स्पृशेत् । ' क्रौं ' इति अंकुशबीजं न्यसेत् ॥

**ध्यानम्**--" रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यंकुशं पञ्चबाणान् । बिभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसिता, पीनवक्षोरुहाढ्या देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः ॥ "

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शिरसि तथा हृदि करं दत्त्वा ॐ आँ, ह्रीं, क्रौँ, यँ, रँ, लँ, वँ, शँ, षँ, सँ, हँ, सः--सोऽहम् प्राणा इह प्राणाः । ॐ आँ, ह्रीँ, क्रौं, यँ, रँ, लँ, वँ, शँ, षँ, सँ, हँ, सः-जीव इह स्थितः । ॐ आँ, ही क्रौं, यँ, रँ, लँ वँ, शँ, षँ, सँ, हँ, सः-सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः-श्रोत्रजिह्वाघ्राणवाक्पाणि-पादपायूपस्थानीहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, इति प्रणवं १५ पञ्चदशवारं पठित्वा अनेन मम देहस्य पञ्चदशसंस्काराः सम्पद्यन्ताम् इत्युक्त्वा पश्चात् 'ॐ नमो भगवते रुद्राय—इति त्रीन्प्राणायामान्कृत्वा ॥ यथा पर्वतधातूनां दोषान्दहति पावकः । एवमन्तर्गतं पापं प्राणायामेन दह्यते ॥ इति प्राणप्रतिष्ठा ॥

**अन्तर्मातृकान्यासाः**--अस्य श्रीरन्तर्मातृकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । मातृका सरस्वती देवता । गायत्री छन्दः । हलो बीजानि । स्वराः शक्तयः 'क्षँ' कीलकं मातृकान्यासजपे विनियोगः-अं ब्रह्मऋषये नमः-आं शिरसि । इं गायत्री-छन्दसे नमः-ईं वदने । उं मातृकासरस्वतीदेवतायै नमः-ऊँ हृदये । एं हलूभ्यो बीजेभ्यो नमः-ऐं गुह्ये । ओं स्वरशक्तिभ्यो नमः-औं पादयोः । अं. क्षं--कील-, काय नमः-अः सर्वांगेषु । इति मातृकाऋष्यादिन्यासाः ॥ ॐ अँ, कँ, खँ, गँ, घँ, ङँ आँ-अङ्गुष्ठाभ्यां-नमः । ॐ इँ, चँ, छँ, जँ, झँ, ञँ, ईँ, तर्जनीभ्यां-नमः ॐ उँ, टँ, ठँ, डँ, ढँ, णँ, ऊँ, मध्यमाभ्यां नमः । ॐ एँ, तँ, थँ, दँ, धँ, नँ, ऐँ-अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ओँ, पँ, फँ, बँ, भँ, मँ, औँ—कनिष्ठिकाभ्यां -नमः । ॐ अँ, यँ, रँ, लँ, वँ, शँ, षँ, सँ, हँ, अः-करतलकर-पृष्ठाभ्यां--नमः । एवं हृदयादि ॥ **अथ ध्यानम्**—'पञ्चाशल्लिपिभिर्विभज्य मुखदोर्हृत्पद्मवक्षस्स्थलां भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रशकलामापीनतुङ्गस्तनीम् । मुद्रा-मक्ष गुणं सुधाढ्यकलशं विद्यां च हस्तांबुजैर्बिभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवता श्रये' ततो दक्षिणकनिष्ठिकायाः आद्यपर्वारभ्य वामाङ्गुष्ठाद्यपर्वपर्यन्तं षोडशसु पर्वसुॐअँ, आँ, इँ, ईँ, उँ, ऊँ, ऋँ, ॠँ, ऌँ, ॡँ, एँ, ऐँ, ओँ, अँ, अँःइति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



षोडश स्वरान्विन्यस्य,वामतर्जनीमारभ्य दक्षिणतर्जन्यन्तमङ्गुल्याग्रेषुकँ,खँ,गँ,घँ, ङँ, । चँ, छँ, जँ, झँ, ञँ । टँ, ठँ, डँ, ढँ, णँ, । तँ, थँ, दँ, धँ, नँ, । पँ,फँ,बँ,भँ, मँ, ' यँ, रँ, लँ, । वँ, शँ, षँ' सँ, । हँ, ळँ, क्षँ, इत्येवं पञ्चपञ्च क दिसान्तान् वर्णान् क्रमेण विन्यस्य, अङ्गुष्ठयोः ' हँ, लँ' इति विन्यस्य च सर्वाङ्गुल्यग्रेषु 'क्षँ' इति पुनर्विन्यसेत् । ॐ अँ, आँ, इँ, ईँ, उँ, ऊँ, ऋँ,ॠँ, ऌँ, ॡँ, एँ ऐँ,ओँ, औँ, अँ, अः--इति षोडशपत्रके--कण्ठे । ॐ कँ, खँ, गँ, घँ, ङँ, चँ, छँ, जँ, झँ, ञँ, टँ, ठँ,--इति द्वादशपत्रके हृदि । ॐ डँ, ढँ, णँ, तँ, थँ, दँ, धँ, नँ, पँ, फँ,--इति दशपत्रके--नाभौ । ॐ बँ, भँ, मँ, यँ, रँ, लँ,--इति षट्पत्रके--लिङ्गे । ॐ वँ, शँ, षँ, सँ,- इति चतुष्पत्रके--गुदे । ॐ हँ, क्षँ,--इति द्विपत्रके--भ्रुवोर्मध्ये ॥ **ध्यानम्**--" आधारे लिङ्गनाभौ प्रकटितहृदये तालुमूले ललाटे द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के । वासान्ते वालमध्ये उ--फ--क-- ठसहिते कण्ठदेशे स्वराणां हं, क्षं--तत्त्वार्थयुक्तं सकल-दलगतं वर्णरूपं नमामि ॥ "

**बहिर्मातृकाः**--" ॐ अँ नमः--केशान्ते । ॐ आँ नमः--मुखे । ॐ इँ नमः--दक्षिणनेत्रे । ॐ ईँ नमः--वामनेत्रे । ॐ उँ नमः--दक्षिणकर्णे । ॐ ऊँ नमः--वामकर्णे । ॐ ऋँ नमः--दक्षिणनासापुटे । ॐ ॠँ नमः--वामनासापुटे ॐ ऌँ नमः दक्षिणगण्डे । ॐ ॡँ नमः--वामगण्डे । ॐ एँ नमः--ऊर्ध्वोष्ठे । ॐ ऐँ नमः--अधरोष्ठे । ॐ ओँ नमः--ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ । ॐ औँ नमः--अधो-दन्तपङ्क्तौ । ॐ अँ नमः--मूर्ध्नि । ॐ अः नमः--आस्ये । ॐ कँ नमः दक्षिण-बाहुमूले । ॐ खँ नमः--दक्षिणकूर्परे । ॐ गँ नमः--दक्षिणमणिबन्धे । ॐ घँ नमः--दक्षिणकराङ्गुलिमूले । ॐ ङँ नमः- दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे । ॐ चँनमः- वामबाहुमूले । ॐ छँ नमः--वामकूर्परे । ॐ जँ नमः--वाममणिबंधे । ॐ झँ नमः- वामाङ्गुलिमूले । ॐ ञँ नमः--वामकराङ्गुल्यग्रे । ॐ टँ नमः--दक्षिण-पादमूले । ॐ ठँ नमः-दक्षिणजानुनि । ॐडँ नमः दक्षिणगुल्फे ।ॐढँ नमः - दक्षिणपादाङ्गुलिमूले । ॐणँ नमः--दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे ।ॐतँ नमः वामपाद-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मूले । ॐ थँ नमः वामजानुनि । ॐ दँ नमः-वामगुल्फे । ॐ धँ नमः—वाम पादाङ्गुलिमूले । ॐ नँ नमः—वामपादाङ्गुल्यग्रे । ॐ पँ नमः-दक्षिणकुक्षौ । ॐ फँ नमः—वामकुक्षौ । ॐ बँ नमः-पृष्टे । ॐ भँ नमः—नाभौ । ॐ मँ नमः-उदरे । ॐ यँ त्वगात्मने नमः—हृदि । ॐ रँ असृगात्मने नमः—दक्षिणांसे । ॐ लँ मांसात्मने नमः—ककुदि । ॐ वँ मेदात्मने नमः-वामांसे । ॐ शँ अस्थ्यात्मने नमः—हृदयादि वामहस्ताग्रान्तम् । ॐ षँ मज्जात्मने नमः—दक्षिण-पादाग्रान्तम् । ॐ सँ शुक्रात्मने नमः—हृदयादि पादान्तम् । ॐ हँ आत्मशक्त्या त्मने नमः हृदयादि जटरे । ॐ ळँ जीवात्मने नमः—नाभ्यादि हृदयान्तम् । ॐ क्षँ परमात्मने नमः—हृदयादि मस्तकान्तम् ॐ छन्दःपुरुषाय नमःशिरसि॥

**अर्पणम्**--अनेन यथाशक्त्या कृतेन भूशुद्धिमूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठान्तर्मातृकाबहि-र्मातृकान्यासाख्यकर्मणा अमुणकर्पाङ्गदेवः परमेश्वरः प्रीयतां न मम ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणस्तु ॥ इति भूशुद्ध्यादिप्रयोगः ।

**प्राणप्रतिष्ठा**--सुवर्णरौप्यताम्रादिधातुमूर्तीनां पाषाणादिमूर्तीनां पार्थिव-मूर्तीनां वा प्राणप्रतिष्ठां कारयेत् ॥ तत्रादौ यजमानेन यथोचितकाले स्नान-सन्ध्यादिविधिं सम्पाद्य अनन्तरं स्थाने उपविश्य नूतनमूर्तीनां प्रतिष्ठापनं कार्यम् । तद्यथाआचमैनप्राणायामादि कृत्वा सङ्कल्पः कार्यः यथा-**सङ्कल्पः**--अद्य पूर्वोच्चारितएवं गुणविशेषविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममाऽत्मनः श्रुति-स्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम सकलकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्यायुरारोग्यैश्वर्याभि वृद्ध्यर्थं ममऽऽत्मनः अक्षय्यसुखप्राप्त्यर्थं पितृतो मातृतश्च दशपूर्वान्दशापरान् एकविंशतिपुरुषानुद्धर्तुं धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं परमपदप्राप्तये आसाममुकनूतनमूर्तीनां टङ्कघनादिदोषपरिहार्थं मुत्तिकासंघट्टनादिदोषपरिहारार्थं वा अग्न्युत्तारणपूर्वकम् आसाम् अमुकनूतनमूर्तीनां जातकर्मादिपञ्चदश-संस्कारपूर्वकदेवकलासान्निध्यार्थं प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ इति सङ्कल्प्य नूतन-मूर्तीः ताम्रपात्रे यथोचितस्थाने वा निधाय पुष्पेण घृतेनाभ्यज्य उपरि

१ आचमनादिविधिस्तु पूर्वमेव ५५ पृष्ठे उक्तः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



जलधाराम् अधोलिखितमन्त्रैः कुर्यात्॥ पार्थिवमूर्तीस्तु पुष्पेण किञ्चिज्जलेनाभिषिञ्चेत्। तत्र मन्त्रा यथा—ॐ समुद्रस्य त्वावं कुयाग्ने परिं ह्ययामसि। पावकोऽअस्मभ्यंꣳ शिवोभव॥ ४॥ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिह्ययामसि। पावकोऽअस्मभ्यंꣳ शिवो भव॥ ५॥ उपज्मन्नुपवेतुसेवंतरं नदीष्वा। अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि सेमन्नो यज्ञम्पावकवर्णꣳ शिवङ्कृधि॥ ६॥ अपामिदन्ययनꣳ समुद्रस्य निवेशनम्। अन्ययाँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयं÷ पावकोऽअस्मभ्यंꣳशिवोभव॥ ७॥ अग्ने पावक रोचिषामन्द्रया देवजिह्वया। आदेवान्वक्षि याक्ष च॥ ८॥ सन÷ पावक दीदिवोग्ने देवाँ इहावह। उपयज्ञꣳ हविश्च नꣳ॥ ९॥ पावकया यश्चितयन्त्याकृपाक्षामवरुचऽउषसोन भानुना। तूर्वन्नयामन्नेतशस्य नूरणऽआयो घृणे न ततृषाणोऽअजरं÷॥ १०॥ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे। अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयं÷ पावकोऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव॥ ११॥ नृषदेवेडसुष्पदेवेड्बर्हिषदे वेदवनसदेवेट्स्वर्विदे ट्॥ १२॥ ये देवा देवानां यज्ञियायज्ञियानाꣳसवस्रीणमसुपभगमासते। अहुतादोहविषो यज्ञेऽअस्मिन्स्वयम्पवन्तु मधुनो घृतस्य॥१३॥ ये देवा देवेष्वधिदेवत्वमायन्येब्रह्मणऽपुरऽएतारोऽअस्य। येभ्यो नऽऋते पवते धाम किञ्चन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



न ते दि॒वो न पृथि॒व्याऽअधिस्स्नुषु॑ ॥ १४ ॥ प्प्रा॒ण॒दाऽ अ॑दान॒दा व्व्या॑न॒दा व॑र्च्चो॒दा व॑रिवो॒दाः । अन्न्याँस्ते॑ऽअ॒स्म्म-त्त॑पन्तु हे॒तय॑ ÷ पाव॒कोऽअ॒स्म्मब्भ्य॑ꣳ शि॒वो भ॑व । १७ । १५॥

प्राणप्रतिष्ठा—अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुस्सामाथर्वाणि च्छन्दांसि । क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता । आँ—बीजम् । ह्रीं—शक्तिः । क्रौं—कीलकम् । अस्यां नूतनमूर्तौ प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः—ॐ आँ, ह्रीँ क्रोँ, यँ, रँ, लँ, वँ, शँ, षँ सँ, हँ, सः—सोऽहम्-आसां नूतनमूर्तीनां प्राणाः इह प्राणाः ॥ पुनः—ॐ आँ, ह्रीँ, क्रोँ, यँ, रँ, लँ, वँ, शँ, षँ, सँ, हँ, सःसोहम् आसां नूतनमूर्तीनां जीव इह स्थितः ॥ पुनः--ॐ आँ, ह्रीँ, क्रोँ, यँ, रँ, लँ, वँ, शँ, षँ, सँ, हँ, सःसोऽहम् । आसां नूतनमूर्तीनां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ ॐ मनो॑ जू॒तिर्जु॑षता॒-माज्ज्य॑स्य॒बृह॒स्प्पति॑र्य्य॒ज्ञमि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्टंय्य॒ज्ञꣳ समि॒मन्द॑-धातु । व्विश्वे॑दे॒वासऽइ॒ह मा॑दयन्ता॒मो३ँ म्प्प्रति॑ष्ठ ( वा० सं० २ । १३ ) ए॒ष वै॒ प्रति॒ष्ठा नाम य॒ज्ञो यत्रै॒तेन य॒ज्ञेन य॒जन्ते स॒र्वमेव॒ प्रति॒ष्ठितं भ॒वति ॥ सुप्रतिष्ठितो भव ॥ देवसव्यकर्णे गायत्री जपेत् । अथ नेत्रोन्मीलनम् -ॐ वृ॒त्रस्या॑सिक॒नीन॑कश्चक्षुर्द्दाऽअ॑सि॒ चक्षुम्मे॑ देहि ॥ ( वा० सं० ४ । ३ ) नूतनमूर्तौ गन्धादिपञ्चोमचारान् दत्वा पश्चात् संस्कारसिद्धये पञ्चदशप्रणवावृत्तीः कारयेत् ॥ यथा—ॐ, ॐ, ॐ ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, । अनेन आसां मूर्तीनां जातकर्मगर्भाधानादि पञ्चदश संस्कारान् सम्पादये । इति वदेत् ॥

---

१ यत्रैकैव मूर्तिस्तत्र, अस्या अमुकनूतनेमूर्त्तेः इति यत्रैव द्वे मूर्ती तत्र 'अनयोरमुकनूतनमूर्त्योः इति च प्रयोगः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**प्रार्थना**:" स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः। प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ १ ॥ धर्मार्थकामसिद्ध्यर्थं स्थिरो भव शुभायनः। सान्निध्यं तु सदा देव स्वार्चायां परिकल्पय॥२॥ भगवन्देवदेवेश त्वं पिता सर्वदेहिनाम्। येन रूपेण भगवंस्त्वया व्याप्तं चराचरम् ॥ ३ ॥ ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽपि याव द्विधिरनुष्ठितः। स सर्वस्त्वत्प्रसादेन समग्रो भवतां मम ॥ ४ ॥" **अर्पणम्**– अनेन अमुकनूतनमूर्तौ प्राणप्रतिष्ठादिकर्मकृतेन तेन अमुकदेवता प्रीयतां न मम ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ एवं प्राणप्रतिष्ठां नूतेनमूर्तिषु कुर्यात्। पश्चात् तासां षोडशोपचारादिपूजां कुर्यात् ॥ इति प्राणप्रतिष्ठा ॥

**कलशादिपूजाः**–कलशं शंखघण्टे च पाद्यार्घ्यचमनीयकम्। सम्पूज्य प्रोक्ष्य चाऽत्मानं पूजासम्भारमेव च। ध्यायेदभिमतां देवमूर्तिं सम्पूजयेत्ततः। सुवासितजलैःपूर्णं सव्वे 'कुम्भं' सुपूजयेत्। कलशस्येति मन्त्रेण तीर्थान्यावाहयेत्ततः ॥ शंखमद्भिः पूरयित्वा प्रणवेन च दक्षिणे। सम्पूज्य त्वं पुरेत्यादि मन्त्रेण प्रार्थयेत्ततः ॥ महाभिषेकं सर्वत्र शंखनैव प्रकल्पयेत्। सर्वत्रैव प्रशस्तोऽब्जः शिजसूर्यार्चनं विना ॥ मम नामाङ्कितां भण्टां सुदर्शनयुतां यदि। ममाऽग्रे-स्थापयेद्यस्तु तस्य देहे वसाम्यहम् ॥ घण्टां सम्पूज्य मध्ये त्वागमार्थमिति वादयेत्। जलैः पाद्यादि पात्राणि गायत्र्याऽदौप्रपूजयेत् ॥ **यामले**-निवे-शयेत्पुरोभागे गंधं पुष्पं च भूषणम्। दीपं दक्षिणतौ दद्यात्पुरो नैव तु वामतः ॥ वामतस्तु तथा धूपमग्रे वा न तु दक्षिणे। स्नाने धूपे तथा दीपे नैवेद्ये भूषणे तथा॥ घण्टानादं प्रकुर्वीत तथा नीराजनेऽपि च। धूपे नीराजने स्नाने पूजाकाले विलेपने ॥ ममाऽग्रे वादयन् घण्टामुत्तमं लभते फलम्। उत्तोल्य दृष्टिपर्यन्तं घण्टां वामदिशि स्थिताम्। वाद यन्वामहस्तेन दक्षहस्तेन चार्चयेत् ॥ इति।

**ध्यानम्**–" ध्यानं तु द्विविधं प्रोक्तं सरूपारूपभेदतः। अरूपं तत्र यद्ध्यानमवाङ्मनसगोचरम्। अव्यक्तं सर्वतो व्याप्तमिदमित्यंविवर्जितम् ॥" ।

---

१ अत्रापि बहुवचममाविवक्षितम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


**याज्ञवल्क्यः**—"समाहितेन मनसा चैतन्यान्तरवर्तिना आत्मनोऽभीष्टदेवानां ध्यानं ध्यानमिहोच्यते ॥" इति ।

**आवाहनम्**—कुर्यादावाहनं मूर्तौ मृन्मय्यां सर्वदैव हि । प्रतिमायां जले वह्नौ नावाहनविसर्जने ॥"

**मुद्रा, ज्ञानमालायाम्**—"देवता न च सन्तुष्टा सर्वदा संमुखी भवेत्। अंगुष्ठो निक्षिपेत्सेयं मुद्रा त्वावाहनी मता ॥ संग्रथ्य निक्षिपेत्सेयं मुद्रा त्वावाहनी स्मृता । अधोमुखी त्वियं चेत्स्यात्स्थापनी मुद्रिका मता ॥ प्रसृतांगुलिकौ हस्तौ मिथः श्लिष्टौ तु समुखौ । कुर्यात्स्वहृदयं सेयं मुद्रा प्रार्थनसंज्ञिका । इत्येवं सर्वदेवानां पूजने षट् प्रदर्शयेत् ॥" इति ।

**आसनम्**-" आसनं प्रथमं दद्यात्पौष्पं दारुजमेव वा । वास्त्रं वा चार्मणं कौशं मण्डलस्योत्तरेऽर्पयेत् ॥" इति

**आचमनम्**-" स्नाने वस्त्रे च नैवेद्ये दद्यादाचमनं तथा ।" इति ॥

**देवप्रतिमायां नित्यस्नानम्**-" प्रतिमापट्टयन्त्राणां नित्यस्नानं न कारयेत् । कारयेत्पर्वदिवसे यदा वा मलधारणम् ॥" ( अयं च प्रतिमादीनां नित्यस्माननिषेधः षडङ्गुलाधिकत्व एव। "यदि स्यात् प्रतिमा न्यूना षडङ्गुलप्रमाणतः तदा तां स्नापयेन्नित्यं गन्धपुष्पादिनाऽर्चयेत् ॥ विकृत्यसम्भवे मूर्त्ते र्नित्यमेवाथवाऽर्चयेत् ॥" इति **ग्रन्थान्तरोक्तेः** । )

**पञ्चनद्यः**" भागीरथी समाख्याता यमुना च सरस्वती । किरणाधूप पापा च पञ्च नद्यः प्रकीर्तिताः ॥" इति ।

**पञ्चगव्यम्, कृत्यकल्पतरौ**—"पञ्चगव्यं पवित्रं तु आहरेत्ताम्रभाजने । **गायत्र्या** चैव गोमूत्रं **गन्धद्वारेति** गोमयम् । **आप्यायस्वेति** च क्षीरं **दधिक्राव्णेति** वै दधि । **तेजोऽसि शुक्रमित्याज्यं देवस्य त्वा** कुशोदकम् ॥"

**पञ्चगव्यसंमेलनम्**—"**ॐ तत्सवितु**० । ३ । ३५ ॥ **ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वर्त÷ सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य सङ्गथे ( वा० सं०१२ । १२)॥ ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ÷ । सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषितारिषत् । ( वा०सं०२३।३२ ) ॥ ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियन्देवानामनाधृष्टदेवयजनमसि । ( वा० सं० १ । ३१ ) ॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुःप्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यांम्पूष्णो हस्ताभ्याम् । ( वा० सं० १ । १० ) ॥

**पञ्चगव्यप्राशनम्**-" यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके । प्राशनं पञ्चगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम् ॥ ९ इति ।

**पञ्चामृतम्**-" गव्यमाज्यं दधि क्षीरं माक्षिकं शर्करान्वितम् । एकत्र मिलितं ज्ञेयं दिव्यं पञ्चामृतं परम् ॥ " इति धन्वतरिः ।

**उद्वर्तनम्**—"रजनी सहदेवी च शिरीषं लक्ष्मणापि च । सहभद्रा कुशाग्राणि उद्वर्त्तनमिहोच्यते ॥ " इति । इति ।

**सौभाग्यद्रव्यम्**-" हरिद्रा कुंकुमं चैव सिन्दूरादिसमन्वितम् । कज्जल कण्ठसूत्रादि सौभाग्यद्रव्यमुच्यते ॥ "

**देवेष्वभिषेकः**-" साङ्गमादौ जपेद्रुद्रं केवलाङ्गानि चान्तरे । साङ्गं सशीर्षकं चान्त्ये निरङ्गमिति केचन ॥ " इति ।

**अन्यच्च**-"सद्यादि पञ्चवक्त्रांश्च रुद्रानेकाद शैव तु । जपित्वा सर्वरुद्रांश्च चमं काद्यं ततो जपेत् । पुनरेतज्जपेत्सर्वं द्वितीयं चमकं तथा । रुद्रैकादशिनीत्येषा सर्वकामफलप्रदा ॥ सर्वपापक्षयकरी सर्वशांतिप्रदायिनी । एकादशगुणा सैवरुद्र इत्यभिधीयते ॥ महानेकादशगुणस्त्वतिरुद्र इहोच्यते । रुद्रं महातिरुद्रं च जपेत् कार्यस्य गौरवात् ॥ षडङ्गैकादशिनी रुद्री रुद्र एकादशरुद्रः । एकादशभि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रेताभिर्महारुद्रश्च कथ्यते ॥ एकादशमहारुद्रैरतिरुद्र इति स्मृतः ॥ नमस्ते रुद्र मन्येव इत्येकादशानामनुवानामेकमेकं जपेदिति । सर्वनमकान्पठित्वा एकैकं चमकानुवाकं पठेत् । तेनैकरूपे सर्वचमकजपो न तु विभागः । तैरेकादशरुद्रैः रुद्रीत्युच्यते । सैव लघुरुद्रौ रुद्रैकादशिनीति चोच्यते । ताभिरेकादशभिर्महारुद्रः । तैरेकादशावृत्तैरतिरुद्र इति ॥ माध्यन्दिनकण्वादिशाखिनां तु चमके एकाशानुवाकाभावाच्चमकानेकादशधा विभज्यैकैकभागं नमकेषु संयोज्यैकादशिनीं कुर्यात् । तत्र **गणपतौ**—गणपत्यथर्वशीर्षेण ॥ **देव्यां**—अथर्वणवेदीयलक्ष्मीसूक्तेन देव्यथर्वशीर्षेण वा । **विष्णौ**--नारायणाथर्वशीर्षेण । **सूर्ये**—सूर्याथर्वशीर्षेण एतान्यथर्वशीर्षाणि पठित्वा धारापात्रेण जलधारयाऽनेकप्रकारेणोक्तयैकादशिन्या एकाऽऽवर्तनेनैव वाऽभिषेकं कुर्यात् । विघ्नशान्त्यर्थे तु एकादशिन्यारुद्राभिषेकं कुर्यात् ॥

**विष्ण्वादिदेवानां** महाभिषेकः—एकादशिन्याद्यभिषेककरणात्पूर्वं विष्ण्वाद्याराध्यदेवतायाः पूर्वोक्तप्रकारेण पूर्वपूजां समाप्य निर्माल्यं विस्रस्याभिषेकाङ्गत्वेन पञ्चोपचारपूजां कृत्वा तत्तद्देवतापियस्य गङ्गाजलदुग्धेक्षुरसरञ्जिकापञ्च । मृतादिद्रव्य-स्याविच्छिन्नधारया एकादशिनीं पठन्नभिषेकं कुर्यात् । तत्र **विष्णोर्नारायणाथर्वशीर्षस्य** षोडशावृत्तिकरणम् । **गणपतेर्गणपत्यथर्वशीर्षस्यैकविंशतिसंख्यकावृत्तिकरणम् । शंकरस्य**—रुद्राध्यायस्यैकादशावृत्तिकरणम् । **देव्याश्चाथर्ववेदोक्तलक्ष्मीसूक्तस्य** देव्यथर्वशीर्षस्य वा नवावृत्तिकरणम् । परे तु **शिवस्य** रुद्रैकादशिनीं कृत्वाऽनन्तर रुद्राथर्वशीर्ष सकृत्पठित्वाऽभिषेकं कुर्वन्ति तथापि रुद्राथर्वशीर्ष विनैव रुद्राध्यायेन महाभिषेककरणम् । संक्षिप्तपूजने तु सर्वदेवानां तत्तदथर्वशीर्षादेः सकृदावर्तनेनाभिषेकं कुर्यात् । केचित्तु पूर्वोक्तप्रकारेणैव तत्तद्देवतानामेकादशिनीं विधायाभिषिञ्चन्ति अभिषेचनान्ते पूजनं प्राग्वदेव ।

**वस्त्राद्यर्पणम्**—" स्नानान्ते वार्पयेद्वस्त्रं देवानां प्रीतये सदा । ब्रह्मसूत्रं च दातव्यं पूजाफलमभीप्सुना ॥ "

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**देवेऽनुलेपनम्'-वाचस्पतिः**—" चूर्णिकृतो वा घृष्टोवा दाहाकर्षित एव वा। रसः संमर्दजो वापि प्राण्यङ्गोद्भव एव वा॥ गन्धः पञ्चविधः प्रोक्तो देवानां प्रीतिदायकः। गन्धचूर्णं मन्धपत्रचूर्णं सुमनसां तथा॥ प्रशस्तगन्ध उक्तानि पत्रचूर्णानि यानि च। तानि गन्धाह्वयानि स्युः स गन्धः **प्रथमः** स्मृतः॥ घृष्टो मलयजो गन्धः सरलश्च नहेरुणा॥ अनरुप्रभृतिश्चापि यस्य पङ्कः प्रदीयते॥ **घृष्ट्वा** स घृष्टो गन्धोऽयं **द्वितीयः** परिकीर्तितः। देवदार्वगुरुत्वक्ष-सालसारान्तचन्दनाः॥ प्रियादीनां च यो दग्ध्वा गृह्यते दाहजो रसः। दाहा-कर्षितो गन्ध **स्तृतीयः** परिकीर्तितः॥ सगन्धः कारवी त्रिल्वं गन्धिनी तिलकं तथा। प्रभृतीनां रसो योऽसौ निष्पीड्य परिगृह्यते॥ स संमर्दोद्भवो गन्धः **समर्दजः** इतीर्यते। मृगनाभि समुद्भूतस्तत्कोशोद्भव एव वा॥ गन्धः **प्राण्यंगज** प्रोक्तो मोददःस्वर्गवासिनाम्। कर्पूरगन्धसाराद्याः क्षौद्रे घृष्टे च संस्थिताः॥ चन्द्रभागादयश्चापि रसेपंके च सङ्गताः। गन्धसारस्तु सर्वत्र संसर्गादौ प्रयुज्यते॥ मृगनाभिर्भवेद् घृष्टश्चूर्णोऽप्यन्यस्य योगतः। एवं सर्वेस्तु सर्वेध गन्धो भवति पञ्चवा॥ सर्वेषु गन्धजातेषु प्रशस्तो मलयो-द्भवः। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन दद्यान्मलयजं सदा॥ कृष्णागरुः सकर्पूरः सहितो मलयोद्भवैः। वैष्णवप्रीतिदौ गन्धः कामाख्यायाश्च भैरवौ। कुंकुमागरुकस्तूरी-चन्द्रभागैःसमाकृतैः। त्रिदशप्रीतिदो गत्वस्तथा चण्डयश्च शम्भुना॥ गन्धेन लभते कामं गन्धो धर्मप्रदः सदा। अर्थानां साधको गन्धो गन्धे मोक्षः प्रतिष्ठितः॥" इति॥

**पुष्पार्पणम्**—"पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलं वापि तथैव च केशवार्थे शिवार्थे वा यथोत्पन्नं तथाऽर्पयेत्॥ मध्यमाऽनामिकामध्ये पुष्पं संगृह्य पूज-येत्। अंगुष्ठतर्जनीभ्यां तु निर्माल्यमपनोदयेत्॥"

**तुलसीग्रहणम्**—"अस्नात्वा तुलसी छित्त्वा यः पूजां कुरुते नरः॥ सोऽपराधी भवेत्सत्यं तत्सर्वं निष्फलं भवेत्॥ देवार्थे तुलसीच्छेदो होमार्थे समिध तथा। इन्दुक्षये न दुष्येत गवार्थे तु तृणस्य च॥ पूर्णिमाया ममायां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



च द्वादश्यां रविसंक्रमे। तैलाभ्यं च स्नातेन मध्याह्ने निशि संध्ययोः॥ अशौचे शुचिकाले च रात्रिवासोन्वितेऽपि वा। तुलसीं ये विचिन्वन्ति ते छन्दन्ति हरेः शिरः॥ शालग्रामशिलार्चार्थं प्रत्यहं तुलसीक्षितौ। तुलसी ये विचिन्वन्ति धन्यास्ते करपल्लवाः संक्रात्यादौ निषिद्धेऽपि तुलस्यवचयः स्मृतः॥ मन्त्रेणानेन यः कुर्यात्तुलसीदलसञ्चयम्। पूजनं वासुदेवस्य लक्षकोटिफलं लभेत्।"

**तुलसीपत्रग्रहणमन्त्रः**" तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया। केशवार्थे चिनोमि त्वां वरदा भव शोभने॥ त्वदङ्गसम्भवैः पत्रैः पूजयामि यथा हरिम्। तथा कुरु पवित्राङ्गि कलौ मलविनाशिनी॥" इति।

**बिल्वपत्रम्**—त्रिजटापत्रकैकेन हेरम्बं हरिमर्चयेत्। कैवल्यं तस्य तेनैव शक्तिपूजा विशेषतः॥ पत्रं पुष्पं फलं तोयं नैवेद्यं धूपदीपकौ। दत्त्वा यद्यत्फलं प्राप्यं तस्मात्कोटिगुणं भवेत्॥ पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलं नेष्टमधोमुखम्। यथोत्पन्नं तथा देयं बिल्वपत्रमधोमुखम्॥ षण्मासानन्तरं बिल्वपत्रं पर्युषितं भवेत्। पूज्याएतेन वै देवाः सूर्यलम्बोदरौ विना॥

**पूजायां ग्राह्यपुष्पाणि**—समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत्। पंकजं पञ्चरात्रं स्याद्दशरात्रं च बिल्वकम्॥ एकादशाहं तुलसी नैव पर्युषिता भवेत्। जाती शमी कुशाः कङ्गुर्मल्लिका करवीरजम्॥ नागपुन्नागकाऽशोकरक्तनीलोत्पलानि च। चम्पकं बकुलं चैव पद्मं बिल्वं पवित्रकम्॥ एतानि सर्वदेवानां संग्राह्याणि समानिच॥ **अन्यच्च**—बिल्वापामार्गजातीबुलसिशमिशताकेतकीभृंगदूर्वामान्दाभोजाहिदर्भामुनितिलतगरब्रह्मकह्लारमल्ल्यः। चम्पाश्वारांतिकुम्भीदमनमरुबकाबिल्वतोहानिशस्ताखिंशत्येकार्यरीशोद धिनिधिवसुभूर्भूयमा भूय एवम्॥

**देवतानामतिप्रियाणि पुष्पाणि—पत्राणि वा**—शंकरस्य बिल्वपत्रम्। विष्णोस्तुलसी। गणेशस्य दूर्वाङ्कुरः। अंबाया नानाविधपुष्पाणि। सूर्यस्य रक्त करवीपुरष्पम्॥

**पञ्चपुष्पाणि**—' चम्पकाम्रशमीपद्मकरवीरं च पञ्चकम्।' इति।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**पुष्पाभावे**—"अलाभे तु सुपुष्पाणां पत्राण्यपि निवेदयेत् । पत्राणामप्यलाभे तु तृणगुल्मौषधीरपि ॥ औषधीनामलाभे तु भक्त्या भवति पूजनम्। यत्पुण्यं प्रतिपुष्पे तद्दशधा स्वर्णनिर्मिते ॥ "

**पुष्पाणि**—" कृमिकीटावपन्नानि शीर्णपर्युषितानि च ॥ स्वयं पतितपुष्पाणि त्यनेदुपहतानि च । मुकुलैर्नार्चयेदेवमपक्वं न निवेदयेत् ॥ शूद्रानीतैः क्रयक्रीतैः कर्म कुर्वन्पतत्यधः । तद्धारी चैव नान्यान्वै निर्माल्यं तद्धवेत्तयोः ॥ तथा देवोपरि धृतं वामहस्ते धृतं च यत् । अधोवस्त्रधृतं चैव जलेन क्षालितं च यत् । देवतास्तन्न गृह्णन्ति पुष्पं निर्माल्यतां गतम् ॥ नांगुष्ठैर्मर्दयेदेवं नाऽधःपुष्पैः समर्चयेत् । कुशाग्रैर्नक्षिपेत्तोयं वज्रपातसमं भवेत् ॥ न शुष्कैः पूजयेद्देवं कुसुमैर्न महीगतैः । न विशीर्णदलैः शिष्टैर्नाशुभैर्नाविकाशितैः ॥ पूतिगन्धोग्रगन्धीनि स्वल्पगन्धीनि वर्जयेत् ॥ स्नानं कृत्वा तु यत्किञ्चित्पुष्पं गृह्णन्ति वै द्विजाः । पितरस्तन्न गृह्णन्ति न गृह्णन्ति च देवताः ॥ वस्त्रानीतं करानीतं स्वयं पतितमेव च । एरण्डपत्रैरानीतं न तस्य फलभाग्भवेत् ॥ अक्षतैर्नार्चयेद्विष्णुं न तुलस्या विनायकम् ॥ न दूर्वया यजेद् दुर्गां नोन्मत्तेन दिवाकरम्॥" **ज्ञानमालायाम्**—"नाक्षतैरर्चयेद्विष्णुं न तुलस्या गणाधिपम् । न दूर्वया यजेद्देवीं विल्वमत्रैश्च भास्करम् ॥ उन्मत्तमर्कपुष्पं च विष्णोर्वर्ज्यं सदा बुधैः । फलं च कृमिसंयुक्तं प्रयत्नात्तद्विवर्जयेत् ॥ " इति ।

**पञ्च रत्नानि**—"नीलकं वज्रकं चेति पद्मरागश्च मौक्तिकम् । प्रवालं चेति विज्ञेयं पञ्चरत्नं मनीषिभिः ॥ सुवर्णं रजतं मुक्ताराजावर्तं प्रवालकम् । रत्नपञ्चकमाख्यातं धर्मशास्त्रे स्फुटं बुधैः । कनकं हीरकं नीलं पद्मरागश्च मौक्तिकम् ॥ अभावे सर्वरत्नानां हेम सर्वत्र योजयेत् ॥ " इति ।

**पञ्च पल्लवाः**—"आम्रजम्बूकपित्थानां बीजपूरकबिल्वयोः । गन्धकर्मणि सर्वत्र पत्राणि पञ्चपल्लवम् ॥ " इति । " अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः । पञ्चपल्लव मित्युक्तं सर्वकर्मणि शोभनम् ॥ ' इति च । " पनसाम्रं तथाऽश्वत्थं वटं बकुलमेव च । " इति ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**धूपः**—" हिरुका कंकणं दारु मल्लिकाऽगुरुवासिता । शङ्खजातीफलं श्रीमत् प्रिया धूपा हरेरिमे ॥ घृतगुग्गुलुपाटीरहेगरूशीरचंदनम् । घनं लाक्षा-कुष्ठनखं दशाङ्गः प्रोच्यते बुधैः ॥ गुग्गुलं सरलं दारु पत्रं मलयसम्भवम् । हीबेर मगरं कुष्ठं गुडं सर्जरसं घनम् ॥ हरीतकीं नखीं लाक्षां जटामांसीं च शैलजाम् । षोडशाङ्गं विदुर्धूपं दैवे पित्र्ये च कर्मणि ॥ यथा गन्धे तथा देवि धूपं दद्याद्विचक्षणः । मध्यमानामिकाङ्गुल्योर्मध्यभागे विधारयेत् ॥ अङ्गुष्ठाग्रेण देवेशि धृत्वा धूपं निवेदयेत् । तथा समर्पयेद्धूपं घण्टावाद्यजयस्वनैः ॥ " इति ।

**दीपः**—"न मिश्रीकृत्य दद्यात्तु दीपं स्नेहे घृतादिकम् । घृतेन दीपकं नित्यं तिलतैलेन वा पुनः ॥ ज्वालयेन्मुनिशार्दूल सन्निधौ जगदीशितुः । कार्पा-सवर्तिका ग्राह्या न दीर्घा न च सूक्ष्मका ॥ "

**नैवेद्यभाजनम्**—" हैरण्यं राजतं कांस्यं ताम्रं मृन्मयमेव च । पालाशं पद्मपत्रं वा पात्रं विष्णोरतिप्रियम् ॥ " इति ।

**देवे नेवेद्यार्पणम्, आश्वलायनः**—" वैश्वदेवं पुरा कृत्वा नित्ये चाभ्युदये तथा । स्वाभीष्टदेवतादिभ्यो नैवेद्यं च निवेदयेत् ॥ अकृत्वा वैश्व-देवं यो नैवेद्यं तु निवेदयेत् । तदन्नं न च गृह्णन्ति देवा विष्णवादयो ध्रुवम् ॥ अयं च निषेधः पाकनैवेद्यमुद्दिश्यैव फलादिनैवेद्यविधानं तु पूर्वं युक्तमेव ॥ नानाव्यञ्जनसंयुक्तं रसषट्कैस्तु संस्कृतम् । निवेद्याऽन्नं समाप्नोति फलं यज्ञा-धिकं द्विजः ॥ तुलसीगंधपुष्पैश्च सम्पूज्यान्नं हरेः प्रियम् । सम्प्रोक्ष्यार्घ्यजवेनैव सम्प्रोक्ष्यास्त्रेण मृदा ॥ धेनुमुद्रां प्रदर्श्याथ ततो देवं निवेदयेत् । अथाऽमृतो पस्तरणमसि स्वाहाऽर्पयेज्जलम् । प्राणापानव्यानोदानसमानास्तारपूर्वकाः । चतुर्थ्यग्निवधूयुक्ताः प्राणमंत्राः स्मृता इति ॥" **भविष्ये**—" पानीयं चामृती-कृत्य परेशाय निवेदयेत् मूलमन्त्रं [ गायत्रीमन्त्रं ] जपेदत्र ततो नारायणा-त्मकम् ॥ अष्टोत्तरशतं चैव अष्टाविंशतिमेव वा । क्षणं विमृश्य मतिमान् दद्यादाचमनं ततः ॥ हविः शाल्योदनं दिव्यमाज्ययुक्तं च शर्कराम् । नैवेद्यं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



देवदेवाय यावकं पायसं तथा ॥ नैवेद्यस्त्वलाभे तु फलानि च निवेदयेत्। फलानामप्यलाभे तु तोयान्यपि निवेदयेत् ॥"

**देवे घृतशर्करादिनैवेद्यार्पणम्-नाभ्या आसीदितिमंत्रेण** तुलसीदलेन सम्प्रोक्ष्य नैवेद्योपरि तुलसीदलं निधाय धेनुमुद्रा प्रदर्श्य सव्यहस्तस्याङ्गुलीः समानाः कृत्वा नैवेद्यमर्पयेत्। तद्यथा--**ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा।** इति समर्प्य। नैवेद्यमध्ये पानीयं दत्त्वा हस्तप्रक्षालनं मुखप्रक्षालनं मुखप्रक्षालनं चन्दनं च समर्पयेत् ॥

**नैवेद्यभक्षणम्**--" द्रव्यमन्नं फलं तोयं शिवस्वं न स्पृशेत्कचित्। लंघयेन्नैव निर्माल्यं कूपे सर्वं परित्यजेत् ॥ नैवेद्यमन्नं तुलसीविमिश्रं विशेषतः पादजलेन सिक्तम्। योऽश्नाति नित्यं पुरतो मुरारेःप्राप्नोति लक्षायुतकोटिपुण्यम् ॥ बाणलिङ्गे तु चण्डांशोर्नच निर्माल्यकल्पना। सर्वं बाणर्पितं ग्राह्यं शक्त्या भक्तैश्च नान्यथा ॥ ग्राह्याग्राह्यविचारोऽयं बाणलिङ्गे न विद्यते। तदर्पितं जलं चान्नं ग्राह्यं प्रसादसंज्ञया ॥ बाणलिङ्गे स्वयम्भूते चन्द्रकान्ते हृदि स्थिते। चन्द्रायणसमं ज्ञेयं शम्भोर्नैवेद्यभक्षणम् ॥ मक्षिकापादमात्रं यः शिवस्वमुपजीवति। लोभान्मोहात्स पच्येत कल्पातं नरके नरः ॥ अनर्हं मम नैवेद्यं पत्रं पुष्पं फलं जलम्। शालग्रामशिलालग्नं सर्वं याति पवित्रताम्। नैवेद्यं मे नरो भुक्त्वा शुद्धौ चान्द्रायणं चरेत् ॥" इति।

**तांबूलम्**--" सुपूगं च सुपत्रं च चूर्णेन च समन्वितम्। दद्यात्तु द्विज देवेभ्यस्ताम्बूलं प्रीतिपूर्वकम् ॥" इति

**प्रदक्षिणा**--" एकां विनायके कुर्याद्द्वे सूर्ये तिस्र ईश्वरे। चतस्रः केशवे कुर्यात्सप्ताश्वत्थे प्रदक्षिणाः ॥" **अन्यत्र तु**--' एका चण्डश्च रवेःसप्त तिस्रः कार्या विनायके। हरेश्चतस्रः कर्तव्या- शिवस्यार्धप्रदक्षिणा ॥ वृषं चण्डं वृषं चैव सोमसूत्रं पुनर्वृषम्। चण्डं च सोमसूत्रं च पुनश्चण्डं पुनर्वृषम्। अपसव्यं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यतीनां तु सव्यं तु ब्रह्मचारिणाम् ॥ सव्यापसव्यं गृहिणामेवं शम्भोः प्रदक्षिणा ॥ "—"सव्यं ब्रह्मेत्ततोऽसव्यं प्रणालं नैवं लङ्घयेत् ॥" इति च ।

**मन्त्रपुष्पार्पणम्, देवपूजनम्**—नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च । पुष्पाञ्जलिः शुभा देया देवताप्रीतये सदा ॥

**साष्टाङ्गनमस्कारः**—उरसा शिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा । पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोऽष्टाङ्ग उच्यते ।

**तीर्थम्**—शिला ताम्रं तथा तोयं शङ्खः पुरुषसूक्तकम् । गन्धं घण्टा च तुलसीत्यष्टाङ्गं तीर्थमुच्यते ॥ स्कान्दे—कुंकुमं चन्दनं पत्रं नैवेद्यं कुसुमं जलम् । शालग्रामशिलालग्नं तीर्थं कोटिशताधिकम् विष्णुपादाभिषिक्तं यः पात्रेणैव पिबेज्जलम् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः स याति परमां गतिम् ॥ यः पादसलिलं विष्णोरेणक पिबते यदि । स मूढो नरकं याति यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥ शालग्रामशिलावारि सोमपानं दिने दिने । पात्रान्तरेण तद्ग्राह्यं करेण सुरया समम् ॥ शालग्रामशिलातोयमपीत्वा यस्तु मस्तके । प्रक्षेपणं प्रकुर्वीत ब्रह्महा स निगद्यते ॥ जलं न येषा तुलसीविमिश्रं पादोदकं चक्रशिलासमुद्भवम् । नित्यं त्रिसन्ध्यं प्लवते च गात्रंखगेन्द्र ते धर्मबहिष्कृता नराः ॥ पादोदकं पिबेन्नित्यं नैवेद्यं भक्षयेद्धरेः । शेषं च मस्तके धार्यमिति वेदानुशासनम् ॥

**निर्माल्यग्रहणम्**—" विष्णुदेहपरामृष्टं माल्यं पापहरं स्मृतम् । यो नरः शिरसा धत्ते स याति हरिमञ्जसा ॥ " **ब्राह्मे**—" ब्रह्माङ्गलग्नं विप्रेभ्यो वैष्णवं च प्रदीयते । रुद्रांगलाग्नमग्नौ तु दहेत्सर्वं च तत्क्षणात् । शिष्टेभ्यस्त्वथ देवेभ्यो दत्तं दीनेषु निक्षिपत् ॥ " इति ॥

**नवधाभक्तिः**— 'श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणंपाद सेवनम् । अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥ इति पुंसाऽर्पिता विष्णौ भक्तिश्चेन्नवलक्षणा । क्रियते भगवत्यद्धा सोऽपि याति परां गतिम् ॥ " इति ।

**उत्तरपूजा**—नारायणमन्त्रस्य उत्तरनारायण ऋषिः । पुरुषो देवता । आद्यस्तिसृष्टुभोऽन्त्ये द्वे अनुष्टुभौ । उत्तरपूजने विनियोगः—ॐ अद्भ्यः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सम्भृत इत्यारभ्य श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या इत्यन्तैः षण्मन्त्रैरुत्तर-पूजनम् । एते च मन्त्रा रुद्रे द्वितीयाध्याये स्थिताः ॥

पूजनफलम्—" स्वयं यजति चेद्देवमुत्तमा सोदरात्मजैः । मध्यमा या यजेदृत्विग्भिरधमा याजनक्रिया ॥ धर्मार्जितधनक्रीतैर्यः कुर्यात्केशवार्चनम् । उद्धरेत्स्वेन सहितान्दश पूर्वान्दशापरान् ॥ कलौ कलिमलध्वंसं सर्वपापहरं हरिम् । येऽर्चयन्ति नरा नित्यं तेऽपि वन्द्या यथा हरिः ॥ "

अथ देवार्चनपद्धतिः—आचम्य प्राणानायम्य । सुशान्तिर्भवतु ॥ मङ्गलोच्चारणम्-ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाऽ स्वस्ति नः÷ पूषा विश्ववेदाऽ । स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिऽ स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु (वा० सं०२५ । १९) भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राऽ । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः ÷ ( वा० सं० २५ । २१ ) ॥ तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाऽ पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः । नाकङ्गृह्णाणाऽसुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽ अधि रोचने दिवऽ ( वा० सं १५ । ५० ) ॥

अथ साञ्जलि प्रार्थनम् । श्रीमन्महागणाधिपतये नमः इष्टदेवताभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो नमः । वास्तु-देवताभ्यो नमः । वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । उमामहेश्वराभ्यां नमः । शचीपुरन्दराभ्यां नमः । मातापितृचरणकमलाभ्यां नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्योः नमः । निर्विघ्नमस्तु ॥ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो गणा-धिपः ॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठे-

---

आचमनप्राणायामयोर्विधिस्तु पूर्वं ५५ पृष्ठे दर्शित एव ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



च्छृणुयादपि॥विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव-विघ्नस्तस्य न जायते ॥ शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये । अभीप्सितार्थसिद्धर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वविघ्न-हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् । येषां हृदिस्थो भगवान्मङ्गलायतनं हरिः ॥ तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव । विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ यत्र योगीश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः । तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः । देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥ विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् । सरस्वतीं प्रणौम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये ॥सङ्कल्पः-विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः।श्रीमद्भगवतो महा पुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य ब्रह्मणः द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे अमुकक्षेत्रे अमुष्मात् पश्चिमदिग्भागे अमुष्मात्पूर्वदिग्भागे अमुष्मादुत्तरदिग्भागे अमुष्माच्च दक्षिणदिग्भागे बौद्धावतारे रामराज्ये श्रीविक्रमादित्यराज्यतः अमुक-सङ्ख्याके अमुकनामसंवत्सरे अमुकाऽयने अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकवासरे अमुक-तिथौ अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशि-स्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवंगुणविशे षणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थममुक-देवप्रसादपूर्वकमात्मन ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् अप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थम् प्राप्तलक्ष्म्या-श्चिरकालसंरक्षणार्थम् सकलमनईप्सितकामनासंसिद्ध्यर्थं लोके वा सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादिप्राप्त्यर्थम् इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोप-शमनार्थं तथा च स्वस्य सभार्यस्य सपुत्रस्य सबान्धवस्य अखिलकुटुम्बसहितस्य सपशोः समस्तभयव्याधिजरापीडामृत्युपरिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तथा स्वस्य जन्मराशेरखिलकुटुम्बस्य वा जन्मराशेः सकाशाद्ये केचिद्विरुद्धचतुर्थाष्टमद्वादशस्थानस्थितक्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशद्वारा एकादशस्थानस्थितवच्छुभफलप्राप्त्यर्थम् पुत्रपौत्रादिसन्ततेरविच्छिन्नवृद्ध्यर्थम् आदित्यादिनवग्रहानुकूलतासिद्ध्यर्थम् इन्द्रादिदशदिक्पालप्रसन्नतासिद्ध्यर्थम् आधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिकत्रिविधतापोपशमनार्थम् धर्मार्थकाममोक्षफलावाप्त्यर्थं च ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकप्रीत्यर्थं 'यथाज्ञान ममुकशर्म्माऽहं यथामिलितोपचारं पुरुषसूक्तेन ध्यानावाहनादिषोडशोपचारैः पूजनं करिष्ये ॥ तत्रादौ षडङ्गन्यासपूर्वकं पुरुषसूक्तषोडशाङ्गन्यासपूर्वक वा कलशादिपूजनं च करिष्ये ॥ 'कलशपूजनम्' । तत्रादौ कलशं जलेन सम्पूर्य साञ्जलि "सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः । आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ॥ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः । मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥ कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा । ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः" ॥ इति समुद्रादीन् सान्निध्यार्थं सम्प्रार्थ्याक्षतानादाय—

**ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मानऽआयुः प्रमोषीः ।**

१८।४९ ॥ अस्मिन्कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि इत्यक्षतान् कलशोपरि निक्षिप्य साञ्जलि "देवदानवसंवादे मध्यमाने महोदधौ उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृता विष्णुना स्वयम् । त्वतोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ॥ त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः । शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ॥ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः । त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः॥त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव । सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ प्रसन्नो भव । वरदो भव ॥—ॐ भूर्भुवः स्वः कलशस्थवरुणाय नमः आवाहयामि सर्वोपचा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । नमस्करोमि ॥ इति प्रार्थयेत् । अनन्त कलशोदकेन पूजाद्रव्याणि तथाऽऽत्मानं च अपवित्रेत्यादिना आपोहिष्ठेत्यादिना वा सम्प्रोक्षेत् । यथा—अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्ता नऽऊर्जे दधातन महे रणाय चक्षसे ॥ ( वा० सं० ३६।१४ ) यो वः ÷ शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः÷ । उशतीरिव मातरः÷ ॥ ( वा० सं० ३६ । १५ ) तस्म्माऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥ (वा०सं०—३६ । १६ ) ॥पश्चात्कलशमुद्रां प्रदर्श्य ॥ ( कलशमुद्रा च पूर्वमुक्ता ) 'शङ्खपूजनम्'--तत्रादौ शङ्खे जलं सम्पूर्य शङ्खादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता। पृष्ठे प्रजापतिश्चैव अग्रे गङ्गा सरस्वती ॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया । शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छङ्खं प्रपूजयेत् ॥ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे । निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोस्तु ते ॥ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि । तन्नः शङ्खः प्रचोदयात् ॥—ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे महागयम् ( वा०सं०-२६।९ ) ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शङ्खस्थदेवतायै नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धपुष्पाणि समर्पयामि । नमस्करोमि । शङ्खमुद्रां प्रदर्श्य 'घण्टां पूजयेत्'आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु राक्षसाम्।घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टांप्रपूजयेत् ॐ सुपर्णोसि गरुत्मॉंस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रश्चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ । स्तोमऽआत्मा छन्दाꣳस्यङ्गानि यजूꣳषिनाम । साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याऽशफाः ॥ सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवङ्गच्छ स्व÷ पत ॥ ( वा० सं० १२।४)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थाय गरुडाय नमः आवाहयामि । सर्वोपचारार्थं गन्ध-पुष्पाणि समर्पयामि । नमस्कारोमि । घण्टामुद्रां प्रदर्श्य ॥ घण्टामुद्रा च पूर्वं प्रोक्ता॥ दीपं प्रज्वाल्य पूजयेत् । भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने । त्राहि मां निरयाद्घोराद्दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥—ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा । ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा । ( वा० सं० ९ । ३ ) ॐ भूर्भुवः स्वः दीपस्थदेवतायै नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि । 'देवपञ्चकध्यानम्'—तत्रादौ—गणपतिध्यानम्-श्वेताङ्गं श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरतरुविमले रत्नसिंहासनस्थम् । दोर्भिः पाशांकुशाब्जाभयवरमनसं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रं ध्या-येच्छान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम् ॥—ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमोनमः सेनाभ्यः । (वा०सं० १६।२५)॥देवीध्यानम्—नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै संततं नमः।नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥—ॐ मनसस्काम-माकूतिं वाचस्सत्यमशीय । पशूना रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा । ( वा० सं० ३९ । ४ ) ॥ विष्णु-ध्यानम्- शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघ-वर्णं शुभाङ्गम् । लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भव-भयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥—ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवमसि विष्णवे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्वा ( वा० सं० ५।२१ ) शिवध्यानम्—ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥ ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोतऽइषवे नमः÷। बाहुभ्यामुत ते नमः ÷। ( वा० सं० १६।१ )॥ सूर्यध्यानम्—ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः। केयूरवान्मकरकुण्डलवान्किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः॥-ॐ सूऽर्य्यरश्मिर्हरिकेशःपुरस्तात्सविताज्ज्योतिरुदयाँऽअजस्रम्। तस्य पूषा प्रसुवे याति विद्वान्त्सम्पश्यन्विश्वा भुवनानि गोपाः ( वा० सं १७।५८ )॥ दैवपञ्चकावाहनम्—तत्र गणपतेरावाहनम्—आवाहयेत्तं गणराजदेवं रक्तोत्पलाभासमशेषवन्द्यम्। विघ्नान्तकं विघ्नहरं गणेशं भजामि रौद्रं सहितं च सिद्ध्या॥-ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्। ( वा०सं० २३।१९ )॥ देव्या आवाहनम्—श्यामाङ्गी शशिशेखरां निजकरैर्दानं च रक्तोत्पलं रत्नाढ्यं कलशं परं भयहरं सम्बिभ्रतीं शाश्वतीम्। मुक्ताहारलसत्पयोधरनतां नेत्रत्रयोल्लासिनीमावाहेत्सुरपूजितां हरवधूं रक्तारविन्दस्थिताम्॥ ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमा नयति कऽश्चन। ससस्त्यश्वकꣳ सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम् ( वा० सं० २३।१८ )॥ विष्णोः—आवाहयेत्तं गरुडोपरिस्थितं रमार्धदेहं सुरराजवन्दितम्। कंसान्तकं चक्रगदाब्जहस्तं भजामि देवं वसुदेवसूनुम्॥-ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा । (वा०सं०-५।१५ ) ॥ शिवस्य—एहेहि गौरीश पिनाकपाणे शशाङ्कमौले वृषभाधिरूढ । देवाधिदेवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥—ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्करायय च नमः शिवाय च शिवतराय च । ( वा० सं० । १६ । ४१ ) ॥ सूर्यावाहनम्—आवाहयेत्तं द्विभुजं दिनेशं सप्ताश्ववाहं द्युमणिं ग्रहेशम्॥सिन्दूरवर्णप्रतिमावभासं भजामि सूर्यं कुलवृद्धिहेतोः॥—ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् । ( वा० सं० ३३।४३ ) ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः आवाहनं समर्पयामि ॥ आगच्छ भगवन्देव स्थानेचात्र स्थिरो भव । यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधो भव ॥—ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षꣳ सहस्रपात् । स भूमिꣳ सर्व्वतस्पृत्वा ऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ ( वा० सं० ३१ । १ ) । ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः आवाहनपूर्वकं ध्यानं समर्पये ॥ 'आसनम्'—रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम् । आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् । उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ ( वा० सं० ३१ । २ ) । ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः आसनं समर्पये ॥ 'पाद्यम्'—उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम् । पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ एतावानस्य महिमाऽतोज्यायाꣳश्च पूरुषः । पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ ( वा० सं० ३१ । ३ ) । ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः ॥ पाद्यं समर्पये ॥ 'अर्घ्यम्'—अर्घ्यं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह। करुणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥ ॐ त्रिपादुर्ध्वऽउदैत्पुरुषः। पादोस्येहाभवत्पुनः÷। ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि॥ (वा० सं०३१।४)। ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमोऽर्घ्यं समर्पये। 'आचमनम्'-सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्। आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर॥- ॐ ततो विराडजायत विराजोऽअधिपूरुषः। स जातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः॥ (वा० सं० ३१।५)। ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः आचमनीयं समर्पये॥ 'स्नानम्'--गङ्गासरस्वतीरेवांपयोष्णीनर्मदाजलैः स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःसम्भृतम्पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान्ग्राम्याश्च ये॥ (वा० सं० ३१।६)। ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः स्नानं समर्पये॥ 'पञ्चामृतस्नानम्'--(एकमन्त्रेण पञ्चामृतस्नानम्)-पयो दधि घृतं चैव मधु वै शर्करायुतम्। पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेभवत्सरित्॥ (वा० सं० ३४।११)। ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः पंचामृतस्नानं समर्पये। पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पये। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पये। पृथक् पृथग्मन्त्रैः पञ्चामृतस्नानम्, तत्र -'पयःस्नानम्' कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥-ॐ पयः÷पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीःप्रदिश÷सन्तु मह्यम्× (वा० सं० १८।३६) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः पयः--स्नानं समर्पये। पयःस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पये। शुद्धोदकस्नानान्ते आच-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मनीयं समर्पये । ' दधिस्नानम् '--पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् । दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐदुधिक्राव्णोऽअकारिष जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ÷ ।सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयूंछंषि तारिषत् ॥( वा० सं० २ । ३२) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः दधिस्नानं समर्पये । दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पये । शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पये 'घृतस्नानम् '--नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम् । घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ घृतम्मिमीक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धामं । अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृत वृषभ वक्षि हव्यम् ॥ ( वा० सं० १७ । ८८ ) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः घृतस्नानं समर्पये । स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पये । शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पये । ' मधुस्नानम् '--तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु । तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ मधुवाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः ( वा० सं० १३ । २७ ) मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः ÷ । मधुद्यौरस्तु नः पिता ॥ ( वा० सं० १३ । २८ ) मधुमान्नो वनस्पतिर्म्मधुमाँ२ ॥ अस्तु सूर्य्यः ÷ । माध्वीर्गावो भवन्तु नः । ( वा० सं० १३ । २९ ) ॐभूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः मधुस्नानं समर्पये । मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पये । शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पये ॥'शर्करास्नानम्' तत्र मन्त्रः -इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका । मलापहारिका दिव्या स्नानाय प्रतिगृह्यताम्॥ॐअपाꣳरसमुद्वयसꣳ सूर्य्ये सन्तꣳसमाहितम् । अपाꣳ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तमुपयामगृहीतो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**ऽसीन्द्राय त्वा जुष्टंगृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्। ( वा० सं०९ । ३ ) ॥** ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः शर्करा-स्नानं समर्पये । शर्करास्नानान्ते शुद्धस्नानं समर्पये शुद्धस्नानान्ते आचमनीयं समर्पये ॥ 'षष्ठं गन्धोदकस्नानं **तत्र मन्त्रः**--मलयाचलसम्भूतं चंदनागरुसंभ वम् । चन्दनं देवदेवेशः स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ **ॐगन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ३५ ॥** ( लक्ष्मीसूक्तमन्त्रः ) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः षष्ठं गन्धोदकस्नानं समर्पये ॥ षष्ठगन्धोदकस्नानान्ते शुद्धस्नानं समर्पये । शुद्धस्नानान्ते आचमनीयं समर्पये ॥ 'उद्वर्तनस्नानं' **तत्र मन्त्रः**--नानासुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् । उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ **ॐ अदः शुना ते अदः शुः पृच्यताम्परुषापरुः ÷ । गन्धस्ते सोम-मवतु मदाय रसोऽअच्च्युतः ॥ ( वा० सं० २० । २७ ) ॥** ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमःउद्वर्तनस्नानं समर्पये । उद्वर्तनस्नानांते शुद्धस्नानं समर्पये । शुद्धस्नानान्ते आचमनं समर्पये । ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय पञ्चामृतादिस्नानान्ते शुद्धस्नानं समर्पये । शुद्धस्नानान्ते आचमनीयं समर्पये ॥ ततः **पञ्चामृतादिस्नानाङ्गपूजा**--ॐ भूर्भुव स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः वस्त्रोपवस्त्रार्थे अक्षतान् समर्पये । यज्ञोपवी तार्थेऽक्षतान् समर्पये ॥ गन्धं समर्पये । नानापरिमलसौभाग्यद्रव्याणिसमर्पये एतानि सुरभीणि पुष्पाणि समर्पये । धूपं दर्शये । दीपं दर्शये । शर्करोपहार-नैवेद्यम्--ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा । नैवेद्यं समर्पये । नैवेद्यान्ते हस्तौ प्रक्षालये । मुखं च प्रक्षालये । करोद्वर्तनार्थे चन्दनं विलेपये । मुखवासार्थे पूगी-फलसहितं ताम्बूलं समर्पये । कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थं दक्षिणां समर्पये । अमुकदेवपञ्चकप्रीतये मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पये । इत्येवं सम्पूज्य सफलार्घ्य-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मादाय" रक्ष रक्ष सुराध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक । भक्तानामभयंकर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥ वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद । अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम ॥" इति दक्षोपरि समर्प्यानया कृतया पञ्चामृतादिकरणक-स्नापनाङ्गभूतयाऽर्चनया अमुकदेवपञ्चकं प्रीयतां न मम । इत्युक्त्वाऽक्षतादि समर्पयेत्ततः अभिषेकं कुर्यात् । यथा–हरिः ॐ–ॐ सहस्रशीर्षा० ॥१॥ पुरुषऽए० ॥ २ ॥ एतावान० ॥ ३ ॥ त्रिपादूर्ध्वऽ० ॥ ४ ॥ ततः विराऽ० ॥५॥ तस्माद्यज्ञात्सऽ० ॥६॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥७॥ तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः । गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः ॥८॥ तंयज्ञम्बर्हिषिप्रौक्षन्पुरुषजातमग्रतः । तेन देवाऽअयजन्तसाद्ध्या ऽऋषयश्च ये ॥ ९ ॥ यत्पुरुषं व्यदधुःकतिधाव्यकल्पयन् । मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरूपादाऽउच्येते ॥१०॥ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहूराजन्यः कृतः । ऊरू तदस्य यद्वैश्यःपद्भ्याꣳ शूद्रोऽअजायत ॥ ११ ॥ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोꣳसूर्य्यो ऽअजायत । श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ १२ ॥ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णो द्यौꣳसमवर्त्तत । पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशꣳश्रोत्रात्तथा लोकाꣳ ॥ ऽअकल्पयन् ॥ १३ ॥ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । वसन्तोऽस्यासीदाज्यंग्रीष्मऽइध्मꣳशरद्धविः ॥ १४ ॥ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिꣳसप्तसमिधः कृताः । देवा यद्यज्ञ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



न्तेन्वानाऽअवंध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥ १५ ॥ युज्ञेनं युज्ञमंजयन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन् । ते हुनाकंम्महिमानं ÷ सचन्तु यत्रपूर्वे साद्ध्याऽसन्ति देवाः । ( वा०सं०३१ । १६ )॥ अत्रावसरे शङ्खरितोदकेन-ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पुदम् । समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥ ( वा० सं० ५ । १५ )। इति मन्त्रेण शालिग्रामं स्नापयेत् ॥ पश्चात् स्नापनधारापात्रोदकेन देवपञ्चकस्य शान्त्यभिषेकं कुर्यात् स च यथा-ॐ द्यौऽशान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिं ÷ पृथिवी शान्तिरापꣳ शान्तिरोषधयꣳशान्ति ÷ । वनस्पतयꣳशान्तिर्विश्वेदेवाꣳ शान्तिर्ब्रह्मशान्तिꣳसर्वꣳ शान्तिꣳशान्तिरेव शान्तिꣳसामा शान्तिरेधि ॥ ( वा० सं० ३५ । १७ ) यतो यतꣳसमीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु । शन्नः ÷ कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ÷ ॥ ( वा० सं० ३६।२२ ) ॥ ॐ सर्वेषां वाऽएष वेदानाꣳ रसोयत्साम सर्वेषामेवैनमेतद्वेदानाꣳ रसेनाभिषिञ्चति ॥ ५१ ॥ ॐ शान्तिः शान्तिःसुशान्तिर्भवतु । सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु । ॐ अमृताभिषेकोऽस्तु ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः अभिषेकं समर्पयामि॥ इति क्षेपकम् ॥ पश्चात् देवतीर्थं धृत्वा ॐ केशवाय नमः स्वाहा । ॐ नारायणाय नमः स्वाहा । ॐ माधवाय नमः स्वाहा इति पठित्वाऽऽचामेत् ॥ ' हस्तप्रक्षालनम् '—ॐ गोविन्दाय नमः ॥ ' वस्त्रम् '—सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे । मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचꣳसा० ॥ ( वा० सं० ३१ । ६ ) भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः वस्त्रं ( वस्त्राऽभावे-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ऽक्षतान् ) समर्पये ॥ 'यज्ञोपवीतम्'—नवभिस्तन्तुभिर्युक्ते त्रिगुणं देवतामयम् । उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ तस्माद॒श्वाऽअ० ॥ वा० सं० ३१ । ८ ) । ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः यज्ञोपवीतं ( यज्ञोपवीताऽभावेऽक्षतान् ) समर्पये ॥ ' गन्धम् '—श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठं चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ तं य॒ज्ञ-ज्ञम्ब० ॥ ( वा० सं० ३१।९ ) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः गन्धं समर्पयामि ॥ अथ ' क्षेपकम् '—' अक्षताः '—अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ अक्ष॒न्नमी॑मदन्त॒ह्यव॑ प्रि॒याऽअ॑धूषत । अस्तो॑षत॒ स्वभा॑नवो॒ विप्रा॒ नवि॑ष्ठयामती॒ योजा॒न्विन्द्र॑ते॒ हरी॑ ॥ ( वा० सं० ३।५१ ) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः अक्षतान्समर्पयामि—इति कुंकुमाक्ताँस्तण्डुलान्निवेदयेत् । शालग्रामे तु पुष्पाण्येव 'अक्षतास्तु यवाः प्रोक्ताः' इति यवानेव वा समर्पयेत् ॥ ' पुष्पाणि '—माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ स॒त्पुरु॑षं० ॥ (३१।१०) । ॐ भूर्भुवःस्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः पुष्पाणि समर्पये ॥ गृहवास्तुपुरुषपूजनम्'—पूजितोऽसि मया वास्तो होमाद्यै-रर्चनैः शुभैः । प्रसीद पाहि देवेश देहि मे गृहजं सुखम् ॥ ॐ वास्तो॒ष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः यत्वे॒महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे॑ शं॒चतुष्पदे ॥ ( पा० गृ० ) ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गृहवास्तुपुरुषाय नमः गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्प-यामि नमस्करोमि ॥ गणेशाय ''दूर्वाङ्कुरार्पणम्'—विष्ण्वादिसर्वदेवानां दूर्वे त्वं प्रीतिदा सदा । क्षीरसागरसम्भूते वंशवृद्धिकरी भव ॥ ॐ काण्डा॑त्काण्डात्प्ररो॑हन्ती॒ परु॑षःपरुषस्प॒रि । एवा नो॑ दूर्वे॒ प्रत॑नु सहस्रे॑ण॒ शते॑न च ॥ ( वा० सं० १३ । २० ) । 'सूर्याय पुष्पा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



र्पणम्'-भानो दिवाकरादित्य मार्तण्ड जगतां पते । अपांनिधे जगद्रक्ष भूत-भावन भास्कर ॥ प्रणतार्तिहरादित्य विश्वचिन्तामणे विभो । विष्णो हंसादि-भूतेश पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ स॒विता त्वा॑ स॒वाता॑ꣳ सुवता-म॒ग्निर्ग्गृ॒हप॑तीना॒ꣳ सोमो॒ व्वन॒स्प्पती॑नाम् । बृह॒स्प्पति॑र्वा॒च-ऽइन्दो॒ज्यैष्ठ्या॑य रु॒द्रः प॒शुब्भ्यो॑ मि॒त्रः स॒त्त्यो व्वरु॑णो॒ धर्म्म॑पती-नाम् ॥ (वा० सं० ९।३९ ) । ' देव्यै पुष्पार्पणम् '-सेवन्तिकाबकुलच-म्पकपाटलाब्जै पुन्नागजातिकरवीररसालपुष्पैः । बिल्वप्रवालतुलसीदलमालती-भिस्त्वां पूजयामि जगदीश्वरि मे प्रसीद ॥ ॐ श्रीश्च॑ ते ल॒क्ष्मीश्च॒ पत्न्या॑-वहोरा॒त्रे पा॒र्श्वे नक्ष॑त्राणि रू॒पम॒श्विनौ॒ व्यात्त॑म् । इ॒ष्णन्नि॑षाणा॒-मुम्म॑ऽइषाण सर्वलो॒कम्म॑ऽइषाण ॥ ( वा० सं० ३१ । २२ ) ॥ 'शंकराय बिल्वपत्रार्पणम्' ॐ नमो॑ वि॒ल्मिने॑ च कव॒चिने॑ च॒ नमो॑ व॒र्म्मिणे॑ च वरु॒थिने॑ च॒ नम॑ श्रुताय॑ च श्रुतसे॒नाय॑ च॒ नमो॑ दुन्दु॒भ्याय चाहन॒न्या॑य च ॥ ( वा० सं । १६।३५ ॥ ) ' विष्णवे तुलसीदलार्पणम् '-तुलसी हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीन् । भवमोक्षप्र-तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम् ॥- व्विष्णो॒ः कर्म्मा॑णि पश्यत॒ यतो॑ वृतानि॑ परस्प्प॒शे । इन्द्र॑स्य॒ युज्यः॒ सखा॑ ॥ ( वा० सं० ११ । ३३ ) ॥ 'सौभाग्यद्रव्यम्'-हरिद्रां कुंकुमं चैव सिन्दूरं कज्जलान्वितम् । सौभाग्यद्रव्य-संयुक्तं गृहाण परमेश्वरि ॥—ॐ अहि॑रिव भो॒गैः पर्य्ये॑ति बा॒हु-ञ्ज्याया॑ हे॒तिम्प॑रि॒बाध॑मानः ह॒स्त॒ग्घ्नो विश्वा॑ व॒युना॑नि वि॒द्वा-न्पुमान्पुमा॑ꣳस॒म्परि॑पातु वि॒श्वत॑ः ॥ ( वा० सं० २९।५१ ) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः सौभाग्यद्रव्याणि समर्पये । ' धूपः '-वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रति-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



गृह्यताम् ॥ ॐ ब्राह्मणो० ॥ ( वा० सं० ३१ । ११ ) भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपंचकाय नमः धूपमाघ्रापयामि । 'घृतनीराजनदीपः'—आज्यं च वर्ति-संयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह ॥—ॐ चन्द्रमा मनसो० ॥ वा० सं० । ३१ । १२ ) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः घृतनीराजनदीपं दर्शये । नैवेद्यम्' शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम् । उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् । ॐ नाभ्या आ० ॥ ( वा० सं० ३१ । १३ । ) ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपंचकाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि ॥ 'पानीयम्'—एलोशीरलवङ्गादिकर्पूरपरिवासितम् । प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर ॥ उत्तरापोशनं हस्तप्रक्षालनं मुखप्रक्षालनम् आचमनीयं च समर्पये करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पये ॥ 'मुखवासार्थे ताम्बूलम्' पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् । एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ यत्पुरुषेण० ॥ ( वा० सं० । ३१ । १४ ) भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः ताम्बूलं समर्पये । 'फलम्'—इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥— ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः । बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वꣳहसः ॥ (वा० सं० । १२ । ८९) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपंचकाय नमः फलं समर्पये ॥ 'दक्षिणासमर्पणम्' तत्र मन्त्रः—हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् । स दाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ( वा० सं०—१३ । ४ ) ॥ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपंचकाय नमः दक्षिणां समर्पये ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कर्पूरनीराजनमादाय देवसम्मुखे भ्रामयन् कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् । आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥-इदꣳहविः प्रजनंनम्मेऽअस्तु दशवीरꣳसर्व्वगणꣳस्वस्तयो आत्कमुसानिं प्रजासानिं पशुसानिं लोकुसदर्य्यभयुसानिं । अग्निःप्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नम्पयो रेतोऽअस्म्मासु धत्त ॥ वा० सं०-१९ । ४८) ॐ भूर्भुवः स्वः श्री अमुकदेवपंचकाय नमः कर्पूरारार्तिक्यं दर्शये॥ 'प्रदक्षिणा'-तत्र मन्त्रः-यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि वै । तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणापदेपदे ॥ ॐ सप्तास्या० ( वा० सं०-१६।१९ ) ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीअमुकदेवपञ्चकाय नमः आरार्तिक्यसहितां प्रदक्षिणां समर्पये ॥ पुष्पाञ्जलिमादाय समर्पयेत् । तत्र मन्त्रः- नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च । पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ युज्ञेनं युज्ञ० ॥ ( वा० सं० ३१।१६ ) ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीअमुकदेवपञ्चकाय नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पये । 'पार्षदपूजा'-विष्वक्सेनोद्भवाकूरेत्यादि यथा यथा इष्टदेवता गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूजनीयाः ॥ यथा-ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपार्षदपूजापरिपूर्णार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पये । नमस्करोमि । सफलमर्घ्यमादाय समर्पयेत् । तत्र मन्त्रः-रक्ष रक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्यरक्षक । भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥ वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ॥ एतेन मन्त्रेण पूगीफलहिरण्यगन्धाक्षतपुष्पैः संयुक्तजलेन अर्घ्यमेकं दद्यात् । अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम ॥ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीअमुकपंचायतनदेवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यंसमर्पयामि ॥ ' प्रार्थना '-विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सुफलाय जगद्धिताय । नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥ १ ॥ भूत्यालेपन भूषितः प्रतिलसन्नेत्राग्निदीपांकुरः कण्ठे पन्नगपुष्पदामसुभगो गङ्गाजलैः पूरितः । ईषत्ताम्रजटाऽग्रपल्लवयुतो न्यस्तो जगन्मण्डपे शम्भुर्मङ्गलकुम्भतामुपगतो भूया-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्सतां श्रेयसे ॥ २ ॥ पुरारितनुभागिनी दुरितसंघसंहारिणी भजन्मतिविवर्धिनी प्रबलदावोन्मर्दिनी । तुषारगिरिनन्दिनी मुनिहृदन्तरालम्बिनी सदैव शुभवर्धिनी हरनितम्बिनी पातु वः ॥ ३ ॥ कचकुचचिबुकाग्रे पाणिषु व्याप्ततेषु प्रथमजलधिपुत्रीसङ्गमेऽनङ्गधाम्नि । ग्रथितनिबिडनीवीबन्धनिर्मोक्षणार्थं चतुरधिककराशः पातु वश्चक्रपाणि ॥ ४ ॥ यद्विन्वभस्मरमणिर्यदपां प्रसूतिर्नक्तं निषिञ्चति यदग्निशिखासु भासः ॥ ज्योत्स्ना निशासु हिमधाम्नि च यन्मयूखाः पूषा पुराणपुरुषः स नमोऽस्तु तस्मै ॥ ५ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः प्रार्थना समर्पये ॥ ततः साञ्जलि " आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥ अन्यथा शरणंनास्ति त्वमेव शरणं मम । तस्मात्कारुण्यभावेन रक्षस्व परमेश्वर ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च । आगता सुखसम्पत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर । यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् । तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ अर्पणम्–अनेनावाहनासनपाद्यार्घ्याचमनीयस्नानवस्त्रोपवीतगन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलदक्षिणाप्रदक्षिणामन्त्रपुष्पैः षोडशोपचारैः (अन्योपचारैश्च) यथाज्ञान यथामिलितोपचारद्रव्यैः कृतेन पूजनकर्मणा ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीअमुकदेवपञ्चकं प्रीयतां न मम ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ' शङ्खभ्रामणम् '–शङ्खमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि । अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥ इति प्रार्थयेत् ।

**अमुकदेवपञ्चकनीराजनम्**—करुणापारावारं कलिमलपरिहारम् । कद्रूसुतशयितारं करधृतकहारम् । घनपटलाभशरीरं कमलोद्भवपितरम् । कलये विष्णुमुदारं कमलाभर्तारम् ॥ जयदेव जयदेव जपकेशव हर गजमुख सवितर्नगतनयेऽहं चरणौ तव कलये ॥ जयदेव जयदेव ॥ १ ॥ भूधरजारतिलीलं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मङ्गलकरशीलं भुजगेशस्मृतिलोलं भुजगावलिमालम्। भूषाकृतिमतिविमलं संधृतगाङ्गजलं भूयो नौमि कृपालं भूतेश्वरमतुलम् ॥ जयदेव० ॥ २ ॥ विन्नारण्यहुताशं विहिताऽनयनाशंविपदवनीधरकुलिशं विधृताङ्कुशपाशम् । विजयार्वाज्वलिताशं विदलितभवपाशं विनताः स्मो वयमनिशं विद्याविभवेशम् ।जयदेव० ॥ ३ ॥ कश्यपसूनुमुदारं कांलिन्दीपितरं कालत्रितयविहारं कामुकमन्दारम्। कारुण्याब्धिमपारं कालानलमदरं कारणतत्त्वविचारं कामय ऊष्मकरम् ॥ जयदेवं० ॥ ४ ॥ निगमैर्नुतपदकमले निहतासुरजाले हस्ते धृगकरवा निर्जरजनपाले। नितरां कृष्णकृपाले निरवधिगुणल्लीले निर्जरनुतपदकमले नित्योत्सवशीले ॥ जयदेव० ॥ ५ ॥ इति देवपञ्चकनीराजनम् ॥

**देवीनीराजनम्**—प्रवरातीरनिवासिनि निगमप्रतिपाद्ये । पारावारविहारिणि नारायणि हृद्ये । प्रपञ्चसारे जगदाधारे श्रीविद्ये । प्रपन्नपालननिरते मुनिवृन्दाराध्ये॥जय देवि जय देवि जय मोहिनिरूपे । मामिह जननि समुद्धर पतितं भवकूपे॥१॥ दिव्यसुधाकर वदने कुन्दोज्ज्वलरदने पद नखनिर्जितमदने मधुकैटभ कदने । विकसितपंकजनयने पन्नगपतिशयने खगपतिवहने गहने कंटवनदहने॥ जयदेवि० ॥ २ ॥ मञ्जीराङ्कितचरणे मणिमुक्ताभरणे कञ्चुकिवस्त्रावरणे वक्राम्बुजधरणे । शक्रामयभयहरणे भूसुरसुखकरणे करुणां कुरु मे शरणे गजनक्रोद्धरणे ॥ जय देवि० ॥ ३ ॥ छित्त्वा राहुग्रीवां पासि त्वं विबुधान् ददाति मृत्युमनिष्टं पीयूषं विबुधान् । विहरसि दानवऋद्धान्समरे सिद्धान् मध्यमुनीश्वरवरदे पालय संसिद्धान् ॥ जय देवि० ॥ ४ ॥ इति देव्या नीराजनं समाप्तम् ।

**विष्णुनीराजनम्**-वंदे गोपालं मृगमदशोभितभालं करुणाकल्लोलं। जय देव जयदेव०॥निर्गुणसगुणाकारं संद्धतभूभारं मरहरनंदकुमारं मुनिजनसुखकारम्। वृन्दावनसञ्चारं कौस्तुभमणिहारं करुणापारावारं गोवर्धनधारम् । जयदेव जय देव० ॥ १ ॥ कुञ्चितकुंतलनीलं शरदिन्दुवदन मणिगणमंडितकुण्डलराजिश्रुतियुगलम् । विकसत्पंकजनयनं विलसद्भ्रूयुगलं बिम्बाधरमतिसुन्दरनासामणि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



लोलम्। जयदेव जयदेव० ॥२॥ कम्बुग्रीवं कौस्तुभमणिकण्ठाभरणं श्रीवत्साङ्कित-वक्षोलम्बितवनमालम्। भूषितबाहुयुगलं करतलधृतवेणुं त्रिवलीशोभितमध्यं शय-धृतनवपद्मम् ॥ जयदेव जयदेव०॥३॥ मुरलीवादनलीलासप्तस्वरगीतं स्थलचर-जलचर-वनचर-चारितसङ्गीतम्। स्तम्भितयमुनातोयं लोकोत्तरचरितं गोपीजनता-मोहनकारं श्रीकान्तम्। जयदेव जयदेव० ॥ ४ ॥ रासक्रीडानिरतं परिवेष्टित-ललनं मध्ये ताण्डवसक्तं पंकजदलनयनम्। कुसुमामोदमुदारं मंदस्मितवदनं कालियफणिवरदमनं यक्षेश्वरहननम् ॥ जयदेव जयदेव० ॥५॥ मञ्जुलमेखल-मध्यं पीताम्बरममलं शोभितनूपुरगर्जितविलसत्पदयुगलम्। गोगोपीपरिवेष्टित-मञ्जितयमुनाकूलं व्यासाभयदं सुखदं भुवनत्रयपालम्। जयदेव जयदेव०॥६॥

इति विष्णोर्नीराजनम्।

अथ प्रार्थना—हरिः ॐ ॐ ग॒णाना॑न्त्वा ग॒णप॑तिꣳ हवामहे प्रि॒याणा॑न्त्वा प्रि॒यप॑तिꣳ हवामहे निधी॒नान्त्वा॑ निधि॒पति॑ꣳ हवामहे व॒सो मम। आहम॑जानि गर्ब्भ॒धमा त्वम॑जासि गर्ब्भ॒धम्॥ (वा० सं० २३। १९) ॥ श्रीश्च॑ ते ल॒क्ष्मीश्च॒ पत्न्या॑वहोरा॒त्रे पा॒र्श्वे नक्ष॑त्राणि रू॒पम॒श्विनौ॒ व्यात्त॑म्। इ॒ष्णन्नि॑षाणा॒मुम्म॑ऽइषाण सर्व्वलो॒कम्म॑ऽइषाणा॥ (वा० सं० ३१। २२ ॥ अम्बे अऽम्बि॒केम्बा॑लिके॒ न मा नयति॒कश्च॒न। सस॑स्त्यश्व॒यः सुभ॑द्रिकाङ्काम्पीलवा॒सिनी॑म्॥ (वा० सं० २३। १८)॥ तंत॑ऽए॒त-मनु॒जोष॑म्भराम्म्येषने॒त्त्वद॑पनेतया॑ताऽअग्नेः। प्रि॒यम्पाथोपी॑तम्॥ (वा० सं० २। १०)॥ स॒ꣳ स॒वभा॑गास्त्थे॒षा बृ॒हन्तः॑ प्रस्तरे॒ष्ठाः प॑रि॒धेया॑श्च दे॒वाः॥ (वा० सं० २। १८)॥ मू॒र्द्धा-न॑न्दि॒वो ऽअ॑र॒तिम्पृ॑थि॒व्या दृ॒श्श्वान॒रमृतऽआजा॒तम॒ग्निम।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कविꣳ सम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्त देवाः । ( वा० सं० ३३ । ८ ) ॥ प्रोहयमापः सोरऽआगतो वरुणऽआसन्द्यामासन्नोग्निराग्नीध्र्य ऽइन्द्रो हविर्द्धानेथर्वोपावह्रियमाणो विश्वेदेवाः ॥ ( वा० सं० ८ । ५६ ) ॥ विश्वेदेवा अꣳशुषुन्न्युप्तो विष्णुराप्रीतपाऽआप्प्याय्यमानो यमः सूयमानो विष्णुः सम्भ्रियमाणो वायुः पूयमानः शुक्रः पूतः शुक्रः क्षीरश्श्रीर्म्मन्थी सक्तुश्श्रीर्विश्वेदेवाः ॥ ( वा० सं० ८ । ५७ ) ॥ पितेर्वधि सूनवऽआसुशेवा स्वावेशातन्वा संविशस्वाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ॥ ( वा० सं० १४ । २ ) ॥ पृथिव्याः पुरीषमस्यप्सोनाम तान्त्वा विश्वेऽअभिगृणन्तु देवाः ॥ ( वा० सं० १४ । ४ ) ॥ षोडशी स्तोमऽओजो द्रविणञ्चतुश्चत्वारिꣳशः स्तोमोत्रर्चो द्रविणम् । अग्नेः पुरीषमस्यप्सोनासतान्त्वा विश्वेऽअभिगृणन्तु देवाः ॥ ( वा० सं० १५ । ३ ) ॥ समिद्धेऽअग्नावधि मामहानऽउक्थपत्रऽईड्यो गृभीतः । तप्तङ्घर्म्मम्परिगृह्यायजन्तोर्ज्जा यद्द्यज्ञमयजन्त देवाः ॥ ( वा० सं० १७ । ५५ )॥ यस्येमः प्रदिशो यस्यबाहू कस्म्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ( वा० सं० २५ । १२ )॥ यऽआत्त्मदा बलदा यस्य विश्वऽउपासते । प्रशिषं य्यस्य देवाः ॥ ( वा० सं० २६ । १३ )॥ अनानास्त्वन्नोऽअदितिः कृणोतु क्षत्रन्नोऽअश्वो वनताꣳ हविष्म्मान् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



(वा० सं० २५ । ४५) ॥ इ॒मानु॑क॒म्भुव॑ना सीषधा॒मेन्द्रश्च॒ विश्वे॑ च दे॒वाः ॥ (वा० सं० २५ । ४६) ॥ बृह॑स्प्पते सवित-र्व्वो॒धयै॑न॒ꣳ स ꣳ शि॑तञ्जित्सन्त॒राꣳ स ꣳ शि॑शाधि । व॒र्द्धयै॑नम्महु॒ते सौभ॑गाय॒ विश्व॑ऽएन॒मनु॑मदन्तु दे॒वाः ॥ (वा० सं० २७ । ८) ॥ प्र॒जाप॑ते॒स्तप॑सा वावृधा॒नः स॒द्यो जा॒तो द॑धिषे य॒ज्ञम॑ग्ने । स्वाहा॑कृतेन ह॒विषा॑ पुरोगा या॒हि सा॒द्ध्या ह॒विर॑दन्तु दे॒वाः ॥ (वा० सं० २८ । ११) ॥ स॒द्यो जा॒तो व्व्या॑ममीतय॒ज्ञम॒ग्निर्दे॒वाना॑मभवत्पुरो॒गाः । अ॒स्य होतुः॑ प्र॒दिश्यृ॒तस्य॑ वा॒चि स्वाहा॑कृतꣳ ह॒विर॑द्न्तु दे॒वाः ॥ (वा० सं० २९ । ३६) ॥ अ॒स्म्मे रु॒द्रा मे॒हना॒ पर्व्व॑तासो वृत्र॒हत्ये भर॑हूतौ स॒जोषा॑ः । य शꣳस॑ते स्तुव॒ते धायि॑ प॒ज्रऽइन्द्र॑-ज्ज्येष्ठाऽअ॒स्माꣳ॥ऽअव॑न्तु दे॒वाः (वासं सं० ३३ । ५०) ॥ न॒हि म्प्पश॒मवि॑दन्न॒न्यम॒स्माद्द्वै॑श्वान॒रात्पु॑रऽए॒तार॑म॒ग्ग्नेः । ए॒मे॑-नमवृधन्न॒मृता॒ऽअस॑र्त्यं॒वैश्वान॒रङ्क्षेत्र॑जित्याय दे॒वाः ॥ (वा० सं० ३३ । ६०) ॥ इति सम्प्रार्थ्याञ्जालौ पुष्पाण्यादाय ॐ य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञेम-यजन्त दे॒वास्ताति॒धर्म्माणि प्प्रथ॒मान्न्या॑सन् । ते ह॒ नाक॑म्महि॒ मानः॑सचन्त॒ यत्र॒ पूर्व्वे॑ सा॒द्ध्याः॑सन्ति दे॒वाः ॥ (वा० सं० । १६ ॥ ॐ रा॒जा॒धि॒रा॒जय॑ प्रसह्यसा॒हिने॑ । नमो॑व॒यंवै॑श्रणाय॑ कुर्महे । स मे॒ कामा॒न्काम॒कामा॑य॒ मह्य॑म् का॒मे॒श्व॒रो वै॑ श्रव॒णो द॑दातु । कु॒वेराय॑ वैश्र॒व॒णाय॑ । म॒हा॒रा॒जाय॒ नमः॑ ॥२१॥ ॐ स्वस्ति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् । पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे । आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥ २२ ॥ ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् । सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ॥ ( वा० सं० १७ । १९ ) ॥ इति पुष्पाञ्जलिं मन्त्रैः समर्प्य प्रदक्षिणां कुर्यात् । तत्र मन्त्रः-ॐ सुपर्णास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः । देवा यद्यज्ञन्तन्वानाअबध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥ ( वा० सं० । १५ ) ॥ इति प्रदक्षिणां नमस्कारं च कृत्वा ब्राह्मणाशिषो गृह्णीयात् ॥

आशीर्वादमंत्राः हरिः- ॐ पृथिव्याअहमुदन्तरिक्षमारुहमन्तारिक्षाद्दिवमारुहम् । दिवो नाकस्य पृष्ठात्स्वर्ज्योतिरगामहम् ॥ ( वा० सं० १७ । ६७ ) स्वर्यन्तो नापेक्षन्तऽआद्याꣳ रोहन्ति रोदसी यज्ञं ये विश्वतोधारꣳ सुविदाꣳसो वितेनिरे ॥ ( वा० सं० १७ । ६८ ) अग्ने प्रेहि प्रथमो देवयुताञ्चक्षुर्देवानामुत मर्त्यानाम् । इयक्षमाणा भृगुभिः सजोषाः स्वर्यन्तु यजमानाः स्वस्ति ॥ वा० सं० । १७ ६९ ) बोधा मे ऽअस्य वचसो यविष्ठ मꣳहिष्ठस्य प्रभृतस्य स्वधावः । पीयति त्वोऽअनु त्वो गृणाति वन्दारुस्ते तन्वं वन्देऽअग्ने ॥ (वा० सं० । १२।४२)॥स बोधि सुरिर्मघवा वसुपते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पते वसुंदावन् ।युयोद्धुचस्मद्द्वेषाꣳसिविश्वकर्म्मणे स्वाहा॥ (वा० सं० १२।४३) ॥ पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवꣳ समिंधतामपुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैꣳ। घृतेन त्वन्तन्वं वर्द्धयस्व सत्याꣳसन्तु यजमानस्य कामाꣳ ॥ वा० सं० १२। ४४) ॥ यथेमां वाचंङ्कल्याणीमावदानि जनेभ्यꣳ । ब्रह्मराजन्याभ्याꣳशूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानान्दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयम्मे कामꣳ समृद्ध्यतामुपमादो नमतु ॥ (वा० सं० २६। २) स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाꣳ स्वस्ति नः ÷ पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु (वा० सं २५। १९) शतं भवति शतायुर्वै पुरुषः शतेन्द्रियऽआयुरेवेन्द्रियं वीर्य्यमात्मन्धत्ते। (ब्राह्मणमन्त्रः ॥) स्वस्तिमन्त्रार्थाः सफला सन्तु। आराध्यदेवता सुप्रसन्नाः वरदा भवतु। अभिलषितमनःकामनासंसिद्धिरस्तु। यजमानो ब्रूयात्-तथाऽस्तु। इत्याशीर्वादमन्त्राः ॥

**मानसपूजा**--वाराहसंहितायां हयग्रीवः--आवाहनादिपुष्पान्ता विधयः कथिता बुधैः। ते सर्वे ध्यानवद्योज्याः पूजा सा मानसी मता ॥

अथ **शङ्करमानसपूजास्तोत्रम्**--रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदान्वितं चन्दनम्। जातीचम्पकबिल्वपत्रसहितं पुष्पं च धूपस्तथा दीपो देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥ १ ॥ सौवर्णे मणिरत्नखंडरचिते पात्रे घृतं पायसं भक्ष्यं पंचविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानसम्। शाकानामयुतं जलं रुचिकरं सुस्निग्धशाल्योदनं तांबूलं मनसा मया विरचितं पूजां फलं स्वीकुरु ॥ २ ॥ आदर्शो व्यजनं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



च चामरयुगं छत्रं तथा निर्म्मलं वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा। साष्टांगप्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा चैतत्समस्तं मया संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥ ३ ॥ आत्मां त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितः। संचाराः प्राणाः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शंभो तवाराधनम् ॥४॥करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्। विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥ ५ ॥

इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं मानस पूजास्तोत्रं समाप्तम् ॥

**अथ संक्षेपतो देवपूजनपद्धतिः**[1] '-तत्रादौ आचम्य प्राणानायम्य ' मन्त्रलोच्चारणम् '-ॐ स्वस्ति न इन्द्रो० ॥ ( वा० सं०-२५। १९ ) ' नमस्कारः '-श्रीमन्महागणाधिप इत्यारभ्य विनायकं गुरुं पर्यन्तम् ॥ ' सङ्कल्पः '-विष्णुर्विष्णुः इत्यारभ्य श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं षोडशोपचारैरमुकदेवपञ्चकार्चनमहं करिष्ये ॥ ' कलशपूजनम् '-( कलशस्य०॥ कुक्षौ तु सा० ) ॥ ॐ तत्त्वायामि० ॥ ( वा० सं० १८। ५९) ॐ भूर्भुवः स्वः कलशस्थवरुणाय नमः आवाहयामि । सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत--पुष्पाणि समर्पये । नमस्करोमि ॥ कलशोदकेन पूजाद्रव्याणि तथा आत्मानं च प्रोक्षयेत्--अपवित्रः० ॥ ॐ आपोहि० ॥ ( वा० सं० ११ । ५०-५२ ) कलशमुद्रां प्रदर्श्य ॥ ' शङ्खपूजनम् '-(शङ्खादौ०॥ त्रैलोक्ये०॥त्वं पुरा० ) ॥ ॐ अग्निर्ऋषिःपवमा० ॥ ( वा० सं० ३६। ९ ) ॐ भूर्भुवः स्वः शङ्खस्थदेवतायै नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धपुष्पाणि समर्पये नमस्करोमि ॥ शङ्खमुद्रां प्रदर्श्य ॥ ' घण्टापूजनम् '-( आगमार्थं तु० )॥

---

१—अस्यां पद्धतौ समासतो दर्शिता मन्त्राः श्लोका वा प्राक् प्रदर्शिताः। कलशमुद्रा च प्रागुक्ता।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ॐ सुपर्णोसि गुरु० ॥ ( वा० सं० १२ । ४ ) ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टस्थाय गरुडाय नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धपुष्पाणि समर्पये नमस्करोमि ॥ ( घण्टानादंकुर्यात् ) ॥ घण्टामुद्रां प्रदर्श्य ॥ ' अथ पूजा'-तत्रादौ ' आवाहनम्'--( आगच्छ भग० ) ॥ ॐ सहस्रशीर्षा० ॥ ( वा० सं० ३१ । १ ) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः आवाहनपूर्वकं ध्यानं समर्पये । ' आसनम् '—( रम्यं सुशोभ० ) ॥ ॐ पुरुष एवे० ॥ ( वा० सं० ३१ । २ ) भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः आसनं समर्पये ॥ ' पाद्यम् '--( उष्णोदकंनि० ) ॥ एतावानस्य महि० ॥ ( वा०—सं० ३१ । ३ ) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः पाद्यं समर्पये ॥ ' अर्घ्यम् '-(अर्घ्यं गृहा० ) ॥ त्रिपादूर्ध्वऽउ० ॥ ( वा० सं०—३१ । ४ ) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः अर्घ्यं समर्पये ॥ 'आचमनीयम् ' ॥ ( सर्वतीर्थसमा० ) ॥ ॐ ततो विराड० ॥ ( वा. सं.-- ३१ । ५ ) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः आचमनीयं समर्पये । ' स्नानम् '-( गङ्गासरस्वतीरे० ) ॥ ॐतस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽसम्भृत० ( वा. सं. ३१ । ६ ) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपञ्चकाय नमः स्नानं समर्पये ' पंचामृतस्नानम् ' ॥ ( पयो दधि घृ० ) ॐ पञ्चनद्यऽस० ॥ ( वा.-सं. ३४ । ११ ) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपंचकाय नमः पंचामृतस्नानं समर्पये । पंचामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पये । अमुकदेवपञ्चकप्रसाधनार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पये ॥ अभिषेकार्थे निर्माल्यं विसृज्य । पुनश्च गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्प्य ( विष्णोः तुलसीदलं शम्भोः बिल्वपत्रं समर्प्य ) पश्चात् अभिषेकं तत्र तत्तद्देवमन्त्रैः कुर्यात् । वस्त्रेण देवप्रतिमां प्रमृज्य तत्तत्स्थाने स्थापयेत् । ' वस्त्रम् '—( सर्वभूषाधिके सौ० ) ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सा० ॥ ( वा. सं. ३१ । ७ ) ॐ भूर्भुवः स्व-

१- घण्टामुद्रापि प्रागुक्ता मुद्राप्रस्तावे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अमुकदेवपंचकाय नमः वस्त्रं वस्त्राऽभावे अक्षतान् समर्पये ॥ ' यज्ञोपवीतम्'--( नवभिस्तन्तु० ) ॥ **ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व०** ॥ ( **वा. सं. ३१ । ८** ) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपंचकाय नमःयज्ञोपवीतं ( यज्ञोपवीताऽभावे अक्षतान् ) समर्पये ॥ ' गन्धम् ' -- ( श्रीखण्डं चन्दनं० ) ॥ **ॐ तं यज्ञं बर्हिषि०** ॥ ( **वा. सं. ३१ । ९** ( ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपंचकाय नमः गन्धम् अक्षतसहितं समर्पये ॥ विष्णुं चक्रं चाऽक्षतैर्नार्चयेत् ) ॥ ' पुष्पम् ' --( माल्यादीनि सु० ) ॥ **ॐ यत्पुरुषं हवि०** ॥ ( **वा. सं. ३१ । १०** ) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपंचकाय नमः यथाकालोद्भवऋतु पुष्पाणि सौभाग्यद्रव्यसहितानि समर्पये । अत्रावसरे विष्णुशिवगणेशादिदेवेभ्यः तुलसीबिल्वदूर्वाकुरादि क्रमेण समर्पयेत् ॥ ' गृहवास्तुपुरुषपूजा' पूजितोसि मया वास्तो होमाद्यैरर्चनैः शुभैः । प्रसीद पाहि देवेश देहि मे गृहजं सुखम्॥--ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवा नः । यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शञ्चतुष्पदे ( पा० गृ० सू० मन्त्रः ) ॐ भूर्भुवः स्वः गृहवास्तुपुरुषदेवतायै नमः सकलपूजापरिपूरणार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पये ॥ नमस्करोमि ॥ ' धूपः '--( वनस्पतिरसो० ) ॥ **ॐ ब्राह्मणोस्य मुखं०** ॥ ( **वा. सं. ४१ । ११** ) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपंचकाय नमःधूपं दर्शयामि ॥ ' दीपः '--( आज्यं च वर्तिसं० ) ॥ **ॐ चन्द्रमा मनसो०** ॥ ( **वा. सं. ३१ । १२** ) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपंचकाय नमः दीपं दर्शये ॥ 'नैवेद्यम्' ॥—( शर्कराघृतसं० ) ॥ **ॐ नाभ्याआसीदन्तरि०** ॥ ( **वा० सं० ३१ । १३** ) । ( इति मन्त्रेण तुलसीदलेन नैवेद्यं सम्प्रोक्ष्य ) पश्चात् ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा । इति मन्त्रेण दक्षिणहस्ताङ्गुलीः समाना कृत्वा वामहस्तेन स्वनेत्रा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


च्छादनं कृत्वा नैवेद्यान्ते हस्तप्रक्षालनार्थे मुखप्रक्षालनार्थे पानीयं समर्पये। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पये ॥ ॐ केशवाय नमः स्वाहा। ॐ नारायणाय नमः स्वाहा। ॐ माधवाय नमः स्वाहा। इत्याचमनं समर्पये ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपंचकाय नमः घृतशर्करादि उपहारनैवेद्यं सिद्धान्नं सोपस्करनैवेद्यं वा समर्पये ॥ 'ताम्बूलम्'—(पूगीफलं महद्दि०) ॥ॐ यत्पुरुषेण हविः (वा० सं० ३१। १४)। ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपंचकाय नमः पूगीफलताम्बूलं समर्पये ॥ कृतस्यामुकदेवपंचकार्चनस्य साद्गुण्यार्थं दक्षिणाद्रव्यं (दक्षिणाद्रव्याभावे यथासम्भवमितरत्) 'प्रदक्षिणा'—(यानि कानि पा०) ॥ ॐ सप्तास्यासन्परिधयः ॥ (वा० सं० ३१। १५)। ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपंचकाय नमः प्रदक्षिणां समर्पये। ततो यथासम्भवं घृतवर्तिनीराजनं कर्पूरनीराजनं वा विदधीत। अमुकदेवपंचकं नीराजयामि ॥ 'मन्त्रपुष्पयुक्तो नमस्कारः'—(नानासुगन्धिपुष्पाणि य०) यज्ञेन यज्ञमयः (वा० सं० ३१। १६) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपंचकाय नमः मन्त्रपुष्पयुक्तं नमस्कारं समर्पय ॥ 'पार्षदपूजा'—इष्टदेवपंचकाय पार्षदगणा गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूजनीयाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकपार्षदान् गन्धाक्षतपुष्पैः पूजये। नमस्करोमि ॥ 'अर्पणम्'—अनेन यथाज्ञानं यथाशक्तिमिलितोपचारद्रव्यं च कृतेन षोडशापचारार्चनेन ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवपंचकं प्रीयताम् न मम ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ 'शंखभ्रामणम्' शंखमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि। अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥ एवं शङ्खोदकेन स्वशरीरं मार्जयेत् ॥ ॐ विष्णवे नमः इति त्रिः। भोजनावसरे तु पूर्वोक्तदेवतीर्थं शयेत्। इति समासेन देवार्चनपद्धतिः ॥

**अथ रुद्राभिषेकविधानम्**—तत्रादौ कर्त्ताऽऽचम्य प्राणानायम्यं दक्षिणहस्ते जलाक्षतमादाय "ॐ तत्सत् ३ अद्यैतस्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



आर्यावर्ते अमुकदेशे अमुकक्षेत्रे देवब्राह्मणादिसन्निधौ अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्म्माहमात्मनः ( स्वयं यजमानस्य वा ) श्रीभवानीशङ्करप्रीतिद्वारा श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तिपूर्वकं धर्म्मार्थकाममोक्षसिद्ध्यर्थममुकव्याधिनिरसनार्थं वा सकलरोगनिवृत्त्यर्थं वा रुद्राभिषेकर्म करिष्ये । तदङ्गत्वेन प्रथमं गणपतेर्भवानीशङ्करस्य पूजनं च करिष्ये । सङ्कल्पं कुर्यात् । तत्र तावत् गणपतिं भवानीशङ्करं च यथोपस्थितेनोपकरणेन सम्पूज्य दक्षिणहस्तेऽभिषेचनोपयोगीपंचामृतदुग्धकुशोदकाद्यन्यतमपूर्वकमधश्छिद्रम्पात्रमादायाविच्छिन्नया धारया भवानीशङ्करोपरि वक्ष्यमाणामन्त्रोच्चारणपूर्वकमविच्छिन्नां पंचामृतादिजलधारां दद्यात् । गणपतेर्भवानीशङ्करस्य च पूजनं तु पार्थिवपूजनविधानाद्युक्तपूजनातिरिक्तमवेति बोध्यम् ।

हरिः ॐ गणानांत्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणांत्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमाऽत्वमजासि गर्भधम् ( वा० सं० २३।१९) गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह । बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ( वा० सं० २३ । ३३ ) द्विपदा याश्चतुष्पदास्त्रिपदा याश्च षट्पदाः । विच्छन्दा याश्च सच्छन्दाꣳसूचीभिः शम्यन्तु त्वा (वा० सं०२३।३४) सुहस्तोमाः सुहछन्दसऽआवृतः सुहप्रमाऽऊर्षयः सुप्तदैव्याः पूर्वेषाम्पन्थामनुदृश्य धीराऽअन्वालेभिरे रथ्यो न रुमीन् । (वा०सं० ३४।४९) ॥ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदु सुप्तस्य तथैवैति । दूरङ्गमञ्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु (वा० सं० १) ॥ येन कर्म्माण्यसोमनीषिणो यज्ञे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कुर्व्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानान्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ २ ॥ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु। यस्मान्नऋते किञ्चन कर्म्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ३ ॥ येनेदभूतम्भुवनम्भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्व्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ४ ॥ यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिँश्चित्तं सर्व्वमोतम्प्रजानान्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ५ ॥ सुषारथिरश्वानिवयन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्व्वाजिनऽइव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरञ्जविष्ठन्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ (वा० सं० ३४। ६) ॥

इति रुद्राभिषेककर्म्मणि प्रथमोऽध्यायः ॥

सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमिं सर्व्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥ पुरुषएवेदं सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ १ ॥ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ २ ॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः। ततोविष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥ ४ ॥ ततो विराडजायत विराजोऽअधिपूरुषः। स जातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५ ॥ तस्मा-



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम् । पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या-
नारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुत ऽऋचः
सामानि जज्ञिरे । छन्दाँसि जज्ञिरे तस्म्माद्यजुस्तस्म्मादजा-
यत ॥ ७ ॥ तस्म्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावोह जज्ञिरे तस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽ अजावयः ÷ ॥ ८ ॥ तं
यज्ञम्बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः । तेन देवाऽ अयजन्त
साद्ध्याऽ ऋषयश्च ये ॥ ९ ॥ यत्पुरुषं व्यदधुःकतिधा
व्यकल्पयन् । मुखाङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्येते
॥ १० ॥ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहू राजन्यः÷ कृतः । ऊरू
तदस्य यद्वैश्यः÷ पद्भ्याञ्शूद्रोऽअजायत ॥ ११ ॥ चन्द्रमा
मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत । श्रोत्राद्वायुश्च
प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ १२ ॥ नाभ्याऽआसीदन्त-
रिक्षः शीर्ष्णो द्यौःसमवर्त्तत । पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रा-
त्तथा लोकाँ ॥ ऽअकल्पयन् ॥ १३ ॥ यत्पुरुषेण हविषा देवा
यज्ञमतन्वत । वसन्तोस्यासीदाज्यङ्ग्रीष्मइध्मःशरद्धविः
॥ १४ ॥ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधः÷ कृताः । देवा
यद्यज्ञन्तन्वानाऽ अबध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥ १५ ॥ यज्ञेन यज्ञमय-
जन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् । ते हु नाकम्महि-
मानः÷ सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याःसन्ति देवाः ( वा० सं०
३१ । १६ ) ॥ इति रुद्राभिषेककर्म्मणि द्वितीयोऽध्यायः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अद्भ्यस्सम्भृतःपृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्म्मणःसमवर्त्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तदप्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥ १ ॥ वेदाहमेतम्पुरुषम्महान्तमादित्यवर्णन्तमसःपरस्तात् । तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यःपन्था विद्यतेऽयनाय ॥ २ ॥ प्रजापतिश्चरति गर्भेऽअन्तरजायमानो बहुधा विजायते। तस्य योनिम्परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन्नह्तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥ ३ ॥ यो देवेभ्योऽआतपति यो देवानाम्पुरोहितः । पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ॥ ४ ॥ रुचम्ब्राह्मञ्जनयन्तो देवाऽअग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वैवम्ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवाऽअसन्वशे ॥ ५ ॥ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥ ६ ॥ (वा० सं० ३१ । २२ ।)॥

इति रुद्राभिषेककर्म्मणि तृतीयोऽध्यायः ॥

हरिः-ॐ आशुःशिशानोवृषभो न भीमो घनाघनःक्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽनिमिषऽएकवीरःशतꣳसेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥ १ ॥ संक्रन्दनेनाऽनिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना । तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नरऽइषुहस्तेन वृष्णा ॥ २ ॥ सऽइषुहस्तैःस निषङ्गिभिर्वशी सꣳस्रष्टास युधऽइन्द्रो गणेन । सꣳसृष्टजि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्सोमपा बाहुशर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता ॥ ३ ॥ बृहस्पते परि दीयारथेन रक्षोहामित्रा२ँ ॥ अप बाधमानꣳ । प्रभञ्जन्त्सेनाꣳ प्रमृणो युध ( जयन्नस्माकमेद्ध्यविता रथानाम् ॥४॥ बलविज्ञायस्स्थविरꣳप्रवीरꣳसहस्वान्वाजी सहमानऽउग्रꣳ । अभिवीरोऽअभिसत्त्वा सहोजा जैत्रमिन्द्ररथमातिष्ठगोवित् ॥ ५ ॥ गोत्रमिदङ्गोविदं वज्रबाहुञ्जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा । इमꣳ सजातास्समनुवीरयध्वमिन्द्रꣳ सखायोऽनुसꣳ रभध्वम् ॥६॥ अभिगोत्राणि सहसागाहमानो दयो वीरꣳशतमन्युरिन्द्रः । दुश्च्यवनꣳपृतनाषाडयुद्ध्योस्माकꣳ सेनाऽअवतुप्रयुत्सु ॥ ७ ॥ इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञꣳपुरऽएत सोमः । देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्रम् ॥ ८ ॥ इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञऽ आदित्यानाम्मरुताञ्छर्धऽउग्रम् । महामनसाम्भुवनच्च्यवानाꣳ घोषो देवानाञ्जयतामुदस्थात् ॥ ॥९॥ उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्वनाम्मामकानाम्मनाꣳसि । उद्वृत्रहन्वाजिनां वाजिन्युद्रथानाञ्जयतां यन्तु घोषाꣳ ॥ ॥१०॥ अस्माकमिन्द्रꣳ समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं यऽइषवस्ता जयन्तु । अस्माकं वीराऽउत्तरे भवन्त्वस्माꣳ ॥ऽउदेवाऽअवताहवेषु ॥ ११ ॥ अमीषाञ्चित्तम्प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि । अभिप्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेना-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मित्रा॒स्तम॑सा सचन्ताम् ॥ १२ ॥ अवसृष्टा॒परा॑ पत॒ शर॑व्ये॒ ब्रह्म॑ सꣳशिते। गच्छा॒मित्रा॒न्प्रप॑द्यस्व॒ मामीषा॒ङ्कञ्च॒नोच्छि॑षः ॥ १३ ॥ प्रेता॒ जय॑ता नर॒ऽइन्द्रो॑ वः॒ शर्म्म॑ यच्छतु । उ॒ग्रा व॑ ÷ सन्तु बा॒हवो॑ऽनाधृष्ष्या यथास॑थ ॥१४॥ अ॒सौ या सेना॑ मरुत॒ꣳपरे॑षाम॒भ्यैति॑न॒ ओज॑सा स्प्पर्द्ध॑माना। ताङ्गूहत॒ तम॒ साप॑व्रतेन॒ यथा॒ऽमीअ॒न्न्योऽअ॒न्न्यन्न जा॒नन् ॥ १५ ॥ यत्र॑ बा॒णाः॒सम्पत॑न्ति कुमा॒रा वि॑शि॒खाऽइ॑व । तन्नऽइन्द्रो॒ ब्बृह॒स्प्पति॒रदि॑तिः॒शर्म्म॑ यच्छतु वि॒श्श्वाहा॒शर्म्म॑ यच्छतु ॥ १६ ॥ मर्म्मा॑णि ते॒ व्वर्म्म॑णा च्छादयामि॒ सोम॑स्त्वा॒ राजा॒मृते॒नानु॑वस्ताम्। उ॒रोर्वरी॑यो॒ व्वरु॑णस्ते कृणोतु जय॑न्त॒न्त्वानु॑ दे॒वा म॑दन्तु ॥ १७ ॥ इति रुद्राभिषेककर्म्मणि चतुर्थोऽध्यायः ॥

हरिः—ॐ विब्भ्राड्बृहत्पिबतु सो॒म्म्यम्मद्ध्वायु॒र्द्दध॑द्य॒ज्ञप॑ता॒वविं॑ह्रुतम्। वात॑जूतो॒ योऽअ॑भि॒रक्ष॑ति॒त्त्मना॑ प्र॒जाꣳपु॑पोष पुरु॒धा व्विरा॑जति ॥ १ ॥ उदु॒त्त्यञ्जा॒तवे॑दसन्देवं॒ व्व॑हन्ति केतव॑ ÷ । दृ॒शे विश्श्वा॑य॒ सूर्य्य॑म् ॥ २ ॥ येना॑पावक॒चक्ष॑सा भुर॒ण्यन्त॒ञ्जना॒ ँ ऽअनु॑। त्त्वं व्व॑रुण॒ पश्य॑सि ॥ ३ ॥ दैव्या॑वद्धर्य्यू॒ऽआग॑त॒ꣳरथे॑न॒ सूर्य्य॑त्त्वचा। मध्वा॑ य॒ज्ञꣳसम॑ञ्जाथे। तम्प्र॒त्त्क्रथा॒यं वे॒नश्श्चि॒त्रन्दे॒वाना॑म् ॥ ४ ॥ तम्प्र॒त्त्क्रथा॑ पू॒र्वथा॑ वि॒श्श्वथे॒मथा॑ ज्ज्ये॒ष्ठता॑तिम्बर्हि॒षद॑ꣳ स्व॒र्व्विद॑म् । प्र॒ती॒ची॒नं वृ॒जन॑न्दोहसे॒ धुनि॑मा॒शुञ्जय॑न्त॒मनु॒ यासुवर्द्धसे॥५॥ ( वा०सं०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



७। १२) अयं वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायु रजसो विमाने। इममपाꣳ सङ्गमे सूर्य्यस्य शिशुन्विप्रा मतिभी रिहन्ति ॥६॥ (वा० सं० ७।१६॥) चित्रन्देवानामुदगादनीकꣳ चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳ सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥ ७॥ (वा० सं० ७। ४२) आनोऽइडाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानर ऽ सविता देवऽएतु अपि यथा युवानो मत्सथानो विश्वꣳ जगदभिपित्वे मनीषा८॥ यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगाऽअभि सूर्य्य। सर्व्वन्तादिन्द्रते वशे९॥ तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य्य। विश्वमाभासि रोचनम् ॥१०॥ तत्सूर्य्यस्य देवत्वंतन्महित्वम्मध्या कर्त्तोर्वितततꣳ सञ्जभार। यदेदयुक्त हरितः ऽ सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुतेसिमस्मै ॥ ११ ॥ तन्मित्रस्यवरुणस्याभिचक्षे सूर्य्यो रूपङ्कृणुते द्योरुपस्थे। अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः ऽ कृष्णमन्यद्धरितꣳ सम्भरन्ति ॥१२ ॥ बण्महाꣳ ॥ ऽअसि सूर्य्य बडादित्य महाꣳ ॥ ऽअसि। महस्ते सतो महिमा पनस्यते द्धादेव महाꣳ ॥ ऽअसि ॥१३॥ बट्सूर्य्य श्रवसा महाꣳ ॥ ऽअसि सत्रा देव महाꣳ ॥ ऽअसि। मन्महादेवानामसुर्य्यः ऽ पुरोहितो विभुज्योतिरदाभ्यम् ॥ १४ ॥ श्रायन्तऽइव सूर्य्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत। वसूनि जाते जनमानऽओजसा प्रतिभागन्नदीधिम ॥१५॥ अद्यादेवाऽउदिता सूर्य्यस्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



निरꣳहसꣳ पिपृता निरवद्द्यात् । तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिꣳ सिन्धुः पृथिवीऽउत द्द्यौꣳ ॥ १६ ॥ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ १७ ॥ ( वा० सं० ३३ । ३०–४३ ) ॥ इति रुद्राभिषेककर्मणि पंचमोऽध्यायः ॥

हरिः–ॐ–नमस्ते रुद्रमन्न्यवऽउतो तऽ इषवे नम ÷ । बाहुब्भ्यामुत ते नम ÷ ॥ १ ॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी । तया नस्तन्न्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ २ ॥ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्त बिभर्ष्ष्यस्तवे । शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु मा हिꣳसीः पुरुषञ्जगत् ॥ ३ ॥ शिवेन वचसा त्त्वा गिरिशाच्छा वदामसि । यथा नꣳसर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसुमना ऽअसत् ॥ ४ ॥ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमो दैव्व्यो भिषक् । अहीँश्च सर्वाञ्चम्भयन्त्सर्व्वाश्श्च यातुधान्न्योऽधराचीꣳपरासुव ॥ ५ ॥ असौ यस्ताम्म्रीऽअरुणऽउत बब्भ्रꣳसुमङ्गलः । ये चैनꣳरूद्रा ऽअभिता दिक्षुश्रिताऽसहस्रशोवैषाꣳ हेडऽईमहे ॥ ६ ॥ असौ योवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो विलोहितꣳ । उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहायर्यꣳ स दृष्टो मृडयाति नꣳ ॥ ७ ॥ नमोस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे । अथो येऽअस्य सत्त्वानोऽहन्तेभ्योकरन्नमः ॥ ८ ॥ प्प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरात्त्न्योर्ज्ज्याम् । याश्च ते हस्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



इषवो ऽपराता भगवो वप ॥ ९ ॥ ब्विज्ज्यन्धनु ÷ कपर्द्दिनो ब्विशल्ल्यो बाणवा ऽं ॥ ऽउत । अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिऽं ॥ १० ॥ यातें हेतिर्म्मीदुष्टम् हस्तें बभूव ते धनुं ÷ । तयास्म्माद्ब्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्म्मया परिभुज॥११॥ परिते धन्ब्वनो हेतिरस्म्मान्ब्वृणक्तु ब्विश्श्वतः । अथो यऽइषुधिस्तवारेऽअस्म्मन्निधेहि तम् ॥ १२ ॥ अवतत्य धनुष्टऽ्ं सहस्राक्ष शतेषुधे । निशीर्य्य शल्ल्यानान्मुखा शिवो नः ÷ सुमना भव ॥ १३ ॥ नमस्तऽआयुधायानाततायै धृष्णवे । उभाब्भ्यामुत तेनमो बाहुब्भ्यान्तव धन्ब्वने ॥ १४ ॥ मानो महान्तमुतमानोऽ अर्ब्भकम्मानऽउक्षन्तमुत मानऽ उक्षितम्। मानो ब्वधीऽपितरम्मोत मातरम्मा नः ÷ प्रियास्तन्ब्वो रुद्र रीरिषऽं ॥ १५ ॥ मा नस्तोके तनये मानऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्श्वेषु रीरिषऽं। मानो ब्वीरान्नुद्र भामिनो ब्वधीर्हविष्मन्तऽं सदमित्वा हवामहे ॥ १६ ॥ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशाञ्च पतये नमो नमो ब्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यऽ पशूनाम्पतये नमो नम ÷ शुष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिनें पुष्टानाम्पतये नमो नमो वब्भ्लुशायं ॥ १७ ॥ नमो वब्भ्लुशायं ब्व्याधिनेऽन्नानाम्पतये नमो नमो भुवस्य हेत्यै जगतानाम्पतये नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नम÷सूतायाहन्त्यै ब्वनानाम्पतये नमोनमो रोहिताय॥१८॥ नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणाम्पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमो नमऽउच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमो नम÷कृत्स्नायुतया ॥ १९ ॥ नम÷कृत्स्नायुतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमो नमऽसहमानाय निव्याधिन ऽआव्याधिनीनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्याः नाम्पतये नमो नमो वञ्चते ॥ २० ॥ नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायुनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिणऽइषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमो नम÷सृकायिभ्यो जिघाँसद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमो नमोसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमो नमऽउष्णीषिणे ॥२१॥ नमऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमो नमऽइषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमो नमऽआतन्वानेभ्य÷प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नमऽआयच्छद्भ्यो स्यद्भ्यश्च वो नमो नमो विसृजद्भ्य÷ ॥ २२ ॥ नमो विसृजद्भ्यो विद्धयद्भ्याश्च वो नमो नम÷स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमऽशयानेभ्यऽआसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्याश्च वो नमो नम÷ सभाभ्य÷ ॥ २३ ॥ नम÷ सभाभ्य÷

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सुभार्पतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नमआव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नमऽउगणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यश्च वो नमो नमो गणेभ्यꣳ ॥ २४ ॥ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमꣳसेनाभ्यꣳ ॥ २५ ॥ नम÷सेनाभ्यꣳसेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्योऽरथेभ्यश्च वो नमो नम÷क्षत्तृभ्य÷सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यश्च वो नमो नमस्तक्षभ्यः॥२६॥ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमꣳ कुलालेभ्यꣳ कर्म्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्य÷पुञ्जिष्ठेभ्यश्चवो नमो नमꣳइश्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमो नमꣳश्वभ्य÷ ॥२७॥ नमःꣳश्वभ्यꣳश्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नम÷शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नम÷कपर्दिने ॥ २८ ॥ नम÷कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नम÷सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च नमो ह्रस्वाय ॥ २९ ॥ नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सुवृधे च नमो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ग्याय च प्रथमाय च नमऽआशवे ॥ ३० ॥ नमऽआशवे चाजिराय च नमः शीघ्रयाय च शीभ्याय च नमऽऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ॥ ३१ ॥ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्नियाय च नमःसोभ्याय ॥ ३२ ॥ नमःसोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नमऽउर्वर्याय च खल्याय च नमो वन्याय ॥ ३३ ॥ नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नमऽआशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च नमो बिल्मिने ॥ ३४ ॥ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च नमो धृष्णवे ॥ ३५ ॥ नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च नमःस्रुत्याय ॥ ३६ ॥ नमःस्रुत्याय च पथ्याय च नमःकाट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च नमः कूप्याय ॥ ३७ ॥ नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वीध्र्याय चातप्याय च नमो मेघ्याय च विद्युत्याय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



च नमो ह्वष्ण्याय चाह्वष्ण्याय च नमो ह्वात्याय ॥३८॥नमो ह्वात्याय च रेभ्याय च नमो ह्वास्तव्याय च ह्वास्तुपाय च नमःसोमाय च रुद्राय च नमेस्ताम्राय चारुणाय च नमः शङ्गवे ॥ ३९ ॥ नमः शङ्गव च पशुपतये च नमऽउग्राय च भीमाय च नमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय ॥ ४० ॥ नमस्ताराय नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्करायं च मयस्करायं च नमः शिवाय च शिवतराय च नमः पार्ण्वाय॥४१॥नमःपार्ण्वाय चावार्ण्वाय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्त्थ्याय च कूल्याय च नमःशष्प्याय च फेन्याय च नमः सिकत्याय ॥ ४२ ॥ नमः सिकत्याय च प्रवाहवाय च नमः किंशिलायं च क्षयणाय च नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नमऽइरिण्याय च प्रपथ्याय च नमो व्रज्याय ॥ ४३ ॥ नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेहसाय च नमो हृदयसाय च निवेष्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च नमःशुष्क्याय ॥ ४४ ॥ नमःशुष्क्याय च हरित्याय च नमः पाशंसवाय च रजस्याय च नमो लोप्याय चोलुप्याय च नमऽऊर्व्याय च सूर्व्याय च नमः पर्णाय ॥ ४५ ॥ नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नमऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नमऽआखिदते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



च प्रखिदते च नमऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेब्भ्यो देवानाꣳ हृदयेब्भ्यो नमो विचिन्वत्केब्भ्यो नमो विक्षिणत्केब्भ्यो नमऽआनिर्हतेब्भ्यः ÷ ॥ ४६ ॥ द्राप्येऽअन्धसस्पते दरिद्रन्नीललोहित ॥ आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्माभेर्म्मारोङ्मो च नः किञ्चनाममत् ॥ ४७ ॥ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः । यथा शमसदद्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टं ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ॥ ४८ ॥ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी । शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे ॥ ४९ ॥ परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः । अवस्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड ॥ ५० ॥ मीढुष्टमशिवतम शिवो न ÷ सुमना भव । परमे वृक्षऽआयुधन्निधाय कृत्तिं वसानऽआचर पिनाकम्बिभदागहि ॥ ५१ ॥ विकिरिद्र विलोहित नमस्तेऽअस्तु भगवः । यास्ते सहस्रꣳ हेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तु ताः ॥ ५२ ॥ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः ÷ । तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ॥ ५३ ॥ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्यां । तेषाꣳ सहस्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि । ॥ ५४ ॥ अस्मिन्महत्यर्णवेऽन्तरिक्षेऽभुव अधि । तेषाꣳसह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



स्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ॥ ५५ ॥ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्राऽउपश्रिताः । तेषांꣳ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ॥ ५६ ॥ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाऽअधः क्षमाचराः । तेषांꣳ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ॥ ५७ ॥ ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा विलोहिताः । तेषांꣳ सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ ५८ ॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्द्दिनः । तेषांꣳ सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ ५९ ॥ ये पथाम्पथिरक्षयऽऐलबृदाऽआयुर्य्युधः । तेषांꣳ सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ ॥६०॥ ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः । तेषांꣳ सहस्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि ॥ ६१ ॥ येऽन्नेषु विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् । तेषांꣳ सहस्रयोजनेववधन्वानि तन्मसि ॥ ६२ ॥ यऽएतावन्तश्च भूयांꣳ सश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे । तेषांꣳ सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ ६३ ॥ नमोस्तु रुद्रेब्भ्यो ये दिवियेषां वर्षमिषवः । तेब्भ्यो दशप्प्राचीर्द्दशदक्षिणा दशप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्ध्वाः । तेब्भ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यद्विष्म्मो यश्च ना द्वेष्टितमेषाञ्जम्भे दध्मः ॥ ६४ ॥ नमोऽस्तु रुद्रेब्भ्योयेन्तरिक्षे येषां वातऽइषवः । तेभ्यो दशप्प्राचीर्द्दशदक्षिणा दर्शप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्धाः । तेब्भ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ते नो॑ मृडयन्तु॒ ते यन्द्वि॒ष्म्मो॒ यश्च॒ नो॒ द्वेष्टि॒तमे॑षा॒ञ्जम्भे॑ दध्मः॑ ॥ ६५ ॥ नमो॑स्तु रु॒द्रेब्भ्यो॒ ये पृ॑थि॒व्यां य्येष॒मन्ना॒मि-ष॑वः॑। तेब्भ्यो॒ दश॒प्राची॒र्द्दशदक्षि॒णा दश॑प्प्र॒तीची॒र्द्दशोदी॑ची॒-र्द्दशो॒र्द्ध्वाः॑। तेब्भ्यो॒ नमो॑ऽअस्तु॒ ते नो॑ऽवस्तु॒ ते नो॑ मृडयन्तु॒ ते यन्द्वि॒ष्म्मो यश्च॑ नो॒ द्वेवि॒तमे॑षा॒ञ्जम्भे॑ दध्मः॑ ॥ ६६ ॥ ( वा० सं० अ० १६ ) इति रुद्राभिशेककर्मणि षष्ठोऽध्यायः ॥

हरिःॐ—व्व॒यꣳसो॑मव्व॒ते तव॒ मन॑स्त॒नूषु बिब्भ्र॑तः॑। प्प्र॒जा-व॑न्तः॑सचेमहि ॥ १ ॥ ए॒षते॑ रुद्रभा॒गः॑ स॒हस्वस्राम्बि॑कया॒ तञ्जु॑षस्व स्वाहै॒षते॑ रुद्र भा॒गऽआ॒खुस्ते॑ प॒शुः॑ ॥ २ ॥ अव॑ रु॒द्रम॑दिम॒ह्यव॑ दे॒वंत्र्य॑म्बकम्। यथा॑ नो॒ व्वस्य॑स॒स्क्कर॒द्द्यथा॑ न॒ꣳश्रेय॑स॒स्क्कर॒द्द्यथा॑ नो व्यवसा॒यया॑त् ॥३॥ भे॒ष॒जम॑सि भेष॒-जङ्गवेश्श्वा॑य॒ पुरु॑षाय भेष॒जम्। मु॒खम्मे॒षाय॑ मे॒ष्ष्यै ॥ ४ ॥ त्र्य॑म्बकं य्यजामहे सुग॒न्धिम्पु॑ष्टि॒वर्द्ध॑नम्। उ॒र्व्वा॒रु॒कमि॑व॒ बन्ध॑-नान्मृ॒त्त्योम्मुक्षीय॒ मामृता॑त्। त्र्य॑म्बकं य्यजामहे सुग॒न्धिम्प॑-ति॒वेद॑नम्। उ॒र्व्वा॒रु॒कमि॑व॒ बन्ध॑नादि॒तो मु॑क्षीय॒मामुत ÷ ॥५॥ एतत्ते॑ रुद्राव॒सन्तेन॑ प॒रो मूज॑व॒तोती॑हि। अव॑ततधन्वा॒ पिना॑-कहस्त॒ꣳ कृत्ति॑वासा॒ अहि॑ꣳ सन्नꣳ शि॒वोती॑हि ॥ ६ ॥ त्र्या॒-यु॒षञ्च॒मद॑ग्ग्नेꣳक॒श्यप॑स्य त्र्यायु॒षम्। यद्दे॒वेषु॒ त्र्यायु॒षन्तन्नो॑ऽअ-स्तु त्र्यायु॒षम् ॥ ७ ॥ शि॒वो नामा॑सि॒ स्वधि॑तिस्ते पि॒ता नम-स्तेऽअस्तु॒ मा मा॑ हिꣳसीः॑ निव॑र्त्तया॒म्म्यायु॑षे॒न्नाद्द्या॑य प्प्र॒जन॑-नाय रा॒यस्प्पोषा॑य सुप्प्रजा॒स्त्वाय॑ सु॒वीर्य्या॑य ॥ ८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



( वा० सं० ३ । ५३—६३ ॥ ) इति रुद्राभिषेककर्म्मणि सप्तमोऽध्यायः ॥

हरिः ॐ-उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च । सासु-हूवाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपऽस्वाहा ॥ १ ॥ अग्निꣳ हृदये-नाशनिꣳ हृदयाग्रेण पशुपतिꣳ कृत्स्नहृदयेन भवं यकृना । शर्व्वम्मतस्नाभ्यामीशानम्मन्युना महादेवमन्तऽपर्शुयेनोग्रं देवं वनिष्ठुना वसिष्ठुहनुऽशिङ्गीनिकोश्याभ्याम् ॥ २ ॥ उग्रꣳ लोहितेनामित्रꣳ सौव्रत्यन रुद्रन्दौव्रत्येनेन्द्रम्प्रक्रीडेनमरुता बलेन साद्ध्यान्प्रमुदा भवस्य कण्ठ्यꣳ रुद्रस्यान्तऽपार्श्व्य-न्महादेवस्य यकृच्छ्वस्य वनिष्ठुऽ पशुपतेऽपुरीतत् ॥ ३ ॥ लोमभ्यऽस्वाहा । लोमभ्यःऽस्वाहा त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा मेदोभ्यऽस्वाहामे-दोभ्यऽस्वाहा॥मा ंसेभ्यऽस्वाहा मा ंसेभ्यऽस्वाहा स्नावभ्यु ऽ स्वाहा स्नावभ्यऽस्वाहास्थभ्यऽस्वाहाऽस्थभ्यऽ स्वाहा मज्जभ्यऽस्वाहा मज्जभ्यऽस्वाहा । रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा ॥ ४ ॥ आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा संयासाय स्वाहा वियासाय स्वाहोद्यासाय स्वाहा । शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा ॥ ॥ ५ ॥ तपसे स्वाहा तप्यते स्वाहा तप्यमानाय स्वाहा तप्ताय स्वाहा घर्म्माय स्वाहा । निष्कृत्यै स्वाहा प्रायश्चित्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा ॥६॥ यमाय स्वाहाऽन्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा । ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा विश्वे-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



भ्यो देवेभ्युः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्याꣳ स्वाहा ॥ ७ ॥ ( वा० सं० ३९।७—१३ ) ॥ इदि रुद्राभिषेककर्मण्यष्टमोऽध्यायः ॥

हरिः ॐ वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १ ॥ प्राणश्च मेऽपानश्च व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तञ्च मऽआधीतञ्च मे वाक्च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रञ्च मे दक्षश्च मे बलञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २ ॥ ओजश्च मे सहश्च मऽआत्मा च मे तनूश्च मे शर्म्म च मे वर्म्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूꣳषि च मे शरीराणि च मऽआयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ३ ॥ ज्यैष्ठ्यञ्च मऽआधिपत्यञ्च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे वरिमा च मेऽप्रथिमा च मे वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे वृद्धञ्च मे वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥४॥ सत्यञ्च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनञ्च मे विश्वञ्च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातञ्च मे जनिष्यमाणञ्च मे सूक्तञ्च मे सुकृतञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥५॥ ऋतञ्च मेऽमृतञ्च मेऽयक्ष्मञ्च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वञ्च मेऽनमित्रञ्च मेऽभयञ्च मे सुखञ्च मे शयनञ्च मे सूषाश्च मे सुदिनञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ६ ॥ यन्ता च मे धर्त्ता च

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वंश्च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रंश्च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरंश्च मे लयंश्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम् ॥ ७ ॥ शश्वं मे मयंश्च मे प्रियश्चं मेऽनुकामश्च मे कामंश्च मे सौमनसश्चं मे भगंश्च मे द्रविणश्च मे भद्रंश्च मे श्रेयंश्च मे वसीयंश्च मे यशंश्च मे यज्ञेनं कल्प्पन्ताम् ॥ ८ ॥ ऊर्चं मे सूनृता च मे पयंश्च मे रसंश्च मे घृतंश्च मे मधु च मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्चं मे वृष्टिश्च मे जैत्रंश्च मऽऔद्भिद्यंश्च मे यज्ञेनं कल्प्पन्ताम् ॥ ९ ॥ रयिश्चं मे रायंश्च मे पुष्टंश्च मे पुष्टिश्च मे विभु चं मे प्रभु चं मे पूर्णंश्च मे पूर्णतरश्च मे कुयंवश्च मेऽक्षितंश्च मेऽन्नंश्च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेनं कल्प्पन्ताम् ॥ १० ॥ वित्तंश्च मे वेद्यंश्च मे भूतंश्च मे भविष्यच्च मे सुगंश्च मे सुपथ्यंश्च मऽऋद्धंश्च मऽऋद्धिश्च मे क्लृप्तंश्च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्चं मे यज्ञेनं कल्प्पन्ताम् ॥ ११ ॥ व्रीहयंश्च मे यवांश्च मे माषांश्च मे तिलांश्च मे मुद्गांश्चं मे खल्वांश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवारांश्च मे गोधूमांश्च मे मसुरांश्च मे यज्ञेनं कल्प्पान्ताम् ॥ १२ ॥ अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयंश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यञ्च मेऽयंश्च मे श्यामञ्चं मे लोहञ्चं मे सीसंञ्च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम् ॥ १३ ॥ अग्निश्चं मऽआपंश्च मे वीरुधंश्च मऽओषधयश्च म कृष्टपच्याश्चं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मेऽकृष्टपच्च्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशवऽआरण्याश्च मे वित्तञ्च मे वित्तिश्च मे भूतञ्च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १४ ॥ वसु च मे वसतिश्च मे कर्म्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च मऽएमश्च म इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १५ ॥ अग्निश्च मऽइन्द्रश्च मे सोमश्च मऽइन्द्रश्च मे सविता च मऽइन्द्रश्च मे सरस्वती च मऽइन्द्रश्च मे पूषा च मऽइन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च मऽइन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १६ ॥ मित्रश्च मऽइन्द्रश्च मे वरुणश्च मऽइन्द्रश्च मे धाता च मऽइन्द्रश्च मे त्वष्टा च मऽइन्द्रश्च म मरुतश्च मऽइन्द्रश्च मे विश्वे च मे देवाऽइन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १७ ॥ पृथिवी च मऽइन्द्रश्च मेऽन्तरिक्षञ्च मऽइन्द्रश्च मे द्यौश्च मऽइन्द्रश्च मे समाश्च मऽइन्द्रश्च मे नक्षत्राणि च मऽइन्द्रश्च मे दिशश्च मऽइन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१८॥ अꣳशुश्च मे रश्मिश्च मऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च मऽउपाꣳशुश्च मेऽन्तर्य्यामश्च मऽऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च मऽआश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १९ ॥ आग्रयणश्च मे वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे वैश्वानरश्च मऽऐन्द्राग्नश्च मे महावैश्वदेवश्च मे मरुत्वतीयाश्च मे निष्कवल्यश्च मे सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पात्नीवतश्च मे हारियो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



जुनश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २० ॥ स्रुवश्च म चमसाश्च मे वायव्यानि च मे द्रोणकलशश्च मे ग्रावाणश्च मेऽधिषवणे च मे पूतभृच्च मऽआधवनीयश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्च मेऽवभृथश्च मे स्वगाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २१ ॥ अग्निश्च मे घर्म्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्य्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २२ ॥ व्रतञ्च म ऋतवश्च मे तपश्च मे संवत्सरश्च मेऽहोरात्रेऽऊर्ब्बष्ठीवे बृहद्रथन्तरे च म यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २३ ॥ एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च मेऽएकादश च मेऽएकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च मेऽएकविꣳशतिश्च मेऽएकविꣳशतिश्च मे त्रयोविꣳशतिश्च मे त्रयोविꣳशतिश्च मे पञ्चविꣳशतिश्च मे पञ्चविꣳशतिश्च मे सप्तविꣳशतिश्च मे सप्तविꣳशतिश्च मे नवविꣳशतिश्च मे नवविꣳशतिश्च मेऽएकत्रिꣳशच्च मेऽएकत्रिꣳशच्च मे त्रयस्त्रिꣳशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २४ ॥ चतस्रश्च मेऽष्टौ च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च मे षोडश च मे षोडश च मे विꣳशतिश्च मे विꣳशतिश्च मे चतुर्विꣳशतिश्च मे चतुर्विꣳशतिश्च मेऽष्टाविꣳशतिश्च मेऽष्टाविꣳशतिश्च मे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



द्वात्रिंशः शच्च मे द्वात्रिंशश्च मे षट्त्रिंशः शच्च मे षट्त्रिंशः शच्च मे चत्वारिंशः शच्च मे चत्वारिंशश्च मे चतुश्चत्वारिंशः शच्च मे चतुश्चत्वारिंशः शच्च मेऽष्टाचत्वारिंशः शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २५ ॥ त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाट्च मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्य्यवाट्च मे तुर्य्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २६ ॥ पष्ठवाट्च मे षष्ठौही च मऽउक्षा च मे वशा च मऽऋषभश्च मे वेहच्च मेऽनड्वाँश्च मे धेनुश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२७॥ वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहाऽपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहाऽहर्पतये स्वाहाहे मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैनꣳशिनाय स्वाहा विनुꣳ शिनऽआन्त्यायनाय स्वाहान्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाऽधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा।इयन्ते राण्मित्राय यन्तासि यमनऽऊर्ज्जे त्वा वृष्टयै त्वा प्रजानान्त्वाऽऽधिपत्याय ॥ २८ ॥ आयुर्यज्ञेन कल्पताम्प्राणो यज्ञेन कल्पताञ्चक्षुर्यज्ञेन कल्पताꣳ श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पताम्मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पताज्ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताꣳस्वर्यज्ञेन कल्पताम्पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। स्तोमश्च यजुश्च ऋक्च साम च बृहच्च रथन्तरञ्च। स्वर्देवाऽअगन्मामृताऽअभूम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



प्रजापतेऽप्प्रजाऽअभूम् वेट् स्वाहा ॥ ( वा० सं० १८ । २९ )
इति रुद्राभिषेककर्म्मणि चमकसंज्ञकोऽध्यायः ॥

हरिः ॐ—ऋचं वाचम्प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणम्प्रपद्ये चक्षुरश्श्रोत्रम्प्रपद्ये । वागोजः ÷ सहौजो मयि प्राणापानौ ॥ १ ॥ यन्मे च्छिद्रम्चक्षुषो हृदयस्य मनसो वाऽतितृण्णम्बृहस्पतिर्म्मे तद्दधातु । शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ÷ ॥ २ ॥ तत्सवितुर्व्वरेण्यं० ॥३॥ कयान श्चित्रऽआभुवदूती सदा वृधः सखा । कयाशचिष्ठया वृता । ॥ ४ ॥ कस्त्वा सत्यो मदानाम्म हिष्ठो मत्सदन्धसः । दृढाचिदारुजे वसु ॥ ५ ॥ अभीषुणः सखीनामविता जरितृणाम् । शतम्भवास्यूतिभिः ÷ ॥ ६ ॥ क्या त्वन्नऽउत्याभिः प्रमंदसे वृषन् । कयास्तोतृभ्य आभर ॥ ७ ॥ इन्द्रो विश्वस्य राजति । शन्नोऽअस्तु द्विपदे शञ्चतुष्पदे ॥ ८ ॥ शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा । शन्नऽइन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः ॥ ९ ॥ शन्नो वातः ÷ पवताम्मं शन्नस्तपतु सूर्य्यः ÷ । शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्ज्जन्योऽ अभिवर्षतु ॥ १० ॥ अहानि शम्भवन्तु नः शꣳरात्रीः प्रतिधीयताम् । शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न

---

१ देख "सोमेत्यध्यायस्य वाच्यश्चमेत्यध्यायश्च न एकैक महच्छिर इति सज्ञा, तेन यदा वय "सोमेत्यध्यायपाठस्तदा न चमकाध्यायपाठः। यदा चमकाध्यायपाठस्तदा न यद "सोमेत्याद्यनपाठः । इति समवधेयम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ऽइन्द्रावरुणा रातहव्या । शन्नऽइन्द्रापषणा वाजसातौ शमिन्द्रोसोमा सुविताय शंयोः ॥ ११ ॥ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥ १२ ॥ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥ १३ ॥ आपो हि ष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ १४ ॥ योव÷ शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः÷ । उशतीरिवमातरः ÷ ॥ १५ ॥ तस्माऽअरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥ १६ ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्ति÷ पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति÷ । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ १७ ॥ दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् । मित्रस्याहꣳचक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥ १८ ॥ दृते दृꣳह मा । ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासꣳज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम् ॥ ॥ १९ ॥ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्च्चिषे । अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतय÷ पावकोऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥ २० ॥ नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्व÷ समीहसे ॥ २१ ॥ यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु । शन्न÷ कुरु प्रजाभ्योऽ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



भ॑यन्नऽप॒शुभ्य॑ ÷ ॥ २२ ॥ सु॒मि॒त्रि॒या॒न॒ऽआप॒ऽओष॑धयः॑सन्तु दुर्म्मित्रि॒यास्तस्मै॑ सन्तु॒ योस्मान्द्वे॒ष्टि॒ यञ्च॑ व॒यन्द्विष्म्मः॑ ॥ २३ ॥ तच्चक्षु॑र्दे॒वहि॑तम्पु॒रस्ता॑च्छु॒क्रमु॒च्चर॑त् । पश्ये॑म श॒रद॑ ÷ श॒तञ्जीवे॑मश॒रद ÷ श॒तꣳशणु॑याम श॒रद÷श॒तम्प्रब्ब्र॑वामश॒रद॑ श॒तमदी॑नाः॑ स्याम श॒रद॑ ÷ श॒तम्भूय॑श्च श॒रद॑ ÷ श॒तात् ॥ २४ ॥ ( वा०सं० ३७।२४ ) इति रुद्राभिषेककर्म्मणि शान्त्यध्यायः ॥

ॐ स्व॒ति न॒ऽइन्द्रो॑० ( वा० सं० ३५ । २९ ) पय॑ ÷ पृथि॒व्याम्० ( वा० सं० ३८ । ३६ ) ॥ स॒द्योजा॒तं प्र॑पद्या॒मि स॒द्यो जा॒ताय॒ वै नमो॒ नमः॑ । भ॒वे भ॑वे॒ नाति॑ भवे भवस्व॒ मां भ॒वोद्भ॑वाय॒ नमः॑ ३८ । ३ ॥ वा॒म॒दे॒वाय॒ नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॒ नमः श्रे॒ष्ठाय॒ नमो॑ रु॒द्राय॒ नमः॒ काला॑य॒ नमः॒ कल॑विकरणाय॒ नमो॒ बल॑विकरणाय॒ नमो॒ बला॑य॒ नमो॒ बल॑प्रथमनाय॒ नमः॒ सर्व॑भूतदमनाय॒ नमो॑ म॒नोन्म॑नाय॒ नमः । ३८ । ५ ॥ अ॒घो॒रे॑भ्योऽथ॒ घोरे॑भ्यो॒ घोर॒घोर॑तरेभ्यः । सर्वे॑भ्यः॒ सर्व॒ शर्वे॑भ्यो॒ नम॑स्ते अस्तु रू॒द्ररू॑पेभ्यः ३८ । ६ ॥ तत्पुरु॑षाय वि॒द्महे॑ महा॒दे॒वाय॑ धीमहि । तन्नो॑ रुद्रः प्रचो॒दया॑त् ३८ । ७ ॥ ई॒शा॒नः॒ सर्व॑विद्या॒ना॒मीश्वरः सर्व॑भूता॒ना॒म्ब्रह्मा॑धि॒पति॒र्ब्रह्म॒णोऽधि॑पति॒र्ब्रह्मा॑ शि॒वो मे॑ अस्तु सदाशि॒वोम् ३८ । ८ ॥ ॐ स॒र्वेषां॑ वा॒ऽएव वे॒दाना॒ꣳरसो॒ यत्साम॒ स॒र्वेषामेवैनमेतद्व॒दाना॒ꣳरसेना-

---

१ शरद इति । संवत्सरानित्यर्थः तथा च शताब्दावधीति विवक्षितम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



भिषिञ्चति ३८। ९ ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु ॥ इति रुद्राभिषेकपद्धतिः ॥

**अथ गणेशाथर्वशीर्षम्**—ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्त्तासि। त्वमेव केवलं धर्त्तासि। त्वमेव केवलं हर्त्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमवशिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो यमः। त्वं चत्वारि वाक् पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वमवस्थात्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्[1]। गणादीन्पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। स ॅ हिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्। एकदंतं चतुर्हस्तं पाशमंकुशधारिणम्। रदञ्च वरदं हस्तैर्विभाणं मूषकध्वजम्। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैःसुपूजितम्।भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारण-

---

[1] एतदिति इत्येवं सूचितमोङ्कारूपम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मच्युतम्। आविर्भूतंच सृष्टयादौ प्रकृतेःपुरुषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रथमपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय वरदमूर्तये नमः। एतदथर्वशीर्ष योऽधीते। स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापापात्प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायम्प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्मार्थकाममोक्षञ्च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति। स पापीयान् भवति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते। तं तमनेन साधयेत्। अनेन यो गणपतिमभिषिंचति। स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति। स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्यावरण विद्यान्न बिभेति कदाचनेति। यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति। स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति। स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति। वांछितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति। स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा। सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात्प्रमुच्यते। महादोषात्प्रमुच्यते। महापापात्प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति। य एवं वेद। इत्युपनिषत्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ इति गणेशाथर्वशीर्षम्॥

**अथ नारायणाथर्वशीर्षम्**—अथ पुरुषो ह वै नारायणोऽकामयत प्रजाःसृजेयेति। नारायणात्प्राणो जायते। मनःसर्वेन्द्रियाणि च। खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी। नारायणाद्ब्रह्मा जायते। नारायणाद्विष्णुर्जायते। नारायणाद्रुद्रो जायते। नारायणादिन्द्रो जायते। नारायणात्प्रजापतिः प्रजायते। नारायणाद्द्वादशादित्या रुद्रा वसवः सर्वाणि छन्दांसि। नारायणाद्देवाः समुत्पद्यन्ते। नारायणात्प्रवर्तन्ते। नारायणे प्रलीयन्ते। अथादित्यो नारायणः।

---

१ अत्र प्राणपदमपानादेरप्युपलक्षणम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ब्रह्मा नारायणः। शिवश्च नारायणः। शक्रश्च नारायणः। कालश्च नारायणः। दिशश्च नारायणः। ऊर्ध्वं च नारायणः। अधश्च नारायणः। अन्तर्बहिश्च नारायणः। नारायण एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। निष्कलो निरञ्जनो निर्विकल्पो निराख्यातः शुद्धो देव एको नारायणो न द्वितीयोऽस्ति कश्चित्। य एवं वेद। स विष्णुरेव भवति स विष्णुरेव भवति। ॐ इत्यग्रे व्याहरेत्। नम इति पश्चात्। नारायणायेत्युपरिष्टात्। ॐ इत्येकाक्षरम्। नम इति द्वे अक्षरे। नारायणायेति पञ्चाक्षराणि। एतद्वै नारायणस्याष्टाक्षरं पदम्। यो ह वै नारायणस्याष्टाक्षरं पदमध्येति। अनुपव्रतः सर्वमायुरेति। विन्दते प्रजां रायस्पोषं गौपत्यम्। ततोऽमृतत्वमश्नुते ततोऽमृतत्वमश्नुत इति। प्रत्यगानन्दं ब्रह्मपूरुषं प्रणवस्वरूपम्। अकार उकारो मकार इति। तानेकधा संयोज्य तदेव तदोमिति। यमुक्त्वा मुच्यते योगी जन्मसंसारबन्धनात्। ॐ नमो नारायणायेति मन्त्रोपासकः। वैकुण्ठभुवनं गच्छति। तदिदं परमं पुण्डरीकं विज्ञानघनम्। तस्माच्चिदाभमात्रम्। ब्रह्मण्यो देवकीपुत्रो ब्रह्मण्यो मधुसूदनः। सर्वभूतस्थमेकं वै नारायणम् कारणरूपं परब्रह्मकम्। एतदथर्वशीर्षं योऽधीते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रायः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति। मध्यन्दिनमादित्याभिमुखोऽधीयानः सद्यपञ्चमहापातकोपपातकेभ्यो मुच्यते। सर्ववेदपारायणपुण्यं लभते। श्रीनारायणसायुज्यमवाप्नोति। य एवं वेद। इत्युपनिषत्॥ इति नारायणाथर्वशीर्षम्॥

**अथ शिवाथर्वशीर्षम्**—ॐ देवा ह वै स्वर्गं लोकमायंस्ते रुद्रमपृच्छन् को भवानिति। सोऽब्रवीदहमेकः प्रथमपासोद्वर्तामि च भविष्यामि च नान्यः कश्चिन्मत्तो व्यतिरिक्त इति सोऽन्तरादन्तरं प्राविशदाशाश्चान्तरं प्राविशत्सोऽहं नित्यानित्यो व्यक्ताव्यक्तोब्रह्माब्रह्माहं प्राञ्चःप्रत्यञ्चोऽहं दक्षिणाश्चउदञ्चोऽहमधश्चोर्ध्वश्चाहं दिशश्च (प्रति) दिशश्चाहं पुमानपुमान् स्त्रियश्चाहं सावित्र्यहं गायत्र्यहं त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्चाहं छन्दोऽहंसत्योऽहंगार्हपत्यो दक्षिणाग्निराहवनीयोऽहं गौरहं गौर्यहमृगहं यजुरहं सामाहमथर्वाङ्गिरसोऽहं ज्येष्ठोऽहं श्रेष्ठोऽहं वरिष्ठोऽहमापोऽहं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तेनोऽहं गुह्योऽहमरण्योऽहमक्षरमहं क्षरमहं पुष्करमहं पवित्रमहमुग्रश्च बलिश्च पुरस्ताज्ज्योतिरित्यहमेव सर्वेभ्यो मामेव स सर्वः समो यो मां वेद स देवान्वेद सर्वांश्च वेदान् साङ्गानपि ब्रह्म ब्राह्मणैश्च मां गोभिर्ब्राह्मणान् ब्राह्मणेन हविर्हविषाऽऽयुरायुषा स य सत्येन धर्मेण धर्मं तर्पयामि रवेन तेजसा । ततो हं वै ते देवा रुद्रमपृच्छन् ते देवा रुद्रमपश्यन् ते देवा रुद्रमध्यायन् ते देवा ऊर्ध्वबाहवो रुद्रं स्तुवन्ति । ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च ब्रह्मा तस्मै वै नमो नमः । यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च विष्णुस्तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च स्कन्दस्तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यश्चन्द्रस्तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यश्चाग्निस्तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च वायुस्तस्मै । यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च सूर्यस्तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च सोमस्तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् ये ऽष्टौ ग्रहास्तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् ये चाष्टौ प्रतिग्रहास्तस्मै से । यो वै रुद्रः स भगवान् या च भूस्तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च भुवस्तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च स्वस्तस्मै । यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च महस्तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् या च पृथिवी तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यच्चान्तरिक्षं तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् या च द्यौस्तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् याश्चापस्तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च तेजस्तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च कालस्तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च यमस्तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च मृत्युस्तस्मै० यो वै रुद्रः स भगवान् यच्चामृतं तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यच्चाकाशं तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च विश्वं तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च स्थूलं तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च सूक्ष्मं तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च शुक्लं तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च कृष्णं तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च कृत्स्नं तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च सत्यं तस्मै० । यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च सर्वं तस्मै० । भूस्ते आदिर्मध्यं भुवस्ते स्वस्ते शीर्षं विश्वरूपोऽसि ब्रह्मैकस्त्वं द्विधा त्रिधा वृद्धिस्त्वं शान्तिस्त्वं पुष्टिस्त्वं हुतमहुतं दत्तमदत्तं सर्वमसर्वं विश्वमविश्वं कृतमकृतं परमपरं परायणञ्च

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्वम् । अपाम सोममृता अभूमागन्म ज्योतिरविदाम देवान् । किं नूनमस्मान् कृष्णवदरातिः किमु धूर्तिरमृतं मर्त्यस्य सोमसूर्यपुरस्तात्सूक्ष्मः पुरुषः । सर्वं जगद्धितं वा एतदक्षरं प्राजापत्यं सौम्यं सूक्ष्मं पुरुषं ग्राह्यमग्राह्येण भावं भावेन सौम्यं सौम्येन सूक्ष्मं सूक्ष्मेण वायव्यं वायव्येन ग्रसति तस्मै महाग्रासाय वै नमो नमः । हृदिस्था देवताः सर्वा हृदि प्राणाः प्रतिष्ठिताः । हृदि त्वमसि यो नित्य तिस्रो मात्राः परस्तु सः ॥ तस्योत्तरतः शिरो दक्षिणतः पादौ य उत्तरतः स ओङ्कारो य ओङ्कारः स प्रणवो यः प्रणवः स सर्वव्यापी यः सर्वव्यापी सोऽनन्तो योऽनन्तस्तत्तारं यत्तारं तच्छुक्लं यच्छुक्लं तत्सूक्ष्मं यत्सूक्ष्मं तद्वैद्युतं यद्वैद्युतं तत्परं ब्रह्मयत्परंब्रह्मसएकोय एकः स रुद्रो यो रुद्रः स ईशानो य ईशानः स भगवान् महेश्वरः । अथ कस्मादुच्यते ओङ्कारः।यस्मादुच्चार्यमाण एव प्राणानूर्ध्वमुत्क्रामयति तस्मादुच्यते ओङ्कारः अथ कस्मादुच्यते प्रणवः यस्मादुच्चार्यमाण एव ऋग्यजुःसामाथर्वाङ्गिरसं ब्रह्म ब्राह्मणेभ्यः प्रणामयति नामयति च तस्मादुच्यते प्रणवः । अथ कस्मादुच्यते सर्वव्यापी यस्मादुच्चार्यमाण एव यथा स्नेहेन पललपिण्डमिव शान्तरूपमोतप्रोतमनुप्राप्तो व्यतिषक्तश्च तस्मादुच्यते सर्वव्यापी।अथकस्मादुच्यतेऽनन्तःयस्मादुच्चार्यमाण एव तिर्यगूर्ध्वमधस्ताच्चास्यान्तो नोपलभ्यते तस्मादुच्यतेऽनन्तः । अथ कस्मादुच्यते तारं तस्मादुच्चार्यमाण एव गर्भजन्मव्याधिजराकरणसंसारमहाभयात्तारयति त्रायते च तस्मादुच्यते तारम् । अथ कस्मादुच्यते शुक्लं यस्मादुच्चार्यमाण एव क्लन्दते क्लामयति च तस्मादुच्यते शुक्लम् । अथ कस्मादुच्यते सूक्ष्मं यस्मादुच्चार्यमाण एव सूक्ष्मो भूत्वा शरीराण्यधितिष्ठति सर्वाणि चाङ्गान्यभिमृश्यति तत्मादुच्यते सूक्ष्मम् । अथ कस्मादुच्यते वैद्युतम् । यस्मादुच्चार्यमाण एव व्यक्ते महति तमसि द्योतयति तस्मादुच्यते वैद्युतम् । अथ कस्मादुच्यते परं ब्रह्म यस्मात् परमपरं परायणञ्च बृहद्बृहत्या बृंहयति तस्मादुच्यते परं ब्रह्म । अथ कस्मादुच्यते एकः यः सर्वान् प्राणान् सम्भक्ष्य सम्भक्षणेनाजः संसृजति विसृजति तीर्थमेके व्रजन्ति तीर्थमे दके क्षिणाःप्रत्यञ्च उदञ्चःप्राञ्चोऽभिव्रजन्त्येके

---

१ ओंकारपदार्थं स्पष्टयितुमयं प्रश्नः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तेषां सर्वेषामिह सङ्गतिःसाकं स एकोऽभूदन्तश्चरति प्रजानां तस्मादुच्यते एकः। अथ कस्मादुच्यते रुद्रःयस्मादषिभिर्नान्यैर्भक्तैद्रुतमस्य रूपमुपलभ्यते तस्मादुच्यते रुद्रः। अथ कस्मादुच्यते ईशानः यः सर्वान्देवानीशते ईशानीभिर्जननीभिश्च शक्तिभिः। अभित्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः। ईशानमस्य जगतःस्वर्दृश-मीशानमिन्द्र तस्थुष इतितस्मादुच्यतेईशानः।अथ कस्मादुच्यते भगवान् महेश्वरः यस्माद्भक्तान् ज्ञानेन भजत्यनुगृह्णाति च वाच संसृजति विसृजति च सर्वान् भावात्परित्यज्यात्मज्ञानेन योगश्वर्येण महति महीयते तस्मादुच्यते भगवान् महेश्वरः। तदेतद्रुद्रचरितम्। एको ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वो ह जातः स उ गर्भे अन्तः। स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ्जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः। एको रुद्रो नद्वितीयाय तस्मै य इमाँल्लोकानीशत ईशनीभिः। प्रत्यङ्जनास्ति-ष्ठति चान्तकाले संसृज्य विश्वा भुवनानि गोपा॥ यो योनि योनिमधितिष्ठ-त्येको येनेदं सर्वं विचरति सर्वम्। तमीशानं वरदं देवमीड्य निचाय्येमां शान्ति मत्यन्तमेति। क्षमां हित्वा हेतुजालस्य मूलं बुद्ध्या सञ्चितं स्थापयित्वा तु रुद्रे। रुद्रमेकत्वमाहुः शाश्वतं वै पुराणमिषमूर्जेण पशवोनुनामयन्तं मृत्युपाशान्। तदे-तेनात्मनैतेनार्धचतुर्थेन मांत्रेण शान्तिं संसृजति पशुपाशविमोक्षणं या सा प्रथमा मात्रा ब्रह्मदेवत्या रक्ता वर्णेन यस्तां ध्यायते नित्य स गच्छेद्ब्रह्मपदम्। या सा द्वितीया मात्रा विष्णुदेवत्या कृष्णा वर्णेन यस्तां ध्यायते नित्य स गच्छेद्वै-ष्णवं पदम्। या सा तृतीया मात्रा ईशानदेवत्या कपिला वर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं स गच्छेदैशानं पदम्। या साऽर्धचतुर्थी मात्रा सर्वदेवत्याऽव्यक्तीभूता खंवि-चरति शुद्धा स्फटिकसन्निभा वर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं स गच्छेत्पदमनामयम्। तदेतदुपासीत मुनयो वाग्वदंति न तस्य ग्रहणमयं पन्था विहित उत्तरेण येन देवा यान्ति येन पितरो येन ऋषयः परमपरं परायणं चेति। वालाग्रमात्रं हृद-यस्य मध्ये विश्वं देवं जातरूपं वरेण्यम्। तमात्मस्थं ये नु पश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिर्भवति नेतरेषाम्। यस्मिन् क्रोधं याञ्च तृष्णां क्षमांश्चाक्षमां हित्वा हेतु-

---

१ नद्वितीयायेति समस्तं पदम्, अद्वितीयायेत्यर्थः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



जालस्य मूलम्। बुद्ध्या संचितं स्थापयित्वा तु रुद्रे रुद्रमेकत्वमाहुः। रुद्रो हि शाश्वतेन वै पुराणेनेषमूर्जेण तपसा नियन्ताऽग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म व्योमेति भस्म सर्वं ह वा इदं भस्म मन एतानि चक्षूंषि यस्मादव्रतमिदं पाशुपतं यद्भस्मनाऽङ्गानि संस्पृशेत् तस्माद् ब्रह्म तदेतत्पाशुपतं पशुपाशविमोक्षणाय ॥ ५ ॥ योऽग्नौ रुद्रो योऽप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश। य इमा विश्वा भुवनानि चक्लृपे तस्मै रुद्राय नमोऽस्त्वग्नये। यो रुद्रोऽग्नौ यो रुद्रोप्स्वन्तर्यो रुद्र ओषधीर्वीरुध आविवेश। यो रुद्र इमा विश्वा भुवनानि चक्लृपे तस्मै रुद्राय नमोऽस्त्वग्नये। यो रुद्रोऽग्नौ यो रुद्रोऽप्स्वन्तर्यो रुद्र ओषधीर्वीरुध आविवेश। यो रुद्र इमा विश्वा भुवनानि चक्लृपे तस्मै रुद्राय नमो नमः। यो रुद्रोऽप्सु यो रुद्र औषधीषु यो रुद्रो वनस्पतिषु। येन रुद्रेण जगदूर्ध्वं धारितं पृथिवी द्विधा त्रिधा धर्त्रा धारिता नागा येऽन्तरिक्षे तस्मै रुद्राय नमो नमः। मूर्धानमस्य संसेव्याथ्यथर्वा ह्रदयञ्च यत्। मस्तिष्कादूर्ध्वं प्रेरयत्यवमानोऽधिशीर्षतः। तद्वा अथर्वणः शिरो देवकोशः समुज्झितः। तत् प्राणोभिरक्षति शिरोऽन्तमथो मनः। न च दिवो दवजनेन गुप्ता न चान्तरिक्षाणि न च भूम इमाः। यस्मिन्निदं सर्वमोतप्रोतं तस्मादन्यन्न परं किञ्चनास्ति। न तस्मात्पूर्वं न परं यदस्ति न भूतं नोत भव्यं यदासीत्। सहस्रपादेकमूर्ध्ना व्याप्तं स एवेदमावरीवर्ति भूतम्। अक्षरात् सञ्जायते कालःकालाद् व्यापक उच्यते। व्यापको हि भगवान् रुद्रो भोगायमानो यदा शेते रुद्रस्तदा संहार्यते प्रजाः। उच्छ्वसित तमो भवति तमस आपोऽइवङ्गुल्या मथिते मथितं शिशिरे शिशिरं मथ्यमानं फेनं भवति फेनादण्डं भवत्यण्डाद्ब्रह्मा भवति ब्रह्मणो वायुर्वायोरोङ्कार ओंकारात्सावित्री सावित्र्या गायत्री गायत्र्या लोका भवन्ति। अर्चयन्ति तपःसत्यं मधु क्षरन्ति यद्ध्रुवम्। एतद्धि परम तपः। आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरों नम इति ॥ ६ ॥ य इदमथवशिरो ब्राह्मणोऽधीते। अश्रोत्रियः श्रोत्रियो भवति। अनुपनीत उपनीतो भवति। सोऽग्निपूतो भवति। स वायुपूतो

---

१ शिरोऽन्तं शिरोभागावधीत्यर्थः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



भवति । स सूर्यपूतो भवति । स सोमपूतो भवति । स सत्यपूतो भवति । स सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति । स सर्वैर्वेदैरनुष्यातो भवति । स सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवन्ति । तेन सर्वैः क्रतुभिरिष्टं भवति । गायत्र्याः षष्टिसहस्राणि जप्तानि भवन्ति । प्रणवानामयुतं जप्त भवति । स चक्षुषः षड्रुक्ति पुनाति । आसप्तमात् पुरुषयुगान्पुनातीत्याह भगवानथर्वशिरः सकृज्जप्त्वैव शुचिः स पूतः कर्मण्यो भवति । द्वितीयं जप्त्वा गणाधिपत्यमवाप्नोति । तृतीयं जप्त्वैवमेवानुप्रविशत्यों सत्यमों सत्यमों सत्यम् । इत्यथर्ववेदे शिवाथर्वशीर्षम् ॥

**अथ सूर्याथर्वशीर्षम्**-अथ सूर्याथर्वाङ्गिरसंव्याख्यास्यामः, ब्रह्मा ऋषिः। आदित्यो देवता । गायत्री छन्दः । हंसाद्यभिनारायणयुक्तं बीजम् । हल्लेखा शक्तिः । द्विपदादि सर्गसंयुक्तं कीलकम् । धर्मार्थकाममोक्षेषु जपे विनियोगः । षड्स्वरारूढबीजेन षडङ्गं रक्ताम्बुजसंस्थितं सप्ताश्वरथिनं हिरण्यवर्णं चतुर्भुजं पद्मद्वयाभयवरदहस्तं कालचक्रप्रणेतारं च श्रीसूर्यनारायणं य एवंवेद स वै ब्राह्मणः। ॐ भूः । ॐ भुवः । ॐ । स्वः । ॐ महः । ॐ जनः । ॐ तपः । ॐ सत्यम् । ॐ तत्सवि० परोरजसेसावदोम् । ॐ आपो ज्योती रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् । सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च । सूर्याद्वै खल्विमानि भूतानि जायन्ते । सूर्याद्यज्ञाः पर्जन्योऽन्नमात्मा । नमस्ते आदित्याय । त्वमेव केवलं कर्तासि । त्वमेव प्रत्यक्ष विष्णुरसि । त्वमेव प्रत्यक्ष ब्रह्माऽसि । त्वमेव प्रत्यक्षं रुद्रोऽसि । त्वमेव प्रत्यक्षमृगसि । त्वमेव प्रत्यक्षं यजुरसि । त्वमेव प्रत्यक्षं सामासि । त्वमेव प्रत्यक्षमथर्वासि । त्वमेव सर्वं छन्दोऽसि । आदित्याद्वायुर्जायते । आदित्याद्भूमिर्जायते । आदित्यादापो । जायन्ते । आदित्याद् व्योम दिशो जायन्ते। आदित्याद्वेदा जायन्ते । आदित्यादेवा जायन्ते।आदित्यो वा एष एतन्मण्डलंतपति आसावादित्यो ब्रह्म । आदित्योऽन्तःकर मनोबुद्धिचित्ताहङ्काराः । आदित्यो वै व्यानसमानोदानापानप्राणाः । आदित्यो श्रोत्रत्वक्चक्षूरसनानासाः । आदित्यो वै वाक्पाणिपादोपस्थपायूनि । आदित्यो वै शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः ।

---

१ श्रीर्षपदमुपनिषत्परम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



आदित्यो वै वचनादानगमनानन्दविसर्गाः। आनन्दमयो ज्ञानमयो विज्ञानमय आदित्यः। नमो मित्राय मानवे मृत्योर्मा पाहि भ्राजिष्णावे विश्वहेतवे मनः। सूर्यो नो दिवस्पातु वातो अन्तरिक्षात्। अग्निर्नः पार्थिवेभ्यः। सूर्याद्भवंति भूतानि। सूर्येण पालितानि तु सूर्ये लयं प्राप्नुवंति। यः सूर्यः सोऽहमेव च। चक्षुर्नो देवः सविता। चक्षुर्न उत पर्वतः। चक्षुर्धाता दधातु नः। आदित्याय विद्महे सहस्रकराय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्। सविता पश्चात्तात्। सविता पुरस्तात्। सवितोत्तरात्तात्। सविताऽधरात्तात्। सविता नः सुवतु सर्वतातिम्। सविता नो रासतां दीर्घमायुः। ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म। घृणिरिति द्वे अक्षरे। सूर्य इत्यक्षरद्वयम्। आदित्य इति त्रीण्यक्षराणि। एतद्वै सूर्यस्याष्टाक्षरं मनुम्। यः सदाऽहरहर्जपति सो ब्रह्मण्यो ब्राह्मणो भवति। सूर्याभिमुखं नप्त्वा महाव्याधिभयात्प्रमुच्यते। अलक्ष्मीर्नश्यति। अभक्ष्यभक्षणा पूतो भवति। अपेयपानात्पूतो भवति। अगम्यागमनात्पूतो भवति। व्रात्यसम्भाषणात्पूतो भवति। मध्याह्ने सूर्याभिमुखः पठेत्। सद्यः पञ्चमहापापात्प्रमुच्यते। सैषा सावित्री विद्या न कस्यचित्प्रशंसेत्। एतन्महाभागः प्रातः पठति स भाग्यवान् जायते। पशून् विन्दति। वेदार्थं लभते। त्रिकालं जप्त्वा क्रतुशतफलं प्राप्नोति। हस्तादित्यं जपति स महामृत्युं तरति। य एवं वेद। इति सूर्याथर्वशीर्षम्॥

**अथ देव्यथर्वशीर्षम्**[1]—ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवी। साऽब्रवीदहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च। अहमानंदानानंदौ अहं विज्ञानाविज्ञाने अहं ब्रह्माब्रह्मणी द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये। इति वाऽथर्वणी श्रुतिः। अहं पञ्चभूतानि अहं पञ्च तन्मात्राणि अहमखिलं जगत् वेदोऽहमवेदोऽहम् विद्याऽहमविद्याऽहम् अजाऽहमनजाऽहम् अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम् अहꣳ रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ अहꣳ सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि अहं विष्णुमुरुक्रमम् ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि अहं दधामि द्रविणꣳ हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते अहꣳ राष्ट्री सङ्गमनी वसूनाम्

---

१ शीर्षपदमुपनिषत्परम्। २ अन्नोपिशीर्षपदेर्मुपनिषत्वरम्।



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् अहꣳ सुवे पितरमस्य मूर्द्धन्मम योनिरप्स्वांतःसमुद्रे य एवं वेद स दैवीꣳ सम्पदमाप्नोति ते देवा अब्रुवन्। नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ तामग्निवर्णा तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनी कर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः। देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु ॥ कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्। सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्। महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्। अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव। तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः॥ कामे योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हंसा मातरिश्वाभिन्द्रः। पुनर्गुहा सकला मायया चापृथक्क्लेशा विश्वमातादिविद्याः॥एषाऽऽत्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी पाशांकुशधनुर्बाणधरा। एषा श्रीमहाविद्याः। य एवं वेद स शोकं तरति। नमस्ते भगवति मातरस्मान्पाहि सर्वतः। सैषा वैष्णवी वसवः सैवैकादश रुद्राः सैषा द्वादशादित्याः सैषा विश्वे देवाः सोमपा असोमपाश्च सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचयक्षसिद्धाः सैषा सत्त्वरजस्तमांसि सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतिष्कलाकाष्ठादिविश्वरूपिणी तामहं प्रणौमि नित्यम्। पापापहारिणी देवी भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी। अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां सर्वदा[1] शिवाम् ॥ वियदाकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्। अर्द्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम् ॥ एवमेकाक्षरं मन्त्रं यतयः शुद्धचेतसः। ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः॥ वाङ्मया ब्रह्मभूस्तस्मात् षष्ठवक्त्रसमन्विताम् ॥ सूर्यो वामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टतृतीयकम् ॥ नारायणेन संमिश्रो वायुश्चाधारयुक्तयः। विच्चे नवार्णकोणस्य महानानन्ददायकः ॥ हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम्। पाशांकुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम् ॥ त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुहं भजे। भजामि त्वां महादेवि महाभयविनाशिनि॥महादारिद्र्यशमनी महाकारुण्यरूपिणी। यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति। तस्मादु-

---

१ सर्वदामिति पाठान्तरे तु सर्वं ददातीति तामित्यर्थः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



च्यते अज्ञेया । यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता । यस्या लक्षं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्षा । यस्या जननं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अजा । एकैव सर्वत्र वर्त्तते तस्मादुच्यते एका । एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यतेऽनेका । अत एवोच्यतेऽज्ञेयानन्तालक्षाजैकानेका । मन्त्राणां मातृका देवीशब्दानां ज्ञानरूपिणी । ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी ॥ यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्त्तिता । तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम् ॥ नमामिभयभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम् ॥ इदमथर्वशीर्षं योऽधीते । स ब्रह्मथर्वशीर्षफलमाप्नोति । इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां ५ स्थापयति । शतलक्षं प्रजप्ताऽपि नार्चा शुद्धिं च विन्दति । शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः । दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते । महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः॥ सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रकृतं पापं नाशयति । सायंप्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति । निशीथे तुरीयसन्ध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति । नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति । भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति स महामृत्युं तराति । य एवं वेद । इत्युपनिषत् ॥ इति देव्यथर्वोपनिषत् ।

**अथ गायत्रीपुरश्चरणविधिः** ॥ तत्र तावत्सुमुहूर्ततीर्थादौ विल्ववृक्षाश्रये वा गत्वा आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाणगायत्री पुरश्चरणे अधिकारसिद्ध्यर्थं कृच्छ्रत्रयममुकप्रत्याम्नायद्वारा अहमाचरिष्ये ॥ इति संकल्प्य धेनुदानहोमसुवर्णादिप्रत्याम्नायविधिना कृच्छ्राणि संपादयेत् ॥ पुनर्देशकालौ संकीर्त्य मम सकलपापक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं चतुर्विंशतिलक्षजपात्मकं गायत्रीपुश्चरणं स्वयं ( विप्रद्वारा ) करिष्ये ॥ तदंगत्वेन गणपतिपूजनं स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नांदीश्राद्धाचार्यादिजपकर्तृवरणं च करिष्ये ॥ इति संकल्प्य सुमुखश्चेत्यादिना गणपतिपूजनादि नान्दीश्राद्धान्तं च विधाय नान्दीश्राद्धांत सविता प्रीयता इति पठित्वा यदि ब्राह्मणद्वारा कारयेत्तदा देशकालौ संकीर्त्य गायत्रीपुरश्चणजपकर्तारं त्वामहं वृणे इति पृथक् पृथक् विप्रद्वारा जपे विप्रान्वृणुयात् ॥ ततस्ताम्वूलासनकमंडलुमालादिभिः संपूज्य देवताः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



प्रार्थयेत् ॥ सूर्यः सोमो यमः कालः सन्ध्ये भूतान्यहः क्षपा ॥ पवमानो दिक्पतिर्भूराकाशं खेचरामराः ॥ ब्रह्मशासनमास्थाय कल्पध्वमिह सन्निधिम् ॥ इति पठेत् । तथो ब्राह्मणः कूशाद्यासनोपविष्टः पवित्रपाणिराचम्य देशकालौ स्मृत्वा अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहममुकशर्मणो मम यजमानस्य सकलपापक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं गायत्रीपुरश्चरणान्तर्गताऽमुकसंख्यापरिमितगायत्रीजपं करिष्ये॥ इति दैनिकजपं संकल्प्य ॥ ॐ गुरवे नमः ॥ ॐ गणपतये नमः ॥ ॐ दुर्गायै नमः ॥ ॐ मातृभ्यो नमः ॥ इति नत्वा त्रिः प्राणानायम्य ॥ ॐ तत्सवितुरिति गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः जपे विनियोगः ॥ इति विनियोगं विधायांगन्यासं कुर्यात् यथा—**ॐ विश्वामित्राय ऋषये नमः शिरसि ॥ ॐ गायत्रीछंदसे नमो मुखे ॥ ॐ सवितृदेवतायै नमो हृदि ॥ ॐ तत्सवितुरित्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ वरेण्यं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ भर्गो देवस्य मध्यमाभ्यां न०॥ ॐ धीमह्यनामिकाभ्यां ( नमः ॥ ॐ धियो यो नः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ तत्सवितुरिति हृदयाय नमः ॥ ॐ वरेण्यमिति शिरसे स्वाहा॥ॐभर्गो देवस्येनि शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहीति कवचायहुं ॥ ॐ धियो यो न इति नेत्रयोर्वौषट्॥ॐ प्रचोदयादिति अस्त्राय फट् ॥**इत्येवं शिरःप्रभृत्यङ्गन्यासान् विधाय जपं कुर्यात् । ( तत्रादौ मालासंस्कारः ) कुशोदकसहितैः पंचगव्यैर्मालां प्रक्षाल्य ॐ ह्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं इत्येतानि पंचाशन्मातृकाक्षराणि अश्वत्थपत्रस्थापितमालायां विन्यस्य **ॐ सद्योजातेति** मंत्रेण मालां पंचगव्येन प्रोक्ष्य शीतजलेन प्रक्षाल्य **ॐ कामदेवेति** चंदनेनावघृष्य **ॐ अघोरेति** मालां धूपयित्वा **ॐ तत्पुरुषेति** चंदनकस्तूर्यादिना लेपयित्वा **ॐ ईशान** इति मंत्रेण प्रतिमणि शतवारं वा अभिमंत्र्य **ॐ अघोरेति** मंत्रेण;

---

१ एते सर्वेऽपि प्रतीकरूपेण दर्शिता मन्त्राः पूर्वं रुद्राष्टाध्याय्यन्ते पठिताः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मेरुं दशवारमभिमंत्रत्रयेत्। ततस्तैरेव मंत्रैर्मालां पञ्चोपचारैः संपूजयेत् ॥ ततः ॐ महामाये महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ इति प्रार्थ्य ॥ ॐ अविघ्नं कुरु मालं त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीदमम सिद्धये ॥ इति तामादाय मंत्रदेवतां सवितारं ध्यायन् हृदयसमीपे मालां धारयन् मंत्रार्थं स्मरन्मध्यंदिनावधि जपेत्। अतित्वरायां सार्द्धत्रयप्रहरावधि जप्त्वाऽन्ते पुनः प्रणवमुक्त्वा। ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव। शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा ॥ इति मालां शिरसि निधाय त्रिः प्राणानायम्य पूर्वोक्तं न्यासत्रं कृत्वा जपमीश्वरार्पितं कुर्यात् ॥ प्रत्यहं समानसंख्य एव जपो विधेयः। न तु न्यूनाधिकः ॥ एवं पुरश्चरणजपसमाप्तौ होमः। पुरश्चरणसांगतासिद्ध्यर्थं होमविधिं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य अग्निं प्रतिष्ठाप्य पीठे सूर्यादिनवग्रहपूजनादि कलशस्थापनान्तं कर्म कृत्वा कुशकण्डिकां कुर्यात्। ततः आज्यभागांते इदं हवनीयद्रव्यमन्वाधानोक्तदेवताभ्योऽस्तु न ममेति यजमानद्वारा त्यागं कृत्वा ॥ अर्कादिसमिच्चर्वाज्यातिभिर्ग्रहहोमं संपाद्य प्रधानेदेवतां सवितारं चतुर्विंशतिसहस्रतिलाहुतैर्मिलिसहस्रसंख्याकाभिः पायसाहुतिभिर्घृतमिश्रतिलाहुतिभिर्दूर्वाहुतिभिः क्षीरद्रुमसमिदाहुतिभिश्च तर्पयित्वा शेषेण स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात्। होमे सप्रणवव्याहृतिरहिता स्वाहांता गायत्री दूर्वात्रयस्यैकाहुतिः॥दूर्वासमिधो दधिमध्वाज्याक्ताः। ततो होमांते बलिदानं कृत्वा यजमानस्याभिषेकः कार्यः। ततः प्रतिलक्षं सुवर्णनिष्कत्रयं तदर्धं वा शक्त्या वा दक्षिणा। होमांते जले देवं सवितारं संपूज्य होमसंख्यादशांशेन २४००० गायत्र्यंते सवितारं तर्पयामि इत्युक्त्वा तर्पणं कार्यम्। तर्पणदशांशेन २४००० गायत्र्यन्ते आत्मानमभिषिंचामि नम इति यजमानमूर्ध्न्यभिषेकः। होमतर्पणाभिषेकाणां मध्ये यदेव न संभवति तत्स्थाने ततद् द्विगुणो जपः कार्यः ॥ अभिषेकसंख्यादशांशेन २४०० विप्रभोजनम् ॥ पुरश्चरणं संपूर्णमस्त्विति विप्रान् वाचयित्वा ईश्वरार्पणं कार्यम्। यज्ञाग्रत इति शिवसंकल्पमंत्रस्य त्रिपाठः। कर्त्ता ब्राह्मणैः सह हविष्याशी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सत्यवाक् अधःशायी ब्रह्मचारी भवेत् विष्णुशयनमासेषु पुरश्चरणं न कार्यम्। तीर्थादौ शीघ्रं सिद्धिः। विल्ववृक्षाश्रवेण जप एकाहात्सिद्धिः॥

**अथ गायत्रीशापविमोचनम्** ॥ अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्रीशक्तिर्देवता गायत्री छन्दः ब्रह्मशापविमोचने विनियोगः॥ ॐगायत्रीं ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदोविदुः॥ तां पश्यंति धीराः सुमना वाचामग्रतः॥ ॐवेदांतनाथ विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि। तन्नोब्रह्म प्रचोदयात्। ॐ देवी गायत्री त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव॥ अस्य श्रीवसिष्ठशापविमोचनमंत्रस्य निग्रहानुग्रहकर्त्ता वसिष्ठ ऋषिः। वसिष्ठानुगृहीता गायत्रीशक्तिर्देवता विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः वसिष्ठशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः॥ ॐ सोहमर्कमयं ज्योतिरात्मजेतीरहं शिवः। आत्मज्योरहं शुक्रः सर्वज्योति रसोऽस्म्यहम्॥ इत्युक्त्वा योनिमुद्रां प्रदर्श्य गायत्रीत्रयं पठित्वा ॐदेवी गायत्री त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव॥ अस्य श्रीविश्वामित्रशापविमोचनमंत्रस्य नूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्र ऋषिः। विश्वामित्रानुगृहीता गायत्रीशक्तिर्देवता वाग्देहा गायत्री छन्दः विश्वामित्रशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः ॐ॥ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भां यदुद्भवा देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये॥ यन्मुखान्निस्सृतीऽखिलवेदगर्भः। शापयुक्ता तु गायत्री सफला न कदाचन॥ शापोदुत्तारिता सा तु भुक्तिमुक्तिफलप्रदा॥ (गायत्रीप्रार्थना,) अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनिनमोऽस्तु ते॥ ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव॥ वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव॥ विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव॥ इति गायत्रीशापविमोचनम्॥ अथ गायत्रीकवचम्॥ अस्य श्रीगायत्रीकवचस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषय ऋग्युजुःसामाथर्वाणि च्छन्दांसि, परब्रह्मस्वरूपिणी गायत्री देवता, भूः बीजम्, भुवः शक्तिः, स्वः कीलकम्, गायत्रीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः॥ वर्णाभां कुंडिकाहस्तां शुद्धनिर्मलज्योतिषीम्।

---

१–इदं गायत्रीशापविमोचनं पूर्वं संध्यावन्दनविधावुक्तमपि पुनरत्र गायत्रीपुरश्चरण तस्मात्वन्मतमावश्यकत्वादत्राप्युक्तमिति ध्येयम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सर्वतत्त्वमयीं वंदे गायत्रीं वेदमातरम् ॥ अथ ध्यानम् ॥ मुक्ताविद्रुमहेमनील-धवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् गायत्रीं वरदाभयांकुशकशां शूलं कपालं गुणं शंखं चक्रमथारविंदयुगलं हस्तैर्वहतीं भजे ॥१॥ ॐ गायत्री पूर्वतः पातु सावित्री पातु दक्षिणे। ब्रह्मविद्या च मे पश्चा-दुत्तरे मां सरस्वती ॥ पावकीं मे दिशं रक्षेत्पावकोज्ज्वलशालिनी ॥ यातुधानीं दिशं रक्षेत्पवमानविलासिनी ॥ दिशं रौद्रीमवतु मे रुद्राणी रुद्ररूपिणी ॥ ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा। एवं दश दिशो रक्षेत्सर्वतो भुवनेश्वरी ॥ ब्रह्मास्त्रस्मरणादेव वाचां सिद्धिः प्रजायते। ब्रह्मदण्डश्च मे पातु सर्वशस्त्र-स्त्रभक्षकः ॥ ब्रह्मशीर्षस्तथा पातु शत्रूणां वधकारकः। सप्त व्याह्र-तयः पान्तु सस्वरा बिंदुसंयुताः ॥ वेदमाता च मां पातु सरहस्या सदेवता। देवी सूक्तं सदा पातु सहस्राक्षरदेवता ॥ चतुष्षष्टिकला विद्या दिव्याद्या पातु देवता। बीजशक्तिश्च मे पातु विक्रमदेवता ॥ तत्पदं पातु मे पादौ जंघे मे सवितुः पदम्। वरेण्यं कटिदेशं तु नाभिं भर्गस्तथैव च ॥ देवस्य मे तु हृदयं धीमहीति गलं तथा। धियो मे पातु जिह्वायां यः पदं पातु लोचने ॥ ललाटे नः पदं पातु मूर्धानं मे प्रचोदयात्। तद्वर्णः पातु मूर्धानं सकारः पातु भाल-कम् ॥ चक्षुषी मे विकारस्तु श्रोत्रं रक्षेत्तुकारकः। नासापुटे वकारो मे रेका-रस्तु कपोलयोः ॥ णिकारस्त्वधरोष्ठे च यकारस्तूत्तरोष्ठके। आस्यमध्ये भका-रस्तु गोंकारस्तु कपोलयोः ॥ देकारः कंठदेशे च वकारः स्कंधदेशयोः। स्यकारो दक्षिणं हस्तं धीकारो वामहस्तके ॥ मकारो हृदयं रक्षेद्धिकारो जठरं तथा। धिकारो नाभिदेशं तु योकारस्तु कटिद्वयम् ॥ गुह्यं रक्षतु योकार ऊरू मे नः-पदाक्षरम्। प्रकारो जानुनी रक्षेच्चोकारो जंघदेशयोः दकारो गुल्फदेशं तु यात्कारः पादयुग्मकम्। जातवेदेति गायत्री त्र्यंबकेति शताक्षरा ॥ सर्वतः सर्वदा पातु आपोज्योतीति षोडशी। इदं तु कवचं दिव्यं बाधाशतविनाशनम् ॥ चतुष्ष-ष्टिकलाविद्यासकलैश्वर्यसिद्धिदम्। जपारंभे च हृदयं जपांते कवचं पठेत् ॥ स्त्रीगोब्राह्मणमित्रादिद्रोहाद्यखिलपातकैः मुच्यते सर्वपापेभ्यः परं ब्रह्माधिगच्छति॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



भूजपत्रे लिखित्वैतत्स्वकण्ठे धारयेद्यदि । शिखायां दक्षिणे बाहो नानाविद्यानिधिर्भवेत् । इति विश्वामित्रकल्पोक्तं गायत्रीकवचम् ॥

**अथ मुद्राप्रदर्शनप्रकारः ।** सुमुखं संपुटं चैव विततं विस्तृतं तथा । द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पंचमुखं तथा ॥ षण्मुखाधोमुखं चैव व्यापकांजलिकं तथा । शकटं यमपाशं च ग्रंथितं चोल्मुकोल्मुकम् ॥ प्रलंबं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम्।सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा॥एता मुद्रा न जानाति गायत्री निष्फला भवेत् ॥ इति मुद्राप्रदर्शनम् ॥ **अथ गायत्रीतर्पणम्** ॥ अँगायत्र्या विश्वामित्रऋषिः सविता देवता गायत्रीछन्दः गागत्रीतर्पणेविनियोगः।

**ॐ भूःऋग्वेदपुरुषं तर्पयामि ॥ॐ भुवःयजुर्वेदपुरुषं तर्पयामि॥ ॐ स्वः सामवेदपुरुषं तर्प० ॥ ॐ महः अथर्ववेदपुरुषं त० ॥ ॐ जनःइतिहासपुराणपुरुषं त० । ॐ तपः सर्वागमपुरुषं त०॥ ॐ सत्यं सत्यलोकपुरुषं त० ॥ ॐ भूः भूर्लोकपुरुषं त० ॥ ॐ भुवःभुवर्लोकपुरुष त०॥ॐ स्वः स्वर्लोकपुरुषं त० ॥ ॐ भूः एकपदां गायत्रीं तर्पयामि ॥ ॐ भुवः द्विपदां गायत्रीं त० ॥ ॐ स्वः त्रिपदां गायत्रीं तर्प० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चतुष्पदां गायत्रीं त० ॥ॐ उषसीं तर्प० ॥ॐ गायत्रीं तर्प० ॥ ॐ सावित्रीं तर्प० ॥ ॐ सरस्वतीं तर्प० ॥ ॐ वेदमातरं तर्प० ॥ ॐ पृथिवीं तर्प० ॥ ॐ अजां तर्प० ॥ ॐ कौशिकीं तर्प० ॥ ॐ सांकृत्तिं तर्प० ॥ ॐ सर्वजितां तर्प० ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ इति ॥**

**अथ वेदोक्ताः सबीजा नवग्रहमन्त्राः ॥** आचम्य प्राणानायम्य ( संकल्पः ) अद्य पूर्वोच्चरित एवंगुणविशेषणविशिष्टशुभपुण्यतिथौ महात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम जन्मराशेःसकाशाद्विरुद्धचतुर्थाष्टमद्वादशादिस्थानस्थितामुकग्रहपीडापरिहारद्वारा एकादशस्थानस्थितवत् उत्तमफलप्राप्त्यर्थममुकग्रहस्य होमं स्तुतिं जपं वा करिष्य इति संकल्प्य ।

---

१–इदं मुद्राप्रदर्शनं पूर्वं संध्याविधावुक्तमपि पुनरत्र गायत्रीपुरश्चरणे तस्यात्यन्तमावश्यकत्वादत्रापि पठितमिति ध्येयम् । २–इदं गायत्रीतर्पणं पूर्वं संध्याविधावुक्तमपि पुनरत्र गायत्रीपुरश्चरणे तस्यात्यन्तावश्यकत्वादत्रापि पठितमिति ध्येयम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



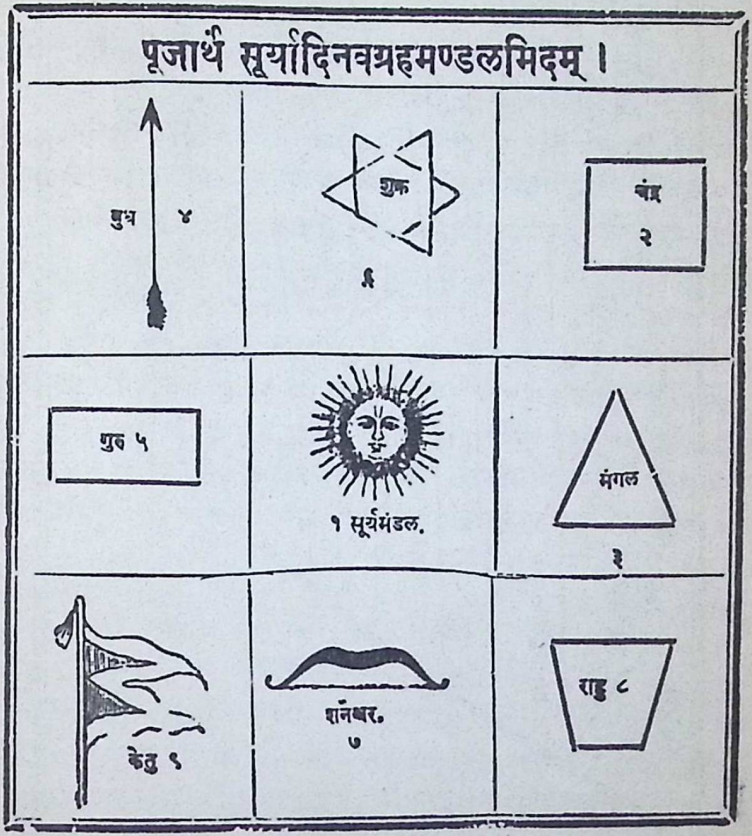


CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



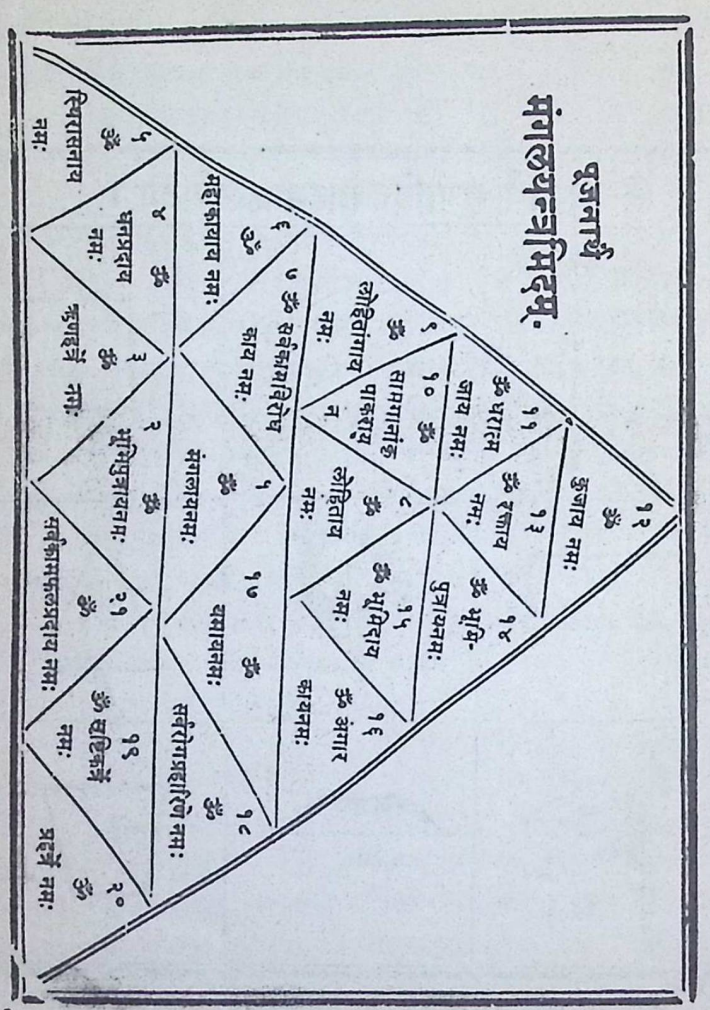


वर्तुलमण्डलादिषु सूर्यादीन्संपूज्य जपादिकं कुर्यात् ॥ तत्रादित्यमंत्रः ॥ आकृष्णेनेति मंत्रस्य हिरण्यस्तूपाङ्गिरस ऋषिः सूर्यो देवता त्रिष्टुप्छंदः सूर्यप्रीतये सूर्यमंत्रजपे विनियोगः ॥ ॐ ह्रां ह्रीं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ह्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ आकृष्णेनरजसावर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानि पश्यन् ॥ ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः ह्रौं ह्रीं ह्रां ॐ सूर्याय नमः ॥ जपसंख्या ७००० कलौ तु २८००० ॥ सोममंत्रः ॥ इमं देवा इति मंत्रस्य वरुण ऋषिः अग्निर्देवता सोमप्रीतये सोममंत्रजपे वि० ॥ ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ इमन्देवाऽअसपत्नꣳसुवध्वम्महतेक्षत्रायमहतेज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इमममुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यैविशऽएषवोमीराजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा ॥ ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः श्रौं श्रीं श्रां ॐ सोमाय नमः ॥ जपसंख्या ११००० ॥ कलौ ४४००० ॥ भौममन्त्रः ॥ अग्निर्मूर्द्धा इतिमन्त्रस्य विरूपाङ्गिरस ऋषिः अग्निर्देवता। गायत्रीछन्द्रः भौमप्रीतये भौममंत्रजपे विनियोगः। ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः अग्निर्मुर्द्धादिव ÷ ककुत्पतिं ÷ पृथिव्याऽअयम् ॥ अपाꣳरेताꣳसिजिन्वति ॥ ॐ स्वः भूः ॐ सः क्रौं क्रीं क्रां ॐ भौमाय नमः ॥ १०००० कलौ ४०००० ॥ बुधमन्त्रः ॥ उद्बुध्यस्व इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः बुधो देवता त्रिष्टुप्छंदः बुधप्रीतये बुधमंत्रजपे विनियोगः ॥ ॐ व्रां व्रीं व्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ उद्बुद्धयस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वामिष्टापूर्तेसꣳसृजेथामयश्च ॥ अस्मिन्सधस्थेऽअद्ध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवायजमानश्चसीदत ॥ ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः व्रौं व्रीं व्रां ॐ बुधाय नमः ॥ जपसं० ४००० कलौ १६००० ॥ बृहस्पतिमंत्रः ॥ बृहस्पत

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



इति मंत्रस्य गृत्समद ऋषिः ब्रह्मा देवता त्रिष्टुप्छन्दः बृहस्पति प्रीतये बार्हस्पत्यमन्त्रजपे विनि० ॥ ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्य्योऽअर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु-मुज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽऋतप्प्रजातंतदस्मासुद्रविणन्धेहि चित्रम् ॥ ॐ स्वः भुवः भूवः ॐ सः ह्रौं ह्रीं ह्राँ ॐ बृहस्पतये नम ॥ जप० १९००० कलौ ७६००० ॥ शुक्रमन्त्रः ॥ अन्ना-त्परिस्रुत इति मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः अश्विसरस्वतीन्द्रा देवताः जगती छंदःशुक्रप्रीतये शुक्रमंत्रजपे विनियोगः ॥ ॐ द्रौं द्रीं द्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः अन्नात्परि स्रुतोरसम्ब्रह्मणा व्य्य पिबत्क्षत्रम्पयऽसोमम्प्रजापतिः । ऋतेनसत्यमिन्द्रियं व्विपानंशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु ॥ ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः द्रौं द्रीं द्रौं ॐ शुक्राय नमः ॥ जप० ११००० कलौ ४४००० ॥ शनैश्चरमंत्रः ॥ शन्नोदेवीरिति मंत्रस्य दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः आपो देवता गायत्री छन्दः शनैश्चर-प्रीतये शनैश्चरमंत्रजपे वि० ॥ ॐ खाँ खीं खौं स ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवंतुपीतये । शंयोरभिस्र-वन्तुनः ॥ ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः खौं खीं खाँ ॐ शनैश्चराय नमः ॥ ज० २३००० कलौ ९२००० ॥ राहुमंत्रः ॥ कयानश्चित्र इति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः राहुर्देवता गायत्री छंदः राहुप्री-तये राहुमंत्रजपे वि० ॥ ॐ भ्राँ भ्रीं भ्रौं स ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधुः सखा ॥ कयाशचि-ष्ठयावता ॥ ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः भ्रौं भ्रीं भ्राँ ॐ राहवे नमः ॥ जप० १८००० क० ७२००० ॥ केतुमन्त्रः ॥ केतुंकृ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ण्वणिति मंत्रस्य मधुच्छन्दा ऋषिः केतुर्देवता गायत्री छन्दः केतुप्रीतये केतुमन्त्रजपे विनियोगः । ॐ प्राँ प्रीं प्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ केतुङ्कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्य्याऽअपेशसे ॥ समुषद्भिरजायथाः । ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः प्रौं प्रीं प्राँ ॐ केतवे नमः ॥ जपसंख्याः १७००० कलौ ६८००० ॥ अर्पणम्—अनेन अमुकग्रहमंत्रजपकर्मणा अमुकग्रहरूपी परमेश्वरः प्रीयतां न मम ॥ इति वेदोक्ताः सवीजा नवग्रहमन्त्राः ॥

**नवग्रहमंगलाष्टकम्** । भास्वान्काश्यपगोत्रजोऽरुणरुचिर्यः सिंहराशीश्वरः षट्त्रिंस्थो दशशोभनो गुरुशशीभौमेषु मित्रं सदा । शुक्रो मंदरिपुः कलिङ्गजनितश्चाग्नीश्वरौ देवते मध्ये वर्तुलपूर्वदिग्दिनकरः कुर्यात्सदा मंगलम् ॥ चन्द्रः कर्कटकप्रभुः सितनिभश्चात्रेयगोत्रोद्भवश्चाग्नेयश्चतुरस्रवारुणमुखश्चापोप्युमाधीश्वरः । षट्सप्ताग्निदशैकशोभनफलः शौरिः प्रियोऽर्कौ गुरुः स्वामी यामुनदेशजो हिमकरः कुर्य्यात्सदा म०॥ भौमो दक्षिणदिक्त्रिकोणयमदिग्विघ्नेश्वरो रक्तभः स्वामी वृश्चिकमेषयोः सुरगुरुश्चार्कः शशी सौहृदः । शोऽरिः षट्त्रिफलप्रदश्च वसुधास्कंदौ क्रमाद्देवते भारद्वाजकुलोद्भवः क्षितिसुतः कुर्या० ॥ सौम्योदङ्मुखपीतवर्णमगधश्चात्रेयगोत्रोद्भवो बाणेशानदिशः सृहच्छनिभृगुः शत्रुः सदा शीतगुः । कन्यायुग्मपतिर्दशाष्टचतुरः षण्नेत्रकः शोभनो विष्णुः पौरुषदेवते शशिसुत कुर्या० ॥ जीवश्चांगिरगोत्रजोत्तरमुखो दीर्घोत्तरासंस्थितः पीतोऽश्वत्थसमिच्च सिंधुजनितश्चापोऽथ मीनाधिपः । सूर्येन्दुक्षितिजप्रियो बुधसितौ शत्रू समाश्चापरे सप्ताङ्कद्विभवः शुभः सुरगुरुः कुर्या० ॥ शुक्रो भार्गवगोत्रजः सितनिभः प्राचीमुखः पूर्वदिक्पत्र्यांको वृषभस्तुलाधिपमहाराष्ट्राधिपोदुम्बरः इन्द्राणीमघवानुभौ बुधशनी मित्राऽर्कचन्द्रौ रिपू षष्ठो द्विर्दशवर्जितो भृगुसुतः कुर्या० ॥ मंदः कृष्णनिभस्तु पश्चिममुखः सौराष्ट्रकः काश्यपः स्वामी नक्रभकुंभयोर्बुधसितौ मित्रे समश्चांगिराः । स्थानं पश्चिमदिक्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



प्रजापतियमौ देवौ धनुष्यासनः षट्त्रिंस्थः शुभकृच्छनी रविसुतः कुर्यात्सदा मङ्गलम् ॥ राहुः सिंहलदेशजश्च निर्ऋतिः कृष्णांगशूर्पासनो यः पैठीनसिगोत्र-संभवसमिद्दूर्वामुखो दक्षिणः । यः सर्पाद्यधिदैवते च निर्ऋतिः प्रत्याऽधिदेवः सदा षट्त्रिंस्थः शुभकृच्च सिंहिकसुतः । कुर्यात्सदा मङ्गलम् ॥ केतुर्जैमिनिगोत्रजः कुशसमिद्वायव्यकोणं स्थितश्चित्रांगध्वजलांछनो हिमगुहो यो दक्षिणाशामुखः । ब्रह्मा चैव सचित्रचित्रसहितः प्रत्यधिदेवः सदा षट्त्रिंस्थःशुभकृच्च बर्बरपतिःकुर्या-त्सदा मङ्गलम्॥ इत्येतद् ग्रहमङ्गलाष्टकमिदं लोकोपकारप्रदं पापौघप्रशमं महच्छु-भकरं सौभाग्यसंवर्धनम् । यः प्रातःशृणुयात्पठत्यनुदिनं श्रीकालिदासोदितं स्तोत्रं मङ्गलदायकं शुभकरं प्राप्नोत्यमीष्टफलम् ॥ इति नवग्रहमङ्गलाष्टकानि ॥

**अथ महामृत्युञ्जयजपविधिः**-आजम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य ॥ ॐ मम आत्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलंप्राप्त्यर्थं ( अमुकयजमानस्य वा ) शरीरेऽमुकपीडानिरासद्वारा सद्यः आरोग्यप्राप्त्यर्थं श्रीमहामृत्युंजय-देवताप्रीतये अमुकसंख्यापरिमितं श्रीमहामृत्युंजयमंत्रजपमहं करिष्य इति संकल्प्य शिवपूजां कृत्वा जपं कुर्यात् ॥ ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अस्य श्रीमहा-मृत्युंजय मंत्रस्य वसिष्ठ ऋषिः श्रीमृत्युंजयरुद्रो देवता अनुष्टु-प्छंदः । हौं बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं मृत्युञ्जयप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः॥ॐ वसिष्ठर्षये नमः शिरसि॥ ॐ अनुष्टुप्छंदसे नमो मुखे ॥ ॐ श्रीमहामृत्युंजयरुद्रदेवतायै नमो हृदये ॥ ॐ हौं बीजाय नमो गुह्ये ॥ ॐ जूँ शक्तये नमः पादयोः ॥ ॐ सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु ॥ अथ कराङ्गन्यासः ॥ ॐ त्र्यं-बकं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ यजामहे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठ-काभ्यां न० ॥ ॐ मामृतात् करतलकरपृष्ठभ्यां नमः॥एवं हृद-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**यादिन्यासः ॥** ( **ध्यानम्** ) चन्द्रोद्भासितमूर्धजं सुरपति पीयूषपात्रं महद्धस्ताब्जेन दधत्सुदिव्यममलं हास्यास्यपंकेरुहम् ॥ सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतलैः पाशाक्षसूत्रांकुशांभोजं बिभ्रतमक्षय पशुपतिं मृत्युञ्जयं तं स्मरे ॥ हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयंतं शिरो द्वाभ्यां तौ दध मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहंतं परम् । अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलासकांतं शिवं स्वच्छांभोजगतं नवेंदुमुकुटं देवंत्रिनेत्रं भजे॥इति ध्यात्वा **ॐ लंपृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयेा ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं सम० । ॐ वाय्वात्मकं धूपं स० । ॐ रं तेजोरूपं दाप सम० । ॐ वं अमृतात्मकं नेवेद्यं स० । ॐ सर्वात्मकं मंत्रपुष्पं समर्प० । एवं मानसोपचारैः सम्पूजयेत् ।** (मन्त्रोद्धारः) **ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः। त्र्यम्बकँ यजामहे सुगुन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिंवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात्॥ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ ॥** तत उत्तरन्यासं कृत्वा । गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ मृत्युंजय महारुद्र, त्राहि मां शरणागतम् ॥ जन्ममृत्युज्जरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनै ॥ इति प्रार्थ्य अनेन महामृत्युञ्जयजपाख्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जयः प्रीयतामित्यर्पयेत् ॥ ततो जपसांगतासिद्ध्यर्थं दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ अमृतसञ्जीवनीमन्त्रः, तन्त्रसारे- **ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्द्धनं भगोँ देवस्य धीमहि । उर्व्वारुकमिंव बन्धनाद्धियो यो नः प्रचोदयान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥** इति ॥

**अथ महामृत्युञ्जयकवचम्**—शृणुष्व परमेशानि कवचं मन्मुखोदितम् ॥ महामृत्युञ्जयस्यास्य न देयं परमाद्भुतम् ॥ यं धृत्वा च पठित्वा च यं श्रुत्वा कवचोत्तमम् । त्रैलोक्याधिपतिर्भूत्वा सुखितोऽसि महेश्वरि ॥ तदेव वर्णयिष्यामि तव प्रीत्या वरानने ॥ तथापि परमं तत्त्वं न दातव्यं दुरात्मने ॥ ॐ अस्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



श्रीमहामृत्युञ्जयकवचस्य श्रीभैरव ऋषिर्गायत्री छन्दः श्रीमृत्युञ्जयरुद्रो देवता ॥ ॐ बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं हौमिति तत्त्वं श्रीचतुर्वर्गफलसाधनार्थे पाठे विनियोगः ॥ चन्द्रमण्डलमध्यस्थे रुद्रमाले विचित्रिते । तत्रस्थं चिन्तयेत्साध्यं मृत्युं प्राप्तोऽपि जीवति॥ॐ जूँ सः हौं शिरःपातु देवो मृत्युंजयो मम । श्रीशिवो वै ललाटं च ॐ हौं भ्रुवौ सदाशिवः ॥ नीलकण्ठोऽवतान्नेत्रे कपर्दी मेंऽवताच्छ्रुती ॥ त्रिलोचनोऽवताद्गण्डौ नासां मे त्रिपुरांतकः ॥ मुखं पीयूषघटभृदोष्ठौ मे कृत्तिकांम्बरः । हनुं मे हाटकेशानोमुखं बटुकभैरवः ॥ कंधरां कालमथनो गलं गणप्रियोऽवतु । स्कंन्धौ स्कंदपिता पातु हस्तौ मे गिरिशोऽवतु ॥ नखान्मे गिरिजानाथः पायादंगुलिसंयुतान् । स्तनौ तारापतिः पातु वक्षः पशुपतिर्मम ॥ कुक्षिं कुबेरवरदः पार्श्वे मे मारशासनः । शर्वः पातु तथा नाभिं शूली पृष्ठं ममाऽवतु ॥ शिश्नं मे शंकरःपातु गुह्यं गुह्यकवल्लभः । कटिं कालान्तकः पायादूरू मेऽन्धकघातकः ॥ जागरूकोऽवताज्जानू जंघे मे कालभैरवः । गुल्फौ पायाज्जटाधारी पादौ मृत्युञ्जयोऽवतु ॥ पादादिमूर्द्धपर्यंतं सद्योजातो ममावतु । रक्षाहीनं नामहीनं वपुःपात्वमृतेश्वरः ॥ पूर्वे बलविकरणो दक्षिणे कालशासनः । पश्चिमे पार्वतीनाथ उत्तरे मां मनोन्मनः॥ ऐशान्यामीश्वरःपायादाग्नेय्यामग्निलोचनः । नैर्ऋत्यां शंभुरव्यान्मां वायव्यां वायुवाहनः । ऊर्ध्वं बलप्रमथनः पाताले परमेश्वरः । दशदिक्षु सदा पातु महामृत्युञ्जयश्च माम् ॥ रणे राजकुले द्यूते विषमे प्राणसंशये । पायादों जूं महारुद्रो देवदेवो दशाक्षरः ॥ प्रभाते पातु मां ब्रह्मा मध्याह्ने भैरवोऽवतु । सायं सर्वेश्वरः पातु निशायां नित्यचेतनः ॥ अर्द्धरात्रे महादेवो निशान्ते मां महोदयः । सर्वदा सर्वतः पातु ॐ जूं सः हौं मृत्युञ्जयः ॥ इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् । सर्वमन्त्रमयं गुह्यं सर्वतंत्रेषु गोपितम् । पुण्यं पुण्यप्रदं दिव्यं देवदेवाधिदैवतम् । य इदं च पठेन्मर्त्य कवचं वाचयेत्ततः ॥ तस्य हस्ते महादेवि त्र्यंबकस्याष्ट सिद्धयः । रणे धृत्वा चरेद्युद्धं हत्वा शत्रुं जयं लभेत् ॥ जयं कृत्व गृहे देवि स प्राप्स्यति सुखं पुनः । महाभये महारोगे महामारीभये तथा॥ दुर्भिक्षे शत्रुसंहारे पठेत्कवचमादरात् । सर्वं तत्प्रशमं याति मृत्युञ्जयप्रसादतः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



धनं पुत्रान्सुखं लक्ष्मीमारोग्यं सर्वसंपदः। प्राप्नोति साधकः सद्यो देवि सत्यं न संशयः॥ इतीदं कवचं पुण्यं महामृत्युञ्जयस्य तु। गोप्यं सिद्धिप्रदं गुह्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्॥ इति **श्रीमहामृत्युञ्जयकवचम्॥**

**अथ सन्तानगोपालमंत्रजपविधिः**—अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। श्रीगोपालो देवता। (मम यजमानस्य वा) सन्तानगोपालप्रसादसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः॥ **ॐ देवकीसुत गोविंद अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ वासुदेव जगत्पते तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐ देहि मे तनयं कृष्णमध्यमाभ्यां न०। ॐत्वामहं शरणं गतः अनामिकाभ्यां नमः॥ ॐ देवकीसुत गोविंद वासुदेव जगत्पते कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥** एवं हृदयादिपंचाङ्गन्यासः॥ **ध्यानम्**—ॐ वैकुण्ठतेजसा दीप्तमर्जुनेन समन्वितम्। समर्पयंत विप्राय नष्टानानीय बालकान्॥ मन्त्रोद्धारः—**ॐ देवकीसुत गोविंद वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥ १॥** इति। अस्य च मन्त्रस्य लक्षं जपः, तद्दशांशं तिलैर्मधुम्द्रव्यैश्च हवनम्, ततस्तद्दशांशं तर्पणम्, तद्दशांशम्मार्जनं च विधेयम्॥

**वाल्मीकीये रामायणे आदित्यहृदयस्तोत्रम्**—ततो युद्धपरिश्रांत समरे चिंतया स्थितम्। रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्॥ दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्। उपगम्याब्रवीद्राममगस्त्यो भगवांस्तदा॥रामराम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्। येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे॥ आदित्य हृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्। जयावहं जपन्नित्यमक्षयं परमं शिवम्॥ सर्वमंगलमांगल्यं सर्वपापप्रणाशनम्। चिंताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम्॥ रश्मिमंतं समुद्यंतं देवासुरनमस्कृतम्। पूजयस्व विवस्वंतं भास्करं भुवनेश्वरम्॥ सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः। एष देवासुरगणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभिः। एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कंदः प्रजापतिः। महेंद्रोधनदः कालो यमः सोमो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वपांपतिः ॥ पितरो वसवःसाध्या अश्विनौ मरुतो मनुः । वायुर्वह्निः प्रजाः प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः ॥ आदित्यः सविता सूर्यः खग पूषा गभस्तिमान् । सुवर्ण-सदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः ॥ हरिद्वधः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान् । तिमिरोन्मथनः शंभुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंशुमान् ॥ हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनो-ऽहस्करो रविः । अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रःशंखःशिशिरनाशनः ॥ व्योमनाथस्तमो-भेदी ऋग्यजुःसामपारगः । घनवृष्टिरपां मित्रो विंध्यवीथीप्लवंगमः ॥ आतपी मण्डली मृत्युः पिंगलः सर्वतापनः । कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ॥ नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः । तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन्नमोऽस्तु ते ॥ नमःपूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः । ज्योतिर्गणानांपतये दिनाधिपतये नमः॥ जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः । नमो नमःसहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ॥ नम उग्राय वीराय सारगाय नमो नमः । नमः पद्मप्रबोधाय प्रचं-डाय नमोऽस्तु ते ॥ ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यतेजसे । भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ॥ तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने । कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषांपतये नमः ॥ तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे । नमस्तमोभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥ नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः । पारत्येष तप-त्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ॥ एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः । एष चैवाग्नि-होत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ॥ देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च । याति कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभः॥एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कांतारेषु भयेषु च । कीर्त-यन् पुरुषःकश्चिन्नावसीदति राघव ॥ पूजयत्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम् । एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि ॥ अस्मिन्क्षणे महाबाहो रावणं त्वं वधिष्यति । एवमुक्त्वा ततोऽमस्त्यो जगाम स यथागतम् ॥ एतच्छ्रुत्वा महा-त्मजा नष्टशोकोऽभवत्तदा । धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान् ॥ आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान् । त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ॥ रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत् । सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधे-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



भवत् ॥ अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमना परमं प्रहृष्यमाणः । निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ॥ इति ॥

**मार्कण्डेये रुचेः पितृस्तोत्रम्** । नमस्येऽहं पितॄन्श्राद्धे ये वसन्त्यधिदेवताः । दैवैरपि हि तर्प्यन्ते ये च श्राद्धैः स्वधोत्तरैः ॥ नमस्येऽहं पितॄन्स्वर्गे ये तर्प्यन्ते महर्षिभिः । श्राद्धैर्मनोमयैर्भक्त्या मुक्तिमुक्तिमभीप्सुभिः ॥ नमस्येऽहं पितॄन् स्वर्गे सिद्धाः संतर्पयन्ति यान् । श्राद्धेषु दिव्यैः सकलैरुपहारैरनुत्तमैः । नमस्येऽहं पितॄन्भक्त्या येऽर्च्यन्ते गुह्यकैरपि । तन्मयत्वेन वांछद्भिर्ऋद्धिमात्यंतिकी पराम् ॥ नमस्येऽहं पितॄन्मर्त्यैरर्च्यन्ते भुवि ये सदा । श्राद्धेषु श्रद्धयाऽभीष्टलोकप्राप्तिप्रदायिनः ॥ नमस्येऽहं पितॄन् विप्रैरर्च्यन्ते भुवि ये सदा । वांछितामीष्टलाभाय प्राजापत्यप्रदायिनः ॥ नमस्येऽहं पितॄन् ये वै तर्प्यन्तेऽरण्यवासिभिः । वन्यैः श्राद्धैर्यताहारैस्तपोनिर्धूतकिल्बिषैः ॥ नमस्येऽहं पितॄन् विप्रैर्नैष्टिकब्रह्मचारिभिः । ये संयतात्मभिर्नित्यं संतर्प्यन्ते समाधिभिः ॥ नमस्येऽहं पितॄन् श्राद्धे राजन्यास्तर्पयंति यान् । कव्यैरशेषैर्वर्षिथिवल्लोकत्रयफलप्रदान् ॥ नमस्येऽहं पितॄन्वैश्यैरर्च्यन्ते भुवि ये सदा । स्वकर्माभिरतैर्नित्यं पुष्पधूपान्नवारिभिः ॥ नमस्येऽहं पितॄन् श्राद्धेर्ये शूद्रैरपि भक्तितः । संतर्प्यन्ते जगत्यत्र नाम्ना ज्ञाताः सुकालिनः ॥ नमस्येऽहं पितॄन् श्राद्धैःपाताले ये महासुरैः । संतर्प्यन्ते स्वधाकारैस्त्यक्तदंभमदैः सदा ॥ नमस्येऽहं पितॄन् श्राद्धैरर्च्यन्ते ये रसातले । भोगैरशेषैर्वैधिवन्नागैः कामानमीप्सुभिः ॥ नमस्येऽहं पितॄन् श्राद्धैःसर्पैः संतर्पितान् सदा । तत्रैव विधिवन्मन्त्रभोगसंपत्समन्वितैः ॥ पितॄन्नमस्ये निवसन्ति साक्षाद्ये देवलोके च तथाऽन्तरिक्षे । महीतले ये च सुरादिपूज्यास्ते मे प्रयच्छंतु मयोपनीतम् । पितॄन्नमस्ये परमात्मभूता ये वै विमाने निवसंति मूर्त्ताः । जयन्ति यानस्तमलैर्मनोभियोंगीश्वराः क्लेशविमुक्तिहेतून् ॥ पितॄन्नमस्ये दिवि ये च मूर्त्ताःस्वधाभुजःकाम्यफलाभिसंधौ । प्रदानसक्ताः सकलेप्सितानां विमुक्तिदा येऽनभिसंहितेषु ॥ तृप्यंतु तेऽस्मिन् पितरः समस्ता इच्छावतां ये प्रदिशंति कामान् ॥ सुरत्वमिन्द्रत्वमतोऽधिकं वा सुतान् पशून् स्वानि बलं गृहाणि ॥ सोमस्य ये रश्मिषु येऽर्कबिम्बे शुक्ले विमाने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



च सदा वसंति । तृप्यन्तु तेऽस्मिन् पितरोऽन्नतोयैर्गंधादिना पुष्टिमितो व्रजंतु ॥ येषां हुतेऽग्नौ हविषा च तृप्तिर्ये भुञ्जते विप्रशरीरभाजः । ये पिंडदानेन मुदं प्रयांति तृप्यन्तु तेऽस्मिन् पितरोऽन्नतोयैः ॥ ये खड्गिमांसेन सुरैरभीष्टैः कृष्णैस्तिलैर्दिव्यमनोहरैश्च । काल्येन शाकेन महर्षिवर्यैः संप्रीणितास्ते मुदमत्र यान्तु ॥ कव्यान्यशेषाणि च यान्यभीष्टान्यतीव तेषाममरार्चितानाम् । तेषां तु सान्निध्यमिहास्तु पुष्पगंधान्नभोज्येषु मया कृतेषु ॥ दिने दिने ये प्रतिगृह्यतेऽर्च्चा मासान्तपूज्या भुवि येऽष्टकासु । ये वत्सरान्तेऽभ्युदये च पूज्याः प्रयान्तु ते मे पितरोऽत्र तृप्तिम् ॥ पूज्या द्विजानां कुमुदेंदुभासो ये क्षत्रियाणां च नवार्कवर्णाः । तथा विशां ये कनकावदाता नीलीनिभाः शूद्रजनस्य ये च ॥ तेऽस्मिन् समस्ता मम पुष्पगंधधूपान्नतोयादिनिवेदनेन । तथाऽग्निहोमेन च यांतु तृप्तिं सदा पितृभ्यः प्रणतोऽस्मि तेभ्यः ॥ ये देवपूर्वाण्यतितृप्तिहेतोरश्नंति कव्यानिशुभाहुतानि । तृप्ताश्च ये भूति सृजो भवंति तृप्यन्तु तेस्मिन् प्रणतोऽस्मि तेभ्यः ॥ रक्षांसि भूतान्यसुरांस्तथोग्रान्निर्णाशयन्तस्त्वशिवं प्रजानाम् आद्याः सुराणाममरेशपूज्यास्तृप्यन्तु तेऽस्मिन् प्रणतोऽस्मि तेभ्यः ॥ अग्निष्वात्ता वर्हिषद आज्यपाः सोमपास्तथा । व्रजन्तु तृप्तिं श्राद्धेऽस्मिन् पितरस्तर्पिता मया ॥ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः प्राची रक्षन्तु मे दिशम् । तथा वर्हिषदःपान्तु याम्यायां पितरस्तथा ॥ प्रतीचींमाज्यपास्तद्वदुदीचीमपि सोमपाः । रक्षोभूतपिशाचेभ्यस्तथैव सुरदोषतः ॥ सर्वतश्चाधिपस्तेषां यमो रक्षां करोतु मे । विश्वो विश्वभुगाराध्यो धर्म्यो धन्यः शुभाननः ॥ भूतिदो भूतिकृद् भूतिः पितॄणां ये गणानव । कल्याणः कल्पतां कर्त्ता कल्पः कल्पतराश्रयः ॥ कल्पताहेतुरनघः षडिमे ते गणाः स्मृताः । वरो वरेण्यो वरदःपुष्टिदस्तुष्टिदस्तथा॥विश्वपाता तथा धाता सप्तैवैते गणास्तथा । महान् महात्मा महितो महिमावान्महाबलः ॥ गणाःपंच तथैवैते पितॄणां पापनाशनाः । सुखदो धनदश्चान्यो धमदोऽन्यश्च भूतिदः ॥ पितॄणां कथ्यते चैतत्तथा गणचतुष्टयम् । एकविंशत् पितृगणां यैर्व्याप्तमखिलं जगत् ॥ ते मेऽनुतृप्तास्तृप्यंतु यच्छन्तु च सदा हितम्।अमूर्त्तानां च मूर्तानां पितॄणां दीप्ततेजसाम्॥नमस्यामि सदा तेषां ध्यानिनां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



दिव्यचक्षुषाम्। इन्द्रादींनां च नेतारो दक्षमारीचयोस्तथा॥सप्तर्षीणां तथाऽन्येषां तान्नमस्यामि कामदान्। मन्वादीनां मुनींद्राणां सूर्य्याचंद्रमसोस्तथा॥तान्नमस्याम्यहं सर्व्वान् पितरश्चार्णवेषु ये। नक्षत्राणांच ग्रहाणा च वाय्वग्न्योनभसस्तथा॥ द्यावापृथिव्योश्च तथा नमस्यामि कृतांजलिः। देवर्षीणां ग्रहाणां च सर्वलोक नमस्कृतान्॥ अभयस्य सदा दातृन्नमस्येऽहं कृतांजलिः। नमो गणेभ्यःसप्तभ्यस्तथा लोकेषु सप्तसु॥ स्वयंभुवे नमस्यामि ब्रह्मणे योगचक्षुषे। सोमाधारान् पितृगणान् योगमूर्तिधरांस्तथा॥ नमस्यामि तथा सोमं पितरं जगतामहम्। अग्निरूपांस्तथैवान्यान्नमस्यामि पितॄनहम्॥अग्नीषोमभयं विश्वं यत एतदशेषतः। ये तु तेजसि ये चैते सोमसूर्याग्निमूर्त्तयः॥ जगत्स्वरूपिणश्चैव तथा ब्रह्मस्वरूपिणः। तेभ्योऽखिलेभ्यो योगिभ्यः पितृभ्यो यतमानसाः। नमो नमो नमस्ते मे प्रसीदन्तु स्वधाभुजः॥ **पितर ऊचुः**। स्तोत्रेणानेन च नरो यो नः स्तोष्यति भक्तितः। तस्य तुष्टा वयं भोगानात्मज्ञानं तथोत्तमम्॥ शरीरारोग्यमर्थं च पुत्रपौत्रादिकं तथा। प्रदास्यामो न संदेहो यच्चान्यदभिवांछितम्॥ तस्मात्सुष्यफलं लोके वांछद्भिः सततं नरैः। पितॄणां चाक्षयां तृप्तिं स्तत्याः स्तोत्रेण मानवैः॥ वांछद्भिःसततं स्तव्याःस्तोत्रेण नेन वै यतः। श्राद्धे च य इमंभक्त्या मस्मत्प्रीतिकरं स्तवम्॥पठिष्यंति द्विजाग्र्याणां भुंजतां पुरतः स्थिताः। स्तोत्रप्रवणसंप्रीत्या सन्निधाने परे कृते॥ अस्माकमक्षयं श्राद्धं तद्भविष्यत्यसंशयम्। यद्यप्यश्रोत्रियं श्राद्धं यद्यप्युपहतं भवेत्॥ आन्यायोपात्तवित्तेन यदि वा कृतमन्यथा। अश्राद्धार्हैरुपहृनैरुपहारैस्तथा कृतम्॥अकालेऽप्यथवाऽदेशे विधिहीनतथापि वा। अश्रद्धया वा पुरुषैर्दभमाश्रित्य वा कृतम्॥ अस्माकं तृप्तये श्राद्धं तथाप्येतद्दीरणात्। यत्रैतत्पठ्यते श्राद्धे स्तोत्रमस्मत्सुखावहम्॥ अस्माकं जायते तृप्तिस्तत्र द्वादशवार्षिकी। हेमंतं द्वादशाब्दानि तृप्तिमेतत्प्रयच्छति॥ शिशिरे द्विगुणाब्दांश्च तृप्तिः स्तोत्रमिदं शुभम्। वसंते षोडशसमास्तृप्तये श्राद्धकर्मणि॥ ग्रीष्मे च षोडशैयैतत्पठितं तृप्तिकारकम्। विकलेऽपि कृते श्राद्धे स्तोत्रेणानेन साधिते॥ वर्षासु तृप्तिररमाकमक्षया जायते रुचे। शरत्कालेऽपि पठित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



श्राद्धकाले प्रयच्छति ॥ अस्माकमेतत्पुरुषेस्तृप्तिं पंचदशाब्दिकाम् । यस्मिन् गृहे च लिखितमेतत्तिष्ठति नित्यदा ॥ सन्निधानं कृते श्राद्धे तत्रास्माकं भविष्यति । तस्मादेतत्त्वया श्राद्धे विप्राणां भुञ्जतां पुरः ॥ श्रावणीयं महाभाग अस्माकं तुष्टि-हेतुकम् । इत्युक्त्वा पितरस्तस्य स्वर्गता मुनिसत्तम ॥ इति ।

**विष्णोस्तुलसीमहिमा, बृहद्धर्मपुराणे**—एकतः सर्वनैवेद्यं नाना-पुष्यविभूषणम् । एकतः पत्रमेकं ते द्वादशाक्षरमंत्रवत् ॥ श्राद्धे च तर्पणे चैव-दाने नैवेद्यदापने । त्वत्पत्रेण विना नस्यात्तत्तत्कर्म फलोत्तरम् ॥ **तुलसीदर्शन-मन्त्रः**—देवि विष्णुप्रिये मातस्तुलसि प्रियदर्शने । हरिदर्शनदीपार्चिः प्रसीद द्विजवल्लभे ॥ **तुलसीप्रणाममंत्रः**—विष्णुप्रीतिकरे मातर्नमस्ते तुलसीश्वरि । पवित्रीकुरु मेऽङ्गानि विष्ण्वङ्कहर्षकारिणि ॥ **तुलसीस्पर्शनमंत्रः**—वैकुण्ठे-श्वरपादाब्जवासिनि प्रियदर्शने । स्पृशामि त्वां महापापसंचयान्मे प्रणाशय ॥ **तुलसीस्थानमार्ज्जनमंत्रः**—मातस्तुलसि कल्याणि स्थलं ते सुमनोहरम् ॥ क्रीडंत्यागत्य विबुधा मार्जये तत्प्रसीद मे ॥ **तुलसीग्रहणमंत्रः**—मातस्तु-लसि कल्याणि गोविंदचरणप्रिये । केशवार्थे चिनोमि त्वां प्रसीद शुभदर्शने ॥ **तुलसीप्रार्थनामन्त्रः, स्कंदपुराणे**—तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया । केशवार्थे चिनोमि त्वां वरदा भवशोभने ॥ तुलसी हेमरूपासि कृष्ण रूपेण मञ्जरी । शालिग्रामहितार्थाय मम दोषो न दीयते ॥ **तुलसी-ग्रहणे निषिद्धः कालः, वायुपुराणे**—अज्ञात्वा तुलसीं छित्त्वा यः पूजां कुरुते नरः । सोऽपराधी भवेत्सत्यं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥ पूर्णिमाया-ममायां च द्वादश्यां रविसंक्रमे । तैलाभ्यंगे च न स्नाते मध्याह्ने निशि संध्ययोः ॥ २ ॥ अशौचेऽशुचिकाले च रात्रिवासोन्वितेऽपिवा । तुलसीं ये च चिन्वन्ति ते छिदन्ति हरेः शिरः ॥ **धर्मपुराणे**—नाशुचिः संस्पृशेदेतां नोपानच्चरणोपि च । पश्चिमारयो न चिनुयात् पक्षान्ते द्वादशीष्वपि ॥ स्पृशेनैव च संक्रांत्यां न रात्रौ सायमेव च ॥ **पद्मपुराणे**—देवार्थे तुलसीछेदो होमार्थे समिधां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तथा । इन्दुक्षये न दुष्येत गवार्थे तु तृणस्य च ॥ पंकजं पंचरात्रं स्याद्दश-रात्रं च बिल्वकम् । एकादशाहं तुलसी नैव पर्युषिता भवेत् ॥

**विल्वपत्रमहिमा, धर्मपुराणे**—यथा मे त्रीणि नेत्राणि यथा गंगा-जलं मम । तथा प्रियतमो लक्ष्मि त्रिपत्रः श्रीपलच्छदः ॥ स्वर्णमुक्ताप्रवा-लादि पुष्पाण्यन्यानि च ध्रुवम् । श्रीफलच्छदनेशस्य कलां नार्हंति कोटि-काम् ॥ ऊर्ध्वपत्रं हरो ज्ञेयः पत्रं वामं विधिः स्वयम् । अहं दक्षिणपत्रं च त्रिपत्रदलमित्यतः ॥ अस्य छायां च पत्रं च लंघयेन्न पदा स्पृशेत् । हरंते लंघनादायुः पादस्पर्शाच्छ्रियं हरेत् ॥ **बिल्ववृक्षदर्शनमन्त्रः**—बिल्ववृक्ष महाभाग महेशस्य सदा प्रियः । शिवदर्शनकृज्ज्योतिः प्रसीदाग्निसुतास्तन ॥ **बिल्वप्रमाणमन्त्रः**—ॐ नमो बिल्वतरवे सदा शंकररूपिणे ! सफलानि ममाङ्गानि कुरुष्व शिवहर्षद ॥ **बिल्वस्पर्शनमन्त्रः**-शिवपूजक माल्वर प्रिय-स्पर्श महातरो । स्पृशामि त्वां महापापसंचयान्मे प्रणाशय ॥ **बिल्वस्थल-मार्जनमन्त्रः**—देववृक्ष वरश्रेष्ठ स्थलं ते सुमनोहरम् । क्रीडन्त्यांगत्य विबुधा मार्जये तत्प्रसीद मे ॥ **बिल्वपूजनमन्त्रः**—ॐ द्रुमाय श्रीफलाय नमः । इति । **बिल्वपत्रग्रहणमन्त्रः**-पुण्यवृक्ष महाभाग माल्वर श्रीफल प्रभो । महेशपूजनार्थाय त्वत्पत्राणि चिनोम्यहम् ॥ **विल्वार्पणविधिः**-पत्रं वा यदिवा पुष्पं फलं नेष्टमधोमुखम् । यथोत्पन्नं तथा देयं बिल्वपत्रमधो-मुखम् ॥ विल्वपत्रस्य प्लवनं दण्डं हित्वा तु प्लावयेत् । वृन्तसंप्लावनादेव सिद्धिं हरति राक्षसः ॥१॥ प्लावयेदर्पयेदित्यर्थः । शैवे-पत्रं त्रिनेत्रं प्रियमेव बिल्वमपात्रमप्यद्रिसुते सुपात्रम् । करोति मे लिंगसमर्चनासु शुष्कं तथा पर्युषितं पवित्रम् ॥ नैतत्त्याज्यमुमे वदंति निगमाः स्याच्छूद्रवेणाहृत विंध्या वाप्य-विधानतो हृतमुमे श्रीपत्रमेव प्रियम् । शुष्कं पर्युषितं चकीटसहितं न त्याज्य-मेवं शिवेतत्राऽलब्धमहो तथाऽन्यकुसुमं बिल्वाख्यया पातयेत् ॥ रत्नस्वर्णवि-निमितोरुकुसुमं यादृक् च सक्षालितं पूर्वेद्युः प्रतिपादितं गिरिसुते सम्यक्पुनः पूजयेत् ॥ तद्रक्षालितमेव बिल्वमगजे संक्षालितं पूजयेत् तत्रालाभविधौ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शिवार्चनधनैर्निर्मात्यतां नोचिता ॥ **बृहद्धर्मपुराणे**—पक्षान्तद्वादशीसायंम ध्याह्नभिन्नकालतः । शाखाभङ्गो न कर्तव्यो नैवारोहेत्तथा तरुम् ॥ वरमारुह्य चिनुयान्न शाखाभंजनं कचित् । षण्मासानंतरं बिल्वपत्रं पर्युषितं भवेत्॥ चैत्रादिचतुरो मासान् संभवे परमात्मने । दत्तं स्याद्बिल्व पत्रेक लक्षधेनुसमं सुराः॥इति।

**अथ तुलसीपूजाप्रयोगः** । तत्रादौ तुलसीपश्चिमतः प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा मम समस्तपातकंशमनपूर्वकाभीष्टसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं यथामिलितोपचारैः श्रीतुलसीपूजां करिष्ये । इति संकल्पयेत् । **ध्यानम्**—ध्यायामि तुलसीं देवीं श्यामां कमललोचनाम् । प्रसन्नां पद्मकल्हारवराभयचतुर्भुजाम् ॥ किरीटहारकेयूरकुण्डलादिविभूषिताम् । धवलाशुक संयुक्तां पद्मासननिषेदुषीम् ॥ **पूजनम्**—**भगवत्यै तुलस्यै नमः** आवाहन समर्पये ॥ **विष्णुवल्लभायै नमः** आसनं स० ॥ **सर्वदेवमयायै नमः** पाद्यं स० ॥ **सर्वतीर्थमयायै नमः** अर्घ्यं स० ॥ **दैत्यान्तकृत्प्रियायै नमः** आचमनीय स०॥ **सर्वलोकहितायै नमः** स्नानं स०॥ **लक्ष्मीसहोदरायै नमः** वस्त्रयुग्मं कंचुकीं च स०॥ **महादेव्यै नमः** गंधं कुंकुमं चस०॥ **रमावासायै नमः** पुष्पाणि स० ॥ **अभीष्टदायै नमः** धूपं स० ॥ **पापहारिण्यै नमः** दीपं स०॥ **भगवत्यै नमः** नैवेद्यं स० ॥ आचमनं स० ॥ **अमृतसंभूतयै नमः** मुखवासतांबूलमृतफलानि च स० ॥ **अमृतरूपिण्यै नमः** दक्षिणां स० ॥ **जगद्धात्र्यै नमः** कर्पूरेण नीराजनं स० ॥ **सुदक्षिणायै नमः** प्रदक्षिणां स० ॥ **परमेश्वर्यै नमः** पुष्पांजलिं स० ॥ **अभीष्टदायै नमः** नमस्करोमि, **प्रार्थये च** इत्येवं षोडशोपचारैः संपूज्य । सौभाग्यं संततिं देवि धनं धान्यं च मे सदा । आरोग्यं शोकशमनं कुरु मे माधवप्रिये ॥ अभीष्टफलसिद्धिं च मे सदा देहि हरिप्रिये । देवैस्त्वं निर्मिता पूर्वमर्चितासि मुनीश्वरैः॥ अतो मां सर्वदा भक्त्या कृपादृष्ट्या विलोकय । पत्युरायुश्च भाग्यं च सदा देहि हरिप्रिये ॥ पूतनामयसंत्रासाद्रक्षितश्च यथा हरिः । तथा संसारसंत्रासाद्रक्ष मे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वंशमुत्तमम् ॥ तुलसि श्रीसखि शुभे पापहारिणि पुण्यदे। नमस्ते नारदनुते नारायणमनःप्रिये ॥ **तुलसीमङ्गलम्**- श्रीमत्कार्त्तिकशुक्लगा तिथिवरा चैकादशी द्वादशी तस्यां गोरजलग्नके वधुवरौ साक्षाज्जगन्नायकौ। श्रीकृष्णस्तुलसी विवाहमकरोत्तस्मिन् विवाहोत्सवं तौ देवौ भवतां सदा शुभकरौ लक्ष्मीकरौ मंगलम् इति ॥

**धात्रीपूजा**- धात्रीसमीपे स्वासने प्राङ्मुख उपविश्याचम्य प्राणानायम्य देशकालौसंकीर्त्य ममाखिलपापक्षयपूर्वकधर्मार्थकाममोक्षसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं धात्रीमूले विष्णुपूजां धात्रीपूजां च करिष्ये। इति सङ्कल्प्य गणेशं पूजयेत्। ततो वेदीमध्ये विष्णुप्रतिमां स्थापयित्वा तां च पोडशोपचारैः सपूज्य पुष्पपूजांते पुष्पाक्षतैरंगपूजां कुर्यात् यथा-**दामोदराय नमः** पादौ पूजये। **केशवाय नमः** कटी पूजये। **नारायणाय नमः** उदरं पूजये। **वामनाय नमः** कंठं पूजये। **श्रीधराय नमः** बाहुद्वयं पूजये। **गोविंदाय नमः** मुखं पूजये। **सहस्राक्षाय नमः** नेत्रे पूजये। **सर्वेश्वराय नमः** ललाटं पूजये। **विष्णवे नमः** शिर पूजये। **त्रिविक्रमाय नमः** सर्वाङ्ग पूजये। ततो नमस्कारानंतरं विशेषार्घ्यं पुष्पश्रीफलसुवर्णसहितं दद्यात्। **तत्र मन्त्रः**-नमः सहस्रशीर्षाय सहस्राक्षाय ते नमः। नमस्ते सहस्रपदे पुरुषाय नमोऽस्तु ते ॥ सहस्रनाम्ने देवेश प्रसीद त्वं ममाच्युत। अर्घ्यं गृहाण भगवन् सर्वकाम प्रदोभव ॥ प्रार्थनाभगवन् देवदेवेश लोकनाथ जगत्पते। अक्षया संततिर्मेऽस्तु दामोदर नमोऽस्तु ते ॥ **धात्र्यै नमः**। इति नाममंत्रेण षोडशोपचारैः धात्रीं संपूज्य गन्धोत्तरमंगपूजा कार्या- **विश्वरूपायै नमः** पादौ पूजये। **सुरूपायै नम०** कटी०। **अब्धिसंभवायै नमः** हृदयं पूजये। **लोकमात्रे नमः** मुखं पूजये। **धात्र्यै नमः** शिरः पूजये। ततोऽष्टदिक्षु अष्टौ दीपान् बलिं च **धात्र्यै नमः** इति दत्त्वा तथैव अष्टकृत्वः सूत्रेण वेष्टयित्वा अष्टौ प्रदक्षिणाः कृत्वा षोडशनमस्कारांश्च कुर्यात् यथा-**शांत्यै नमः कांत्यै नमः मेधायै नमः प्रकृत्यै नमः**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**विष्णुपत्न्यै नमः महालक्ष्म्यै नमः रमायै नमः कमलायै नमः इंदिरायै नमः कल्याण्यै नमः कमनीयायै नमः सावित्र्यै नमः जगद्धात्र्यै नमः गायत्र्यै नमः धृत्यै नमः अव्यक्तायै नमः ॥** धात्रि देवि नमस्तुभ्यं सर्वपापक्षयकरि । वर्चस्वं कुरु मां देवि धनवंतं तथा कुरु ॥ पुत्रान् पौत्रान्बलं प्रज्ञां देहि मे जगदीश्वरि । संवत्सरकृतं पापं दूरीकुरु ममाक्षये ॥ इति प्रार्थयेत् । ततो धात्रीमूले सव्येनैव तर्पणं कुर्यात्– पिता पितामहाश्चान्ये अपुत्रा ये च गोत्रिणः । वृक्षयोनिगताः ये च ये च कीटत्वमागता ॥ तिर्यग्योनिगता ये च ये च ब्रह्माण्डमध्यगाः पिशाचत्वं गता ये च ये च प्रेतत्वमागताः ॥ ते पिबंतु मया दत्तं धात्रं मूलेऽक्षयं पयः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु धात्रीमूले निषेचनात् ॥ इति ॥

**अश्वत्थपूजा**–आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा मम समस्तपापक्षयपूर्वकाभीष्टसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमश्वत्थपूजां करिष्य इति संकल्प्य गणपतिं स्मरेत् । ततः अश्वत्थाय वरेण्याय सर्वैश्वर्यप्रदायिने । अन्ततः शिवरुपाय वृक्षराजाय ते नमः ॥ **ॐ अश्वत्थाय नमः** ( इत्यावाहनम् ) । मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे । नमो दुःस्वप्ननाशाय सुस्वप्नफलदायिने ॥ **ॐ अश्वत्थाय नमः** ( इत्यासनम् ) अग्निगर्भः शमीगर्भो देवगर्भःप्रजापतिः । हिरण्यगर्भो भूगर्भो यज्ञगर्भो नमोऽस्तु ते ॥ ( इति पाद्यम् ) आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च । ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥ ( इत्यर्घ्यम् ) त्वं क्षीरफलकश्चैव शीतलश्च वनस्पते । त्वमाराध्य नरो विद्यादैहिकमुष्मिकं फलम् ॥ ( इत्याचमनीयम् ) चलद्दलाय वृक्षाय सर्वदाश्रितविष्णवे । बोधितत्त्वाय देवाय ह्यश्वत्थाय नमो नमः ॥ ( इति स्नानम् ) एकादशात्मरुद्रोऽसि वसूनां च शिरोमणिः । नारायणोऽसि देवानां वृक्षराजोऽसि पिप्पल ॥ ( इति वस्त्रम् ) क्षीरदस्त्वं च येनेह येन श्रीस्त्वां निषेवते । सत्येन तेन वृक्षेन्द्र मामपि श्रीर्निषेवताम् ॥ ( इति यज्ञोपवीतमाचमनं च ) श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम् ॥ विलेपनं सुरश्रेष्ठ गृहाण देवपिप्पल ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



( इति गन्धम् ) य दृष्ट्वा मुच्यते रोगैः स्पृष्ट्वा पापैः प्रमुच्यते। यदाश्रयाच्चिरंजीवी तमश्वत्थं नमाम्यहम् ॥ ( इति पुष्पाणि ) वनस्पतिरसोद्भूतः सर्वौषधिविजृंभितः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ( इति धूपम् ) साज्यं च व र्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश मम ज्ञानप्रदो भव ॥ ( इति दीपम् ) नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु। ईप्सितं च वरं देहि परत्रेह परां गतिम् ॥ ( इति नैवेद्यम्, आचमनीयं च ) आयुः प्रजां धनं धान्यं सौभाग्यं सर्वसंपदम्। देहि देव महावृक्ष त्वामहं शरणं गतः ॥ ( इति पूगीफलं तांबूलं च ) ऋग्यजुःसाममंत्रात्मा सर्वरूपी परात्परः। अश्वत्थो वेदमूलोऽसावृषिभिः प्रोच्यते सदा ॥ ( इति दक्षिणां कर्पूरेण नीराजनं च कुर्यात् ) ॥ अश्वत्थ यस्मात्त्वयि वृक्षराज नारायणास्तिष्ठति सर्वकालम्। अतः श्रुतस्त्वं सततं तरूणां धन्योऽसि चारिष्टविनाशकोऽसि ॥ ( इति पुष्पांजलिम् ) यानि कानि च पापानि जन्मांतरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यंति प्रदक्षिणपदेपदे ॥ ( इति सप्त प्रदक्षिणाः) इत्येवं षोडशोपचारैः संपूज्य प्रणमेत्।

**मङ्गलयन्त्रपूजा**—**ॐ हां हं सः खं खः** इति षडक्षरस्य मङ्गलमन्त्रस्य विरूपाक्ष ऋषिः गायत्री छन्दः धरात्मजो देवता, हां बीजम्, हं शक्तिः चिरजीविगुणवत्पुत्रप्राप्तये जपे विनियोगः। **ॐ विरूपाक्षऋषये नमः** शिरसि। **गायत्रीछन्दसे नमोः** मुखे। **श्रीधरात्मजदेवतायै नमो** हृदि। **हां बीजाय नमो** गुह्ये। **हं शक्तये नमः** पादयोः। **विनियोगाय नमः** सर्वांगे। इति ऋष्यादिन्यासः। **ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः हां तर्जनीभ्यां नमः। हं मध्यमाभ्यां नमः। सः अनामिकाभ्यां नमः। खं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।** इति करन्यासः। **ॐ हृदयाय नमः। हां शिरसे स्वाहा ॥ हं शिखायै वषट ॥ सः कवचाय हुम् ॥ खं नेत्रत्रयाय वौषट ॥ खः अस्त्राय फट् ॥** इति हृदयादिन्यासं च कृत्वा—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



'जपाभं शिवस्वेदजं हस्तपद्मैर्गदाशूलशक्तीर्वरं धारयन्तम् । अवतीसमुत्थ सुमेषासनस्थं धरानन्दन रक्तवस्त्रं तमीडे ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य यथाशक्ति एकमाला वा मूलमन्त्रं जपित्वा='गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृत जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः ॥' इति मन्त्रेण जपं निवेद्य बाह्यपूजामारभेत् । तथाहि--( पीठे ) मं मंडूकाय नमः । कां कालाग्निरुद्राय नमः । आं आधारशक्तये नमः कूं कूर्म्माय नमः पृं पृथिव्यै नमः सुं सुधासमुद्राय नमः । श्वें श्वेतद्वीपाय नमः । कं कल्पद्रुमाय नमः मं मणिहर्म्याय नमः । हें हेमपीठाय नमः । ( पूर्वादिषु ) धं धर्म्माय नमः । ज्ञां ज्ञानाय नमः । वैं वैराग्याय नमः । ऐं ऐश्वर्याय नमः । ( आग्नेयादिषु ) अं अधर्म्माय नमः । अं अज्ञानाय नमः। अं अवैराग्याय नमः । अं अनैश्वर्याय नमः ( मध्ये ) अं अनन्ताय नमः । तं तत्त्वपद्माय नमः । आं आनन्दकन्दाय नमः। सं संविन्नालाय नमः । विं विकारमयकेशरेभ्यो नमः । पं प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः । पं पंचाशद्वर्णात्मककर्णिकायै नमः । सूं सूर्यमण्डलाय नमः । इं इंदुमण्डलाय नमः । पां पावकमण्डलाय नमः । सं सत्त्वाय नमः । रं रजसे नमः । तं तमसे नमः । अं अन्तरात्मने नमः । पं परमात्मने नमः । ज्ञां ज्ञानात्मने नमः । मां मायातत्त्वाय नमः । कं कलातत्त्वाय नमः । विं विद्यातत्त्वाय नमः । पं परतत्त्वाय नमः । इति पीठदेवताः संपूज्य । वामायै नमः । ज्येष्ठायै नमः । रौद्र्यै नमः । काल्यै नमः । कलविकरिण्यै नमः । बलविकरिण्यै नमः । बलप्रमथिन्यै नमः । सर्वभूतदमिन्यै नमः ॥ मनोन्मन्यै नमः ॥ इत्येवं नवसु पीठेषु शक्तीः पूर्वाद्यष्टदिक्षु मध्ये च संपूज्य मूलमन्त्रेण भौममावाहनस्थापनाऽऽसनसन्निधापनसन्निरोधनसम्मुखीकरणशकली

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



करणावगुण्ठनाऽमृतीकरणपरमीकरणस्वागतमुस्वागतपाद्याऽर्घ्याचमनमधुपकस्नानयज्ञोपवीतवस्त्रगंधपुष्पैः सम्पूज्यावरणपूजां कुर्यात्(आग्नेय्यादिषु दिक्षु)**ॐ हृदयाय नमः। ॐ सः कवचाय हुम्॥ ॐ खं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ खः अस्त्राय फट्** इत्यंगानि संपूज्य॥ "अभिष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥" इति मंत्रेण निवेद्य तद्बाह्ये त्रिकोणे एकविंशतिकोष्ठेषु **ॐ मंगलाय नमः॥ ॐ भूमिपुत्राय नमः॥ ॐ ऋणेहर्त्रे नमः ॐ धनप्रदाय नमः। ॐ स्थिरासनाय नमः। ॐ महाकायाय नमः। ॐ सर्वकर्म्मावरोधकाय नमः। ॐ लोहिताय नमः। ॐ लोहिताक्षाय नमः। ॐ सामगानां कृपाकराय नमः। ॐ धरात्मजाय नमः। ॐ कुजाय नमः। ॐ भौमाय नमः। ॐ भूतिदाय नमः॥ ॐ भूमिनंदनाय नमः॥ अंगारकाय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ सर्वरोगापहारकाय नमः। ॐ वृष्टिकर्त्रे नमः। ॐ वृष्टिहर्त्रे नमः। ॐ सर्वकामफलप्रदाय नमः** इति नाममन्त्रैर्मंगलादीन् संपूज्य अभीष्टसिद्धिमिति मन्त्रेण द्वितीयावरणं निवेद्य चतुरस्रे भूपुरे (पूर्वादिषु) **ॐ इं इन्द्राय नमः। ॐ अं अग्नये नमः। ॐ यं यमाय नमः। ॐ निं निर्ऋतये नमः। ॐ वं वरुणाय नमः। ॐ वां वायवे नमः। ॐ सों सोमाय नमः। ॐ ईं ईशानाय नमः।** (ऊर्ध्वम्) **ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः।** (अधः) **ॐ अं अनन्ताय नमः॥** इतीन्द्रादीन् संपूज्य " अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् " इति मन्त्रेण तृतीयावरणं निवेद्य। (तद्बहिः) **ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दंडाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः॥** इति वज्रादीन् संपूज्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



" अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् " इति मन्त्रेण चतुर्थावरणं निवेद्य मूलमन्त्रेण भौमाय सांगाय सावरणाय सशक्तिकाय धूपं दीपं नैवेद्यमारार्त्तिकं च निवेद्य यथाशक्ति मंत्रं जपेत्। जपांते " गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः " इति मंत्रेण देवदक्षकरे निवेदयेत्। अस्य पुरश्चरणं षड्लक्षं जपः। तद्दशांशेन खदिरकाष्ठेन होमः। तद्दशांशेन **ॐ भौमं तर्पये नमः** इति मन्त्रेण तर्पणम्। तद्दशांशेन **ॐ भौमं मार्जये नमः** इति मन्त्रेण मार्जनम्। तद्दशांशेन ब्राह्मणभोजनम्। इत्थं मन्त्रे सिद्धे स्वेष्टप्रयोगान् कुर्यात्। इति ॥

**मङ्गलव्रतविधानं मन्त्रमहोदधौ**-मङ्गलदिनेऽरुणोदय उत्थायावश्यकं कृत्वा हस्तपादप्रक्षालनं कृत्वाऽपामार्गसमिधा मौनेन दंतधावनं कृत्वा मौनव्रती नद्यादिजले स्नात्वा रुक्तवस्त्रद्वयं धृत्वा नैवेद्यपुष्पचंदनानि संपाद्य विधिज्ञं ब्राह्मणमाहूय तदाज्ञया भौमं पूजयेत्। ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रोऽमुकनामाऽहं चिरजीविगुणवत्पुत्रप्राप्तये मङ्गलव्रतं तदंगं पूजनं च करिष्ये इति संकल्प्य गणपतिपूजनं स्वस्तिवाचनं मातृकापूजनं च कृत्वा मङ्गलं पूजयेत् ॥ तदादौ **न्यासः-ॐ मङ्गलाय नमः** ( अङ्घ्र्यो ) **ॐ भूमिपुत्राय नमः** ( जान्वोः ) **ॐ ऋणहर्त्रे नमः** ( ऊर्वोः ) **ॐ धनप्रदाय नमः** ( कट्योः ) **ॐ स्थिरासनाय नमः** ( गुह्ये ) **ॐ महाकायाय नमः** ( उरसि ) **ॐ सर्वकर्मावरोधकाय नमः** ( वामबाहौ ) **ॐ लोहिताय नमः** ( दक्षिणबाहौ ) **ॐ लोहिताक्षाय नमः**। ( गले ) **ॐ सामगानां कृपाकराय नमः** ( मुखे ) **ॐ धरात्मजाय नमः** ( नासिकयोः ) **ॐ कुजाय नमः** ( अक्ष्णोः ) **ॐ भौमाय नमः** ( ललाटे ) **ॐ भूतिदाय नमः** ( भ्रुवोर्मध्ये ) **ॐ भूमिनन्दनाय नमः** ( मस्तके ) **ॐ अंगारकाय नमः** ( शिखायाम् ) **ॐ यमाय नमः** ( सर्वांगे ) **ॐ सर्वरोगापहारकाय नमः** ( बाइ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



द्वये ) ॐ वृष्टिकर्त्रे नमः ( मूर्द्रादिपादान्तम् ) ॐ वृष्टिहर्त्रे नमः ( पादादिमूर्द्धान्तम् ) ॐ सर्वकामफलप्रदाय नमः ( दिक्षु ) ॐ आराय नमः ( नाभौ ) ॐ वक्राय नमः ( वक्षसि ) ॐ भूमिजाय नमः ( मूर्द्धनि ) एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् । रक्तमाल्यांबरधरः शक्तिशूलगदाधरः । चतुर्भुजो मेषगमो वरदः स्याद्धरासुतः ॥१॥ ततः ॐ मङ्गलाय नमः इति मंत्रेण मङ्गलं पूर्वोक्तविधिनाऽऽवाहनस्थापनाऽऽसनपाद्याऽर्घ्याऽऽचमनीयस्नानवस्त्रगंधपुष्पैः पूजयित्वा ॐ हां हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रं सः शिखायै वषट् । ॐ ह्रैं ह्रैं कवचाय हुम् । ॐ ह्रं सः नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ खंखः अस्त्राय फट् ( इति षडंगानि संपूज्य ) अभीष्टसिद्धिमिति मन्त्रेण प्रथमावरणं निवेद्यैर्विंशतिकोष्ठेषु ॐ मङ्गलाय नमः ( पादौ पूजये ) ॐ भूमिपुत्राय नमः ( जानुनी पू० ) ॐ ऋणहर्त्रे नमः ( उरू पू० ) ॐ धनप्रदाय नमः ( कटी पू० ) ॐ स्थिरासनाय नमः ( गुह्यं पू० ) ॐ महाकायाय नमः ( उरः पू० ) ॐ सर्वकर्म्मावरोधकाय नमः (वामबाहुं पू०) ॐ लोहिताय नमः ( दक्षिणबाहुं पू० ) ॐ लोहिताक्षाय नमः (कण्ठं पू०) ॐ सामगानां कृपाकराय नमः (मुखं पू०) ॐ धरात्मजाय नमः (नासिकां पू०) ॐ कुजाय नमः (नेत्रद्वयं पू०) ॐ भौमाय नमः (ललाटं पू०) ॐ भूतिदाय नमः भ्रुवोर्मध्ये पू०) ॐ भूमिनंदनाय नमः (मस्तक पू०) ॐ अंगारकाय नमः (शिखां पू०) ॐ यमाय नमः (सर्वांगं पू०) ॐ सर्वरोगापहारकाय नमः (बाहुद्वयं पू०) ॐ वृष्टिकर्त्रे नमः (मूर्धादिपादपर्यन्तं पू०) ॐ वृष्टिहर्त्रे नमः ( चरणादिमस्तकांतं पू० ) ॐ सर्वकामफलप्रदाय नमः ( दिशं पू० ) इति अभीष्टसिद्धि मिति मन्त्रेण द्वितीयावरणं निवेद्य ( त्रिकोणेषु ) ॐ वक्राय नमः ॥ ॐ आराय नमः ॥ ॐ भूमिजाय नमः इति संपूज्य "अभीष्टसिद्धि मे देहि शर-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



णागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥" इति निवेद्य तद्वहिः **ॐ ब्राह्म्यै नमः ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः ॥ ॐ कौमार्यै नमः ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः ॥ ॐ वाराह्यै नमः ॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः ॥ ॐ चामुण्डायै नमः ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः** इति पूजयित्वा । अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥ इति निवेद्य तद्वाह्ये ॥ **ॐ इन्द्राय नमः । ॐ अग्नये नमः । ॐ यमाय नमः । ॐ निर्ऋतये नमः । ॐ वरुणाय नमः । ॐ वायवे नमः । ॐ सोमाय नमः । ॐ ईशानाय नमः । ॐ ब्रह्मणे नमः । ॐ अनंताय नमः** इत्येवं संपूज्य । अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम् ॥ इति निवेद्य तद्वाह्ये **ॐ वज्राय नमः ॐ शक्तये नमः ॐ दण्डाय नमः ॐ पाशाय नमः ॐ अंकुशाय नमः ॐ गदायै नमः ॐ त्रिशूलाय नमः ॐ पद्माय नमः ॐ चक्राय नमः** । अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणांगतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं सुषष्ठावरणार्चनम् ॥ इति निवेद्य मंगलाय सांगाय सपरिवाराय धूपं दीपं च समर्प्य गोधूमान्नं च निवेद्य जलपूर्णताम्रपात्रे रक्तचन्दनरक्तपुष्पाक्षतफलानि निक्षिप्य जानुभ्यामवनी गत्वा च ॐ भूमिपुत्र महातेजः स्वेदोद्भव पिनाकिनः । श्रेयोऽर्थी त्वां प्रपन्नोऽहं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥ रक्तप्रवालसंकाश जपाकुसुमसन्निभ । महीसुत महाबाहो गृहणर्घ्यं नमोऽस्तुते ॥ इत्यर्घ्यं निवेदयेत् । तत्परं पूर्वोक्तैरेकविंशतिनामभिः प्रणम्य एकविंशतिवारं प्रदक्षिणाः कृत्वा प्रणमेत् । ततः खदिरांगारकेण स्वपुरतः ऋणरेखात्रयं समकृत्वा प्रणमेत् वामपादेन प्रमार्जयेत् । तत्र **मंत्रौ** दुःखदौर्भाग्यनाशाय पुत्रसन्तानहेतवे । कृतं रेखात्रयं वामपादेन तत्प्रमार्ज्म्यहम् ॥ ऋणदुःखविनाशाय मनोऽभीष्टार्थसिद्धये । मार्जयाम्यसिता रेखास्तिस्रो जन्मत्रयोद्भवाः ॥ ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा । धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजःसमप्रभम् । कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥ ऋणहर्त्रे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नमस्तुभ्यं दुःखदारिद्र्यनाशिने। नमामि द्योतमानाय सर्वकल्याणकारिणे ॥ देवदानवगंधर्वयक्षराक्षसपन्नगाः। सुखं यान्ति यतस्तस्मैनमो धरणिसूनवे ॥ यो वक्रगतिमापन्नो नृणां विघ्नं प्रयच्छति। पूजितः सुखसौभाग्यं तस्मै क्ष्मासूनवे नमः। प्रसादं कुरु मे नाथ मंगलप्रद मंगल। मेषवाहन रुद्रात्मन् पुत्रान्देहि धनं यशः ॥ इति प्रार्थयेत् ॥

**घटस्थापनादि देवीपूजायाम्**—प्रातः कृताभ्यंगस्नानः कुंकुमचन्दनादिना कृतपूंड्रो धृतपवित्रः सपत्नीको दशघटिकामध्येऽभिजिन्मुहूर्ते वा कलशस्थापनार्थं शुद्धमृदा वेदिकां कृत्वा पञ्चपल्लवदूर्वाफलताम्बूलकुंकुमपुष्पधूपादिसम्भारान् सम्पादयेत्। ततो देशकालौ संकीर्त्य ममेह जन्मनि दुर्गाप्रीतिद्वारा सर्वापच्छान्तिपूर्वकं दीर्घायुर्विपुलधनपुत्रपौत्राद्यविच्छिन्नसन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभशत्रुपराजयप्रमुखचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं कलशस्थापनं दुर्गापूजां चंडीसप्तशतीपाठं कुमारीपूजाद्युत्सवारुयं कर्म्म तस्य च निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं चंडीसप्तशतीजपाद्यर्थं ब्राह्मणवरणं च करिष्ये इति संकल्प्य ॐ सुमुखश्चेत्यादिस्मरणपूर्वकं गणपतिपूजनं विधाय पुण्याहवाचनं कुर्यात् ॥ ततो गन्धपुष्पवस्त्रांगुलीयकमादाय देशकालौ संकीर्त्य ॐ अद्य नवरात्रकर्त्तव्यदुर्गापूजनपूर्वकमार्कण्डेय पुराणीयचंडीसप्तशतीपाठकरणार्थम् अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वमहं वृणे। ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्। इति ब्राह्मणं वृत्वा गन्धादिभिः पूजयेत्। ततो विप्रः ॐ भूरसि भूमिरसीति भूमिं स्पृष्ट्वा ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳह पृथिवीं मा हिꣳसीः। तस्यां भुव्यंकुरारोपणार्थं शुद्धमृदं प्रक्षिप्य ॐ धान्यमसि धिनुहि इति यवान्निक्षिप्य ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषेधान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम्पयोऽसि ॥ ॐ आजिघ्रकलशंमिति कुंभं संस्थाप्य ॐ आजिघ्र कलशं मह्वा त्वा विशंत्विन्दव ÷ । पुनरूर्जानिवर्त्तस्वसानः सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्मांविशताद्रयिः ॥ ॐ व्वरुणस्योत्तं० इति जलेनापूर्य । ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनी स्थो व्वरुणस्यऽऋतसदन्यसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥ गंधद्वारामिति गंधम् । ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ॐ याऽओषधीरिति सर्वौषधीः । ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा । मनैनुबभ्रूणांमहꣳशतन्धामानिसप्तच ॥ ॐ काण्डात्काण्डादिति दूर्वाः ॥ ॐ अश्वत्थेव इति पञ्च पल्लवान् । ॐ अश्वत्थेवोनिषदनम्पर्णेवोवसतिष्कृता । गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथपूरुषम् ॥ ॐ स्योनापृथिवीति सप्तमृदः । ॐ स्योनापृथिवी नोभवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्मसप्रथाः ॥ ॐ याःफलिनीरिति । पूगीफलम् । ॐ परिवाजपतिरिति पंच रत्नानि ॥ ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ ॐ हिरण्यगर्भेति हिरण्यं च क्षिप्त्वा । ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेभूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् । सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ॐव्वसोःपवित्रमसीति रक्तवस्त्रेणावेष्टय ॥ ॐ व्वसोःपवित्रमसि शत-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



धारुं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुक्षः ॥ ॐ पूर्णा दर्वीति तण्डुलपूर्णपात्रं निधाय । ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणावहाऽइषुमूर्जꣳशतक्रतो तत्र ॐ तत्त्वा यामीति वरुणमावाह्य संपूज्य । ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मानऽआयुः प्रमोषीः ॥ कलशस्य मुखे विष्णुरित्यभिमंत्र्य देवदानवसंवादे इत्यादि प्राथयेत । ततः कलशोपरि स्वर्णमयी दुर्गाप्रतिमामन्युच्चारणपूर्वकं पंचामृतेन स्नापयित्वा स्थापयेत् । तत्र तावत् देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहं मम ( यजमानस्य वा ) अतुलविभूतिकामः संवत्सरसुखप्राप्तिकामः श्रीदुर्गापूजनं करिष्ये इति संकल्प्य । जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी । दुर्गाक्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदनि । पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये ॥ इत्यावाह्य श्रीसूक्तेन[1] आसनादिषोडशोपचारैः संपूजयेत् ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं० ॥ महिषघ्नि महामाये चामुंडे मुंडमालिनि । यशो देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥ इत्यादि प्रार्थ्य चंडीपाठं कुर्यात् । तत्रादौ देशकालौ संकीर्त्य मम यजमानस्य अतुलविभूत्रिकामः श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं कवचार्गलाकीलकसहितं मार्कण्डेयपुराणीयम् ॐ सावर्णिः सूर्यतनय इत्यादि सावर्णिर्भविता मनुरित्यंतं देवीमाहात्म्यपाठं रहस्यत्रययुतं करिष्ये इति संकल्प्य आसनादि विधाय आधारे अन्यहस्तलिखितं पुस्तकं स्थापयित्वा नारायणं नमस्कृत्य प्रणवमुच्चार्य ग्रंथार्थं बुध्यमानः स्पष्टाक्षरं नातिशीघ्रं नातिमंदं रसभावस्वरयुतं वाचयेत् । अध्यायं समाप्य विरमेन्न तु मध्ये । इति ।

---

१ श्रीसूक्तं तु लक्ष्मीपूजोत्तरमुचितम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**देव्या आर्तिक्यम्** ॥ प्रवरातीरनिवासिनि निगमप्रतिपाद्य । पारावार-विहारिणि नारायणि हृद्ये । प्रपञ्चसारे जगदाधारे श्रीविद्ये । प्रपन्नपालननिरते मुनिवृन्दाराध्ये । जय देवी जय देवी जय मोहिनिरूपे । मामिह जननि समुद्धर पतितं भवकूपे ॥ दिव्यसुधाकरवदने कुन्दोज्ज्वलरदने पदनखनिर्जितमदने मधुकैटभ-कदने । विकसितपंकजनयने पन्नगपतिशयने खगपतिवहने गहने संकटवनदहने॥ जय देवी० ॥ मंजीरांकितचरणे मणिमुक्ताभरणे कंचुकिवस्त्राभरणे वक्त्रांबुजधरणे । शंकामयभयहरणे भूसुरसुखकरणे करुणां कुरु मे शरणे गजनक्रोद्धरणे॥ जय देवी० ॥ छित्त्वा राड्ग्रीवां पासि त्वं विबुधान् (द्विड्भ्यो) यच्छसि मृत्यु-मनिष्ट पीयूषं विबुधान् । विहरसि दानवक्रुद्धान् समरे संसिद्धान् । सर्वजने-श्वरि वरदे पालय संसिद्धान् ॥ जय देवी जय देवी जय मोहिनिरूपे ॥ मामिह जननि समुद्धर पतितं भवकूपे ॥ इति ।

**महालक्ष्मीपूजनम्**—आचम्य प्राणानायम्य ॐ तत्सत् ॐ इति पठित्वा अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहंस्थिरलक्ष्मीप्राप्तिद्वारा श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं गणपतिनवग्रहकलशपूजनपूर्वकं श्रीमहालक्ष्मीपूजनमहं करिष्ये । इति सङ्कल्प्य **सुमुखश्चैकदन्तश्च** इत्यादिस्मरणपूर्वकं गणपत्यादिपूजनं कुर्यात्। **ध्यानम्**—या सा पद्मासनस्था विपुलकटितठी पद्मपत्रायताक्षी गंभीरावर्तनाभिः स्तनभर-नमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ॥ या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेम-कुम्भैः सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता ॥ ॐ सर्वलोकस्य जननीं शूलहस्तां त्रिलोचनाम् । सर्यदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः आवाहनं समर्पयामि ॥ ॐ तप्तकांचनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम् ॥ अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ महालक्ष्मै नमः आसनं० ॥ ॐ गंगादितीर्थसंभूतं गंधपुष्पादिभिर्युतम् ॥ पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोऽस्तु ते ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः पाद्यम्० ॥ ॐ अष्टगन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरितम् ॥ अर्घ्यं गृहाण महत्तं महालक्ष्म्यै नमोऽस्तु ते ॥ ॐ महा० अर्घ्यम्० । ॐ सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्मविष्ण्वादिभिः स्तुता ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ददाम्याचमनं तस्यै महाकाल्यै मनोहरम् ॥ ॐ महा० आचमनं स० ॥ ॐ पंचामृतसमायुक्त जाह्नवीसलिलं शुभम् ॥ गृहाण विश्वजननि स्नानार्थं भक्तवत्सले ॥ ॐ महा० स्नानं०। ॐ दिव्यांबरं नूतनं हि क्षौमं त्वतिमनोहरम् ॥ दीयमानं मया देवि गृहाण जगदंबिके ॥ ॐ महावस्त्रयुग्मं स० आचमनं च० ॥ ॐ कापिलं दधिकुन्देंदुधवलं मधुसंयुतम्। स्वर्ण पात्रस्थितं देवि मधुपर्कं गृहाण भोः ॥ ॐ महा० मधुपर्कं स० ॥ ॐ रत्नकंकणवैदूर्यमुक्ताहारादिकानि च ॥ सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व भोः॥ ॐ महा० आभरणानि समर्पये ॥ ॐ श्रीखण्डागरुकर्पूरमृगनाभिसमन्वितम्। विलेपनं गृहाणाशु नमोऽस्तु भक्तवत्सले ॥ गन्धं स० ॥ रक्तचन्दनसंमिश्रं पारिजातसमुद्भवम् ॥ मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्धसंयुतम् ॥ रक्तचन्दनं स० ॥ ॐ सिंदूरं रक्तवर्णं च सिंदूरतिलकप्रिये। भक्त्या दत्तं मया देवि सिंदूरं प्रतिगृह्यताम् ॥ सिंदूरं०॥ ॐ कुंकुमं कामदं दिव्यं कुंकुमं कामरूपिणम्। अखंडकामसौभाग्यं कुंकुमं प्रतिगृह्यताम् ॥ कुंकुमं०॥ ॐ तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च। मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥ सुगंधितैलं स० ॥ ॐ मंदारपारिजाताद्याः पाटली केतकी तथा। मरुवा मोगरं चैव गृहाणाशु नमो नमः ॥ पुष्पाणि० ॥ ॐ विष्ण्वादिसर्वदेवानां प्रियां सर्वसुशोभनाम्। क्षीरसागरसंभूते दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा ॥ दूर्वां स० ॥ ॐ पद्मशंखजपापुष्पैः शतपत्रैर्विचित्रिताम्। पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि ॥ पुष्पमालां स० ॥ अथांगपूजा ॥ **ॐ चपलायै नमः पादौ पूजयामि। ॐ चञ्चलायै नमः जानुनी पू०। ॐ कमलायै नमः कटिं पू०। ॐ कात्यायन्यै न नाभिं पू०। ॐ जगन्मात्रे न जठरं पू०। ॐ विश्ववल्लभायै न० वक्षःस्थलं पू०। ॐ कमलवासिन्यै न० भुजौ पू०। ॐ पद्मकमलायै न० मुखं पू०। ॐ कमलपत्राक्ष्यै न० नेत्रत्रयं पू०। ॐ श्रियै नमः शिरः पू०।** इत्यंगपूजां समाप्य पूर्वादिक्रमेणाष्टदिक्ष्वष्टसिद्धिः पूजयेत् ॥ ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अणिम्ने नमः ॥ ॐ महिम्ने नमः ॥ ॐ गरिम्ने नमः ॥ ॐ लघिम्ने नमः ॥ ॐ प्राप्त्यै नमः ॥ ॐ प्राकाम्यै नमः ॥ ॐ ईशितायै नमः ॥ ॐ वशितायै नमः ॥ पुनः पूर्वादिक्रमेण ॥ ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः ॥ ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः॥ ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै न० ॥ ॐ अमृतलक्ष्म्यै० ॥ ॐ कामलक्ष्म्यै०॥ ॐ सत्यलक्ष्म्यै न०॥ ॐ भोगलक्ष्म्यै न० ॥ ॐ योग लक्ष्म्यै न० ॥ मषीपात्रपूजनम् ॐ महाकाल्यै नमः इति मन्त्रेण आवाहनादि कृत्वा गंधादिभिः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात् ॥ ॐ काल्यै नमः॥ ॐ कपालिन्यै नमः ॥ ॐ फल्गायै न० ॥ ॐ कुरुकुलायै न०॥ ॐ विरोधिन्यै नमः ॥ ॐ विप्रचित्तायै न० ॥ ॐ उग्रप्रदत्तायै नमः ॥ ॐ दिव्यायै नमः ॥ ॐ नीलायै नमः ॥ ॐ धनायै न० ॥ ॐ बलौकाय न० ॥ ॐ मात्रायै न० ॥ ॐ मुद्रायै न० ॥ इति । सरस्वती ( लेखनी ) पूजनम् ॥ ॐ वीणापुस्तकधारिण्यै नमः॥इत्यावाह्य गंधादिभिःसंपूजयेत् ॥ आवरणपूजा ॥ ॐ वाग्वत्यै नमः ॥ ॐ वाग्वादिन्यै न० ॥ ॐ अजितायै न० ॥ ॐ विष्णुमायायै न० ॥ ॐ हिंगुलायै न० ॥ ॐ यज्ञविद्यायै न० ॥ ॐ सिद्धविद्यायै न० ॥ ॐ प्रजायै नमः ॥ ॐ पद्मावत्यै नम ॥ ॐ भुवनेश्वर्यै न० ॥ ॐ वनस्पतिरसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरां आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐमहालक्ष्म्यै नमः धूपं समर्पये ॥ कार्पासवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम् ॥ तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि ॥ दीपं स० ॥ ॐ नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्यभोज्यसमन्वितम् । षड्सैरेन्वितं दिव्यं लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ नैवेद्यं स० ॥ ॐ शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम् ॥ आचम्यतां मम जलं प्रसीद त्वं महेश्वरी ॥ आचमनं स०॥ ॐ एलालवंगकर्पूरनागपत्रादिभिर्युतम् ॥ पूगीफलेन संयुक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यताम्॥ तांबूलंस मर्पये ॥ ॐ चक्षुर्दं सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम् ॥ आर्तिक्यं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ॥ नीराजनं स० ॥ ॐ फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ तस्मात्फलप्रदानेन पूर्णाः संतु मनोरथाः ॥ फलं समर्पये॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः ॥ अनंतपुण्यफलद मतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः दक्षिणां समर्पयामि ॥ ॐ यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च ॥ तानि तानि विनश्यंति प्रदक्षिणपदेपदे ॥ प्रदक्षिणां समर्पये ॥ ॐ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ॥ यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदास्तु मे ॥ नमस्कारं सम० ॥ ॐ केतकीजातिकुसुमैर्मल्लिकामालतीभवैः ॥ पुष्पांजलिमया दत्तस्तव प्रीत्यै नमोऽस्तु ते ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः मंत्रपुष्पांजलिं समर्पये ॥ ॐ सुरासुरेंद्रादिकिरीटमौक्तिकैर्युक्तं सदा यत्तव पादपङ्कजम् ॥ परावरं पातु वरं सुमंगलं नमानि भक्त्या तव कामसिद्धये ॥ भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनी । सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्म्यै नमोऽस्तु ते ॥

श्रीसूक्तम् ॥ ॐ हिरण्यवर्णांहरिणींसुवर्णरजतस्रजाम् ॥ चंद्रांहिरण्मयींलक्ष्मीं जातवेदोम आवह ॥ १ ॥ तांमआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यांहिरण्यंविन्देयंगामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥ अश्वपूर्वांरथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् । श्रियंदेवीमुपह्वयेश्रीर्मादेवीर्जुषताम् ॥ ३ ॥ कांसोस्मितांहिरण्यप्राकारांमार्द्रां ज्वलंतींतृप्तांतर्प्पयंतीम् ॥ पद्मेस्थितांपद्मवर्णांतामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ ४ ॥ चंद्रांप्रभासांयशसाज्वलंतीं श्रियंलोकेदेवजुष्टामुदाराम् ॥ तांपद्मनेमींशरणमहंप्रपद्येअलक्ष्मीर्मेनश्यतांत्वांवृणोमि ॥ ५ ॥ आदित्यवर्णेतपसोधिजातो वनस्पतिस्तववृक्षोथबिल्वः । तस्यफलानितपसानुदंतुमायांतरायाश्चबाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६ ॥ उपैतुमांदेवसखः कीर्तिश्चम-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



णिनासह ॥ प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेस्मिन्कीर्तिमृद्धिंददातुमे ॥ ७ ॥ क्षुत्पिपासामलाज्येष्ठामलक्ष्मींनाशयाम्यहम् ॥ अभूतिमसमृद्धिंचसर्वां निर्णुदमेगृहात् ॥ ८ ॥ गंधद्वारांदुराधर्षांनित्यपुष्टांकरीषिणीम् । ईश्वरींसर्वभूतानांतामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ ९ ॥ मनसः कासमाकूतिंवाचः सत्यमशीमहि ॥ पशूनांरूपमन्नस्य मयिश्रीःश्रयतांयशः ॥ १० ॥ कर्दमेनप्रजाभूतामयिसंभ्रमु कर्दम ॥ श्रियंवासयमेकुलेमातरं पद्ममालिनीम् ॥ ११ ॥ आपः सृजंतुस्निग्धानि चिक्लीतवसमेगृहे ॥ निचदेवींमातरंश्रियं वासयमेकुले ॥ १२ ॥ आर्द्रांपुष्करिणीं पुष्टिंपिंगलांपद्ममालिनीम् ॥ चंद्रांहिरण्मयींलक्ष्मींजातवेदोमआवह ॥ १३ ॥ आर्द्रांयःकरिणींयष्टिंसुवर्णाहेममालिनीम् ॥ सूर्यांहिरण्मयीं लक्ष्मींजातवेदोम आवह ॥ १४ ॥ तांमआवहजातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यांहिरण्यंप्रभूतिंगावोदास्योऽश्वान् विन्देयपुरुषानहम् ॥ १५ ॥ यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ सूक्तंपंचदशर्चंचश्रीकामः सततंजपेत् ॥ १६ ॥ सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे । भगवति हरिवल्लभ मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥ धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः धनमिन्द्रो बृहस्पतिवरुणं धनमश्विनौ ॥ वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा । सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥ न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ॥ पद्मानने पद्मऊरु पद्माक्षी पद्मसम्भवे । तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥ विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् । विष्णुप्रिय-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सखीं दवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥ महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि । तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि । विष्णुप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ॥ आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रताः । ऋषयः श्रियः पुत्राश्च मयि श्रीदेवी देवता ॥ ऋणः रोगादि दारिद्र्यं पापञ्च अपमृत्यवः । मयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥ श्रीर्वर्चस्वमायुष्ममारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ! धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ इति श्रीसूक्तम् ॥

**स्त्रीशूद्रव्रात्यकर्तृकः पुराणोक्तसर्वदेवपूजाप्रयोगः**—आत्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामहं परमेश्वर । अरण्यामिव हव्याशं मूर्त्तावावाहयाम्यहम् ॥ अमुक देवाय नमः **इत्यावाहनम् ॥** तवेयं महिमामूर्तित्तस्यां त्वां सर्वगं प्रभो-भक्तिस्नेहसमाकृष्टं दीपवत्स्थापयाम्यहम् ॥ **इति स्थापनम् ॥** देवदेव महाराजा प्रियेश्वर प्रजापते । आसन दिव्यमीशान दास्येऽहं परमेश्वर ॥ **इत्यासनम् ॥** यद्भक्तिलेशसपकात्परमानंदविग्रहम् । तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये ॥ **इति पाद्यम् ॥** तापत्रयहरं दिव्यं परमानंदलक्षणम् । तापत्रयविनिर्मुक्त तवाव्य कल्पयाम्यहम् ॥ **इत्यर्घ्यम् ॥** वेदानामप्यवेद्याय देवानां देवतात्मने । आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥ **इत्याचमनीयम् ॥** गंगासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः । स्नापितोऽसि मया देव तथा शांति कुरुष्व मे ॥ **इति स्नानम् ॥** पयो दधि घृतं चैव मधुशर्करया युतम् । पञ्चामृत मयाऽऽनीतं स्नानाय प्रतिगृह्यताम् ॥ **इति पंचामृतस्नानम् ।** पुनः **शुद्धोदक स्नानं** च, ततोऽभिषेकः ॥ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे । मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ **इति वस्त्रद्वयमाचमनं च ॥** नवभिस्तंतुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ॥ उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥ **इति यज्ञोपवीतम् आचमनं च ॥** श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥ **इति गन्धम् ॥**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ **इत्यक्षतान्** ॥ माल्यादीनि सुगंधीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ **इति पुष्पाणि** ॥ विष्णवे तुलसीं, शिवाय बिल्वपत्राणि, गणपतये दूर्वाकुरान्, सूर्याय अर्कपुष्पाणि देव्यै रक्तकरवीरपुष्पादीनि चार्पयेत् ॥ ततः वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यो गंध उत्तमः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ **इति धूपम्** ॥ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः । सबाह्याभ्यंतरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ **इति घृतदीपम्** ॥ ततो देवताग्रे ताम्रादिपात्रे नैवेद्यम् ॥ सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेकभक्षणम् । निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत् ॥ **इति पायसादिनैवेद्यम्** ॥ नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरं परम् । अखण्डानंदसंपूर्ण गृहाण जलमुत्तमम् ॥ **इत्याचमनम्** ॥ पूगीफलं महद् दिव्यं नागवल्लीसमन्वितम् । एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ **इति ताम्बूलम्** ॥ इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥ **इत्यृतुलफम्** ॥ हिरण्यगर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥ **इति हिरण्यादिदक्षिणा** ॥ देवदेव कृपासिन्धो पारिपाहि नमोऽस्तुते । कर्पूरेण महेशान नीराजयामि तुष्टये ॥ **इति नीराजनम्** ॥ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च । तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणविधेस्तव ॥ **इति प्रदक्षिणा** ॥ नानासुरभिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ॥ गृहाण परमेशान त्वां नमामि पुनः पुनः ॥ इति **साष्टाङ्गं प्रणमनम्** । **इत्यह्नो द्वितीयेभागे कर्त्तव्यनिर्देशः** ।

---

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



# अह्नस्तृतीये भागे कर्त्तव्यनिर्देशः।

**दक्षः**—"तृतीये च तथा भागे पोष्यवर्गार्थसाधनम्। पिता माता गुरुर्भार्या प्रजा दीनाः समाश्रिताः॥ ज्ञातिर्बन्धुजनः क्षीणस्तथाऽनाथः समाश्रितः। अन्येऽप्यधनयुक्ताश्च पोष्यवर्ग उदाहृतः॥" इति। (एवं च पित्रादीनां संवनपोषणादिना यथोचितं संतोषणं कार्यम्। तदर्थं च धनावश्यकतामाह) **मनुः**—"सप्त वित्तागमा धर्म्या दायो लाभः क्रयो जयः। प्रयोगः कर्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च॥"

**गृहस्थस्य योगक्षेमविधिमाह पराशरः**—"गृहस्थस्तु यदा शक्तो धर्ममेवानुचिन्तयेत्। पोष्यधर्मार्थसिद्ध्यर्थं न्यायवर्ती सुबुद्धिमान्॥ न्यायोपार्जितवित्तेन कर्त्तव्यं पोष्यरक्षणम्। अन्यायेन तु यो जीवेत्स स्याद्धर्मबहिष्कृतः॥" इति. "न्यायार्जितधनस्तत्त्वज्ञाननिष्ठोऽतिथिप्रियः। शास्त्रवित्सत्यवादी च गृहस्थोऽपि विमुच्यते॥" इति च। तेन गृहीस्ववर्णोचितेनैव द्रव्येण पोष्यवर्गमात्मानं च रक्षेत्। न तु धर्म्ममतिक्रम्योपार्चितेन द्रव्येणेति स्थितम्।

**गृहस्थाश्रमविशेषः**—गृहस्थ एव यजते गृहस्थस्तप्यते तपः। चतुर्णामाश्रमाणां च गृहस्थस्तु विशिष्यते॥ यथा नद्यो नदाः सर्वे समुद्रे यान्ति संस्थितिम्। यथा मातरमाश्रित्य सर्वे जीवन्ति जन्तवः॥ एवं गृहस्थमाश्रित्य सर्वे जीवन्ति भिक्षुकाः। नित्योदकी नित्ययज्ञोपवीती नित्यस्वाध्यायी पतितान्नवर्जी। ऋतौ गच्छन् विधिवच्च जुह्वन् ब्राह्मणश्च्यवते ब्रह्मलोकात्॥"

**गृहस्थधर्म्मः**—"अहिंसा सत्यवचनं सर्वभूतानुकम्पनम्। शमो दानं यथाशक्ति गृहिणां धर्म्म ईरितः॥ परदारेष्वसंसर्गो धर्मस्त्रीपरिरक्षणम्। अदत्तादानविरमो मधुमांसविवर्जनम्॥ एष पञ्चविधो धर्मो बहुशाखः सुखोदयः। देहिभिर्देहपरमैः कर्त्तव्यो देहसम्भवः॥ कामं क्रोधं भयं निद्रां गीतवादित्रनर्त्तनम्। द्यूतं जनयपरीवादं स्त्रीप्रेक्षालापनं तथा॥ परोपतापपैशुन्यं प्रयत्नेन विवर्जयेत्। सन्ध्यास्नानरतो नित्यं ब्रह्मयज्ञपरायणः॥ अनसूयो मृदुर्दान्तो गृहस्थः सम्प्रवर्त्तते। स्वाश्रमाचारसंयुक्तो लभते सुखमक्षयम्॥

**इत्यह्नस्तृतीयभागे कर्त्तव्यनिर्देशः॥**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



## अह्नश्चतुर्थभागे कर्तव्यनिर्देशः ।

दक्षः—"चतुर्थे च तथा भागे स्नानार्थं मृदमाहरेत् । तिलपुष्पकुशादीनि स्नानं चाक्लृप्तिमे ॥ जले ॥ उपस्थानं ततः पश्चात् सावित्र्या जप उच्यते ।" इति । व्यासः—"स्नानं मध्यन्दिने कुर्यात् सुजीर्णेऽन्ने निरामयः । सन्ध्यां स्वेरुपस्थानं विधिवत् समुदाचरेत् ॥"

अर्घ्यप्रकारः—"पुष्पाणि, तदभावे बिल्वादिपत्राण्युदकेन मिश्रितानि अञ्जलिनाऽऽदायोत्थायोर्ध्वमुपरि सूर्याभिमुखम् "ॐ आकृष्णेन" इति मन्त्रेणैकमर्घ्यं दद्यात् । असावादित्यो ब्रह्मेति प्रदक्षिणीकृत्य "वारिणाऽञ्जलिपूर्णेन गायत्र्या चाभिमन्त्रितम् । यथा प्रातः पुनस्तद्वदुपसंहारपूर्वकम् ॥ मध्याह्ने केचिदिच्छन्ति सावित्री च तदित्यृचम् । असम्प्रदायं तत्कर्म्म कार्यहानिश्च जायते ॥ प्रातः सायमुभे सन्ध्ये मन्देहा नाम राक्षसाः । भक्षितुं सूर्यमिच्छन्ति कारणं श्रुतिनोदितम् ॥ अतस्तदैव विप्रेन्द्रः सन्ध्यां कुर्यात् प्रयत्नतः । मूलमन्त्रेण मध्याह्ने प्रक्षिपेच्च जलं बुधः सन्ध्ययोरुभयोर्नित्यं गायत्र्या प्रणवेन मा । अम्भः सम्प्रक्षिपेत्तेन नान्यथा श्रुतिघातकः ॥"

मध्याह्नसन्ध्याप्रयोगः—वामे बहून कुशान् दक्षिणे पाणौ सप्रवित्र कुशत्रयं च धृत्वा सप्रणवगायत्र्याशिखां बद्ध्वा ऐशान्याभिमुख आचम्य ऋतमित्यभिमन्त्य पुनराचामेत् । ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत । ततः समुद्रो अर्णवः ॥ समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् । दिवं च पृथिवीं चांतरिक्षमथो स्वः ॥ ॐ अपवित्रो पवित्रो वे त्यस्य वामदेव ऋषिः । विष्णुर्देवता । गायत्री छन्दः । हृदि पवित्रकरणे विनियोगः ॥ ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरे-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ इत्यात्मानं दर्भैर्जलेन संप्रोक्ष्य ॐ पृथ्वीत्यस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः । कूर्मो देवता । सुतलं छन्दः । आसने विनियोगः ॥ ॐ पृथ्वित्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥ इति भूमिप्रार्थनम् ॥ संकल्पः ॥ ॐ तत्सदद्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे तदादौ श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे तत्रापि परमपवित्रे भारते वर्षे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्त्तैकदेशे कुमारिकानाम्नि क्षेत्रे श्रीगंगायमुनयोरमुकदिग्भागे नर्मदाया उत्तरे श्रीबौद्धावतारे अमुकनाम-संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथावमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थे देव-गुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु एवं ग्रहगुणविशिष्टायां तिथौ अमुकगोत्रोऽ-मुकशर्माहं श्रुतिस्मृति पुराणोक्तफलसिद्ध्यर्थं मम उपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीप-मेश्वरप्रीत्यर्थं मध्याह्नसन्ध्योपासनं करिष्येः इति संकल्प्य वारिणाऽऽत्मानं वेष्टयित्वा सप्रणवगायत्र्या रक्षां कुर्यात् । ततः ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषि-र्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारंभे विनियोगः॥ ॐ सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्ति-स्त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि अग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रवि-श्वेदेवा देवताः । अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः । गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवताऽग्नि-र्मुखपनयने प्राणायामे विनियोगः । ॐ शिरसः प्रजापतिर्ऋ-षिर्ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवताः यजुश्छन्दः प्राणायामे विनियोगः। इति ऋष्यादिकं स्मृत्वा बद्धासनः सम्मीलितनयनो मौनी प्रणायामत्रयं कुर्यात् तत्र वायोरादानकाले पूरकनामा प्राणायामस्तत्र श्यामं चतुर्भुजं विष्णुं नाभौ ध्यायेत् । धारणकाले कुंभकस्तत्र कमलासनं रक्तवर्णं ब्रह्माणं चतुर्मुखं हृदि ध्यायेत् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्यागकाले रेचकस्तत्र श्वेतं त्रिनेत्रं शिवं ललाटदेशे ध्यायेत्। त्रिष्वप्येतेषु प्रत्येकं त्रिर्मन्त्राभ्यासःप्रत्येकमोंकारादिसप्तव्याहृतयः। ॐकार दिसावित्री। ॐकाराद्वय-मध्यस्थःशिरश्चेति मंत्रस्तस्य स्वरूपम्। ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य धीमहि ॥ धियो योनः÷प्रचोदयात् ॥ ॐ आपो ज्योती रसो-ऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् इति प्राणायामः ॥ ॐ आपः पुनन्त्विति विष्णुर्ऋषिरनुष्टुप्छंदः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनि-योगः ॥ ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथ्वी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम् ॥ यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनंतु मामापोऽसतां च प्रतिग्रह ह स्वाहा॥ इति मध्याह्न आचामेत्। तत आपोहिष्ठेत्यादिऋचस्य सप्तभिः पदैः शिरसि अष्टमेन भूमौ नवमेनापि शिरसि कुशत्रयेण जलं क्षिपत। ॐ आपो हिष्ठेत्यादिऋचस्य सिंधुद्वीप ऋषिर्गायत्री छंदः आपो देवता मार्ज्जने विनियोगः। ॐ आपोहिष्ठामयोभुव÷ॐ तानऽऊ-र्जेदधातन ॐ महेरणायचक्षसे ॐ योव÷शिवतमोरस÷ ॐ तस्य भाजयतेहन÷ ॐ उशतीरिवमातर÷ ॐ तस्मा-ऽअरङ्गमामव÷ ॐ यस्यक्षयाय जिन्वथ ॐ आपो जनय-थाचनऽ॥ इति मार्ज्जनम् ॥ ततः करेण जलमादाय वारत्रये द्रुपदां पठित्वा तज्जलं शिरसि क्षिपेत् ॐ द्रुपदादिवेति कोकिलो राजपुत्र ऋषिः ॥ आपो देवता अनुष्टुप्छंदः अघमर्षणे विनियोगः ॥ ॐ द्रुपदादिवमुमुचानऽस्विन्नऽस्नातोमलादिव ॥ पूतम्पवि-त्रेणेवाज्ज्यमापः÷शुधन्तुमैनसऽ॥ ततः करस्थजलं नासायां संयोज्य आयतास्वनायतास्वा त्रिः सकृद्वाऽघमर्षणं जपेत्। ॐ ऋतं च सत्यं चेति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छंदो भाववृत्तो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः ॥ ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोध्यजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥ समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ सूर्याचंद्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् । दिवं च पृथिवीं चांतरिक्षमथो स्वः ॥ ततः ॐ अंतश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छंदऽआपो देवताऽऽचमने विनियोगः ॥ ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम् ॥ इत्याचम्य सूर्यायैकं जलाञ्जलिं दद्यात्, तत्र मन्त्रः—ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च । हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वर्भगवते सूर्याय नमः ॥ इति । अथोर्ध्वबाहुरुत्तिष्ठन् सूर्यमुदीक्षमाणः—ॐ उद्वयमित्यस्य हिरण्यस्तूप ऋषिरनुष्टुप्छन्दः ॥ सूर्यो देवता ॥ सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ ॐ उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽउत्तरम् ॥ देवन्देवत्रासूर्यमगन्मज्योतिरुत्तमम् ॥ ॐ उदुत्यमित्यस्य प्रस्कण्वऋषिर्गायत्री छन्दः ॥ सूर्यो देवता ॥ सूर्योपस्थाने विनियोगः॥ ॐ उदुत्यञ्जातवेदसन्देवं वहन्तिकेतवः ॥ दृशेविश्वायसूर्यम् ॥ ॐ चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ ॐ चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्यवरुणस्याग्नेः ॥ आप्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳ सूर्यऽआत्माजगतस्तस्थुषश्च ॥ ॐ तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीतिपुर उष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



योगः ॥ ॐ तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ॥ पश्येमशरदः शतञ्जीवेमशरदः शतंशृणुयामशरदः शतंप्रब्रवामशरदः शतमदीनाःस्यामशरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ इत्युपस्थाय प्रदक्षिणीकृत्योपविश्य अनामिकांगुष्ठाभ्याम् ॐ हृदयाय नमः ॥ ॐ भूः शिरसे स्वाहा ॥ ॐ भुवः शिखायै वषट् ॥ ॐ स्वः कवचाय हुम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वर्नेत्राभ्यां वौषट् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् ॥ इत्यंगानि त्रिरावर्त्य ॐ तत्पदं पातु मे पादौ जंघे तु सवितुः पदम् । वरेण्यं कटिदेशं तु नाभिं भर्गस्तथैव च ॥ देवस्य मे तु हृदयं धीमहीति गलं तथा । धियो मे पातु जिह्वायां यः पदं पातु लोचने ॥ ललाटे नः पद पातु मूर्धानं मे प्रचोदयात् ॥ इति गायत्रीन्यासं च कुर्यात् ॥ ततः ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता जपे विनियोगः ॥ ॐ त्रिव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्या देवताः जपे विनियोगः ॥ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः। गायत्री छन्दः । सविता देवता । जपे विनियोः ॥ इति ऋष्यादिकं स्मृत्वा ॥ ॐ मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिंदुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् ॥ गायत्रीं वरदाभयांकुशकशां शूलं कपालं गुणं शंखं चक्रमथारविंदयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥ गायत्रीं ध्यायेत् ॥ ततः ॐ तेजोसीति देवा ऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्री छन्दो गायत्र्यावाहने विनियोगः ॐ तेजोसिशुक्रमस्यमृतमसिधामनामासिप्रियन्देवानामनाधृष्टन्देवयजनमसि ॥ इति गायत्रीमावाह्य ॥ ॐ तुरीयस्य विमल ऋषिः परमात्मा. देवता गायत्री छन्दः गायत्र्युपस्थाने विनियोगः ॥ ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदासि न हि पद्यसेनमस्ते तुरीयाय दर्शताय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पदाय परोरजसे सावदोम् ॥ इत्युपस्थाय ( प्रातः प्राङ्मुखो ) मध्याह्ने सूर्याभिमुखस्तिष्ठन् ( सायं पश्चिमाभिमुख उपविष्टः ) उक्तविधिना सहस्रं शतं वा गायत्रीं जपेत् ॥जप्यस्वरूपं यथा ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः ÷ प्रचोदयात्। ततो जपांते कवचं पठित्वा देवागात्विति पठित्वा प्रदक्षिणीकृत्य प्रणिपत्य विसर्जयेत्। इति समासेन मध्याह्नसंध्याप्रयोगः ॥

अथ पञ्चमहायज्ञाः--ब्रह्मयज्ञो देवयज्ञो मनुष्ययज्ञःपितृयज्ञो भूतयज्ञ इति श्रुतिः तदुक्तं च–पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः। एतै पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥

पञ्चमहायज्ञफलम्, याज्ञवल्क्यः–बलिकर्म स्वधा होमः स्वाध्यायोऽतिथिसत्क्रिया। भूतपित्रमरब्रह्ममनुष्याणां महामखाः ॥ कात्यायनः--देवभूतपितृब्रह्ममनुष्याणामनुक्रमात्। महासत्राणि जानीयात्त एवेह महामखाः ॥ मनुः–ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा। नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत् ॥ एतानेक महायज्ञान् यज्ञशास्त्रविदो जनाः। अनीहमानाः सततमिन्द्रियेष्वथ जुह्वति ॥ वाच्येके जुह्वति प्राणं प्राणे वाचं च सर्वदा। वाचि प्राणे च पश्यन्तो यज्ञनिर्वृत्तिमक्षपाम्। यत्फलं सोमयागेन प्राप्नोति धनवान्द्विजः। सम्यक् पञ्चमहायज्ञैदारिद्र्यं नश्यते क्षणात् ॥ शतपथब्राह्मणे—ॐ पञ्चैव महायज्ञास्तान्येव महासत्राणि भूतयज्ञो मनुष्ययज्ञः पितृयज्ञो देवयज्ञो ब्रह्मयज्ञऽइति ॥ १ ॥ अहरहर्भूतेभ्यो बलिꣳहरेत्। तथैतद्भूतयज्ञꣳ समाप्नोत्यहरहर्दद्यादोदपात्रात्तथैतन्मनुष्ययज्ञꣳ समाप्नोत्यहरह ÷ स्वधा कुर्यादोदपात्रात्तथैतं पितृयज्ञꣳ समाप्नोत्यहरह ÷ स्वाहा कुर्यादाकाष्ठात्तथैतं देवयज्ञꣳ समाप्नोति ॥ २ ॥ अथ ब्रह्मयज्ञ ÷ स्वाध्यायो वै ब्रह्मयज्ञस्तस्य ब्रह्मयज्ञस्य वागेव जुहूर्मनऽउपभृच्चक्षुर्ध्रुवा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मेधा स्रुवः सत्यमवभृथ ÷ स्वर्गो लोकऽउदयनं यावन्त ह॰ हवाऽइमाँ पृथिवीं वित्तेन पूर्णा ददल्लोकं जयति त्रिस्तावन्तं जयति भूयाꣳसं चाक्षय्यं य ऽएवं विद्वानहरह ÷ स्वाध्याय॰ मधीते तस्मात्स्वाध्यायोऽध्येतव्यꣳ ॥ ३ ॥ पयऽआहुतयो हवाऽएतान्देवानां यद्दचः स य ऽएवं विद्वानृचोऽहरहꣳ स्वाध्यायमधीते पयऽआहुतिभिरेव तद्देवाँस्तर्पयति त ऽएनं तृप्तास्तर्पयन्ति योगक्षेमेण प्राणेन रेतसा सर्वात्मना सुर्वाभिꣳ पुण्याभिꣳ सम्पद्भिर्घृतकुल्या मधुकुल्याꣳ पितृन्स्वधा ऽअभि॰ वहन्ति ॥ ४ ॥ आज्याहुतयो हवा ऽएतान्देवानां यद्यजूꣳषि स य एवं विद्वान्यजूꣳष्यहरहꣳ स्वाध्यायमधीतेऽआ॰ ज्याहुतिभिरेव तद्देवाँस्तर्पयति त ऽएनं तृप्तास्तर्पयन्ति योग॰ क्षेमेण प्राणेन रेतसा सर्वात्मना सुर्वाभिꣳपुण्याभि ÷ सम्पद्भि॰ र्घृतकुल्या मधुकुल्याꣳ पितृन्स्वधाऽअभिवहन्ति ॥५॥ सोमा॰ हुतयोहवा एतान्देवानां यत्सामानि स यऽएवं विद्वान्त्सामा॰ न्यहरहꣳ स्वाध्यायमधीते सोमाहुतिभिरेव तद्देवाँस्तर्पयति तऽएनं तृप्तास्तर्पयन्ति योगक्षेमेण प्राणेन रेतसा सर्वात्मना सुर्वाभिꣳपुण्याभिꣳ सम्पद्भिर्घृतकुल्या मधुकुल्याꣳपितृन्स्वधा॰ अभिवहन्ति ॥ ६ ॥ मेदऽआहुतयो हवाऽएतान्देवानां यद॰ थर्वाङ्गिरसꣳस य ऽएवं विद्वानथर्वाङ्गिरस्सोऽहरहꣳ स्वाध्यायम॰ धीते मेदऽआहुतिभिरेव तद्देवाँस्तर्पयति त ऽएनं तृप्तास्तर्प॰ यन्ति योगक्षेमेण प्राणेनरेतसा सर्वात्मना सुर्वाभि ÷ पुण्याभि॰

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सम्पृद्भिर्घृतकुल्या मधुकुल्या ÷ पितृन्त्स्वधाऽअभिवहन्ति ॥७॥ मध्वाहुतयो हवा एतान्देवानां यदनुशासनानि विद्या वाकोवाक्यमितिहासपुराणं गाथा नाराशꣳसी ÷ स यऽएवं विद्वाननुशासनानि विद्या वाकोवाक्यमितिहासपुराणं गाथा नाराशꣳसीरित्यहरहꣳस्वाध्यायमधीते मध्वाहुतिभिरेव तद्देवाँस्तर्पयति तु ऽएनं तृप्तास्तर्पयन्ति योगक्षेमेण प्राणेन रेतसा सर्वात्मना सर्वाभि ÷ पुण्याभिः सम्पृद्भिर्घृतकुल्या मधुकुल्याꣳ पितृन्त्स्वधाऽअभिवहन्ति ॥ ८ ॥ तस्य वाऽएतस्य ब्रह्मयज्ञस्य चत्वारो वषट्कारा यद्वातो वाति यद्विद्योतते यत्स्तनयति यदेव स्फूर्जतितस्मादेवं विद्वाते वातिविद्योतमाने स्तनयत्येव स्फूर्जत्यधीयीतैव वषट्काराणामत्त्सं वषट्कारावाति ह वै पुनर्मृत्युं मुच्यते गच्छति ब्रह्मण ÷ स्वात्मताꣳ स चेदुपि प्रबलुभिव नु शकूनुयादप्येकं वेदपदमधीयीतैव तथाप्येतेभ्यो न हीयते ॥ ९ ॥ इति पञ्चमहायज्ञफलम् ॥

**ब्रह्मयज्ञविधिः**—प्रदक्षिणं—समावृत्य आसने उपविश्य च। दर्भेषु दर्भपाणिःसन् प्राङ्मुखस्तु कृताञ्जलिः ॥ स्वाध्यायं तु यथाशक्ति ब्रह्मयज्ञार्थमाचरेत्। ऋचां च यजुषां साम्नां गाथागुह्यमथापि वा ॥ आदावारभ्य वेदं तु ह्या वोपर्युपरि क्रमात्। यदधीतेऽन्वहं भक्त्या स स्वाध्याय इति स्मृतः ॥

**ब्रह्मयज्ञः कात्यायनपरिशिष्टसूत्रे**—बिल्भाडित्यनुवाकपुरुषसूक्तशिवसङ्कल्पमण्डलब्राह्मणेरित्युपस्थाय प्रदक्षिणीकृत्य नमस्कृत्योपविशेद्दर्भेषु दर्भपाणि स्वाध्यायं च यथाशक्त्याऽऽदावारभ्य वेदम्। पठेदिति शेषः। कात्या-

---

१ एत एवैते मन्त्राः श्राद्धे ब्राह्मणभोजनावसरेऽपि पठनीयाः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यनत्रिकण्डिकासूत्रे-हरिहरभाष्ये-सन्ध्यावन्दनानन्तरं किं कुर्यादित्यपेक्षायां ब्रह्मयज्ञं कुर्यादित्याह। **सूत्रम्**-दर्भेषु दर्भपाणिः स्वाध्यायञ्च यथा शक्त्या-दावारभ्य वेदम्। अस्यार्थः-दर्भेषु प्रशस्तदारुनिर्मितासनोपरि निहितेषु प्रागग्रेषु उदगग्रेषु वा त्रिषु कुशेषु आसीनः प्राङ्मुख उपविश्योदङ्मुखो वा दर्भपवि-त्रोपग्रहयुक्तौ पाणी यस्यासौ दर्भपाणिः स्वाध्यायं ब्रह्मयज्ञं यथाशक्ति शक्ति-शक्तिमनतिक्रम्य कुर्यात्। किं कृत्वा। आरभ्य उपक्रम्य। कं वेदं मन्त्रब्राह्म-णात्मकम्। कुत आरभ्य। आदौ आदित इषेत्वोर्जे त्वेत्यस्मादथ व्रतमुपै-ष्यन्नित्यस्माच्च। अत्र वेदमित्येकवचनादनेकवेदाध्ययनेऽप्येकं वेदमारभ्य प्रति-दिनमुपर्युपर्यध्ययनेन समाप्यान्यवेदमारभ्य तथैव समाप्याथर्वाङ्गिरसपुराणेति-हासादीन्यपि तथैवादित आरभ्यैवमेकैकमित्येवं पाठान्तरं समाप्यापरमारभ्य समापयेत्। न पुनर्यदृच्छया एकदेशम् एकदेशम्। आदावारभ्येति नियमात्। वेदशब्दोऽत्राथर्वादेरप्युपलक्षणार्थः। यथाह-**याज्ञवल्क्यः**--वेदार्थर्वपुरा-णानि सेतिहासानि शक्तितः। जपयज्ञप्रसिद्ध्यर्थं विद्यां चाध्यात्मिकां जपेत्॥ स चापि जपयज्ञः कालान्तरेऽपि क्रियते। यश्च श्रुतिजपः प्रोक्तो ब्रह्मयज्ञस्तु स स्मृतः। स चर्वाक् तर्पणात्कार्यः पश्चाद्वा प्रातराहुतेः॥ वैश्वदेवावसाने वा नान्यत्र ह्यनिमित्तकात्॥ **पारस्करगृह्यसूत्रे हरिहरभाष्ये कात्या-यनः**--किञ्च--न हन्तर्ति न होमं च स्वाध्यायं पितृतर्पणम्। नैकः श्रद्धद्वयं कुर्यात्स मानेऽहनि कुत्रचित्॥ तस्मात्प्रातर्होमान्तरं वा तार्पणात्पूर्वं वा वैश्व-देवान्ते वा सकृद्ब्रह्मयज्ञं कुर्यादिति॥ सिद्धम्॥ एतद्वचनाभिप्रायेण वाजसने-यिब्राह्मणाः द्विवारं वैश्वदेवं न कुर्वन्ति। तस्मात्तेषां प्रयोगेषु सङ्कल्पेषु वा सायवैश्वदेवो नास्ति इति बोध्यम्॥

**अथ सूर्योपस्थानपद्धतिः**-आचम्य प्राणानायम्य॥ 'संकल्पः'-

---

१ पितृपक्षे तु यदि एकोद्दिष्टमपि प्राप्तं स्यात्तर्हि एकोद्दिष्टप्रथमं विधायैव महालय-निमित्तं श्राद्धं कुर्यात्, तत्रापि यदि तस्मिन् दिने महालयनिमित्तं श्राद्धं न कुर्यात्तदाऽपि न क्षतिः, किंतु एकोद्दिष्टमवश्यं विधेयं पार्वणं स्वमायां दिनान्तरे वेति। २ इदमुपस्थानं प्रायः श्राद्धपक्षेष्वेव कुर्वन्ति। ३ आचमनप्राणायामयोर्विधिस्तु ५५ पृष्ठे प्रागुक्त एव।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अद्य पूर्वोच्चारितवर्तान-एवंगुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्यर्थं श्रीसवितृसूर्यनारायणप्रीत्यर्थं सूर्योपस्थानमहं करिष्ये । 'कुशपवित्रधारणम्'-ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥ ( वा० सं० ४ । ४ ) इति मन्त्रेण दक्षिणवामहस्तयोरनामिकयोः कुशपवित्रे धृत्वोर्ध्वबाहुः सूर्यमुदीक्षमाणः ॐ उद्वयं तमस० १ ( वा० सं० २० । २१ ) ॐ उदुत्यंजात० २ ( वा० सं० ७ । ४१ ) ॐ चित्रं देवाना० ३ ( वा० सं० ७ । ४२ ) ॐ तच्चक्षुर्देवहितं० ४ ( वा० सं० ३६ । २४ ) ॐ तत्सवितु० ५ ( वा० सं० २६ । ३ ) इति मंत्रपंचकं पठित्वा वक्ष्यमाणान् मन्त्रान् पठेत् । ॐ विभ्राड् बृहत्पिबतु० इत्याद्यारभ्य-'आकृष्णेन रजसा' इत्यन्तं सप्तदश मन्त्रान्पठेत् । ( वा० सं० ३३ । ३०-४३ ) 'ॐ सहस्रशीर्षा० ( वा० सं० ३१ । १ । )' इत्यारभ्य 'यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवा स्तानि० ( वा० सं० ३१ । १६ )' इत्यन्तान् षोडश मन्त्रान् पठित्वा 'ॐ यज्ञाग्रतो दूरमुदैति०' इत्यारभ्य सुषारथिरश्वान्' इत्यन्तान् षण्मन्त्रांश्च ( वा० सं० ३४ । १-६ ) अधीत्य मण्डलब्राह्मणं पठेत् । तत्र यथा-ॐ सुदेतन्मण्डलंतपति तन्महदुक्थन्ताऽऋचःसु ऋचां लोकोथ सुदेतदर्चिर्दीप्यते तन्महाव्रतं तानि सामानि स साम्नाँलोकोथ सुऽएषऽएतस्मिन्मंडले पुरुषःसोऽग्निस्तानि

---

१ विभ्राडित्यनुवाकमध्ये 'तम्प्रत्नथाऽयं वेनाश्चित्रन्देवानाम्' इति प्रतीकोक्तमन्त्र त्रयमपि पठनीयमस्तीति मंतव्यम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सुजूꣳषि स सुऽजुषां लोकꣳ॥१॥ सैषा त्रय्येव विद्या तपति तद्धै-
तदप्यविद्वाꣳस आहुस्त्रयी वाऽएषा विद्या तपतीति ऽवाग्घैव
तत्पश्यन्ती वदति ॥ २ ॥ स ऽएष ऽएव मृत्युर्य ऽएष ऽएतस्मि-
न्मण्डले पुरुषोयैतदमृतं यदेतदर्च्चिर्दीप्यते तस्मान्मृत्युर्न
म्रियते मृतेर्ह्यन्तस्तस्माद न दृश्यते मृतेर्ह्यन्तꣳ ॥ ३ ॥
'तदेष श्लोको भवति'-अन्तरं मृत्योरमृतमित्यवरꣳ
ह्येतन्मृत्योरमृतम्मृत्यावमृतमाहितमित्येतस्मिन्हि पुरुष
ऽएतन्मण्डलम्प्रतिष्ठितं तपति मृत्युर्द्विवस्वन्तं वस्तऽइत्यसौ
वा ऽआदित्यो द्विवस्वानेष ह्यहोरात्रे विवस्ते तमेष त्वस्ते
सर्व्वतो ह्येनेन परिवृतो मृत्योरात्मा द्विवस्वतीत्येतस्मिन्हि
मण्डल ऽएतस्य पुरुषस्यात्मैतदेव श्लोको भवति ॥ ४ ॥
तयोर्व्वा ऽएतयोरुभयोरेतस्य चार्चिष ऽएतस्य च पुरुषस्यै-
तन्मण्डलं प्रतिष्ठा तस्मान्महदुक्थम्परस्मै न शꣳ सेन्नैनꣳ
प्रतिष्ठां छिनदाऽइत्येतꣳ ह स प्रतिष्ठां छिन्ते यो महदुक्थं
परस्मै शꣳसति तस्मादुक्थशꣳसम्भूयिष्ठं परिचक्षते प्रतिष्ठा-
छिन्नो हि भवतीत्यधिदेवतम् ॥ ५ ॥ 'अथाधियज्ञम्'-
यदेतन्मण्डलं तपत्ययꣳ स रुक्मोऽथ यदेतदर्चिर्दीप्यतऽइदं
तत्पुष्करपर्णमापो ह्येताऽआपꣳ पुष्करपर्णमथ य ऽएष ऽएत-
स्मिन्मण्डले पुरुषोऽयमेव स योऽयꣳ हिरण्मयꣳ पुरुषस्तदेत-
देवैतत्त्रयꣳ संस्कृत्येहोपधत्ते तद्यज्ञस्यैवानु सꣳस्थामूर्द्धमु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्क्रामति तदेतमुष्येति सु ऽएष तपति तस्मादग्निन्नाद्रियेत परिहन्तुममुत्र ह्येष तदा भवतीत्यु ऽएवाधियज्ञम् ॥ ६ ॥ 'अथाध्यात्मम्'—यदेतन्मण्डलं तपति यश्चैष रुक्मऽइदं तच्छुक्लमक्षन्नथ यदेतदर्चिर्दीप्यते यच्चैतत्पुष्करपर्णमिदं तत्कृष्णमक्षन्नथ य ऽएष ऽएतस्मिन्मण्डले पुरुषो यश्चैष हिरण्मयऽ पुरुषोऽयमेव स योऽयं दक्षिणेऽक्षन्पुरुषऽ ॥७॥ स ऽएष ऽएव लोकंपृणतामेष सर्वोऽग्निरभि सम्पद्यते तस्यैतन्मिथुनं योऽयुष्टःसह्येऽक्षन्पुरुषोर्द्धमुहैतदात्मनो यन्मिथुनं यदा द्वे सह मिथुनेनाथ सर्वोथ कृत्स्नुः कृत्स्नुतायै तद्यत्ते द्वे भवतो द्वन्द्वष्टः हि मिथुनम्प्रजननं तस्माद्द्वेद्वे लोकंपृणेऽउपधीयेतेतस्माद्दु द्वाभ्यां द्वाभ्यां चितिम्प्रणयन्ति॥८॥स ऽएषऽएवेन्द्रोयोऽयंदक्षिणेऽक्षन् पुरुषोऽथेयमिन्द्राणी ताभ्यां देवाऽएतां विधृतिमकुर्वन्नासिकान्तस्माज्जायाया अन्तेनाश्नीयाद्वीर्य्यवान्हास्मा ज्जायते वीर्य्यवन्तमुह सा जनयति यस्याऽअन्तेनाश्नाति ॥ ॥ ९ ॥ तदेतद्देवव्रतष्टः राजन्यबन्धवो मनुष्याणामनुत्तसां गोपायन्ति तस्माद्दु तेषु वीर्य्यवाञ्जायते मृतवाका व्वयसाछं सा क्षिप्रश्येनं जनयति ॥ १० ॥ तौ हृदयस्याकाशं प्रत्यवेत्य मिथुनीभवतस्तौ यदा मिथुनस्यान्तङ्गच्छतोऽथ हैतत्पुरुषऽ स्वपिति तद्यथा हैवेदम्मानुषस्य मिथुनस्यान्तङ्गत्वा संविदु ऽइव भवत्येवष्टः हैवैतदसंविदु ऽइव भवति दैवछं ह्येतन्मि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



थुनम्परमो ह्येषु ऽआनन्दः ॥ ११ ॥ तस्मादेवंवित्स्वप्यात् ॥ लोक्य ६ः हैतेऽएव तद्देवते मिथुनेन प्रियेण धाम्ना समर्द्धयति तस्मादुह स्वपन्तं धुरेव न बोधयेन्नेदेते देवते मिथुनी भवन्त्यौ हिनसानीति तस्मादु हैतत्सुषुपुषऽश्लेष्मणमिव मुखम्भवत्येते ऽएव तद्देवते रेतः सिञ्चतस्तस्मादेतस ऽइदꣳ सर्वꣳसम्भवति यदिदं किञ्च ॥ १२ ॥ स ऽएष ऽएव मृत्युः ॥ य ऽएष एतस्मिन्मण्डले पुरुषो यश्चायन्दक्षिणेऽक्षन्पुरुषस्तस्य हैतस्य हृदये पादावतिहतौ तौ हैतदाच्छिद्योत्क्रामति स यदोत्क्रामत्यथ हैतत्पुरुषो म्रियते तस्मादु हैतत्प्रेतमाहुराच्छेद्यस्येति ॥१३॥ एष ऽउ ऽएव प्राणः । एष हीमाꣳसर्व्वाꣳप्रजाः प्रणयति तस्यैते प्राणाः स्वाः स यदा स्वपित्यथैनमेते प्राणाः स्वाऽअपियन्ति तस्मात्स्वाप्ययः स्वाप्ययो ह वैतच्चं स्वप्नऽइत्याचक्षते परोक्षन्परोक्षकामा हि देवाः॥१४॥सएतैꣳसुप्तो न कस्य चन वेद न मनसा सङ्कल्पयति न वाचाऽन्नस्य रसं विजानाति न प्राणेन गन्धं विजानाति न चक्षुषा पश्यति न श्रोत्रेण शृणोत्येतच्चं ह्येते तदापीता भवन्ति सऽएषऽएकः सन्प्रजासु बहुधा व्याविष्टस्तस्मादेका सती लोकम्पृणा सर्वमग्निमनु विभवत्यथ यदेकऽएव तस्मादेका ॥ १५ ॥ तदाहुः । एको मृत्युर्बहवऽइत्येकश्च बहवश्चेति ह ब्रूयाद्यदेहासावमुत्र तेनैकोऽथ यदिह प्रजासु बहुधा व्याविष्टस्तेनो बहवः॥१६॥तदाहुः। अन्तिके मृत्युर्दूरा ३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ऽइत्यन्तिके च दूरे चेति ह ब्रूयाद्यदुहायमिहाध्यात्मन्तेनान्तिकेऽथ यदसावमुत्र तेनो दूरे ॥ १७ ॥ तदेष श्लोको भवति । अन्मे भात्यपश्रितो रसानाछंसंक्षरेमृतऽइति यदेतन्मण्डलंतपति तदन्नमथ य ऽएषऽएतस्मिन्मण्डले पुरुषः सोऽन्ता सऽएतस्मिन्नन्नेपश्रितो भातीत्यधिदेवतम् ॥ १८ ॥ 'अथाध्यात्मम्'-इदमेव शरीरमन्नमथ योऽयं दक्षिणेऽक्षन्पुरुषः सोऽन्ता सऽएतस्मिन्नन्नेऽपश्रितो भाति ॥ १९ ॥ तमेतमग्निरित्यध्वर्यवऽउपासते । यजुरित्येष हीदꣳ सर्वं युनक्ति सामेति च्छन्दोगा ऽएतस्मिन्हीदꣳ सर्वꣳ समानमुक्थमिति बह्वृचा ऽएष हीदꣳसर्वं मुत्थापयति वातुरिति वातुविद ऽएतेन हीदꣳ सर्वं यतंविषमिति सर्प्पाः सर्प्पऽइति सर्प्पविद ऽऊर्गिति देवा रयिरिति मनुष्या मायेत्यसुराः स्वधेति पितरो देवजन ऽइति देवजनविदो रूपमिति गन्धर्वा गन्धऽइत्यप्सरसस्तं यथावथोपासते तदेव भवति तद्धैनान् भूत्वाऽवति तस्मादेतमेवंवित्सर्वैरेवैतैरुपासीत सर्वꣳ हैतद्भवति सर्वꣳ हैनमेतद्भूत्वाऽवति ॥२०॥ स ऽएष त्रीष्टुकोऽग्निर्ऋगेका यजुरेका सामैका तद्याङ्काश्चात्रर्चो पदुधाति रुक्मऽएव तस्या ऽआयतनमथ यां यजुषा पुरुष ऽएव तस्या ऽआयतनमथ याछंसाम्ना पुष्करपर्णमेव तस्या ऽआयतनमेवन्त्रीष्टकꣳ ॥ २१ ॥ ते वा ऽएतेऽउभेऽएष च रुक्मऽएतच्च पुष्करपर्णमेतम्पुरुषमुपीत ऽउभे ह्यृक्सामे यजुरपी-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्ऽएवम्वेकेष्टकꣳ ॥ २२ ॥ स ऽएषऽएव मृत्युꣳ ॥ य एषऽएत-स्मिन्मण्डले पुरुषो यश्चायं दक्षिणेऽक्षन्पुरुषꣳ सऽएषऽएवंवि-दऽआत्मा भवति स यदैवंविदस्माल्लोकात्प्रैत्यथैतमेवात्मान-मभि सम्भवति सोऽमृतो भवति मृत्युर्ह्यस्यात्मा भवति ॥ ॥ २३ ॥ नेव वा ऽइदमग्रेऽसदासीन्नैव सदासीत् ॥ मण्डल-ब्राह्मणम् ॥ ( श. प. ब्रा. १० । ५ । २ )

'तदाहुꣳ'—किञ्छन्दꣳका देवताऽग्नेꣳ शिर ऽइति गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शिरꣳ ॥ १ ॥ किञ्छन्दꣳ का देवता ग्रीवा ऽइत्युष्णिक् छन्दꣳ सविता देवता ग्रीवाः ॥ २ ॥ किञ्छन्दꣳ काऽदेवताऽनूकामिति बृहतीछन्दो बृहस्पतिर्देवताऽनूकम् ॥३॥ किञ्छन्दꣳ का देवता पक्षाविति बृहद्रथन्तरे छन्दो द्यावापृ-थिवी देवते पक्षौ ॥ ४ ॥ किञ्छन्दꣳ का देवता मध्यमिति त्रिष्टुप् छन्दऽइन्द्रो देवता मध्यम् ॥ ५ ॥ किञ्छन्दꣳ का देवता श्रोणी ऽइति जगतीछन्दऽआदित्यो देवता श्रोणी ॥६॥ किञ्छन्दꣳका देवता यस्मादिदं प्राणद्वेतꣳ सिच्यत ऽइत्यति-च्छन्दश्छन्दꣳ प्रजापतिर्देवता ॥ ७ ॥ किञ्छन्दꣳ का देवता योऽयमवाङ् प्राणऽइति यज्ञायज्ञियं छन्दो वैश्वानरो देवता ॥ ८ ॥ किञ्छन्दꣳ का देवतोरू ऽइत्यनुष्टुप छन्दो विश्वेदेव-देवतोरू ॥ ९ ॥ किञ्छन्दꣳ का देवताऽष्ठीवन्ताविति पंक्ति-श्छन्दो मरुतो देवताऽष्ठीवन्तौ ॥ १० ॥ किञ्छन्दꣳका देवता प्रतिष्ठेऽइति द्विपदाछन्दो विष्णुर्देवता प्रतिष्ठे ॥ ११ ॥ किञ्छ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



दन्दं का देवता प्राणाऽइति विच्छन्दश्छन्दो व्यायुर्देवता प्राणाꣳ ॥ १२ ॥ किच्छन्दः का देवतोनातिरिक्तानीति न्यूनाक्षराछन्द ऽआपो देवतोनातिरिक्तानि सैषाऽऽत्मविद्यैवैतन्मयो हैवैता देवता ऽएतमात्मानमभि सम्भवति न ह्यान्यालोक्यता या ऽआशीरस्ति ॥ १३ ॥ धीरो ह शातपर्णेयः ॥ ब्राह्मणम् ॥ ( श. प. ब्रा. १० । ३ । २ )

ॐ त्रयं वा ऽइदन्नामरूपं कर्म तेषान्नाम्नां वागित्येतदेषामुक्थमतो हि सर्व्वाणि नामान्युत्तिष्ठन्त्येषाऽक्सामैतद्धि सर्व्वेनामभिꣳसममेतदेषां ब्राह्मैतद्धि सर्व्वाणि नामानि बिभर्त्ति ॥ १ ॥ 'अथ रूपाणाम्'—चक्षुरित्येतदेषामुक्थमतो हि सर्व्वाणि रूपाण्युत्तिष्ठन्त्येतदेषाꣳसामैतद्धि सर्व्वै रूपैꣳसममेतदेषां ब्रह्मैतद्धि सर्व्वाणि रूपाणि बिभर्ति ॥ २ ॥ 'अथ कर्मणाम्'—आत्मेत्येतदेषामुक्थमतो हि सर्व्वाणि कर्म्माण्युत्तिष्ठन्त्येतदेषाक्सामैतद्धिं सर्व्वैꣳकर्म्भभिꣳससमैतदेषां ब्रह्मतैद्धि सर्व्वाणि कर्म्माणि बिभर्ति तदेतत्रयꣳसदेकमगुमात्मात्मो ऽएकꣳसन्नेतत्रयं तदेतदमृतक्सत्येन छन्नं प्राणो वा ऽअमृत नामरूपे सत्यन्ताभ्यामयं प्राणश्छन्नꣳ॥३॥ 'दृप्तबालाकिर्हानूचानो गार्ग्य ऽआस' ॥ ब्राह्मणम् ॥ ( श० प० ब्रा० १४।४।४ )

भूमिरन्तरिक्षं द्यौरिति । अष्टावक्षराण्यष्टाक्षरक्ष ह वाऽएकङ्गायत्र्यै पदमेतदुहास्या ऽएतत्स यावदेषु लोकेषु तावद्ध जयति योस्या ऽएतदेवं पदं वेद ॥१॥ ऋचो यजूꣳषि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सामानीत्यष्टावक्षराण्यष्टाक्षरꣳ ह वा ऽएकं गायत्र्यै पदमेतु दुहैवास्या ऽएतत्स यावतीयं त्रयी विद्या तावद्ध जयति योऽस्य एतदेवं पदं वेद ॥ २ ॥ प्राणोऽपानो व्यान ऽइत्यष्टावक्षराण्यष्टाक्षरꣳह वा एकं गायत्र्यै पदमेतदुहैवास्या ऽएतत्स यावदिदं प्राणि तावद्ध जयति योऽस्या ऽएतदेवं पदं वेद ॥ ३ ॥ अथास्या ऽएतदेव तुरीयं दर्शतं पदं परोरजा य ऽएषतपति यद्वै चतुर्थं तत्तुरीयं दर्शतं पदमिति ददृश ऽइव ह्येष परोरजा ऽइति सर्व्वमु ह्येष रजु ऽउपर्युपरि तपत्येवꣳहैव श्रिया यशसा तपति योऽस्या ऽएतदेवं पदं वेद ॥४॥ सैषा गायत्र्येतस्मिꣳस्तुरीये दर्शते पदे परोरजसि प्रतिष्ठिता तद्वैतत्सत्ये प्रतिष्ठिता चक्षुर्वै सत्यं चक्षुर्हि वै सत्यं तस्माद्यदितानीन्द्रौ विवदमानावेयातामहमद्राक्षमहमश्रौषमिति युऽएवं ब्रुयादहमद्राक्षमिति तस्माऽएव श्रद्दध्यात्॥५॥ तद्वै तत्सत्यं बले प्रतिष्ठितम् प्राणो वै बलं तत्प्राणे प्रतिष्ठितं तस्मादाहुर्बलꣳसत्यादोजीय ऽइत्येवम्वेषा गायत्र्यध्यात्मं प्रतिष्ठिता ॥ ६ ॥ 'सा हैषा गयाँस्तत्रे'-प्राणा वै गयास्तत्प्राणांस्तत्रे तद्यद्गयांस्तत्रे तस्माद्गायत्री नाम स यामेवामुमन्वाहुर्षैवसा स यस्मा अन्वाह तस्य प्राणांस्त्रायते ॥ ७ ॥ ' ताꣳहैके'-सावित्रीमनुष्टुभमन्वाहुर्वागनुष्टुवेतद्वाचमनुब्रूम ऽइति न तथा कुर्याद्गायत्रीमेवानुब्रूयाद्यदिह वा ऽअपि बह्वीव प्रतिगृह्णाति न हैव तद्गायत्र्या ऽएकञ्च न पदं प्रति ॥८॥ स य ऽइमाँस्त्रीँल्लोकान्पूर्णान्प्रतिगृह्णी-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यात्। सोऽस्याऽएतत्प्रथमम्पदमाप्नुयादथ यावतीयं त्रयी विद्या यस्तावत्प्रतिगृह्णीयात्सोऽस्या ऽएतद्द्वितीयम्पदमाप्नुयादथ यावदिदं प्राणि यस्तावत्प्रातगृह्णीयात्सोऽस्या ऽएतत्तृतीयम्पदमाप्नुयादथास्याऽएतदेव तुरीयं दर्शतं पदं परोरजा ऽ ऽएष तपति नैव केन चनाप्यं कुत ऽउ एतावत्प्रतिगृह्णीयात् ॥ ९ ॥

तस्या उपस्थानम् '--( उत्थाय )--गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे। नमस्ते तुरीयाय दर्शतायै पदाय परोरजसे सावदोमाप्रापदिति। यं द्विष्यादसावस्मै कामो मा समर्द्धीति वा न हैवास्मै स कामꣳ समृध्यते यस्मा ऽएवमुपतिष्ठतेऽहमदꣳप्रापमिति वा ॥ १० ॥ 'एतद्धवै तज्जनको वैदेहो बुडिलमाश्वतराश्विमुवाच--यन्नु होतद्गायत्री विदुब्रुथाऽअथ कथङ्ग हस्तीभूतो वहसीति मुखङ्गहुवस्याꣳ सम्राण्ण द्विदाश्वकेति होवाच ॥ ११ ॥ तस्याऽअग्निरेव मुखम्। यदि ह वा अपि बह्वीवाग्नावभ्यादधति सर्वमेव तत्स दहत्येवङ्ग हैवैवं विद्यद्यपि बह्वीव पापं करोति सर्वमेव तत्संसाय शुद्धꣳपूतोऽजरोऽमृतꣳसम्भवति ॥ १२ ॥ श्वेतकेतुर्ह वाऽआरुणेयꣳ ॥ ब्राह्मणम् ॥ ( श० प० ब्रा० १४ । ८ । १५ ) प्रदक्षिणीकृत्य नमस्कृत्योपविशेत् ॥ इति ॥ पाण्योर्गृहीतकुशानां कुशपवित्रयोश्च पूर्वस्यां त्यागः कर्तव्यः ॥ अर्पणम्---अनेन यथाशक्त्या कृतेन सूर्योपस्थानकर्मणा भगवान् सविता सूर्यनारायणः प्रीयतां न मम ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ इति सूर्योपस्थानपद्धतिः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**अथ ब्रह्मयज्ञः**—सूर्योपस्थानानन्तरं प्रदक्षिणीकृत्य नमस्कृत्योपविशेत् । दर्भैर्वृपविश्य दर्भपाणिर्भूत्वा स्वाध्यायं च यथाशक्त्या स्ववेदमारभ्य पठेत् । तत्रादौ आचम्य प्राणानायम्य ॥ कुशपवित्रधारणम्—**ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः[1] ÷ प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ÷ । ( वा० सं १।१२ । ) तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् । ( वा० सं० ४।४ )**

अथ 'सङ्कल्पः'—ॐ तत्सत् अद्य पूर्वोच्चारितगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं यथाशक्ति ब्रह्मयज्ञेनाऽहं यक्ष्ये । अथातो ब्रह्मयज्ञं व्याख्यास्यामः । द्वितीयवारं सङ्कल्पः—इषेत्वेत्यादिषु मन्त्रेषु खं ब्रह्मान्तेषु दशप्रणवसहितेषु याः क्रियास्तत्र विधस्वानृषिः, प्रजापतिर्देवता, सर्वाणि छन्दाꣳसि, सर्वाणि सामानि, प्रतिलिङ्गोक्ता देवता, ब्रह्मयज्ञे विनियोगः ॥ ब्रह्मयज्ञारम्भे यथाविधि स्नात्वा छन्दःपुरुष ॐ शरीरं न्यसेत् । तिर्यग्विलश्चमस ऽऊर्ध्वबुध्नःछन्दःपुरुषस्य च ॥ न्यासाः—ॐ गौतमभरद्वाजाभ्यां नमः—नेत्रयोः । ॐ विश्वामित्रजमदग्निभ्यां नमः—श्रोतयोः । ॐ वसिष्ठकस्यपाभ्यां नमः—नासिकयोः । ॐ अत्रये नमः—वाचि । ॐ गायत्र्यग्निभ्यां नमः—शिरसि । ॐ उष्णिक्सवितृभ्यां नमः—ग्रीवायाम् । ॐ बृहतीबृहस्पतिभ्यां नमः—अंनूके[2] । ॐ बृहद्रथन्तरयावापृथिवीभ्यां नमः—बाह्वोः । ॐ त्रिष्टुविन्द्राभ्यां नमः—नाभौ । ॐ जगत्यादित्याभ्यां नमः—श्रोण्योः । ॐ अतिच्छन्दाप्रजापतिभ्यां नमः—लिंगे । ॐ यज्ञा यज्ञियवैश्वानराभ्यां नमः—गुदे । ॐ अनुष्टुब्विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः—ऊर्वोः । ॐ पंक्तिमरुद्भ्यो नमः—जान्वोः । ॐ द्विपदाविष्णुभ्यां नमः—पादयोः । ॐ विच्छन्दावायुभ्यां नमः—नासापुटस्थप्राणेषु । ॐ न्यूनाक्षरच्छन्दोभ्यो नमः—

---

१ आचमनप्राणायामयोर्विधिस्मृतः प्राक् । २ इत्येताभ्यामन्त्राभ्यां दक्षिणानामिकायां शपवित्रं धृत्वा वामहस्ते कुशान् गृह्णीयात् । अमूकः पृष्ठवंश इत्यर्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सर्वाङ्गेषु ॥ एवमेङ्गानि योजयित्वा वेदमयः सम्पद्यते। न कुतश्चिद्भयं विन्दते। शापानुग्रहसामर्थ्यं ब्राह्मं तेजश्च वर्द्धते। स्वर्गलोकं परं साधनम्। धर्मार्थकाममोक्षस्य च। तस्य दारिद्र्यदुःखशोकरोगभयं न भवति। ऋषिदेवता-छन्दाङ्गि विदित्वा ऋङ्मयो यजुर्मयः साममथोऽथर्वमयो-ऽमृतमयो विष्णुरिदं कात्यायनस्य च ॐ भूर्भुवꣳ स्वः ÷ तत्सवितु० ॥ (वा सं ३६। ३) ॐ इषेत्वोर्जे त्वा वायवे-स्थ देवोवः ÷ सविता प्रार्प्पयतुश्रेष्ठतमाय कर्म्मणऽआ-प्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवाऽअय-क्ष्मा मावस्तेनऽईशत माघशꣳ सो ध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौ स्यात ब्बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि। (वा० सं० १।१) वसोःऽपु० विम्रम् ॥ हिरण्मयेन पात्रेण। सत्यस्याऽपिहितम्मुखम्। योसावादित्ये पुरुषꣳ सोसावहम्। (वा० सं० ४०। १७) ॐ ३ म्। खम्ब्रह्म। व्रतमुपैष्यन्नन्तरेणाहवनीयश्च गार्हप-त्यश्च प्राङ्क्तिष्ठन्नपऽउपस्पृशति तद्यदपऽउपस्पृशत्यमेध्यो वै पुरुषो यदनृतम्वदति तेन पूतिरन्तरतो मेध्यावाऽआपो मेध्यो भूत्वा व्रतमुपायानीति पवित्रं वाऽआपःपवित्रपूतो व्रत-मुपायानीति तस्माद्वाऽअपऽउपस्पृशति ॥१॥ सोग्निमेवाभी-क्षमाणो व्रतमुपैति ॥ (श० ब्रा० १। १। १। १) ॐ पूर्ण-मदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमे-वावशिष्यते। ॐ खम्ब्रह्म। खं पुराणम् ॐ. वायुर्वै क्षमिति हस्माह कौरव्यायणीपुत्रो वेदोयं ब्राह्मणा विदुर्वेदेन न यद्वेदि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्व्यम् ( श ब्रा० १४ । ८ । १ ) ॐ प्राश्नीपुत्रादासुरिवा-सिनꣳ प्राश्नीपुत्र ऽआसुरायणादासुरायणऽआसुरेरासुर्य्यज्ञ-वल्क्याद्याज्ञवल्क्यऽउद्दालकादुद्दालकोऽरुणादरुणऽ उपवेशेरु-पवेशिःकुश्रेरꣳ कुश्रिर्वाजश्रवसो वाजश्रवा जिह्वावतो बाध्यो-गाज्जिह्वावान् बाध्योगोसितादार्षगणादुसितो वार्षगणो हरि-तात् कश्यपाद्धरितꣳ कश्यपꣳ शिल्पात्कश्यपाच्छिल्पꣳ कश्यपꣳ कश्यपान्नैध्रुवेꣳकश्यपो नैध्रुविर्वर्त्राचो वाग्म्भिण्या-ऽअम्भिण्यादित्यादादित्यानीमानि शुक्लानि यजूꣳषि वाजस-नेयेन याज्ञवल्क्येनाख्यायन्ते ॥ १ ॥ ( श. ब्रा. १४ । ९ । ४ । ३३ ) ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥ २ ॥ ॐ अग्नऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सत्सि बर्हिषि ॥ ३ ॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये । शं योरभिस्रवन्तु नः ॥ ४ ॥

' चतुर्वेदान्तरं अङ्गानि पठेत् '--अथानुवाकान्वक्ष्यामि । मण्डलं दक्षिण-मक्षि हृदयम् । अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि । अथातोऽधिकारः । फलयुक्तानि कर्माणि । अथातो गृह्यस्थालीपाकानां कर्म । वृद्धिरादैच् ॥ समाम्नायः समा-म्नातः । मयरसतजमनलगसंमितम् । पञ्चसंवत्सरमयं युगाध्यक्षम् । गौः ग्मा । अथातो धर्मजिज्ञासा । अथातो ब्रह्मजिज्ञासा । योगीश्वरं याज्ञवल्क्यम् नरायण नमस्कृत्य-इति विद्यातपोयोनिरयोनिर्विष्णुरीडितः । वाग्यज्ञेनार्चितो देवःप्रीयतां मे जनार्दनः ॥ एवं ब्रह्मयज्ञं विधाय पाण्योर्गृहीतकुशानां कुशपवित्रस्य च

---

१ इदमृग्वेदमुद्दिश्य, अन्यथा ' अङ्गिमीडे '-इत्येवं स्यात् । २ इदं सामवेद-मुद्दिश्य । ३ इदमथर्ववेदमुद्दिश्य निर्दिष्टं च ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



उत्तरस्यां त्यागं कुर्यात्। ' अर्पणम् '—अनेन ब्रह्मयज्ञाख्येन कर्मणा श्रीभगवान्परमेश्वरः प्रीयतां न मम ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ ' यस्य स्मृत्य० ' इति ब्रह्ममयः ॥

केचित्तु ब्रह्मयज्ञं तर्पणं चैकतंत्रेण कुर्वन्ति तत्र सङ्कल्पाऽर्पणे यथा—आचमनप्राणायामानन्तरं—**सङ्कल्पः**—अद्य पूर्वोच्चारित—एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं ब्रह्मयज्ञपूर्वकं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणमहं करिष्ये ॥ ' अर्पणम् '—अनेन ब्रह्मयज्ञपूर्वकं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणाख्येन कर्मणा देवादिस्वरूपो भगवान्परमेश्वरः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥

**देवर्षिपितृतर्षणम्, कात्यायनपरिशिष्टे सूत्रे**- ततस्तर्पयेद्ब्रह्माणं पूर्वं विष्णुं रुद्रं प्रजापतिं देवांश्छन्दाꣳसि वेदानृषीन्पुराणाचार्यान्गन्धर्वानितराचार्यान् संवत्सरं सावयवं देवीरप्सरसो देवानुगान्नागान्सागरान्पर्वतान्सरितो मनुष्यान्यक्षान् रक्षाꣳसि पिशाचान्सुपर्णान्भूतानि पशून्वनस्पतीनोषधीर्भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यतामित्योङ्कारपूर्वम्। ततो निवीती मनुष्यान्सनकꣳ सनन्दनꣳ सनातनं कपिलमासुरिं वोढुं पञ्चशिखम् ॥ ततोऽपसव्यं तिलमिश्रं कव्यबाडनलꣳ सोमं यममर्यमणमग्निष्वात्तान्सोमपो बर्हिषदो यमाँश्चैके ॥ यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च। वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च। औदुम्बराय दध्नाय नीलाय परमेष्ठिने। वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः ॥ इत्येकैकस्य तिलैर्मिश्रांस्त्रीस्त्रीन्दद्याज्जलाञ्जलीन्। यावज्जीवकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यतीति ॥ जीवत्पितृकोऽप्येतान्यांश्चेतरऽउदीरतामङ्गिरसऽआयन्तुनऽऊर्ज्जं वहन्तीः पितृभ्योयेचेह मधुवाताऽइति त्र्यचं जपन्प्रसिञ्चेत्तृप्यध्वमिति त्रिर्नमो वऽइत्युक्त्वा मातामहानां चैवं गुरुशिष्यर्त्विग्ज्ञातिबान्धवानतर्पिता देहाद्रुधिरं पिबन्ति वासो निष्पीडयाचम्य ॥ अद्दश्रमरयहꣳसऽइत्युपस्थाय प्रदक्षिणीकृत्य दिशश्च देवताश्च नमस्कृत्योपविश्य ब्रह्माग्निपृथिव्योषधीर्वाग्वाचस्पतिर्विष्णुर्महदद्भ्योऽपायतये वरुणाय ननऽइति संव्वर्चसेति मुखं विमृष्टे देवा गातुविहऽइति विसर्ज-



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



येत् ॥ कात्यायनत्रिकण्डिकासूत्रे हरिहरभाष्ये-ततः किं कुर्यादित्यत आह **सूत्रम्-' ततस्तर्पयेद्ब्रह्माणं पूर्वमित्यादि '। अस्यार्थः**—ततस्तर्पयेत्प्रीणयेत् । ब्रह्माणं कथं पूर्वमादौ केषां विष्णुमित्यादीनां भूतग्रामान्तानां देवतानाम् । अत्र तर्पयेद्ब्रह्माणमिति तर्पणक्रियायाः कर्मभूतान्ब्रह्मादीनुद्देश्यत्वेन द्वितीययाऽभिधाय भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यतामिति प्रथमया प्रयोगमाचार्यो दर्शयति । ततश्च ब्रह्मा तृप्यतामित्येवं तर्पणप्रयोगः-**सूत्रम् ' ॐ कारपूर्वमिति ' व्याख्या**—ॐकारपूर्वं यथा स्यात्तथा ब्रह्मादीन्देवांस्तर्पयेत् । **सूत्रम्-' ततो निवीती मनुष्यान् '। अस्यार्थः**—ततो देवतर्पणानन्तरं ' निवीती ' कण्ठसंयुक्तब्रह्मसूत्रः सन् मनुष्यान्दिव्यान्मानवांस्तर्पये दिति पूर्वोक्तेनाख्यातेनानुषङ्गः । के ते मनुष्या इत्यपेक्षायामाह । सनकं चेत्यादिना श्लोकेन सप्त । **सूत्रम्-' ततोऽपसव्यं तिलमिश्रम् '। अस्यार्थः**—ततो मनुष्यतर्पणानन्तरमपसव्यं प्राचीनावीति भूत्वा तिलमिश्रं तिलैः संयुक्तं जलं गृहीत्वा तर्पयेदिति सम्बन्धः । कास्तर्पयेदित्यत आह । कव्यवाडनलइत्यादिना बर्हिषद इत्यन्तेत सूत्रेण पठितान् । तत्र कव्यं हविर्वहतीति कव्यवाट् । अनलोऽग्निः । कव्यवाट् चासावनलश्चेति कव्यवाडनलस्तम् । अत्र केचित्कव्यवाहम् अनलं चेति द्वौ देवौ मन्यन्ते । 'अनलोऽग्नौ नले राज्ञि पितृदेवे कपीश्वरे' इति विश्वप्रकाशदर्शनात्, तदयुक्तम् । 'हव्यवाहनो वै देवानां, कव्यवाहनः—पितृणाम् ' इति श्रुतेः काव्यवाड्गुणविशिष्टोऽनलः पितृगणान्तर्गत इति कव्यवाडनल एकैव देवता । **सूत्रम्-'यमांश्चैके '। अस्यार्थः**—एके आचार्याः यमांश्च तर्पयेद्वित्याहुः । तद्यथा—यमाय धर्मराजायेत्येवमादिनोक्तम् । पितृतर्पणाञ्जलिसंख्यामाह । **सूत्रम्—एकैकस्य तिलैर्मिश्रांस्त्रींस्त्रीन्दद्याज्जलाञ्जलीन् । यावज्जीवकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति '। अस्यार्थः**—एकैकस्य प्रत्येकं कव्यवाडनलादेस्तिलैः कृष्णौर्मिश्रासंयुक्तांस्त्रींस्त्रीन्त्रित्वसंख्योपेतान् जलाञ्जलीञ्जलेन पूर्णा अञ्जलयो जलाञ्जलयस्तान् । अस्य तर्पणस्य नित्यत्वेप्यानुषङ्गिकं फलमाह ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यावज्जीवकृतं जन्मत आरभ्य यावत्तर्पणदिनं कृतमाचरितं पापं अशुभं कर्म तत्क्षणादेव तर्पणसमात्यनन्तरमेव नश्यति क्षीयते। **सूत्रम्—'जीवत्पितृकोऽप्येतानन्यांश्चेतरः'**। **अस्यार्थः**—जीवन् विद्यमानः पिता जनको यस्य सोऽपि एतान्पूर्वोक्ता'न्ब्रह्मादीश्चित्रगुप्तान्तांस्तर्पयेदिति गतेन सम्बन्धः। अत्र जीवत्पितृकोऽप्येतानिति वदता सूत्रकारेणैतच्छन्देन ब्रह्मादि चित्रगुप्तान्ताः परिसंख्याता स्तानेव जीवत्पितृक एतानेव तर्पयेत्, नात्वन्यान् पितृव्यमातृमातामहादीन्। एवमर्थेऽपि। अन्यांश्चेतर इति प्रमीतपितृकस्यैवान्यतरविधानात्। यत्तु स्मृत्यन्तरम्, 'येभ्य एव पिता दद्यात्तेभ्यो दद्यात्स्वयं सुतः इति तत् पतितसंन्यासिजीवत्पितृकविषयम्। ब्राह्मणादिषु विशेषस्मरणात्। इतरो जीवत्पितृकादन्यः मृतपितृकः अन्यानेतेभ्योऽपरान्पित्रादीन्नींन्नींश्चकारादेतान्ब्रह्मादींश्चित्रगुप्तान्तांस्तर्पयेदिति सम्बन्धः। तर्पणवाक्यानि तत्प्रयोगो लिखितानि। ततो मृतपितृपितामहप्रपितामहांश्च तर्पयित्वा प्रसेकाख्यं कर्म कथं कुर्यादित्याह। **सूत्रम्—'उदीरतामङ्गिरस-ऽआयन्तुनऽऊर्ज्जं वहन्तीः पितृभ्यो येचेह मधुवाताऽइति ऋचं जपन् प्रसिञ्चेत्'**। **अस्यार्थः**—उदीरतामित्यादिप्रतीकोक्ताः षड्ऋचः मधुवाता इति ऋच एवं नवर्चो जपन् उपांशु स्वरेण पठन्प्रसिञ्चेत्। अञ्जलिकृता अपः प्रसिञ्चेत्। पितृतीर्थेन तर्पणजलाधिकरणे प्रक्षिपेत्। तृप्यध्वमिति त्रिः। तथा तृप्यध्वमितिं प्रसेकमुक्त्वा त्रि प्रसिञ्चेत्। अत्र केचिदुदीरतामित्यामित्यादिकानामृचां पित्रादितर्पणे जलदानकरणत्वं मन्यन्ते, तदसाम्प्रतम्। सूत्रार्थपर्यालोचनेन करणतयाऽप्रतीतेः। कथं ! जपन्प्रसिञ्चेदित्यत्र जपन्निति शतृप्रत्ययेन मन्त्रं जपता सता सततं जलप्रसेकः कार्य इति हि सूत्रात्प्रतीयते तोयकरणत्वे तु मन्त्रान्तैः कर्मान्तः सन्निपात्य इति परिभाषया मन्त्रे समाप्ते अञ्जलिर्देयः। तथा सति जपशब्दस्य शतृप्रत्ययस्य चाऽऽनर्थक्यप्रसङ्गः। प्रसेकशब्दस्य दानार्थताकल्पना च। तस्मात्प्रसेकाख्यमिदं कर्मान्तरम् तथा च **योगियाज्ञवल्क्यः**। **पितॄन्ध्यायन्प्रसि-**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**श्वेद्वै जपन्मन्त्रा न्यथाक्रमम्' इति** । तूष्णीं मन्त्रादीनां प्रसेकनिगमनम् । **सूत्रम्—'नमो व इत्युक्त्वा मातामहानां चैवं गुरु शिष्यर्त्विग्ज्ञातिबान्धवान्'** । **अस्यार्थः**—नमो वः पितरो रसायेत्यादीन्यष्ट यजूंष्युक्त्वा पठित्वा मातामहानां मातुः पितृपितामहप्रपितामहानां च एवमेकैकस्य तिलमिश्राञ्जलित्रयेण तर्पणं कृत्वा । गुर्वाचार्यादयोऽपि एकैकाञ्जलिना तर्प्याः । अत्र गुरुं मन्त्रोपदेष्टारमाचार्यमुपनयनपूर्वकं वेदाध्यापकमित्यर्थः । शिष्यं विद्यार्थिनं गुरुकुलवासिनम् । ऋत्विजो याजकान् । ज्ञातीन् । पितृव्यभ्रात्रादिसपिण्डान्सगोत्रान् । बान्धवान् मातुलेयपैतृष्वसेय मातृष्वसेयादींस्तर्पयेदित्यनुवर्तते । **सूत्रम्—'अतर्पिता देहादुधिरं पिबन्ति ।' अस्यार्थः**—एते पूर्वोक्ता ब्रह्मादयोऽतार्पिताः सन्तो देहात् अतर्पयितुः शरीरादुधिरं पिबन्ति । तर्पणस्याकरणप्रत्यवायाद्देहरुधिरशोषो भवतीत्यर्थः । एतदनिष्टापत्तिवचनं तर्पणस्यावश्यकरणीयत्वज्ञापनार्थम् । **सूत्रम्—'वासो निष्पीढचाचम्य'** । **अस्यार्थः**—एवं तर्पणं विधाय तदन्ते स्थले वासो वस्त्रं भूमौ निष्पीडय पीडयित्वा पूर्ववदाचामेत् । "निष्पीडयति यः पूर्वं स्नानवस्त्रमतर्पिताः । निराशाः पितरो यान्ति शापं दत्त्वा सुदारुणम् ॥ द्वादश्यां पञ्चदश्यां च सङ्क्रान्तौ श्राद्धवासरे । वस्त्रं निष्पीडयेन्नैव न च क्षारेण योजयेत् ॥ एतच्च तर्पणं प्रातःस्नानानन्तरं प्रातः कार्यम् ॥ मध्याह्ने स्नानं न कृतं चेत्तदाऽपराह्णादिषु स्नानं कृत्वा कुर्यात् पूर्वाह्णो वै देवानां मध्यन्दिनो मनुष्याणामपराह्णः पितृणामिति त्रिस्तर्पणव्यतिरिक्तविषया । प्रातश्चेत्तर्पणं कृतं तर्हि मध्याह्नादिषु न कर्त्तव्यमेव ॥ स्नानाङ्गतर्पणं वैधस्नानन्तरं कार्यम् ॥

**तर्पणे उपवीतधारणप्रकारः' औशनससंस्मृतौ**—उपवीतं वामबाहुं सव्यं बाहुसमन्वितम् । **ऊपवीतं** भवेन्नित्यं **निवीतं** कर्णलम्बनम् ॥ सव्यबाहुं समुद्धृत्य दक्षिणेन धृता द्विजाः । **प्राचीनावीत**मित्युक्तं पित्र्ये कर्मणि धारयेत् ॥ **उपवीती** भवेन्नित्यं विधिरेष सनातनः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**तर्पणादौ पितॄणामनुक्रम सङ्ग्रहे**--ताताम्बात्रितयं सपत्नजननी मातामहादित्रयं सस्त्रि श्वीतनयादि तातजननीस्वभातरः सस्त्रियः । तातम्बाऽऽत्मभगिन्यपत्यधवयुग्जायपिता सद्गुरुः शिष्यास्ताः पितरो महालयविधौ तीर्थे तथा तर्पणे ॥ इति बोपदेवः ।

**सप्तगोत्राणि, स्मृत्यन्तरे**--पितुर्मातुश्च भार्याया भगिन्या दुहितुस्तथा । पितृष्वसामातृष्वस्रोर्गोत्राणां सप्तकं स्मृतम् ॥

**तर्पणे पात्राणि, पितामहः**---हैमं रौप्यमयं पात्रं ताम्रकांस्यसमुद्भवम् । वितॄणां तर्पणे पात्रं मृन्मयं तु परित्यजेत् ॥ **अङ्गिराः**—मार्जनं तर्पणं श्राद्धं न कुर्याद्वारारिधारया ॥ **मरीचिः**—सौवर्णेन तु पात्रेण ताम्ररूप्यमयेन वा । औदुम्बरेण खड्गेन पितॄणां दत्तभक्षयत् ॥ विना रूप्यसुवर्णेन विना ताम्रमयेन वा । विना तिलैश्चदर्भैश्च पितॄणां नोपतिष्ठते॥यावद्भिस्तर्पयेद्वान्सतिलाद्भिः पितॄंस्तथा ॥ **हारीतः**—वसित्वा वसनं शुष्कं स्थले विस्तीर्णबर्षि । विधिज्ञस्तर्पणं कुर्यान्न पात्रेषु कदाचन ॥ पात्राद्वा जलमादाय शुभ पात्रान्तरे क्षिपेत् । जलपूर्णेऽथवा गर्ते न स्थले तु विबर्हिषि ॥ **शङ्खः**—उदके नोदकं दद्यात्पितृभ्यश्च कदाचन । उत्तीर्य च शुचौ देशे कुर्यादुदकर्तणम् ॥

**तर्पणे स्थलम्, योगियाज्ञवल्क्यः**—यथा शुचिस्थलं वा स्यादुदके देवताः पितॄन् । तर्पयेच्च यथाकाममप्सु सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥

**तर्पणे तिलग्रहणावश्यकता, स्नानसूत्रभाष्ये**—कंठा काण्वाश्च जाबाला ये च वाचसनेयिनः । निषिद्धेऽपि दिने कुर्युस्तर्पणं तिलमिश्रितम् ॥ **कात्यायनः**—उपरागे ( ग्रहणे ) पितृश्राद्धे पातेऽमायां च संक्रमे । निषेधेऽप्येह सर्वत्र तिलैस्तर्पणमाचरेत् ॥ **गर्गः**—कृष्णे भाद्रपदे मासि श्राद्धं प्रति दिनं भवेत् । पितॄणां प्रत्यहं कार्यं निषिद्धाहेऽपि तर्पणम् ॥ **पृथ्वीचन्द्रोदये**—तीर्थे तिथिविशेषे च गङ्गायां प्रेतपक्षके । निषिद्धेऽपि दिने कुर्यात्तर्पणं तिलमिश्रितम् ॥ **वायुपुराणे**---तिलदर्भैस्तु संयुक्तं श्रद्धया यत्प्रदीयते ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तत्सर्वममृतं भूत्वा पितॄणामुपतिष्ठते ॥ **याज्ञवल्क्यः**—तिलानामप्यभावे तु सुवर्णरजतान्वितम्। तदभावे निषिञ्चेत्तु दर्भैस्तोयैर्न चान्यथा ॥ यद्युद्धृतं निषिञ्चेत्तु तिलान्संमिश्रयेज्जले। अतोऽन्यथा तु सव्येन तिला ग्राह्या विचक्षणैः॥ शुक्लैस्तु तर्पयेद्देवान्मनुष्यान्छबलैस्तिलैः। पितॄंस्तु तर्पयेत्कृष्णैस्तर्पणे सर्वदा द्विजः ॥

**तर्पणे तिलनिषेधः, मरीचिः**—सप्तम्यां भानुवारे च गृहे जन्मदिने तथा। भृत्यपुत्रकलत्रार्थी न कुर्यात्तिलतर्पणम् ॥ **संग्रहे**—नन्दायां भार्गवदिने कृत्तिकासु मघासु च। भरण्यां भानुवारे च गजच्छायाह्वये तथा। तर्पणं नैव कुर्वीत तिलमिश्रं कदाचनं। **बौधायनः**—विवाहे चोपनयने चौले सति यथाक्रमम्। वर्षमर्धं तदर्धं च नेत्येके निलतर्पणम् ॥ **वह्निपुराणे**—दर्शश्राद्धं गयाश्राद्धं तिलैस्तर्पणमेव च। न जीवत्पितृको भूप कुर्यात्कृत्वाऽधमाप्नुयात् ॥

**वस्त्रनिष्पीडनम्. याज्ञवल्क्यः**—वस्त्रनिष्पीडितं तोयं स्नातस्योच्छिष्टभागिनः। भागधेयं श्रुतिः प्राह तस्मान्निष्पीडयेत् स्थले ॥ **वृद्धयोगी**-यावद्देवानृषींश्चैव पितॄश्चापि न तर्पयेत् ॥ तावन्न पीडयेद्वस्त्रं येन स्नातो भवेन्नरः ॥ **स्मृत्यन्तरेः**—वस्त्रं चतुर्गुणीकृत्य पीडयेच्च जलाद्बहिः। वामप्रकोष्ठे निक्षिप्य द्विराचम्य शुचिर्भवेत् ॥

**तर्पणप्रकारः, स्मृत्यन्तरे**—सम्बन्धनामगोत्रेण स्वधान्ते च नमो नमः। वस्वाद्विरूपं सङ्कीर्त्य तर्पयेत्पितृपूर्वकम् ॥ **वसिष्ठः**--सम्बन्धमनुकीर्त्यैव नाम गोत्रमनन्तरम्। वस्वादिरूपं सङ्कीर्त्य स्वधाकारेण तर्पयेत् ॥ **बौधायनः—शर्मान्तं** ब्राह्मणस्योक्तं **वर्मान्तं** क्षत्रियस्य तु। **गुप्तान्तं** चैव वैश्यस्य **दासान्तं** शूद्रजन्मनः ॥ चतुर्णामपि वर्णानां गोत्रत्वे पितृगोत्रता। पितृगोत्रं कुमारीणामूढानां भर्तृगोत्रता ॥ **याज्ञवल्क्यः**—सर्वेभ्यो जलं देयं नान्यवर्णेभ्य एव च ॥ **वृद्धयाज्ञवल्क्यः**—अन्वारब्धेन सव्येन पाणिना दक्षिणेन तु। सव्योत्तराभ्यां पाणिभ्यांमथवा तर्पणं भवेत् ॥ तृप्य-

---

१—गोभिलस्मृतौ स्त्रीणां दान्तं कथितमस्ति।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तामिति वक्तव्यं नाम्नां तु प्रणवादिना। आवाह्यपूर्वन्मन्त्रैरास्तीर्य च कुशांश्च तान्। सत्यजानुं तथाऽऽस्थाप्य पाणिभ्यां दक्षिणामुखः। तल्लिङ्गैस्तर्पयेन्मन्त्रैः सर्वान्पितृगणांस्तथा॥

**तर्पणेऽञ्जलिदानम्, व्यासः**—एकैकमञ्जलिं देवा द्वौ द्वौ तु सनकादयः। अर्हन्ति पितरस्त्रींस्त्रीन्स्त्रिय एकैकमञ्जलिम्॥ **साङ्ख्यायनः**—मातृमुख्यास्तु यारितस्तस्तासां त्रीस्त्रीन् जलाञ्जलीन्। सपत्न्याचार्यपत्नीनां द्वौ द्वौ दद्याज्जलाञ्जली॥

**'तर्पणेऽधिकारिणः' शातातपः**-तर्पणं तु शुचिः कुर्यात्प्रत्यह स्नातको द्विजः। देवेभ्यश्च ऋषिभ्यश्च पितृभ्यश्च यथाक्रमम्॥

**'तर्पणे दर्भाः' अग्निपुराणे**—प्रागग्रेषु सुरांस्तृप्येन्मनुष्यांश्चैव मध्यतः। पितॄंश्च दक्षिणाग्रेषु दद्यादिति जलाञ्जलीन्॥ **दक्षः**—प्रादेशमात्रमुद्धृत्य सलिलं प्राङ्मुखः सुरान्। उदङ् मनुष्यांस्तृप्येत्तु पितॄन्दक्षिणतस्तथा। अग्रैस्तु तर्पयेद्देवान्मनुष्यान्कुशमध्यतः॥ पितॄंस्तु कुशमूलाग्रैर्विधिः कौशो यथाक्रमम्॥ **एवं च**—गोशृङ्गमात्रमुद्धृत्य जलमध्ये जलं क्षिपेत्। इति यमवचनस्थगोशृङ्गपदं प्रादेशमात्रपरम्। **गोभिलः**—वहवृचा देवपित्रर्षीस्तर्पयन्ति द्वितीयया। कात्यायनानां सर्वत्र तर्पणे प्रथमा मता॥ कात्यायना इति वाजसनेयिब्राह्मणाः॥ **तर्पणविधौ**—ब्रह्माद्यानुपवीती तु देवतीर्थेन तर्पयेत्। निवीती कायतीर्थेन मनुष्यान्सनकादिकाम्॥ स्वाहाकारवषट्कारौ नमस्कारो दिवौकसाम्। स्वधाकारः पितॄणां तु हन्तेकारो नृणां मतः॥ स्वधाकारेण निर्वपेत्पित्र्यं बलिमतः सदो॥ **बृहत्पाराशरः**—देवेभ्यश्च नमः स्वाहा पितृभ्यश्च नमःस्वधा। मन्यन्ते कवयःकेचिदित्येवं तर्पणक्रमः **वाचस्पतिः**—

---

ॐ हन्तेति वा हन्तकारं मनुष्या इति श्रुतेः। यथा देवानामग्नमेधादियज्ञेषु स्वाहा- कारवषट्कारशब्दौ पितृणां स्वधाशब्दश्च प्रयुज्यते तथा मनुष्याणां हन्तकारशब्दो बोध्यः हन्तशब्दस्ययमर्थः-हन हिंसागत्योः ये ये धातवो गत्यर्थास्ते ते प्राप्त्यर्थाः। तेन हतिर्नाम प्राप्तिः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



निवीती हन्तकारेण मनुष्यांस्तर्पयेदथ । कुशस्य मध्यदेशेन नृतीर्थेन उदङ्मुखः ॥ **व्यासः**—पितृभ्यः प्रथमं दद्यात्ततो मातृभ्य एव च । ततो मातामहानां च तत्पत्नीनां ततो जलम् ॥ अन्तर्मातामहान्कृत्वा मातॄणां यः प्रयच्छति ॥ **मरीचिः**—मुक्तहस्तं च दातव्यं न मुद्रां दर्शयेत्क्वचित् । वामहस्ते तिला ग्राह्या मुक्तहस्तं च दक्षिणम् ॥

**'तर्पणे निषिद्धं जलम्' वायुपुराणे**—शूद्रोदकैर्न कुर्वीत तथा मेघाद्विनिःसृतैः । तिलदर्भैस्तु संयुक्तं श्रद्धया यत्प्रदीयते ॥ तत्सर्वममृतं भूत्वा पितॄणामुपतिष्ठते **ब्रह्माण्डपुराणे**—नित्यं नैमित्तिकं काम्यं त्रिविधं स्नानमिष्यते । तर्पणं तु भवेत्तस्य अङ्गत्वेन व्यवस्थितम् ॥

**अथ देवर्षिमनुष्यपितॄणां तर्पणपद्धतिः**—आचम्य प्राणानायम्यै[1] ॥ **'कुशापवित्रधारणम्'**—**ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ( वा० सं० १ । १२ ) तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥ ( वा० सं० ४।४ ) 'अथ सङ्कल्पः'**—( तिथिर्विष्णुस्तथावारो नक्षत्रं विष्णुरेव च । योगश्च करणं चैव सर्वं विष्णुमयं जगत् ) ॥ ॐ विष्णवे नमः--अद्यपूर्वोच्चारित--एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं ॐ तत्सत्परमेश्वरप्रीत्यर्थं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणमहं करिष्ये ॥ ताम्रपात्रे रौप्यपात्रे वा श्वेतसुरभितकुसुमगन्धाक्षतादि जलं च पूरयित्वा पात्रं स्पृशन् वक्ष्यमाणं मन्त्रं पठेत्--**ॐ विश्वान्देवान् भवत्सु आवाहयिष्ये ॐ आवाहय ॥ ॐ विश्वेदेवासऽआगत शृणुतामऽइमꣳहवम् । एतम्बर्हिर्निषीदत ॥ ( वा० सं० ७ । ३४ ) विश्वेदे-**

---

१ आचमनप्राणायामयोर्विधास्तु देवार्चनपद्धतौ दर्शित एव ।२एताभ्यां मन्त्राभ्यां दक्षिणानामिकायां कुशपवित्रं धृत्वा कुशान् वामहस्ते दध्यात् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



देवाङ्शृणुतेमꣳहवम्मेयेऽअन्तरिक्षेऽयऽउपह्वयविष्ठ । येऽअग्नि जिह्वा उतवा यजत्राऽआसद्यास्मिन्नबार्हिषि मादयद्धम् ॥ ( वा० सं० ३३ । ५३ ) अथादौ देवान् साञ्जलि आवाहयेत्—

आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः । ये तर्पणेऽत्र विहिताः सावधाना भवन्तु ते ॥ अथ जलमर्घपात्रे गृहीत्वा प्राङ्मुखान् कुशान् निधाय सव्य एव देवतीर्थेन वक्ष्यमाणैर्मन्त्रैर्देवांनृषीश्च तर्पयेत् । ॐ ब्रह्मा तृप्यताम् । ॐ विष्णुस्तृप्यताम् । ॐ रुद्रस्तृप्यताम् । ॐ प्रजापतिस्तृप्यतांम् । ॐ देवास्तृप्यन्ताम् । ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम् । ॐ वेदास्तृप्यन्ताम् । ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम् । ॐ पुराणाचार्यास्तृ० । ॐ गन्धर्वास्तृ० । ॐ इतराचार्यास्तृ० । ॐ संवत्सरः सावयवस्तृ० । ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम् । ॐअप्सरसस्तृप्यन्ताम् । ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम् । ॐ नागास्तृप्यन्ताम् । ॐ सागरास्तृप्यन्ताम् । ॐ पर्वतारतृप्यन्ताम् । ॐ सरितस्तृप्यन्ताम् । ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम् । ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम् । ॐ रक्षांसि स्तृप्यन्ताम् । ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम् । ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम् । ॐ भूतानि तृप्यन्ताम् । ॐ पशवस्तृप्यन्ताम् । ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् । ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम् । ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यन्ताम् ॥ ( ततः-' आगच्छन्तु महाभागा ऋषयो गृह्यतां जलम् ' इति-ऋषीनावाह्य । ॐ मरीचिस्तृप्यन्ताम् । ॐ अत्रिस्तृ० । अङ्गिस्तृ० । ॐ पुलस्त्यस्तृ० । ॐ पुलहस्तृ० । ॐ क्रतुस्तृ० । ॐ प्रचेतास्तृ० । ॐ वसिष्ठस्तृ० । ॐ भृगुस्तृ० । ॐ नारदस्तृप्यताम् ) । ततो निवीती उदङ्मुख उत्तराग्रेण कुशेन प्रत्येकं कार्यतीर्थेन द्विवारमञ्जलिना दिव्यमनुष्यांस्तर्पयेत् । तत्रादौ साञ्जलि " सनकाद्या महाभागा आयान्तु दिव्य मानवाः । गृह्णतां दीप्यमानं मे जलं तेन च तृप्यताम् ॥ " इति सम्प्रार्थ्य जले यवान् प्रक्षिप्य वक्ष्यमाणैर्मन्त्रैरतर्पयेत् ।ॐ सनकस्तृप्यताम् । १ । ॐसन० । २ । ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् । १ । ॐ सनन्दन० । २ । ॐ सनातनस्तृप्यताम् । १ । ॐ सना० । २ । ॐ कपिलस्तृप्यताम् । १ । ॐ कपिल० । २ । ॐ आसुरिस्तृप्यताम् । १ । ॐ आसु० । २ । ॐ वोढस्तृप्यताम् । १ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ॐ वोदु० । २ । ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् । १ । ॐ पञ्च० । २ । इति तर्पयित्वा साञ्जलि-'नमो वो दिव्यपितरस्तृप्यतांगृह्यतां जलम् ।' इत्यावाह्यापसव्यः सन् दक्षिणाभुखः पितृतीर्थेन मोटकरूपकुशत्रयेण सकृष्णतिलेन सगन्धेन जलेन प्रत्येकं त्रिवारं दिव्यपितॄस्तर्पयेत् । **तत्र मन्त्रा यथा**—ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् । १ । ॐ कव्यवा० । २ । ॐ कव्यवा० । ३ । ॐ सोमस्तृप्यताम् । १ । ॐ सोम० । २ । ॐ सोम० ३ । ॐ यमस्तृप्यताम् । १ । ॐ यम० । २ । ॐ यम० । ३ । ॐ अर्यमा तृप्यताम् ।१। ॐ अर्यमा० । २ । ॐ अर्यमा० । ३ ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् । १ । ॐ अग्निष्वा० । २ । ॐ अग्निष्वा० । ३ । ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् । १ । ॐ सोमपाः पि० । २ । ॐ सोमपाः पि० । ३ । ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् । १ । ॐ बर्हिषदः पि० । २ ।ॐ बर्हिषदः पि० ।३। इति तर्पयित्वा साञ्जलि-'चतुर्दश यमास्तोयं गृह्यतां तृप्यतां ततः । ' इति यमान् सम्प्रार्थ्य दिव्यपितृवत्तर्पयेत् । यथा—ॐ यमाय नमः । १ । ॐ यमा० । २ । ॐ यमा० । ३ । ॐ धर्मराजाय नमः । १ । ॐ धर्मरा० । २ । ॐ धर्मरा० । ३ । ॐ मृत्यवे नमः । १ । ॐ मृत्यवे० । २ । ॐ मृत्यवे० । ३ । ॐ अन्तकाय नमः । १ । ॐ अन्त० ।२। ॐ अन्त० । ३ । ॐ वैवस्वताय नमः । १ । ॐ वैव० । २ । ॐ वैव० । ३ । ॐ कालाय नमः । १ । ॐ काला० । २ । ॐ काला० । ३ । ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः । १ । ॐ सर्वभू० । २ । ॐ सर्वभू० । ३ । ॐ औदुम्बराय नमः । १ । ॐ औदु० । २ । ॐ औदु० । ३ । ॐ दध्नाय नमः । १ । ॐ दध्नाय० । २ । ॐ दध्नाय० । ३ । ॐ नीलाय नमः । १ । ॐ नीला० । २ । ॐ नीला० । ३ । ॐ परमेष्ठिने नमः । १ । ॐ परमे० । २ । ॐ परमे० । ३ । ॐ वृकोदराय नमः । १ । ॐ वृको० । २ । ॐ वृको० । ३ । ॐ चित्राय नमः । १ । ॐ चित्रा० । २ । ॐ चित्रा० ।३। ॐ चित्रगुप्ताय नमः ।१। ॐ चित्रगु० । २ । ॐ चित्रगु० । ३ । इति चतुर्दश यमांस्तर्पयित्वा स्वपितॄंस्तर्पयेत् । तत्रादौ साञ्जसि ॐ उशन्तस्त्वा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



निधीमह्युशन्तुऽंसामिधीमहि । उशन्नुशतऽआवह पितॄन्हविषेऽअत्तवे ॥ वा० सं० १९ । ७० ) ॥ ' आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्वबल्लिम् ।, इत्यावाह्य पूर्ववत् वक्ष्यमाणैर्मन्त्रैः स्वपितॄस्तर्पयेत् । अमुकगोत्रः अस्मत्पिता अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं जलं तस्मै स्वधा नमः । १ । इदं जलं तस्मै स्वधा । २ । इदं जलं तस्मै स्वधा नमः । ३ । अमुकगोत्रः अस्मत्पितामहःअमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ।१। इ० ।२। इ० । ३। अमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकशर्मा अदित्यरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अमुकगोत्रा अस्मन्माता अमुकनाम्नी वसुरूपा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः । १ । इ० २ । इ० । ३ । अमुकगोत्रा अस्मत्पितामही अमुकनाम्नी रुद्ररूपा तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अमुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामहीं अमुकनाम्नी अदित्यरूपा तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः ।१। इ० । २ । इ० । ३ । अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नमाता अमुकनाम्नी वसुरूपा तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः । १ । इ० । २ । इ० । ३ पश्चादेतान्मन्त्रान्पठेत्—ॐ उदीरतामवरऽउत्परासऽउन्मध्यमाऽपितरः सोम्यासः । असुं यऽईयुरवृका ऋतज्ञास्तेनोवन्तु पितरो हवेषु ॥ ( वा० सं० १९ । ४९ ) । अङ्गिरसो नऽपितरो नवग्वाऽअथर्वाणो भृगवःसोम्यासः।तेषां वयꣳ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम॥ (वा०सं० १९।५० ) आयन्तु नः पितरः सोम्यासोग्निष्वात्ताःपथिभिर्देवयानैः । अस्मिन्यज्ञे स्वधयामदन्तोधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥ ( वा० सं० १९।५८ ) ऊर्ज्जं वहन्तीरमृतं घृतम्पयः कीलालम्परिश्रुतम् स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



( वा० सं० २ । ३४ ) । पि॒तृब्भ्य॑ ÷ स्वधा॒यिब्भ्य॑÷स्व॒धा नम॑÷ पिताम॒हेब्भ्य॑ ÷ स्वधा॒यिब्भ्य॑ ÷ स्व॒धा नम॒÷प्प्रपि॑तामहेब्भ्यः स्वधा॒यिब्भ्य॑ ÷ स्व॒धा नम॑ ÷ ।अक्ष॑न्पि॒तरोमी॑मदन्त पि॒तरोती॑ तृपन्त पि॒त॑रः॒ पित॑र॒ः शुन्ध॑द्धम् ॥ ( वा० सं० १९ । ३६ ) । ये चे॒ह पि॒तरो॒ ये च॒ नेह याँश्चेवि॒द्म या ऽ ॥ उ॑च॒ न प्प्र॑वि॒द्म । त्वं वे॑त्थ॒ यति॒ ते जा॑तवेदः स्वधामि॑र्य्य॒ज्ञꣳ सुकृ॑तञ्जुषस्व ॥ ( वा० सं० १९ । ६७ ) । मधु॒वाता॑ऽऋताय॒ते मधु॑ क्षरन्ति॒ सिन्ध॑वः माद्धी॑र्न्नः स॒न्त्वोष॑धीः ॥ ( वा० सं० १३ । २७ ) । मधुनक्क्त॑मु॒तोषसो॒ मधु॑म॒त्पार्थि॑वुꣳ रज॑ ÷ । मधु॒ द्द्यौर॑स्तु नः पि॒ता ॥ ( वा० सं० १३।२८ ) । मधु॑मान्नो॒ वनस्प्पति॒र्म्म-धु॑मा ँ ॥ ऽअस्तु॒ सूर्य्य॑ ÷ । माध्वी॒र्गावो॑ भवन्तु नः ॥ ( वा० सं० १३।२९) । ॐ मधु । मधु । मधु । तृप्यध्वम् । तृप्यध्वम् । तृप्यध्वम् । ॐ नमो॑ वः पितरो॒ रसा॑य॒ नमो॑ वः पितर॒ः शोषा॑य॒ नमो॑ वः पितरो जी॒वाय॒ नमो॑ वः पितरः स्व॒धायै॒ नमो॑ वः पितरो घो॒राय॒ नमो॑ वः पितरो म॒न्न्यवे॒ नमो॑ वः पितर॒ः पित॑रो॒ नमो॑ वो गृ॒हान्न॑ ÷ पितरो दत्त स॒तो व॑ ÷ पितरो देष्म्मै॒तद्द्व॑ ÷ पितरो॒ वास॒ आध॑त्त ॥ ( वा० सं० २ । ३२ ) । आध॑त्त पितरो॒ गर्ब्भ॑ङ्कुमा॒रम्पुष्क॑रस्रजम् । यथे॒ह पुरु॒षोऽस॑त् ॥ ( वा० सं० २ । ३३ ) इति पठित्वा मातामहादींस्तर्पयेत् । अमुकगोत्रः अस्मन्मातामहः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अमुकगोत्रः अस्मत्प्रमातामहः अमुकशर्मा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रुद्ररूप स्तृप्यतामि० । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अमुकगोत्रः अस्मद्-वृद्धप्रमातामहः अमुकशर्मा आदित्यरूपस्तृप्यतामि० । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अथ मातामह्यादीरपि त्रिवारं तर्पयेत् । अमुकगोत्रा अस्मन्मातामही अमुकनाम्नी वसुरूपा तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अमुकगोत्रा अस्मत्प्रमातामही अमुकनाम्नी रुद्ररूपा तृप्यतामि० १ । इ० । २ । इ० । ३ । अमुकगोत्रा अस्मद्वृद्धप्रमातामही अमुकनाम्नी आदित्यरूपा तृप्यतामि० । १ । इ० । २ । इ० । ३ । 'पत्न्यादि'—अमुकगोत्रा अस्मत्पत्नी अमुकनाम्नी वसुरूपा तृप्यतासिदं जलं तस्यै स्वधा नमः । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अथ सुतादींस्त्रिवारं कृत्वा तर्पयेत् । अमुकगोत्रः अस्मत्सुतः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अथ पुत्रीमपि त्रिवारं तर्पयेत् । अमुकगोत्रा अस्मत्सुता अमुकनाम्नी वसुरूपा तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अथ पितृव्यादींस्त्रिवारं तर्पयेत् । अमुकगोत्रः अस्मत्पितृव्यः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अमुकगोत्रः अस्मन्मातुलः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामि० । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अमुकगोत्रः अस्मद्भ्राता अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामि० । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अमुकगोत्रः अस्मत्सापत्नभ्राता अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः । १ । इदं ज० । २ इदं ज० । ३ । अथ पितृष्वस्रादीनामज्ञलित्रयेण तर्पणं कुर्यात् । अमुकगोत्रा अस्मत्पितृभगिनी अमुकनाम्नी वसुरूपा तृप्यतामि० । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अमुकगोत्रा अस्मन्मातृभगिनी अमुकनाम्नी वसुरूपा तृप्यतामि० । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अमुकगोत्रा अस्मद्भगिनी अमुकनाम्नी वसुरूपा तृप्यतामि० । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नभगिनी अमुकनाम्नी वसुरूपा तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अथ श्वशुरादींस्त्रिस्तर्पयेत् । अमुकगोत्रः अस्मच्छ्वशुरः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामि० । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अमुकगोत्र अस्मद्गुरुः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामि० । १ । इ० २ । इ० । ३ । अमुकगोत्र अस्मच्छिष्यः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामि० । १ । इ० । २ । इ० । ४ । अमुकगोत्रः अस्मन्मित्रः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामि० । १ । इ० । २ । इ० । ३ । अमुकगोत्रः अस्मदासः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामि० । १ । इ० २ । इ० । ३ ॥

**अथ धौतं वस्त्रं** भूमौ वामभागे वक्ष्यमाणाञ्श्लोकान्पठित्वा निष्पीडयेत् । ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ॥ अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥ येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा ॥ ये के चास्मत्कुले जावा अपुत्रा गोत्रिणो मृताः । तेगृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥ ततः सव्येन शुद्धोदकेनाचम्य प्राणायामं च कृत्वाऽर्घेऽञ्जलौ वा साक्षातं सगन्धं कुसुमं जलं च गृहीत्वा तर्पितदेवर्षिमनुष्यपितृजलपात्रे ब्रह्मेत्यादीन् मन्त्रान् पठन् ब्रह्मादीन् प्रति अर्घ्यं दद्यात् । ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः । सबुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ (वा० सं० १३ । ३) ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः । ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥ (वा० सं० ५ । २५) ॥ ॐ विष्णवे नमः । ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवे नमः ॥ बाहुभ्यामुतते नमः ॥ (वा० सं० १६ । १) ॥ ॐ रुद्राय नमः । ॐ तत्सवितुः ॥ (वा० सं० ३ । ३५) ॥ ॐ सवित्रे नमः । मित्रस्य चर्षणीधृतो ऽवो देवस्य सानसि । द्युम्नञ्चित्रश्रवस्तमम् ॥ वा० सं०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



११।६२)॥ ॐ मित्राय नमः। ॐ इमम्म वरुण श्रुधी हव-मुद्द्या च मृडय। त्वाम॑व॒स्युराच॑के॥ (वा० सं० २१।१) ॐ वरुणाय नमः। सूर्यो॑पस्थानम्-ॐ अदृ॑श्रमस्य के॒तवो॒ विग्र॒श्मयो॒ जना॒ ५॥ ऽअनु॑। भ्राज॑न्तोऽअ॒ग्नयो॑ यथा। उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोसि॒ सूर्य्या॑य त्वा भ्रा॒जायै॒ष ते योनिः॒ सूर्य्या॑य त्वा भ्रा॒जाय॑। सूर्य्य॑ भ्राजिष्ठ॒ भ्राजि॑ष्ठ॒स्त्वन्दे॒वेष्व॑सि॒ भ्राजि॑ष्ठो॒हम्म॑नु॒ष्येषु भूयासम॥ (वा० सं० ८।४७)॥ ह॒ꣳसः शु॑चि॒षद्वसु॑रन्तरिक्ष॒सद्धोता॑ वेदि॒षदति॑थिर्दुरोण॒सत्। नृ॒षद्व॑र॒सदृ॑तराद्व्योम॒सद॒ब्जा गो॒जाऽऋ॑त॒जाऽअ॑द्रि॒जाऽऋ॒त-म्बृ॒हत्॥ (वा० सं० १०।२४)

दिग्देवतानां नमस्काराः—प्राच्यै--ॐ इन्द्राय नमः। आग्नेय्यै--ॐ अग्नये नमः। दक्षिणायै--ॐ यमाय नमः। नैर्ऋत्यै--ॐ निर्ऋतये नमः। पश्चिमायै--ॐ वरुणाय नमः। वायव्यै--ॐ वायवे नमः। उदीच्यै--ॐ सोमाय नमः। ईशान्यै--ॐ ईशानाय नमः। ऊर्ध्वायै-ब्रह्मणे नमः। अधस्तात्--ॐ विष्णवे नमः। अवाच्यै--ॐ अनन्ताय नमः। जलमध्यै--ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अग्नेय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ ओषधिभ्यो नमः। ॐ वाचे नमः। ॐ वाचस्पतये नमः। ॐ महद्भ्यो नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ विष्णवे नमः। अपाम्पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। मुखमार्जनम्—ॐ संव॒र्च्च॑सा॒ पय॑सा॒ सन्त॒नूभि॒रग॑न्महि॒ मन॑सा सꣳ शि॒वेन॑। त्वष्टा॑ सु॒दत्रो॒ विद॑धातु ग॒योऽनु॑मार्ष्टु॒तन्न्वो॒ य द्विलि॑ष्टम्॥ (वा० सं० ८।१४)॥ विसर्जनम्—ॐ देवा॑

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित। मनसस्पत इमन्देव यज्ञꣳ स्वाहा वातेधाꣳ ॥ ( वा० सं० ८ । २१ ) ॥ 'अपर्णम्'--अनेन यथाशक्ति देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् मम समस्तपितृस्वरूपो जनार्दनवासुदेवः प्रीयतां, न मम। ॐतत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु। श्रीगयागदाधरस्तृप्यतु ॐ विष्णवे नमः ( इति त्रिवारं पठेत् )। इति देवर्षिमनुष्यपितृर्पणपद्धतिः ॥

इत्यह्नश्चतुर्थभागे कर्त्तव्यनिर्देशः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



# अह्नः पञ्चमभागे कर्त्तव्यनिर्देशः ।

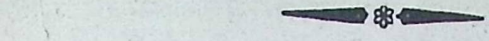

दक्षः-"पञ्चमे च तथा भागे संविभागो यथार्हतः।पितृदेवमनुष्याणां कीटानां चोपदिश्यते ॥ देवैश्चैव मनुष्यैश्च तिर्यग्भिश्चोपजीव्यते । गृहस्थः प्रत्यहं यस्मात्तस्माज्ज्येष्ठाश्रमी गृही । संविभागं ततः कृत्वा गृहस्थः शेषभुग्भवेत् ॥" इति ।

अथ श्राद्धकर्म्मावश्यकत्वम्, कात्यायनपरिशिष्टसूत्रे-अपरपक्षे श्राद्धं कुर्वीतोर्द्ध्वं चतुर्थ्या यदहः सम्पद्येत तदहर्ब्राह्मणानामन्त्र्य पूर्वेद्युर्वा स्नातकानेके यतीन् गृहस्थान् साधून् वा श्रोत्रियान्वृद्धाननद्यान्स्वकर्मस्थानभावेऽपि शिष्यान् स्वाचारान्द्विर्नग्नशुक्लविक्लिधश्यावदन्तविद्धाप्रजननव्याधितव्यङ्गिश्चित्रिकुष्ठिकुनखिवर्ज्यमनिन्द्येनामन्त्रितो नापक्रामेदामन्त्रितो वाऽन्यदन्नं न प्रतिगृह्णीयात्स्नाताञ्छुचीनाचान्तान्प्राङ्मुसानुपवेश्य दैवे युग्मानयुग्मान्यथाशक्ति पित्र्यऽ एकैकस्योदङ्मुखान्द्वौ वा दैवे त्रीन् पित्र्य एकैकमुभयत्र वा मातामहानामप्येवं तत्र वा वैश्वदेविक६ श्रद्धान्वितः श्राद्धं कुर्वीत ॥ ' शाकेनापि '—नापरपक्षमतिक्रामेन्मासि मासि वोऽशनमिति श्रुतेस्तदहः शुचिरक्रोधनोऽत्वरितोऽप्रमत्तः सत्यवादी स्यादध्वमैथुनश्रमस्वाध्यायान्वर्जयेदावाहनादि वाग्यत औपस्पर्शनादामन्त्रिताश्चैवम् ॥ १ ॥ ' दैवपूर्व६ श्राद्धम् ' पिण्डपितृयज्ञवदुपचारः पित्र्ये द्विगुणास्तु दर्भाः पवित्रपाणिर्दद्यादासीनः सर्वत्र प्रश्नेषु पंक्तिमूर्द्धन्यं पृच्छति सर्वान्वाऽऽसनेषु दर्भानास्तीर्य्य विश्वान्देवानावाहयिष्य इति पृच्छत्यावाहयेत्यनुज्ञातो विश्वेदेवासऽआगतेत्यनयाऽऽवाह्यावकीर्य्य विश्वेदेवाः शृणुतेजमिति जपित्वा पितृनावाहयिष्यऽ इति पृच्छत्यावाहयेत्यनुज्ञात उशन्तस्त्वेत्यनयाऽऽवाह्यावकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



र्य्यायन्तुनः इति जपित्वा यज्ञियवृक्षचमसेषु पवित्रान्तर्हितेष्वेकैकस्मिन्नपऽआसिञ्चति शनोदेवीरित्येकैकस्मिन्नेव तिलानावपति तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवे देवनिर्मितः। प्रत्नवद्भिः प्रत्तः स्वधया पितॄँल्लोकान्प्रीणाहि नः स्वाहेति सौवर्णराजतौदुम्बरखड्गमणिमयानां पात्राणामन्य तमे यानि वा विद्यन्ते पत्रपुटेष्वेकैकस्यैकैकेन ददाति सपवित्रेषु हस्तेषु या दिव्याऽआपः पयसा सम्बभूवुर्याऽआन्तरिक्षाऽउत पार्थिवीर्याः॥ हिरण्यवर्णा याज्ञियास्ता नऽआपः शिवा शिवतमाः शꣳस्योनाः सुहवा भवन्तित्यसावेष तेऽर्घऽइति प्रथमे पात्रे सꣳस्रवान्समवनीय पितृभ्यः स्थानमसीति न्युब्जं पात्रं निदधात्यत्र गन्धपुष्पधूपदीपवाससां च प्रदानम्॥ २॥ 'उद्धृत्य घृताक्तमन्नं पृच्छति'—अग्नौ करिष्यऽइति कुरुष्वेत्यनुज्ञातः पिण्डपितृयज्ञवद्धुत्वा हुतशेषं दत्त्वा पात्रमालभ्य जपति पृथिवी ते पात्रं द्यौष्पिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽअमृतेऽअमृतं जुहोमि स्वाहेति वैष्णव्यर्च्चा यजुषा वाङ्गुष्ठमन्नेऽवगाह्यापहताऽइति तिलान्प्रकीर्योष्णꣳ स्विष्टमन्नं दद्याच्छक्त्या वाऽश्नत्सु जपेत व्याहृतिपूर्वां गायत्रीꣳ सप्रण वाꣳ सकृत्त्रिर्वा राक्षोघ्नीः पित्र्यमंत्रान्पुरुषसूक्तमप्रातिरथमन्यानि च पवित्राणि तृप्तान् ज्ञात्वाऽन्नं प्रकीर्य सकृत्सकृदपो दत्त्वा पूर्ववद्गायत्रीं जपित्वा मधुमतीर्मधुमधुमध्विति च तृप्ताः स्थेति पृच्छति तृप्ताः स्मऽइत्यनुज्ञातः शेषमन्नमनुज्ञाप्य सर्वमन्नमेकतोद्धृत्योच्छिष्टसमीपे दर्भेषु त्रींस्त्रीन्पिण्डानवनेज्य दद्यादाचान्तेष्वित्येकऽ आचान्तेषूदकं पुष्पाण्यक्षतानक्षय्योदकं च दद्यादघोराः पितरः सन्तु सन्तित्युक्ते गोत्रं नो वर्द्धतां वर्धतामित्युक्ते दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च॥ श्रद्धा च नोमा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



व्यगमद्वहु देयं च नोस्त्विवत्याशिषः प्रतिगृह्य स्वधावाचनीयान्सपवित्रान्कुशानास्तीर्य स्वधां वाचयिष्यऽइति पृच्छति वाच्यतामित्यनुज्ञातः पितृभ्यः पितामहेभ्यः प्रपितामहेभ्यो मातामहेभ्यःप्रमातामहेभ्यो वृद्धप्रमातामहेभ्यश्च स्वधोच्यतामित्यस्तु स्वधेत्युच्यमाने स्वधाथाचनीयेष्वपो निषिञ्चत्यूर्ज्जमित्युत्तानं पात्रं कृत्वा यथाशक्ति दक्षिणां दद्याद्ब्राह्मणेभ्यो विश्वेदेवाः प्रीयन्तामिति दैवे वाचयित्वा वाजेवाजेवतेति विसृज्यामावाजरयेत्यनुव्रज्य प्रदक्षिणीकृत्य नमस्कृत्योपवेशयेत् ॥ ३ ॥ 'अथैकोद्दिष्टम्'--एकोर्घऽएकं पवित्रमेकः पिण्डो नावाहनं नाग्नौकरणं नात्र विश्वेदेवाः स्वदितमिति तृप्तिप्रश्नः सुस्वदितमितीतरे ब्रूयुरुपतिष्ठतामित्यक्षय्यस्थानेऽभिरम्यतामिति विसर्गोऽभिरताः स्मऽइतीतरे ॥ ४ ॥ ततः—'संवत्सरे पूर्णे'—त्रिपक्षे द्वादशाहे वा यदहर्वा वृद्धिरापद्येत चत्वारि पात्राणि सतिलगन्धोदकानि पूरयित्वा त्रीणि पितृणामेकं प्रेतस्य प्रेतपात्रं पितृपात्रेष्वासिञ्चति ये समानाऽइति द्वाभ्यामेतनैव पिण्डो व्याख्यातोऽत ऊर्ध्वꣳसंवत्सरे संवत्सरे प्रेतायाऽन्नं दद्याद्यस्मिन्नहनि प्रेतः स्यात् ॥ ५ ॥ आभ्युदयिके'—प्रदक्षिणार्थमुपचारः—पूर्वाह्णे पित्र्यमन्त्रवर्ज्यं जप ऋजवो दर्भा यवैस्तिलार्थः सम्पन्नमिति तृप्तिप्रश्नः सुसम्पन्नमितीतरे ब्रूयुर्दधिबदराक्षतामिश्राः पिण्डा नान्दीमुखान्पितृनावाहयिष्यऽइति पृच्छत्यावाहयेत्यनुज्ञातो नान्दीमुखाः पितरः प्रीयन्तामित्यः क्षय्यस्थाने नान्दीमुखान्पितृन्वाचयिष्यऽइति पृच्छति वाच्यतामित्यनुज्ञातो नान्दीमुखाः पितरः पितामहाः प्रपितामहाः मातामहाः प्रमातामहा वृद्धप्रमातामहाश्च प्रीयन्तामिति न स्वधां प्रयुञ्जीत युग्मानाशयेदत्र ॥ ६ ॥ 'अथ तृप्ति' ग्राम्या-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



भिरोषधीभिर्मासं तृप्तिस्तदभावऽआरण्याभिर्मूलफलैरोषधीभिर्वा सहान्नेनोत्तरास्तर्पयन्ति छागोरभ्रमेषालानभ्य क्रीत्वा लब्ध्वा वा न स्वयं मृतानाहृत्य पञ्चेन्मासद्वयं तु मत्स्यैर्मासत्रयं तु हारिणेन चतुर औरभ्रेण पञ्च शाकुनेन षट् छागन सप्त कौर्मेणाऽष्टौ वाराहेण नव मेषमाꣳसेन दश माहिषेणैकादश पार्षतेन संवत्सरं तु गव्येन पयसा पायसे नवा वार्ध्रीणसमाꣳसेन द्वादशवर्षाणि ॥७॥ 'अथाक्षय्यतृप्तिः'- खड्गमाꣳसकालशाकलोहच्छागमाꣳसमधुमहाशल्को वर्षासु मघाश्राद्धꣳ हस्तिच्छायायां च मन्त्राध्यायिनः पूताः शाखाध्यायी षडङ्गविज्ज्येष्ठसामगो गायत्रीसारमात्रोऽपि पञ्चाग्निः स्नानकस्त्रिणाचिकेतस्त्रिमधुस्त्रिसुपर्णी द्रोणपाठको ब्राह्मोढापुत्रश्चेति पङ्क्तिपावना वागीश्वरो याज्ञिकश्च नियोज्योऽभावेऽप्येकं वेदविदं पङ्क्तिमूर्द्धनि नियुंज्यादासहस्रात्पङ्क्तिं पुनातीति वचनात् ॥ ८ ॥ 'अथ काम्यानि'--भवन्ति--स्त्रियोऽप्रतिरूपाः प्रतिपदि द्वितीयायाꣳ स्त्रीजन्माश्वास्तृतीयायां चतुर्थ्यां क्षुद्रपशवः पुत्राः पञ्चम्याꣳ षष्ठ्यां द्यूताद्भिः कृषिः सप्तम्यां वाणिज्यमष्टम्यामेकशफं नवम्यां दशम्यां गावः परिचारका एकादश्यां धनधान्य ५ हिरण्यं तु द्वादश्यां कुप्यं ज्ञातिश्रैष्ठ्यं च त्रयोदश्यां युवानस्तत्र म्रियन्ते शस्त्रहतस्य चतुर्दश्यामावास्यायां ५ सर्व्वमित्यमावास्यायां ५ सर्व्वमिति ॥ ९ ॥ इति ।

श्राद्धे ब्राह्मणलक्षणम्, श्राद्धकारिकायाम्—"सर्वलक्षणसंयुक्तैर्विद्याशीलगुणान्वितैः । पुरुषत्रयविख्यातैः सर्वं श्राद्धं प्रकल्पयेत् ॥" विशेषस्तु श्राद्धप्रकाशादौ स्पष्टः ।

नित्यश्राद्धविचारः, मनुः—"कुर्यादहरहः श्राद्धमन्नाद्येनोदकेन वा । पयोमूलफलैर्वापि पितृभ्यः प्रीतिमाहरेत् ॥ यदन्नं पुरुषोऽश्नाति तदन्नात्पितृदेवताः । अपक्वेनापि पक्वेन तृप्तिं कुर्यात्सुतः पितुः । एकमप्याशयेद्विप्रं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



गृहीनित्यं समाहितः। ॥ नामन्त्रणं न होमश्च नावाहनविसर्जने। न पिण्डदानं न सुरा नित्ये कुर्याद्विजोत्तमः ॥" "नावाहनं स्वधाकारः पिण्डाग्नौकरणादिकम्। ब्रह्मचर्यादिनियमो विश्वेदेवास्तथैव च। तत्तु षट्-पुरुषं ज्ञेयं दक्षिणापिण्डवर्जितम् ॥', 'किंचिद् दत्त्वा विसर्जयेत्' इति प्राचेतसोक्त्या दक्षिणा तु देयाऽवसीयते। तेनास्मिन् विषये विकल्पः। नित्यश्राद्धं साग्निकनिरग्निकोभयस्य समानम्। "नित्यश्राद्धं निरग्नेः स्यात्साग्नेर्वा पैतृको बलिः ॥" 'स्वागतवचने षट् ब्राह्मणाद्वावेकं वाऽभ्यर्च्य पादौ प्रक्षाल्याचम्य गृहं प्रवेशयेत्। कुशान्तर्हितेषु स्वासनेषूदङ्मुखानुपवेशयेत्। ततः स्वयमाचम्य प्राङ्मुख उपविश्य पुण्डरीकाक्षं वासुदेवं संस्मृत्य सावित्रीं पठित्वा भिक्षुकादिभ्योऽन्नं संविभज्य पितृपुत्रादिसहितो भोजनं कुर्यात्॥' "एकं तु भोजयेद्विप्रं पितॄनुद्दिश्य यत्सदा। नित्यश्राद्धं यदुद्दिष्टं पितृयज्ञो गतिप्रदः ॥" इति च।

**अथ नित्यश्राद्धप्रयोगः**—आचम्य प्राणानायम्य। **ॐ पवित्रे स्थो वै०**--इति मंत्रेण दक्षिणवामहस्तयोरनामिकायां कुशपवित्रे धृत्वा सङ्कल्पं कुर्यात्। अद्येत्यादि देशकालौ संस्मृत्यामुकगोत्रोऽमुकशर्म्माऽहं ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थम् (अपसव्यं दक्षिणाभिमुखः) अमुकगोत्राणाममुकशर्मणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां सपत्नीकानां, तथा अमुकगोत्राणाममुकशर्मणामस्मन्तामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां नित्यश्राद्धमहं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य **ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योनः प्रचोदयात्॥** (वा० सं ३६। ३)॥ ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव नमो नमः॥ इति च मन्त्रं त्रिर्जपित्वा प्राचीनावीती दक्षिणाभिमुखः सव्यं जान्वाच्य द्विगुणभुग्नकुशत्रयादीन्यादाय 'ॐ अद्यामुकगोत्रा मम पितृपितामहप्रपितामहा अमुकामुकशर्म्माणो नित्यश्राद्धे इदमासनं त्रेधा विभज्य युष्मभ्यं स्वधा। इति तिलजलप्रोक्षितं द्विगुणभुग्नकुशरूपमासनं दक्षिणाग्रं पितृप्रभृतिभ्यो दद्यात्। एवमे व

१ आचमनप्राणायामयोर्विधिस्तु दर्शितः प्राक्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पुनः-'ॐ अद्यामुकगोत्रा मम मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामह अमुकामुकशर्म्माणो नित्यश्राद्ध इदमासनं त्रेधा विभज्य युष्मभ्यं स्वधा।, इति तिलजलप्रोक्षितं द्विगुणशुभकुशरूपमासनं दक्षिणाग्रं मातामहप्रभृतिभ्यो दद्यात्। ततस्तिलान् आदाय पितृतीर्थेन-'ॐ अपहतऽअसुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः' (वा० सं २। २९) इति पठित्वा श्राद्धदेशे तिलान् विकीर्य गन्धादि धृत्वा-, ओम् अद्यामुकगोत्रा मम पितृपितामहप्रपितामहा अमुकामुकशर्म्माणः सपत्नीका नित्यश्राद्धे एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलानि युष्मभ्यं स्वधा।' इति यथासम्भवं पितृप्रभृतिभ्यो गन्धादि दत्त्वा तथैव मातामहप्रभृतिभ्योऽपि दद्यात्। ततो जलेन मण्डलमन्नपात्रस्य चतुष्कोणं कृत्वाऽन्नं परिवेष्य 'ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्न्नꣳसन्त्वोषधीः ॥ (वा० सं० १३।२७)॥ मधु नक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवꣳरजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता ॥ (वा० सं १३। २८) मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाꣳअस्तु सूर्य्यः। माध्वीर्गावो भवन्तुनः ॥ (वा० सं० १३। २९)॥ ॐ मधु मधु मधु (वा० सं० ३७। १३) इत्यन्नमभिमन्त्रयेत्। ततो व्यस्ताभ्यामधोमुखाभ्यां पाणिभ्यामन्नपात्रं स्पृशन् ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौष्पिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽअमृते अमृतं जुहोमि स्वधा ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे ॥ (वा० सं ५। १५) इति जपित्वा वामहस्ते नान्नपात्रं स्पृशन् ॐ विष्णो कव्यमिदं रक्ष मदीयमिति पठित्वा इदमन्नम्। इमा आपः। इदमाज्यम्। इदं कविरित्यन्नजलघृतेषु पुनरन्ने च दक्षिणाङ्गुष्ठं निवेश्य तिलानादाय--ॐ अपहत असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः इति पठित्वाऽन्नपात्रस्य सर्वतस्तिलान् प्रक्षिप्य दिगुणशुभकुशत्रयादीन्यादाय--ॐ अद्यामुकगोत्रा मम पितृपितामहप्रपितामह अमुकामुकशर्म्माणः सपत्नीका नित्यश्राद्धे इदमन्नं सोपकरं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



युष्मभ्यं स्वधा इति पितृप्रभृतीनुद्दिश्यान्नमुत्सृजेत्। एवम्मातामहप्रभृतिभ्यो-ऽप्यन्नमुत्सृज्य साञ्जलि- ॐ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्। अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं पित्रादीनां प्रसादतः॥ इति पठित्वा गायत्रींमधुव्वाता इत्यादिऋचं च जपित्वा ॐ मधुमधुमधु ( वा० सं० २७। १३ ) इति जपेत्। ततः ॐ कणष्वपाजः ( वा० सं० १३। ९--१३ ) इत्यादीन् मन्त्रान् पठित्वा तिलान् भूमौ निक्षिप्य ॐ उदीरतामवरे ( वा० सं० १९। ४९--७० ) इत्यादिपितृमन्त्रान् सहस्रशीर्षेत्यादिपुरुषऽसूक्तम्, ॐ आशुः शिशान इत्यादिकमप्रतिरथं पवित्रानन्यांश्च मन्त्रान् यथाशक्ति जपित्वा ॐ नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्तेऽनेकचक्षुषे। नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः॥ इति पठेत्। अथ दक्षिणामादाय--ॐ आद्यामुकगोत्रणां पितृपितामहप्रपितामहानाम् अमुकामुकामुकशर्म्मणाम् तथा अमुकगोत्राणाम्मातामह--प्रमातामह--वृद्धप्रमातामहानामुकामुकशर्म्मणां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यरूपाणां कृतैतन्नित्यश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदममुकदैवतं यथानामगोत्राया ( गोत्रेभ्यो ) ऽमुकशर्म्मणे ( शर्मभ्यः ) दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। इति दक्षिणां दद्यात्। फलमूलादिकं वा दद्यात्। ततः साञ्जलि ॐ प्रमादात् कुर्वता कर्म्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ इति विष्णुं प्रणमेत्। नित्यश्राद्धीयमन्नं ब्राह्मणाय ( ब्रह्मणेभ्यः ) दद्यात् जले वा क्षिपेत्। ततः सांजलि—अनेन कृतेन नित्यश्राद्धकर्म्मणा भगवान गदाधरः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु इति पठेत्। इति नित्यश्राद्धकर्म्मपद्धतिः।

वैश्वदेवः, पारस्करगृह्यसूत्रे—वैश्वदेवादन्नात् पर्युक्ष्य स्वाहाकारैर्जुहुयात्। ब्रह्मणे प्रजापतये गृह्याभ्यः कश्यपायानुम-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तये इति। भूतगृह्येभ्यो मणिके त्रीन्पर्जन्यायाद्यः पृथिव्यै धात्रे विधात्रे च द्वारयोः प्रतिदिशं वायवे दिशः च मध्ये त्रीन् ब्रह्मणेऽन्तरिक्षाय सूर्याय विश्वेभ्यो देवेभ्यो विश्वेभ्यश्च भूतेभ्यस्तेषामुत्तरतः उषसे भूतानां च पतये परं पितृभ्यः स्वधा नम इति दक्षिणतः पात्रं निर्णिज्योत्तरापरस्यां दिशि निनयेद्यक्ष्मैतत्तऽइत्युद्धृत्याग्रं ब्राह्मणायावनेज्य दद्यान्तत इति ॥ यथार्हं भिक्षुकानातिथींश्च सम्भजेरन्बालज्येष्ठा गृह्या यथार्हमश्नीयुः पश्चाद्गृहपतिः। पत्नी च पूर्वो वा गृहपतिस्तस्मादु स्वादिष्टं गृहपतिः पूर्वोऽतिथिभ्योऽश्नीयादिति श्रुतेरहरहः स्वाहा कुर्यादन्नाभावे केनचिदाकाष्ठादेवेभ्यः पितृभ्यो मनुष्येभ्यश्चोदपात्रात् ॥ 'अथातो धर्मजिज्ञासा'-केशान्तादूर्द्धमपत्नीकऽउत्सन्नाग्निरनग्निको वा प्रवासी ब्रह्मचारी चान्वग्निरिति। ग्राभाग्निमाहृत्य पृष्ट्रोदिवीत्यधिष्ठाप्य त्रिभिश्च सावित्रैः प्रज्वाल्य ताः सवितुस्तत्सवितुर्विश्वानि देव सवितरिति पूर्ववदक्षतैर्हुत्वा पाकं पचेत्। तत्र वैश्वदेवं ब्रह्मणे प्रजापतये गृह्याभ्यः कश्यपायानुमतये विश्वेभ्यो देवेभ्योऽग्नये स्विष्टकृतऽइत्युपस्पृश्य पूर्ववद्बलिकर्मैवं कृते न वृथा पाको भवति। न वृथा पाकं पचेन्न वृथा पाकमश्नीयादत्र पिण्ड पितृयज्ञः पश्चादग्न्यर्हणादीनि कुर्यात् ॥

नानाविधकर्मसु नानाग्निनामानि वाचस्पत्यौ- लौकिके पावको ह्यग्निः प्रथमः परिकीर्तितः। अग्निस्तु मारुतो नाम गर्भाधाने प्रकीर्तितः ॥ पुन्सवे चमसो नाम शोभनः शुभकर्मसु। ( पुन्सवः सीमन्तान्तर्गतः कर्मभेदः ) सीमन्ते ह्यनलो नाम प्रगल्भो जातकर्मणि। पार्थिवो नामकरणे प्राशनेऽन्नस्य वै शुचिः ॥ सभ्यनामा तु चूडायां व्रतादेशे समुद्भवः। गोदाने सूर्यनामा स्यात्केशान्ते याजकः स्मृतः ॥ वैश्वानरो विसर्गे स्याद्विवाहे बलदः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



स्मृतः। चतुर्थीकमणि शिखीधृतिरग्निस्ततथाऽपरे ॥ आवसथ्यस्तथाऽऽधाने वैश्वदेवे तु पावकः। ब्रह्माग्निर्गार्हपत्ये स्याद्दक्षिणाग्निरथेश्वरः॥ विष्णुराहवनीये स्यादग्निहोत्रे ध्रुवो मताः। लक्षहोमेऽभीष्टदः स्यात्कोटिहोमे महाशनः॥ एके घृतार्चिषं प्राहुरग्निध्यानपरायणाः। रुद्रादौ तु मृडो नाम शान्तिके शुभकृत्तथा ॥ ( आदिशब्दाल्लघुरुद्रशतरुद्रातिरुद्रा लक्ष्यन्ते। ) पौष्टिके वरदश्चैव क्रोधाग्निश्चाभिचारके। वश्यार्थे वशकृत्प्रोक्तो वनदाहे तु पौषकः॥ उदरे जठरो नाम क्रव्यादः शवभक्षणे। समुद्रे वाडवो ह्यग्निर्लये संवर्तकस्तथा। सप्तविंशतिसंख्याता अग्नयः कर्मसु स्मृताः॥

**अग्निजिह्वानामानि**—कराली धूमिनी श्वेता लोहिता नीललोहिता। सुवर्णा पद्मरागा च सप्त जिह्वा विभावसोः॥

**अग्निशक्तिनामानि**—पीता श्वेताऽरुणा कृष्णा धूम्रा तीक्ष्णा स्फुलिङ्गिनी। ज्वलिनी ज्वालिनी चेति कृशानोर्नव शक्तयः॥

**वैश्वदेवे पात्राणि**—न चुल्ल्यामायसे पात्रे न भूमौ न च खर्परे। वैश्वदेवं प्रकुर्वीत कुण्डे वा स्थण्डिलेऽपि वा॥

**वैश्वदेवे ग्राह्योऽग्निः**—औपासनाग्निमन्यं वा समिध्याथ हविर्भुजम्। यस्मिन्नग्नौ भवेत्पाको वैश्वदेवस्तु तत्र वै॥ शालाग्नौ च पचेदन्नं लौकिके वापि नित्यशः। यस्मिन्नग्नौ पचेदन्नं तस्मिन् होमो विधीयते॥ वैदिके लौकिके वापि हुतोच्छिष्टे जले क्षितौ। वैश्वदेवं प्रकुर्वीत पञ्चसूनापनुत्तये॥ **बृहत्पाराशरः**—लौकिके पापनाशाय वैदिके स्वर्गमाप्नुयात्॥

**वैश्वदेवे हवनीयं द्रव्यम्**—फलैर्दधिघृतैः कुर्यान्मूलशाकोदकादिभिः। अलाभे येन केनापि काष्ठैर्मूलतृणादिभिः॥ जुहुयात्सर्पिषाऽभ्यक्तं तैलक्षारविवर्जितम्। तध्यक्तं पायसाक्तं वा तदभावेऽम्भसापि वा॥ शाकं वा यदि वा मन्त्रं मूलं वा यदि वा फलम्। सङ्कल्पयेद्यमाहारं तेनाग्नौ जुहुयादपि॥ इति। घृतं वा यदि वा तैलं पयो वा यदि वा दधि। घृतस्थाने नियुक्तानां घृतशब्दो विधीयते॥ इति च, तेनाज्यसहितशाल्योदनस्यान्यस्य वाऽन्नस्य बदरीफलप्रमाणा आमलकप्रमाणा वा वैश्वदेवाहुतिर्युक्ता।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**वैश्वदेव आहुतिः**—मंत्रेणोंकारपूर्वेण स्वाहान्तेन विचक्षणः । स्वाहावसाने जुहुयाद्वामहस्तं हृदि न्यसन् ॥ इति । देवेभ्यस्तु हुतादन्नाच्छेषाद् भूतबलिं हरेत् । भूतयज्ञः स वै प्रोक्तो भूतिदः सर्वदेहिनाम् ॥ शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम् । वायसानां कृमीणां च शनकैर्निक्षिपेद्भुवि ॥

**वैश्वदेवे वर्ज्यानि द्रव्याणि**—कोद्रवं चणकं माषं मसूरं च कुलित्थकम् । क्षारं च लवणं चैव वैश्वदेवे विवर्जयेत् ॥ अन्नं पर्युषितं चैव परान्नं दूषितं तथा । दग्धमन्नं तथोच्छिष्टं वैश्वदेवे विवर्जयेत् ॥

**वैश्वदेवाग्निप्रज्वलनम्**—न पाणिना न शूर्पेण न चामेध्यादिनापि वा । मुखेनोपधमेदग्निमुखादेष व्यसीयत ॥ [ मुखेनेत्यत्र वेणुधमनीयुक्तेनेति वाक्यशेषः कार्यः ] पट्टकेन भवेद् व्याधिः शूर्पेण धननाशनम् । पाणिना मृत्युमाप्नोति कर्मसिद्धिर्मुखेन तु ॥ उत्तानेन तु हस्तेन ह्यङ्गुष्ठाग्रेण पीडितम् । संहतांगुलिपाणिस्तु वाग्यतो जुहुयाद्धविः ॥

**श्राद्धे वैश्वदेवः, कात्यायनः**—याजुषाः सामगाः पूर्वं श्राद्धमध्ये ह्यथर्वणः । बह्वृचाः श्राद्धशेषेण कुर्युर्वै वैश्वदेवकम् ॥

**वैश्वदेवाभावे दोषः**—यदग्नौ हूयते नैव यस्य ग्रासो न दीयते । अभोज्यं तद्द्विजातीनां भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् ।

**वैश्वदेवफलम्**—पञ्चसूना गृहस्थस्य चुल्ली पेषण्युपस्करी । कण्डनी चोदकुम्भी च तासां पापस्य शान्तये ॥ पञ्च क्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम् । पञ्चैतान्यो महायज्ञान्न हापयति शक्तितः ॥ स गृहेऽपि वसन्नित्यं सूनादोषैर्न लिप्यते । वैश्वदेवस्य सिद्धस्य गृह्येऽग्नौ विधिपूर्वकम् । आभ्यः कुर्याद्देवताभ्यो ब्राह्मणो होममन्वहम् ॥ इति । इदं तु बोध्यम्—यदन्नं पक्वमक्षारलवणं भवेत् । तेनैव बलिवैश्वदेवकर्म कार्यम् ॥

**वैश्वदेवे कुण्डम्**—दशांगुलं तु दैर्घ्येण विस्तारे चतुरंगुलम् । षडंगुलं तु उच्छ्राये मेखला द्व्यंगुला मता । वृत्तं वा चतुरस्रं वा कुण्डं स्याद्वैश्वदेविकम् ॥

**गृह्यज्ञकल्पावलौ**—षडंगुलमयोच्छ्रायं गर्तं च चतुरंगुलम् । द्वादशांगुलदीर्घं स्यात्कुण्डं तद्वैश्वदेविकम् ॥ अपि ताम्रमयं प्रोक्तं कुण्डमत्र मनीषिभिः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तिर्यग्व्यवीदरान्यष्टावूर्ध्वं वा वीहयस्त्रयः । अंगुलिः सैष विज्ञेयः श्रौते स्मार्ते च कर्मणि ॥ इति ॥

**अग्नेर्ध्येयरूपम्**—रुद्रतेजःसमुद्भूतं द्विमूर्धानं द्विनासिकम् । षण्नेत्रं च चतुःश्रोत्रं त्रिपादं सप्तहस्तकम् ॥ याम्यभागे चतुर्हस्तं सव्ये भागे त्रिहस्तकम् । स्रुवं स्रुचं च शक्तिं च अक्षमालां च दक्षिणे ॥ तोमरं व्यजनं चैव घृतपात्रं तु वामके । बिभ्रतं सप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखं सप्तजिह्वकम् ॥ दक्षिणे च चतुर्जिह्वं त्रिजिह्वमुत्तरे मुखे । द्वादशकोटिमूर्त्याख्यं द्विपञ्चाशत्कलायुतम् । स्वाहास्वधावषट्कारैरंकितं मेषवाहनम् ॥ रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासने स्थितम् । रौद्रं तु वह्निनामानं वह्निमावाहयाम्यहम् ॥

**पञ्चयज्ञ ( बलिवैश्वदेव ) प्रयोगः**। आचम्य प्राणानायम्य कुशपवित्रधारणम्--ॐ पवित्रे स्थो वै० ॥ **संकल्पः**--अद्येत्यादिना देशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहं ममात्मनो गृहे पञ्चसूनाजनितसकलदोषपरिहारपूर्वकं नित्यकर्मानुष्ठानसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं पञ्चमहायज्ञैरहं यक्ष्ये ॥

**अग्निध्यानम्**--ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽअस्य । त्रिधाबद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्याँ आविवेश ॥ ( वा० सं० १७ । ९१ । ) **आसनम्**--ॐ एषो हदेवऽप्रदिशोनु सर्व्वाऽपूर्वोह जातऽसऽउर्ब्मेऽअन्तऽ । स एव जातऽस जनिष्यमाणऽप्रत्यङ्जनास्तिष्ठति सर्व्वतोमुखऽ ॥ ( वा०सं० ३२ । ४ ) ॥ नमस्कारः—मुखं यः सर्वदेवानां हव्यभुक्कव्यभुक् तथा । पितॄणां च नमस्तस्मै विष्णवे पावकात्मने ॥ पावक·

---

१ आचमनप्राणायामयोः प्रागुक्त एव विधिः । मन्त्रोऽयं प्राङ् निरूपितः । तेन दक्षिणहस्तानामिकायां कुशपवित्रं वामहस्ते च कुशान् दध्यात् । २ प्रज्वलितमग्निमुदीक्ष्य साञ्जलि वक्ष्यमाणेन मन्त्रेण ध्यायेत् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



नाम्ने वैश्वानरायनमः । अग्नये अर्घ्यं नमः । अग्नये गन्धं नमः । अग्नये अक्षताः पुष्पं नमः । अग्नये नमो नमः । अग्ने शांडिल्यगोत्र मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव ॥ अग्निं प्रदीप्तं वेणुनलिकया कृत्वाऽऽहुतीर्दद्यात् । तत्र मन्त्रो यथा—१—ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम । २—ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम । ३—ॐ गृह्याभ्यः स्वाहा इदं गृह्याभ्यो न मम । ४—ॐ कश्यपाय स्वाहा इदं कश्यपाय न मम । ५—ॐ अनुमतये स्वाहा इदं अनुमतये न मम ॥ अष्टमण्डलं भूमौ जलधारया कृत्वा नीचैरुल्लिखिलयन्त्रानुसारेण बलिहरणं कुर्यात् ।

८
७
६

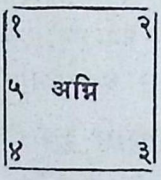


## ( १ ) देवयज्ञः ।

| | |
|---|---|
| १ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम । | ५ ॐ अनुमतयेस्वाहाइदमनुमतयेनमम। |
| २ ॐप्रजापतयेस्वाहाइदंप्रजापतयेनमम | ६ ॐपर्जन्याय नमःइदं पर्जन्यायनमम। |
| ३ ॐगृह्याभ्यःस्वाहा इदंगृह्याभ्योनमम। | ७ ॐ अद्भ्यो नमः इदमद्भ्यो न मम । |
| ४ ॐकश्यपायस्वाहाइदंकश्यपायनमम | ८ ॐ पृथिव्यै नमः इदं पृथिव्यैनमम । |

---

१ सव्यः सन् पातितदक्षिणजानुर्लवणरहितं पक्वमन्नं पञ्चवारं वक्ष्यमाणैः पञ्चभिर्मन्त्रैरग्नौ निक्षिपेत् त्रिवारं पुनस्त्रिभिर्मन्त्रैः ( षष्ठसप्तमाष्टमैर्मन्त्रैः ) ऐशान्यामङ्गक्रमानुसारं भूपो ( मण्डलाद्बहिः ) निक्षिपेत् । एतदाहुतित्रयं न मन्तव्यम् । किंतु मणिकसमीपे दातव्यं बलित्रयमस्तीति विज्ञेयम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



# बलिवैश्वदेवमण्डलम्।

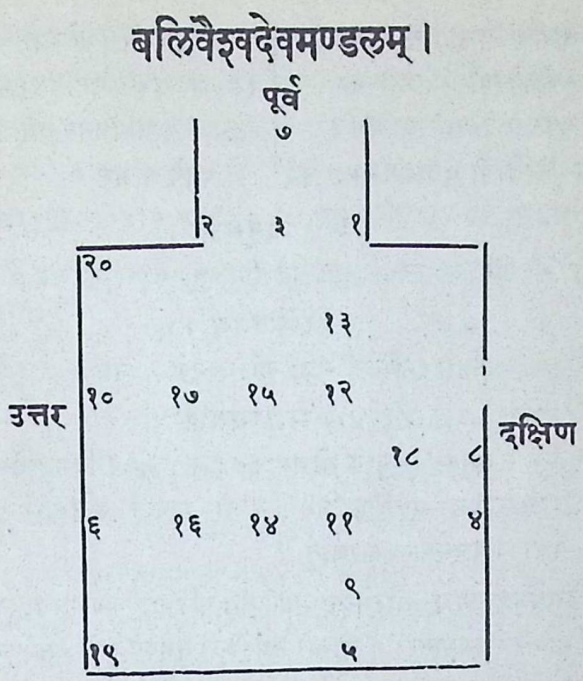


## ( २ ) भूतयज्ञः।

१ ॐ धात्रे नमः इदं धात्रे न मम।
२ ॐ विधात्रे नमः इदं विधात्रे न मम।
३ ॐ वायवे नमः इदं वायवे न मम।
४ ॐ वायवे नमः इदं वायवे न मम।
५ ॐ वायवे नमः इदं वायवे न मम।
६ ॐ वायवे नमः इदं वायवे न मम।
७ ॐ प्राच्यै नमः इदं प्राच्यै न मम।
८ ॐ अवाच्यै नमः इदमवाच्यै नमम।
९ ॐ प्रतीच्यै नमः इदं प्रतीच्यैनमम।
१० ॐउदीच्यै नमः इदमुदीच्यै नमम।
११ ॐ ब्रह्मणे नम इदं ब्रह्मणे न मम।
१२ ॐअन्तरिक्षाय नमः इदग०न मम।

---

२ सव्यः सन् प्रथममंकमारभ्य सप्तदशांकं यावत् सप्तदशभिर्मन्त्रैर्मण्डलान्तः प्रथमांकादिकमानुसारं तत्र भूमौ सिद्धमन्नं विभज्य निक्षिपेत्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



१३ ॐ सूर्य्याय नमः इदं सूर्य्याय नमम।
१४ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम।
१५ ॐ विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः इदं विश्वेभ्यो भूतेभ्यो न मम।
१६ ॐ उषसे नमः इदमुषसे न मम।
१७ ॐ भूतानां पतये नमः इदं भूतानां पतये न मम।

## ( ३ ) पितृयज्ञः।

१८ ॐ पितृभ्यः स्वधा नमः इदं पितृभ्यः स्वधा न मम।

## × निर्णेजनम्।

१९ ॐ यक्ष्मैतत्ते निर्णेजनं नमः इदं यक्ष्मणे न मम।

## ( ४ ) मनुष्ययज्ञः।

२० ॐ हन्त ते सनकादिमनुष्येभ्यो नमः इदं हन्त ते सनकादिमनुष्येभ्यो न मम।

**पञ्चयज्ञफलम्**—यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यते सर्वकिल्बिषैः। भुञ्जते ते त्वधं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥

**पञ्चबलिहरणम्**—सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः। प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः॥ गोभ्यो नमः अन्नं समर्पये। द्वौ श्वानौश्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ। ताभ्यामन्नं प्रयच्छामि स्यातामेतावहिंसकौ॥ श्वभ्यां नमः अन्नं समर्पये। ऐन्द्रवारुणवायव्या याम्या वै नैर्ऋता स्थिताः। वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमावन्नं समर्पितम्॥ वायसेभ्यो नमः, इदमन्नं समर्पये। देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाश्च यक्षोरगदैत्यसंघाः। प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मयाऽद्य दत्तम्॥ देवादिभ्य इदमन्नं समर्पये। पिपीलिकाःकीटपतङ्गकाद्या बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः। प्रयान्तु दे तृप्तिमिदं मयाऽन्नं तेभ्यो वितीर्णं सुखिनो भवन्तु॥ पिपीलिकाऽऽदिभ्यो नमः अन्नं समर्पये। इति। ततः

---

३ अपसव्यः पातितवामजानुर्दक्षिणाभिमुखः सतिलं सिद्धमन्नं पितृतीर्थेनाष्टादशांकसूचितस्थाने निक्षिपेत्। × सव्यः सन् अन्नपात्र प्रक्षाल्य तन्निर्णेजनजलमेकोनविंशांकसूचिते देशे निक्षिपेत्। ४ यज्ञोपवीतं कण्ठीकृत्योत्तराभिमुखः सिद्धमन्नं विंशांकसूचितदेशे निक्षिपेत्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


परं हस्तं प्रक्षाल्य साञ्जलि । प्रार्थयेत-प्रमादात् कुर्वतां कर्म्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञक्रियाऽऽदिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ इति भगवन्तं नारायणं प्रणम्य वैश्वदेवकुण्डभस्म किञ्चिद् ग्रीवादिषु स्पर्शयेत्, यथा— त्र्यायुꣳ जमदग्नेः ( इति ललाटे ) । कश्यपस्य त्र्यायुषम् ( इति ग्रीवायाम् )। यद्देवेषुत्र्यायुषम् (इति बाहुमूले । तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् ( इति हृदि ) ॥ ( वा० सं० ३ । ६१ ) ॥ 'अग्निविसर्जनम्'--गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥ ॐ यज्ञं यज्ञङ्गच्छ यज्ञपतिङ्गच्छ स्वां योनिङ्गच्छ स्वाहा । एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तꣳ जुषस्व स्वाहा ॥ ( वा० सं० ८ । २२ ॥ ततः कुशपवित्रं त्यजेत् ॥ 'अर्पणम्'—अनेन वैश्वदेवाख्येन कर्मणाश्रीयज्ञनारायणस्यरूपी परमेश्वरः प्रीयतां न मम । ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ इति त्रिः पठित्वा बल्यन्नं गृहाद्बहिर्गोभ्यो वायसादिभ्यश्च दत्त्वा हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्याचम्य गृहं गच्छेत् । इति ॥ अथ हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्याचम्य ललाटेऽनुलिप्तं भस्म दूरीकृत्य गन्धेन तिलकं कुर्यात् ।

**तिलकगन्धद्रव्याणि**—कस्तूरी कुंकुमं फल्गु सिन्दूरं रक्तचन्दनम् । गोरोचना गन्धकाष्ठं जलं चाऽगरु गोमयम् ॥ धात्रीमूलस्य मृद्गन्धो हरिद्र गोगृहस्य च ॥

**गन्धधारणावश्यकता**—स्नानान्ते सर्ववर्णानामाश्रमाणां तथैव च एतानि तिलकान्याहुः सन्ध्यादिसर्वकर्मसु । काम्यं नैमित्तिकं नित्यं यत्किञ्चित्कर्म नारद ॥ वर्णाश्रमाणां तन्नास्ति स्नानान्ते तिलकं विना । कर्म वर्णाश्रमाणां स्यादेवं पित्र्यं न तत्फलम् ॥ स्नानं सन्ध्यां पञ्चयज्ञन् पैत्र्यं होमादि कर्म यः । विना तिलकदर्भाभ्यां कुर्यात्तन्निष्फलं भवेत् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**गन्धेन तिलकप्रकारः**—अङ्गुष्टः पुष्टिदः प्रोक्तो मध्यमा पुष्टिकारिणी । अनामिकाऽन्नदा नित्यं मुक्तिदा च प्रदेशिनी ॥ एतैरङ्गुलिभेदैस्तु कारयेन्न नखैः स्पृशेत् ॥ वर्तिदीपाकृतिर्वापि वेणुपत्राकृतिरतथा । पद्मं च मुकुलो वाऽपि शंखाकारमतः परम् ॥ मत्स्यकूर्माकृतिर्वापि तथैव मुकुलाकृतिः । ब्राह्मणस्तिलकं कुर्यादनेन विधिना सह ॥ अभ्यङ्गस्नानं कुर्याच्चेद्धार्यं चन्दनमेव च । ललाटे भस्म नो धार्यं सन्ध्योपासनकर्मणि ॥ अनामिक्या च देवस्य ऋषीणां च तथैव च । गन्धानुलेपनं कार्यं प्रयत्नेन विशेषतः पितॄणामर्पयेद्गन्धं तर्जन्या च सदैव हि । तथैव मध्यमाङ्गुल्या धार्यं गन्धं स्वयं बुधैः ॥

**अत्र विशेषः**—ऊर्ध्वपुण्ड्रं द्विजः कुर्यात् क्षत्रियाणां तथैव च ॥ वैश्याना तु तथा ज्ञेया शूद्राद्यैर्मण्डलाऽऽकृतिः ॥ ललाटदक्षिणे ब्रह्मा वसेद्वामे महेश्वरः । मध्ये विष्णुर्वसेन्नित्यं तस्मान्मध्यं न लेपयेत् ॥ शूद्रस्यैकाङ्गुलं प्रोक्तमायतं व्यङ्गुलं विशि । क्षत्रिये त्र्यङ्गुलं तद्वद्ब्राह्मणे चतुरङ्गुलम् । नासिकायास्त्रिभागैको भागो मानेन यो भवेत् । भ्रुवोर्मध्यादधः स्थानं मूलमाहुर्मनीषिणः ॥ ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थो यतिस्तथा । कुर्याद् यदूर्ध्वपुण्ड्रं तद्वैष्णवो हरिमन्दिरम् । शिवागमे दीक्षितैस्तु धार्यं तिर्थक् त्रिपुण्ड्रकम् । विष्वागमे दीक्षितस्तु उर्ध्वपुण्ड्रं विधारयेत् ॥

**तिलकस्थानानि**—ललाटे केशवं विद्यान्नारायणमथोदरे । माधव हृदये न्मस्य गोविन्द कण्ठकूर्परे ॥ विष्णुं च दक्षिणे कुक्षौ तद्भुज मधुसूदनम् । त्रिविक्रमं कर्णमूले वामकुक्षौ तु वामनम् ॥ श्रीधरं च हृषीकेशं वामयोर्बाहुकर्णयोः । पद्मनाभं पृष्ठदेशे व कुहामोदरं न्नसेत् । मूर्ध्नि मूलेन मन्त्रेण शेषैर्द्वादशनामभिः । सङ्कर्षणादिभिः कृष्णे शुक्ले चेत्केशवादिभिः ॥ निठिले बाहुवच्चैव दण्डवत्कर्णपल्लवे । हृदये कमलाकारमुदरे दीपवल्लिखेत् ॥ वेणुपत्रसमाकारं बाहुमध्ये समालिखेत् । अधः पृष्ठे स्कन्धदेशे लिखेज्जम्बूफलाकृतिम् ॥ दशाङ्गुलप्रमाणं तु उत्तमोत्तममुच्यते । नवाङ्गुलं मध्यमं स्यादष्टाङ्गुलमतः-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



परम्॥ लिङ्गाकारं ललाटे तु हृदयेऽश्वत्थपत्रकम्। वंशपत्राकृतिबाह्वोः रेषा दीपकला स्मृताः॥

**तिलकगुणाः**- श्यामं शान्तिकरं प्रोक्तं रक्तं वश्यकरं भवेत्। श्रीकरं पीतमित्याहुर्वैष्णवं श्वेतमुच्यते॥ तिलकं कुंकुमेनैव सदा मङ्गलकर्मणि। कारयित्वा सुमतिमान् न श्वेतचन्दनं मृदा॥ शङ्खचक्राद्यङ्कनं च तुलसीदलभक्षयः कुर्यान्नियतं भक्त्या स याति परमां गतिम्॥ न पादुकास्थो नादर्शे न जले वा विलोकयेत्। न प्रावृतशिराः कुर्यात्तिलकं धर्मवर्धनम्॥ प्रभाते विपुलं विन्द्यान्मध्याह्ने च त्रिपुण्ड्रकम्। अपराह्णे पर्वमात्रं तिलकं त्रिविधं स्मृतम्॥ गोपीचन्दनलिप्ताङ्गो यं यं पश्यति चक्षुषा। तं तं पूतं विजानीयान्नात्र कार्या विचारणा॥ ऊर्ध्वपुण्ड्रं द्विजस्येष्टं क्षत्रियस्य त्रिपुण्ड्रकम्। अर्धचन्द्रं तु वैश्यस्य वर्तुलं शूद्रजातिषु॥ गन्धार्थे सर्वदा श्वेतचन्दनं तु प्रशस्यते॥

**अतिथिपूजनम्**- निवृत्ते वैश्वदेवे च यदाऽन्योऽतिथिरात्रजेत्। तस्मादन्नं यथाशक्त्या प्रदद्यान्न बलिं हरेत्॥ **शातातपः**--प्रियं वा यदि वा द्वेष्यं मूर्खं पण्डितमेव वा। अतिथिं तत्र सम्प्राप्त पूजयेत्स्वागतादिना॥ तथाऽऽसनप्रदानेन पादप्रक्षालनेन च। श्रद्धया चान्नदानेन प्रियप्रश्नोत्तरेण च॥

**अतिथिविचारः**--एकरात्रं तु निवसन्नतिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः। अनित्यं हि स्थितो यस्मात्तस्मादतिथिरुच्यते॥ अग्नयोऽतिथिमिच्छन्ति सोऽतिथिः स्वर्गमिच्छति। स्वर्गेऽपोच्छति दातारं सम्यक् सुकृतकारिणम्॥ अध्वनीनोऽतिथिर्ज्ञेयः श्रोत्रियो वेदपारगः। मान्यावेतौ गृहस्थस्य ब्रह्मलोकमभीप्सतः॥ नाग्निहोत्रेण दानेन नोपवासोपसेवनैः। देवाश्च परितुष्यन्ति यथा त्वतिथिपूजनात्॥ ब्रह्मचारी यतिश्चैव विद्यार्थी गुरुपोषकः। दुर्भगः क्षीणवित्तश्च षडेते भिक्षुकाः स्मृताः॥

**भोजनम्, कात्यायनपरिशिष्टसूत्रे**--अथातः श्रुतिस्मृतीरनुस्मृत्य भोजनविधिं व्याख्यास्यामः। आचान्तो धृतोत्तरीयवस्त्रो धृतश्रीखण्डगन्धत्रिपुण्ड्रो भोजनशालायामागत्य



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



गोमयलिप्ते शुचौ देशे विहितपीठाधिष्ठितो नित्यं प्राङ्मुखो नोदङ्मुखो न दक्षिणामुखो न प्रत्यङ्मुखो न विदिङ्मुखः श्रीकामश्चेत्प्रत्यङ्मुखः सत्यकामश्चेदुदङ्मुखो यशस्कामश्चेद्दक्षिणामुखो (जीवन्मातृकवर्ज्यं) हस्तपादास्येषु पञ्चस्वादौ नीवारचूर्णैर्गौरमृदा भस्मनोदकेन वा मण्डलं कुर्याच्चतुष्कोणं ब्राह्मणस्य त्रिकोणं क्षत्रियस्य मण्डलाकृतिं वैश्यस्याभ्युक्षणङ्ग शूद्रस्य। यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलभस्मैतत्सर्वभूतानि रक्षत्विति॥ तत्र भूमौ निहितपात्रेऽन्ने परिविष्टे पितुन्नुस्तोषमित्यन्नङ्ग स्तुत्वा मानस्तोके नमोवः किरिकेभ्यो नमः शम्भवे चेत्यभिमन्त्र्य प्रोक्षयेत्। सत्यन्त्वर्तेन परिषिञ्चामीति प्राप्तः ऋतन्त्वा सत्येन परिषिञ्चामीति सायं तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसीति यजुषान्नमभिमृश्याग्निरस्मीत्यात्मानमाग्निं ध्यात्वा भूपतये भुवनपतये भूतानाम्पतये इति प्रणवादिकैः स्वाहानमोन्तैर्मन्त्रैः प्रतिमन्त्रं बलीन् हरेदन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं ब्रह्म त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमोङ्कारस्त्वं विष्णोः परमं पदम्। अमृतोपस्तरणमसि स्वाहेति विष्णुमभिध्यायन्नाचम्यान्नममृतं ध्यायन्मौनी हस्तचापल्यादिरहितोमुखे पञ्चप्राणाहुतीर्जुहोति॥ ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाम स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहेति क्रमं याज्ञवल्क्योऽमन्यत। उदानाय स्वाहा समानाय स्वाहेति क्रमं शौनकबौधायनौ याज्ञवल्क्योदितक्रमो वाजसनेयिनामित्यूचतुः दन्तैरनुपस्पृशन् जिह्वया ग्रसेदङ्गुष्ठप्रेदशिनीमध्यमाभिः प्रथमामङ्गुष्ठमध्यमानामिकाभिर्द्वितीयामङ्गुष्ठानामिकाकनिष्ठिकाभिस्तृतीयां कनिष्ठिकातर्जन्यङ्गुष्ठ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



श्चतुर्थी ह॰ सर्वाभिरङ्गुलीभिः साङ्गुष्ठाभिः पञ्चमीमङ्गुष्ठानामिकामात्रग्राह्यान्नैनेता आहुतय इति हारीतव्याख्यातारः। सर्वाभिरङ्गुलीभिरेता इति बौधायनः। मौनं त्यक्त्वा प्राक् द्रवरूपमश्नीयान्मध्ये कठिनमन्ते पुनर्द्रवाशी स्यान्मधुरं पूर्वं लवणाम्ले मध्ये कटुतिक्तादिकान्पश्चाद्यथासुखं भुञ्जीत। भुञ्जानो वामहस्तेनान्नं न स्पृशेन्न पादौ न शिरो न बर्हिंत न पदा भाजनह॰ स्पृशेदेवं यथारुचि भुक्त्वा भुक्तशेषमन्नमादाय। मद्भुक्तोच्छिष्टशेषं ये भुञ्जते पितरोऽधमाः। तेषामन्नं मया दत्तमक्षय्यमुपतिष्ठत्विति पितृतीर्थेन दक्षिणतो दत्त्वाऽमृतापिधानमसि स्वाहेति हस्ते गृहीतानामपामर्द्धं पीत्वाऽर्द्धं भूमौ निक्षिपेत्। रौरवे पूयनिलये पञ्चार्बुदनिवासिनाम्। अर्थिना ह॰ सर्वभूतानामक्षय्यमुपतिष्ठत्विति। तस्मादेशादपसृत्य गण्डूषचलाकादिभिस्तर्जनीवर्जमास्य ह॰ स ह॰ शोधयेत् न भार्यादर्शनेऽश्नीयान्न भार्यया सह न सन्ध्ययोर्न मध्याह्ने नार्द्ररात्रे नायज्ञोपवीती नार्द्रशिरा नार्द्रवासा नैकवासा न शयानो न ताम्रभाजने न भिन्ने न ताम्रराजतसौवर्णशङ्खस्फाटिकाश्मभाजनवर्जे न लौहे न मृन्मये न सन्धिस्थिते न भुवि न पाणौ न सर्वभोजी स्यात्किञ्चिद्भोज्यं परित्यजेदन्यत्र घृतपायसदधिसक्तुपललमधुभ्यः साध्वाचान्तो दक्षिणपादाङ्गुष्ठे पाणिं निःस्रावयेदङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽङ्गुष्ठं च समाश्रितः। ईशः सर्वस्य जगतः प्रभुः प्रीणातु विश्वभुगिति श्वात्राः पीताऽइति नाभिमालभतऽअमृताऽइत्यतः प्रागग्नस्त्यं वैनतेयं च शनिं च वडवानलम्। अन्नस्य परिणामार्थं स्मरेद्भीमं च पञ्चममित्युदरमालभ्य शर्यातिं च सुकन्यां च च्यवनं शक्रमश्विनौ। भोजनान्ते स्मरेन्नित्यं तस्य चक्षुर्न

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**हीयतऽ इति वचनात्स्मृत्वा मुखशुद्धिं कुर्यान्नमो भगवते वाजसनेयाय याज्ञवल्क्याय नमो भगवते वाजसनेयाय याज्ञवल्क्याय ॥**

**भोजनसमयः**—स्नात्वा यथावद्भुत्वा च देवर्षिपितृतर्पणम् । कृते जाप्ये हते वह्नौ शुद्धवस्त्रसमन्वितः ॥ प्रशस्तपाणिपादस्तु भुञ्जीत प्रयतो गृही । स्नात्वा प्रक्षाल्य पादौ च स्नग्दाम्नाऽलंवृतःशुचिः ॥ पञ्चयज्ञावशिष्टं च यो भुंक्ते सोऽमृताशनः । सायंप्रातर्द्विजातीनामशनं श्रुतिनोदितम् ॥ नान्तरा भोजनं कुर्यादग्निहोत्रसमो विधिः । द्विरन्नं मुनिभिः प्रोक्तं विप्राणामप्रवासिनाम् । नित्यमह्नि तपस्विन्यां सार्वप्रथमयामतः ॥ **अत्र विशेषः 'दिवारात्रं वो भोजनम्' इति श्रुतिः तेन दिने द्विवारं न भोक्तव्यम् ।**

**भोजने आसनम्**—गोशकृन्मृन्मयं भिन्नं तथा पालाशपिप्पलम् । लोहबद्धं तथैवार्कं वर्जयेदासनं बुधः ॥ इति । गोमयाद्यनुपहतमासनं ग्राह्यम् ॥

**भोजने पात्राणि**—मृन्मये पत्रपृष्ठे वा आयसे ताम्रभांजने । नाऽश्नीयादपि चेद् भुक्ते नरकं प्रतिपद्यते ॥ वटार्काश्वत्थपत्रेषु कुम्भीतिन्दुकजेषु च । श्रीकामो न तु भुञ्जीत कोविदारकरञ्जयोः ॥ ताम्बूलाभ्यञ्जने चैव कांस्यपात्रे च भोजनम् । यतिश्च ब्रह्मचारी च विधवा च विवर्जयेत् ॥ अपात्रे ह्यपि यद्दत्तं दहत्यासप्तमं कुलम् । हव्यं देवा न गृह्णन्ति कव्यं च पितरस्तथा ॥ आयसेन तु पात्रेण यदन्न मुपदीयते । तदन्नमपवित्रं स्यात्त्याज्यं वै सर्वकर्मणि ॥ सौवर्णे राजते ताम्रे पद्मपालाशपत्रयोः । भाजने भोजने चैव त्रिरात्रं फलमश्नुते ॥ पालाशपद्मपत्रेषु गृहीभोजनमाचरेत् । एक एव तु यो भुंक्ते गृहस्थः करियभाजने । चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुः प्रज्ञा यशो बलम् ॥ भूमौ पात्रं प्रतिष्ठाप्य यो भुंक्ते वाग्यतः शुचिः । भाजने भोजने चैव त्रिरात्रफलमश्नुते ॥ ब्रह्मपत्रेषु यो भुंक्ते मासमेकं निरन्तरम् । चान्द्रायणसमं पुण्यं कृतस्यापि चतुर्गुणम् ॥

**भोजने पादुका**—पादुकास्थो न भुञ्जीत पर्यङ्के संस्थितोऽपि वा । शुना चाण्डालदृष्टो वा भोजने परिवर्जयेत् ॥ यो भुङ्क्ते वेष्टितशिरा यस्तु भुंक्ते विदिङ्-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मुखः। सोपानत्कश्च यो भुंक्ते सर्वं विद्यात्तदासुरम् ॥ नार्द्धरात्रे न मध्याहे नाजीर्णे नार्द्रवस्त्रधृक्। न च भिन्नासनगतो न शयानः स्थितोऽपि वा ॥ नोपानत्पादुकी चापि न च संविलपन्नपि ॥

**हस्तेनाग्राह्याः पदार्थाः**—लवणं व्यञ्जनं चैव घृतं तैलं तथैव च। लेह्यं पेयं च विविधं हस्तदत्तं न भक्षयेत् ॥ हस्तदत्तानि चान्नानि प्रत्यक्षं लवणं तथा। वर्जनीयं प्रयत्नेन ब्राह्मणेन विशेषतः ॥ घृतं वा यदिवा तैलं ब्राह्मणो नखनिः सृतम्। भुञ्जीत न दधाच्च भुक्त्वा पादं समाचरेत् ॥ दर्व्या देव्यं श्रृतान्नं च समस्तं व्यञ्जनादिकम्। अपक्वं स्नेहपक्वं च न तु दर्व्या कदाचन॥

**ग्रासमानम्**—कुक्कुटाण्डप्रमाणं तु ग्रासमानं विधीयते ॥

**भोजने दिक्**-उपलिप्ते शुचौ देशे पादौ प्रक्षाल्य वाग्यतः। प्राङ्मुखोऽन्नं तु भुञ्जीत शुचिः पीठमधिष्ठितः ॥ आयुष्यं प्रांमुखो भुंक्ते यशस्वी दक्षिणामुखः। श्रियं प्रत्यंमुखो भुंक्ते ऋणं भुंक्ते उदंमुखः ॥ पुत्रवांस्तु गृहे नित्यं नाश्नीयादुत्तरामुखः। सोमवारे तथाऽभ्यङ्ग वर्जयेत्तु सदा बुधः ॥ पितरो जीवमानौ चेन्नाश्नीयाद्दक्षिणामुखः। तयोस्तु जीवतोरेकस्तथैव नियमः स्मृतः ॥ अनिशं मातृहीनानां यशस्यं दक्षिणामुखम् ॥

**परिवेषणम्**—शाकादीन्पुरतः स्थाप्य भक्ष्यं भोज्यं च वामतः। अन्नं मध्ये प्रतिष्ठाप्य दक्षिणे घृतपायसम् ॥ ओदने परमान्ने च आज्यपात्रं यदि स्थितम्। तदाज्यं च भवेद्दत्तं तदन्नं मांसमुच्यते ॥ इति घृतमपि भोजनात्प्रागेवान्नशुद्ध्यर्थं ग्राह्यम्। न तु भोजनारम्भोत्तरम्।

**भोजनादौ देवतीर्थम्**-प्रथमात्कायशुद्धिश्च द्वितीयाद्धर्मसंग्रहः। तृतीयान्मोक्षमाप्नोति देवतीर्थं त्रिरापिबेत् ॥

---

१ यः प्रांमुखो भुंक्ते स आयुष्यं 'लभते' इति शेषः। यो दक्षिणामुखो भुंक्ते स यशस्वी स्यात्। यः प्रत्यंमुखो भुंक्ते सश्रियं विन्दति, य उदंमुखो भुंक्ते स ऋणं प्राप्नोति इत्येवमर्थः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**भोजने मण्डलम्**-उपलिप्ते समे स्थाने शुचौ श्लक्ष्णसमन्विते । चतुरस्रं त्रिकोणं च वर्तुलं चार्धचन्द्रकम् । कर्तव्यमानुपूर्व्येण ब्राह्मणादिषु मण्डलम् ॥ आदित्या वसवो रुद्रा ब्रह्मा चैव पितामहः । मण्डले तूपजीवन्ति तस्मात्कुर्वीत मण्डलम् ॥ देहे देवे चतुष्कोणं वर्तुलं पितृकर्मणि । त्रिकोणं हि प्रकुर्वीत प्रेतकर्मणि सर्वदा । विधाय दैवे पैत्र्ये च वेदांगुलप्रमाणतः ॥ वितारितमात्रं चतुरंगुलं वा कोणैश्चतुर्भिर्विदधीत मण्डलम् । प्राणाग्निहोत्रार्थमिदं समुक्तं महानुभावेन हि हारितेन ॥ द्वादशांगुलमानं तु व्रतिनां योगिनां सदा । चतुरंगुलं विधातव्यं त्रिकोणं प्रेतकर्मणि ॥ हस्तौ पादौ मुखं पात्रं मण्डलं चार्द्रपञ्चकः । प्रकुर्याद्भोजनं राजन् गृहस्थाश्रमतत्परः ॥ दैवे कार्येऽथवा पैत्र्ये उक्तवान्कमलापतिः । यातुधानाः पिशाचाश्च क्रूराश्चैव तु राक्षसाः । हरन्ति रसमन्नं च मण्डलेन विवर्जितम् ॥

**पंक्ति विभागः**-प्रक्षाल्य पाणी पात्रं तु भस्मना पंक्तिवारणम् ॥ अग्निना भस्मना चैव स्तम्भेन सलिलेन च । द्वारेण चैव मार्गेण पंक्तिभेदो बुधैः स्मृतः ॥ ( अन्यथा तु ) एकपंक्त्युपविष्टानां दुष्कृतं यद्दुरात्मनः । सर्वेषां तत्समं तेषां यावत्पंक्तिर्न भिद्यते ॥ एकपंक्त्युपविष्टानां विप्राणां सह भोजने । यद्येकोऽपि त्यजेत्पात्रं शेषमन्नं न भोजयेत् ॥ करमध्ये स्थिता देवाः करपृष्ठे तु राक्षसाः । तस्मात्तु करपृष्ठेन नान्नं कुर्यात्प्रदक्षिणम् ॥ इति दोषः ।

**अन्नस्तुतिः**-अन्नं दृष्ट्वा प्रणम्यादौ प्राञ्जलिं कारयेत्ततः । अस्माकं नित्यमस्त्वेतदिति भक्त्याथ वन्दयेत् ॥ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहेत्यपः पिबेत् । करेण सलिले विष्णुं ध्यात्वा ब्रह्म पिबेदपः ॥ प्राणाग्निहोत्रं जुहुयाच्छेषं भुंक्ते द्विजोत्तमः । स्वाहान्ताः प्रणवाद्याश्च नाम्ना मन्त्राः प्रकीर्तिताः ॥ चिह्नया च ग्रसेदन्नं दतान्तैस्तन्न संस्पृशेत् । अनिन्द्यं भक्षयेदन्नं वाग्यतोऽन्नमकुत्सयन् । पञ्चग्रासान्महामौनं प्राणाद्यांश्च समाचरेत् ॥

**चित्राहुतयः**-चित्राहुतिबलीन्दद्याद्वलिहीनं न भोजयेत् । तत्र स्थाने करस्पर्शे न भोक्तव्यं कदाचन ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**आपोशनम्**-आपोशनेनोपरिष्टादधस्तादश्नता तथा । अनग्निममृतं चैव कार्यमन्नं द्विजन्मना ॥ अम्बु हस्तेन चादाय यः कुर्याच्चु प्रदक्षिणम् । हिंसितं तत्पिशाचेन अभोज्यं मनुरब्रवीत् ॥ अपोशनमकृत्वा तु यो भुंक्तेऽनापदि द्विजः। भुञ्जानो वा तथा ब्रूयाद्वायव्यष्टशत जपेत् ॥

**प्राणाग्निहोमः**-ब्राह्मणो भोजनं कुर्यात्प्राणाग्निहोत्रपूर्वकम् । यथोक्तविधिना नित्यं न चैतदवगर्हयेत् ॥ प्राणाग्निहोत्रं वक्ष्यामि सर्वयज्ञेषु दुर्लभम् । यं ज्ञात्वा मुच्यते जन्तुर्जन्ममृत्युजरादिभिः ॥ विधिना भुज्यते येन मुच्यते च ऋणत्रयात् । कुलानुद्धरते विप्रो नरकादेकविंशतिम् ॥ सर्वयज्ञफलप्राप्तिः सर्वलोकेषु गच्छति । हृत्पुण्डरीकमरणिं मनोन्मथनसंज्ञकम् ॥ वायुरज्ज्वा मथेदग्निमात्माध्वर्युः प्रकीर्तितः ॥

**प्राणाग्निहोत्रेऽग्निनामानि**—मुखे—**आहवनीयः**, हृदि—**गार्हपत्यः**, नाभौ—**दक्षिणाग्निः** दक्षिणे—**आवसथ्यः**, ऊत्तरे—**सभ्यः**, यथाहुः—"हृदि प्राणो गुदेऽपानः समानो नाभिमण्डले । उदानः कण्ठदेशे च व्यानः सर्वशरीरगः ॥" इति ।

**प्राणाहुतिः**—"प्राणेभ्यस्त्वथ पञ्चभ्य. स्वाहाप्रणवसंयुताः । पञ्चाहुतीस्तु जुहुयात्प्रणवाग्निनिभेषु च ॥ प्राणार्थं मनसा ध्यायेत्समासं पूजयेत्सदा । वामेन पाणिना पात्रं गृहीत्वा भुवि संस्थितम् ॥ तर्जनीमध्यमाङ्गुष्ठैः प्राणस्यैवाहुतिं क्षिपेत् । मध्यमाऽनामिकांगुष्ठैरुदाने चाहुतिं क्षिपेत् । कनिष्ठानामिकांगुष्ठैर्व्यानस्य तदनन्तरम् । कनिष्ठातर्जन्यंगुष्ठैरुदाने चाहुतिं क्षिपेत् ॥ समाने सर्वाङ्गुलिभिः सदा चैवाहुतिर्भवेत् ॥ तर्जनीमध्यासांगुष्ठैर्लमात्प्राणाहुतिर्भवेत् । कनिष्ठानामिकांगुष्ठैरपाने जुहुयाद्बुधः ॥ मध्याऽनामिकांगुष्ठैर्व्यानाय जुहुयादबुधः । कनिष्ठातर्जन्यंगुष्ठैरुदानाथ उदाहृतम् ॥ सर्वांगुलीभिरादाय समानायाहृतं बुधैः । तथैव षष्ठीं हव्यात्तु चैतन्याय सदा बुधः ।

**अन्नार्पणम्**—भोज्यान्नात्किञ्चिदन्नस्य धर्मराजाय वै बलिम् । दत्त्वाऽथ चित्रगुप्ताय प्रेतेभ्यश्चेदमुच्चरेत् ॥ यत्र क्वचन संस्थानां क्षुत्तृष्णोपहतात्मनाम् । प्रेतानां तृप्तयेऽक्षय्यमिदमस्तु यथासुखम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**नियमाः**—" वामहस्ते जलं धृत्वा मणिबन्धे निधाय च । भुञ्जमानः पिबन्वारि नोच्छिष्टं मनुरब्रवीत् ॥ यः पुनर्भोजनं कुर्वन्नश्नन्तं संस्पृशेद्विजः । ततस्तेन न भोक्तव्यं भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥ अमृतं ब्राह्मणस्यान्नं क्षत्रियान्नं पयः स्मृतम् । वैश्यस्य चान्नमेवान्नं शूद्राणामवमं स्मृतम् ॥ षड्भ्योऽन्नमन्वहं दद्यात्पितृयज्ञविधानतः । ततोऽन्यदन्नमादाय निर्गत्य भवनाद्बहिः ॥ काकेभ्यः श्वपचेभ्यश्च प्रक्षिपेद्ग्रासमेव च । उपविश्य गृहद्वारे तिष्ठेद्यावन्मुहूर्तकम् ॥ अप्रमत्तोऽतिथिं लिप्सुर्भावशुद्धः प्रतीक्षकः । आगतं दूरतः ( श्रा ) शान्तं भोक्तुकाममकिञ्चनम् । शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम् । वायसानां कृमीणां च शनकैर्निक्षिपेद्भुवि ॥ विभागशीलो यो नित्यं क्षमायुक्तो दयापरः । भुक्त्वा तु सुखमास्थाय तदन्नं परिणामयेत् ॥ विघसाशी भवेन्नित्यं नित्यं चामृतभोजनः । विघसं भुक्तशेषं तु यज्ञशिष्टं तथाऽमृतम् ॥ पञ्चार्द्रो भोजनं कुर्यात्प्राङ्मुखो मौनमाश्रितः । हस्तौपादौ तथैवास्यमेषु पञ्चार्द्रता मता ॥ न स्पृशेद्वामहस्तेन भुञ्जानोऽन्नं कदाचन । न पादौ न शिरो ब्रूस्तिं न पदा भाजनं स्पृशेत् ॥ भोजनं हवनं दानमुपहारः व्रतिग्रहः । बहिर्जानु न कार्याणि तद्वदाचमनं स्मृतम् ॥ घृतपात्रस्तु भुञ्जीत पञ्चग्रासान्महामुने । शेषमुद्धृत्य भोक्तव्यं पित्रर्थे न तु चोद्धरेत् ॥ "

**रात्रौ दीपः**—" नृणां भोजनकाले तु यदि दीपो विनश्यति । तदन्नं पाणिना स्पृष्ट्वा सावित्रीं मनसा स्मरेत् ॥ पुनर्दीपं ततो लब्ध्वा शेषं भुञ्जीत कामतः । अन्यदन्नं न भोक्तव्यं भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥ "

**भोजनोत्तरं कर्त्तव्यम्**—भोजनान्ते शतपदं गत्वा ताम्बूलभक्षणम् । शयनं वामकुक्षौ चेद्वैषज्यं किंप्रयोजनम् ॥ अगस्त्यं कुम्भकर्ण च शनिं च वडवानलम् । आहारपचनार्थाय स्मरेद्भीमं च पञ्चमम् ॥ आतापी मारितो येन वातापी च निपातितः । समुद्रः शोषितो येन स मेऽगत्यः प्रसीदतु ॥ इत्युक्त्वा तु स्वहस्तेन परिमार्ज्य निजोदरम् । अनायासप्रदायीनि कुर्यात्कर्माण्यतन्द्रितः ॥ निर्माल्यं तुलसीपत्रं भक्षयेद्भोजनोत्तरम् । शुद्धो भवति तत्काले एवं सर्वं विधी-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यते ॥ भोजनानन्तरं विष्णोरर्पितं तुलसीदलम् । भक्षयेद्देहशुद्ध्यर्थं चान्द्रायण-शताधिकम् ॥ ताम्बूले च फले चैव भुक्ते लेहानुलेपने । दन्तलग्नस्य संस्पर्शे नोच्छिष्टं मनुरब्रवीत् ॥ भुक्तोच्छिष्ट सामाघ्राय सर्वेभ्यो घृतवर्जितम् । उच्छिष्ट-भागधेयेभ्यः सोदकं निर्वपेद् भुवि ॥ अमृतापिधानमसीत्यपः प्राश्य भुवि क्षिपेत् । अनन्तरं शिखां चैव बध्नीयाद्वामपाणिना ॥ उत्थाय बहिरागत्य मुखहस्तादि शोधयेत् । आचम्य च ततः कुर्याद्दन्तकाष्ठस्य भक्षणम् ॥ दन्तः लग्नमसंहार्यं लेपं मन्येत दन्तवत् । न तत्र बहुशः कुर्याद्यत्नमुद्धरणं प्रति ॥ आचान्तोऽप्यशुचिस्तावद्यावत्पात्रमनुद्धृतम् । उद्धृतेऽप्यशुचिस्तावद्यावन्नो मृज्यते महीं ॥ भूमावपि हि लिप्तायां तावत्स्यादशुचिः पुमान् ! आसनादु-त्थितस्तस्माद्यावन्न स्पृशते महीम् ॥ सर्वं सशेषमश्नीयाद्घृतपायसवर्जितम् । अग्रांगुलिषु तच्छेषं निधाय भोजनोत्तरम् ॥ जलपूर्णाञ्जलिं कृत्वा पीत्वा चैव तदर्धकम् । अग्रांगुलिस्थितं शेषं भूमौ दत्त्वाऽञ्जलेर्जलम् ॥ शेषं निषिञ्चेतत्रैव पठन्मन्त्रमिमं बुधः । **रौरवे** इत्यादि० ॥

**भोजनप्रकारः**—अश्नीयात्तन्मना भूत्वा पूर्वं तु मधुरान्नकम् । तथा मध्ये कटुतिक्तादिकं ततः ॥ **विष्णुपुराणे**—प्राग्द्रवं पुरुषोऽश्नीयान्मध्ये च कठिनाशनः । अन्ते पुनर्द्रवाशी तु बलारोग्यैर्न मुञ्चति ॥ जठरं पूरयेदर्ध-मन्नैर्भागं जलस्य च । वायो सञ्चारणार्थाय चतुर्थमवशेषयेत् ॥

**मिताहारगुणाः**—अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यमतिभोजनम् । अपुण्यं लोक-विद्विष्टं तस्मात्तत्परिवर्जयेत् ॥ अष्टौ ग्रासा मुनेर्भक्ष्याः षोडशारण्यवासिनः । द्वात्रिंशतु गृहस्थस्य ह्यमितं ब्रह्मचारिणः ॥

**विष्णुपादतीर्थम्**—अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् । विष्णुपादो-दकं तीर्थं जठरे धारयाम्यहम् ॥ ( विष्णुपादामृतं पीत्वा पुनर्जन्म न विदन्ति ॥ ) इति पाठान्तरम् ।

**ब्राह्मणसुवासिनीनामाराधनम्**—ॐ तत्सत् अद्येत्यादिना देश-कालौ संकीर्त्यामुकगोत्रोऽमुकशर्म्माऽहं ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ममुकदेवताप्रीत्यर्थममुककर्माङ्गदेवताप्रीत्यर्थं वा ब्राह्मणसुवासिनीनामाराधनं, तदङ्गत्वेन ब्राह्मणसुवासिनीपूजनं च करिष्ये, इति सङ्कल्पं कृत्वा यजमानो गन्धाक्षतपुष्पैर्ब्राह्मणपूजनं कुर्यात्। यथा-ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे ब्राह्मणाय इदंमासनम्। स्वासनम्। ब्रह्मणे ब्राह्मणाय इदं पाद्यम्। सुपाद्यम्। ब्रह्मणे ब्राह्मणाय इदमर्घ्यम्। अस्त्वर्घ्यम्। ब्रह्मणे ब्राह्मणाय इदमाचमनीयम्। अस्त्वाचमनीयम्। ब्रह्मणे ब्राह्मणाय गन्धाः पान्तु। सौमङ्गल्यं चास्तु। अक्षताः पान्तु। आयुष्यमस्तु। पुष्पाणि पान्तु। सौश्रियमस्तु। ताम्बूलं पांतु। ऐश्वर्यमस्तु। दक्षिणाः पान्तु। बहु देयं चास्तु। नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटी युगधारिणे नमः ॥ १ ॥ एवं ब्राह्मणपूजनं कुर्यात्। ततो यजमानपत्नी सुवासिनीपूजनं कुर्यात् यथा-नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥ इति मन्त्रं पठन्ती गन्धाक्षतपुष्पैः सुवासिनीं संपूज्य भोजनं कारयेत्। तदा पात्रपरिवेषणानन्तरं यजमानने गायत्रीमन्त्रेण पात्रप्रोक्षणं कृत्वा देवेभ्यो नैवेद्यं समर्प्य सव्यहस्ते जलं गृहीत्वा सङ्कल्पं कुर्यात्—तत्रादौ ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम्॥ (वा० सं० २३। ६५ ) ॥ एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः। त्रीँल्लोकान् व्याप्य भूतात्मा भुंक्ते विश्वभुगव्ययः ॥ अनेन ब्राह्मणसुवासितीभोजनेन अमुकदेवता अमुककर्माङ्गदेवता वा प्रीयतां न मम ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥

भोजनप्रयोगः, मण्डलम्—' पंक्तिविभागः '-पात्रस्य समन्तात् ॐ नमो भगवते वासुदेवाय-इति मन्त्रेण दक्षिणतः समंताज्जलधारां कुर्यात्। पात्रेऽन्ने परिविष्टे सति साञ्जलि अन्नं स्तुवीत-ॐ पितुन्नु स्तोषम्मुहोधुर्म्माणन्तविषीम्। यस्य त्रितो व्योजसा व्वृत्रं विपर्व्व मर्द-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



र्यत् ॥ ( वा० सं० ३४ । ७ ) ॥ मा नस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषु रीरिषः । मा नो वीरान्रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥ ( वा० सं० १६ । १६ ) ॥ नमो वऽकिरिकेभ्यो देवानाꣳ हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नमऽआनिर्हतेभ्यः ॥ ( वा० सं० १६ । ४६ ) नमः ÷ शम्भवाय च मयोभवाय च नमः ÷ शङ्कराय च मयस्कराय च नमः ÷ शिवाय च शिवतराय च ॥ ( वा० सं० १६ । ४१ ) ॥

अन्नाभिमन्त्रणम्—' सत्यन्त्वर्त्तेन परिषिञ्चामि ' इति मन्त्रेण प्रातरन्नप्रोक्षणं [ तद्वत् ] ' ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि इति मन्त्रेण रात्रावन्नप्रोक्षणं कुर्यात् । अथान्नं स्पृष्ट्वा ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामु नामासि प्रियन्देवानामनाधृष्टन्देवयजनमसि । ( वा० सं० १ । ३१ । ) ' आत्मन्यग्निध्यानम् '—ॐ अग्निरस्मिञ्जन्मना जातवेदा घृतम्मे चक्षुरमृतम्मऽआसम् ॥ अर्क्कस्त्रिधातू रजसो विमानोऽजस्रो घर्म्मो हविरस्मि नाम । ( वा० सं० १८ । ६६ । ) भूमौ बलिः—ॐ भूपतये स्वाहा नमः । ॐ भुवनपतये स्वाहा नमः । ॐ भूतानां पतये स्वाहा नमः । आचमनार्थं जलमादाय—अन्नं ब्रह्मा रसो विष्णुर्भोक्ता देवो महेश्वरः । एवं ध्यात्वा द्विजो भुंक्ते सोऽन्नदोषैर्न लिप्यये ॥ अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः । त्वं ब्रह्मस्त्वं वषट्कारस्त्वमोंकारस्त्वं विष्णोः परमं पदम् ॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः । प्रप्र दातारन्तारिषऽऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



( वा० सं० ११ । ८३ । ) ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा इति पठित्वा-ऽऽचामेत् ॥ ततः पञ्चवारं ग्रासमादाय पञ्च मन्त्रान् पठेत् तत्र पञ्चमन्त्रा यथा ॐ प्राणाय[1] स्वाहा । ॐ अपनाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा ॥ ततो वामहस्तेन नेत्रयोरुदकं स्पृशेत । अथ शिखाग्रन्थिं[2] विमुञ्चेत् । तत्र मन्त्रो यथा—ब्रह्मपाशसहस्राणि रुद्रशूलशतानि च । विष्णुचक्र सहस्राणि शिखामुक्तिं करोम्यहम् ॥ इति । ततो यथेच्छं भुक्त्वा भोजनान्ते उच्छिष्टशेषान्नस्य पात्रवामभागे पितृतीर्थेन भूम्यां 'चित्राहुतिं' दद्यात । यथा 'मद्भुक्तोच्छिष्टशेषं ये भुञ्जते पितरोऽधमाः । तेषामन्नं मया दत्तमक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥ ' ततः उत्तरापोशनं कुर्यात् । तत्र मन्त्रो यथा- ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा । इति । अथावशिष्टमुदकमुच्छिष्टान्नं चित्राहुतौ पितृतीर्थेन निक्षिपेत् । तत्र मन्त्रो यथा-रौरवे पूयनिलये पद्मार्बुद निवासिनाम् । अर्थिनां सर्वभूतानामक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥ अंगुष्ठमात्रः पुरुषोंगुष्ठं च समाश्रितः । ईशः सर्वस्य जगतः प्रभुः प्रीणातु विश्वभुक् ॥ इति । ततो हस्तौ प्रक्षाल्य शिखां बद्ध्वा तूष्णीं भोजनपात्राद्बलिं वा चित्राहुतिमादायोत्थाय तदन्नं काकेभ्योऽर्पयेत् । पश्चाद्धस्तौ मुखं च सम्यक् क्षालयेत् ॥ आचमनं प्राणायामं[3] च कृत्वा नेत्रोपस्पर्शनं कुर्यात् । तत्र मन्त्रो यथाशर्यातिं च सुकन्यां च च्यवनं शक्रमश्विनौ । भोजनान्ते स्मरेन्नित्यं तस्य चक्षुर्न हीयते ॥ इति ॥ अथोदरे हस्तं परिवर्तयन् ॐ श्श्वा॒त्राः॒ पी॒ता भ॑वत यू॒यमा॑पोऽअ॒स्माक॑म॒न्तरु॒दरे॑ सु॒शेवा॑ः । ताऽअ॒स्मभ्य॑मय॒क्ष्म्मा ऽअ॑नमी॒वाऽअना॑गसः॒ स्वद॑न्तु दे॒वीर॒मृता॑ऽऋता॒वृधः॑ । ( वा० सं० ४ । १२ ) इति पठेत् । अथ—अगस्त्याय नमः, वैनतेयाय नमः, शनये नमः, वडवानलाय नमः, भीमाय नमः, इति मन्त्रान् पठेत् । ततो भगवदर्पितं

---

१ भुवनपतये स्वाहा नमः इत्यपि पाठः । संहितायां तथोक्तत्वात् । २ शिखाविमोचनं च नाधुनिकाः प्रायः समाचरन्ति । ३ आचमनप्राणायामयोर्विधिस्तूक्तःप्राक् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तुलसीदल भुक्त्वा शतपदीं गच्छेत् यथोक्तम्—अगस्त्यं वैनतेयं च शनिं च वडवानलम् । अन्नस्य परिणामार्थं स्मरेद्भीमं च पञ्चमम् ॥ पश्चान्निर्माल्यतुलसीपत्रं भक्षयित्वा शतपदीं गच्छेत् ॥ इति ।

**संक्षेपतो भोजनविधिः**-( यथोक्तं चतुष्कोणमण्डलोपरि पात्रं निधाय तस्मिन् घृतादियुतमन्नं परिविष्य ) 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' इति मन्त्रेण दक्षिणतः तत्पात्रसमन्तात् जलधारया पंक्तिं पृथक्कुर्यात् ॥ पश्चात् अन्नं स्तुवीत- **ॐ पितुन्नु स्तोषम्महो धर्म्माणन्तविषीम् । यस्य त्रितो व्यौजसा वृत्रं विपर्व मर्दयत् ॥** ( वा० सं० ३४ । ७ ) **अन्नप्रोक्षणम्** । दिवा सत्यन्तर्वेतेन परिषिञ्चामि । रात्रौ—ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि ॥ **अन्नाभिमर्शनम्**--ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियन्देवानामनाधृष्टन्देवयजनमसि । ( वा० सं० १ । ३१ ) **भूमौ बलिः**—ॐ भूपतये स्वाहा नमः । ॐ भुवनपतये स्वाहा नमः । ॐ भूतानां पतये स्वाहा नमः । इति प्रति नमोऽन्तं मन्त्रमुपठित्वा भूमौ अन्नं निक्षिप्याचामेत् । तत्र मन्त्रो यथा ( सव्यहस्ते उदकं गृहीत्वा ) ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देहनमीवस्य शुष्मिणः । प्रप्र दातारन्तारिषऽऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥ ( वा० सं० ११ । ८३ ) ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा । इति । अथ पञ्च प्राणानुद्दिश्य पञ्चाहुतीर्दद्यात् तत्र मन्त्रा यथा ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा इति । ततो वामहस्तेन नेत्रयोरुदकं स्पर्शयित्वा शिखां मुञ्चन् तूष्णीं विष्णुं स्मरेत् । ततः यथासुखं भुञ्जीत । भोजनान्ते बदरीफलप्रमाणेन उच्छिष्टशेषान्नस्य पात्रवामभागे पितृतीर्थेन भूम्यां चित्राहुति[1] दद्यात् । पश्चात् उदकं दक्षिणहस्ते गृहीत्वा—ॐ अमृता-

१ चित्राहुतिप्रकारः प्रागुक्तः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**पिधानमसि स्वाहा** इति मन्त्रेणोदकं पीत्वा शेषमुदकमुच्छिष्टान्नचित्राहुतौ पितृतीर्थेन निक्षिपेत् । ततस्तूष्णीं शिखां बध्नाय अथ भोजनपात्राद्वलिं वा चित्राहुतिमादायोत्थाय तदन्नं काकेभ्योऽर्पयेत् ॥ पश्चाद्धस्तौ मुखं च सम्यक् क्षालयेत् ॥ अथाचमनं तूष्णीं कृत्वोदरं परिमृजन् अगस्त्यादीन् स्मरेत् । " अगस्त्यं वैनतेयं च शनिं च वडवानलम् । अन्नस्य परिणामार्थं स्मरेद्भीमं च पञ्चमम् ॥ " इत्युक्तेः । ततः भगवदर्पितं तुलसीदलं भक्षयित्वा शतपदी गच्छेत् । इति संक्षेपतो भोजनविधिः ॥

**ताम्बूलभक्षणम्, मार्कण्डेयः**—सुपक्वं च सुपत्रं च चूर्णेन च समन्वितम् ॥ अदत्त्वा द्विजदेवेभ्यस्ताम्बूलं वर्जयेद्बुधः ॥ एकपूगं सुखारोग्यं द्विपूगं निष्फलं भवेत् । अतिश्रेष्ठं त्रिपूगं च त्वधिकं चैव दुष्यति ॥ पर्णमूले भवेद्व्याधिपर्णाग्रे पापसम्भवः । जीर्णपत्रं हरत्यायुः शिरा बुद्धिविनाशिनी ॥ तस्मादग्रं च मूलं च शिरां चैव विशेषतः । जीर्णपर्णं वर्जयित्वा ताम्बूलं खादयेद्बुधः ॥ **वाचस्पति.**-" प्रभाते पूगमधिकं मध्याह्ने खादिरं तथा । निशासु चूर्णमधिकं ताम्बूलं भक्षयेत्सदा ॥ आद्यं विषोपमं पानं द्वितीयं भेदि दुर्जरम् । तृतीयादनु पातव्यं सुधातुल्यं रसायनम् ॥ ताम्बूलं नातिसेवेत न विरिक्तो बुभुक्षितः । देहदक्केशदन्ताग्निश्रोत्रेन्द्रियबलक्षयः ॥ विना पर्णं मुखे दत्त्वा गुवाकं[1] भक्षयेद्यदि । तावद्भवति चाण्डालो यावद्गङ्गां न पश्यति ॥ " **संग्रहे**-" काश्मीरैलालवङ्गैश्च जातीक्रमुकचूर्णकैः । ताम्बूलं खादयेन्नित्यं खादिरेण समन्वितम् ॥ " रात्रौ तु खादिरं वर्ज्यम् ' इति बहूनां सम्प्रदायो वर्तते ।

**ताम्बूलवर्जने योग्यः, वाचस्पतौ**-" ताम्बूलं विधवास्त्रीणां यतीनां ब्रह्मचारिणाम् । तपस्विनां च विप्रेन्द्र सर्वपुण्यहरं स्मृतम् ॥ "

**इत्यह्नःपञ्चमभागे कर्त्तव्यनिर्देशः ॥**

---

१-गुवाकं नाम पूगफलं बोध्यम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


## अह्नः षष्ठ-सप्तमभागयोःकर्त्तव्यनिर्देशः ।

**कारिका, दक्षः**—' इतिहासपुराणाद्यैः षष्ठसप्तमकौ नयेत् । '

**इतिहासाद्यभ्यसनम्, अत्रिः**—" इतिहासपुराणानि धर्मशास्त्राणि चाभ्यसेत् । वृथा विवादवाक्यानि परिवादांश्च वर्जयेत् ॥ "

**दिवानिद्रादिनिषेधः, दक्षः**—" दिवा स्वापं न कुर्वीत स्त्रियं चैव विवर्जयेत् आयुर्हन्ति दिवानिद्रा दिवा स्त्री पुण्यनाशिनी ॥ "

इत्यहः षष्ठसप्तमभागयोःकर्त्तव्यनिर्देशः ॥

## अह्नोऽष्टमभागे कर्त्तव्यनिर्देशः ।

**कारिका, दक्षः**—" अष्टमे लोकयात्रा तु बहिः सन्ध्या ततः पुनः । होमो भोजनकं चैव यच्चान्यद्गृहकृत्यकम् । कृत्वा चैवं ततः पश्चात्स्वाध्यायं किञ्चिदाचरेत् । प्रदोषपश्चिमौ यामौ वेदाभ्यासेन तौ नयेत् ॥ यामद्वये शयानो हि ब्रह्मभूयाय कल्पते । नैमित्तिकानि काम्यानि निपतन्ति यथा यथा ॥ तथातथैव कार्याणि न कालस्तु विधीयते । सर्वत्र मध्यमौ यामौ हुतशेषं हविश्च यत् ॥ भुञ्जानश्च शयानश्च ब्राह्मणो नावसीदति ॥ "

**लोकयात्रा, ग्रन्थान्तरे**—ग्रामे च यान्यगाराणि देवतानां तदीक्षणात् । लोकयात्रेति कथिता तां कुर्वन्पुण्यभाग्भवेत् ॥

**सायंसन्ध्याकालः, यमः**—" रवेरस्तमयात्पूर्वं घटिकैका यदा भवेत् । सायंसन्ध्यामुपासीत कुर्याद्धोमं च पूर्ववत् ॥ " **भविष्ये**—शौचं कृत्वा यथान्यायमर्द्धास्तमितभास्करे । सायंसन्ध्यामुपस्थाय आसीनस्त्वथ वाग्यतः ॥ **शौनकः**—" अर्धास्तमित आदित्ये पश्चिमाया य उत्तरः । भागस्तन्मुख आसीनः सावित्री वाग्यतो जपेत् ॥ "

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**सायंसन्ध्यास्थलम्, व्यासः**--" बहिः सन्ध्या दशगुणा ह्रदप्रस्रवणेषु च । सा च तीर्थे शतगुणा सहस्रा जाह्नवीतटे ॥ "

**कालातिक्रमे सायंसन्ध्या, जमदग्निः**--" एकाहं चाप्यतिक्रम्य सन्ध्यावन्दनकर्म च । अहोरात्रोषितो भुक्त्वा गायत्र्या अयुतं जपेत् ॥ द्विरात्रे द्विगुणं प्रोक्तं त्रिरात्रे त्रिगुणं भवेत्। त्रिरात्रानन्तरं चेत्स्याच्छूद्र एव न संशयः ॥" **गौतमः**-" सन्ध्याकाले त्वतिक्रान्ते स्नात्वा चैव यथाविधि । जपेदष्टशतं देवीं ततः सन्ध्यां समाचरेत् ॥ " **वसिष्ठः**-" कालातिक्रमणे चैव त्रिसन्ध्यमपि सर्वदा । चतुर्थार्घ्यं प्रकुर्वीत भानोर्व्याहृतिपूर्वकम् ॥ " **यमः**-" प्राणायामत्रयं प्रातः सङ्गवे द्विगुणं चरेत् । मध्याह्न त्रिगुणं प्रोक्तमपराह्णे चतुर्गुणम् ॥ सायाह्णे पञ्चगुणकं सन्ध्यातिक्रमणे भवेत् ॥ "

**कालातिक्रमसन्ध्यायां दिग्विचारः शौनकः**--" दिशोऽष्टधा विभक्तायाः प्रतीच्या भागसप्तकम् । हित्वा दक्षिणतोऽन्यस्तु योऽष्टमो भाग उत्तरः ॥ अस्याभिमुखतो विप्रो भूत्वा प्रयतमानसः । जपन्नासीत सावित्रीं सन्ध्य कृत्स्नामतन्द्रितः ॥

**सायंसंध्यायां मंत्राचमनम्, शौनकः**--' अग्निश्चेत्यनुवाकेन सायंकाले पिबेदपः । '

**सायंसंध्यायामर्घ्यम्, गृह्यपरिशिष्टसूत्रे**--**अथाचम्य दर्भपाणिः पूर्णमुदकाञ्जलिमुद्धृत्यादित्याभिमुखः स्थित्वा प्रणवव्याहृतिपूर्वया सावित्र्या त्रिरर्घ्यं निवेद्य क्षिपेत्** । इति ।

**सायंसन्ध्यायां जपविचारः, कात्यायनः**-" सन्ध्याकाले व्यतीते तु जपं कृत्वा पुनर्मनः । ऋचं वाचं व्यृचं जप्त्वा ततः सन्ध्यामुपासते ॥ " **व्यासः**-" जपेद्वारुणमन्त्रास्तु इमम्मेवरुणादिकान् । चतुर्मन्त्रान्विशेषज्ञः सन्ध्याफलमवाप्नुयात् ॥ "

**सायंसंध्याफलम्, बौधायनः**-" यदुपस्थकृतं पापं यच्च योनिकृतं भवेत् । सायंसन्ध्यामुपस्थाय तेन तस्मात्प्रमुच्यते ॥ "

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**अथ सायंसंध्याप्रयोगः** – उदङ्मुखो यथोक्तस्नानानन्तरं यथाविधि भस्मधारणं कुर्यात् मन्त्रोक्तस्नानकारी चेत्तर्हि तेन निर्जलं भस्म धार्यम्। भस्मधारणादारभ्य हृदि पवित्रकरणपर्यन्तं सर्वो विधिः प्रातः-सन्ध्यावज्ज्ञेयः। **सङ्कल्पः**–अद्येत्यादि ममोपात्तदुरितक्षयार्थं श्रीविष्णुप्रीत्यर्थं सायंसन्ध्योपासनामहं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य साञ्जलि आवाहयेत्--" वृद्धां सरस्वतीं कृष्णां पीतवस्त्रां चतुर्भुजाम्। शङ्खचक्रगदापद्महस्तां गरुडवाहिनीम्। सामवेदकृतोत्सङ्गां सर्वलक्षणसंयुताम्। वैष्णवीं विष्णुदैवत्यां विष्णुलोकनिवासिनीम्। आवाहयाम्यहं देवीमायान्तीं विष्णुमण्डलात्। आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे विष्णवादिनि। सरस्वतिच्छन्दसां मातर्विष्णुयोनि नमोस्तु ते॥" इति। ततः सन्ध्यां कुर्यात्-तत्र प्रणायामान्तो विधिः प्रातःसन्ध्यावत्॥ अथ जलमादाय--अग्निश्चमेति नारायण ऋषिःअग्निर्देवता। अनुष्टुप् छन्दः। आचमने विनियोगः--इति तज्जलं निक्षिप्य आचमनार्थं जलमादाय **ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः। पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यदह्ना पापमकार्षम्। मनसा वाचा हस्ताभ्याम्। पद्भ्यामुदरेण शिश्ना। अहस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्चिद् दुरितं मयि। इदमहं माममृतयोनौ। सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥** इत्याचामेत्। ततो मार्जनादिविधिः प्रातः सन्ध्यावत्॥

अथ पश्चिमाभिमुखस्तिष्ठन्नर्घ्यत्रयं दद्यात्। शेषं प्रातःसन्ध्यावत्। जपमालनासिकाग्रदेशे धृत्वा अनेन सायंसन्ध्याङ्गभूतेन बाह्वल्यगोत्रधारिण्या गायत्र्या यथाशक्ति कृतेन जपकर्मणा भगवान् सविता देवः प्रीयतां न मम। अन्यद् मायत्रीतर्पणं विना प्रातःसन्ध्यावत्। इति सायंसन्ध्याप्रयोगः।

**सायंतर्पणादिनिषेधः, कात्यायनः**—' न हन्तर्ति न होमं च० ' इति वचनात् वाजसनेयिनां सायं तर्पणं वैश्वदेवश्च नास्ति अतस्तद्विधिर्नोक्तः। प्रदोषव्रतं चेत्तर्हि सायं भोजनात्प्राग्वैश्वदेवःकर्तव्यः। परन्तु तर्पणं दिवैव कुर्यात्-इति कात्यायनवचनात्। अयं प्रकारः ब्रह्मयज्ञप्रकरणे द्रष्टव्यः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**पुरुषस्य दीपनिर्वापणे दोषः**—" दीपनिर्वापणात्पुंसः कूष्माण्डच्छेदनात् स्त्रियः । अचिरेणैव कालेन वंशनाशो भवेद् ध्रुवम् ॥ "

**दीपस्तुतिः**—दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः । दीपो हरतु मे पापं संध्यादीप नमोऽस्तु ते ॥ शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं सुखसम्पदम् । शत्रुबुद्धिविनाशं च दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥ " इति दीपं नत्वा तत्सन्निधावाप्तादिकानां कुशलाभिवादनं कुर्यात् । पश्चाद्गृहदेवादीनां पञ्चोपचारैः पूजां कृत्वा । यदि प्रदोषोपवासस्तर्हि षोडशोपचारैर्देवं सम्पूज्य सायं भोजनं कृत्वा ग्रन्थावलोकनेन शर्वरीप्रथमभागं नीत्वा स्वप्यात् ।

**दीपकालः दीपगुणाश्च, मरीचिः**—" रवेरस्तं समारभ्य यावत्सूर्योदयो भवेत् । यस्य तिष्ठेद्गृहे दीपस्तस्य नास्ति दरिद्रता ॥ आयुर्दः प्राङ्मुखो दीपो धनदः स्यादुदङ्मुखः । प्रत्यङ्मुखो दुःखदोऽसौ हानिदो दक्षिणामुखः ॥ "

**दीपलक्षणम्, सुदर्शने**—" नेत्राह्लादकरः सार्चिर्दूरतापविवर्जितः । सुशिखः शब्दरहितो निर्धूमो नातिह्रस्वकः ॥ कोशजं रोमजं वस्त्रं वर्तिकार्ये न योजयेत् ॥ न मिश्रीकृत्य दद्यात्तु दीपं स्नेहे घृतादिक । कार्पासवर्तिका प्रोक्त दीपकृत्येषु सर्वदा । न चैव स्थापयेद्दीपं साक्षाद्भूमौ कदाचन ॥

**अथ संक्षेपतः सायंसन्ध्याप्रयोगः-भस्मधारणम्**—ॐ त्र्यायुषं । १ ॥ ( निर्जलं भस्ममात्र धार्यम् ) । **शिखाबन्धनम्**—मानस्तोके० । २ ॥ **रुद्राक्षमालाधारणम्**—ॐ त्र्यम्बकं० । ३ ॥ **आचमनादि**—ॐ केशवाय नमः स्वाहा इत आरभ्य माधवाय नमः इत्यन्तम् । **हस्तप्रक्षालनादि**—ॐ गोविन्दाय नमः इत्यारभ्य कृष्णाय नमः इत्यन्तम् । **प्राणायामाः**—प्रणवपूर्वक० इत्यारभ्य विनियोगः इत्यन्तम् । **आत्मनः समन्तात्प्रदक्षिणवदुदकक्षेप-**

---

१ अयं च दीपनिर्वापणे दोषः आब्दीय पितातिरिक्तविषयः । २ प्रत्यङ्मुखनिषेधस्तु नित्यदीपविषयः श्रीकार्तवीर्यादिदीपः प्रत्यङ्मुख एव स्थापनीयः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



णम्—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । पूरकादिप्राणायामाः-ॐ भूः० इत्यारभ्य स्वरोम् इत्यन्तम् । हृदि पवित्रकरणम्—ॐ विष्णुर्विष्णुः० इत्यारभ्य शुचिः पर्यन्तम् सङ्कल्पः—ममोपात्तदुरितक्षय-द्वारा श्रीविष्णुप्रीत्यर्थं सायंसध्योपासनमहं करिष्ये । भूप्रार्थनाः—पृथ्वी-त्वस्य० इत्यारभ्य चासनमित्यन्तम् । अभिषेकः—ॐ : इत्यारभ्य सत्यं पुनातु इत्यन्तम् ॥ अम्बुप्राशनम्—अग्निश्चेमेति नारायण ऋषि-अग्निर्देवता अनुष्टुप् छन्दः अम्बुप्राशने विनियोगः—ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः । पापेभ्यो रक्षन्ताम् । यदह्ना पाप-मकार्षम् । मनसा वाचा हस्ताभ्याम् । पद्भ्यामुदरेण शिश्ना । अहस्तदवलुम्पतु । यत्किञ्चित् दुरितं मयि । इदमहं माममृत-योनौ । सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा । द्विराचमनम्-ॐ केशवाय० इत्यारभ्य माधवाय नमः स्वाहा । इत्यन्तम् । हस्त-प्रक्षालनम्—ॐ गोविन्दाय नमः । मार्जनम्—आपोहिष्ठ० इत्यारभ्य यथाचनः[1], इत्यन्तम् । जलावग्रहणम्—सुमित्रिया०इत्यारभ्य द्विष्मः इत्यन्तम्।अघमर्षणम्—द्रुपदादिव०इत्यारभ्य मैनसःइत्यन्तम् ॐ ऋतं च सत्यं०इत्यारभ्य मथोस्वःइत्यन्तं च । अर्घ्यम्—गायत्रीमन्त्रे णार्घ्यत्रयं दद्यात् यथा,—ॐ भूर्भुवः स्वः । ॐ तत्सवि० विष्णुस्वरू-पिणे सूर्यनारायणाय नमः इदमर्घ्यं दत्तं न मम ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः । ॐ तत्सवि० वि० इ० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवि० वि०इ०॥ आचम्य प्राणानायम्य । सूर्योपस्थानम्—इद्धु-यन्तमस०० इत्यारभ्य शृणुत इत्यन्तम् मन्त्रचतुष्टयम् । सरस्वत्यावाह-नम्—"वृद्धां सरस्वतीं कृष्णां पीतवस्त्रां चतुर्भुजाम् । शङ्खचक्रगदापद्महस्तां

---

१ सायं सूर्यार्घ्यदानं स्वासनासीन एव कुर्यात् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



गरुडवाहिनीम् ॥ सामवेदकृतोत्सङ्गां सर्वलक्षणसंयुताम् । वैष्णवीं विष्णुदैवत्यां विष्णुलोकनिवासिनीम् ॥ आवाहयाम्यहं देवीमायान्तीं विष्णुमण्डलात्! आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे विष्णुवादिनि । सरस्वति च्छन्दसां मातर्विष्णुयोनि नमोऽस्तु ते ॥'' **तेजोऽसि०** इत्यारभ्य **यजूंषि** इत्यन्तम् । **गायत्र्यस्येकपदी** इत्यारभ्य **सावदोम्** इत्यन्तं च सरस्वत्या (गायत्रीरूपाया) आवाहनमुपस्थानं वा । **गायत्रीजपः—प्रणवस्य०** इत्यारभ्य **ॐ तत्सवि०** इत्यन्तम् । **जपान्ते षडङ्गन्यासाः—ॐ अंगुष्ठाभ्रे०** इत्यारभ्य **माधव** मित्यन्तम् । **सूर्यप्रदक्षिणा—विश्वतश्चक्षुः** इत्यारभ्य **एकं ÷** इत्यन्तम् । **दिग्देवतानां । नमस्कारः पूर्वे-इन्द्राय०** इत्यारभ्य **अनन्ताय नमः** इत्यन्तम् । **जपनिवेदनम्—देवागातुविश०** इत्यारभ्य **सङ्ख्याकेन** पर्यन्तम् । सायंसन्ध्याङ्गभूतगायत्रीमन्त्रजपाख्येन कर्मणा विष्णुस्वरूपी श्रीसूर्यनारायणः प्रीयतां न ममः । **गोत्रोच्चारणं तथा अभिवादनम्--अमुक गोत्रो०** इत्यारभ्य **शर्माऽहमित्यन्तम् । भो बाहुल्यगोत्रधारिणि विष्णुरूपे सरस्वति त्वामभिवादयामि । भो वैश्वानर०** इत्यारभ्य **प्रियवादिनि** इत्यन्तम् । **प्रार्थना—आकाशा०** इत्यारभ्य **तमच्युत**मित्यन्तम् । **अर्पणम्--**अनेन सायंसन्ध्योपासनाख्येन कर्मणा भगवान् विष्णुस्वरूपी परमेश्वरः प्रीयतां न मम । **शिखामुक्तिः--ब्रह्मपाशस०** इत्यारभ्य **करोम्यहम्** इत्यन्तम् ॥ **शिखाबन्धनम्**-तूष्णीम् । **सन्ध्याभूमृत्तिकावन्दनम्--ॐ भूर्भुवः स्वः** इत्यारभ्य **ॐ** इत्यन्तम् । **ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ॥** इति संक्षेपतः सायसन्ध्याप्रयोगः ॥

**अथ सायंपञ्चोपचारपूजाप्रयोगः--**आचम्य प्राणानायम्य **संकल्प**सद्यः ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं **ॐ** भूर्भुवः स्वः अमुकपञ्चा-

---

१ अत्र संक्षेपेण दर्शिता मन्त्राः श्लोका वा सम्पूर्णतया सन्ध्याप्रयोगे द्रष्टव्याः ।
२ आचमनप्राणामयोर्विधिः प्रागुक्तः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यतनदेवताप्रीत्यर्थं पञ्चोपचारपूजनमहं करिष्ये। गन्धम्—(श्रीखण्डं च०)-ॐ तें युज्ञं०। (वा० सं० ३१। ९)॥ ॐ भू० अ० पं० गन्धं समर्पयामि। पुष्पम्—(माल्यादी०) --ॐ यत्पुरुषं। (वा० सं० ३१। १०)॥ ॐ भू० अ० पं० पुष्पाणि स० धूपः—(वनस्प०)-ॐ ब्रह्मणो०। (वा० सं० ३१। ११)॥ ॐ भू० अ० पं० धूपं स०। दीपः--(तैलं च वर्तिसं०) ॐ चन्द्रमा०। (वा० सं० ३१। १२)॥ ॐ भू० अ० पं० दीपं दर्शयामि। नैवेद्यम्—(शर्कराधृ०) ॐ नाभ्याऽआ०। (वा० सं० ३१। १३)॥ ॐ भू० अ० पं० नैवेद्यं समर्पयामि। अर्पणम्—अनेन पञ्चोपचारपूजनेन अमुकदेवता प्रीयतां न मम। शङ्खोदकेन स्वशरीरं मार्जयेत्। गन्धतिलकं स्वयं कुर्यात॥ इति सायं पञ्चोपचारपूजाप्रयोगः॥

दम्पत्योर्व्यवायः, पारस्करगृह्यसूत्रे--चतुर्थ्यामपररात्रे-ऽग्न्तरतोऽग्निमुपसमाधाय दक्षिणतो ब्रह्माणमुपवेश्योत्तरत उदपात्रं प्रतिष्ठाप्य स्थालीपाकङ्क श्रपयित्वाऽऽज्यभागाविष्ट्वाऽऽज्याहुतीर्जुहोत्यग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकामऽउपधावामि याऽस्यै पतिघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। वायो प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकामऽउपधावामि याऽस्यै पजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। सूर्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकामऽउपधावामि याऽस्यै पशुघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। चन्द्र प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकामऽउपधावामि याऽस्यै गृहघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। गन्धर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानां

---

१ अत्र संक्षिप्ततया दर्शिता मन्त्राः श्लोका वा देवार्चनपद्धतौ द्रष्टव्याः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकामऽउपधावामि याऽस्यै यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहेति स्थालीपाकस्य जुहोति प्रजापतये स्वाहेति हुत्वा हुत्वैतासामाहुतीनामुद्-पात्रे सङ्स्रवान्स्समवनीय ततऽएनां मूर्द्धन्यभिषिञ्चति या ते पतिघ्नी पजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निन्दिता तन्-र्जारघ्नी ततऽएनां करोमि सा जीर्य त्वं मया सहासावित्य-थैनाङ् स्थालीपाकं प्राशयति प्राणैस्त प्राणान्त्सन्दधाम्य-स्थिभिरस्थीनि माङ्सैर्माङ्सानि त्वचा त्मचमिति । तस्सा-देवंविच्छ्रोत्रियस्स दारेण नोपहासमिच्छेदुत ह्येवंवित्परो भवति तामुदह्य यथर्तु प्रवेशनं यथाकामी वा काममाविज-नितोः सम्भवामेति वचनादथास्यै दक्षिणाङ्समधि हृदय-मालभते यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम् । वे-दाहं तन्मां तद्विद्यात्पश्येम् शरदः शतं जीवेम शरदः शतङ् शृणुयाम शरदः शतमित्येवमतऽऊर्ध्वम् ॥ ११ ॥ अथर्तुमतीं जायामभिगच्छेत्पिण्डपितृयज्ञेन यजेत मध्यमपिण्डं पत्नी प्राश्नाति पुत्रकामा ततऽएतामाहुतिं जुहोत्याधत्त पितर इत्यलङ्कारमवजिघ्रत्यायन्तु नऽइति जपत्येवमर्थर्तुमती जाया हृदयमालभ्य पूर्ववत्सव्येन पाणिनोपस्थमभिमृशति भग प्रणेतरिति प्रागुतेदानीमिति रेतो मृत्रमिति सन्धत्ते गाय-त्रेणेति प्रतिमन्त्रं मन्थति पुत्रकामोऽभिगच्छेन्नित्यम् ॥ १३ ॥ अथ गर्भाधानङ् स्त्रियाः पुष्पवत्याश्चतुरहाद्ऊर्ध्वङ् स्नात्वा विरजायास्तस्मिन्नेव दिवाऽआदित्यं गर्भमित्यादित्यमवेक्षते गृहे वा स्नापयित्वा तामभिगच्छेदिति श्रुतेपतस्मिन्प्रजायाः सम्भवकाले निशायां कुर्याद्यदि दिवा मथुनं कुर्यात् क्री-बाऽअल्पवीर्याऽअल्पायुषश्च प्रसूयन्ते तस्मादेतद्वर्जयेत्प्रजा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कामो गृही । श्रुतिस्मृत्यविरोधाभ्यां दक्षिणेन पाणिना ऊरू प्रसार्य प्रजास्थानमभिमृशति पूषा भगष्टःसविता मे ददातु रुद्रः कल्पयतु ललामगु । विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु । आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ॥ गर्भं धेचि सिनीवालि गर्भं धेहि पृथुष्टुके । गर्भ तऽअश्विनौ देववाधत्तां पुष्करस्रजाविति सष्टःसृजेथास्तेजो वैश्वा नरो दद्याद्ब्रह्माणमामन्त्रयते ब्रह्मा गर्भं दधात्विति प्राङ्मुख उदङ्मुखो वोपविष्टो मन्थेद्रेतो मूत्रमिति चैके स्रावणं कुर्यात् ॥ १४ ॥ सा यदि गर्भं न दधीत सिंष्टःह्याः श्वेतपुष्पायाऽउपोष्य पुष्येण मूलमूत्थाप्य चतुर्थेऽहनि स्नातयां निशायामुदपेषं पिष्ट्वा दक्षिणस्यां नासिकायामासिञ्चतीयमोषधी त्रायमाणा सहमाना सरस्वती । अस्याऽअहं बृहत्याः पुत्रः पितुरिव नाम जग्रभमिति ॥ १५ ॥

दम्पतियोग्यायोग्यत्वविचारः, याज्ञवल्क्यः—" अविप्लुत ब्रह्मचर्यो लक्षण्यां स्त्रियमुद्वहेत् । अनन्यपूर्विकां कान्तामसपिण्डां यवीयसीम् ॥ अरोगिणीं भातृमतीमसमानार्षगोत्रजाम् । पञ्चमात्सप्तमादूर्ध्वं मातृतः पितृतस्तथा ॥ दशपूरुषविख्याताच्छ्रोत्रियाणां महाकुलात् । स्फीतादपि न सञ्जारिरोगदोषसमन्विताम् ॥ एतैरेव गुणैर्युक्तःसवर्णः श्रोत्रियो वरः । यत्नात्परीक्षितः पुंस्त्वे युवा धीमाञ्जनप्रियः ॥ "

प्रजोत्पादने दम्पतियोग्यायोग्यत्वविचारः, सुश्रुते भगवान् धन्वन्तरिः—" अथास्मै पञ्चविंशतिवर्षाय द्वादशवर्षां पत्नीमावहेत् । पित्र्यधर्मार्थकामप्रजाः प्राप्स्यतीति ॥ " किंच—" तद्वर्षा द्वादशात्काले वर्तमानगसृक् पुनः । जरापक्वशरीराणां याति पञ्चाशता क्षयम् ॥ ऊनषोडशवर्षायामप्राप्तः पञ्चविंशतिम् । यद्याधत्ते पुमान् गर्भं कुक्षिस्थः स विपद्यते ॥ जातो वान चिरं जीवेज्जीवेद्वादुर्बलेन्द्रियः । तस्मादत्यन्तबालायां गर्भाधानं न कारयेत् ॥ " अति-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वृद्धायां दीर्घरोगिण्यामन्येन वा विकारेणोपसृष्टायां गर्भाधानं नैव कुर्वीत । पुरुषस्याप्येवंविधस्य त एव दोषाः सम्भवन्ति ।

**ऋतुमतीस्त्रीधर्माः, धन्वन्तरिः**—ततः स्त्रियं स्नातां चतुर्थेऽहनि धौतवाससमलङ्कृतां कृतमङ्गलस्वस्तिवाचनां भर्ता पश्येत् । तत्र—रात्रौ—परस्परोपकारात्परस्परानुग्रहात्परस्परानुप्रवेशाच्च । ततःस्त्रीपुंसंयोगे तेजः शरीराद् वायुरुदीरयति । ततस्तेजोऽनिलसन्निपाताच्छुक्रं च्युतं योनिमभिप्रतिपद्यते । संसृज्यते चार्तवेन । ततोऽग्निसोमसंयोगात्संसृज्यमानो गर्भो गर्भाशयमनुप्रतिपद्यते **आचारार्के**—धोतवस्त्रं च ताम्बूलं संयोगे च सुखावहम् । भर्तुः पादौ नमस्कृत्य पश्चाच्छय्यां समाविशेत् ॥ संस्मृत्य परमात्मानं पत्न्या जंघे प्रसारयेत् । रेतः सिञ्चेत्ततो योन्यां तस्माद्गर्भ बिभर्त्तिति ॥ **उज्ज्वलायाम्**—उपचारक्रियां केलिः स्पर्शो भूषणवाससाम् । एकशय्यासनक्रीडाश्चुम्बनालिङ्गने तथा ॥ कोपो रोषश्च निर्भर्त्सः सम्भोगे च न दोषभाक् । कुञ्चुकेन समं नारी भर्तुः सङ्गं समाचरेत् । त्रिभिर्वर्षैश्च मध्ये वा विधवा भवति ध्रुवम् ॥ **शम्भुरहस्ये**—गवा पश्चाद्विजस्यांघ्रियोंगिनां दृत्कवेर्वचः । परं शुचितमं विद्यान्मुखं स्त्रीवह्निवाजिनाम्॥

**गर्भोत्पत्तिविचारः, धन्वन्तरिः**—तत्रैव—" शुक्रबाहुल्यात्पुमानार्तवबाहुल्यात्स्त्री साम्यादुभयोर्नपुंसकमिति । ऋतुस्तु द्वादशरात्रामवति नष्टार्तवः इति । विकल्प्यैवं चतुर्थ्यां षठ्यामष्टम्यां दशम्यांद्वादश्यां चोपेयादयं पुत्रकामः " अतः पञ्चम्यां सप्तम्यां नवम्यामेकादश्यां च स्त्रीकामःत्रयोदशीप्रभृतयो निन्द्याः॥

**गर्भिणीलिङ्गानि, धन्वन्तरिः**—श्रमो ग्लानिः पिपासा सक्थिसदनं शुक्रशोणितयोरवबन्धः स्फुरणं च योनेः कृष्णमुखता रोमराज्युद्गमस्तथा । अक्षिपक्ष्माणि चाप्यस्याः सम्मील्यन्ते विशेषतः ॥ अकामतश्छर्दयति गन्धादुद्विजते शुभात् । प्रसेकः सदनं चाऽपि गर्भिण्या लिङ्गमुच्यते ॥

**गर्भिणीकर्माणि, धन्वन्तरिः**—तदा प्रभृत्येव व्यायामं व्यवायमपतर्पणमतिकर्षणं दिवास्वप्नं रात्रिजागरणं शोकं यानावरोहणं भयमुत्कटकासनं चैकान्ततः स्नेहादिक्रियां शोणितमोक्षणं चाऽकाले वेगविधारणं च न सेवेत ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**गर्भिण्यकर्मकरणात्परिणामः, धन्वन्तरिः**----दोषाभिघातैर्गर्भिण्या यो यो भागः प्रपीड्यते । स स भागः शिशोस्तस्य गर्भस्थस्य प्रपीड्यते ॥

**ऋतुस्नातायां गमनम्, पराशरः**--ऋतुस्नाता तु या नारी भर्तारं नोपसर्पति । सामृता नरकं याति विधवा च पुनः पुनः ॥ ऋतौ स्नातां तु यो भार्यां सन्निधौ नोपगच्छति । घोरायां भ्रूणहत्यायां भुज्यते नात्र संशयः॥ अदुष्टापतितां भार्यां यौवने यः परित्यजेत् । सप्त जन्म भवेत्स्त्रीत्वं वैधव्यं च पुनःपुनः॥ **याज्ञवल्क्यः**----लोकानन्त्यं दिवः प्राप्तिः पुत्रपौत्रप्रपौत्रकैः । यस्मात्तस्मात्स्त्रियः सेव्या भर्तव्याश्च सुरक्षिताः ॥ षोडशर्तुनिशाः स्त्रीणां तासु युग्मासु संविशेत् । ब्रह्मचार्येव पर्वण्याद्याश्चतस्रस्तु वर्जयेत् ॥

**स्त्रीणां मैथुनात्प्राग्विधिः, धन्वन्तरिः**अलब्धगर्भायाश्चैतेष्वहःसु लक्ष्मणावटशृङ्गासहदेवाविश्वदेवानामन्यतमां क्षीरेणाभिषुत्य त्रीश्चतुरो वा बिंदून् दद्याद्दक्षिणे नालापुटे पुत्रकामायै न च ताम्बिष्ठीवेत्॥ उक्तं च-आहाराचारचेष्टाभिर्यादृशीभिःसमन्वितौ । स्त्रीपुंसौ समुपेयातां तयोःपुत्रोऽपि तादृशः ॥ **परभ्रकर्मणा** चोदितं जन्तोर्भवितव्य पुनर्भवेत्।यथा यथा दैवयोगाद्दौहृदं जनयेद्धृदि ।

**वर्ज्यास्त्री, धन्वन्तरिः**--स्तोकां तु न स्त्रियं गच्छेन्नातुरां न रजस्वलाम् नाऽतिबालां न कुपितामप्रशस्तां च गर्भिणीम् ॥ **शिवसंहितायां**--मासे षष्ठे सप्तमेवाऽष्टमे वा प्राप्ते पत्न्या नैव कुर्यात्कदाचित् । होमं यानं देवयात्रां तथैव तस्या हस्तेनाशनं विप्रपुण्यम् ॥

**रतिवर्ज्यदिनानि, मनुः**--तासामाद्याश्चतस्रस्तु निन्दितैकादशी तथा । त्रयोदशी च शेषास्तु प्रशस्तास्त्वत्र रात्रयः ॥ अमावास्याऽष्टमी चैव पौर्णमासी चतुर्दशी । ब्रह्मचारी भवेन्नित्यमप्यृतौ स्नातको द्विजः ॥

**अष्टाङ्गमैथुनम्, वाचस्पतिः**--स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम् । सङ्कल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिष्पत्तिरेव च । एतन्मैथुनमष्टाङ्गं प्रवदन्ति

---

१ गर्भस्थित्यपेक्षयेदमुक्तम् । २ तासामिति–तासामृतुमतीनामित्यर्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मनीषिणः ॥ **दक्षश्च**--स्त्रीणां स्मरणादिषु अष्टसु यदभावो ब्रह्मचर्यम् ॥ इति । अष्टस्विति अष्टविधेषु मैथुनेषु ॥

**शयनकालः, याज्ञवल्क्यः**--उपास्य पश्चिमां सन्ध्यां हुत्वाऽग्नींस्तानुपास्य च । भृत्यैः परिवृतो भुक्त्वा नातितृप्त्याथ सविशेत् ॥ **धन्वन्तरिः**--पूर्वदेहानुभूतांस्तु भूतात्मा स्वपतः प्रभुः । रजोयुक्तेन मनसा गृह्णात्यर्थान् शुभाशुभान् ॥ **यमः**--पूर्वरात्रे व्यतीते तु सङ्गच्छेद्रतिमन्दिरम् । पादौ प्रक्षालयेत्पूर्वं पश्चाच्छय्यां समाविशेत् ॥

**शयने भूमिः, मात्स्यैः**- शुचिदेशं विविक्तं तु गोमयेनोपलेपयेत् । वैदिकैर्गारुडैर्मन्त्रैरभिमन्त्र्य स्वपेत्ततः ॥ मङ्गल्यं पूर्णकुम्भं च शिरःस्थाने निधापयेत् । रात्रिसूक्तं जपन् रात्रौ राक्षिक्षेमो भवेन्नरः ॥

**शय्याविचारः, शिल्पशास्त्रैः**--चतुरशीतिपर्वाणि दैर्घ्येण परिकल्पयेत् । षष्टयंगुलानि विस्तारं मञ्चकं हस्तसंमितम् ॥ एवं शय्या विधातव्या सर्वेषां शयनोचिता । मानाधिक्ये दरिद्रः स्यान्मानहीने सुखक्षयः ॥

**अयोग्या शय्या, विष्णुपुराणैः**- न विशालां न वा भग्नां नासम मलिनां न च । च जन्तुमयीं शय्यामधितिष्ठेदनास्तृताम् ॥

**पर्यङ्कः, विष्णुपुराण एवः**--आयामः सप्ततालः स्याच्चतुस्तालं सुविस्तृतः । द्वितालमुन्नतो ज्ञेय एतत्पर्यंकलक्षणम् ॥

**तालादिप्रमाणम्,- विष्णुपुराणैः**--अंगुष्ठादिकनिष्ठान्तं भवेन्मानचतुष्टयम् । प्रादेशतालगोकर्णा वितस्तिस्तु यथाक्रमम् ॥

**निषिद्धं शय्यागारम्, मार्कण्डेयः**--नार्द्रपादा न नग्नश्च नोत्तरापरमस्तकः । नाकाशे सर्वतः शून्ये न च चैत्यद्रुमे तथा ॥ **गार्ग्यः**— शून्यालये श्मशाने च एकवृक्षे चतुष्पथे । महादेवगृहे वापि मातृवेश्मनि न स्वपेत् । यक्षनागायतने स्कन्दस्यायतने तथा । कूलच्छायासु च तथा शर्करा-

---

१ पूर्वमितिशयनादितिशेषः । शयने आर्द्रपादतायां निषेधात् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


लोष्टपांसुषु ॥ न स्वपेच्च तथा भूमौ विना दीक्षां कथञ्चन । धान्यगोधन-विप्राणां कुरूणां च तथोपरि ॥ मृतदन्तमये चैव विद्युद्दग्धे पलाशने । नशयीत नरो धान्यं शयने पञ्चदारुजे ॥

**पञ्च निषिद्धानि दारूणि, मार्कण्डेयः**—पञ्च दारुणि चोक्तानि चूतजम्बुद्रुमौ तथा । अश्मपीठोत्थितश्चैव स्वेन सिक्तस्तरुस्तथा ॥ करिभमस्तथा चैव न शयीत क्वचिन्नरः ॥

**उक्तशय्यादीनि, धन्वन्तरिः**—शयनासनयानानि मयोज्ञानि मृदूनि-च । निद्रानाशे तु कुर्वीत तथाऽन्यान्यपि बुद्धिमान् ।

**शयने दिग्विचारः, मार्कण्डेयः**—प्राक्शिराः शयने विन्द्याद्धन-मायुश्च दक्षिणे । पश्चिमे प्रबला चिन्ता हानिर्मृत्युरथो ॥ **गार्ग्यः**—स्वगृहे प्राक्शिराः शेते श्वाशुर्ये दक्षिणाशिराः । प्रत्यक्शिरा प्रवासे तु न कदाचिदु-दक्शिराः ॥ **विष्णुपुराणे**—प्राच्यां दिशि शिरः शस्तं याम्यायामथवा नृप । सदैव स्वपतः पुंसो विपरीतं तु रोगदम् ॥

**दिवाशयने योग्याः, धन्वन्तरिः**—दिवास्वप्नं च तृट्छूलहिक्का-ऽजीर्णातिसारिणाम् ॥ ( अन्यैस्तु दिवास्वप्नं वर्ज्यम् ) ॥

**शयन आवश्यककर्माणि, मार्कण्डेयः**—रात्रिसूक्तं जपन्स्मृत्वा देवांश्च सुखशायिनः । नमस्कृत्याव्ययं विष्णुं समाधिस्थं स्वपेन्निशि ॥ **दक्षः**—निद्रासमयमासाद्य ताम्बूलं वदनात्त्यजेत् । पर्यङ्कात्प्रमदां भालात्पुण्ड्रं पुष्पाणि मस्तकात् ॥ **गार्ग्यः**—यानि कानि च पुष्पाणि यत्किञ्चिदनुलेपनम् । अलक्ष्मी-परिहारार्थं नित्यं कुरु युधिष्ठिर ॥ **अन्यच्च**—उपानहौ वेणुदण्डमम्बुपात्रं तथैव च । ताम्बूलादीनि सर्वाणि समीपे स्थापयेन्निशि ॥

**शयनात्प्राक् स्मरणे योग्याः देवाद्याः ग्रन्थान्तरे**—जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः । अठव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पातु केशव ॥ जले

---

१ तत्रोपानहौ पार्श्वदेशे, वेणुदण्डो दक्षबाहुदेशे, अम्बुपात्रं शिरोभागे, ताम्बूलादीनि यथासम्भवं समीप एव दक्षिणे वामे वा पार्श्वे, स्थापयेदिति भावः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रक्षतु नन्दीशः स्थले रक्षतु भैरवः । अटव्यां वीरभद्रश्च सर्वतः पातु शङ्करः ॥ अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः । बीभत्सुर्विजयी कृष्णः सव्यसाची धनञ्जयः ॥ तिस्रो भार्याः कफल्लस्य दाहिनी मोहिनी सती । तासां स्मरणमात्रेण चोरो गच्छति निष्फलः ॥ कफल्लकः । कफल्लकः । कफल्लकः ॥

**सुखशायिनां स्मरणम्, गोभिलः**--अगस्तिर्माधवश्चैव मुचुकुन्दो महाबलः । कपिलो मुनिरास्तीकः पञ्चैते सुखशायिनः ॥ **हारीतः**-नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि । नमोऽस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विषसर्पतः ॥ सर्पापसर्प भद्रं ते दूरं गच्छ महाविष । जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मर ॥ आस्तीकवचनं श्रुत्वा यः सर्पो न निवर्त्तते । शतधा भिद्यते मूर्ध्नि शिंशवृक्षफलं यथा ॥ एतान् गारुडमन्त्रांस्तु निशायां पठते यदि । मुच्यते सर्पबाधाभ्यो नात्र कार्या विचारणा ॥ ऋग्वेदीयशान्तिपाठे—स्वप्नःस्वप्नाधिकरणे सर्वान्निष्वापयाजिनम्। आसुर्यमन्यात्स्वापयद्वच ऽळह जाम्रियादुहम् ॥ अजगरो नाम सर्पः सर्पिरविषोमहान् । तस्मिन्हि सर्पः सुषुप्तस्तेन त्वा स्वापयामसि ॥ सर्पः सर्पो अजगरः सर्पिरविषो महान् । यस्य शुष्कात्सिन्धवस्तस्य गाधमशीमहि ॥ कालिको नाम सर्पो नवनागसहस्रबलः । यमुनह्रदे ह सो जातो यो नारायणवाहनः । यदि कालिकंदूतस्य यदि कां: काळिकाद्भयात् । जन्मभूमिमतिक्रान्तो निर्विषो याति काळिकः । आयाहीन्द्र पथिभिरीळितेभिर्यज्ञमिमन्नो भागधेयं जुषस्व॥तृषां जंहुर्मातुळस्येव योषा भागस्ते पेतृष्वसर्यो वपामिव । यशस्करं बलवन्तं प्रभुत्वं तमेव राजाधिपतिर्बभूव ॥ सङ्कीर्णनागाश्वपतिर्नराणां सुमङ्गल्यं सततं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


दीर्घमायुः। कर्कोटको नाम सर्पो यो दष्टीविष उच्यते। तस्य सर्पस्य सर्पत्वं तस्मै सर्प नमोऽस्तु ते। अतिकालिकरौद्रस्य विष्णुसोमेन भामिनि। यमुनन्नदिकालिकं ते विष्णुस्तोत्रमनुस्मरन्॥ २०॥ मा बिभेर्न मरिष्यसि चरित्वा पामि सर्वतः। घनेनहन्मिवृश्चिकमहं दण्डेनागतम्॥आदित्यरथवेगेन विष्णोर्बाहुबलेन च। गरुडपक्षनिपातेन भूमिंगच्छमहायशाः॥ गरुडस्य जातमात्रेण त्रयोलोकाःप्रकम्पिताः॥ प्रकम्पिता मही सर्वा सशैलवनकानना॥ गगनं नष्टचन्द्रार्कं ज्योतिषं न प्रकाशते। देवता भयभीताश्च मारुतो नप्लवायति मारुतो नप्लवायत्यो नमः॥ भोसर्प भद्रं भद्रं ते दूरं गच्छ महायशाः। जन्मेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मर॥ आस्तीकवचनं श्रुत्वा यः सर्पो न निवर्तते। शतधा भिद्यते मूर्ध्नि शिंशवृक्षफलं यथा॥ अगस्त्यं माधवं चैव मुचुकुन्दो महामुनिः। कपिलो मुनिरास्तीकः पञ्चैते सुखशायिनः॥ नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि। नमोऽस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विषसर्पतः॥ यो जरत्कारुणा जातो जरत्कन्यां महायशाः। तस्य सर्पोऽपि भद्रं ते दूरं गच्छ महायशाः॥ २१॥ आस्तीकः। आस्तीकः। आस्तीकः।

अथ रात्रिस्मरणसूक्तम्--हरिः—ॐ आरात्रिपार्थिवरजः

---

१ इदं रात्रौ शयनावसरे पठेत्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


रजं÷ पितुरप्रायि धामभिः । दिवꣳ सदाꣳसि बृहती वितिष्ठस ऽआन्त्वेषं वर्त्तते तमः । ( वा० सं० ३४ । ३२ ) ॥ उषस्तच्चित्रमाभगुस्मभ्यं वाजिनीवति येन तोकञ्च तनयञ्च धामहे । ( वा० सं० ३४ । ३३ ) ॥ इति रात्रिस्मरणसूक्तम् ॥

आचारसम्पत्तौ फलश्रुतिः—एवं यथोक्तविधिना नित्याचारसम्पन्नो ब्राह्मण इहैव ब्रह्मर्षित्वमुपेत्यान्ते ब्रह्मसायुज्यमाप्नोति ॥ आचारसम्पन्नस्य ब्रह्मर्षित्वमाह यथा--भगवान् धन्वन्तरिः--जपव्रततन्त्रचर्यहोमाध्ययनसेविनम् । ज्ञानविज्ञानसम्पन्नमृषिसत्त्वं नरं विदुः ॥ ॐ तत्सत् ॥ ॐ नमो याज्ञवल्क्याय । ॐ नमो याज्ञवल्क्याय । ॐ नमो याज्ञवल्क्याय ॥

इत्याह्निककर्मसूत्रावलौ अह्नोऽष्टमभागे कर्तव्यनिर्देशः ॥

---

## समयविशेषे कर्त्तव्यनिर्देशः ।

श्रावणीकर्म्म,पारस्करगृह्यसूत्रे-अथातोऽध्यायोपाकर्म्मौषधीनां प्रादुर्भावे श्रवणेन श्रावण्यां पौर्णमास्याꣳ श्रावणस्य पञ्चम्याꣳ हस्तेन वाऽऽज्यभागाविष्टाऽऽज्याहुतीर्जुहोति ॥ अर्द्धषष्ठान् मासानधीत्योत्सृजेयुरर्द्धसप्तमान् वाऽथेमामृचं जपत्युभा कवी युवा यो नो धर्मः परापतत् । परिसख्यानि धर्म्मिणो विसख्यानि विसृजामह इति त्रिरात्रꣳ सहोष्य विप्रतिष्ठेरन् ॥ पौषस्य रोहिण्यां मध्यमायां वाऽष्टकायामध्यायानुत्सृजेयुरुदकान्तं गत्वाऽद्भिर्देवान् छन्दाꣳसि वेदानृषीन् पुराणाचार्यान् स्वांश्च तर्पयेयुः सावित्रीं चतुरनुद्रुत्य विरताः स्म इति ब्रूयुः क्षपणं प्रवचनं च पूर्ववत् ॥ इति ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**काण्वाजिनिः**—उपाकर्म्मणि चोत्सर्गे यथाकालं स्वमेत्य च । ऋषीन् दर्भमयान् कृत्वा पूजयेत्तर्पयेत्ततः ॥ सम्प्राप्ते श्रावणस्यान्ते पौर्णमास्यां दिनोदये । स्नानं कुर्वीत मतिमान् श्रुतिस्मृतिविधानतः ॥ उपाकर्म्मादिकं प्रोक्तमृषीणां चैव तर्पणम् । शूद्राणां मन्त्ररहितं स्नानं दानं प्रशस्यते ॥ **याज्ञवल्क्यः**—अधीतवेदोपाकर्म्म श्रावण्यां श्रवणेन च । हस्तेनौषध्यभावे वा पञ्चम्यां श्रावणस्य तु । पौषमासस्य रोहिण्यामष्टकायामथापि वा ॥ जलान्ते छन्दसां कुर्यात्तदुत्सर्गविधिं बहिः॥ प्यहं प्रेतेष्वनध्यायःशिष्यर्त्विग्गुरुबन्धुषु । उपाकर्म्मणि चोत्सर्गे स्वशाखाश्रोत्रिये मृते ॥ **कात्यायनः** उत्सर्गश्च तदा तिष्ये ( पुष्ये ) कुर्यात् प्रोष्ठपदेऽथवा ॥ **मनुः**—पुष्ये तु च्छन्दसां कुर्याद्बहिरुत्सर्जनं द्विजः । माघशुक्लस्य वा प्राप्ते पूर्वेह्णे प्रथमेऽहनि ॥ **स्मृतिमहार्णवः**—संक्रान्तिग्रहणं वाऽपि पौर्णमास्यां यदा भवेत् । उपाकृतिस्तु पञ्चम्यां कार्या वाजसनेयिभिः ॥ **वाचस्पतिः**—नित्ये नैमित्तिके जाप्ये होमे यज्ञक्रियाऽऽदिषु । उपाकर्मणि चोत्सर्गे ग्रहदोषो न विद्यते ॥ **रेणुदीक्षितः**—संक्रान्तौ ग्रहेण चैव सूतके मृतकेऽपि वा । गणस्नानं न कुर्वीत नारदस्य वचो यथा ॥

**ऋषयःपूज्याः**—कश्यपोऽथ भरद्वाजो गौतमश्चात्रिरेव च । जमदग्निर्वसिष्ठश्च विश्वामित्रो महामनाः॥ एते देवर्षयःसप्त साध्वी चैवाप्यरुन्धती॥ **कात्यायनः**—कश्यपादीनृषीन् सप्त कृत्वा दर्भमयान् शुभान । पूजयित्वा विधानेन तर्पयेच्छन्दसां गणम् । अपामार्गसमिश्राणां कुशादीनां त्रिभिस्त्रिभिः । कयात्सप्त ऋषीश्चैव पूजयेच्च यथाक्रमम् ॥

**पूजनक्रमः**—प्रतिष्ठाऽऽवाहनं चैव कालज्ञानं भवेत्ततः । पूजोपवीतदानं स्यात् प्राचीनावीतिपूर्वकम् ॥ उत्सर्गःपितरश्चैव आचान्तो वंशकीर्तनम् । तत्सवितुरित्यारभ्य गायत्र्या ब्रुवणं चतुः ॥ विरताः स्मेति च सकृदध्यायादीन् पठेत्ततः । तदेतदृचाऽभ्युक्तं नमस्कारो विसर्जनम् । समुद्रेति जलं प्राश्य आचान्तोऽपि गृहं व्रजेत् ॥ **चतुः**—चतुर्वारम् । **सकृत्**—एकवारम् ।

---

प्रेतेष्विति बहुवचनमविवक्षितम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**उपाकर्मणि विशेषः**—यथाशास्त्रं तु कृत्वैवमुत्सर्गं छन्दसां बहिः। विरमेत् पक्षिणी रात्रिं यद्वाऽप्येकमहर्निशम् ॥ नूतनं चेदुपाकर्म्म विधेयं शोभने दिने। नतु भद्राऽऽदिदुर्योगे श्रावण्यां वा यदा कदा ॥

**तत्फलम्**—प्रत्यब्दं यदुपाकर्म्म सोत्सर्गं विधिवद् द्विजः। क्रियते छन्दसां तेन पुनराप्यायनं भवेत्। अस्थानोच्छ्वासविच्छेदघोषणाध्यापनादिकम्। प्रामादिकं श्रुतौ यत्स्याद् यातयामत्वकारि तत् ॥ अयातयामै श्छन्दोभिर्यत्कर्म्म क्रियते द्विजैः। कीडमानैरपि सदा तत्तेषां सिद्धिकारकम् ॥

श्रावणस्य पूर्णिमादिकाले प्रातःस्नानसंध्यादि नित्यावश्यकं कर्म समाप्य गुरुः शिष्यैः सह ग्रामाद्बहिः प्राच्यामुदिच्यां वा नदीतडागादि रम्यं जलाशयं गत्वा तस्माच्चतुरो मृत्पिण्डानुद्धृत्य तत्तीरं प्रक्षाल्य तत्र तीर्थादेः शुभां मृदमार्द्र गोमयं भस्म कुशांस्तिलयवतंडुलान् पुष्पाणि दूर्वांकुरापामार्गयज्ञोपवीतादिरूपां सर्वां सामग्री संस्थाप्य ऋषिस्थापनार्थं पीठं श्वेतवस्त्रं पूजनार्थं दुग्धदधिमधुशर्करागंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यतांबूलादिसंभारांश्च संपाद्य प्रक्षालितपाणिपादः सपवित्रकरो गुरुः शिष्यैः सह पूर्वमुख उदङ्मुखो वा आचम्य प्राणनायम्य मङ्गलोच्चारणं कुर्यात्॥ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः॥ श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः॥ श्रीमदुमाहेश्वराभ्यां नमः ॥ श्रीवाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः ॥ श्रीशचीपुरंदराभ्यां नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीवेदेभ्यो नमः ॥ श्रीवेदपुरुषेभ्यो नमः॥ इष्टदेवताभ्यो नमः ॥ श्रीकुलदेवताभ्यो नमः ॥ श्रीग्रामदेवताभ्यां नमः ॥ श्रीस्थानदेवताभ्यो नमः ॥ श्रीतीर्थदेवताभ्यो नमः ॥ श्रीवास्तुदेवताभ्यो० ॥ एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो० ॥ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमो नमः ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥ निर्विघ्नस्तु ॥ ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु। ॐ सुमुखश्चैकदंतश्च कपिलो गजकर्णकः। लंबोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचंद्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ शुक्लांबरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्न-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशांतये ॥ अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः॥सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ सर्वमङ्गलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ सर्वदा सर्वकार्येषु नास्तितेषाममंगलम् । येषांहृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः॥लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः येषामिंदीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये ॥ सर्वेष्वारब्धकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः । देवा दिशंतु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥ वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देवसर्वकार्येषु सर्वदा ॥ वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे । यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम् ॥ गणनाथं—नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् । विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वंदे भक्त्या सरस्वतीम् ॥ स्थानं क्षेत्रं नमस्कृत्य दिननाथं निशाकरम् । धरणीगर्भसंभूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ॥ दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्। राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारंभे विशेषतः॥ शक्रादिदेवताः सर्वानृषीश्चैव तपोधनान् । गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं पर्वतं तथा ॥ वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम् । अगस्त्यं च पुलस्त्यं च दक्षमित्रं पराशरम् ॥ भरद्वाजं च मांडव्यं याज्ञवल्क्यं च गालवम् । अन्ये विप्रास्तपोयुक्ता वेदशास्त्रविचक्षणाः ॥ तान्सर्वान्प्रणिपत्याहं शुभकर्म समारभे ॥ अग्रतःश्रीनृसिंहश्च पृष्ठतो देवकीसुतः । रक्षतां पार्श्वयोर्देवौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ॥ कुशयवाक्षतद्रव्यजलान्यादाय पूर्वाभिमुखः संकल्पं कुर्यात् । स यथा ॐ स्वस्तिश्रीमुकुंदसच्चिदानंदस्य ब्रह्मणोऽनिर्वाच्यमायाशक्तिविजृंभितावि द्यायोगात् कालकर्मस्वभावाविर्भूतमहत्तत्त्वोदिताहंकारोद्भूतवियदादिपंचमहाभूतेंद्रियदेवतानिर्मिते अंडकटाहे चतुर्दशलोकात्मके लीलया तन्मध्यवर्तिनि भगवतः श्रीनारायणस्य नाभिकमलोद्भूतसकललोकपितामहस्य ब्रह्मणः सृष्टिं कुर्वतस्तदुद्धरणाय प्रजापतिप्रार्थितस्य समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य जगद्रक्षाशिक्षाविचक्षणस्य प्रणत पारिजातस्य अच्युतानंतवीर्यस्यश्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य अचिंत्यापरिमित शक्त्या म्रियमाणस्य महाजलौघस्य मध्ये परिभ्रममाणानामनेककोटिब्रह्मांडानामेक



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



तमेऽव्यक्तमहदहंकारपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन्महति ब्रह्माण्ड खंडे अधारशक्तिश्रीमदादिवाराहदंष्ट्राग्रविराजित कूर्मानंतवासुकितक्षककुलिककर्कोटकपद्ममहापद्मशंखाद्यष्टमहानागैर्ध्रियमाणे ऐरावतपुण्डरीकवामनकुमुदांजनपुष्पदंतसार्वभौमसुप्रतीकाष्टदिग्गजप्रतिष्ठितानामतलवितलसुतलतलातलमहातलरसातलपातालल्लोकानामुपरिभागे भूर्लोक-भुवर्लोक-स्वर्लोक-महर्लो जनलोक-तपो लोकसत्यलोकाख्यानां सप्तानां लोकानामधोभागे चक्रवालशैलमहावलयनागमध्यवर्तिनो महाकालमहाफणिराजशेषस्य सहस्रफणानां मणिमंडलमंडिते दिग्दतिशुंडोत्तंभिते अमरावत्यशोकवतो-भोगवती-सिद्धवती-गान्धर्ववतीकांच्यवंत्यलकावती-यशोवती पुण्यपुरीप्रतिष्ठिते इंद्राग्नियमनिर्ऋतिवरुणवायुकुबेरेशानेत्यष्टदिक्पालप्रतिष्ठितेवरधुवाधरसोमपाप्रभंजनानलप्रत्यूषप्रभासाख्याष्टवसुभिर्वर । जिते हरत्र्यंबकरुद्रमृगव्याघ्रापराजितकपालिभैरवशंभुकपर्दिवृषाकपिश्वद्रुरूपाख्यैकादशरुद्रैःसंशोभितेरुद्रोपेंद्रसवितृधातृत्वष्टृयमेंद्रेशानभगमित्रपूषाख्यद्वादशादित्यप्रकाशिते यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाध्यष्टांगनिरतवसिष्ठवालखिल्यविश्वामित्रदक्षकात्यायनकौंडिन्यगौतमांगिरसपाराशर्यव्यासवाल्मीकिशुक शौनकभरद्वाजसनकसनंदनसनातनसनत्कुमारनारदादि-मुख्यमुनिभिःपवित्रिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षुरससुरासर्पिर्दधिक्षीरोदकयुक्तसप्तार्णवपरिवृते जंबूप्लक्षशाल्मलिकुशक्रौंचशाकपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुतेइंद्रकांस्यताम्रगभस्तिनागसौम्यगंधर्वचारणभारतेतिनवखंडमंडिते सुवर्णगिरिकर्णिकोपेत महासरोरुहाकारपंचाशत्कोटियोजनविस्तीर्णभूमंडलेअयोध्यामथुरामायाकाशीकांच्यवंतिकाद्वारावतीतिसप्तपुरीयोप्रतिष्ठिते महामुक्तिपदस्थले शालग्रामशंभलनंदिग्रामत्रयविराजितेचंपकारण्यबदरिकारण्यदंडकारण्यधर्मारण्यपद्मारण्यगुह्यारण्यजुंबुकारण्यविंध्यारण्यद्राक्षारण्यनहुषारण्यकाम्यकारण्यद्वैतारण्यनैमिषारण्यादीनां मध्ये सुमेरुनिषधकूटशुभकूटश्रीकूटहेमकूटरजतकूटचित्रकूटत्रिकूट किष्किंधश्वेताद्रिकूटहिमविंध्याचलानां हरिवर्षकपुरुषवर्षकिंयोश्चदक्षिणे नवसहस्रयोजनविस्तीर्णे भरतखंडे मलयाचलसह्याचलविंध्याचलानामुत्तरेण स्वर्णप्रस्थचंडप्रस्थसूक्तिकावन्तकरमणकमहारमणक-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पांचजन्यसिंहललंकाऽशोकवत्यलकावतीसिद्धवतीगांधर्ववत्यादिपुण्यपुरीविराजिते नवखण्डोपद्वीपमंडितेदक्षिणावस्थितरेणुकाद्व्यसूकरकाशीकांचींकालिकालवटेश्वर-कालंजरमहाकालेतिनवोषरयुते द्वादशज्योतिर्लिंगगगा ( भागीरथी ) गोदाक्षिप्रा-यमुना सरस्वती-नर्मदा-तापी--पयोष्णी--चन्द्रभागा--कावेरी--मंदाकिनी-गोदा-वरी-प्रवरा-कृष्णा-वेण्या-भीमरथी-तुङ्गभद्रा-मलापहा-कृतमाला-ताम्रपर्णी-विशा लाक्षी-वंजुला चर्मण्वती-वेत्रवती-भोगवती-विशोका-कौशिकी-गंडकी-वासिष्ठी-प्रमदा-विश्वामित्री-फल्गुनी-चित्रकाश्यपी--सरयू--सर्वपापहारिणी-करतोया-प्रणीता-वज्राव्रक्रगामिनी-सुवर्णरेखा-शोणा-भवनाशिनी--शीघ्रगा-कुशावर्तिनी-ब्रह्मानन्दामहीतनये-त्याद्यनेकपुण्यनदीभिर्विलसितेब्रह्मपुत्रसिंधुनदादिपरमपवित्र-जलविराजिते हिमवन्मेरुगोवर्धनक्रौंचचित्रकूटहेमकूटमहेंद्रमलयसह्येन्द्रकीलपारि-यात्राद्यनेकपर्वतसमन्विते मतंगमाल्यकिष्किंधऋष्यश्रृंगेतिमहानगसमन्विते अंग-वंगकलिंगकाश्मीरकांबोजसौवीरसौराष्ट्रमहाराष्ट्रमगधनेपालकेरलचोलपांचालगौड मालवमलयसिंहलद्रविड कर्नाटकलाटकरहाटवरहाटपांड्यनिषधमागधांध्रदशार्ण भोजकुरुगांधारविदर्भविदेहबाह्लीकबर्बरकैकेयकोसलविराटशूरसेनकोंकणकैकट-मत्स्यभद्रपारसीकखर्जूरयवनम्लेच्छजालन्धरेतिसिद्धवत्यन्यदेशविशेषभाषाभूमिपा लविचित्रिते इलावृतकुरूभद्राश्व केतुमालकिंपुरुषरमणकहिरण्मयादिनववर्षाणां-मध्येभरतखंडेकोकंतहिरण्यश्रृङ्गकुञ्जार्बुदमणिकर्णीवटशालग्रामसूकरमथुरागया-निष्क्रमणलोहार्गलपोतस्वामिप्रभासबदरीति चतुर्दशगुह्यविलसिते जम्बूद्वीपे कुरुक्षेत्रादिसमभूमध्यरेखाया अमुकदिग्भागे कुलमेरोर्दक्षिणदिग्भागे विंध्यस्य अमुकदिग्भागे मत्स्यकूर्मवराहनृसिंहवामनपरशुरामकृष्णबुधकल्कीतिदशावता-राणां मध्ये बौद्धावतारे गंगादिसरिद्भिः पाविते एवं नवसहस्रयोजनविस्तीर्णे भारतवर्षे निखिलजनपावनपरमभागवतोत्तमशौनकादिनिवासिते नैमिषारण्ये आर्यावर्तांतर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे सूर्यान्वयभूभृत्प्रनिष्ठिते श्रीमन्नारायणनाभिकमलो-द्भूतसकलजगत्स्रष्टुः परार्द्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नो द्वितीये याते तृतीये मुहूर्ते रथंतरादि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



द्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादिमन्वंतराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृतत्रेताद्वापरकलिसञ्ज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमेविभागे ( पादे ) श्रीमन्नृपविक्रमार्कात् श्रीमन्नृपशालिवाहनाद्वा यथासंख्यागमेन चांद्रसावनसौरनाक्षत्रादिप्रकारेणागतानां प्रभवादिषष्टिसंवत्सराणां मध्य अमुकनाम्नि संवत्सरे उत्तरगोलावलंबिनि श्रीमार्तंडमंडले अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थे चंद्र अमुकस्थे सूर्ये अमुकस्थे गुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं स्थानस्थितेषु सत्सु एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहं मम इह जन्मनि जन्मांतरे वा बाल्ययौवनवार्द्धक्यावस्थासु वाक्पाणिपादपायूपस्थघ्राणरसनाचक्षुः स्पर्शनश्रोत्रमनोभिश्चरितज्ञाताज्ञातकामाकाममहापातकोपपातकादिसंचितानां पापानां ब्रह्महननसुरापानसुवर्णस्तेयगुरुतल्पगमनतत्संगरूपमहापातकानां बुद्धिपूर्वकाणां मनोवाक्कायकृतानां बहुकालभ्यास्तानामुपपातकानां च स्पृष्टास्पृष्टसंकलीकरणमलिनीकरणपात्रीकरणजातिभ्रंशकरणविहिताकरणकर्मलोपजनितानां रसविक्रयकन्याविक्रयहयगोविक्रयखरोष्ट्रविक्रयमसी विक्रयाजादिपशु विक्रयस्वगृहविक्रयनीलीविक्रयाक्रेयविक्रयपण्यविक्रयजलचरादिजन्तुविक्रयस्थलचरादि विक्रयखचरादिविक्रयसंभूतानां निरर्थकवृक्षच्छेदनऋणानापाकरणब्रह्मस्वापहरणदेवस्वापहरणपरद्रव्यापहरणतैलादिद्रव्यापहरणफलाहरण लोहादिहरण नानावस्तुहरणरूपाणां ब्राह्मणनिंदागुरुनिंदावेदनिंदाशास्त्रनिंदापरनिंदाऽभक्ष्यभक्षणाभोज्यभोजनाचोष्यचोषणालेह्यलेहनापेयपाना स्पृश्यस्पर्शना श्राव्यश्रवणाहिंस्यहिंसनावंद्यवंदनार्चित्यर्चितनायाज्ययाजनाजनापूज्यपूजनरूपाणां मातृपितृतिरस्कार स्त्रीपुरुषप्रीतिभेदनपरस्त्रीगमनविधवागमनवेश्यागमनदासीगमन चांडालादि हीनजातिगमनगुदगमनरजस्वलागमनपश्वादिगमनरूपाणां कूटसाक्षित्वपैशुन्यवादमिथ्यापवादम्लेच्छसंभाषणब्रह्मद्वेषकरणब्रह्मवृत्तिहरणवृत्तिच्छेदनपरवृत्तिहरणरूपाणांमित्रवंचनगुरुवंचनस्वामिवंचनासत्यभाषणगर्भपातन पथितांबूलचर्वणहीनजाति सेवनपरान्नगणव्रभोजनशुनपलांडुगृजनभक्षणतालवृक्षफलभक्षणोच्छिष्ट मार्जारो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



च्छिष्टपर्युषितान्नभक्षणरूपाणांपंक्तिभेदकरणभ्रूणहिंसापशुहिंसाद्यनेकहिंसोद्भू-
तानां, शौचत्यागस्नानत्यागसंध्यात्यागौपासनाग्नित्यागवैश्वदेवत्यागरूपाणां
निषिद्धाचरणकुपात्रवासब्रह्मद्रोहपितृमातृद्रोहपरद्रोहपरनिंदाऽऽत्मस्तुतिदुष्टप्रति-
ग्रहदुर्जनसंसर्ग रूपाणाम् गोयानवृषभयानमहिषयानगर्दभयानोष्ट्रयानाज-
यानभृत्याभरणस्वग्रामत्यागगो त्रत्यागकुलत्यागदूरस्थमंत्रणविप्राशाभेदनावं-
दिताशीर्वादग्रहणपतितसंभाषणरूपाणां, पति तजनपंक्तिभोजनाहःसंगमवृथा-
मनोरथादिपापानाम् आत्मार्थपाककरणैकाकि मिष्टान्नभोजनं बालकैः
सह भोजनमात्मस्त्रिया सह भोजनमित्यादिप्रकीर्णपातकानाम् एतत्कालपर्यंतं
संचितानां लघुस्थूलसूक्ष्माणां च निशेषपरिहारार्थं सहस्रगोदानकुरुक्षेत्रादिस-
र्वतीर्थस्नानजन्यफलप्राप्यर्थं समस्तपितृणामात्मनश्च विश्वादिलोकप्राप्तये
अधीतानामध्येष्यमाणानां चाध्याप्यानांस्थापनविच्छेदक्रोशघोषणदंतविवृति-
दुर्वृत्तद्रतोच्चारितवर्णानां पूर्वसवर्णानां गलो, पलंवितविवृतोच्चारितवर्णानां,
श्लिष्टास्पष्टवर्णविवृतादिभिः पाठितानां श्रुतीनांयद्यातयामत्वं त्परिहारार्थम्
अष्टात्रिंशदनध्यायाध्ययने रथ्यासंचरतः शूद्रस्य शृण्वतोऽध्ययनेम्लेच्छां-
त्यजादेः शृण्वतोऽध्ययनेऽशुचिदेशेऽध्ययने आत्मनोऽशुचित्वेऽध्ययन अक्ष-
रस्वरानुस्वरपदच्छेदकंडिकाव्यंजनह्रस्वदीर्घप्लुतकंठतालुमूर्द्धन्योष्ठ्यदन्त्यनासि-
कानुनासिकरेफजिह्वामूलीयोपध्मानीयोदात्तस्वरितादीनां च व्यत्ययेनोच्च-
रमाधुर्याक्षरव्यक्तिहीनत्वाद्यनेकप्रत्यवायपरिहारपूर्वकं सर्वत्य वेदस्य
सवीर्यत्वसंपादनद्वारा यथावत्फलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं देवब्राह्मणसवितृ-
सूर्यनारायणसन्निधौ गंगाभागीरथ्याम् अमुकतीर्थे तडागे वा प्रवाहाभिमुखम्
अध्यायोत्सर्गोपाकर्मनिमित्तं गणस्नानमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य स्नान नुज्ञां
प्रार्थयेत् ॥ यथा—नमोऽस्तु देवदेवाय शितिकंठाय वेधसे। रुद्रा चापहस्ताय
दंडिने चक्रिणे नमः ॥ सरस्वती च गायत्री वेदमाता गरीयसी। सन्निधात्री
भव त्वं च सर्वपापप्रणाशिनी ॥ यद्वा सागरनिर्वेदंडहस्तासुरांतकं। जग-
त्स्रष्टर्ज गन्मित्र त्वां नमाम्यसुरान्तक ॥ तीष्णदंष्ट महाकाय कल्पांतदहनोपम।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञादातुमर्हसि ॥ आपस्त्वमसि देवेश ज्योतिषांपतिरेव च । पापं नाशय मे देव वाङ्मनःकायकर्मजम् ॥ इति स्नानानुज्ञां प्रार्थ्य पूर्वोक्तनद्यादिस्नानविधिना स्नानांगतर्पणं च कृत्वा धौते वाससी परिधाय दर्भासनादौ प्राङ्मुखा उदङ्मुखो वोपविश्य भस्मगोपीचंदनकुंकुमादिना तिलकं धृत्वा पवित्रपाणिराचम्य मध्याह्नसंध्यां कुर्यात् ॥ सा च मध्याह्नसंध्या प्रागुक्ता । ततो गायत्रीजपोत्तरं ॐ विभ्राडित्यनुवाकसहस्रशीर्षेतिपुरुषसूक्तशिवसंकल्पमण्डलब्राह्मणः सूर्यमुपतिष्ठेत । तदुपस्थानं चापि प्रागुक्तम्॥अथासनोपरि न्यस्तेषु प्राग्ग्रेषु दर्भेषु स्वस्तिकासनेन प्राङ्मुखमुपविष्टःपान्योर्मध्ये सप्तपर्णं दर्भमादाय दक्षिणोरौ मुकुलीकृतमंजलिं विधाय प्रणवव्याहृतिपूर्विकां गायत्री जपित्वा ऋष्याद्यनुसंधाय॥इषेत्वा इत्यादि यथाशक्ति पठन् ब्रह्मयज्ञं कुर्यात् ॥ ब्रह्मयज्ञविधिश्चापि प्रागुक्तः । तत आचामेत् तर्पणं ब्रह्मयज्ञं कृत्वादेवर्षिमनुष्यपितृतर्पणं च कुर्यात् । तत्रापि प्रागुक्तम्। एवमुक्तविधिना नित्यस्नानमाध्याह्निकसंध्यातर्पणादीनि समाप्य वक्ष्यमाणप्रकारेणारुंधतीसमेतान्कश्यपादिसप्तर्षीन्सप्रवरान्स्थापयेत्॥इति स्नानादिकर्म्मतो निवृत्य ऋषिपूजनादि कुर्यात् । तत्रर्षिपूजनं यथा तत्रादौ ऋचं वाचं प्रपद्ये इति शांतिसूक्तम् । ॐ द्यौः शांतिरन्तरिक्षꣳ शांतिः पृथिवी शांतिरापः शांतिरोषधयः शांतिः ॥ वनस्पतयः शांतिर्विश्वे देवाः शांतिर्ब्रह्म शांतिः सर्वꣳ शान्तिः शांतिरेव शांतिः सा मा शांतिरेधि ॥ यतो यतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु ॥ शन्नः कुरु प्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः ॥इति शांतिपाठं च पठंतःअपामार्गमिश्रितैस्त्रिमिस्त्रिभिर्दर्भपवित्रैःपृथक्पृथक् गायत्रीं जप्त्वा ब्रह्मग्रंथियुक्तान् सप्तऋषीन् कुर्यात् ॥ततःपीठे नवं सदश्वौतं वस्त्रं प्रसार्य तदुपरि प्रागग्रानुदगग्रान् वा सप्तर्षीन् स्थापयेत् ॥ अथ प्रतिष्ठापूजने ॥ ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यꣳ स्वबृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमन्दधातु ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामो ३ म्प्रतिष्ठ ॥१॥ ॐ एषवैप्रतिष्ठा नामयज्ञोयत्रैतेनयज्ञेनयजन्तेसर्वमेवप्रष्ठितं भवति ॥ ॐ सप्तर्षयःप्रतिष्ठा सुप्रतिष्ठितमस्तु इति ऋष्युपरिअक्षतान् विकिरेत्॥ऋष्यावाहनम्-ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः कश्यपम् आवाहयामि भो कश्यप इहागच्छ इह तिष्ठ पूजां गृहाण मम संमुखो भव ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय नमः भरद्वाजम् आवाहयामि।भो भरद्वाज इहाग० । ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः गौतमम् आवाहयामि । भो गौतम इहागच्छ० । ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः अत्रिम् आवाहयामि । भो अत्रे इहाग० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः जमदग्नये नमः जमदग्निमावाहयामि । भो जमदग्ने इहाग० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय नमः वसिष्ठम् आवाहयामि । भो वसिष्ठ इहाग० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वमित्राय नमः विश्वामित्रम् आवाहयामि । भो विश्वामित्र इहाग० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंधत्यै नमः अरुन्धतीमावाहयामि । भो अरुन्धती इहागच्छ इह तिष्ठ पूजां गृहाण मम संमुखा सुप्रसन्ना वरदा भव ॥ इत्यावाह्य ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं य्यज्ञꣳसमिमं दधातु । विश्वे देवासऽइहमादयन्तामो ३ म्प्रतिष्ठ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंधतीसहिताः सप्तर्षयः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवंतु इति प्रतिष्ठाप्य । ॐ इमावेवगौतमभरद्वाजावयमेवगौतमोऽयंभरद्वाजऽइमावेव विश्वामित्रजमदग्नीअयमेवविश्वामित्रोयंजमदग्निरिमावेववसिष्ठकश्यपावयमेववसिष्ठोयंकश्यपोद्यागेवात्रिर्वाचाहयत्रमद्यतेतिर्हवैनामेतद्यदत्रिरितिसर्वस्यात्तासर्वमस्यात्रंभवतियऽएवं वेद ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



इति पठेत् ॥ ततः ( सर्वे ) आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य ॥ ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् उत्सर्जनाङ्गत्वेन अरुन्धती सहितकश्यपादिसप्तर्षिपूजनमहं करिष्ये ॥ तत्रादौ निर्विघ्नार्थगणपतिस्मरणं च करिष्ये इति संकल्प्य ॐ सुमुखश्चैकदंतश्चेत्यादिगणपतिस्मरणं कृत्वा ऋषीन् ध्यायेत् ॥ ध्यानम्—ॐ सप्तऽऋषयः प्रतिहिताः शरीरेसप्तरक्षन्तिसदमप्रमादम् ॥ सप्तापः स्वपतोलोकमीयुस्तत्रजागृतोऽअस्वप्नजौ सत्रसदौचदेवौ । ( वा० सं० ३४।५५) ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपाꣳसुरे स्वाहा ॥ ॐ सहस्र शीर्षापुरुषꣳसहस्राक्षꣳ सहस्रपात् ॥ सभूमिꣳसर्व्वतस्पत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंधतीसहितकश्यपादिऋषिभ्यो नमः ध्यानं समर्पये ॥ ॐ पुरुषएवेदꣳसर्व्वंयद्भूतंयच्चभाव्यम् ॥ उतामृतत्वस्येशानोय दन्नेनातिरोहति ॥सुवर्णघटितं दिव्यं नानारत्नसमन्वितम् । आसनं मनसा दत्तं गृह्यतां भो मुनीश्वराः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंध० नमः आसनं समर्पयामि । ॐ एतावानस्यमहिमातोज्यायाँश्चपूरुषः पादोस्यविश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ गङ्गादितीर्थसम्पन्नं गन्धद्रव्येण सोरभम् । पाद्यं ददामि मनसा प्रसीदन्तु मुनीश्वराः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुधत म० नमः पाद्यं समर्पयामि ॐ त्रिपादुर्ध्वऽउदैत्पुरुषꣳपादोस्येहाभवत्पुनः ॥ ततोविष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥ सुवर्णपात्र आनीतं गन्धपुष्पाक्षतान्वितम् । कश्यपाद्या महाभागा गृह्णन्त्वर्घ्यं मयाऽर्पितम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंध० नमः अर्घ्यं० ॥ ततो विराडजायत विराजोऽअ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



धिपूरुषः ॥ सजातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥ कर्पूरसहितं हेमभाजने निर्मले स्थितम् ॥ आचमनीयमिदं तोयं भवद्भिर्मुनिभिर्मुदा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंध० न० आचमनीयं ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम् । पशूँस्ताँश्चक्रेवायव्यान्नारण्यान्ग्राम्याश्चये ॥ सुरभिद्रव्यसम्पूर्णं पवित्रं मङ्गलं परम् । स्नानार्थं वः समानीतं मनसा भो समर्पये ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंध० न० स्नानं० ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेऽभवत्सरित् ॥ पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधु चेत्यदः । पञ्चामृतं हृदा दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंधती० पंचामृतस्नानं० ॥ ॐ गंधद्वारांदुराधर्षांनित्यपुष्टांकरीषिणीम् ॥ ईश्वरींसर्वभूतानांतामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ नानासुरभितद्रव्यसम्भृतं पावनं जलम् । गृहन्तु कृपया तुष्टाः प्रसादं मयि धीयताम् । ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंध० नमः गंधोदकस्नानं० ॥ ततः पुरुषसूक्तेनाभिषेकं कुर्यात् ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचःसामानि जज्ञिरे ॥ छंदाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ॐ सूक्ष्माण्यतीव शुभ्राणि वस्त्राणि विविधानि च । कृपया प्रतिगृह्णन्तु प्रसीदन्तु मुनीश्वराः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंध० नमः वस्त्रं समर्पयामि॥ ॐ तस्मादश्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादतः ॥ गावोहजज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावय ÷ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्र यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ नानामन्त्रैः समुद्भूतं त्रिवृतं ब्रह्मसूत्रकम् । प्रत्येकं दीयते स्वच्छं गृह्णन्तु मुनिपुङ्गवाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंध० नमः यज्ञोपवीतं स०॥ॐ तं युज्ञम्ब-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



र्हिषि प्रौक्षन्पुरुषजातमग्रतः ॥ तेन देवाऽअयजन्तसाध्याऽ ऋषयश्चये ॥ आत्यसंतापनिर्णाशि सुगन्धद्रव्यसम्भवम् । चन्दनं सम्प्रयच्छामि स्वीकुर्वन्तु मुनीश्वराः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंध०नमः गंधं समर्पयामि॥ ॐ अक्षन्नमीमदन्तुह्यब प्रियाऽअधूषत ॥ अस्तोषत स्वभानवोविप्रानविष्ठयामती । योजान्विन्द्रतेहरी ॥ शुभतण्डुल जान्शुक्लाज्शङ्खशुभान्मनोहरान् । अक्षतान् सम्प्रयच्छामि गृह्णन्तु मुनिपुङ्गवाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंध० अक्षतान् सम० ॥ ॐ अहिंरिव भोगैः पर्य्येतिबाहुं ज्ज्याया हेतिम्परिबाधमानऽ॥ हस्तघ्नोविश्वा वयुनानिविद्वान्पुमान्पुमांछंसं परिपातुविश्वतं ÷ ॥ अबीरं चः गुलालं च शोभन द्रव्यमुत्तमम् । गृह्णन्तु कृपया तुष्टा भवन्तु मयि सर्वदा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंध० नमः हरिद्राकुंकुमादिद्रव्याणि समर्पयामि ॥ ॐ यत्पुरुषंव्यदधुःकतिधाव्यकल्पयन् ॥ मुखंकिमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्येते॥ कमलादीनि हृद्यानि सुरभीणि समन्तः । मयाऽर्पितानि पुष्पाणि गृह्णन्तु मुनिपुङ्गवाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंध० नमः पुष्पाणि० ॥ ॐ ब्राह्मणोस्यमुखमासीद्बाहूराजन्य ÷ कृतः॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्य ÷ पद्भ्याछंशूद्रोऽअजायत॥ कृष्णागुरुसमुद्भूतो धूप एष दशाङ्गकः । सुगन्धिततरो दत्तो गृह्यतांमुनिपुंगवैः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंध० नमः धूपं सम० ॥ ॐ चन्द्रमामनसो जातश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत । श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखादग्निरजायत ॥ पञ्चवर्तिसमायुक्तः सर्वमंगलशोभनः । हृदा निवेदितो भक्त्या दीपोऽयं मुनिपुंगवाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंध० नमः दीपं सम०॥ ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षंछशीर्ष्णोद्यौऽसमवर्त्तत ॥ पद्भ्या

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



म्भूमिर्दिशुः श्रोत्रात्तथा लोका ꣳ ऽ अकल्पयन् ॥ फलमूलसमायुक्तं नानाशाव समन्वितम्। शर्कराघृतसंयुक्तं नैवेद्यं प्रति गृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंध० नमः नैवेद्यं स० ॥ नैवेद्यमध्ये पानीयं समर्पये, उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालं, मुखप्रक्षालनं, करोद्वर्त्तनार्थे चन्दनं च समर्पये । ॐ याः फलीनीर्याऽअफलाऽअपुष्पाया श्चपुष्पिणीः ÷ ॥ बृहस्पतिंप्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः ÷ ॥ इदं फलं मया ह्यं मनसाऽद्य समर्पितम्। गृह्नन्तु कृपया पूर्णाः प्रसीदन्तु मुनीश्वराः ॥ ॐ भुर्भूवः स्वः अरुंध० नमः फलानि सम० ॥ ॐ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत ॥ वसन्तोस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मꣳशरद्धविः ॥ पूगीफलं सकर्पूरं नागवल्लासमन्वितम्। एलालवङ्गरुचितं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंधती० नमः तांबूलं० ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्यजातःपतिरेकऽआसीत्। सदाधारपृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मैदेवायदबिषाविधेम ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदं स्वीकुर्वन्तु मुनीश्वराः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंधती० नमः दक्षिणां सम० ॥ ॐ इदꣳहविः प्रजननम्मेऽअस्तुदशवीरꣳसर्वगणꣳस्वस्तये॥ आत्मसनिं प्रजासनिं पशुसनिं लोकसन्यभयसनिं ॥ अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मेकरोत्वन्नम्पयोरतोऽअुस्मासु धत्त ॥ ब्रह्मिष्ठा ब्रह्मरुपाश्च कश्यपाद्या मुनीश्वराः। ब्रह्मज्ञान प्रदा नित्यं नीराजयामि भक्तितः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धती० नमः कर्पूरात्तिक्यं समर्पये॥ ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः ॥ देवा यद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्॥ यानिकानि च पापानि जन्मान्तरकृतानिच। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणपदेपदे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंधती०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



**नमः प्रदक्षिणां सम० ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकंम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥** शरणागतदीनार्त्तपरित्राणपरायणाः । रक्षन्तु मुनयः सर्वे प्रणमामि पुनः पुनः ॥ **ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंध० मंत्रपुष्पांजलिं समर्पये । प्रार्थना-ॐमंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं मुनिश्वराः ॥ यत्पूजितं मया पूर्वं परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्ध० नमः नमस्कारं समर्पये ॥** अनेन मया वेदोत्सर्जनांगत्वेन कृतेन ध्यानावाहनादिषोडशोपचारैः पूजनेन अरुन्धतीसहिताः कश्यपादयः सप्तर्षयः प्रीयन्तां न मम ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ इति ऋषिपूजनं कृत्वा स्वपितृभ्यो यज्ञोपवीतं दद्यात्, तत्रादौ प्राचीनावीती दक्षिणामुखः स्वपुरतो यज्ञोपवीतानि निधाय कुशोदकं गृहीत्वा ॐ अमुकगोत्रेभ्यः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहेभ्यः स्वधा सम्पद्यन्ताम् । एवमेव--ॐअमुकगोत्रेभ्यः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः स्वधा सम्पद्यन्ताम् । एवमेव--पुनः ॐ कव्यवाडनलादिदिव्यपितृभ्यः इमानि यज्ञोपवीतानि स्वधा संपद्यंताम् । इति समर्पयेत्। जीवत्पितृकोऽपि पितामहादिभ्यो मातामहादिभ्यश्च यज्ञोपवीतानि दद्यात् । एतानि सर्वाणि ऋष्युपर्येव समर्प्यन्ते । ततःपुनः सव्यं कृत्वा सर्वान् ब्राह्मणान् गंधादिना संपूज्य तेभ्यो यज्ञोपवीतानि दत्वा सर्वैः सह स्वयमपि धारयेत् ।

**यज्ञोपवितधारणप्रयोगः ॥** आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य मम श्रौतस्मार्तकर्मानुष्ठानसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं नूतनयज्ञोपवीतधारणमहं करिष्ये तदंगत्वेन यज्ञोपवीताभिमन्त्रणं करिष्ये इति संकल्प्य । **ॐ इदं** गायत्रीमंत्रैरभिमंत्र्य पुष्पाण्यादाय तंतुषु देवतानामावाहनं कुर्यात् । तद्यथा प्रथम **विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपाꣳ सुरे स्वाहा॥ ॐ आपोहिष्ठाभयोभुव** इत्यादिमन्त्रैरुपवीतानि प्रक्षाल्य अवंतरं दशवारं गायत्रीमंत्रैरभिमंत्र्य पुष्पाण्यादाय तंतुषु देवतानामावाहनं कुर्यात्। तद्यथा प्रथम-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ततौ ॐ कारमावाहयामि। द्वितीयतंतौ ॐ अग्निमावाहयामि। तृतीयतंतौ ॐ सर्पानावा०। चतुर्थतंतौ ॐ सोममावाह०। पञ्चम तंतौ ॐ पितॄनावाहयामि। षष्ठतंतौ ॐ प्रजापति०। सप्तमतन्तौ ॐ अनिल। अष्टमतन्तौ ॐ सूर्यमावाह०। नवमतंतौ ॐ विश्वा-देवानावाहयामि॥ ग्रंथिदेवतानामावाहनम्-ग्रंथिमध्ये ॐ ब्रह्मणे नमः ब्राह्माणमावाहयामि। ॐ विष्णवे नमः विष्णुमावाह०। ॐ रुद्राय नमः रुद्रमावाहयामि। ततः ॐ प्रणवाद्यावाहित-देवताभ्यो नमः यथास्थानमहं न्यसामि इत्यावाह्य गंधादिभिः पूजयेत्॥ ततो ध्यानम्। ॐ प्रजापतेर्यत्सहजंपवित्रं कार्पाससूत्रो-द्भवब्रह्मसूत्रम् ब्रह्मत्वसिद्धयै च यशःप्रकाशं जपस्य सिद्धिं कुरु ब्रह्मसूत्रम्॥ यज्ञोपवीतमिति मंत्रस्य परमेष्ठि ऋषिः लिङ्गोक्ता देवता त्रिष्टुप्छन्दः यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः। ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयु-ष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥ यज्ञोप-वीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि॥ अनेन मंत्रेण यज्ञो-पवीतानां पृथक् पृथक् धारणं कुर्यात्ततः आचमनं कृत्वा। ॐ एतावद्दिनपर्यंतं ब्रह्मत्वं धारितं मया। जीर्णत्वात्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्॥ इति मंत्रेण जीर्णयज्ञोपवीत शिरोमार्गेण निःसार्य भूमौ त्यजत्। पश्चाद्यथाशक्ति गायत्रीजपं कुर्यात्॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रिया-ऽऽदिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ इति यज्ञोपवीत-धारणप्रयोगः॥

**अथोत्सर्गाङ्गमृषितर्पणम्॥** आचम्य प्राणानाम्यदेशकालौ संकीर्त्य छन्दसां क्वचिदनध्यायादिकाले पठनादनधिकारिभिः श्रावणाच्च प्राप्तमालिन्यस्य निरासार्थमुत्सर्गाङ्गतर्पणमहं करिष्ये इति संकल्प्य दक्षिणं जान्वाच्य ईशा नाभिमुखः सव्येन प्राग्ग्रैर्दर्भैर्देवतीर्थेन देवतर्पणं कुर्यात्॥ ॐ विश्वे-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



देवास॒ऽआग॑तशृणु॒ताम॑ऽइ॒मꣳहव॑म् ॥ एदम्ब॒र्हिर्निषी॑दत ॥ ( वा० सं० ७। ३४ ) ॥ विश्वे॑देवाः शृणु॒तेमꣳहव॑म्मे॒येऽअ॒न्तरि॑क्षे॒यऽउप॒द्यविष्ठ ॥ यैऽअ॑ग्निजि॒ह्वाऽउ॒तवा॒यज॑त्राऽआ॒सद्य॒स्मिन्ब॒र्हिषि॑मादयध्वम् ॥ ( वा० सं० ३३। ५३ ) इति देवानावाह्य ॥ ॐ देवास्तृप्यन्ताम् ॥ ॐ छन्दांसि तृप्यंताम् ॥ ॐ वेदास्तृप्यंताम् ॥ ॐ ऋषयस्तृप्यंताम् ॥ ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यंताम् ॥ ॐ गन्धर्वास्तृप्यंताम् ॥ ॐ इतराचार्यास्तृप्यंताम् ॥ ॐ संवत्सरास्तृप्यन्ताम् ॥ ततो वामं जान्वाच्य, दक्षिणामुखोऽपसव्येन निलमिश्रितं जलमंजलौ गृहीत्वा ॐ अमुकगोत्राः अस्मत्पितरः अमुकशर्माणो वसुरूपास्तृप्यध्वं स्वधा नमः ॥ ॐ अमुकगोत्राः अस्मत्पितामहाः अमुकशर्माणो रुद्ररूपास्तृप्यध्वं स्वधा नमः ॥ ॐ अमुकगोत्राः अस्मत्प्रपितामहाः अमुकशर्माण आदित्यरूपास्तृप्यध्वं स्वधा नमः इति स्वान्पितॄँस्तर्पयेत् ॥ एवं मातृंमातामहादींश्च तर्पयेत् । जीवत्पितृकाः पुत्रा. शिष्याश्चाचार्यस्य पितृतर्पणं कुर्युः तद्यथा ॐ अमुकगोत्राः अस्मदाचार्यपितरस्तृप्यध्वं स्वधा नमः इति ॥ ततः सव्यन् आचमनम् ॥ अथ वंशानां वाचनम् ॥ ॐ अय पुर इत्यादिपंचानां साध्या ऋषयो यजूंषि प्राणभूतो देवताः॥ मूर्द्धेत्यादिद्वयोर्देवा ऋषयो यजूंषि लिंगोक्ता देवताः। माछन्दः इत्यादिषोडशानां परमेष्ठी ऋषिर्यजूंषि लिंगोक्ता देवताः ऋषि तर्पणे विनियोगः ॥ सप्तऽऋषय इत्यस्य याज्ञवल्क्य ऋषिः ॥ सप्तर्षयो देवताः जगती छन्दः ऋषितर्पणे विनियोगः॥ॐ अ॒यं पु॒रोभुव॒स्तस्य॑प्रा॒णोभौ॑वाय॒नो व॑स॒न्तः प्रा॑णाय॒नो गा॑य॒त्री वा॑स॒न्ती गा॑य॒त्र्यै गा॑य॒त्रङ्गा॑य॒त्रादु॑पाꣳशुरु॑पाꣳशोस्त्रि॒वृत्त्रि॒वृतो॑

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रथन्तरंवसिष्ठऋषिः प्रजापतिगृहीतयात्वयाप्राणङ्गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥ १ ॥ अयन्दक्षिणाविश्वकर्म्मातस्यमनो वैश्वकर्मणङ्ग्रीष्मोमानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्मीत्रिष्टुभः स्वारꣳस्वारादन्तर्य्यामोन्तर्य्यामात्पञ्चदशःपञ्चदशाद्बृहद्भरद्वाजऽऋषिः प्रजापतिगृहीतयात्वयामनोगृह्णामि प्रजाभ्यः ॥ २ ॥ अयंपश्चादिश्वव्यचास्तस्यचक्षुर्वैश्वव्यचसंव्वर्षाश्चाक्षुष्प्योजगती व्वार्षी जगत्याऽऋक्सममृक्सभाच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशःसप्तदशादैरूपंजमदग्निर्ऋषिः प्रजापतिगृहीतयात्वयाचक्षुगृह्णामिप्रजाभ्यः ॥ ३ ॥ इदमुत्तरात्स्वस्तस्यश्रोत्रꣳसौवꣳशरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप्शारद्यनुष्टुभऽऐडमैडान्मन्थी मन्थिनऽएकविꣳशएकविꣳशाद्वैराजंविश्वामित्रऋषिः प्रजापतिगृहीतयात्वयाश्रोत्रंगृह्णामिप्रजाभ्यः ॥४॥ इयमुपरिमतिस्तस्यै वाङ्सात्वाहेमन्तोवाच्यः पंक्तिहैमन्तीपङ्क्त्यैनिधनवन्निधनवतआग्रयणऽआग्रयणात्त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशौत्रिणवत्रयस्त्रिꣳशाभ्याꣳ शाक्वररैवतेविश्वकर्मऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वयावाचं गृह्णामि प्रजाभ्यो लोकन्ताऽइन्द्रम् ॥ ५ ॥ ( वा० सं० १३ । ५४–५८ ) लोकम्पृणच्छिद्रम्पृणाथोसीदध्रुवात्वम् ॥ इन्द्राग्नीत्त्वाबृहस्पतिरस्मिन्न्योनावसीषदन् ॥ ६ ॥ ताऽअस्यसददोहसःऽसोमꣳ श्रीणन्तिपृश्नयः ॥ जन्मन्देवानाँविशस्त्रिष्ष्वारोचनेदिवः ॥ ७ ॥ इन्द्रँविश्श्वाऽअवीवृधन्त्समुद्रव्यचसङ्गिरः रथीतमꣳग्थीनाँ वाजानाꣳसत्पतिम्पतिम् ॥ ८ ॥ ( वा० सं० १२ । ५४–५६ )

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मूर्द्धाव्वय ÷ प्रजापतिश्छन्दः क्षुत्रँव्वियोमर्यन्दुञ्छन्दो विष्टम्भो व्वयोधिपतिश्छन्दोव्विश्वकर्म्मार्व्वय ÷ परमेष्ठीछन्दोव्वस्तोव्वयोव्विवुलञ्छन्दो व्वृष्णिर्व्वयाव्विशालञ्छन्दःपुरुषोव्वर्यस्तुन्द्रञ्छन्दो व्याघ्रो व्वयोनाधृष्टञ्छन्द ÷ सिꣳहोव्वर्यश्छदिश्छन्द ÷ पष्टव्वाडूवर्या वृहतीछन्दऽउक्षाव्वय ÷ ककुपछन्दऽऋषभोव्वर्य ÷ सतोवृहतीछन्दोनड्वान्व्वर्व ÷ ॥९॥ अनड्वान्व्वर्य ÷ पंक्तिश्छन्दोधेनुर्व्वषो जगतीच्छन्दःस्व्यविर्व्वर्यस्त्रिष्ठप् छन्दोदित्यवाड्वयोव्विराट्छन्दः पञ्चाविर्व्वर्यो गायत्रीच्छन्दस्त्रिवत्सोव्वर्यऽउष्णिक्छन्दस्तुरुर्व्वाड्वर्योनुष्टुप्छन्दालाकन्ताऽइन्द्रम् ॥ १० ॥ ( वा० स० १४।९।१० ) ॥ माच्छन्द ÷ प्रमाच्छन्द ÷ प्रतिमाच्छन्दोऽस्त्रीवयश्छन्द ÷ पंक्तिश्छन्दऽउष्णिक्छन्दोबृहतीछंदोनुष्टुप् छंदोव्विराटछंदो गायत्रीच्छन्दऽस्त्रिष्टुप्छन्दो जगतीच्छन्दः पृथिवीच्छंदः ॥ ११ ॥ पृथिवीच्छन्दोन्तरिक्षञ्छन्दोद्यौश्छन्दः समाश्छन्दोनक्षत्राणिच्छंदोव्वाक्छन्दोमनुश्छंदः कषिश्छन्दो हिरण्यञ्छन्दोगौश्छंदोजाच्छंदोश्वश्छन्दः ॥ १२ ॥ अग्निर्देवतावातोदेवतासूर्य्योदेवताचन्द्रमादेवताव्वसवोदेवतारुद्रादेवतादित्यादेवतामरुतोदेवता व्विश्वेदेवादेवताबृहस्पतिर्देवतेन्द्रोदेवताव्वरुणोदेवता ॥ १४ ॥ ( वा०सं० १४।१८। २० ) एव्वुश्छन्दो व्वरिवुश्छन्द ÷ शुम्भूश्छन्द ÷ परिभूश्छन्दऽआच्छच्छन्दो मनुश्छन्दो व्यचश्छन्दऽसिन्धुश्छन्द ÷ समुद्रश्छन्दऽ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सरिरञ्छन्दऽंकुकुप्छन्दस्त्रिकुकुप्छन्द ÷ काव्यञ्छन्दोऽअंकुपञ्छन्दोऽक्षरपंक्तिश्छन्द ÷ पदपंक्तिश्छन्दो बिष्टारपंक्तिश्छन्द ÷ क्षुरोभ्रजश्छन्दऽआच्छच्छन्दःप्रुच्छच्छन्द÷। १५। आच्छच्छन्दः प्रुच्छच्छन्दऽसँस्तुयच्छन्दोविच्छयन्दोबृहच्छन्दोरथन्तरञ्छन्दो निकायश्छन्दोबिबधश्च्छन्दोगिरश्छन्दोभ्रजश्च्छन्द ÷ सुठँस्तुपछन्दोनुष्टुप्छन्दऽएवश्छन्दोबरिवश्छन्दोबयश्च्छंदोबयस्कृच्छन्दोबिष्पर्द्धाश्छन्दोविशालञ्छन्दश्छदिश्छन्दोदूरोहणञ्छन्दस्तुन्दञ्छन्दोऽअंकांकञ्छन्दः ॥ १६ ॥ रश्मिनासत्यायसत्यञ्जिन्वप्रेतिनाधर्मणाधर्मञ्जिन्वाग्निवत्यादिवादिवञ्जिन्व सुन्धिनान्तरिक्षेणान्तरिक्षञ्जिन्वप्रतिधिनापृथिव्यापृथिवीञ्जिन्वबिष्टम्भेनवृष्ट्यावृष्टिञ्जिन्वप्रवयान्हाहर्जिन्वानुयाराव्यारात्रीञ्जिन्वोशिजावसुभ्योवसूञ्जिन्व प्रकेतेनादित्येभ्यऽ आदित्याञ्जिव्यतन्तुना रायऽं ॥१७॥ तन्तुना रायस्पोषेणरायस्पोषञ्जिन्वसंऽसप्तेण श्रुतायश्रुतञ्जिन्वेडेनौषधीभिरोषधीर्जिन्वोत्तमेनतनूभिस्तनूर्जिन्वबयोधसाधीतेनाधीतञ्जिन्वाभिजिता तेजसा तेजोजिन्व ॥१८॥ प्रतिपदसिप्प्रतिपदेत्वानुपदस्यनुपदेत्वासुम्पदसि सुम्पदेत्वातेजोसितेजसेत्वात्रिवृदसि ॥१९॥ त्रिवृदसित्रिवृतेत्वाप्रवृदसिप्रवृतेत्वाबिवृदसिबिवृतेत्वासुवृदसि सुवृतेत्वाक्रमोस्याक्रमायत्वासऽक्रमोसिसऽक्रमायस्त्वोत्क्रमोसुत्क्रमायत्वोत्क्रान्तिरुस्युत्क्रान्त्यैत्वाधिपतिनोर्जोर्जञ्जिन्व ॥२०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



राज्ञर्चसि प्राचीदिग्वसवस्तेऽदेवाऽअधिपतयोऽग्निर्हेतीनाम्प्र-
तिधर्ताऽत्रिवृत्त्वास्तोमः ÷ पृथिव्याछंश्रयत्वाज्यमुक्थमव्यथायै
स्तभ्नातुरथन्तरꣳ सामुप्प्रतिष्ठित्याऽअन्तरिक्षुऽऋषयस्त्वाप्र-
थमुजादेवेषुदिवोमात्रयाव्वरिम्माप्प्रथन्तु विधर्ताचायमधिपति-
श्चतेत्वासर्व्वेसँविदानानाकस्यपृष्ठेस्वर्गेलोकेयजमानश्चसादय -
न्तु ॥ २१ ॥ विराडसिदक्षिणादिग्रुद्रास्तेदेवाऽअधिपतयऽइंद्रो
हेतीनांप्रतिधर्तापञ्चदशस्त्वास्तोमः ÷ पृथिव्याछंश्रयतुप्रऽउगमु-
क्थमव्यथायैस्तभ्नातुबृहत्सामुप्प्रतिष्ठित्याऽअन्तरिक्षुऽऋषय-
स्त्वाप्रथमुजादेवेषु दिवोमात्रयाव्वरिम्णाप्प्रथन्तुविधर्ताचाय-
मधिपतिश्चतेत्वासर्व्वेसँविदानानाकस्यपृष्ठेस्वर्गेलोकेयजमानश्च
सादयन्तु ॥ २२ ॥ सुम्राडसिप्रतीचीदिगादित्यास्तेदेवाऽ-
अधिपतयोवरुणो हेतीनाम्प्रतिधर्ता सप्तदशस्त्वा स्तोमः ÷
पृथिव्याछंश्रयतु मरुत्वतीयमुक्थमव्यथायैस्तभ्नातुवैरुपछं
सामुप्प्रतिष्ठित्याऽऽअन्तरिक्षुऽऋषयस्त्वा प्रथमुजादेवेषुदिवो
मात्रयाव्वरिम्णाप्प्रथन्तु विधर्ताचायमधिपतिश्चतेत्वासर्व्वेसँ-
विदानानाकस्यपृष्ठेस्वर्गेलोकेयजमानश्चसादयन्तु ॥ २३ ॥
स्वराडस्युदीचीदिङ् मरुतस्तेदेवाऽअधिपतयः ÷ सोमोहेतीना
म्प्रतिधर्तैकविꣳशस्त्वास्तोमः ÷ पृथिव्याछंश्रयतुनिष्केवल्य-
मुक्थमव्यथायै स्तभ्नातुवैराजछंसामुप्प्रतिष्ठित्याऽअन्तरिक्षु
ऽऋषयस्त्वाप्रथमुजादेवेषुदिवोमात्रयाव्वरिम्माप्प्रथन्तु विधर्ता
चायमधिपतिश्चतेत्वासर्व्वेसँविदानानाकस्यपृष्ठेस्वर्गेलोकेयजे-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मानश्चसादयन्तु ॥ २४ ॥ अधिपत्कन्यसिबृहतीदिग्विश्वै—
तेदेवाऽअधिपतयो बृहस्पतिर्हेतीनाम्प्रतिधर्त्ता त्रिणवत्रयस्त्रिꣳ
शौत्वा स्तोमौ पृथिव्याꣳ श्रयतां वैश्वदेवाग्निमारुतेऽउक्थेऽ-
अर्य्यथायै स्तभ्नीताꣳ शाक्वररैवते सामनी प्रतिष्ठित्या
ऽअन्तरिक्षꣳऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिम्णा
प्रथन्तु विधर्त्ता चायमधिपतिश्च तेत्वा सर्वे सँविदाना नाकस्य
पृष्ठे स्वर्गेलोके यजमानश्च सादयन्तु ॥ २५ ॥ अयम्पुरोहरि-
केशꣳसूर्यरश्मिस्तस्य रथगृत्सश्च रथौजाश्च सेनानीग्रा-
मण्यो पुञ्जिकस्थलाचक्रतुस्थलाचाप्सरसौदुङ्क्षणवं ÷ पशवो
हेतिꣳपौरुषेयोवधꣳप्रहेतिस्तेभ्यो नमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनोमृ-
डयन्तुते यन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेषाꣳअस्मैदधमꣳ ॥२६॥ अय-
न्दक्षिणाविश्वकर्म्मातस्यरथस्वनश्च रथेचित्रश्चसेनानीग्राम्यौ
मेनकासहजन्याचाप्सरसौ यातुधानाहेतीरक्षाꣳसि प्रहेति
स्तेभ्योनमोऽअस्तुतेनोवन्त तेनोमृडयन्ततेयन्द्विष्मोयश्चनो
द्वेष्टि तमेषाꣳअस्मैदधम ÷ ॥ २७ ॥ अयम्पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य
रथप्रोतश्चासमरथश्चसेनानी ग्रामण्यौप्रम्लोचन्तीचानम्लोच-
न्ती चाप्सरसौव्याघ्राहेतिꣳ सर्पाꣳप्रहेतिस्तेभ्यो नमोऽअस्तु
तेनोवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्चनो द्वेष्टितमेषाꣳअस्मैदधम
÷ ॥२८॥ अयमुत्तरात्सँयद्वसुस्तस्यतार्क्ष्यश्चारिष्टनेमिश्चसेना-
नीग्रामण्यौ विश्वाचीचघृताचीचाप्सरसावापोहेतिर्वातꣳप्रहेति
स्तेभ्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तु तेनो मृडयन्तु तेयन्द्विष्मो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यश्च॑नो॒ द्वेष्टि॒तमे॑षा॒ञ्जम्भे॑ दध्मः॑ ॥ २९ ॥ अ॒यमु॒पर्य्य॒र्वाग्ग्व॑सु॒स्तस्य॑सेन॒जिच्च॑सु॒षेण॑श्चसेनानीग्राम॒ण्यौ । उ॒र्वची॑चपू॒र्वचि॑त्तिश्चाप्स॒रसा॑मव॒स्फूर्ज्ज॑न्हे॒तिर्वि॒द्युत्प्रहे॑ति॒स्तेभ्यो॒नमो॑ऽ अस्तु॒तेनो॑वंतु॒ तेनो॑मृडयन्तु॒तेयन्द्वि॒ष्मो यश्च॑नो॒द्वेष्टि॒तमे॑षा॒ञ्जम्भे॑दध्मः॑ ॥ ३० ॥ ( वा० सं० १५ । ४—१९ ) ॐ स॒प्तऽऋष॑यः॒ प्रति॑हिताः॒ शरी॑रे स॒प्तर॑क्षन्ति॒सद॒मप्र॑मादम् । स॒प्तापः॒ स्वप॑तोलो॒ कमी॑यु॒स्तत्र॑ जागृतो॒ऽ अस्वप्नजौसत्र॒सदौ॑ चदे॒वौ ॥ ३१ ॥ ( वा० सं० ३४ । ५५ ) मन्त्रोक्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ वंशानां वाचनम् । अ॒थ॒वꣳशः॒ समान॒मासां॒जीवीपु॒त्रात्सां॒जीवीपु॒त्रो मां॒डूकायनेर्मा॒ण्डूकायनिर्मा॒ण्डव्यान्मा॒ण्डव्यः॑ कौ॒त्सात्कौ॒त्सो मा॒हित्थेमा॒हित्थिर्व्वा॒मकक्षायणा॒द्वामकक्षायणोवा॑त्स्याद्वा॒त्स्यः॑ शां॒डिल्याच्छां॒डिल्यः॑कु॒श्रेः॑कु॒श्रिर्यज्ञ॒वचसो राजस्तंबा॒यनाद्यज्ञ॒वचा राजस्तंबा॒यनस्तुरात्का॒वषेयात्तुर ꣳका॒वषेयꣳ प्रजा॒पतेꣳ प्रजा॒पतिर्ब्र॒ह्मणो ब्र॒ह्मस्वयं॒भुब्र॒ह्मणे॒ नमः॑ ॥१॥ वंशोक्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ [अ॒थव॑ꣳशस्त॒दिदं॒वयꣳशौ॒पर्णाऽ॒याच्छौ॒पर्णाऽ॒या गौ॒तमाद्गौतमो वा॒त्स्याद्वा॒त्स्यो व्वा॒त्स्याञ्च पाराशर्य्या॒च्च पा॒राशर्य्यः॒ सां॒कृत्याच्चभा॒रद्वाजाच्चभा॒द्वाजऔदवादे॒श्वशाण्डिल्याच्चशा॒ण्डिल्योवै॒जवापाच्चगौतमा॒च्चगौ॒तमोवै॒जपायनाच्चवै॒ष्टपुरेया॒च्चव्वै॒ष्टपुरेयः॑शाण्डिल्याच्चरौहिणायनाच्च रौहिणायनः॑ शौ॒नकाच्चात्रेया॒च्चरैभ्या॒च्चरै॒भ्यः॑ पौ॒तिमाष्यायणाच्च कौण्डिन्यायना॒च्च कौ॒ण्डिन्यायनः॑ कौ॒ण्डिन्यात्कौ॒ण्डिन्यः॑

[२४।५।५।२०-२२ (पृ.१४५६)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कौण्डिन्यात्कौण्डिन्यः कौण्डिन्याच्चाग्निवेश्याच्च ॥ १ ॥ अग्निवेश्यः सैतवात्सैतवः पाराशर्य्यात्पाराशर्य्योजातूकर्ण्यो-ज्जातूकर्ण्योभारद्वाजाद्भारद्वाजोभारद्वाजाच्चासुरायणाच्चगौ-तमाच्चगौतमोभारद्वाजाद्भारद्वाजोवैजवापायनाद्वैजवापायनः कौशिकायनेः कौशिकायनिर्वृतकौशिकाद्घृतकौशिकः पारा-शर्य्यायणात्पाराशर्य्यायणः पाराशर्य्यात्पाराशर्य्योजातूक र्ण्याज्जातूकर्ण्योभारद्वाजाद्भारद्वाजोभारद्वाजाच्चासुरायणाच्च वास्काच्चासुरायणस्त्रैवणेस्त्रैवणिरौपजन्धनेरौपजन्धनिरासुरे-रासुरिर्भारद्वाजाद्भारद्वाजऽआत्रेयात्॥२॥ आत्रेयोमाण्टेर्माण्टि-र्गौतमाद्गौतमोगौतमाद्गौतमो व्रात्स्याद्व्रात्स्यः शाण्डि-ल्याच्छाण्डिल्यः कैशोर्य्यात्काप्यात्कैशोर्य्यः काप्यः कुमारहा-रेतात्कुमारहारितो गालवाद्गालवोविदर्भीकौण्डिन्याद्विदर्भी कौण्डिन्यो व्रत्सनपातोबाभ्रवाद्वत्सनपाद्बाभ्रवः पथः सौमरा-त्पन्थाः सौभरोऽयास्यादाङ्गिरसादयास्यआङ्गिरसऽआ-भूतेस्त्वाष्ट्राद्भूतिस्त्वाष्ट्रोविश्वरूपात्त्वाष्ट्राद्विश्वरूपस्त्वाष्टोऽश्वि-भ्यामश्विनौ दधीचऽआथर्वणाद्दध्यङ्ङाथर्वणो दैवाद्थर्वः दैवो मृत्योः प्राध्वꣳसनान्मृत्युः प्राध्वꣳसनः प्रध्वꣳसनात्प्रा ध्वꣳसनऽएकर्षेरेकर्विर्विपाचित्तेर्विप्रचित्तिर्व्यश्वेर्व्यश्टिः सनारोः सनारुः सनातनात्सनातनः सुनगात्सुनगः परमेष्ठिनः परमे-ष्ठीब्रह्मणोब्रह्मस्वयम्भुब्रह्मणे नमः ॥३॥ वंशोक्ता ऋषयस्तृप्य-न्ताम्॥ [अथव्वर्ठंशस्तदिदँ व्वयर्ठंशौपर्णाय्याच्छौपर्णाय्यो-

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



गौतमाद्गौतमो व्वात्स्याद् व्वात्स्यो वात्स्याच्चपाराशर्य्या-
च्चपाराशर्य्यः साङ्कृत्याच्चभारद्वाजाच्चभारद्वाज औदव-
हेश्च शाण्डिल्याच्च शांडिल्यो वैजवापाच्च गौतमाच्च गौत-
मोव्वैजवापायनाच्चव्वैष्टपुरेयाच्चव्वैष्टपुरेयश्शांडिल्याच्च रौहि-
णायनाच्चरौहिणायनश् शौनकायनाच्चजैवन्तायनाच्चरैभ्याच्च
रैभ्यश् पौतिमाष्यायणाच्चकौंडिन्यायनाच्चकौंडिन्यायनश्कौं-
डिन्याभ्यां कौंडिन्यऽऔर्णवाभेभ्यऽऔर्णवामाश्कौंडिन्यात्कौं-
डिन्यश्कौंडिन्यात्कौंडिन्यश्कौंडिन्याच्चाग्निवेश्याच्च ॥१॥ आग्नि-
वेश्यश्सैतवात्सैतवश्पाराशर्य्यात्पाराशर्य्यो जातूकर्ण्याज्जातूक
र्ण्योभारद्वाजाद्भारद्वाजोभारद्वाजाच्चासुरायणाच्चगौतमाच्च गौ
तमोभारद्वाजाद्भारद्वाजो बलाकाकौशिकाद्बलाकाकौशिक-
काषायणात्काषायणश्सौकरायणात्सौकरायणश्च्रैवणेश्च्रैवणिरो
पजङ्घनेरौपजङ्घनिस्सायकायनात्सायकायनस् कौशिकाय-
नेश् कौशिकायनिर्घृतकौशिकाद्घृतकौशिकस् पाराशर्य्यायणा
त्पाराशर्य्यायणस्पाराशर्य्यात्पाराशर्य्यो जातूकर्ण्याज्जातूक-
र्ण्यो भारद्वाजाद्भारद्वाजोभारद्वाजाच्चासुरायणाच्चयास्काच्चासु
रायणश्च्रैवणेश्च्रैवणिरौपजङ्घनेरौपजङ्घनिरासुरेरासुरिर्भार-
द्वाजाद्भारद्वाज आत्रेयात् ॥२॥ आत्रेयोमांटिर्मांटिर्गौतमाद्गौ-
तमोगौतमाद्गौतमोव्वात्स्याद्वात्स्यस् शांडिल्याच्छांडिल्यश्
कैशोर्य्यात्काप्याच्चकैशोर्य्यश् काप्यश्कुमारहारितात्कुमारहा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रितोगालवाद्गालवो ब्रिदर्भीकौंडिन्याद्विदर्भीकौंडिन्यो वत्सु-
नपातोबाभ्रवाद्वत्सुनपाद्बाभ्रवꣳ पथꣳ सौभरात्पन्थाꣳसौभरोऽ-
यास्यादङ्गिरसादयास्यऽ आङ्गिरसऽ आभूतेस्त्वाष्ट्रादा-
भूतिस्त्वाष्ट्रो विश्वरूपात्वाष्ट्राद्विश्वरूपस्त्वाष्ट्रोश्विभ्यामश्विनौ
दधीचऽआथर्वणाद्दध्यङ्ङाथर्वणो दैवाद्दथर्वादैवो मृत्योः
प्राध्वꣳसनान्मृत्युःप्राध्वꣳसनः प्रध्वꣳसनात्प्रध्वꣳसनऽएकर्षे
रेकर्षिर्विप्रचित्तेर्विप्रचित्तिर्व्यष्टेर्व्यष्टिस्सनारोः सनारुꣳसनातु-
नात्सनातनꣳसनगात्सनगꣳपरमेष्ठिनꣳपरमेष्ठीब्रह्मणोब्रह्मस्व-
युम्भुवब्रह्मणेऽनमꣳ ॥३॥ वंशोक्ताऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥[अथवꣳश-
स्तदिदंवयं भारद्वाजीपुत्राद्भारद्वाजीपुत्रो वात्सीमाण्डवीपुत्रा-
द्वात्सीमाण्डवीपुत्रꣳ पाराशरीपुत्रात्पाराशरीपुत्रोगार्गी पुत्राद्गा-
र्गीपुत्रꣳ पाराशरीकौण्डिनीपुत्रात् पाराशरीकौण्डिनीपुत्रो
गार्गीपुत्रादगार्गीपुत्रो गार्गीपुत्रादगार्गीपुत्रोबाडेयीपुत्रादाडेयी
पुत्रोमौषिकीपुत्रान्मौषिकीपुत्रोहारिकर्णीपुत्राद्धारिकर्णीपुत्रोभा
रद्वाजीपुत्राद्भारद्वाजीपुत्र ꣳपैङ्गीपुत्रापैङ्गीपुत्रशौनकीपुत्राच्छौ
नकीपुत्रꣳ ॥ १ ॥ काश्यपीबालाद्यामाठरीपुत्रात्काश्य-
पीबालाक्यामाठरीपुत्रꣳकौत्सीपुत्रात्कौत्सीपुत्रोवौधीपुत्रादौ--
धीपुत्रꣳ शालंकायनीपुत्राच्छालङ्कायनीपुत्रोद्वार्षगणीपुत्रा-
दार्षगणीपुत्रोगौतमीपुत्राद्गौतमीपुत्रऽआत्रेयीपुत्राढात्रेयी पुत्रो
गौतमीपुत्रादगौतमीपुत्रोवात्सीपुत्राद्वात्सीपुत्रो भरद्वाजीपुत्रा

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



द्भरद्वाजीपुत्रः पाराशरीपुत्रात्पाराशरीपुत्रो बार्कारुणीपुत्राद्बार्कारुणीपुत्रऽआर्तभागीपुत्राद्वार्त्तभागीपुत्रः शौंगीपुत्राच्छौंगीपुत्रःसाङ्कृतीपुत्रात्सांकृतीपुत्रः॥२॥ आलम्बीपुत्रादालम्बीपुत्रऽआलम्बायनीपुत्रादालम्बायनीपुत्रौ जायन्तीपुत्राज्जायन्तीपुत्रो माण्डूकायनीपुत्रान्माण्डूकायनी पुत्रो माण्डूकीपुत्रान्माण्डूकीपुत्रः शाण्डिलीपुत्राच्छाण्डिलीपुत्रो राथीतरीपुत्राद्राथीतरीपुत्रः क्रौञ्चिकीपुत्राभ्यां क्रौञ्चिकीपुत्रो बैदभृतीपुत्राद्वैदभृतीपुत्रो भालुकी पुत्राद्भालुकीपुत्रः प्राचीनयोगीपुत्रात्प्राचीनयोगीपुत्रः साञ्जीवीपुत्रात्साञ्जीवीपुत्रः कार्शकेयीपुत्रात्कार्शकेयीपुत्रः ॥ ३ ॥ प्राञ्जीपुत्रादासुरिवासिनः प्राञ्जीपुत्रऽआसुरायणादासुरायणऽ आसुरेरासुरिर्याज्ञवल्क्याद्याज्ञवल्क्यऽ उद्दालकादुद्दालकोरुणादरुणऽ उपवेशेरुपवेशिःकुश्रेः कुश्रिर्वाजश्रवसो वाजश्रवा जिह्वावतो बाध्योगाज्जिह्वावान्बाध्योगोसिनाद्वार्षगणादुसितोवार्षगणो हरितात्कश्यपाद्धरितः कश्यपः शिल्पात्कश्यपाच्छिल्पः कश्यपः कश्यपान्नैध्रुवेः कश्यपोनैध्रुविर्वाचोवाग्म्भिण्याऽअम्भिण्यादित्यादादित्यानीमानिशुक्रानियजूंषि वाजसनेयेन याज्ञवल्क्येनाख्यायन्ते ॥ १ ॥ वंशोक्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥[दुमावेव गौतमभरद्वाजावयमेव गौतमोयं भरद्वाजऽडुमावेवविश्वामित्रजमदग्नी अयमेवविश्वामित्रोयं जमदग्निरिमावेववसिष्ठकश्यपावयमेववसिष्ठोयं कश्यपोवागेवात्रिर्वाचा

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



हयुन्नमद्यतेत्तिर्हवेनुमैतुद्यदुत्रिरिति सुव्रस्यात्तुभवति सुर्व्वु-मस्यान्नम्भवति युऽएवंवेद ॥ ब्राह्मणोक्ता ऋषयस्तृप्यंताम् ॥ ॐ तत्सवितुरिति चतुर्वारं गायत्रीं पठेत् ॥ इति प्रतिवंशवंशोक्तानामृषीणां तर्पणम् ॥ ततः सर्वे ॐ विरताः स्म इति सकृदुच्चैर्ब्रूयुः ॥

अथाध्ययनक्रमः। तत्र तावच्चत्वारिंशदध्यायमंत्राः--ॐइषेत्वा॥१॥ कृष्णोऽसि ॥ २ ॥ समिधाग्निम् ॥ ३ ॥ एदंम् ॥ ४ ॥ अग्नेस्तनूः ॥ ५ ॥ देवस्यत्वा ॥ ६ ॥ वाचस्पतये ॥७ ॥ उपयामगृहीतोसि ॥ ८ ॥ देवसवितः ॥ ९ ॥ अपोदेवाः ॥ १० ॥ युञ्जानऽप्रथमम् ॥ ११ ॥ दृशानोरुक्मः ॥ १२ ॥ मायिं गृह्णामि ॥ १३ ॥ ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनिः ॥ १४ ॥ अग्नेर्जातान्॥ ॥१५॥ नमस्ते ॥ ६ ॥ अश्मन्नूर्जम् ॥१७॥ व्वाजश्च ॥ १८ ॥ स्वाद्वीन्त्वा ॥ १९ ॥ क्षत्रस्युयोनिः ॥ २० ॥ द्रुमम्मे ॥२१॥ तेजोऽसि ॥ २२ ॥ हिरण्यगर्भऽसम् ॥ २३ ॥ अश्वस्तूपरः ॥ २४ ॥ शादन्दद्भिः ॥२५॥ अग्निश्च ॥२६॥ समास्त्वा ॥२७॥ होतायक्षत् ॥ २८ ॥ समिद्धोऽअञ्जन् ॥ २९ ॥ देवसवितऽ ॥ ३० ॥ सहस्रशीर्षापुरुषऽ ॥ ३१ ॥ तदेव ॥ ३२ ॥ अस्याजरासः ॥ ३३ ॥ यज्जाग्रतः ॥ ३४ ॥ अपेतः ॥ ३५ ॥ ऋचुं व्वाचम् ॥ ३६ ॥ देवस्य त्वा ॥ ३७ ॥ देवस्य त्वा ॥ ३८ ॥ स्वाहा प्राणेभ्यऽ ॥ ३९ ॥ ईशावास्यम् ॥ ४० ॥ अध्यायोक्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अथ शतानि ॥ ॐ दृषेत्वा ॥ १ ॥ परिते ॥ २ ॥ अग्ने नयं ॥ ३ ॥ उपयामगृहीतोसिसुशर्मासि । ४॥ सोमस्यत्विषिः ॥ ५ ॥ परस्याऽअधि ॥ ६ ॥ अदृश्रावः ॥ ७ ॥ राज्ञर्चसि ॥८॥ नमो हिरण्यबाहवे ॥ ९ ॥ इन्देमम् ॥ १० ॥ दुमौतै ॥११॥ अन्नात्परिस्रुतः ॥ ११ ॥ अश्विनातेजसा ॥ १३ ॥ पृथिव्यै स्वाहा ॥ १४ ॥ प्रजापतयेचवायवेंच ॥ १५॥ तेऽअस्य॥१६॥ तनूनपात्पथः ॥१७॥ अयमिहप्रथमः ॥ १८ ॥ अनुनः ॥१९॥ इयत्यग्रे ॥ शेषं पंचसप्ततिः ॥

अथ शतपथाध्यायाः ॥ व्रतमुपैष्यन् ॥ १ ॥ सवैकपालान्यो वान्यतरऽउपदधाति ॥ २ ॥ सवैस्रुचःसम्मार्ष्टि ॥ ३ ॥ हिङ्कृत्यान्वाह ॥ ४ ॥ सवैप्रवरायाश्रावयति ॥ ५ ॥ ऋतवो हवैदेवेषुयज्ञेभागमीषिरे ॥६॥ सवैपर्णशाखयावत्सानपाकरोति ॥७॥ मनुवेह वैप्रातः ॥८॥ सयत्राह ॥ ९ ॥ सयद्वाइतश्चेतश्च सम्भरति ॥ १० ॥ उद्धृत्याहवनीयंपूर्णाहुतिं जुहोति ॥ ११ ॥ सूर्य्योहवाऽअग्निहोत्रम् ॥१२॥ अथहुतेऽग्निहोत्रऽउपतिष्ठते ॥१३॥ प्रजापतिर्हवाऽइदमग्रऽएकऽएवास ॥ १४ ॥ महाहविषाहवैदेवा व्वृत्रञ्चघ्नन्तः ॥ १५ ॥ देवयजनञ्जोषयन्ते ॥ १६ ॥ दक्षिणेना-हवनीयंप्राचीनग्रीवेकृष्णाजिनेऽउपस्तृणाति ॥ १७ ॥ सप्तपद्यान्यनुनिष्क्रमाति ॥ १८ ॥ शिरोवैयज्ञस्यातिथ्यंबाहूपायणी-योदयनीयौ ॥ १९ ॥ तद्यऽएषपूर्वार्द्ध्योंवर्षिष्ठस्थणाराजोभवति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



॥ २० ॥ उदुरमेवाभ्यसृदत् ॥ २१ ॥ अभ्रिमादत्ते ॥ २२ ॥ तद्यत्रैतत्प्रवृत्तोहोताहोतृषदनऽउपविशति ॥ २३ ॥ प्रजापतिर्वै प्रजाः ससृजायोरिरिचानऽइवामन्यत ॥ २४ ॥ प्राणोह वाऽअस्योपाꣳशुः ॥ २५ ॥ चक्षुषीहवाऽअस्यशुक्रामन्थिनौ ॥ ॥ २६ ॥ भक्षयित्वासमुपहूताःस्मऽइत्युक्त्वोत्तिष्ठति ॥ २७ ॥ मनाहवाऽअस्यसविता ॥ २८ ॥ आदित्येन चरुणोदयनीयेन प्रचरति ॥ २९ ॥ प्रजापतिर्वाऽएषयदर्धशुः ॥ ३० ॥ देवाश्च वाऽअसुराश्च ॥ ३१ ॥ अथस्रुवश्चाज्यविलापनींचादाय ॥ ३२ ॥ अरण्योरग्नीसमारोहय ॥ ३३ ॥ केद्यवस्य पुरुषस्य ॥ ३४ ॥ आग्नेयोष्टाकपालःपुरोडाशो भवति ॥ ३५ ॥ असद्वाऽइद-मग्रऽआसीत् ॥ ३६ ॥ प्रजापतिरग्निरूणण्यभ्यध्यात् ॥ ३७ ॥ एतद्वै देवाऽअब्रुवन् ॥ ३८ ॥ अथैममतःखनत्येव ॥ ३९ ॥ पर्णकषायनिष्पक्वाऽएताऽआपो भवन्ति ॥ ४० ॥ भूयाꣳसि हवीꣳषि भवन्ति ॥ ४१ ॥ रुक्मम्प्रतिमुच्यविभर्त्ति ॥ ४२ ॥ बनीबाहूसेतामग्निबिभ्रदित्याहुः ॥ ४३ ॥ गार्हपत्यं चेष्यन्पलाश-शाखयाभ्युदूहति ॥४४॥अथातो नैर्ऋतीर्हरन्ति ॥ ४५ ॥ चितो गार्हपत्योभवति ॥ ४६ ॥ आत्मन्यग्निगृह्णीतेचेष्यन् ॥ ४७ ॥ कूर्म्ममुपदधाति ॥ ४८ ॥ प्राणभृतऽउपदधाति ॥४९॥ द्वितीयां चितिमुपदधाति ॥ ५० ॥ तृतीयांचितिमुपदधाति ॥ ५१ ॥ चतुर्थींचितिमुपदधाति ॥ ५२ ॥ पञ्चमीं चितिमुपदधाति ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



॥ ५३ ॥ नाकसुदऽउपदधाति ॥ ५४ ॥ ऋतव्याऽउपदधाति ॥ ॥ ५५ ॥ अथातः शतरुद्रियꣳजुहोति ॥५६॥ उपवसथीयेऽहन् प्रातरुदितऽआदित्ये ॥ ५७ ॥ अथातोवैश्वानरꣳजुहोति ॥ ॥ ५८ ॥ अथातोराष्ट्रभृतोजुहोति ॥ ५९ ॥ अथातःपयोव्रतु-तायै ॥ ६० ॥ अग्निरेषपुरस्ताच्चीयते ॥ ६१ ॥ प्रजापतिःस्वर्गं लोकमजिगाꣳसत् ॥ ६२ ॥ प्राणोगायत्री ॥ ६३ ॥ प्रजापतिं त्रिरुस्तम् ॥ ६४ ॥ तस्यवाऽएतस्याग्नेः ॥ ६५ ॥ अथद्वैतेरुणे ॥६६॥ सँवत्सरोवैयज्ञःप्रजापतिः ॥ ६७ ॥ त्रिर्हवैपुरुषोजायते ॥६८॥ व्याघ्रवाऽएतस्याग्निहोत्रस्याग्निहोत्री॥६९॥ उद्दालको हारुणिः ॥ ७० ॥ उर्वशीहाप्सराः ॥७१॥ भृगुर्हवैवारुणिः ॥ ॥ ७२ ॥ पशुबन्धेन यजते ॥ ७३ ॥ तद्यथाह वै ॥ ७४ ॥ अयं वै यज्ञो योयं पवते ॥ ७५ ॥ समुद्रँव्वाऽएते प्रतरन्ति ॥ ७६ ॥ यद्वालोके॥७७॥दीर्घसत्रꣳहवाऽएतऽउपयन्ति ॥७८॥ तुदद्वुर्व-देषदीर्घसत्री ॥ ७९ ॥ सोमो वै राजा यज्ञःप्रजापतिः ॥८०॥ विश्वरूपंव्वै त्वाष्ट्रमिन्द्रोहन् ॥ ८१ ॥ इन्द्रस्य वै यत्र ॥ ८२ ॥ एतस्माद्वै यज्ञात्पुरुषो जायते ॥ ८३ ॥ ब्रह्मौदनं पचति ॥ ॥ ८४ ॥ प्रजापतिर्देवेभ्यो यज्ञान् व्यादिशत् ॥ ८५ ॥ प्रजापतेरक्ष्यभ्रयत्॥८६॥ प्रजापतिरकामयत ॥ ८७ ॥ अथ प्रातर्गोतमस्य ॥ ८८ ॥ पुरुषोहनारायणोऽकामयत ॥ ८९ ॥ ब्रह्मवैस्वयंभुतपोतप्यत ॥९०॥ अथास्मैश्मशानꣳकुर्वंति ॥९१॥ देवाहतैसत्रंनिषेदुः ॥ ९१ ॥ अथातोरौहिणौजुहोति ॥ ९३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सवैतृतीयेऽहन् ॥९४॥ द्वयाहप्राजापत्याः॥९५॥दृप्तबालाकिहा-नूचानोगार्ग्यऽआस॥९६॥जनकोहवैदेहः॥९७॥ जनकꣳहवैदेहं याववल्क्यो जगाम् ॥ ९८ ॥ पूर्णमतःपूर्णमिदम् ॥ ९९ ॥ श्वेतकेतुर्हवाऽआरुणेयः ॥१०० ॥ चतुर्दशकाण्डेष्वध्यायोक्ता ऋषयस्तृष्यन्ताम् ॥

अथ प्रपाठकाः । व्रतमुपैष्यन् ॥ १ ॥ चतुर्द्धा विहितोह वाऽअग्रेग्निरास ॥ २ ॥ तेवाऽआर्द्राःस्युः ॥ ३ ॥ सस्रुचोत्तर-माघारमाघारयिष्यन् ॥ ४ ॥ यज्ञेनवैदेवाः ॥ ५ ॥ यज्ञेनवै देवादिवमुपोदक्रामन् ॥ ६ ॥ सवैस्रुचौव्यूहति ॥७॥ सयद्वा-ऽइतश्चेतश्चसम्भरति ॥ ८ ॥ वरुणौहैनꣳराज्यकामऽआदधे ॥ ॥ ९ ॥ यत्रवैप्रजापतिःप्रजाः ससृजे ॥ १० ॥ प्रजापतिर्हवाऽ-एतेनाग्नेयेनयज्ञेनेजे ॥ ११ ॥ महाहविषाह वैदेवावृत्रञ्जघ्नुः ॥ १२ ॥ देवयजनञ्जोषयन्ते ॥ १३ ॥ वाचँय्यच्छति ॥ १४ ॥ नीडेकृष्णाजिनमास्तृणाति ॥ १५ ॥ तद्यऽएषपूर्वा-र्ध्योवर्षिष्ठस्थूणाराजोभवति ॥ १६ ॥ विजामानोदैवास्य-धिष्ण्याः ॥ १७ ॥ पाशं कृत्वा प्रतिमुञ्चति ॥ १८ ॥ सोत्युपयजति ॥ १९ ॥ प्राणो ह वाऽअस्योपाꣳशुः ॥ २० ॥ आत्मा ह वाऽ अस्याग्रयणः ॥ ३१ ॥ घ्नन्ति वाऽएतद्यज्ञम् ॥ २२ ॥ स वा ऽअसभृथमभ्यवैति ॥ २१ ॥ तद्यत्रैतद्द्वादशा-हेतव्यूढच्छन्दसा यजते ॥२४॥ देवाश्च वाऽअसुराश्च ॥ २५ ॥ बार्हस्पत्येन चरुणा प्रचरति ॥ २६ ॥ सवाऽअपः सम्भरति॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



॥ २७ ॥ मैत्रावरुण्यापयस्यया प्रचरति ॥ २८ ॥ असद्वाऽइद-मग्रऽआसीत् ॥ २९ ॥ प्राजापत्यंचरकाआलभन्ते ॥ ३० ॥ प्रदीप्ताऽएतेऽग्नयोभवन्ति ॥ ३१ ॥ तस्याऽएतस्याअषाढां पूर्वांकरोति ॥ ३२ ॥ रुक्मंप्रतिमुच्यबिभर्ति ॥ ३३ ॥ गार्हपत्यंचेष्युन्पलाशशाखयाव्युदूहति ॥ ३४ ॥ अथदर्भस्तम्बमुपदधाति ॥ ३५ ॥ आत्मन्नग्निंगृह्णीतेचेष्यन ॥ ३६ ॥ कूर्ममुपदधाति ॥ ३७ ॥ प्राणभृतउपदधाति ॥ ३८ ॥ अथविश्वज्ज्योतिषमुपदधाति ॥ ३९ ॥ अथातोऽन्वावृतम् ॥ ४० ॥ गार्हपत्यमुपदधाति ॥ ४१ ॥ अथातःशतरुद्रियञ्जुहोति ॥ ४२ ॥ प्रत्येत्याग्निम्प्रहरिष्यन ॥ ४३ ॥ अथैतान्यज्ञक्रतूञ्जुहोति ॥ ४४ ॥ अथप्रातःप्रातरनुवाकमुपाकरिष्यन् ॥ ४५ ॥ अग्निरेषपुरस्ताच्चीयते ॥ ४६ ॥ अथातरश्चयनस्यैव ॥ ४७ ॥ सँवत्सरोवैप्रजापतिरग्निः ॥ ४८ ॥ नेवाऽइदमग्रेसदासीन्नेवसदासीत ॥ ४९ ॥ सँवत्सरोवैयज्ञः प्रजापतिः ॥ ५० ॥ अपिहवाऽएतर्हि ॥ ५१ ॥ प्रजापतिर्वै प्रजाः सृजमानोऽतप्यत ॥५२॥ अथातः स्वाध्यायप्रशठंसा ॥ ५३ ॥ अयँवैयज्ञोघोयंपवते ॥ ६४ ॥ पुरुषठंहनारायणंप्रजापतिरुवाच ॥ ५५ ॥ सोमो वैराजायज्ञःप्रजापति ॥ ५६ ॥ प्रजापतिर्यज्ञमसृजत ॥ ५७ ॥ ब्रह्मौदनंपंचति ॥ ५८ ॥ नियुक्तेषुपशुषु ॥ ५९ ॥ प्रमुच्याश्वं दक्षिणेन वेदिम् ॥६०॥ पुरुषो ह नारायणोऽकामयत ॥६१॥ देवा ह वै सत्रन्निषेदुः ॥ ६२ ॥ सयत्रैताछंहोतान्वाह ॥ ६३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



द्वयाह प्राजापत्याः ॥ ६४ ॥ दत्तबालाकिर्हानूचानोगार्ग्यआस ॥ ६५ ॥ अथ हैनं भुज्युर्लाह्यायनिः पप्रच्छ ॥ ६६ ॥ जनकꣳहवैदेहꣳयाज्ञवल्क्यो जगाम ॥ ६७ ॥ भूमिरन्तरिक्षन्द्यौरिति ॥ ६८ ॥ इति चतुर्दशकांडे प्रपाठकोक्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ इति प्रपाठकाः ॥

अथ शतस्थानानि ॥ व्रतमुपैष्यन् ॥ १ ॥ तद्यु-देवंपिनष्टि ॥ २ ॥ अथाज्यलिप्ताभ्यांपवित्राभ्याम् ॥ ॥ ३ ॥ बृहच्छोचायविष्ठ्येति ॥ ४ ॥ वसूनार्द्रास्तौस्याम ॥ ५ ॥ अग्निर्वैदेवानामद्धातमाम ॥ ६ ॥ तद्यथायोनौरेतः सिञ्चेत् ॥ ७ ॥ ताँवैप्राश्नन्त्येव ॥ ८ ॥ अथवैदंपत्नीविस्रꣳसयति ॥ ९ ॥ अयँवैयज्ञोयोयंपवते ॥ १० ॥ अथयदन्तमेति ॥ ११ ॥ रेवतीरमध्वमिति ॥ १२ ॥ सवाऽआग्नेयोष्टाकपालः पुरोडाशोभवति ॥ १३ ॥ तद्येसोमेनजानाः ॥ १४ ॥ अथोत्तरेण शालां परिश्रयन्ति ॥ १५ ॥ अथोल्लिखति ॥ १६ ॥ सायाबभ्रुः पिङ्गाक्षीसासोमक्रयणी स्यात् ॥ १७ ॥ तेदेवाः ॥१८॥ प्रोक्षणीरध्वर्यवुरादत्ते ॥१९॥ त्साहकद्रूरुवाच ॥ २० ॥ देवाहवैयज्ञन्तन्वानाः ॥ २१ ॥ अथपार्श्वेनवासिनावाग्नयौति ॥ २२ ॥ सुश्रुहोतिश्रृणोत्वग्निःसमिधाहुवंमऽइति ॥ २३ ॥ इयꣳहवाऽउपाꣳशुः ॥ २४ ॥ तस्यासावेवबन्धुवऽआयुः ॥ २५ ॥ यत्रद्यावापृथिव्यꣳशस्यते ॥ ॥ २६ ॥ सऽआज्यस्योपस्तीर्यदिश्चरोरुवद्याति ॥ २७ ॥ इन्द्रो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



द्वैषोडशी ॥ २८ ॥ तासांद्वादशगुर्भाः ॥ २९ ॥ तद्येहस्म पुराग्नाजपेयेनयजते ॥ ३० ॥ अथ दिशोनुवीक्षमाणो जपति ॥ ३१ ॥ सर्वे दीक्षते ॥ ३२ ॥ अथैतमाभिषेकं कृष्णविषाणयानुविमृष्टे ॥ ३३ ॥ षडेवोत्तरेचरवः ॥ ३४ ॥ अथोऽआहुः ॥ ॥ ३५ ॥ अमावास्यायां दीक्षते ॥ ३६ ॥ अश्वस्य पदे जुहोति ॥ ३७ ॥ अथैनांधूपयति ॥ ३८ ॥ तमुपरिनाभिबिभर्ति ॥ ॥ ३९ ॥ अथोखान्निवपति ॥ ४० ॥ चतस्रः सीतायजुषा कृषति ॥४१॥ तंप्रत्युंचंयन्तम्॥४२॥ अपाङ्गुभन्तसीदेति॥४३॥ तस्यमनोवैश्वकर्मणमिति ॥४४॥ तद्यैषामध्यमास्वयमातृण्णा ॥ ४५ ॥ एकादशभिरस्तुवतेति ॥ ४६ ॥ तावाऽएताः ॥ ॥ ४७ ॥ अथस्वयमातृण्णामुपदधाति ॥ ४७ ॥ अथोत्तरार्द्धेन प्राक् ॥ ४९ ॥ सयः सुवैश्वानरः ॥ ५० ॥ यास्तेऽअग्नेसूर्यरुचः ॥ ५१ ॥ नामकृत्वाथैनमुपतिष्ठते ॥ ५२ ॥ यावाऽइयंवेदिः सप्तविधस्य ॥ ५३ ॥ अयमेवाकाशोजूः ॥ ५४ ॥ सोयमात्मा त्रेधाविहित एव ॥ ५५ ॥ अथवर्ठशुः ॥ ५६ ॥ अथयामेतामाहुतींजुहोति ॥ ५७ ॥ अथयदनुवाक्यामनूच्य ॥ ५८ ॥ ब्रह्मचार्यसीत्याह ॥ ५९ ॥ सयत्पशुबन्धेनयजते ॥ ६० ॥ दृशेति होवाच ॥ ६१ ॥ अथयत्रस्कन्नर्ठस्यात् ॥ ६२ ॥ अथयदिप्रप्लुतः ॥६३॥ सर्वऽआग्निनाभवन्ति ॥ ६४ ॥ प्रजापतिर्यज्ञमसृजत ॥ ६५ ॥ किंवाघपनंमहदिति ॥ ६६ ॥ अथयोस्य निष्कःप्रतिमुक्तोभवति ॥ ६७ ॥ एतेनहेन्द्रोतोदेवापःशौनकः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



॥ ६८ ॥ चतस्रःसीतायजुषाकृषति ॥ ६९ ॥ अथोत्तरतः सिकताऽउपकीर्णाभवन्ति ॥ ७० ॥ अथ रौहिणौ जुहोति ॥ ॥ ७१ ॥ तेदेवाऽअब्रुवन् ॥ ७२ ॥ तानि यदा गृह्णाति ॥७३॥ योग्नौतिष्ठन् ॥ ७४ ॥ कतम आत्मेति ॥ ७५ ॥ अथ हैनं मनुष्या ऊचुः ॥ ७६ ॥ अथ यामिच्छेद्वर्भन्दधीतेति ॥ ७७ ॥ सप्तसहस्रषट्शतशेषं चतुर्विंठशतिः ॥७८॥ इति चतुर्दशकाण्डे शतोक्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥

अथवतं विसृजते ॥ १ ॥ सयस्मिन्हुर्तामुँल्लोकमेति ॥ ॥ २ ॥ अथ नियाभ्याभ्यो महान् विगृह्णते ॥ ३ ॥ अथ गृहपतिः सुब्रह्मण्यामाह्वयति ॥ ४ ॥ ता वाऽएताः ॥ ॥ ५ ॥ तानिदृशभवन्ति ॥ ६ ॥ ताएताऽअङ्गुलयः ॥ ७ ॥ मध्यमेवतृतीयाचितिः ॥ ८ ॥ सहोवाच ॥ ९ ॥ अथवर्ठंशुः ॥ १० ॥ तस्माउहैतदुवाच ॥ ११ ॥ सवाऽएषआत्मैवयत्सौत्रामणिः ॥ १२ ॥ मर्यादायाऽएवलोष्टमाहृत्य ॥ १३ ॥ प्राश्नीपुत्रादसुरीवासिनः ॥ १४ ॥ इति अन्त्यकण्डिकोक्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥

एवं व्रतंविसृजेत् ॥ १ ॥ परमांगतिङ्गच्छतीति ॥ २ ॥ तस्माद्धोतृचमसात् ॥ ३ ॥ तस्मिन्समुपहवमिष्ट्वासमिधोभ्यादधाति ॥ ४ ॥ द्वादशवात्रयोदशवादक्षिणाभवन्ति ॥ ५ ॥ यावानग्निर्यावंत्यस्यमात्रातावत्तद्भवन्ति ॥ ६ ॥ तस्मात्समानुसंबंधनाः ॥ ७ ॥ तस्मादिमेप्राणाऽउपरिष्टादुसंछन्नाः ॥ ८ ॥



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


संवादेनैवर्त्विजोलोकाऽइति ॥ ९ ॥ ब्रह्मणोब्रह्मस्वयंभु ब्रह्मणे नमः ॥ १० ॥ कैशिनीरेवमाआप्येतार्हिप्रजाजायंते ॥ ११ ॥ तस्मादिमावात्मानमभितोबाहू ॥ १२ ॥ तुस्मादुहैतज्जीवाश्च पितरश्चनसंदश्यन्ते ॥ १३ ॥ वाजसनेयेनवाज्ञवल्क्येनाख्या-युन्ते ॥ १४ ॥ अन्त्यफक्किकोक्ताऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ इत्यन्त्य-पक्तिका ॥ ॐ अग्निमींलेपुरोहितंयज्ञस्यं देवमृत्विजम् ॥ होतारंरत्नधातमम् ॥ १ ॥ इषेत्वोर्ज्जेत्वा० ॥ २ ॥ अग्नऽआया-हिवीतयेगृणानोहव्यदातये ॥ निहोता सत्सिबर्हिषि ॥ ३ ॥ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंय्योरभि स्रवन्तु नः ॥ ४ ॥ इत्यध्ययनम् । ततः ॐ तदेतदृचाभ्युक्तं न मषा श्रान्तं यदवंति देवाऽइतिनहैवैवंविदुषः किञ्चननमृषा श्रान्तं भवति तथोहास्यैतत्सर्व्वंदेवाऽअवन्ति ॥ ४ ॥ इति नमस्कुर्यात् ।

अथ ऋषिश्राद्धम् ॥ कृतप्राणायामो देशकालौ संकीर्त्य । ॐ उत्सर्गाङ्ग-भूतमृषिश्राद्धमहं करिस्ये । इति संकल्प ॐ इदं विष्णु० इति मंत्रेण दिग्बंधः । ऋषिश्राद्धस्योपहाराः शुचयो भवन्तु इत्युपहारप्रोक्षणम् । देशकालमात्रसंपदस्तु ॐ अरुंधतीसहितकश्यपादिऋषीणा-मिदमासनं यथायथाविभागं वः स्वाहा नमः॥ अरुंधतीसहित-कश्यपादय ऋषयः यथादत्तगंधाद्यर्चनं यथायथाविभागं वः स्वाहा नमः इति गंधादिदानम् ॥ ऋषिश्राद्धसांगतासिद्धयर्थं सप्तसंख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकाले यथासम्पन्नान्नेन तर्प-यिष्ये तेन अरुन्धतीसहिताः कश्यपादय ऋषयः प्रीयन्ताम् ॥ ऋषिश्राद्धसांगतासिद्धयर्थं हिरण्यनिष्क्रयभूतां दक्षिणामाचार्याय तुभ्यमहं संप्रददे। ततः आचार्यः । ॐ कोदादिनि मंत्रं पठेत् । स यथा ॐ कोऽदात्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कस्माऽअदात्कामोऽदात् कामायादात् कामोदाताकामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते। (वा० सं० ७। ४८)॥ इति। उपविष्टेषु ब्राह्मणेषु उदकादिदानम्॥ तद्यथा॥ ॐ शिवा आप संतु॥ सौमनस्यमस्तु। अक्षतं चारिष्टं चास्तु। अघोरा ऋषयः संतु। सन्त्विति प्रतिवचनम्। उत्सर्गकर्मणो न्यूनातिरिक्तदोषपरिहाराय भूयसीं दक्षिणांदद्यात्। तत उत्सर्गांगभूतमृषिश्राद्धं परिपूर्णमस्तु। अस्तु परिपूर्णमिति विप्रा वदेयुः ततः ॐ सहनोऽस्तुसहनोऽवतुसहनऽइदंवीर्यवदस्तुब्रह्म इन्द्रस्तद्वेदयेन यथा न विद्विषामहे इति॥ ॐ उभा कवी युवा यो नो धर्मः परापतत्। परिसख्यस्य धर्मिणो विसख्यानि विसृजामहे। इति च सर्वे जपेयुः विरताः स्म इति ब्रूयुः॥ इत्यृषिश्राद्धम्॥ अथ विसर्जनम्। ॐ उत्तिष्ठब्रह्मणस्पतदेवेयन्तस्त्वेमहे॥ उपप्रयन्तुमरुतः सुदानवऽइंद्रप्राशूर्भवासचा॥ (वा० सं० ३४। ५६)॥ स्वस्वप्रवरान् विसर्जयित्वा जले प्रवाहयेत्। ॐ समुद्रङ्गच्छस्वाहान्तरिक्षङ्गच्छस्वाहा देवꣳसवितारङ्गच्छस्वाहामित्रावरुणौगच्छस्वाहाहोरात्रेगच्छस्वाछंदाꣳसिगच्छस्वाहा द्यावापृथिवीगच्छस्वाहायज्ञङ्गच्छस्वाहा सोमङ्गच्छस्वाहा दिव्यन्नभोगच्छस्वाहाग्निवैश्वानरङ्गच्छस्वाहा मनोमेहार्दि यच्छदिवन्तेधूमो गच्छतु स्वर्ज्योतिः पृथिवी भस्मना पृणस्वाहा। (वा० सं० ६। २१)॥ ततो द्विराचमनं कुर्यात्॥ ततो जलमादाय अनेनाध्यायोत्सर्गकर्माङ्गत्वेन कृतेन ऋषिपूजनतर्पणादिकर्मणा भगवान् परमेश्वरः प्रीयतां न मम ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु॥ इति परमात्मानं सन्तर्पयेत्। इति श्रावणीकर्म्मविधिः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रक्षाबन्धनम्—श्रावण्यां रक्षाबन्धनं पूर्णिमायां भद्रारहितायां कार्यम् ॥ तत्रादौ सर्षपाक्षतहेमसहितां विचित्रक्षौमवस्त्रैर्वा कार्पासतंतुभिर्ग्रथितां शुभां रक्षाः पोटलिकां शुद्धभाजने संस्थाप्य कुंकुमाक्षतैरभ्यर्च्य ब्राह्मणान्संपूज्य दक्षिणाभिः संतोष्य पूर्वमुखो ब्राह्मणद्वारारक्षाबंधं कुर्यात् ॥ तत्र मंत्रः येन बद्धो बली राजा दानवेंद्रो महाबलः ॥ तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥ इति । अनेन विधिना यस्तु रक्षाबंधं समाचरेत ॥ स सर्वदोषरहितः सुखी संवत्सरं भवेत् ॥ इति रक्षाविधानम् ॥

अध्यायोपाकर्म, पारस्करगृह्यसूत्रे-अथातोऽध्यायोपाकर्मौषधीनां प्रादुर्भावे श्रवणेन श्रावण्यां पौर्णमास्याह॰ श्रावणस्य पञ्चम्याह॰ हस्तेन वाऽऽज्यभागाविष्टाऽऽज्याहुतीर्जुहोति पृथिव्याऽअग्नयऽ इत्यृग्वेदेऽन्तरिक्षाय वायवऽइति यजुर्वेदे दिवे सूर्यायेति सामवेदे दिग्भ्यश्चन्द्रमसऽइत्यथर्ववेदे ब्रह्मणे छन्दोभ्यश्चेति सर्वत्र प्रजापतये देवेभ्य ऋषिभ्यः श्रद्धायै मेधायै सदसस्पतयेऽनुमतयऽइति चैतदेव व्रतादेशनविसर्गेषु सदसस्पतिमित्यक्षतधानाश्चिः सर्वेऽनुपठेयुर्हुत्वा हुत्वौदुम्बर्य पिप्पलरितस्रः समिधऽआदध्युरार्द्राः सपलाशा घृताक्ताः सावित्र्या ब्रह्मचारिणश्च पूर्वकल्पेन शन्नो भवत्वित्यक्षतधाना ऽअखादन्तः प्राश्नीयुर्दधिक्राव्णऽइति दधि भक्षयेयुः स यावन्तं गणमिच्छेत्तावतास्तिलानाकर्षफलकेन जुहुयात्सावित्र्या शुक्र ज्योतिरित्यनुवाकेन वा प्राशानान्ते प्रत्यङ्मुखेभ्य ऽउपविष्टेभ्य ॐकारमुक्त्वा त्रिश्च सावित्रीमध्यायादीन्प्रब्रूयादृषिमुखानि बह्वृचानां पर्वाणि छन्दोगानाह॰ सूक्तान्याथर्वणानाह॰ सर्वे जपन्ति सह नोऽस्तु सह नोऽवतु सह न ऽइदं वीर्यवदस्तु ब्रह्म । इन्द्रस्तद्वेद येन यथा न विद्विषामहऽइति त्रिरात्रं नाधीयीरँल्लोमनखानामनिकृन्तनमेके प्रागुत्सर्गात् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



उपाकर्मपद्धतिः—गुरुः हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य द्विराचम्यावसथ्याग्नेर्लौकिकाग्नेर्वा पश्चाच्छिष्यैःसह प्राङ्मुख उपविश्य प्राणायामत्रयं कृत्वा देशकालौ संकीर्त्य श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं अध्यायोपाकर्मणि पञ्चभूसंस्कार-पूर्वकमग्निसंस्थापनमहं करिष्ये इति संकल्प्य पञ्चभूसंस्कारान्कुर्यात्। ते च दर्भैः परिसमुह्य १ गोमयोदकेनोपलिप्य२ स्रुवेणोल्लिख्य३ अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुद्धृत्य४उदकेनाभ्युक्षेत५इति। तत्पुनः अग्निं प्रतिष्ठाप्य पात्रस्थापनादि कुर्यात्।तत्र पूर्वेण ब्रह्मणो गमनम्,अग्नेरुत्तरतःपात्रासादनम्,द्वे पवित्रे,ताम्रमयी आज्यस्थाली,पालाश्यःसमिधःप्राञ्चावाघारौ, समिद्धतमेऽग्नौ आज्यभागौ तिलहोमः,ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् इति होममन्त्रः। पूर्णपात्रं दक्षिणा। त्रिरात्रं लोमनखानामनिकृन्तनम्॥ ऋषिच्छन्दोदेवतास्मरणम्-इषेत्वेत्यादिकस्य खम्ब्रह्मान्तस्य माध्यन्दिनीयस्य वाजसनेयकस्य यजुर्वेदाम्नायस्य विवस्वानृषिःवायुर्देवता गायत्र्यादीनि सर्वाणि छन्दांसि अध्यायोपाकर्मणि विनियोगः। देवताभिध्यानम्—तत्र प्रजापतिम्, इन्द्रम्, अग्निम्, सोमम्, पृथिवीम्, अग्निम्, ब्रह्माणम्, छन्दाꣳसि, अन्तरिक्षम्, वायुम्, ब्रह्माणम्, छन्दाꣳसि,दिवम्, सूर्य्यम्, ब्रह्माणम्, छन्दाꣳसि, दिशः, चन्द्रमसम्, ब्रह्माणम् छन्दाꣳसि, प्रजापतिम्, देवान्. ऋषीन्, श्रद्धाम्, मेधाम् सदसस्पतिम्, अनुमतिम्, एताः प्रधानदेवता आज्येन। सदसस्पतिम् धानाभिः, सवितारं तिलैः, अग्निं स्विष्टकृतं धानाशेषेण अग्निम्। वायुम्। सूर्य्यम्। अग्नीवरुणौ। अग्नीवरुणौ। अग्निम्। वरुणम्। सवितारम्। विष्णुम्। विश्वान्देवान्। मरुतः। स्वर्कान्। वरुणम्। प्रजापतिम्। एता अङ्गप्रधानार्था देवता अस्मिन्कर्मण्यहं यक्ष्ये। ब्रह्मवरणम्। दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्य अमुक शर्मन अस्मिन्कर्मणि त्वं 'ब्रह्मा' भव इति यजमानवचनम्। भवामीति प्रति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वचनम् । ब्रह्मा तूष्णीं आसनावलोकनं आसनात्तृणनिरसनञ्च कृत्वा उपविशेत् । अग्नेरुत्तरतः प्रणीतार्थमासनद्वयं निधाय प्रणीताचमनं वामहस्ते कृत्वा आत्माभिमुखं जलेनापूर्य प्रथमासनं निधाय चमसदण्डमालभ्य ब्रह्माणमवलोक्य तेन संकेतादिनाऽनुज्ञातः प्रणीयोत्तरासने निदध्यात् । तत उदगग्रैः प्रागग्रैः कुशैरग्निं परिस्तीर्य । अर्थवदासाद्य । अग्नेरुत्तरतः प्राक्संस्थमुदक्संस्थं वा पात्रासादनम् । पवित्रच्छेदनार्थं दर्भाश्चयः । पवित्रे द्वे । प्रोक्षणीपात्रम् । आज्यस्थाली । सम्मार्जनकुशास्त्रिप्रभृतयः । उपयमनकुशाः सप्तप्रभृतयः । समिधस्त्रिप्रभृतयः। स्रुवः । आज्यम् । धानाः । पूर्णपात्रं च ॥ **अथोपकल्पनीयानी**-प्रतिशिष्यं नव नव समिध आर्द्राः सपत्रा औदुम्बरस्य । दधि भक्षणार्थम् । लौकिका धाना बाहुमात्रमौदुम्बरकाष्ठं तिलस्थापनस्थाने सर्वफणाकारमाकर्षफलकम् । तिलाश्चेति पवित्रकरणम् । द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय द्विमूलेन द्वौ कुशौ प्रदक्षिणीकृत्य सर्वान् युगपद्धृत्वाऽनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां छित्वा तानुत्तरतः प्रक्षिपेत् । प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतोत्तरतो निधाय । प्रोक्षणीपात्रे पात्रान्तरेण प्राणीताद्विस्तासा प्रोक्षणम् । सपवित्रहस्तेनोत्तानेन पात्रप्रोक्षणम् । आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम् । संमार्गकुशानां प्रोक्षणम् । उपयमनकुशानां प्रोक्षणम् । समिधां प्रोक्षणम् । स्रुवस्य प्रोक्षणम् । आज्यस्य प्रोक्षणम् । धानानां प्रोक्षणम् । पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम् । प्रणीताग्न्योर्मध्येऽसञ्चरे प्रोक्षणीं निधाय । कुशोपग्रहेण आज्यस्थाल्याआज्यनिर्वापः आज्याधिश्रयणम् । ततो ज्वलदुल्मुकेन पर्यग्निकरणम् । इतरथावृत्तिः । अधिश्रिते स्रुवं प्रतप्य । संमार्गकुशैः संमृज्य । अग्रैर्मूलादारभ्यापपर्यन्तं मूलैरग्रादारभ्य मूलपर्यन्तं प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य । पुनः प्रतप्य । दक्षिणतो निदध्यात् । आज्यमुद्वास्य । उत्तरतो निधाय । ततोऽग्नेः पश्चिमतो निधध्यात् । पवित्राभ्यामाज्यमुत्पूर्य । प्रोक्षणीश्च पूर्वदुत्पूर्य । आज्यमवेक्ष्य । अपद्रव्यनिरसनम् । उपयमनकुशानादाय । तिष्ठन् समिधोऽभ्याधाय । प्रोक्षण्युदकशेषेण सपवित्रेण हस्तेनेशानमारभ्येशानपर्यन्तं प्रदक्षिणमग्निं पर्युक्ष्य ।

---

१ प्रणीतापात्रमिति पाठान्तरम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



इतरथावृत्तिः। पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम्। सोपग्रहं सव्यहस्तमुत्तानं हृदि निधाय दक्षिणजानुनिपातः ब्रह्मणोऽन्वारम्भः। दक्षिणहस्तेन स्रुवेण होमः। मनसा—ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम॥ ( त्यागान्ते द्रव्यप्रक्षेपः। प्रोक्षणीपात्रे संस्रवधारणम्। ) ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय न मम॥ ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम॥ ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम॥ सप्तविंशत्याहुतयः ऋग्वेदे—ॐ पथिव्यै स्वाहा। इदं पृथिव्यै न मम। ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम। ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा। इदं छन्दोभ्यो न मम॥ यजुर्वेदे ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा। इदमन्तरिक्षाय न मम। ॐ वायवे स्वाहा। इदं वायवे न मम। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम। ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा। इदं छन्दोभ्यो न मम। सामवेदे ॐ दिवे स्वाहा। इदं दिवे न मम। ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम। ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा। इदं छन्दोभ्यो न मम। अथर्वणवेदे—ॐ दिग्भ्यः स्वाहा। इदं दिग्भ्यो न मम। ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। इद चन्द्रमसे न मम। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम। ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा। इदं छन्दोभ्यो न मम। ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। ॐ देवेभ्यः स्वाहा। इदं देवेभ्यो न मम। ॐऋषिभ्यःस्वाहा। इदमृषिभ्यो न मम। ॐश्रद्धायै स्वाहा। इदं श्रद्धायै न मम। ॐ मेधायै स्वाहा। इदं मेधायै न मम। ॐ सदसस्पतये स्वाहा। इदं सदसस्पतये न मम। ॐ अनुमतये स्वाहा। इदमनुमतये न मम। ॐ सदसस्पतिमद्भुतम्प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्॥ सनिम्मेधामयासिषꣳ स्वाहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



( वा० सं० ३२ । १३ ) **इदं सदसस्पतये न मम** । इमं मन्त्रं गुरुणा पठ्यमानं शिष्या अपि सहानुपठेयुः । तत उदुम्बरसमिश्रितयमभिधार्य हस्ते गृहीत्वा उत्थाय प्राङ्मुखास्तिष्ठन्तः । **ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं० । ३० । २ ॥ स्वाहा । इदं सवित्रे न मम** इत्युच्चार्य एकां समिधमादध्युः । एवं मंत्रेण द्वितीयां तथा तृतीयाम् । ततः सर्व उपविशेयुः । आचार्यः पुनः स्रुवेण धाना अवदाय ॥ द्वितीयां **धानाहुतिं** पूर्ववत्--**ॐ तत्सवितु० । ३० । २ ॥ स्वाहा । इदं सवित्रे न मम ॥** ततस्तिस्रोऽपराः समिधो घृतेनाभ्यज्य । प्राङ्मुखास्तिष्ठन्तः--**ॐ तत्सवितु० । ३० । २ ॥ स्वाहा इदं सवित्रे न मम ॥** ( इत्युच्चार्य एकां समिधमादध्युः । ) पुनः **ॐ तत्सवितु० ३० । २ ॥ स्वाहा । इदं सवित्रे न मम** । एवं द्वितीयां पुनः **ॐ तत्सवितु० । ३० । २ ॥ स्वाहा । इदं सवित्रे न मम ॥** एवं तृतीयां हुत्वाऽऽचार्यो धानाहुतिं जुहुयात् । **ॐ सदसस्प्प० । ३२ । १३ ॥ स्वाहा । इदं सदसस्पतये न मम ॥** मन्त्रानुपठनम् ( शिष्याणामपि । समिन्त्रयं पूर्ववज्जुहुयात् ) **-ॐ तत्सवितु० । ३० । २ ॥ स्वाहा । इदं सवित्रे न मम** । एवं द्वितीयां तथा तृतीयाम । ब्रह्मचारी तु शिष्योऽहरहरग्नि-कार्यक्रमेण समिदाधानं कुर्यात् न सावित्र्या । अन्यत्सर्वसमानम् ॥ **धानाभक्षणम्**--( ततो या उपकल्पिता धानास्तिस्रस्तिस्रो गृहीत्वा )--**ॐ शन्नो भवन्तु वाजिनो हवेषु देवताता मितद्रवः स्वर्काः । जम्भयन्तोहिं वृकꣳरक्षाꣳसि सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः । ( वा० सं० । ९ । १६ ) ॥** इति मन्त्रेण दन्तैरखादन्तः प्राश्नीयुः ॥ ततो द्विराचमनम् ॥ **दधिभक्षणम्--ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्यवाजिनः । सुरभि नो मुखा करत्प्रणऽआयूꣳषि तारिषत् ( वा० सं० २ । ३२ )** इति मन्त्रेण दधि भक्षयेयुः । **द्विराचमनम् ॥**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



(तत आचार्यो यावन्तं शिष्यगणं आत्मन इच्छेत्तावतस्तिलान् गणयित्वा आकर्ष-फलकेनावदाय )—ॐ शुक्रज्ज्योतिश्श्च चित्रज्ज्योतिश्श्च सत्त्य-ज्ज्योतिश्श्च ज्ज्योतिष्म्मांश्च । शुक्रश्च ऽऋतुपाश्श्चात्यꣳ-हाꣳ । ( वा० सं० १७ । ८० ॥ ) इत्याद्यनुवाकेन सावित्र्या वा जुहुयात् । ॐ तत्सवितु० । ३० । २ । स्वाहा इदं सवित्रे न मम ॥ ( ततो धानाभ्यः स्विष्टकृत् )—ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ॥ 'भूराद्या नवाहुतयः'--( आज्येन जुहुयात् । सर्वत्र त्यागान्ते द्रव्यपक्षेपः । 'तद्यथा'--१ ॐ भूः स्वाहा । इदमग्नये न मम ॥ २ ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे न मम ॥ ३ ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय न मम ॥ ४ ॐ त्त्वन्नो ऽअग्ग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोअवयासिसीष्ठाꣳ । याजिष्ठो वह्नितमꣳशोशुचानो विश्श्वाद्द्वेषाꣳसि प्प्रमुमुग्ध्यस्म्मत् स्वाहा । ( वा० सं० २१ । ३ ) ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ५ ॐ सत्त्वनो ऽअग्नेऽबमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ । अवयक्ष्व नो वरुणꣳरराणो वीहि मृडीकꣳसुहवो न ऽएधि स्वाहा । ( वा०सं० २१ । ४ ॥ ) इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ६ ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया-ऽअसि । अया नो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳस्वाहा । इद-मग्नये अयसे न मम ॥७ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ८ ॐ उदु-त्तमं वरुण पाशमस्म्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्श्रथाय । अथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



व्रयमादित्यव्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम स्वाहा । ( वा० सं० १२ । १२ ) ॥ इदममादित्यायादितये न मम ॥ ९ ( उपांशु )—ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम ॥ ( संस्रवप्राशनम् ) आचमनम् । पवित्राभ्यां मार्जनम् । अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः । 'ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्' तद्यथा—ब्रह्मन् अस्योपाकर्मणोऽङ्गतया विहितं पूर्णपात्रं प्रतिगृह्यताम् । ॐ द्यौस्त्वा । ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु इति मंत्रस्य ब्रह्मा जपं कुर्यात् । ( प्रणीताविमोकः । ततोऽग्निमुतरेण कुशेषु प्रत्यंगमुखोपविष्टेभ्यः शिष्येभ्यः प्राङ्मुख आचार्य ओंकारमुक्त्वा त्रिश्च सावित्रीमनुब्रूयात् ) यथा-ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं[1] । ( वा० सं० ३० । २॥ ) ( इति त्रिः ) इषेत्वादि ईशावास्यान्तम् । व्रतमुपैष्यन्नित्यादि सर्वमन्त्रब्राह्मणयोरध्यायादि प्रब्रूयात् । बह्वृचानामृषिमुखानि । पर्वाणि छन्दोगानाम्सूक्तान्यार्थर्वणानाम् । ( एवं सर्वं पठित्वा गुरुः शिष्याश्च जपंति ) ॥ ॐ सहनोस्तु सह नोऽवतु सह न इदं वीर्यवदस्तु ब्रह्म । इन्द्रस्तद्वेद येन यथा न विद्विषामहे ॥ इति मन्त्रं जपित्वा 'त्रिरात्रमनध्ययनं लोमनखानामनिकृन्तनमवपनं च करिष्यामहे ॥' इति सङ्कल्प्य । प्रागुत्सर्गाद्वा नियम्यते लोमनखतिकृन्तनम् । तदा उत्सर्गावधि लोमनखानामनिकृन्तनमहं करिष्ये इति । छन्दसामुत्सर्गात्प्राङ्मन्त्रब्राह्मणयोरध्ययनम् ॥ इत्युपाकर्मपद्धतिः ।

## अथ शान्तिसूक्तपाठः ।

तत्रादौ हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य प्राणानायम्य दक्षिणहस्ते साक्षतं जलं गृहीत्वा—अद्य मम अमुकशर्मणो यजमानस्य प्रसूतायां बालसहिताया अस्याः स्त्रिया आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिद्वारा सकलारिष्टशान्त्यर्थमाराध्यदेवताप्रीत्यर्थं प्रजापतिदेवताप्री-

---

१ सावित्रीशब्दोऽत्र तत्सवितुरितिमन्त्रपरः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


त्यर्थं च शान्तिसूक्तपाठमहं करिष्ये ॥ इति सङ्कल्प्य शांतिसूक्तपाठं कुर्यात् । तद्यथा--हरिः ॐ रक्षोहणं बलगहनं वैष्णवीमिदमहन्तं बलगमुत्किरामि यम्मे निष्ट्यो यममात्यो निचुखानेदमहन्तं बलगमुत्किरामि यम्मे समानो यमसमानो निचुखानेदमहन्तं बलगमुत्किरामि यम्मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचुखानेदमहन्तं बलगमुत्किरामि यम्मे सजातो यमसजातो निचुखानोत्कृत्याकिरामि । ( वा० सं० ५ । २२ ) ॥ रक्षोहणो वो बलगहनꣳ क्षपोक्षामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो बलगहनोवनयामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो बलगहनोवस्तृणामि वैष्णवान्रक्षोहणो वां बलगहनाऽउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां बलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवास्थ । (वा० सं०५।२५) रक्षसांभागोसि निरस्तꣳरक्षऽदमहꣳरक्षोमितिष्ठामीदमहꣳरक्षोवबाधऽइदमहꣳरक्षो धमन्तमो नयामि । घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्णुवाथां वायो वेस्तोकानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहाकृतेऽऊर्द्ध्वनभसम्मारुतङ्गच्छतम् । ( वा० सं० ६ । १६ ) ॥ रक्षोहा विश्वचर्षणिरभियोनियमयोहते । द्रोणे मधस्तमासदत् । (वा० सं० २६ । २६ ) ॥ ( अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यतु शिवाज्ञया ) ॥ ॐ गुणानान्त्वा० । ( वा० सं० २३ । १५ ) ॥ श्रीश्चते लक्ष्मी० । ( वा० सं० २३ । १९ ) ॥ आकृष्णेन रजसा० ।

---

१ भूमिसंस्थिता इति भूमौ स्थिता इत्यर्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



(वा० सं० ३३ । ४२) ॥ इमन्देवाऽअसपत्नꣳ सुवद्ध्वम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोमी राजा सोमोस्माकम्ब्राह्मणानाꣳ राजा । ( वा० सं० ९ । ४० ) ॥ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति । ( वा० सं० १३ । १४ ) ॥ उद्बुद्ध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वामिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयञ्च । अस्मिन्नन्तसधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत । ( वा० सं० १८ । ६१ ) ॥ ब्बृहस्पतेऽअति यदर्य्योऽ अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजातदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम् । ( वा० सं० २६ । ३ ) ॥ अन्नात्परिस्रुतो रसम्ब्रह्मणाव्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु । ( वा० सं० १९ । ७५ ) ॥ शन्नो देवीरु० । ( वा० सं० १६ । १२ ) ॥ कयानश्चित्र० । ( वा० सं० ६६ । ४ ) ॥ केतुङ्कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्य्याऽअपेशसे । समुषद्भिरजायथाः । ( वा० सं० २९ । ३७ ) ॥ त्र्यम्बकं य० । ( वा० सं० ३ । ६१ ) ॥ सजोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमम्पिब वृत्रहा शूर विद्वान् । जहि शत्रूꣳ रपमृधो नुदस्वाथाभयङ्कृणुहि विश्वतो नः । ( वा० सं० ७ । ३७ ) ॥ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रम्पुरुहुतमिन्द्रꣳ स्वस्तिनो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मघवा धात्त्विन्द्र ÷ ( वा० सं० २० । ५० ) त्त्वन्नोऽअग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च्चवन्द्य । त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेष ꣳ रक्षमाणस्तव व्व्रवे । ( वा० सं०३४।१३)॥ यमायत्त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे ( वा० सं० । ३८।९ ) ॥ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्त्यामन्विहितस्क्करस्य।अन्यमस्म्मदिच्छ सा त इत्त्या नमौ देवि निर्ऋते तुब्भ्यमस्तु ( वा० सं० १२ । ६२ ) तत्त्वा यामि ब्ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः॥ अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुशꣳ स मानऽआयुः प्प्रमोषीः । ( वा० सं० १८ । ४९ ) आनो नियुद्भि ÷ शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् । व्वायोऽअस्म्मिन्त्सवने माद-यस्व ययम्पातस्वस्तिभिःसदानः । ( वा० सं० २७ । २८ ॥ ) व्वयꣳ सोमव्व्र० । ( वा० सं० ३ । ५६ ॥ ) तमीशानञ्जगतस्त स्त्थुषस्प्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हमहे वयम् । पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये । ( वा० सं० २५ । १८ ) अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो व्वृत्रहत्त्ये भरहूतौ सजोषाः । यः शꣳसते स्तुवते धायि पज्ज्रऽ इन्द्रज्ज्येष्ठा अस्मा ꣳ ॥ ऽअवन्तु देवाः । (वा० सं० ३३ । ५० ॥) स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छान ÷ शर्म्मसप्प्रथाः ( वा० सं० ३६ ॥ १३ ) आनो भद्राःक्क्रतवो यन्तु व्विश्श्व-तोऽदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिद ÷ । देवानो यथा सदमिद्वृध

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ऽअसन्नप्प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥ १४ ॥ देवानाम्भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवानाछ्ंरातिरभि नो निवर्त्तताम् । देवानाछ्ं सुक्रव्यमुपसेदिमाव्वयन्देवा नऽआयुऽंप्प्रातिरन्तु जीवसे ॥१५॥ तान्पूर्व्वया निविदाहूमहे व्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम् । अर्य्यमणं व्वरुणछ्ं सोममश्विना सरस्वती नऽ सुभगा मयस्करत् ॥ १६ ॥ तन्नो व्वातो मयोभु व्वातु भेषजन्तद्म्माता पृथिवी तत्पिता द्यौऽ । तद्ग्रावाणऽसोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्या युवम् ॥ १७ ॥ तमीशानञ्जगतस्तु० ॥ १८ ॥ स्वस्तिनऽइन्द्रो व्वृ० ॥ १९ ॥ पृषदश्श्वा मरुतऽ पृश्निमातरऽ शुभंयावानो व्विदथेषु जग्मयऽ ॥ अग्निजिह्वा मनवऽसूरचक्षसो विश्वेनो देवाऽ अवसागमन्निह ॥ २० ॥ भद्रङ्कर्णेभिऽशृ० ॥ २१ ॥ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम् । पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मद्ध्यारीरिषतायुर्ग्गन्तोऽ ॥ २ ॥ अदितिद्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्मातास पिता स पुत्रऽ । विश्वेदेवाऽ अदितिऽ पञ्चजनाऽ अदितिर्ज्जातमदितिर्जनित्वम् । ( वा० सं० २५ । १४-२३ ) ऋचं वाचं० ॥ १ ॥ यन्मे छि० ॥ २ ॥ तत्सवि० ॥ ३ ॥ कयानश्चित्र० ॥ ४ ॥ कस्त्वासत्यो० ॥ ५ ॥ अभीषुणः सं० ॥ ६ ॥ कया त्वन्नऽऊ० ॥ ७ ॥ इन्द्रो विश्वस्य रा० ॥ ८ ॥ शन्नो मित्रऽ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शं० ॥९॥ शन्नौ व्वात ÷ प० ॥ १० ॥ आहा॑नि॒श०॥११॥शन्नो॑ दे॒वीर॒भि० ॥१२॥ स्यो॒ना पृ॑थि० ॥ १३ ॥ आपो॒हिष्ठा० ॥१४॥ यो व॑ ÷ शि॒व० ॥ १५ ॥ तस्म्मा॒ऽअर॑० ॥ १६ ॥ द्यौꣳशा-निंर॒न्त० ॥ १७ ॥ दृते॒ दृꣳ ह॑मा मि॒त्र० ॥ १८ ॥ दृते॒दृꣳ ह॑मा॒ ज्ज्यो० ॥ १९ ॥ नमस्ते॒ हर॑से० ॥ २० ॥ नमस्तेऽ-अस्तु० ॥ २१ ॥ यतो॑ यतꣳस॒मी० ॥ २२ ॥ सु॒मि॒त्रि॒या नऽ-आ० ॥ २३ ॥ तच्चक्षु॑र्दे॒वहि॑तं० ( वा० सं० २६ । १-२४ ) अ॒मि॒धाऽअ॑सि॒ भुव॑नमसि य॒न्तासि॑ ध॒र्त्ता । सत्त्व॑म॒ग्निं वै॑श्श्वा-न॒रꣳ सप्प्र॑थसङ्गच्छ॒ स्वाहा॑कृतꣳ ॥३॥ स्व॒गा त्त्वा॑ दे॒वेब्भ्य॑ ÷ प्प्र॒जाप॑तये॒ ब्ब्रह्म॒न्नश्श्व॑म्भन्त्यामि दे॒वेब्भ्ये ÷ प्प्र॒जाप॑तये॒ तेन॑ राद्ध्यासम् । तम्ब॑धान दे॒वेब्भ्य॑ ÷ प्प्र॒जाप॑तये॒ तेन॑ राद-ध्नुहि ॥ ४ ॥ प्र॒जाप॑तये त्त्वा॒ जुष्टॄम्प्रोक्षा॑मीन्द्रा॒ग्निब्भ्या॑न्त्वा॒ जुष्टॄम्प्रोक्षा॑मि व्वा॒यवे त्त्वा॒ जुष्टॄम्प्रोक्षा॑मि॒ व्विश्श्वे॑ब्भ्यस्त्वा दे॒वेब्भ्यो॒ जुष्टॄम्प्रोक्षा॑मि॒ स॑र्वेब्भ्यस्त्वा दे॒वेब्भ्यो॒ जुष्टॄम्प्रो-क्षा॑मि । योऽर्व्व॑न्तु॒ञ्जिघा॑ꣳसति॒ तमब्य्य॒मीति व्वरु॑णꣳ । प॒रो मर्त्त॑ ÷ प॒रꣳश्श्वा ॥ ५ ॥ अ॒ग्नये॒ स्वाहा॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॒-पाम्मोन्दा॑य॒ स्वाहा॑ सवि॒त्रे स्वाहा॑व्वा॒यवे॒ स्वाहा॒ विष्ण॑वे॒ स्वाहेन्द्रा॑य॒ स्वाहा॒ ब्बृह॒स्पत॑ये॒ स्वाहा॑मि॒त्राय॒ स्वाहा॒ व्वरु॑णाय॒ स्वाहा॑ ॥ ६ ॥ हि॒ङ्काराय॒ स्वाहा॒ हिङ्कृ॑ताय॒ स्वाहा॒ क्क्रन्द॑ते॒ स्वाहा॒ऽवक्क्र॒न्दाय॒ स्वाहा॒ प्प्रोथ॑ते॒ स्वाहा॑ प्प्रप्प्रो॒थाय॒ स्वाहा॑ ग॒न्धाय॒ स्वाहा॑ ग्घ्रा॒ताय॒ स्वाहा॒ निर्विष्टाय॒ स्वाहोप॑विष्टाय॒

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहाऽसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा सः हानाय स्वाहो पस्थितताय स्वाहायनाय स्वाहाप्प्रायणाय स्वाहा ॥ ७ ॥ यते स्वाहा धावते स्वाहोद्रावाय स्वाहोद्रुताय स्वाहा शूकराय स्वाहा शूकृताय स्वाहा निषण्णाय स्वाहोत्थिताय स्वाहा जवाय स्वाहा बलाय स्वाहा विवर्त्तमानाय स्वाहा विवृत्ताय स्वाहा विधून्वानाय स्वाहा विधूताय स्वाहा शुश्रूषमाणाय स्वाहा शृण्वते स्वाहेक्षमाणाय स्वाहेक्षिताय स्वाहा वीक्षिताय स्वाहा निमेषाय स्वाहा यदन्ति तस्म्मै स्वाहा यत्पिबति तस्म्मै स्वाहा यन्मूत्रङ्करोति तस्म्मै स्वाहा कुर्वते स्वाहा कृताय स्वाहा ( वा० स० २१ । ३-८ ) ॥ आशुः शि० ॥ ३३ ॥ सङ्क्रन्दनेना० ॥ ३४ ॥ सऽइषुहस्तैः ॥ ३५ ॥ ब्बृहस्पते परि० ॥ ३६ ॥ बलविज्ञाय० ॥ ३७ ॥ गोत्रभिदं० ॥ ३८ ॥ अभिगोत्रा० ॥ ३९ ॥ इन्द्रऽआसान्ने० ॥ ४० ॥ इन्द्रस्य व्वृ० ॥ ४१ ॥ उद्धर्षय मघ० ॥ ४२ ॥ अस्माकमिन्दुः स० ॥ ४३ ॥ अमिषाञ्चि० ॥ ४४ ॥ अवसृष्टा प० ॥ ४५ ॥ प्रेताजय० ॥ ४६ ॥ असो या से० ॥ ४७ ॥ यत्र बाणाः सं० ॥ ४८ ॥ मर्म्माणिते व० ( वा० सं० १७ । ३३--४९ ) नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्य ÷ सर्पेभ्योनम ÷ ॥ ६ ॥ याऽइषवो यातुधानानां ये वा वनस्पती ँ रनु । ये वाऽवटेषु शेरते तेभ्य ÷ सर्पे-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ब्भ्यो नमः ÷ ॥७॥ ये वामी रोचने दिवो ये वा सूर्य्यस्य रश्मिषु । येषामप्सु सदस्कृतन्तेब्भ्यः÷सुर्पेब्भ्योनमः ÷ ( वा० सं० १३ । ६–८ ) ॥ यद्देवा देवहेडनन्देवासश्चकृमाव्वयम् । अग्निर्म्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ँ हसः ॥ १४ ॥ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि चकृमा वयम् । वायुर्म्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳ हसꣳ ॥ १५ ॥ यदि जाग्रद्यदि स्वप्नऽएनाꣳसि चकृमा वयम् । सूर्य्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳ हसꣳ ( वा० सं० २०।१४–१६ ) ॥ देवस्य त्वा । सवितुः प्रसवे श्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णो हस्ताब्भ्याम् । सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रियै दधामि बृहस्पतेष्टवा साम्राज्ज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥ ( वा० सं० ९।३० ) ॥ देवस्य त्वा । सवितुः प्रसवे श्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णो हस्ताब्भ्याम् । सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्य्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्ज्येनाभिषिञ्चामि ॥ (वा० स० १८।३७) ॥ देवस्य त्वा । सवितुः प्रसवे श्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णो हस्ताब्भ्याम् । अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्च्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्य्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेभिषिञ्चामि ॥ ( वा० सं० २० । ३ ) ॥ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



स्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ ( वा० सं० १४ । २० ) ॥ दीर्घायुस्तऽओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम् । अथो त्वन्दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात् ॥ ( वा० सं० १२ । १०० ) ॥

अथ 'ब्राह्मणम्'—ॐ अथैनाऽआप्यानवतीभ्यामभिमृशतीदमेवैतदेतꣳ सिक्तमाप्याययति तस्माद्योनौ रेतꣳ सिक्तमाप्यायते सौभीभ्याम्प्राणो वै सोमꣳ प्राणं तद्रेतसि दधासि तस्माद्रेतꣳ सिक्तं प्राणमभिसम्भवति पूयेद्ध यद्रेतः प्राणात्सम्भवेदेषो हैवात्र सूददोहाऽ प्राणो वै सोमꣳ प्राणꣳ सूददोहाः ॥ १ ॥ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतꣳ सोम वृष्ण्यमिति रेतो वै वृष्ण्यमाप्यायस्व समेतु ते सर्वतꣳसोम रेतऽइत्येतद्ध्रुवा वाचस्य सङ्गथऽइत्युन्नं वै वाजो भवाद्यस्य सङ्गथऽइत्येतत्सुन्ते पयाꣳसि समु यन्तु वाजाऽइति रसो वै पयोऽन्नं वाजाꣳसुन्ते रसꣳसमु यंत्वुन्नानीत्येतत्संवृष्ण्याद्यभिमातिषाहऽइति ॥ सꣳरेताꣳसि पाप्मासुहऽइत्येतदाप्यायमानोऽअमृताय सोमेति प्रजात्यान्तदमृतं दधाति तस्मात् प्रजातिरमृता दिवि श्रवाꣳस्युत्तमानि धिष्वेति चन्द्रमा वाऽ अस्य दिवि श्रवऽउत्तमꣳसु ह्येनममुष्मिँल्लोके श्रावयति द्वाभ्यामाप्याययति गायत्र्या च त्रिष्टुभा च तस्योक्तो बन्धुः ॥ २ ॥ अथातꣳसम्पदेव'—चतस्रो लोकेष्टकाऽउपदधाति

२ अधीयीतेति शेषः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



षड्ऋचेन निवपति द्राभ्यामाप्याययति द्वादश द्वादश मासाꣳ संवत्सरꣳ संवत्सरोऽग्निर्य्यावानग्निर्य्यावत्यस्य मात्रा तावत्तद्भवति ॥ ३ ॥ अथ 'साम गायति'—क्षत्रं वै साम क्षत्रेणैवैनमेतदभिषिञ्चत्यथो साम्राज्यं वै साम साम्राज्येनैवैनꣳसाम्राज्यं गमयति सर्वेषां वाऽएष वेदानाꣳरसो यत्साम सर्व्वेषामेवैनमेतद्वेदानाꣳ रसेनाभिषिञ्चति ॥ ४ ॥ 'बृहत्यां गायति'--बृहत्यां वाऽअसावादित्यꣳ श्रियां प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितस्तपति बृहत्यामेवैनमेतच्छ्रियां प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठापयति ॥५॥ 'ऐन्द्या बृहत्यां गायति'-ऐन्द्रो वाऽएष यज्ञो यत्सौत्रामणीन्द्रायतनऽएषऽएतर्हि यो यजते स्वऽएवैनमेतदायतनेऽभिषिञ्चति ॥ ६ ॥ अथ यस्मात्सꣳशानानि नामैतैर्वै सामभिर्द्देवाऽइन्द्रमिन्द्रियाय वीर्य्याय समश्यंस्तथो ऽएवैतमृत्विजो यजमानमेतैरेव सामभिरिन्द्रियाय वीर्य्याय सꣳश्यन्ति सꣳश्रवसे विश्रवसे सत्यश्रवसे श्रवसऽइति सामानि भवन्त्येष्वेवैनमेतं लोकेषु श्रावयति चतुर्न्निधनं भवति चतस्रो वै दिशꣳ सर्वास्वेवैनमेतद्दिक्षु प्रतिष्ठापयन्ति सर्वे निधनमुपावयन्ति संविदानऽएवास्मिंस्तच्छ्रियं दधाति ॥ ७ ॥ तदाहुर्य्यदेतत्साम गीयतेऽथ क्वैतस्य साम्नऽउक्थमेका प्रतिष्ठा व्यज्र द्वꣳहि तद्यस्तु तमननुशस्तमिति ॥ ८ ॥ त्रया देवाऽएकादशेत्येतद्वाऽएतस्य साम्नऽउक्थमेषा प्रतिष्ठा ॥ ९ ॥ अथ 'त्रया हि देवाऽएकादशेति' त्रयस्त्रिꣳशं ग्रहं जुहोति त्रया हि देवाऽएकादश

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



त्रयस्त्रि ँ शाऽंसुराधसऽइति त्रयस्त्रि ँ शद्धि देवा बृहस्पति-पुरोहिताऽइति ब्रह्म वै बृहस्पतिर्ब्रह्मपुरोहिताऽइत्येवैतदाह देवस्य सवितुऽंसवऽइति देवेन सवित्रा प्रसूताऽइत्येवैतदाह देवा देवैरवन्तु मेति देवा ह्येतद्देवैरभिषिञ्चन्ति ॥ १० ॥ 'प्रथमा द्वितीयैरिति '-प्रथमा ह्येतं द्वितीयैरभिषिञ्चति द्वितीयास्तृतीयैरिति द्वितीया ह्येतं तृतीयैरभिषिञ्चन्ति तृतीयाऽंसत्येनेति तृतीया ह्येतं ँ सत्येनाभिषिञ्चन्ति सत्यं यज्ञेनेति सत्वं ँ ह्येतं यज्ञेनाभिषिञ्चन्ति यज्ञो यजुर्भिरिति यज्ञो ह्येतं यजुर्भिरभिषिञ्चन्ति यजू ँ षि सामभिरिति यजू ँ षि ह्येतं ँ सामभिरभिषिञ्चन्ति सामान्यृग्भिरिति सामानि ह्येतमृग्भिरभिषिञ्चन्त्यृचऽंपुरोनुवाक्याभिरित्यृचो ह्येतंपुरोऽनुवाक्याभिरभिषिञ्चन्ति पुरोनुवाक्यायज्याभिरितिपुरोनुवाक्या ह्येतं याज्याभिरभिषिञ्चन्ति यज्यावषट्कारैरितियाज्या ह्येतं वषट्कारैरभिषिञ्चन्ति वषट्काराऽआहुतिभिरिति वषट्कारा ह्येतमाहुतिभिराभिषिञ्चन्त्याहुतयो मे कामान्समर्द्धयन्तु भूऽंस्वाहेति तदेनमेताभिर्देवताभिऽं परोवरमभिषिञ्च्याथास्माऽआहुतिभिऽं सर्वान् कामान्समर्धयन्त्यथर्त्विक्षूपहवमिष्ट्वा भक्षयत्यृतवो वाऽऋत्विजऽऋतुष्वेवैतदुपहवमिच्छते ॥११॥ 'सुभक्षयति '—लोमानि प्रयतिर्मुम त्वङ्मऽआनतिरागतिऽं । मा ँ सुम्मऽउपनतिर्वस्वस्थि मज्जा मऽआनतिरिति नैत्र वाऽएष लोकाँश्च्च देवताश्च विशति यः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सौत्रामण्याऽभिषिच्यते तुदेतद्वान्तरात्मानमुपह्वयते तुथा कृत्स्नऽएव सर्वतनुऽसाङ्गऽसम्भवति॥१२॥चित्रावसो स्वस्ति-तेपारमशीयेति। त्रिरेतज्जपति रात्रिर्वै चित्रावसुऽसा हीयु ँ संगृह्येव चित्राणि वसति तस्मान्नारकाच्चित्रं ददृशऽएतेन हस्मावाऽऋषयऽ॥ १३ ॥ तद्वाऽअग्नयऽइति क्रियतेग्निर्वै सु-देवस्तस्यैतानि नामानि शर्वऽइति युथा प्राच्या आचक्षते भवऽइति युथा वाहीकाऽ पशूनां पती रुद्रोऽग्निरिति तान्य-स्याशान्तान्येवेतराणि नामान्यग्निरित्येव शान्ततमं तस्मादग्नयऽइति क्रियते स्विष्टकृतऽइति ॥ १४ ॥ ताᳬ हैतां गौत-मो राहूगणो विद्याञ्चकार साह जनकं वैदेहं प्रत्युत्ससादताहांगजिद्राह्मणेष्वनिवेव (ये) ष तमाहयाज्ञवल्क्य विवेद सहोवाच सहस्रं भो याज्ञवल्य दध्मो यस्मिन्वयं त्वयि मित्र-विन्दामन्वविदामेति विन्दते मित्र ँ राष्ट्रमस्य भवत्युप पुनर्मृत्युं जयति सर्वमायुरेति यऽएवं विद्वानेतयेष्ट्या यजते यो वै तदेवं वेद ॥ १५ ॥ 'तस्मादेतदृषिणाभ्यनूक्तम्'—चत्वारि वाक्परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणऽ। गुहात्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति ॥१६॥ 'अथातऽस्वाध्यायप्रशꣳसा'—प्रियेऽ स्वाध्यायप्रवचने भवतो युक्तमना भवत्यपराधीनोहरहरर्थान्साधयते सुख ँ स्वपिति परमचिकित्सकऽआत्मनो भवतीन्द्रियसंयमश्चैकारामता च

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



प्रज्ञावृद्धिर्यशोलोकपंक्तिꣳ प्रज्ञा वर्द्धमाना चतुरो धर्मान्ब्राह्मण मभिनिष्पादयति ब्राह्मण्यं प्रतिरूपचर्य्यायशोलोकपंक्तिलोकꣳ पुच्यमानश्चतुर्भिर्धर्म्मैर्ब्राह्मणं भुनक्त्यर्चया च दानेन चाज्येयु-तया चावध्युतया च ॥ १७ ॥ 'ये ह वै के च श्रमाꣳ'-सऽ-उदीक्षते स्वयम्भूरसि श्रेष्ठो रश्मिरित्येष वै श्रेष्ठो रश्मिर्यत्स-र्यस्तुस्मादाह स्वयम्भूरसि श्रेष्ठो रश्मिरिति वर्च्चोदाऽअसि वर्चो मे देहीति त्वेवाहं ब्रवीमीति हस्माह याज्ञवल्क्यस्तद्धैव ब्राह्मणेनैष्टव्यं यद्वह्मवर्चसी स्यादित्युतोह स्माहौपोदिते यऽ एष वाव मुहꣳ गां दास्यतिगोदा गा मे देहीत्येवं ꣳ कामं कामयते सौऽस्मै कामꣳसमृध्यते ॥ १८ ॥ 'एष वाऽआशी-र्जीवेयम्' प्रजा मे स्याच्छ्रेयं गच्छेयमिति तद्यत्पशुनाशास्ते तच्छ्रेयमाशास्ते श्रीर्हि पशवस्तदेताभ्यामेवैतदाशीर्भ्यां ढ॰ सर्वमात्तं तस्माद्वाऽएतेऽअत्र द्वेऽआशिषौ क्रियेते ॥ १९ ॥ 'तदेष श्लोको भवति' विद्यया तदारोहन्ति यत्र कामाꣳ पुरागताः । न तत्र दक्षिणा यन्ति नाविद्वाꣳ सस्तपस्विनऽ-इति न हैव तं लोकं दक्षिणाभिर्न्नं तपसा नैवंविदश्नुत ऽएवंवि-दाꣳ हैषा सा लोकोभ्रं पुरीषम् ॥२०॥ 'तदेतदृचाभ्युक्तम्'-विभक्तारꣳ हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसꣳ । सवितारं नृचक्षस-मितितदेतत्सर्वमायुर्दीर्घमनन्त ढ॰ हितद्युदिदमाहुर्दीर्घं तऽआयु-रस्तु सर्वमायुरेहीत्येष ते लोकऽएतत्तेस्त्विति हैवैतत्पश्यन्ती

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वाग्वदति ॥ २१ ॥ अथ व ँ शुꣳ समानुमासाञ्जीवीपुत्रात्सा-ञ्जीवीपुत्रोमुण्डूकायनमुण्डूकायनिर्मुण्डव्यान्मुण्डव्यꣳकौ त्सात्कौत्सो माहित्थेर्माहित्थिर्वामकक्षायणाद्वामकक्षायणोवा त्स्यादवात्स्यꣳशाण्डिल्याच्छाण्डिल्यꣳ कुश्रेतं कुश्रिर्यज्ञवचसो राजस्तम्बायनाद्यज्ञवचा राजस्तम्बायनस्तुरात्कावषेयात्तुरꣳ कावषेयꣳप्रजापतेꣳप्रजापतिर्ब्रह्मणोब्रह्म स्वयम्भु ब्रह्मणे नमः॥

सुशांतिर्भवतु। यजमानस्य सूतिकाबालकयोःआयुष्याभिवृद्धिरस्तु ॥

'अर्पणम्'—अनेन शान्तिपाठाख्येन कर्मणा श्रीआराध्यदेवता प्रजापति-देवता च प्रीयतां न मम। इति शान्तिसूक्तपाठः ॥

'यज्ञोपवीतविधिः' पास्करगृह्यसूत्रे--अष्टवर्षं ब्राह्मणमुप-नयेद्गर्भाष्टमे वैकादशवर्षꣳ राजन्यं द्वादशवर्षं वैश्यं यथा-मङ्गलं वा सर्वेषां ब्राह्मणान् भोजयेत्तञ्च पर्युप्तशिरसमलंकृत-मानयन्ति। पश्चादग्नेरवस्थाप्य ब्रह्मचर्यमागामिति वाच-यति। ब्रह्मचार्यसीति चार्थैनं वासः परिधापयति येनेन्द्राय बृहस्पतिर्वासः पर्यदधादमृतम्। तेन त्वा परिदधाम्यायुषे दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसऽइति मेखलां बध्नीते। इयं दुरुक्तं परिबाधमाना वर्ण पवित्रं पुनती मऽआगात्। प्राणापा-नाभ्यां बलमादधाना स्वसा देवी सुभगा मेखलेयामात ॥ सुवा सुवासाः परिवीतऽआगात्सऽउ श्रेयान्भवति जायमानः। तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्त इति वा तूष्णीं वाऽत्र यज्ञोपवीतपरिधानम्। ( यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं

---

१ अयमुपनयनस्य वर्णानुक्रमप्राप्तः साधारणःसमयः असाधारणस्तु पञ्चमवर्षादि-रूपः। २ कंसान्तर्गतः पाठः प्रक्षिप्तः। इमौ मंत्रावन्यशाखीयाविति विज्ञेयम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः इति मन्त्रं पठितवतो माणवकस्य दक्षिणबाहुमुद्धृत्य वामस्कन्धे यज्ञोपवीतं निवेशयति यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि। ) इत्यथाजिनं प्रयच्छति मित्रस्य चक्षुर्धरुणं बलीयस्तेजो यशस्वि स्थविरꣳ समिद्धम् । अनाहनस्यं वसनं जरिष्णु परीदं वाज्यजिनं दधेऽहामिति तूष्णीं वा दण्डं प्रयच्छति तं प्रतिगृह्णाति यो मे दण्डः परापतद्वैहायसोऽधिभूम्याम् । तमंह पुनराददऽआयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसायेति दीक्षावदेके दीर्घसत्रमुपैतीति वचनादथास्याद्भिरञ्जलिनाऽञ्जलिं पूरयत्यापो हिष्ठेति तिसृभिरथैनꣳ सूर्यमुदीक्षयति तच्चक्षुरित्यथास्य दक्षिणाꣳसमधि हृदयमालभते । मम व्रते ते हृदयं दधामि । मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु । मम वाचमेकमना जुषस्व बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यमित्यथास्य दक्षिणꣳहस्तं गृहीत्वाऽऽह को नामासीत्यसावहं भो इति। मनुः–ब्रह्मवर्चसकामस्य कार्यं विप्रस्य पञ्चमे । राज्ञो बलार्थिनः षष्ठे वैश्यस्येहार्थिनोऽष्टमे ॥ दण्डाजिनोपवीतानि मेखलां चैव धारयेत् ॥

**यज्ञोपवीतलक्षणम्**–त्रिवृद्ऊर्ध्वं वृतं कार्यं तन्तुत्रयमधोवृतम् । त्रिवृतं चोपवीतं स्यात्तस्यैको ग्रन्थिरिष्यते ॥ वामावर्तं त्रिगुणं कृत्वा प्रदक्षिणावर्तं नवगुणं विधाय तदेवं त्रिसरं कृत्वा ग्रंथिमेकं विदध्यात् ॥ तथा–पृष्ठवंशे च नाभ्यां च धृतं यद्विन्दतेकटिम् । तद्धार्यमुपवीतं स्यान्नातिलम्बं न चोच्छ्रितम् । वामस्कन्धे कृतं नाभिहृत्पृष्ठवंशयोर्धृतम् । कार्पासक्षौमगोवालशवल्कतृणादिकम्॥ सदा सम्भवतो धार्यमुपवीतं द्विजातिभिः ॥ शुचौ देशे शुचिः सूत्रं संहताङ्गुलिमूलके । आवेष्टय षण्णवत्या तुत्रिगुणीकृत्य यत्नतः ॥ अब्लिङ्गकैस्त्रिभिः सम्यक् प्रक्षाल्योर्ध्ववृतं च तत् । अप्रदक्षिणमावृत्तं सावित्र्या त्रिगुणीकृतम् ॥ अधः प्रदक्षिणावृत्तं समं स्यान्नवसूत्रकम् । त्रिरावेष्टय दृढं बद्ध्वा हरिब्रह्मेश्वरान्वमन् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सूत्रं सलोमकं चेत्स्यात्ततः कृत्वाविलोमकम्। सावित्र्या दशकृत्वोऽद्भिर्मन्त्रिताभिस्तदुक्षयेत्॥ विच्छिन्नं वाप्यधो यातं भुक्त्वा निर्मितमुत्सृजेत्। स्तनादूर्ध्वमधो नाभेर्न धार्यं तत्कथञ्चन॥ ब्रह्मचारिण एकं स्यात्स्नातस्य द्वे बहूनि वा। तृतीयमुत्तरीयं वा वस्त्राभावे तदिष्यते॥ ब्रह्मसूत्रेऽत्र सर्व्येसे स्थिते यज्ञोपवीतिता। प्राचीनावीतिताऽसव्ये कण्ठस्थे तु निवीतिता॥

**यज्ञोपवीततन्तुदेवताः**—ॐकारः प्रथमे तन्तौ द्वितीयेऽग्निस्तथैव च। तृतीये नागदैवत्यं चतुर्थे सोमदेवता॥ पञ्चमे पितृदैवत्यं षष्ठे चैव प्रजापतिः। सप्तमे मारुतश्चैव अष्टमे सूर्य एव च॥ सर्वे देवास्तु नवम इत्येतातन्तुदेवताः॥ ब्राह्मणोत्पादितं सूत्रं विष्णुना त्रिगुणीकृतम्। रुद्रेण दत्तो ग्रन्थिर्वै सावित्र्या चाभिमन्त्रितम्॥ कृते पद्ममयं सूत्रं त्रेतायां कनकोद्भवम्। द्वापरे राजतं प्रोक्तं कलौ कार्पाससम्भवम्॥

**यज्ञोपवीतसंख्या**—यज्ञोपवीते द्वे धार्ये एकं नैव च धारयेत्॥ तृतीयं चोत्तरीयं स्याद्वस्त्राभावे चतुर्थकम्॥ **यज्ञोपवीतावश्यकत्वम्**—विना यज्ञोपवीतेन तोयं यः पिबते द्विजः। उपवासेन चैकेन पञ्चगव्येन शुद्ध्यति॥ विना यज्ञोपवीतेन विण्मूत्रोत्सर्गकृद्यदि।उपवासद्वयं कृत्वा दानैर्होमैस्तु शुद्ध्यति॥

**यज्ञोपवीतपरिवर्तनविधिः**—उपाकर्मणि चोत्सर्गे गते मासचतुष्टये। नवयज्ञोपवीतानि धृत्वा पूर्वाणि संत्यजेत्॥ जीर्णयज्ञोपवीतानि शिरोमार्गेण संत्यजेत्॥ सूतके मृतके चैव गते मासचतुष्टये। नवयज्ञोपवीतानि धृत्वा जीर्णानि सन्त्यजेदिति॥ **यज्ञोपवीते कण्ठादुत्तीर्णे कर्त्तव्यम्**-कण्ठाः काण्वाश्च चरका विप्रा वाजसनेयकाः। बह्वृचाः सामगाश्चैव ये चान्ये यजुःशाखिनः॥ कण्ठादुत्तार्य सूत्रं तु पुनः संस्कारमर्हति॥ नवं यज्ञोपवीतं वा धृत्वा ब्रह्मशिरो जपेत्॥

**यज्ञोपवीतधारणाविधिः**—आचम्य[1] प्राणानायम्य संकल्पं कुर्यात्। स यथा-**अद्येत्यादि मम श्रौतस्मार्तकर्मानुष्ठानसिद्ध्यर्थम्** अमुक-

---

१ आचमनप्राणायामयोर्विधिस्तु। प्रागुक्तः ५५ पृष्ठे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



कर्माङ्गत्वेन यज्ञोपवीतधारणं करिष्ये । सूत्रत्रिगुणीकरणम्'—इदं विष्णुरिति मेधातिथिर्ऋषिः। विष्णुर्देवता। गायत्री छन्दः। सूत्रत्रिगुणीकरणे विनियोगः-ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥ ( वा० सं० ५ । १५ ) ॥ प्राक्षानलम्—आपोहिष्ठेति तिसृणां सिन्धुद्वीप ऋषिः । आपो देवताः । गायत्री छन्दः । यज्ञोपवीतप्रक्षालने विनियोगः--ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्ज्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ ( वा० सं० ३६ । १४ ) ॥ यो वः ÷ शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ÷ । उशतीरिव मातरः । ( वा० सं० ३ ६। १५ ) ॥ तस्माऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ( वा० सं० ३६ । १६ ) ततो यज्ञोपवीतानि प्रक्षाल्यानन्तरं दशगायत्रीमन्त्रैरभिमन्त्र्य । प्रणवस्य ब्रह्माऋषिः । परमात्मा देवता । गायत्री छन्दः । प्रथमतन्तौ ॐकारावाहने विनियोगः ॐ प्रथमतन्तौ ॐकारमावाहयामि ॥ अग्निं दूतमिति मेधातिथिर्ऋषिः । अग्निर्देवता । गायत्री छन्दः । द्वितीयतन्तौ अग्न्यावाहने विनियोगः--अग्निं दूतम्पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवाꣳआसादयादिह ॥ वा० सं० २२ । १७ ) ॥ द्वितीय तन्तौ अग्निमावाहयामि ॥ नमोस्तुते सर्पेभ्य इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषि । सर्प्पा देवताः अनुष्टुप् छन्दः । तृतीयतन्तौ सर्पावाहने विनियोगः--ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः ÷ सर्पेभ्यो नमः ÷ ॥ ( वा० सं० १३ । ६ ) तृतीयतन्तौसर्पानावाहयामि । वयꣳ सोमेत्यस्य बन्धर्ऋषिः । सौमो देवता । गायत्री छन्दः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



चतुर्थतन्त्रौ सोमावाहने विनियोगः--ॐ व्वयꣳ सोम व्व्रते तव मनस्तनूषु बिब्भ्रतः । प्रजावन्तःसचेमहि । ( वा० सं० ३ । ५६ ) चतुर्थतन्त्रौ सोममावाहयामि ॥ उदीरतामित्यस्य शङ्ख ऋषिः । पितरो देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । पञ्चमतन्त्रौ पित्रावाहने विनियोगः--ॐउदीरतामवरऽउत्परासऽउन्मध्यमाः पितरः ÷ सोम्यासः ÷ । असुं यऽईयुरवृकाऽऋतज्ञास्ते नोवन्तु पितरो हवेषु ॥ ( वा० सं० १९ । ४९ ) ॥ पञ्चमतन्त्रौ पितॄनावाहयामि । प्रजापतेरित्यस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः । प्रजापतिर्देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । षष्ठतन्त्रौ प्रजापत्यावाहने विनियोगः--ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु व्वयꣳ स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ( वा० सं० २३ । ६५ ) ॥ षष्ठतन्त्रौ प्रजापतये नमः प्रजापतिमावाहयामि । अनोनियुद्भिरित्यस्य वसिष्ठ ऋषिः । अनिलो देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । सप्तमतन्त्रौ अनिलावाहने विनियोगः--ॐ आनो नियुद्भिः ÷ शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् । वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ( वा० २७ ( २८ ) ॥ सप्तमतन्त्रौ अनिलाय नमः अनिलमावाहयामि । सुगाव इत्यस्या-त्रिर्ऋषिः गृहपतयो देवताः । आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः अष्टमतन्त्रौ यमावाहने विनियोगः- ॐसुगावो देवाः सदनाऽअकर्म्म यऽआजग्मेदꣳ सवनञ्जुषाणाः । भरमाणा वहमाना हुवीꣳष्यस्मे धत्त वसवो वसानि स्वाहा ॥ ( वा० सं० ८ । १८ )

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



अष्टमतन्तौ यमाय नमः यममावाहयामि । विश्वेदेवासऽआगत इत्यस्य मधुच्छंदा ऋषिः विश्वेदेवा देवताः त्रिष्टुप् छन्दः । नवमतन्तौ विश्वेषां देवानामावाहने विनियोगः-ॐ विश्श्वे देवासऽ आग॑त शृणु॒ताम॑ऽइ॒मꣳ हव॑म् । एदम्ब॒र्हिर्न्निषी॑दत ॥ ( वा० सं० ७ । ३४ ) ॥ नवमतन्तौ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । विश्वान्देवानावाहयामि ॥ ब्रह्मजज्ञानमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः । ब्रह्मा देवता गायत्री छन्दः । ग्रन्थि॑मध्ये ब्रह्मावाहने विनियोगः—ॐब्ब्रह्म॑जज्ञा॒नम्प्र॑थ॒मम्पु॒रस्ता॒द्विसी॑म॒तꣳसु॒रुचो॑ व्वे॒नऽआ॑वꣳ । स बु॒ध्ध्न्या॒ऽउप॒माऽअ॑स्य वि॒ष्ठाꣳ स॒तश्च॒ योनि॒मस॑तश्च॒विव॑ः । ( वा० सं० १३ । ३ ) ॥ इदं विष्णुरित्यस्य मेधातिथिर्ऋषिः । विष्णुर्देवता । गायत्री छन्दः । ग्रन्थिमध्ये विष्ण्वावाहने विनियोगः-ॐ इ॒दं व्विष्णु॒० । ( वा० सं० ५ । १४ ) ॥ त्र्यम्बकमित्यस्य वसिष्ठ ऋषिः । रुद्रो देवता । विराट् ब्राह्मी त्रिष्टुप् छन्दः । ग्रन्थि॑मध्ये रुद्रावाहने विनियोगः । ॐत्र्य॑म्बकं य्यजामहे सुग॒न्धिम्पु॑ष्टि॒वर्द्ध॑नम् । उ॒र्व्वा॒रु॒कमि॑व॒ बन्ध॑नान्मृत्योर्म्मु॑क्षीय॒ माऽमृता॑त् । ( वा० सं० ३ । ६० ) ॥ यज्ञोपवीत ग्रन्थिदेवताभ्यो नमः ग्रन्थिदेवताः आवाहयामि ॥ प्रणवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यथास्थानमहं न्यसामि ॥ मानसोपचारैः सम्पूज्य । प्रजापतेर्यत्सहजं पवित्रं कार्पाससूत्रोद्भवब्रह्मसूत्रम् । ब्रह्मत्वसिद्ध्यै च यशःप्रकाशं जपस्य सिद्धिं कुरु ब्रह्मसूत्रम् ॥ सुवासुवासाः परिवीतऽआगात्सऽउ श्रेयान्भवति जायमानः । तन्धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः। यज्ञो-

१ प्रथमग्रन्थिमध्य इति पाठान्तरम् । द्वितीयग्रन्थिमध्य इति पाठान्तरम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः। लिङ्गोक्ता देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः—ॐ यज्ञोपवीतम्परम म्पवित्रम्प्रजापतेर्यत्सहजम्पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यम्प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतम्बलमस्तु तेजः॥ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि॥ इति वा मंत्रेण यज्ञोपवीतानां पृथक् पृथक् धारणं कुर्यात्। प्रतियज्ञोपवीतधारणस्याद्यन्तयोराचमनम्। धारणान्ते जीर्णयज्ञोपवीतं त्यजेत्।

**संक्षिप्तं यज्ञोपवीतधारणम्**—यज्ञोपवीतान्युदकेन प्रक्षाल्यान्तरमाचम्य प्राणानायम्य—अद्येत्यादि मम श्रौतस्मार्तकर्मानुष्ठानसिद्ध्यर्थं तथा च अमुककर्माङ्गत्वेन नवीनयज्ञोपवीतधारणमहं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य यज्ञोपवीतानि करसम्पुटे दशगायत्रीमन्त्रैः अभिमन्त्रयेत्। तदनन्तरं—ॐ यज्ञोपवीतम्परमम्पवित्रम्प्रजापतेर्यत्सहजम्पुरस्तात्। आयुष्यग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतम्बलमस्तु तेजः॥ ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि॥ इति वा अनयोरेकं मंत्रं पठित्वा पृथक् पृथक् यज्ञोपवीतानि दक्षिणहस्तद्वारा धार्याणि। प्रतियज्ञोपवीतधारणान्ते आचम्य पश्चात् यथाशक्ति। गायत्रीर्जपेत्॥ ततो जीर्णयज्ञोपवीतत्यागः कार्यः॥ 'अर्पणम्'—अनेन नवयज्ञोपवीतधारणार्थं कृतेन यथाशक्ति गायत्रीजपाख्येन कर्मणा श्रीसूर्यनारायणः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद्ब्राह्मार्पणमस्तु॥ इति।

**सर्वतोभद्रमण्डलप्रकारः स्कान्दे**—प्रागुदीच्यायता रेखाः कुर्यादेकोनविंशतिम्। खण्डदुस्फिपदैः कौणैः शृंखला नवभिः पदैः॥ एकादशपदा वल्ली भद्रं तु नवभिः पदैः चतुर्विंशत्पदा वापी परिधिर्विंशतिः पदः॥ मध्ये षोडशभिः कोष्ठैः पद्ममष्टदलं स्मृतम्॥ श्वेयेन्दुः-शृंखला कृष्णा वल्ली नीलेन पूरयेत्। भद्रं रक्तं सिता वापी परिधिः पीतवर्णकः। बाह्यान्तरदलाश्चेता कर्णिका

१ तृतीयग्रन्थिमध्य इति पाठान्तरम्। २ आचमनप्रागायामयोर्विधिस्तु प्रागुक्तः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पीतवर्णका ॥ परिव्या वेष्टितं पद्म बाह्ये सत्त्वं रजस्तमः । तन्मध्ये स्थापयेद्देवान् ब्रह्मादीश्च सुरैश्वरान् ॥ इति **सर्वतोभद्रमण्डलप्रकारः ।**

**मातृकापूजा**--ॐतत् सदद्यैतस्य इत्यादिना देशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहममुकाभ्युदयनिमित्तकामुककर्मशोभनत्वसिद्धये मोदादिषड्विनायकपूजनपूर्वकं गौर्यादिमातृकापूजनं कर्म्म करिष्ये । षड्विनायकाश्च-"मोदश्चैव प्रमोदश्च सुमुखो दुर्मुखस्तथा । अविघ्नो विघ्नकर्त्ता च षडेते विघ्ननायकाः ॥ एतान् सम्पूज्य विधिवत् सर्वतो लभते श्रियम् ॥ इति मोदादयः । एतांश्च कुंकुमरञ्जिततण्डुलगोधूमपुञ्जोपरि मोदादींस्तावदावाह्य पूजयेत् । आवाहनप्रकारो यथा ॐमोदाय नमः मोदमावाहयामि१, ॐप्रमोदाय नमः प्रमोदमावाहयामि२. ॐसुमुखाय नमः सुमुखमावाहयामि३, ॐ दुर्मुखाय नमः दुर्मुखमावा, हयामि ४,ॐ अविघ्नाय नमः अविघ्नमावाहयामि ५, ॐ विघ्नकर्त्रे नमः विघ्नकर्त्तारमावाहयामि ६ **ॐमनोजुतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्वज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु । विश्वेदेवासइहमादयन्तामो३ प्रतिष्ठ ।** ओम् भूर्भुवः स्वर्मोदादयः षडविनायका इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु इति प्रतिष्ठाप्य ॐमेदाय नमः पादयोः पाद्यं समर्पय इत्येवं नाममन्त्रेण षोडशोपचारैः प्रत्येकं सम्पूज्य । अनया कृतया पूजया मोदादयो विनायकाः प्रसन्ना वरदा भवन्तु इति प्रार्थयेत् प्रणमेच्च । **अथमातृकाः**— "गौरी१ पद्मा २ शची ३ मेधा ४ सावित्री ५ विजया ६ जया ।७देवसेना८ स्वधा ९ स्वहा १० मातरो ११ लोकमातरः १२॥ धृष्टिः १३ पुष्टि १४ स्तथा तुष्टि १५ रात्मनः कुलदेवता १६ ॥ गणेशेनाधिका एता वृद्धौ पूज्या हि षोडश ॥ इत्येवमुक्ता गौर्यादयः षोडश मातृका गणेशपूजनपूर्वं पूज्याः । पूजनक्रमो यथा—सप्तदश तण्डुलपुञ्जान् गोधूमराशीन् यथाविभागं स्थापयित्वा एकैकं च पूगीफलं तत्तन्मध्ये निधायगणेशादीः षोडशमातॄः क्रमेण नाममन्त्रेणावाह्य पूजयेत् । ॐ गणेशाय नमो गणेशमावाहयामि । ॐ गौर्यै नमो गौरीमावाहयामि । इत्येवमावाह्य । **ॐ मनो जुतिर्जुषतामाज्यस्य**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामोम् ३ प्रतिष्ठ। (वा० सं० २।९)॥

ॐ भूर्भुवः स्वर्गणपते इहागत्य सुखं चिरं प्रतिष्ठितो भव। ॐ भूर्भुवः स्वर्गौरि इहागत्य सुखं चिरं प्रतिष्ठिताभवेत्येवं प्रत्येकमेकतन्त्रेण वा प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैः सम्पूज्याक्षतानादाय अनया कृतया पूजया गणेशः षोडशमातृकाश्च सुप्रसन्ना वरदाश्च भवन्तु। इति पठित्वा तत्तदुपरि निक्षिप्य व्रणमेत्। अथैवं पूजितानाम्मातृकाणां शिरोभागे सँलग्ने पीठके कुडये वा कुङ्कुमाक्तेन सिन्दूराक्तेन वा घृतेन ॐ वसोः÷पवित्रमसि शतधारं वसोः÷पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः ÷ पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्ष ÷ (वा० सं० १।३)॥ ॐ श्रीश्च १ लक्ष्मी २ धृति ३ र्मेधा ४ पुष्टिः ५ श्रद्धा ६ सरस्वति ७। माङ्गल्येषु सदा पूज्याः सप्तैता घृतमातरः॥ इति मन्त्रं पठन् सप्त (घृत) धाराः कुर्यात्। तत्पुनः ॐ श्रियै नमः श्रियमावाहयामि इत्येवं नाममन्त्रेणावाह्य ॐ मनो जूतिरिति मन्त्रेण पूर्ववन्नाममन्त्रेण च प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारेण संपूज्य यथाशक्ति आयुष्यमन्त्रं जपेत्। स मन्त्रो यथा—ॐ आयुष्यं वर्च्चस्यꣳ रायस्पोषमौद्भिदम्। इदꣳ हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायाविशतादुमाम्॥ ॐ न तद्रक्षाꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः ÷ प्रथमजꣳ ह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायणꣳ हिरण्यꣳ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुꣳ स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुं ÷॥ ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य÷ꣳ शतानीकायसुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥ (वा० सं० ३४।५०-५२)॥ इति मातृकापूजा।

साङ्गपिकं नान्दीश्राद्धम्—तत्रादौ प्राङ्मुख उदङ्मुखो वाऽऽसन उपविश्यात्मानं सम्भारांश्च सम्प्रोक्ष्याचम्य प्राणानायम्य ॐ तत्सदद्यैतस्य—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



इत्यादिना देशं कालमात्मानं च सङ्कीर्त्यामुककर्म्मणि सूतकादिदोषोपात्तकृतान्तरायनिवृत्तये ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्य्याप्तनिष्क्रयीभूतं यथाशक्ति हिरण्येन साङ्कल्पिकं नान्दीश्राद्धं करिष्ये। इति सङ्कल्पं कुर्यात्। अथ पाद्यादि दद्यात्। **यथा** सत्यवसुसञ्ज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। अमुकगोत्रामातृपितामहीप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वरिदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। अमुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। अमुकगोत्रा मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीका नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वरिदं वः पाद्यं पादावनेजनं, पादप्रक्षालनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। अथासनं दद्यात्, यथा, सत्यवसुसंज्ञकानां विश्वेषां देवानां नान्दीमुखानाम् ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः सम्पद्यतां वृद्धिः। नान्दीश्राद्धे क्षणः क्रियताम् ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नवाव। अमुकगोत्राणां मातृपितामहीप्रपितामहीनां नान्दीमुखीनाम् ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः सम्पद्यतां वृद्धिः। नान्दीश्राद्धे क्षणः क्रियताम् ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नवाव। अमुकगोत्राणां पितृपितामहप्रपितामहानां नान्दीमुखानाम् ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। नान्दीश्राद्धे क्षणः क्रियताम् ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नवाव। अमुकगोत्राणां मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां नान्दीमुखानाम् ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। नान्दीश्राद्धे क्षणः क्रियताम्। ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नवाय। अथ गन्धादि दद्यात् यथा—सत्यवसुसञ्ज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। अमुकगोत्राभ्यः मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नांदीमुखीभ्य इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। अमुकगोत्रेभ्यः पितृपितामहप्रपितामहभ्यो नान्दीमुखेभ्य इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। अमुक-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



गोत्रेभ्यो मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्य इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । अथ भोजननिष्क्रयभूतं हिरण्यं दद्यात् । यथा-सत्यवसुसञ्ज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतमिदं हिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । अमुकगोत्राभ्यो मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यो ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतमिदं हिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । अमुकगोत्रेभ्यः पितृपितामहप्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यो ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्य्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतमिदं हिरण्यं दत्तममृतरूपेण सम्पद्यतां वृद्धिः । अमुकगोत्रेभ्यो मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यो ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्य्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतमिदं हिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । अथ सक्षीरमुदकं दद्यात् । यथा-सत्यवसुसञ्ज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् । अमुकगोत्रा मातृपितामहीप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम् । अमुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहा नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् । अमुकगोत्रा मातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीका नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् । अथाशिषःप्रार्थयेत, यथा—गोत्रं नो वर्धतां ( वर्द्धतांवो गोत्रम् ) दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां ( अभिवर्द्धन्तां वो दातारः ) वेदा नोऽभिवर्धन्ताम् ( वर्धन्तां वो वेदाः ) सन्ततिर्नो वर्द्धताम् ( वर्द्धतां वः सन्ततिः ) श्रद्धा च नो मा व्यगमत् ( मा व्यगमद्वः श्रद्धा ) बहु देयं च नोऽस्तु ( अस्तु वो बहु देयम् ) अन्नं च नो बहु भवेत् ( भवतु वो बहुन्नम् ) अतिथींश्च लभेमहि ( लभन्तां वोऽतिथयः ) याचितारश्च नःसन्तु ( सन्तु वो याचितारः ) एता आशिषःसत्याःसन्तु ( सन्त्वेताः सत्या आशिषः ) अथ दक्षिणां दद्यात्, यथा-सत्यवसुसञ्ज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यःकृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्धयर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे, सम्पद्यतां वृद्धिः । अमुकगोत्राभ्यो मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्धयर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सम्पद्यतां वृद्धिः । अमुकगोत्रेभ्यःपितृपितामहप्रपितामहेभ्योःनान्दीमुखेभ्यःकृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽमलकयवमूलनिष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहंमुत्सृजे स० वृ० । अमुकगोत्रेभ्यो मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षा-ऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे सम्पद्यतां वृद्धिः । अथ नान्दीश्राद्धं सम्पन्नं "सुसम्पन्नम्" इति पठित्वा । **ॐ वाजे वाजे-ऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः । अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ॥ आमा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे । आमा गन्तां पितरा मातरा चामा सोमो अमृतत्वेन गम्यात् ।** (वा०सं० ९।१८।१९) इति मन्त्रद्वयेन विसर्जयेत् । अस्मिन् साङ्कल्पिके नान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो वा यो विधिः स उपविष्टानां ब्राह्मणानां वचनात् नान्दीमुखप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु । इति सांकल्पिकनान्दीमुखश्राद्धविधिः ।

**पुण्याहवाचनम् । दानखण्ड**—संपूज्य गंधमाल्यादैर्ब्राह्मणान्स्वस्ति वाचयेत् धर्म्मकर्मणि मांगल्ये संग्रामेऽद्भुतदर्शने ॥ पुण्याहवाचनं दैवं ब्राह्मणस्य विधीयते । एतदेव निरोंकारं कुर्यात् क्षत्रियवैश्ययोः ॥ अवनिकृतजानु मंडल.कमलकुमुलसदृशमंजलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना स्वर्णपूर्णकलशं धारयित्वा दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च तेनायुःप्रमाणेनपुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ॥ अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् ॥ ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवंतु ताः ॥ **शिवा आपः सन्तु** । लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे । सा मे वसतु वै नित्य सौमनस्य तथाऽस्तु नः ॥ **सौमनस्यमस्तु** । अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशो बलम् । यच्चछ्रेय-स्करं लोके तच्चदस्तु सदा मम ॥ **अक्षतं चारिष्टं चास्तु** । ब्राह्मणानां हस्ते गंधादि दत्त्वा ॥ गन्धः प्रदेयो देवानामप्त्यपुष्टिदश्च नः । **गन्धद्वारांदुरा-**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



धर्षामिति मन्त्रेण भक्तितः॥गन्धाःपांतु सौमङ्गल्यं चास्तु । पुष्पाणि पांतु सौभ्रेयसमस्तु । अक्षताः पांतु आयुष्यमस्तु । तांबूलानि पांतु ऐश्वर्यमस्तु । दक्षिणाः पांतु आरोग्यमस्तु । दीर्घमायुः श्रेयः शांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु । श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चारोग्यं चायुष्यं चातु । य कृत्वासर्ववेदयज्ञक्रियाकरण कर्म्मारंभाःशुभाः शोमनाः प्रवर्तते तमहमोंकारमादिं कृत्वा ऋग्यजुःसांमाथर्वाशीर्वचनं बहृषिसंमतमनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये । वाच्यताम् । ऋक् । द्रविणोदाद्रविणसस्तुरस्यद्रविणोदाः सनंरस्यप्रियं सत् । द्रविणोदावीरवतीमिषन्नोद्रविणोदा रासते दीर्घमायुः ॥ यजुः । द्रविणोदाःपिपीषतिजुहोत्प्रचतिष्ठत । नेष्टादृतुभिरिष्यत ( वा० सं० २६।२२ ) ऋक् ॥ सुवितापथ्यात्तात्सविता पुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सवितोऽधरात्तात् । सुवितानःसुवतुसर्वतातिंसवितानोरासतां दीर्घमायुः ॥ यजुः । सुवितात्वासुवानाठंसुवतामग्निर्गृहपतीनाछंसोमोवनस्पतीनाम् ॥ बृहस्पतिर्वाचऽइंद्रोज्यैष्ठ्यायरुद्रःपशुभ्योमित्रः सत्यो व्वरुणोधर्मपतीनाम् ॥ ऋक् । ॐ नवो नवोभवतिजायमानोऽह्नांकेतुरुषसामेत्यग्रम् ॥ भागंदेवेभ्यो विदधात्यायन्प्रचंद्रमास्तिरते दीर्घमायुः ॥ यजुः ॥ ॐ नतद्रक्षाछंसिनपिशाचास्तरंतिदेवानामोजः प्रथमजर्ठह्येतत् ॥ योबिभर्तिदाक्षायणठंहिरण्यठंसदेवेषु कृणुतेदीर्घमायुः समनुष्येषुकृणुतेदीर्घमायुः॥ ऋक् । ॐ उच्चादिविदक्षिणावन्तोअस्थुर्येअश्वदाः सहतेसूर्येण । हिरण्यदाऽअमृतत्वंभजन्तेवासोदाः सोमप्रतिरन्तऽआयुः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मनुः । उच्चातेजातमन्धसोदिविसद्भूम्यांददे ॥ उग्रंठशर्म्मंमहि श्रवः ॥ इत्येता ऋचः पुण्याहे ब्रूयात् ॥ व्रतजपनियमतपः-स्वाध्यायक्रतुदयादमदानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् समाहितमनसःस्मः । प्रसीदंतु भवन्तः प्रसन्नाः स्मः । अथ—पूर्वस्थापितकलशात्ताम्रपात्रे जलमादाय यजमानमूर्धनि दूर्वया सेचनं कुर्यात् । शांतिरस्तु । पुष्टिरस्तु । तुष्टिरस्तु । वृद्धिरस्तु । ऋद्धिरस्तु । अविघ्नमस्तु । आयुष्यमस्तु । आरोग्यमस्तु । शिवमस्तु । शिवं कर्म्मास्तु । कर्म्मसमृद्धिरस्तु । धर्मसमृद्धि-रस्तु । वेदसमृद्धिरस्तु । शास्त्रसमृद्धिरस्तु । पुत्रपौत्रसमृद्धि-रस्तु । धनधान्यसमृद्धिरस्तु । इष्टसंपदस्तु । अनिष्टनिरसन-मस्तु । भूमौ । यत्पापं रोगमशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु पात्रे । यद्यच्छेयस्तत्तदस्तु । उत्तरे कर्माणि निर्विघ्नमस्तु । उत्तरो-त्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु । उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यंताम् । तिथिकरणमूहूर्त्तनक्षत्रग्रहलग्नसंपदस्तु । तिथि करणमुहूर्त्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयंताम् । तिथिकरणे समुहूर्त्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने सदैवते प्रीयेताम् । दुर्गा-पांचाल्यौ प्रीयेताम् । अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयताम् । इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयताम् । वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयंताम् । माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयंताम् । अरु-न्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयंताम् । विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयंताम् । ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयंताम् । आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयंताम् । ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयंताम् । अंबिका-सरस्वत्यौ प्रीयेताम् । श्रद्धामेधे प्रीयेताम् । भगवती कात्यायनी प्रीयताम् । भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् । भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् । भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् । भगवती सिद्धि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



करी प्रीयताम्। भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। भगवंतौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। सर्वाः इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्। भूमौ। हताश्च ब्रह्मद्विषः। हताश्च परिपथिनः। हताश्च विघ्नकर्तारः। शत्रवः पराभवं यान्तु। शाम्यंतु घोराणि। शाम्यन्तु पापानि। शाम्यंत्वीतयः। पात्रे। शुभानि वर्धताम्। शिवा आपः सन्तु। शिवा ऋतवः सन्तु। शिवा अग्नयः सन्तु। शिवा आहुतयः सन्तु। शिवा ओषधयः सन्तु। शिवा वनस्पतयः सन्तुः। शिवा अतिथयः सन्तु। आहोरात्रे शिवे स्याताम्। मन्त्रः। ॐ निकामेनिकामे नः पर्जन्योवर्षतु फलवत्योनऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥ (वा० सं० २२। २२)॥ पात्रे। शुक्रांगारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। भगवान्नारायणः प्रीयताम्। भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोनुवाक्यया तत्पुण्यं यदस्तु। याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु। एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यमस्तु। पुण्याहकालान्वाचयिष्ये। वाच्यताम्॥ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्॥ वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥ भो ब्राह्मणा मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ३॥ ॐ पुण्याहम्३॥ ऋक्॥ उद्गातेवशकुने साम गायसि ब्रह्मपुत्रइवसवनेषु शंससि॥ वर्षेव वाजी शिशुमतीरपीत्या सुवर्ता नः, शकुने भद्रमावद॥ विश्वर्तानः शकुने पुण्यमावद॥ यजुः॥ ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्त मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवे-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वेदः पुनीहि मा ॥ ( वा० सं० १९ । ३९ ) पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याण पुरा कृतम् ॥ ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः ॥ भो ब्राह्मणा मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य गृहे कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ३ ॥ ॐ कल्याणम् ३ ॥ ऋक् ॥ ॐ अपासोममस्तेमिन्द्र प्रयाहि कल्याणीर्जायासुरणं गृहे ते॥यात्रथस्य बृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो दक्षिणावत् ॥ यजुः ॥ ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः । ब्रह्मराजन्याभ्याꣳ शूद्राय चार्य्यायच स्वाय चारणाय च प्रियोदेवानां दक्षिणायै दातुरिहभूयासमयम्मेकामꣳ समृद्धयतामुपमादोनमतु ॥ ( वा० सं० २६ । २ ) सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता ॥ संपूर्णा सुप्रभावा च तां तामृद्धिं ब्रुवंतु नः ॥ भो ब्राह्मणा मम सकुटुम्बस्यसपरिवारस्य गृहे ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ३ । ॐ ऋद्धयताम् ३॥ ऋक् ॥ ॐ ऋद्धयाम स्तोमं सनयामवाजमानो मन्त्रं सुरथेहोपयातम् । यशोनपक्वं मधु गोप्वंतरा भूतांशोअश्विनोः काममप्राः ॥ यजुः ॥ ॐ सुत्रस्यऽऋद्धिरस्यगन्मज्योतिरमृताऽ अभूम ॥ दिवं पृथिव्याऽअद्धारुहामाविदाम देवान्स्वर्ज्योतिः ॥ ( वा० सं० ८ । ५२ ) ॥ स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा । विनायकप्रिया नित्यं तां तां स्वस्तिं ब्रुवंतु नः॥भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे स्वस्ति भवंतोब्रु० । ॐ स्वस्ति ३॥ ऋक् ॥ ॐ स्वस्तिऋद्धिप्रपथे श्रेष्ठारेकणस्वत्यभिया वाममेति ॥ सा नो अमासो अरेणनिपातु स्वावेशाभवतु देवगोपाः ॥ यजुः ॥ ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवा ÷ स्वस्तिनऽ पूषा विश्ववेदाऽ ॥ स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिऽ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ( वा० सं० २५ । १९ ) ॥ मृकंडसूनो रायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा । आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम् ॥ जीवन्तु भवन्तः ॥ ऋक् ॥ ॐ शतं जीव शरदो वर्द्धमानःशतं हेमन्ताञ्छतमु वसंतान् ॥ शतमिंद्राग्नी सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः ॥ यजुः ॥ ॐ शतमिन्तु शरदोऽअंतिं देवा यत्रांनश्चक्राजरसं तनूनाम् । पुत्रासो यत्र पितरो भवंति मानो मध्यारीरिषतायुर्गतोः ॥ शिवगौरी-विवाहे या या श्रीरामे नृपात्मने । धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि ॥ भो ब्राह्मणा मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य गृहे श्रीरस्त्विति भवंतो ब्रुवंतु ३ ॥ ॐ अस्तु श्रीः ३ । ऋक् ॥ ॐ श्रियेजातः श्रियआ निरीयायश्रियंवयोजरितृभ्योदधाति ॥ श्रियंवसानाऽअमृत त्वमायन्भवंति सत्यासमिथामितद्रौ ॥ यजुः ॥ ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय ॥ पशुनाछं रूपमन्नस्यरसो यशः श्रीः श्रयताम्मयि स्वाहा ॥ ( वा० सं० ३९ । ४ ) ॥ प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा स देवराट् ॥ भगवान्छाश्वतो नित्यं स नो रक्षतु सर्वतः ॥ भगवान्प्रजापतिः प्रीयताम् ॥ ऋक् ॥ ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ यजुः । ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो बिश्वा रूपाणि परि ता बभूव । यत्काम-मास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयमुमुष्य पिताऽसावस्य पिता वयछं स्याम पतयो रयीणा छ स्वाहा । ( वा० सं० १० । २० ) ॥ आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे । कृताः सर्वाशिषः संतु ऋत्विग्भिर्वेद-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.


पारगैः ॥ देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति यथा स्वस्ति गुरोर्गृहे । एकलिंगे यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम ॥ ॐ आयुष्मते स्वस्ति ॥ ऋक् ॐ स्वस्तये वायुमुपब्रवामहे सोमं स्वस्तिभुवनस्य यस्पतिः । बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ॥ यजुः ॥ ॐ प्रतिपन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम् । येन विश्वाः परिद्विषो वृणक्ति विन्दते वसु ॥ ( वा० सं० ४ । २९ ) ॥ ऋक् ॥ ॐ महो अग्नेः समिधानस्य शर्म्मण्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये । श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि तदेवानामवो अद्या वृणीमहे । ( वा० स० ३३ । १७ ) ॥ यजुः ॥ ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रं तन्मऽआसुव ॥ ( वा० सं० ३० । ३ ) ॥ मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः संतु मनोरथाः । शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयोऽस्तु नः ॥ ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ ब्रह्मवक्त्रे स्थितां नित्यं निघ्नंतु तव शत्रवान् ॥ अक्षतान्विप्रहस्थात्तु नित्यं गृह्णन्ति ये नराः ॥ चत्वारि तेषां वर्धते आयुः कीर्तिर्यशो बलम् । श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्य ० ॥ धनवान्पुत्रवाँल्लक्ष्मीवान्भव । इति पुण्याहवाचनम् ॥

## शीतलास्तोत्रम् । स्कान्दे ।

अस्य श्रीशीतलास्तोत्रस्य महादेव ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, शीतला देवता, लक्ष्मीर्बीजं, भवानी शक्तिः, सर्व्वविस्फोटकनिवृत्तये जपे विनियोगः ॥ ईश्वर उवाच ॥ वन्देऽहं शीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बराम् ॥ मार्ज्जनीकलशोपेतां शूर्पालंकृतमस्तकाम् ॥ १ ॥ वन्देऽहं शीतलां देवीं सर्व्वरोगभयापहाम् ॥ यामासाद्य निवर्त्तेत विस्फोटकमयं महत् ॥ २ ॥ शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद्दाहपीडितः ॥ विस्फोटकमयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥ ३ ॥ शीतले ज्वरदग्धस्य पूतिगन्धयुतस्य च ॥ प्रनष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीवनौषधम् ॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शीतले तनुजान्रोगान्नृणां हरसि दुस्त्यजान् ॥ विस्फोटकविजीर्णानां त्वमेकाऽमृतवार्षिणी ॥ ५ ॥ गलगण्डग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम् ॥ त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यान्ति संक्षयम् ॥ ६ ॥ न मन्त्रो नौषधं तस्य पापरोगस्य विद्यते ॥ त्वामेकां शीतले धात्रीं नान्यां पश्यामि देवताम् ॥ ७ ॥ मृणालतन्तुसदृशीं नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् ॥ यस्त्वां रिञ्चिन्तयेद्देवि तस्य मृत्युर्न जायये ॥ ८ ॥ अष्टकं शीतलादेव्या यो नरः प्रपठेत्सदा ॥ विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥ ९ ॥ श्रोतव्यं पठितव्यं च श्रद्धाभक्तिसमन्वितैः ॥ उपसर्गविनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत् ॥ १० ॥ शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता । शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः ॥ ११ ॥ रासभो गर्दभश्चैव खरो वैशाखनन्दनः ॥ शीतलावाहनश्चैव दूर्व्वाकन्दनिकृन्तनः॥१२॥ एतानि खरनामानि शीतलाग्रे तु यः पठेत् ॥ तस्य गेहे शिशूनाञ्च शीतलारुङ् न जायते ॥ १३ ॥ शीतलाष्टकमेवेदं न देयं यस्य कस्यचित् ॥ दात्रव्यञ्च सदा तस्मै श्रद्धाभक्तियुताय वै ॥ १४ ॥ इति श्रीशीतलास्तोत्रम् ॥

## संकटनाशनं लक्ष्मीनृसिंहस्तोत्रम् ।

श्रीमत्पोनिधिनिकेतन चक्रपाणो भोगीन्द्रभोगमणिरञ्जितपुण्यमूर्ते ॥ योगीश शाश्वत शरण भवाब्धिपोत लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १ ॥ ब्रह्मेन्द्ररुद्रमरुदर्ककिरीटकोटि–संघट्टितांघ्रिकमलांमलकान्तिकान्त॥ लक्ष्मीलसत्कुचसरोरुहराजहंस लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ २ ॥ संसारघोरगहने चरतो मुरारे मारोगभीकरमृगप्रवरार्दितस्य ॥ आर्त्तस्य मत्सरनिदाघनिपीडितस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ३ ॥ संसारकूपमतिघोरमगाधमूलं संप्राप्य दुःखशतसर्पसमाकुलस्य ॥ दीनस्य देव कृपणापदमागतस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ४ ॥ संसारसागरविशालकरालकालनक्रग्रहग्रसननिग्रहविग्रहस्य ॥ व्यग्रस्य रागरसनोर्म्मिनिपीडितस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ५ ॥ संसारवृक्षमघबीजमनन्तकर्म्मशाखाशतं करणपत्रमनङ्गपुष्पम् ॥ आरुह्य दुःखफलितं पततो दयालो लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



संसारसर्पघनवक्त्रभयोग्रतीव्रदंष्ट्राकरालविषदग्धविनष्टमूर्त्तेः ॥ नागारिवाहन सुवाब्धिनिवास शौरे लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ७ ॥ संसारदावदहनातुरभीकरोरुज्वालावलीभिरतिदग्धतनूरुहस्य ॥ त्वत्पादपद्मसरसीशरणागतस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बलम् ॥ ८ ॥ संसारजालपतितस्य जगन्निवास सर्व्वेन्द्रियार्थबडिशार्थझषोपमस्य ॥ प्रोत्खण्डितप्रचुरतालुकमस्तकस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ९ ॥ संसारभीकरकरीन्द्रकराभिघातनिष्पिष्ट मर्म्मवपुषः सकलार्त्तिनाश ॥ प्राणप्रयाणभवभीतिसमाकुलस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलंबम् ॥ १० ॥ अन्धस्य मे हृतविवेकमहाधनस्य चौरैः प्रभो बलिभिरिन्द्रियनामधेयैः ॥ मोहान्धकूपकुहरे विनिपातितस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलंबम् ॥ ११ ॥ लक्ष्मीपते कमलनाभ सुरेश विष्णो वैकुण्ठ कृष्ण मधुसूदन पुष्कराक्ष ॥ ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव देवेश देहि कृपणस्य करावलम्बम् ॥ १२ ॥ यन्माययोर्जितवपुः-प्रचुरप्रवाहमग्नार्थमन्त्रनिवहोरुकरावलंबम् ॥ लक्ष्मीनृसिंह चरणाब्जमधुव्रतेन स्तोत्रं कृतं सुखकरं भुवि शंकरेण ॥१३॥ इति श्रीशंकराचार्यविरचितं संकटनाशनं लक्ष्मीनृसिंहस्तोत्रम् ॥

## वाल्मीकेर्गंगास्तोत्रम् ।

मातः शैलसुतासपत्नि वसुधाशृङ्गारहारावलि स्वर्गारोहणवैजयन्ति भवतीं भागीरथीं प्रार्थये ॥ त्वत्तीरे वसतस्त्वदंबु पिबतस्त्वद्वीचिमुत्प्रेक्षतस्त्वन्नाम स्मरतस्त्वदर्पितदृशः स्यामे शरीरव्ययः ॥ १ ॥ त्वत्तीरे तरुकोटरान्तरगतो गंगे विहंगो वरं त्वन्नीरे नरकान्तकारिणि वरं मत्स्योऽथ वा कच्छपः ॥ नैवान्यत्र मदान्धसिन्धुरघटासंघट्टघण्टारणत्कारत्रस्तसमस्तवैरिवनितालब्धस्तुतिर्भूपतिः ॥२॥ काकैर्निष्कुषितं श्वभिः कवलितं वीचीभिरान्दोलितं स्रोतोभिश्चलितं तटान्तमिलितं गोमायुभिर्लुण्ठितम् ॥ दिव्यस्त्रीकरचारुचामरमरुत्संवीज्यमानः कदा द्रक्ष्येऽहं परमेश्वरि त्रिपथगे भागीरथि स्वं वपुः ॥३॥ अभिनवविसवल्लीपादपद्मस्य विष्णोर्म्मदनमथनमौलेर्नालतीपुष्पमाला ॥ जयति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः क्षपितकलिकलंका जाह्नवी नः पुनातु ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



यत्तत्तालतमालशालसरलव्यलोलवल्ली लताच्छन्नं सूर्य्यकरप्रतापरहितं शंखेन्दु-कुन्दोज्ज्वलम् ॥ गन्धर्वामरसिद्धकिन्नरवधूत्तुङ्गस्तनास्फालितं स्नानाय प्रति-वासरं भवतु मे गाङ्गं जलं निर्म्मलम् ॥ ५ ॥ गांगं वारि मनोहारि मुरारिच-रणच्युतम् ॥ त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु माम् ॥ ६ ॥ पापापहारि दुरितारि तरंगधारि दूरप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि ॥ झङ्कारकारि हरिपाद-रजोविहारि गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि ॥ ७ ॥ वरमिह गङ्गातीरे शरटः करटः कृशः शुनीतनयः ॥ न पुनर्दूरतरस्थः करिवरकोटीश्वरो पतिः ॥ ८ ॥ गङ्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः ॥ प्रक्षाल्य सोऽत्र कलिकल्मषपङ्कमाशु मोक्षं लभेत्पतति नैव पुनर्भ-वाब्धौ ॥ ९ ॥ इति श्रीवाल्मीकिमुनिविरचितं गङ्गास्तोत्रम् ॥

## मणिकर्णिकास्तोत्रम्।

त्वत्तीरे मणिकर्णिके हरिहरौ सायुज्यमुक्तिप्रदौ वादं तौ कुरुतः परस्पर-मुभौ जन्तोः प्रयाणोत्सवे ॥ मद्रूपो मनुजोऽयमस्तु हरिणा प्रोक्तः शिवस्त-त्क्षणात्तन्मध्याद्भृगुलाञ्छनो गरुडगः पीतांबरो निर्गतः ॥ १ ॥ इन्द्राद्या-स्त्रिदशाः पतन्ति नियतं भोगक्षये ये पुनर्जायन्ते मनुजास्ततोऽपि पशवः कीटाः पतङ्गादयः ॥ ये मातर्म्मणिकर्णिके तव जले मज्जन्ति निष्कल्मषाः सायुज्येऽपि किरीटकौस्तुभधरा नारायणाः स्युर्नराः ॥ २ ॥ काशी धन्यतमा विमुक्त-नगरी साऽलंकृता गङ्गया तत्रेयं मणिकर्णिका सुखकरी मुक्तिर्हि तत्किङ्करी ॥ स्मर्लोकस्तुलितः सहैव विबुधैः काश्या समं ब्रह्मणा काशी क्षोणितले स्थिता गुरुतरा स्वर्गो लघु खे गतः ॥ ३ ॥ गङ्गातीरमनुत्तमं हि सकलं तत्रापि काश्युत्तमा तस्यां सा मणिकर्णिकोत्तमतमा यत्रेश्वरो मुक्तिदः ॥ देवानामपि दुर्लभं स्थलमिदं पापौघनाशक्षमं पूर्व्वोपार्ज्जितपुण्यपुञ्जगमकं पुण्यैर्जनैः प्राप्यते ॥ ४ ॥ दुःखाम्भोनिधिमग्नजन्तुनिवहास्तेषां कथं निष्कृतिं ज्ञात्वा तद्धि विरिञ्चिना विरचिता वाराणसी शर्म्मदा ॥ लोकाः स्वर्गसुखस्ततोपि लघवो भोगान्तपातप्रदाः काशी मुक्तिपुरी सदा शिवकरी धर्म्मार्थकामोत्तरा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



॥ ५ ॥ एको वेणुधरो धराधरधरः श्रीवत्सभूषाधरो योऽप्येकः किल शंकरो विषधरो गङ्गाधरो माधवः ॥ ये मातर्म्मणिकार्णिकं तव जले मज्जन्ति ते मानवा रुद्रा वा हरयो भवंति बहवस्तेषां बहुत्वं कथम् ॥ ६ ॥ त्वत्तीरे मरणन्तु मंगलकरं देवैरपि श्लाघ्यते शक्रस्तं मनुजं सहस्रनयनैर्द्रष्टुं सदा तत्परः ॥ आयान्तं सविता सहस्रकिरणैः प्रत्युद्गतोऽभूत्सदा पुण्योऽसौ वृषगोऽथ वा गरुडगः किं मंदिरं यास्यति ॥ ७ ॥ मध्याह्ने मणिकार्णिकास्नपनजं पुण्यं न वक्तुं क्षमः स्वीपैरब्दशतैश्चतुर्म्मुखसुरो वेदार्थदीक्षागुरुः ॥ योगाभ्यासबलेन चन्द्रशिखरस्त्वत्पुण्यपारंगतस्त्वत्तीरे प्रकरोति सुप्तपुरुषं नारायणं वा शिवम् ॥ ८ ॥ कृच्छ्रैः कोटिशतैः स्वपापनिधनं यच्चाश्वमेधैः फलं तत्सर्व्वं मणिकर्णिकास्नपनजे पुण्ये प्रविष्टं भवेत् ॥ स्नात्वा स्तोत्रमिदं नरः पठति चेत्संसारपाथोनिधिं तीर्त्वा पल्वलवत्प्रयाति सदनं तेजोमयं ब्रह्मणः ॥ ९ ॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं मणिकर्णिकास्तोत्रम् ॥

## यमुनास्तोत्रम् ।

कृपापारावारां तपनतनयां तापशमनीं मुरारिप्रेयस्यां भवभयदवां भक्तवरदाम् विपज्जालान्मुक्तां श्रियमपि सुखाप्तेःपरिदिनं सदा धीरो नूनं भजति यमुनां नित्यफलदाम् ॥१॥ मधुवनचारिणि भास्करवाहिनि जाह्नवीसंगिनि सिन्धुसुते-मधुरिपुभूषिणि माधवतोषिणि गोकुलभीतिविनाशकृते !! जगदघमोचनि मानसदायिनि केशवकेलिनिदानगते जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावक माम् ॥ २ ॥ अयि मधुरे मधुमोदविलासिनि शैलविदारिणि वेगभरे परिजनपालिनि दुष्टनिषूदिनि वाञ्छितकामविलासधरे ॥ व्रजपुरवासि जनार्जितपातकहारिणि विश्वजनोद्धरिके जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ३ ॥ अतिविपदम्बुधिमग्नजनं भवतापशताकुलमानसकं गतिमतिहीनमशेषभयाकुलमागतपादसरोजयुगम् ॥ ऋणभयभीतिमनिष्कृतिपातककोटिशतायुतपुञ्जतरं जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ४ ॥ नवजलदद्युतिकोटिलसत्तनुहेममयाभरणान्वितके तडिद-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



वहेलिपदाञ्चलचञ्चलशोभितपीतसचैलधरे ॥ मणिमयभूषणचित्रपटासनरञ्जित-गञ्जितभानुकरे जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ५ ॥ शुभपुलिने मधुमत्तयदद्भवरासमहोत्सवकेलिभरे उच्चकुलाचलराजितमौक्तिकहारमयाभररोधसिके ॥ नवमणिकोटिकभास्करकञ्चुकिशोभिततारक-हारयुते जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ६ ॥ करिवरमौक्तिकनासिकभूषणवातचमत्कृतचञ्चलके मुखकमलामलसौरभचञ्चल-मत्तमधुव्रतलोचनिके ॥ मणिगणकुण्डललोपरिस्फुरदाकुलगण्डयुगामलके जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ७ ॥ कलरवनूपूर-हेममयाचितपादसरोरुहसारुणिके धिमिधिमिधिमिधिमिधिमितालविनोदितमानसमञ्जुलपादगते ॥ तव पदपंकजमाश्रितमानवचित्तसदाखिलतापहरे जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ८ ॥ भवोत्तापाम्भोधौ निपतित-जनो दुर्गतियुतो यदि स्तौति प्रातः प्रतिदिनमनन्याश्रयतया ॥ हयाह्वैषः कांमं करकुसुमकुञ्जै रविसुतां सदा भुक्त्वा भोगान्मरणसमये याति हरिताम् ॥ ९ ॥ इति श्रीमच्छंकराचार्य्यविरचितं यमुनास्तोत्रम् ॥

## त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम्।

कदम्बवनचारिणी मुनिकदम्बकादम्बिनीं, नितम्बजितभूधरां सुरनि-तम्बिनीसेवितां ॥ नवाम्बुरुहलोचनामभिनवाम्बुदश्यामलां, त्रिलोचनकुटु-म्बिनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये ॥ १ ॥ कदम्बवनवासिनी कनकवल्लकी-धारिणीं, महार्हमणिहारिणीं मुखसमुल्लसद्वारुणीम् ॥ दयाविभवकारिणीं विशदलोचनीं चारिणी त्रिलोचन-कुटुम्बिनी त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये ॥२॥ कदंब-वन--शालया कुचभरोल्लसन्मालया, कुचोपमित--शैलया गुरुकृपालसद्वेलया ॥ मदारुणकपोलया मधुगंभीरवाचालया, कयापि धनशीलया कवचिता वयं लीलया ॥३॥ कदम्बवनमध्यगां कनकमण्डलोपस्थितां, षडम्बुरुहवासिनी सतत-सिद्धिसौदामिनीम् ॥ विडम्बितजपारुचिं विकचचन्द्रचूडामणिं, त्रिलोचनकुटु-म्बिनी त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये ॥ ४ ॥ कुचाञ्चितविपाञ्चिकां कुटिलकुंभलालंकृतां-कुशेशयनिवासिनीं कुटिलचित्तविद्वेषिणीम् ॥ मदारुणविलोचनां मनसिजारि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



सम्मोहिनी, मतङ्गमुनिकन्यकां मधुरभाषिणीमाश्रये ॥ ५ ॥ स्मरेत्प्रथमपुष्पिणीं रुधिरबिन्दुनालंबरां गृहीतमधुपानिकां मधुविघूर्णनेत्राञ्चलाम् ॥ घनस्तनतरोन्नतां गलितचूलकां श्यामलां, त्रिलोचनकुटुम्बिनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये ॥६॥ सकुंकुम-विलेपनामलकचुम्बिकस्तूरिकां, समंदहसितेक्षणां सशरचापपाशांकुशाम्॥ असेष-जनमोहिनीमरुणमाल्यभूषांबरां,जपाकुसुमभासुरां जपविधौ स्मराम्यम्बिकाम्॥७॥ पुरन्दरपुरन्ध्रिकां, चिकुरबन्धसैरन्ध्रिकां, पितामहपतिव्रतां पटुपटीर-चर्चारताम्॥ मुकुन्दरमणी मनोलसदलंक्रियाकारिणी, मजामि भुवनाम्बिकां सुरवधूटिका-चेटिकाम् ॥ ८ ॥ इति श्रीशंकराचार्य्यविरचितं त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम् ॥

## रावणकृतं शिवताण्डवस्तोत्रम् ।

जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिंपनिर्झरीविलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि॥धग-द्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिःप्रतिक्षणं मम ॥१॥ धरा-धरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुरस्फुरद्दृगन्तसंततिप्रमोदमानमानसे॥ कटाकटाक्ष धोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि क्वचिच्चिम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥२॥ जटाभुजङ्ग पिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभाकदम्बकुंकुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ॥ मदान्धसिन्धुरस्फुर-त्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥३॥ सहस्रलोचनप्रभृत्य-शेषलेखशेखरप्रसूनधूलिधोरणीविधूसरांघ्रिपीठभूः ॥ भुजङ्गराजमालया निबद्धजाट-जूटकःश्रिये चिराय जायतां चकोरबंधुशेखरः ॥ ४ ॥ ललाटचत्वरज्वलद्धनंजय-स्फुलिंगभानिपीतपञ्चसायकं नमन्निलिंपनायकम् ॥ सुधामयूखलेखया विराजमान-शेखरं महाकपालि संपदे शिरो जटालमस्तु नः॥५॥ करालभालपट्टिकाधगद्धगद्ध-गज्ज्वलद्धनंजयाधरीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ॥ धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-प्रकल्पनैकशिल्पिनित्रिलोचने मतिर्मम॥६॥नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्कुहू निशीथिनीतमः प्रबन्धबन्धुकन्धरः ॥ निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरंधरः ॥७॥ प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमच्छटा-विडम्बिकंठकन्धरारुचिप्रबन्धकन्धरम् । स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे॥८॥अगर्वसर्वमंगलाकलाकदम्बमञ्जरी रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ॥ स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं-

CCQ. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥ ९ ॥ जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्ग-मस्फुरद्धगद्धगद्विनिर्गमत्करालभालहव्यवाट्॥ धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्ग-मङ्गलध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचंडताण्डवः शिवः ॥ १० ॥ दृषद्विचित्रतल्पयो-र्भुजंगमौक्तिकस्रजोर्गरिष्ठरत्नलोष्टयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ॥ तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समं प्रवर्तयन्मनः कदा सदाशिवं भजे ॥ ११ ॥ कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन् विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन् ॥ विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्य-हम् ॥ १२ ॥ इदं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं पठन् स्मरन् ब्रुवन्नरो विशुद्ध मेति संततम्॥ हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नाऽन्यथा गतिं विमोहनं हि देहिनां सुशंकरस्य चिन्तनम् ॥ १३ ॥ पूजाऽवसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शंभुपूजन-मिदं पठति प्रदोषे ॥ तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥ १४ ॥ इति रावणकृतं शिवताण्डवस्तोत्रम् ॥

**महापुरुषविद्या**—जितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन। सुब्रह्मण्य नमस्तेऽस्तु महापुरुष पूर्वज ॥ नमो हिरण्यगर्भाय प्रधानाव्यक्तरूपिणे। ॐ नमो वासुदेवाय शुद्धज्ञानस्वरूपिणे ॥ देवानां दानवानां च सामान्यमसि दैवतम्। सर्वदा चरणद्वन्द्वं व्रजामि शरणं तव ॥ एकस्त्वमसि लोकस्य स्रष्टा संहारक-स्तथा। अध्यक्षश्चानुमन्ता च गुणमायासमावृतः ॥ संसारसागरं घोरमनन्तं क्लेशभाजनम्। त्वामेव शरणं प्राप्य निस्तरन्ति मनीषिणः ॥ न ते रूपं न चाकारो नायुधानि न चास्पदम्। तथापि पुरुषाकारो भक्तानां त्वं प्रकाशसे ॥ नैव किञ्चित्परोक्षं ते न प्रत्यक्षोऽसि कस्यचित्। नैव किञ्चिदसिद्धं ते न च सिद्धोऽसि कस्यचित् ॥ कार्याणां कारणं पूर्णं वचसां वाच्युमुत्तमम्। योगिनां परमां सिद्धिं वदन्ति परमं विदः ॥ अहं भीतोऽस्मि देवेश संसारेऽस्मिन् महा-भये। त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष न जाने शरणं परम् ॥ कालेष्वपि च सर्वेषु दिक्षु सर्वासु चाच्युत। शरीरेऽपि गतौ चापि वर्तते मे महद्भयम् ॥ त्वत्पाद कमलादन्यन्न मे जन्मान्तरेष्वपि। निमित्तं कुशलस्यास्ति येन गच्छाभि सद्गतिम्॥ विज्ञानं यदिदं प्राप्तं यदिदं ज्ञानमर्जितम्।जन्मान्तरेऽपि मे देव मा भूदस्य परि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



क्षयः ॥ दुर्गतावपि जातायां त्वं गतिस्त्वं मतिर्मम । यदि नाथं च विंदेय तावताऽस्मि कृती सदा ॥ अकामकलुषं चित्तं मम ते पादयोः स्थितम् । कामये वैष्णवत्वं तु सर्वजन्मसु केवलम् ॥ **इति महापुरुषविद्या ॥**

**रामहृदयम्, अध्यात्मरामायणे**-ततो रामः स्वयं प्राह हनुमन्तमुपस्थितम् । शृणु तत्त्वं प्रवक्ष्यामि ह्यात्मानात्मपरात्मनाम् ॥ १ ॥ आकाशस्य यथा भेदस्त्रिविधो दृश्यते महान् । जलाशये महाकाशस्तदवच्छिन्न एव हि॥२॥ प्रतिबिम्बाख्यमपरं दृश्यते त्रिविधं नमः। बुद्ध्यवच्छिन्नचैतन्यमेकं पूर्णमथापरम् ॥ ३ ॥ आभासस्त्वपरं बिम्बभूतमेवं त्रिधा चितिः । साभासबुद्धेः कर्तृत्वमविच्छिन्नेऽविकारिणि ॥ ४ ॥ साक्षिण्यारोप्यते भ्रान्त्या जीवत्वं च तथाऽबुधैः । आभासस्तु मृषाबुद्धिरविद्याकार्यमुच्यते ॥ ५ ॥ अविच्छिन्नं तु तद् ब्रह्म विच्छेदस्तु विकल्पितः । अविच्छिन्नस्य पूर्णेन एकत्वं प्रतिपाद्यते ॥६॥ तत्त्वमस्यादिवाक्यैश्च सभासस्याहमस्तथा । ऐक्यज्ञानं यदोत्पन्नं महावाक्येन चात्मनोः ॥७॥ तदाऽविद्या स्वकार्यैश्च नश्यत्येव न संशयः । एतद्विज्ञाय मद्भक्तो मद्भावायोपपद्यते ॥८॥ मद्भक्तिविमुखानां हि शास्त्रगर्तेषु मुह्यताम् । न ज्ञान न च मोक्षः स्यात्तेषां जन्मशतैरपि ॥ ९ ॥ इदं रहस्यं हृदयं ममात्मनो मयैव साक्षात् कथितं तवानघ । मद्भक्तिहीनाय शठाय न त्वया दातव्यमैन्द्रादपि राज्यतोऽधिकम् ॥ १० ॥ **इति रामहृदयम् ॥** इत्याह्निककर्म्मसूत्रावली समयविशेषे कर्त्तव्यनिर्देशः ॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

---

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
कल्याण--बम्बई.

खेमराज श्रीकृष्णदास
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम-प्रेस,
खेतवाडी-बम्बई.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

क लोकतंत्र का दुखी होना है क्योंकि
लोकतंत्र के प्रतीक हैं । सच्चे साकार
। क्या आप चाहते हैं कि हमारे देश
गमगीन हो जाए ? मैं समझता हूं
नहीं चाह सकते । उनके दुखी होने
है आम जनता का दुखी होना तभी
इस दुख को भुलाने की कोशिश

मय पहले वनस्पति व्यापारियों ने
र्बी मिलाई तो लोगों ने वनस्पति घी
ों और सरकार पर तीखे प्रहार किए
ह विसंगति मालूम हुई । पर मेरी
नहीं आता कि इसमें कैसे कहां
गई ? डालडा और चर्बी का रंग
तभी न मिलावट हुई ।
रिवहन की बसों में परिचालकों व
यात्रियों से संगति नहीं बैठती ।
थोड़ी बहुत संगति बैठती है, वहां
ही सही लोग यथास्थान पहुंच पाते
ां यह संगति विसंगति हो जाती है
को व्यंग्य करने का मौका ही नहीं
संगति विसंगति के लोक से परे जा
नी कि विसंगति पर व्यंग्य नहीं कर

कदार और इंजीनियर की संगति नहीं
बड़े-बड़े पुल और बांध बाढ़ आने
ढह जाते हैं और इनमें संगति हो
नहीं सैकड़ों पुल और बांध धरती
ी पर बंधकर तैयार हो जाते हैं और
ते हैं ।
लेखक व संपादक में जरा भी
तो अच्छे से अच्छा लेख सखेद
ा और जिसका लेख लौटेगा वह
कि रोएगा ?

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri



# ‘ગૌ’ ના ગાંવ સે આઈ હિંદી ફિલ્મ કી નાયિકા તનુ

**ગત સેન તનુજા વાલે કી નાયિકા તનુ જયારાજ પર યહ કહા—કેમેરા મેં ગાંવ સે આઈ હિંદી ફિલ્મ કી નાયિકા જૈસી ઝલક હૈ . . . અભિનય સુઝબૂઝ સે ચાકિરા આ ગઈ . . . ।’ અભિનેતા કે રૂપમેં ઉનકી યહ પહલી ફિલ્મ હૈ ઔર ઉનકા પહલા પ્રયાસ હી ઉનકી ઉપલબ્ધિયોં કી ગુન્ગા બજાતી હૈ . . . ’ ‘મન-ભાવન દેસ્રા મેં પહેં હૈં ઔર ઘરોં પર્યંત્ન મેં ઉનકે ઉપલબ્ધિયોં કી ગુન્ગા બજાતી મુખર રહે હૈં હમ તો . . . ’

ફિલ્મોંકે યહ ફ્રાયત્ના તનુ કૌ સ્કૂલ દેખ ચુકા થા । ડરકે લિએ ખોટા . . . તીન ઓવર-ઓર ગોલ્ડ કપ પહનેં હમ—તીન ગોલ્ડ કપ પહનેં હમ—તીન ગોલ્ડ કપ પહનેં હમ . . . ’ ‘ઔર ઉસકે બાદ ઉસ્કા પુરી ચક્ર ચલાને કે બાદ ઉસ્કા પુરી ચક્ર ચલાને કે બાદ ઉસ્કા પુરી ચક્ર ચલાને ક